# पूजा-विधानम्

#### Colophon

This document was typeset using  $X_{\exists} E_{\exists} E_$ 

#### Acknowledgements

The initial encodings of some of these texts were obtained from http://sanskritdocuments.org/ and/or http://prapatti.com/.

See also http://stotrasamhita.github.io/about/

स्तोत्रसङ्ग्रहः is also available online (in PDF format) at: http://stotrasamhita.github.io/

FOR PERSONAL USE ONLY
NOT FOR COMMERCIAL PRINTING/DISTRIBUTION

अनुऋमणिका

82

# अनुऋमणिका

| 8    | व्रतपूजाः                  |     |       |     |    |    |   |   |   |   |   |   |   |   |   |   |   |   |   |   |   |   | 1  |
|------|----------------------------|-----|-------|-----|----|----|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|----|
| ल    | <b>यु-पञ्चायतन-पूजा</b>    |     |       |     |    |    |   |   |   |   |   |   |   |   |   |   |   |   |   |   |   |   | 2  |
|      | प्रधान् पूजा — पञ्चायतनपू  | जा  |       |     |    |    |   |   |   |   |   |   |   |   |   |   |   |   |   |   |   |   | 2  |
|      | षोडशोपचारपूजा              | •   |       |     |    |    |   |   |   |   |   |   |   |   |   |   |   |   |   |   |   |   | 5  |
|      | उत्तराङ्गपूजा              |     |       |     |    |    |   |   |   |   |   |   |   |   |   |   |   |   |   |   |   |   | 15 |
|      | ब्रह्मपारस्तोत्रम्         |     |       |     |    |    |   |   |   |   |   |   |   |   |   |   |   |   |   |   |   |   | 19 |
| एव   | जदशीव्रतम् — श्री-मह       | ादि | प्रेष | יוט | पज | ना |   |   |   |   |   |   |   |   |   |   |   |   |   |   |   |   | 21 |
| ,    | पूर्वाङ्गविघ्नेश्वरपूजा    |     |       |     |    |    |   |   |   |   |   |   |   |   |   |   |   |   |   |   |   |   | 21 |
|      | प्रधान पूजा - एकादशीपूजा   | •   | •     | •   | •  | •  | • | • | • | • | • | • | • | • | • | • | • | • | • | • | • | • | 23 |
|      | षोडशोपचारपूजा ू            | •   | •     | •   | •  | •  | • | • | • | • | • | • | • | • | • | • | • | • | • | • | • | • | 26 |
|      | विष्णुसहस्रनामावितः        | •   | •     | •   | •  | •  | • | • | • | • | • | • | • | • | • | • | • | • | • | • | • | • | 30 |
|      | कृष्णाष्टोत्तरशतनामावलिः   | •   | •     | •   | •  | •  | • | • | • | • | • | • | • | • | • | • | • | • | • | • | • | • | 48 |
|      | उत्तराङ्गपूजा              |     |       |     |    |    |   |   |   |   |   |   |   |   |   |   |   |   |   |   |   | • | 51 |
|      |                            | •   | •     | •   | •  | •  | • | • | • | • | • | • | • | • | • | • | • | • | • | • | • | • | ٠. |
| श्री | रामनवमी-पूजा               |     |       |     |    |    |   |   |   |   |   |   |   |   |   |   |   |   |   |   |   |   | 55 |
|      | पूर्वाङ्गविघ्नेश्वरपूजा    |     |       |     |    |    |   |   |   |   |   |   |   |   |   |   |   |   |   |   |   |   | 55 |
|      | प्रधान-पूजा - श्रीराम-पूजा |     |       |     |    |    |   |   |   |   |   |   |   |   |   |   |   |   |   |   |   |   | 57 |
|      | षोडशोपचारपूजा              |     |       |     |    |    |   |   |   |   |   |   |   |   |   |   |   |   |   |   |   |   | 60 |
|      | रामाष्टोत्तरशतनामाविलः     |     |       |     |    |    |   |   |   |   |   |   |   |   |   |   |   |   |   |   |   |   | 66 |
|      | सीताष्टोत्तरशतनामाविलः     |     |       |     |    |    |   |   |   |   |   |   |   |   |   |   |   |   |   |   |   |   | 68 |
|      | हनुमदष्टोत्तरशतनामाविलः    |     |       |     |    |    |   |   |   |   |   |   |   |   |   |   |   |   |   |   |   |   | 70 |
|      | रामाष्टोत्तरशतनामाविलः     |     |       |     |    |    |   |   |   |   |   |   |   |   |   |   |   |   |   |   |   |   | 72 |
|      | सीताष्टोत्तरशतनामाविलः     |     |       |     |    |    |   |   |   |   |   |   |   |   |   |   |   |   |   |   |   |   | 75 |
|      | हनुमद्योत्तरशतनामाविलः     |     |       |     |    |    |   |   |   |   |   |   |   |   |   |   |   |   |   |   |   |   | 77 |
|      | प्रार्थना                  |     |       |     |    |    |   |   |   |   |   |   |   |   |   |   |   |   |   |   |   |   | 82 |

| अनुक्रमणिका  | ii  |
|--|-----|
| हनुमत्कृतं श्री-सीता-राम-स्तोत्रम्                                   | 82  |
| कथा  | 86  |
| श्री-शङ्कर-भगवत्पाद-पूजा   | 94  |
| पूर्वाङ्गविघ्नेश्वरपूजा  | 94  |
| प्रँघान-पूजा - श्री-शङ्कर-भगवत्पाद-पूजा                              | 96  |
| षोडशोपचारपूजा  | 100 |
| श्री-शङ्कर-चतुर्विंशति-नामावल्या अङ्गपूजा                            | 104 |
| आदिशङ्कराचार्याष्टोत्तरशतनामाविलः                                    | 105 |
| आचार्यपरम्परानामावलिः  | 107 |
| स्वस्ति-वचनम्/गुरुवन्दनम्  | 113 |
| तोटकाष्टकम्  | 114 |
| श्री-शङ्कर-भगवत्पाद-प्रशस्ति-सङ्ग्रहः                                | 115 |
| देव-वन्दनम्  | 115 |
| गुरुपरम्परावन्दनम्   | 115 |
| गुरु-पादुका-पञ्चकम्  | 116 |
| भगवत्पादकृतं गुरु-वन्दनम्  | 117 |
| वेदान्ताचार्यवन्दना  | 118 |
| मार्कण्डेय-संहितायां भगवत्पाद-प्रशंसा                                | 119 |
| तोटकाष्टकम्  | 120 |
| भगवत्पाद-शिष्यैः कृताः गुरु-स्तुतयः                                  | 121 |
| सदाशिवब्रह्मेन्द्रविरचितायां जगद्गुरुरत्नमालायां भगवत्पाद-चरितम्     | 122 |
| कामकोटि-परम्परागतैः आचार्यैः कृताः स्तुतयः                           | 123 |
| शङ्कर-चरित्र-ग्रन्थेषु   | 124 |
| अन्यैः वेदान्ताचार्यैः कृताः स्तुतयः                                 | 126 |
| राङ्कर-वाङ्महिमा   | 133 |
| जय-घोषः  | 133 |
| श्रीमचिद्विलासीय-शङ्करविजयविलासे श्रीमत्-शङ्कर-भगवत्पाद्-अवतार-घट्टः | 138 |
| काञ्चां सर्वज्ञपीठारोहण-घट्टः  | 140 |
|  |     |

| अनुक्रमणिका  | iii |
|--|-----|
| श्री-लक्ष्मी-नृसिंह-जयन्ती-पूजा 1                  | 42  |
|  | 42  |
| Λ Λ Λ·   | 44  |
| षोडशोपचारपूजा                                      | 47  |
|  | 50  |
|  | 53  |
|  | 55  |
|  | 58  |
| श्रीमद्भागवते महापुराणे सप्तमस्कन्धे अष्टमोऽध्यायः | 59  |
| 4,   | 65  |
| नृसिंह-जयन्ती-व्रत-कथा                             | 75  |
| श्री-वरमहालक्ष्मी-पूजा 1                           | 183 |
| पूर्वाङ्गविघ्नेश्वरपूजा                            | 83  |
|  | 85  |
| षोडशोपचारपूजा                                      | 88  |
| `            | 91  |
|  | 94  |
| दोरग्रन्थि-पूजा                                    | 95  |
| r  | 97  |
| कनकधारास्तवम्                                      | 97  |
|  | 200 |
| अपराध-क्षमापनम्                                    | 201 |
| कथा  | 202 |
| श्रीकृष्णजन्माष्टमी-पूजा 2                         | 206 |
| पूर्वाङ्गविघ्नेश्वरपूजा                            |     |
| प्रधान-पूजा — श्रीकृष्ण-पूजा                       | 09  |
| श्रीकृष्णजन्माष्टमी-षोडशोपचारपूजा                  | .33 |
| कृष्णाष्टोत्तरशतनामावलिः                           | 217 |
|  |     |

| अनुक्रमणिका iv                              |
|---|
| उत्तराङ्गपूजा                               |
| जन्माष्टमी-व्रत-कथा                         |
| दिाष्टाचारप्राप्ता जन्माष्टमीव्रतकथा        |
|   |
| व्रतोद्यापनम्                               |
| श्री-सिद्धिविनायक-पूजा 253                  |
| पूर्वाङ्गविघ्नेश्वरपूजा                     |
| प्रधान-पूजा — श्री-सिद्धिविनायक-पूजा        |
| षोडशोपचारपूजा ू                             |
| गणपत्यष्टोत्तरशतनामावलिः                    |
| प्रार्थना                                   |
| महागणेशपञ्चरत्नम्                           |
| गणेशभुजङ्गम्                                |
| वक्रतुण्डमहागणपतिसहस्रनामस्तोत्रम्          |
| अपराध-क्षमापनम्                             |
| कथा   |
| स्यमन्तकोपाख्यानम्                          |
| श्री-धन्वन्तरिपूजा 316                      |
| पूर्वाङ्गविघ्नेश्वरपूजा                     |
| प्रधान-पूजा — धन्वन्तरिपूजा                 |
| षोडशोपचारपूजा                               |
| धन्वन्तर्यप्टोत्तरेशतनामाविलः               |
| उत्तराङ्गपूजा                               |
| धन्वन्तरि स्तोत्रम् (मतस्य पुराणान्तर्गतम्) |
| श्री-लक्ष्मी–कुबेर-पूजा 332                 |
|   |
| पूर्वाङ्गावघ्नश्वरपूजा                      |
| K-11  |

| अनुक्रमणिका V                         |
|---------------------------------------|
| मातृगणपूजा                            |
| नवग्रहपूजा                            |
| लोकपालपूजा                            |
| षोडशोपचारपूजा                         |
| लक्ष्म्यप्टोत्तरशतनामावलिः            |
| उत्तराङ्गपूजा                         |
| ईशानादि पूजा                          |
| कुबेर पूजा ं                          |
| कुबेराष्ट्रोत्तरशतनामाविलः            |
| प्रार्थना                             |
| अपराध-क्षमापनम्                       |
| श्री-स्कन्द-षष्ठी-पूजा 358            |
| पूर्वाङ्गविघ्नेश्वरपूजा               |
| प्रधान-पूजा — स्कन्द-पूजा             |
| षोडशोपचारपूजा                         |
| सुब्रह्मण्याष्टोत्तरेशतनामावलिः       |
| वह्री अप्टोत्तरशतनामाविलः             |
| देवसेना अष्टोत्तरशतनामाविलः           |
| बृन्दावनपूजा (तुलसी–विष्णु-पूजा)      |
| पूर्वाङ्गविघ्नेश्वरपूजा               |
| प्रधान-पूजा — तुलसी-पूजा              |
| षोडशोपचारपूजा                         |
| अङ्गपूजा                              |
| तुलस्यष्टोत्तरशतनामावलिः              |
| तुलसीविवाहविधिः                       |
| शिवरात्रि-पूजा — याम-चतुष्टय-पूजा 392 |
| व्रत-सङ्गल्पः                         |
|                                       |

| अनुक्रमणिका vi  |
|---|
| पूर्वाङ्गविघ्नेश्वरपूजा                                 |
| प्रधान-पूजा - साम्ब-परमेश्वर-पूजा (प्रथम-यामः)          |
| षोडशोपचारपूजा   |
| शिवाष्टोत्तरशतनामाविलः                                  |
| उत्तराङ्ग-पूजा  |
| प्रधान-पूजा - साम्ब-परमेश्वर-पूजा (द्वितीय-यामः) 406    |
| षोडशोपचारपूजा   |
|   |
| महान्यासः   |
| पञ्चाङ्गमुखन्यासः रावणोक्ता पञ्चमुखप्रार्थना-सहितम् 409 |
| केशादिपादान्त (प्रथमो) न्यासः                           |
| मूर्घादिपादान्त दशाक्षरी दशाङ्ग (द्वितीयो) न्यासः 416   |
| पादादिमूर्धान्त पञ्चाङ्ग (तृतीयो) न्यासः                |
| हंसगायत्री  |
| दिक् सम्पुटन्यासः                                       |
| षोडशाङ्गरौद्रीकरणम्                                     |
| गुह्यादि मस्तकान्तं षडङ्ग (चतुर्थो) न्यासः              |
| आत्मरक्षा   |
| शिवसङ्कल्पः   |
| पुरुषसूक्तम्  |
| उत्तर्नारायणम्  |
| अप्रतिरथम्  |
| प्रतिपूरुषम् (सं०)                                      |
| प्रतिपूरूषम् (ब्रा॰)                                    |
| शतरुद्रीयम् (सं॰)                                       |
| शतरुद्रीयम् (ब्रा॰)                                     |
| पञ्चाङ्गम्  |
| अष्टाङ्ग-न्मस्काराः                                     |
| लघुन्यास् श्री रुद्रध्यानम्                             |
| लघुन्यासे देवता-स्थापनम्                                |

| क्रमणिका<br>-                                   | V  |
|---|----|
| आत्मपूजा  | 44 |
| कलशेषु साम्बपरमेश्वर ध्यानम्                    | 44 |
| प्रदक्षिणम्                                     |    |
| नमस्काराः                                       | 44 |
| चमकानुवाकैः प्रार्थना                           | 44 |
| प्रार्थना                                       | 45 |
| श्रीरुद्रजपः                                    | 45 |
| ध्यानम्   | 45 |
| रुद्रप्रश्नः                                    | 46 |
| रुद्रप्रश्नः                                    | 46 |
| श्रीरुद्रनाम त्रिशती                            | 46 |
| शिवाष्टोत्तरशतनामाविलः                          | 46 |
| उत्तराङ्ग-पूजा                                  | 47 |
| प्रधान-पूजा - साम्ब-परमेश्वर-पूजा (तृतीय-यामः)  | 47 |
|   | 47 |
| शिवाष्टोत्तरशतनामाविलः                          | 47 |
| उत्तराङ्ग-पूजा                                  | 48 |
| प्रधान-पूजा - साम्ब-परमेश्वर-पूजा (चतुर्थ-यामः) | 48 |
| षोडशोपचारपूजा                                   | 48 |
| शिवाष्टोत्तरशतनामावलिः                          | 48 |
| उत्तराङ्ग-पूजा                                  |    |

| श्रीसूर्य-नमस्कारः  | 492                           |
|---|-------------------------------|
| पूर्वाङ्गविघ्नेश्वरपूजा ्र  | 492                           |
| प्रधान-पूजा - श्री-सूर्यनारायण-पूजा                                     | 494                           |
| कुम्भे वरुण-सूर्य-नारायण-पूजा   | 497                           |
| सूर्याष्टोत्तरशतनामाविलः  |                               |
| अरुणप्रश्नः   |                               |
| नव्रयहसूक्तम्   |                               |
| आदित्यहृदयम्  | 537                           |
| द्वादशार्यासूर्यस्तुतिः   | 540                           |
| महामा मामनास सान महत्याः  | 541                           |
| सङ्क्रमण-पुण्यकाल-स्नान-सङ्कल्पः  | <b>54</b> I                   |
|   | 544                           |
| सङ्क्रमण-पुण्यकाल-स्नान-सङ्कल्पः<br>कार्त्तिकसोमवारार्घ्यम्<br>अर्घ्यम् |                               |
| कार्त्तिकसोमवारार्घ्यम्<br>अर्घ्यम्                                     | 544                           |
| कार्त्तिकसोमवारार्घ्यम्<br>अर्घ्यम्                                     | <b>544</b> 544                |
| कार्त्तिकसोमवारार्घ्यम्<br>अर्घ्यम्                                     | <b>544</b><br>544<br>545      |
| कार्त्तिकसोमवारार्घ्यम्<br>अर्घ्यम्                                     | <b>544</b> 544 545            |
| कार्त्तिकसोमवारार्घ्यम्<br>अर्घ्यम्                                     | <b>544</b> 545 <b>571</b> 572 |

विभागः १

व्रतपूजाः

# ॥ लघु-पञ्चायतन-पूजा ॥

# ॥ प्रधान पूजा — पञ्चायतनपूजा॥

शुक्राम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्। प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविद्रोपशान्तये॥

प्राणान् आयम्य। ॐ भूः + भूर्भुवस्सुवरोम्।

#### ॥सङ्कल्पः॥

ममोपात्तसमस्तदुरितक्षयद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं शुभे शोभने मुहूर्ते अद्यब्रह्मणः द्वितीयपरार्द्धे श्वेतवराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे प्रथमे पादे जम्बूद्वीपे भारतवर्षे भरतखण्डे मेरोः दक्षिणेपार्श्वे शकाब्दे अस्मिन् वर्तमाने व्यावहारिके प्रभवादि षष्टिसंवत्सराणां मध्ये () नाम संवत्सरे उत्तरायणे / दक्षिणायने (ग्रीष्म / वर्ष / शरद् / हेमन्त / शिशिर / वसन्त) ऋतौ (मेष / वृषभ / मिथुन / कर्कटक / सिंह / कन्या / तुला / वृश्चिक / धनुर् / मकर / कुम्भ / मीन) मासे (शुक्क / कृष्ण) पक्षे (एकादश्यां / द्वादश्यां) शुभितथौ (इन्दु / भौम / बुध / गुरु / भृगु / स्थिर / भानु) वासरयुक्तायाम् ( ) नक्षत्र () नाम योग () करण युक्तायां च एवं गुण विशेषण विशिष्टायाम् अस्याम् ( ) शुभितथौ अस्माकं सहकुटुम्बानां क्षेमस्थैर्य-धैर्य-वीर्य-विजय आयुरारोग्य ऐश्वर्याभिवृद्धर्थम् धर्मार्थकाममोक्षचतुर्विधफलपुरुषार्थसिद्धर्थं पुत्रपौत्राभिवृद्धर्थम् इष्टकाम्यार्थसिद्धर्थम् मम इहजन्मनि पूर्वजन्मनि जन्मान्तरे च सम्पादितानां ज्ञानाज्ञानकृतमहापातकचतुष्टय व्यतिरिक्तानां रहस्यकृतानां प्रकाशकृतानां सर्वेषां पापानां सद्य अपनोदनद्वारा सकल पापक्षयार्थं श्री महागणपति-प्रीत्यर्थं श्री छाया-सुवर्चलाम्बा-समेत-श्री-सूर्यनारायण-प्रीत्यर्थं श्री लक्ष्मीनारायण-प्रीत्यर्थं श्री महालक्ष्मीसमेतं श्री

<sup>ै</sup>पृष्टं ५७२ पश्यताम्

<sup>&</sup>lt;sup>२</sup>पृष्टं ५७३ पश्यताम्

३पृष्टं ५७४ पश्यताम्

सन्तानगोपाल-प्रीत्यर्थं श्री गौरीदेवी-प्रीत्यर्थं श्री साम्बपरमेश्वर-प्रीत्यर्थं श्री नन्दिकेश्वर-प्रीत्यर्थं श्री वहीदेवसेनासमेत-श्री-सुब्रह्मण्य-प्रीत्यर्थं श्री सीता-लक्ष्मण-भरत-शत्रुघ्न-हनूमत्-समेत-श्री-रामचन्द्र-प्रीत्यर्थं यावच्छक्ति ध्यानावाहनादि षोडशोपचारपूजां पञ्चायतनपूजां क्षीराभिषेकं च करिष्ये। तदङ्गं कलशपूजां च करिष्ये।

श्रीविघ्नेश्वराय नमः यथास्थानं प्रतिष्ठापयामि। (गणपति प्रसादं शिरसा गृहीत्वा)

#### ॥ आसन-पूजा॥

पृथिव्या मेरुपृष्ठ ऋषिः। सुतलं छन्दः। कूर्मो देवता॥

पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता। त्वं च धारय मां देवि पवित्रं चाऽऽसनं कुरु॥

#### ॥ घण्टापूजा ॥

आगमार्थं तु देवानां गमनार्थं तु रक्षसाम्। घण्टारवं करोम्यादौ देवताऽऽह्वानकारणम्॥

#### ॥ कलशपूजा॥

ॐ कलशाय नमः दिव्यगन्थान् धारयामि। ॐ गङ्गायै नमः। ॐ यमुनायै नमः। ॐ गोदावर्यै नमः। ॐ सरस्वत्यै नमः। ॐ नर्मदायै नमः। ॐ सिन्धवे नमः। ॐ कावेर्यै नमः। ॐ सप्तकोटिमहातीर्थान्यावाहयामि।

(अथ कलशं स्पृष्ट्वा जपं कुर्यात्) आपो वा इद सर्वं विश्वां भूतान्यापः प्राणा वा आपः पृशव आपोऽन्नमापोऽमृतमापः सम्राडापो विराडापः स्वराडापृश्छन्दाः स्यापो ज्योतीः इष्यापो यजू इष्यापः सत्यमापः सर्वा देवता आपो भूर्भवः सुवराप ओम्॥

कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः। मूले तत्र स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः॥

कुक्षौ तु सागराः सर्वे सप्तद्वीपा वसुन्धरा। ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदोऽप्यथर्वणः। अङ्गेश्च सहिताः सर्वे कलशाम्बुसमाश्रिताः॥

गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति। नर्मदे सिन्धुकावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु॥

सर्वे समुद्राः सरितः तीर्थानि च ह्रदा नदाः। आयान्तु देवपूजार्थं दुरितक्षयकारकाः॥ ॐ भूर्भुवः सुवो भूर्भुवः सुवो भूर्भुवः सुवेः।

(इति कलशजलेन सर्वोपकरणानि आत्मानं च प्रोक्ष्य।)

## ॥ आत्मपूजा ॥

🕉 आत्मने नमः, दिव्यगन्धान् धारयामि।

१. ॐ आत्मने नमः ४. ॐ जीवात्मने नमः

२. ॐ अन्तरात्मने नमः ५. ॐ परमात्मने नमः

३. ॐ योगात्मने नमः ६. ॐ ज्ञानात्मने नमः

## समस्तोपचारान् समर्पयामि।

देहो देवालयः प्रोक्तो जीवो देवः सनातनः। त्यजेदज्ञाननिर्माल्यं सोऽहं भावेन पूजयेत्॥

# ॥ पीठपूजा ॥

१. ॐ आधारशक्त्ये नमः ८. ॐ रत्नवेदिकाये नमः

२. ॐ मूलप्रकृत्यै नमः ९. ॐ स्वर्णस्तम्भाय नमः

३. ॐ आदिकूर्माय नमः १०. ॐ श्वेतच्छत्राय नमः

४. ॐ आदिवराहाय नमः ११. ॐ कल्पकवृक्षाय नमः

५. ॐ अनन्ताय नमः १२. ॐ क्षीरसमुद्राय नमः

६. ॐ पृथिव्यै नमः १३. ॐ सितचामराभ्यां नमः

७. ॐ रत्नमण्डपाय नमः १४. ॐ योगपीठासनाय नमः

#### ॥ गुरु ध्यानम्॥

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुर्गुरुर्देवो महेश्वरः। गुरुः साक्षात् परं ब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः॥

# ॥ षोडशोपचारपूजा॥

ॐ गुणानां त्वा गुणपंति रहवामहे कविं केवीनामुंपमश्रंवस्तमम्। ज्येष्ठराजं ब्रह्मणां ब्रह्मणस्पत् आ नंः शृण्वन्नूतिभिः सीद् सादेनम्॥ ॐ महागणपतये नमः॥

अस्मिन् बिम्बे श्री महागणपतिं ध्यायामि। आवाहयामि॥

आ सत्येन रजंसा वर्तमानो निवेशयंत्रमृतं मर्त्यं च। हिर्ण्ययेन सविता रथेनाऽदेवो यांति भुवना विपश्यन्।

अस्मिन् बिम्बे श्री छाया-सुवर्चलाम्बा-समेत-श्री-सूर्यनारायणं ध्यायामि। आवाहयामि॥

> स्हस्रंशीर्षा पुर्रुषः। स्हस्राक्षः स्हस्रंपात्। स भूमिं विश्वतो वृत्वा। अत्यंतिष्ठद्दशाङ्गुलम्॥

हिरंण्यवर्णां हिरंणीं सुवर्णरंजतुस्रजाम्। चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातंवेदो म् आवंह॥ अस्मिन् बिम्बे श्री लक्ष्मीनारायणं ध्यायामि। अस्मिन् बिम्बे श्री महालक्ष्मीसमेतं श्री सन्तानगोपालं ध्यायामि।

त्र्यम्बकं यजामहे सुगृन्धिं पृष्टिवर्धनम्। उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योमृक्षीय माऽमृतात्॥

गौरी मिमाय सलिलानि तक्षती। एकंपदी द्विपदी सा चतुंष्पदी। अष्टापंदी नवंपदी बभूवुषीं। सहस्राक्षरा पर्मे व्योमन्।

अस्मिन् बिम्बे श्री सपरिवार-साम्बपरमेश्वरं ध्यायामि। आवाहयामि॥ अस्मिन् बिम्बे श्री गौरीदेवीं ध्यायामि। आवाहयामि॥ अस्मिन् बिम्बे श्री साम्बपरमेश्वरं ध्यायामि। आवाहयामि॥

तत्पुरुंषाय विद्यहें चऋतुण्डायं धीमहि। तन्नों निन्दः प्रचोदयाँत्। अस्मिन् बिम्बे श्री निन्दिकेश्वरं ध्यायामि। आवाहयामि॥ तत्पुरुंषाय विद्यहें महासेनायं धीमहि। तन्नेः षण्मुखः प्रचोदयाँत्॥ अस्मिन् बिम्बे श्री वल्लीदेवसेनासमेत-श्री-सुब्रह्मण्यस्वामिनं ध्यायामि।

> कल्पद्रुमं प्रणमतां कमलारुणभम् स्कन्दं भुजद्वयमनामयमेकवऋम्। कात्यायनी-प्रियसुतं कटिबद्धवामम् कौपीन-दण्डधर-दक्षिणहस्तमीडे॥

# आवाहयामि॥

वैदेहीसहितं सुरद्रुमतले हैमे महामण्डपे मध्ये पुष्पकमासने मणिमये वीरासने सुस्थितम्। अग्रे वाचयति प्रभञ्जनसुते तत्त्वं मुनिभ्यः परम् व्याख्यान्तं भरतादिभिः परिवृतं रामं भजे श्यामलम्॥ अस्मिन् बिम्बे श्री सीता-लक्ष्मण-भरत-शत्रुघ्न-हनूमत्-समेत-श्री-रामचन्द्रं ध्यायामि।

वामे भूमिसुता पुरश्च हनुमान् पश्चात् सुमित्रासुतः शत्रुघ्नो भरतश्च पार्श्वदलयोर्वाय्वादिकोणेषु च। सुग्रीवश्च विभीषणश्च युवराट् तारासुतो जाम्बवान् मध्ये नीलसरोजकोमलरुचिं रामं भजे श्यामलम्॥

आवाहयामि॥

आवाहिताभ्यः सर्वाभ्यो-देवताभ्यो नमः।

आसनं समर्पयामि।

पादयोः पाद्यं समर्पयामि।

अर्घ्यं समर्पयामि।

आचमनीयं समर्पयामि।

शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि। स्नानानन्तरम् आचमनीयं समर्पयामि।

## ॥ अभिषेकः॥

ॐ गृणानों त्वा गृणपंति १ हवामहे कृविं केवीनामुंप्मश्रंवस्तमम्। ज्येष्ठराजं ब्रह्मणां ब्रह्मणस्पत् आ नेः शृण्वन्नृतिभिः सीद् सादेनम्॥ ॐ महागणपतये नमः॥

ॐ आ सत्येन रजंसा वर्तमानो निवेशयंत्रमृतं मर्त्यं च। हिर्ण्ययेन सिवता रथेनाऽदेवो यांति भुवना विपश्यन्।

> ॐ सहस्रंशीर्षा पुर्रुषः। सहस्राक्षः सहस्रंपात्। स भूमिं विश्वतो वृत्वा। अत्यंतिष्ठदृशाङ्गुलम्॥

ॐ हिरंण्यवर्णां हरिंणीं सुवर्णरंजतस्त्रजाम्। चन्द्रां हिरण्मेयीं लक्ष्मीं जातवेदो म् आवंह॥ गौरी मिंमाय सिल्लािन् तक्ष्ती। एकंपदी द्विपदी सा चतुंष्पदी।
अष्टापंदी नवंपदी बभूवुषीं। सहस्राक्षरा पर्मे व्योमन्।
तत्पुरुंषाय विद्महें चऋतुण्डायं धीमिह। तन्नां निन्दः प्रचोदयाँत्।
तत्पुरुंषाय विद्महें महासेनायं धीमिह। तन्नां षण्मुखः प्रचोदयाँत्॥
ॐ नमो भगवतें रुद्राय॥
रुद्रप्रश्न-चमकप्रश्न-पुरुषषुक्तेः अभिषेकम् कृत्वा।
अभिषेकानन्तरं आचमनीयं समर्पयािम। वस्त्रार्थम् अक्षतान् समर्पयािम।
यज्ञोपवीताभरणार्थे अक्षतान् समर्पयािम।

दिव्यपरिमलगन्थान् धारयामि। गन्थस्योपरि हरिद्राकुङ्कुमं समर्पयामि। अक्षतान् समर्पयामि। पुष्पमालिकां समर्पयामि। पुष्पैः पूजयामि।

# ॥ महागणपति-अर्चना॥

१. ॐ सुमुखाय नमः १०. ॐ गणाध्यक्षाय नमः

२. ॐ एकदन्ताय नमः ११. ॐ फालचन्द्राय नमः

३. ॐ कपिलाय नमः १२. ॐ गजाननाय नमः

४. ॐ गजकर्णकाय नमः १३. ॐ वऋतुण्डाय नमः

५. ॐ लम्बोदराय नमः १४. ॐ शूर्पकर्णाय नमः

६. ॐ विकटाय नमः १५. ॐ हेरम्बाय नमः

७. ॐ विघ्रराजाय नमः १६. ॐ स्कन्दपूर्वजाय नमः

८. ॐ विनायकाय नमः १७. ॐ सिद्धिविनायकाय नमः

९. ॐ धूमकेतवे नमः १८. ॐ विघ्नेश्वराय नमः

ॐ श्री महागणपतये नमः नानाविधपरिमलपत्रपुष्पाणि समर्पयामि।

# ॥ आदित्य-अर्चना॥

१. ॐ मित्राय नमः ७. ॐ हिरण्यगर्भाय नमः

२. ॐ रवये नमः ८. ॐ मरीचये नमः

३. ॐ सूर्याय नमः ९. ॐ आदित्याय नमः

४. ॐ भानवे नमः १०. ॐ सवित्रे नमः

५. ॐ खगाय नमः ११. ॐ अर्काय नमः

६. ॐ पूष्णे नमः १२. ॐ भास्कराय नमः

ॐ श्री छाया-सुवर्चलाम्बा-समेत-श्री-सूर्यनारायण-परब्रह्मणे नमः नानाविधपरिमलपत्रपुष्पाणि समर्पयामि।

# ॥ लक्ष्मीनारायण-अर्चना॥

- १. ॐ केशवाय नमः
- २. ॐ नारायणाय नमः
- ३. ॐ माधवाय नमः
- ४. ॐ गोविन्दाय नमः
- ५. ॐ विष्णवे नमः
- ६. ॐ मधुसूदनाय नमः
- ७. ॐ त्रिविक्रमाय नमः
- ८. ॐ वामनाय नमः
- ९. ॐ श्रीधराय नमः
- १०. ॐ हृषीकेशाय नमः
- ११. ॐ पद्मनाभाय नमः
- १२. ॐ दामोदराय नमः
  - १. ॐ आदिलक्ष्म्यै नमः
  - २. ॐ धान्यलक्ष्म्यै नमः
  - ३. ॐ धैर्यलक्ष्म्यै नमः
  - ४. ॐ गजलक्ष्म्यै नमः
  - ५. ॐ सन्तानलक्ष्म्यै नमः

- १३. ॐ सङ्कर्षणाय नमः
- १४. ॐ वास्देवाय नमः
- १५. ॐ प्रद्युम्नाय नमः
- १६. ॐ अनिरुद्धाय नमः
- १७. ॐ पुरुषोत्तमाय नमः
- १८. ॐ अधोक्षजाय नमः
- १९. ॐ नृसिंहाय नमः
- २०. ॐ अच्युताय नमः
- २१. ॐ जुनार्दनाय नमः
- २२. ॐ उपेन्द्राय नमः
- २३. ॐ हरये नमः
- २४. ॐ श्रीकृष्णाय नमः
  - ६. ॐ विजयलक्ष्म्यै नमः
  - ७. ॐ विद्यालक्ष्म्यै नमः
  - ८. ॐ धनलक्ष्म्यै नमः
- ९. ॐ वरलक्ष्म्यै नमः
- १०. ॐ महालक्ष्म्यै नमः

🕉 श्री लक्ष्मीनारायणाय नमः नानाविधपरिमलपत्रपुष्पाणि समर्पयामि।

# ॥ महालक्ष्मी-समेत-श्री-सन्तानगोपाल-अर्चना॥

- १. ॐ केशवाय नमः
- २. ॐ नारायणाय नमः
- ३. ॐ माधवाय नमः
- ४. ॐ गोविन्दाय नमः
- ५. ॐ विष्णवे नमः
- ६. ॐ मधुसूदनाय नमः
- ७. ॐ त्रिविक्रमाय नमः
- ८. ॐ वामनाय नमः
- ९. ॐ श्रीधराय नमः
- १०. ॐ हृषीकेशाय नमः
- ११. ॐ पद्मनाभाय नमः
- १२. ॐ दामोदराय नमः
  - १. ॐ आदिलक्ष्म्यै नमः
  - २. ॐ धान्यलक्ष्म्ये नमः
  - ३. ॐ धैर्यलक्ष्म्यै नमः
  - ४. ॐ गजलक्ष्म्यै नमः
  - ५. ॐ सन्तानलक्ष्म्यै नमः

- १३. ॐ सङ्कर्षणाय नमः
- १४. ॐ वासुदेवाय नमः
- १५. ॐ प्रद्युम्नाय नमः
- १६. ॐ अनिरुद्धाय नमः
- १७. ॐ पुरुषोत्तमाय नमः
- १८. ॐ अधोक्षजाय नमः
- १९. ॐ नृसिंहाय नमः
- २०. ॐ अच्युताय नमः
- २१. ॐ जनार्दनाय नमः
- २२. ॐ उपेन्द्राय नमः
- २३. ॐ हरये नमः
- २४. ॐ श्रीकृष्णाय नमः
  - ६. ॐ विजयलक्ष्म्यै नमः
  - ७. ॐ विद्यालक्ष्म्यै नमः
  - ८. ॐ धनलक्ष्म्यै नमः
  - ९. ॐ वरलक्ष्म्यै नमः
- १०. ॐ महालक्ष्म्यै नमः

ॐ श्री महालक्ष्मीसमेत-श्री-सन्तानगोपाल-स्वामिने नमः नानाविधपरिमलपत्रपुष्पाणि समर्पयामि।

## ॥श्री-साम्बपरमेश्वर-अर्चना॥

१. ॐ भवाय देवाय नमः ५. ॐ रुद्राय देवाय नमः

२. ॐ शर्वाय देवाय नमः ६. ॐ उग्राय देवाय नमः

३. ॐ ईशानाय देवाय नमः ७. ॐ भीमाय देवाय नमः

४. ॐ पशुपतये देवाय नमः ८. ॐ महते देवाय नमः

ॐ श्री-साम्बपरमेश्वराय नमः नानाविधपरिमलपत्रपुष्पाणि समर्पयामि। ॐ नन्दिकेश्वराय नमः।

## ॥गौरी-अर्चना॥

१. ॐ भवस्य देवस्य पत्र्ये नमः

२. ॐ शर्वस्य देवस्य पत्र्ये नमः

३. ॐ ईशानस्य देवस्य पत्यै नमः

४. ॐ पश्पतेर्देवस्य पत्यै नमः

५. ॐ रुद्रस्य देवस्य पत्र्ये नमः

६. ॐ उग्रस्य देवस्य पत्र्ये नमः

७. ॐ भीमस्य देवस्य पत्र्ये नमः

८. ॐ महतो देवस्य पत्यै नमः

ॐ श्री-गौरी-देव्यै नमः नानाविधपरिमलपत्रपुष्पाणि समर्पयामि।

# ॥श्री-वल्लीदेवसेनासमेत-सुब्रह्मण्यस्वामी-अर्चना॥

१. ॐ ज्ञानशक्त्यात्मने नमः ८. ॐ कुमाराय नमः

२. ॐ स्कन्दाय नमः ९. ॐ षण्मुखाय नमः

३. ॐ अग्निभुवे नमः १०. ॐ कुक्कृटध्वजाय नमः

४. ॐ बाहुलेयाय नमः ११. ॐ शक्तिधराय नमः

५. ॐ गाङ्गेयाय नमः १२. ॐ गुहाय नमः

६. ॐ शरवणोद्भवाय नमः १३. ॐ ब्रह्मचारिणे नमः

७. ॐ कार्त्तिकेयाय नमः १४. ॐ षण्मातुराय नमः

#### १५. ॐ ऋौश्वभित्रे नमः

१६. ॐ शिखिवाहनाय नमः

ॐ श्री वल्लीदेवसेनासमेत-श्री-सुब्रह्मण्यस्वामिने नमः नानाविधपरिमलपत्रपुष्पाणि समर्पयामि।

# ॥श्री-राम-अर्चना॥

१३. ॐ परमात्मने नमः १. ॐ श्रीरामाय नमः १४. ॐ परस्मै ब्रह्मणे नमः २. ॐ रामभद्राय नमः १५. ॐ सचिदानन्दविग्रहाय ३. ॐ रामचन्द्राय नमः ४. ॐ शाश्वताय नमः १६. ॐ परस्मै ज्योतिषे नमः ५. ॐ राजीवलोचनाय नमः १७. ॐ परस्मै धाम्ने नमः ६. ॐ श्रीमते नमः १८. ॐ पराकाशाय नमः ७. ॐ राजेन्द्राय नमः १९. ॐ परात्पराय नमः ८. ॐ रघुपुङ्गवाय नमः २०. ॐ परेशाय नमः ९. ॐ जानकीवल्लभाय नमः २१. ॐ पारगाय नमः १०. ॐ जैत्राय नमः २२. ॐ पाराय नमः ११. ॐ जितामित्राय नमः २३. ॐ सर्वदेवात्मकाय नमः १२. ॐ जनार्दनाय नमः २४. ॐ पराय नमः

# ॥श्री-सीता-अर्चना॥

| १. ॐ श्रीसीतायै नमः   | ७. ॐ अवनिसुतायै नमः        |
|-----------------------|----------------------------|
| २. ॐ जानको नमः        | ८. ॐ रामायै नमः            |
| ३. ॐ देव्यै नमः       | ९. ॐ राक्षसान्तप्रकारिण्यै |
| ४. ॐ वैदेह्यै नमः     | १०. ॐ रत्नगुप्तायै नमः     |
| ५. ॐ राघवप्रियायै नमः | ११. ॐ मातुलुङ्गी नमः       |
| ६. ॐ रमायै नमः        | १२. ॐ मैथिल्ये नमः         |

# ॥श्री-हनूमदु-अर्चना॥

- १. ॐ हनुमते नमः
- २. ॐ अञ्जनासूनवे नमः
- ३. ॐ वायुपुत्राय नमः
- ४. ॐ महाबलाय नमः
- ५. ॐ कपीन्द्राय नमः
- ६. ॐ पिङ्गलाक्षाय नमः
- ७. ॐ लङ्काद्वीपभयङ्कराय नमः
- ८. ॐ प्रभञ्जनसुताय नमः
- ९. ॐ वीराय नमः
- १०. ॐ सीताशोकविनाशकाय नमः
- ११. ॐ अक्षहन्त्रे नमः
- १२. ॐ रामसखाय नमः
- १३. ॐ रामकार्यधुरन्धराय नमः
- १४. ॐ महौषधगिरेर्धारिणे नमः
- १५. ॐ वानरप्राणदायकाय नमः
- १६. ॐ वारीशतारकाय नमः
- १७. ॐ मैनाकगिरिभञ्जनाय नमः
- १८. ॐ निरञ्जनाय नमः
- १९. ॐ जितक्रोधाय नमः
- २०. ॐ कदलीवनसंवृताय नमः
- २१. ॐ ऊर्ध्वरेतसे नमः
- २२. ॐ महासत्त्वाय नमः
- २३. ॐ सर्वमन्त्रप्रवर्तकाय नमः
- २४. ॐ महालिङ्गप्रतिष्ठात्रे नमः
- २५. ॐ बाष्पकृत् जपतान्तराय नमः
- २६. ॐ नित्यं शिवध्यानपराय नमः

२७. ॐ शिवपूजापरायणाय नमः

ॐ श्री सीता-लक्ष्मण-भरत-शत्रुघ्न-हनूमत्-समेत-श्री-रामचन्द्र-परब्रह्मणे नमः नानाविधपरिमलपत्रपुष्पाणि समर्पयामि।

# ॥ उत्तराङ्गपूजा ॥

धूपमाघ्रापयामि।

पश्चेहूतो ह् वै नामैषः। तं वा एतं पश्चेहूत् सन्तम्।
पश्चेहोतेत्याचंक्षते प्रोक्षेण। प्रोक्षंप्रिया इव् हि देवाः॥
पश्चहारतीदीपं दर्शयामि। दीपानन्तरम् आचमनीयं समर्पयामि।
गायत्रीदीपं दर्शयामि। दीपानन्तरम् आचमनीयं समर्पयामि।

उद्दींप्यस्व जातवेदोऽपृघ्निर्ऋतिं ममं।
पृश् श्र्श्च मह्यमार्वह जीवंनं च दिशों दिश॥
मा नों हिश्सीज्ञातवेदो गामश्वं पुरुषं जर्गत्।
अविंश्रद्य आगंहि श्रिया मा परिपातय॥
एकहारतीदीपं दर्शयामि।
दीपानन्तरम् आचमनीयं समर्पयामि।

# नैवेद्यं कृत्वा।

श्री महागणपतये नमः श्री छाया-सुवर्चलाम्बा-समेतश्री सूर्यनारायण-परब्रह्मणे नमः लक्ष्मी-नारायणाय नमः

श्री-महालक्ष्मी-समेत-श्री-सन्तानगोपाल-स्वामिने नमः श्री-साम्बपरमेश्वराय नमः नन्दिकेश्वराय नमः श्री वल्लीदेवसेनासमेत-श्री-सुब्रह्मण्यस्वामिने नमः श्री सीता-लक्ष्मण-भरत-शत्रुघ्न-हनूमत्-समेत-श्री-रामचन्द्र परब्रह्मणे नमः ( ) महानैवेद्यं निवेदयामि। मध्ये मध्ये अमृतपानीयं समर्पयामि। अमृतापिधानमसि। हस्तप्रक्षालनं समर्पयामि। पादप्रक्षालनं समर्पयामि। निवेदनानन्तरम् आचमनीयं समर्पयामि।

> पूगीफलसमायुक्तं नागवल्लीदलैर्युतम्। कर्पूरचूर्णसंयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्॥ कर्पूरताम्बूलं समर्पयामि।

सोमो वा एतस्यं राज्यमादंत्ते। यो राजा सन्नाज्यो वा सोमेन यजंते। देवसुवामेतानि ह्वी १ विं भवन्ति। एतावंन्तो वै देवाना १ स्वाः। त एवास्में स्वान्प्रयंच्छन्ति। त एंनुं पुनेः सुवन्ते राज्यायं। देवसू राजां भवति॥ न तत्र सूर्यो भाति न चन्द्रतारकं नेमा विद्युतो भान्ति कुतोऽयमग्निः। तमेव भान्तमनुभाति सर्वं तस्य भासा सर्वमिदं विभाति॥

श्री महागणपतये नमः श्री छाया-सुवर्चलाम्बा-समेतश्री सूर्यनारायण-परब्रह्मणे नमः लक्ष्मी-नारायणाय नमः

श्री-महालक्ष्मी-समेत-श्री-सन्तानगोपाल-स्वामिने नमः श्री-साम्बपरमेश्वराय नमः नन्दिकेश्वराय नमः श्री वहीदेवसेनासमेत-श्री-सुब्रह्मण्यस्वामिने नमः श्री सीता-लक्ष्मण-भरत-शत्रुघ्न-हनूमत्-समेत-श्री-रामचन्द्र परब्रह्मणे नमः समस्त अपराध क्षमापनार्थं कर्पूरनीराजनं दर्शयामि। कर्पूरनीरजनानन्तरम् आचमनीयं समर्पयामि।

योऽपां पुष्पं वेदे। पुष्पंवान् प्रजावाँन् पशुमान् भंवति। चन्द्रमा वा अपां पुष्पम्। पुष्पंवान् प्रजावाँन् पशुमान् भंवति। य एवं वेदे। योऽपामायतेनं वेदे। आयतेनवान् भवति।

> ओं तद्वृह्म। ओं तद्वायुः। ओं तदात्मा। ओं तथ्सत्यम्। ओं तथ्सर्वम्। ओं तत्पुरोर्नमः॥

अन्तश्चरितं भूतेषु गृहायां विश्वमूर्तिषु। त्वं यज्ञस्त्वं वषद्कारस्त्वमिन्द्रस्त्वः रुद्रस्त्वं विष्णुस्त्वं ब्रह्म त्वं प्रजापितः। त्वं तंदाप आपो ज्योती रसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः सुवरोम्॥

यो वेदादौ स्वंरः प्रोक्तो वेदान्ते च प्रतिष्ठितः। तस्यं प्रकृतिंलीनस्य यः परंः स महेश्वंरः॥

आवाहिताभ्यः सर्वाभ्यो-देवताभ्यो नमः वेदोक्तमत्रपुष्पाञ्जलिं समर्पयामि।

स्वर्णपुष्पं समर्पयामि।

यानि कानि च पापानि जन्मान्तरकृतानि च। तानि तानि विनश्यन्ति प्रदक्षिण पदे पदे॥ प्रदक्षिणं कृत्वा।

नमः शिवाय साम्बाय सगणाय ससूनवे। सनन्दिने सगङ्गाय सवृषाय नमो नमः॥

नमः शिवाभ्यां नवयौवनाभ्याम् परस्पराश्चिष्टवपुर्धराभ्याम् । नगेन्द्रकन्यावृषकेतनाभ्याम् नमो नमः शङ्करपार्वतीभ्याम॥

#### ॥ नमस्कारमन्त्राः ॥

नमो हिरण्यबाहवे हिरण्यवर्णाय हिरण्यरूपाय हिरण्यपतयेऽम्बिकापतय उमापतये पशुपतये नमो नमः॥

> ऋत र सत्यं पेरं ब्रह्म पुरुषं कृष्णपिङ्गंलम्। ऊर्ध्वरेतं विरूपाक्षं विश्वरूपाय वै नमो नर्मः॥

सर्वो वै रुद्रस्तस्मै रुद्राय नमो अस्तु।
पुरुषो वै रुद्रः सन्महो नमो नमः।
विश्वं भूतं भुवंनं चित्रं बंहुधा जातं जायंमानं च यत्।
सर्वो ह्यंष रुद्रस्तस्मै रुद्राय नमो अस्तु॥
कद्रुद्राय प्रचेतसे मीढुष्टंमाय तब्यंसे।
वो चेम शन्तंम हृदे। सर्वो ह्यंष रुद्रस्तस्मै रुद्राय नमो अस्तु॥
अनन्तकोटिप्रदक्षिणनमस्कारान् समर्पयामि। नमस्कारान् कृत्वा।
छत्र-चामर-नृत्त-गीत-वाद्य-समस्त-राजोपचारान् समर्पयामि।

बाण-रावण-चण्डेश-नन्दि-भृङ्गि-रिटादयः। महादेवप्रसादोऽयं सर्वे गृह्णन्तु शाम्भवाः॥ नन्दिकेश्वराय नमः बलिं निवेदयामि। ॐ हर। ॐ हर। ॐ हर।

> शङ्खमध्ये स्थितं तोयं भ्रामितं शङ्करोपरि। अङ्गलग्नं मनुष्याणां ब्रह्महत्यायुतं दहेत्॥ शङ्खजलेन प्रोक्ष्य।

सालग्रामशिलावारि पापहारि शरीरिणाम्। आजन्मकृतपापानां प्रायश्चित्तं दिने दिने॥

अकालमृत्युहरणं सर्वव्याधिनिवारणम्। सर्वपापक्षयकरं शिवपादोदकं शुभम्॥

इति अभिषेकतीर्थं प्राश्य।

साधु वाऽसाधु वा कर्म यद्यदाचरितं मया। तत्सर्वं कृपया देव गृहाणाऽऽराधनं मम॥

हृद्वचकर्णिका-मध्यमुमया सह शङ्कर। प्रविश त्वं महादेव सर्वेरावरणैः सह॥ सम्पूजकानां परिपालकानां यतेन्द्रियानां च तपोधनानाम्। देशस्य राष्ट्रस्य कुलस्य राज्ञाम् करोतु शान्तिं भगवान् कुलेशः॥ अनया पूजया सपरिवार-साम्ब-परमेश्वरः प्रीयताम्।

#### ॥उद्वासनम्॥

निर्याणमुद्रया पुष्पाण्यादाय आघ्राय हृदये स्थापयित्वा उद्वासयेत्। निर्माल्यं शिरसि धारयेत्।

# ॥ ब्रह्मपारस्तोत्रम्॥

# प्रचेतस ऊचुः

ब्रह्मपारं मुने श्रोतुमिच्छामः परमं स्तवम्। जपता कण्डुना देवो येनाऽऽराध्यत केशवः॥५४॥

#### सोम उवाच

पारं परं विष्णुरपारपारः
परः परेभ्यः परमार्थरूपी।
स ब्रह्मपारः परपारभूतः
परः पराणामपि पारपारः॥५५॥

स कारणं कारणतस्ततोऽपि तस्यापि हेतुः परहेतुहेतुः। कार्येषु चैवं सह कर्मकर्तृ-रूपैरशेषैरवतीह सर्वम्॥५६॥

ब्रह्म प्रभुर्ब्रह्म स सर्वभूतो ब्रह्म प्रजानां पतिरच्युतोऽसौ। ब्रह्माव्ययं नित्यमजं स विष्णुः अपक्षयाद्यैरखिलैरसङ्गिः ॥५७॥ ब्रह्माक्षरमजं नित्यं यथाऽसौ पुरुषोत्तमः। तथा रागादयो दोषाः प्रयान्तु प्रशमं मम॥५८॥

#### सोम उवाच

एतद्बह्म पराख्यं वै संस्तवं परमं जपन्। अवाप परमां सिद्धिं समाराध्य स केशवम्॥५९॥

इमं स्तवं यः पठित शृणुयाद्वाऽपि नित्यशः। स कामदोषैरखिलैर्मुक्तः प्राप्नोति वाञ्छितम्॥

॥इति श्रीविष्णुपुराणे प्रथमें ऽशे पश्चदशो ऽध्याये ब्रह्मपारस्तोत्रं सम्पूर्णम्॥

कायेन वाचा मनसेन्द्रियैर्वा बुद्ध्याऽऽत्मना वा प्रकृतेः स्वभावात्। करोमि यद्यत् सकलं परस्मै नारायणायेति समर्पयामि॥

ॐ तत्सद्बह्मार्पणमस्तु।

आचामेत्।



# ॥ एकादशीव्रतम् – श्री-महाविष्णुपूजा ॥

# ॥ पूर्वाङ्गविघ्नेश्वरपूजा॥

(आचम्य)

शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्। प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविद्रोपशान्तये॥

प्राणान् आयम्य। ॐ भूः + भूर्भुवः सुवरोम्। (अप उपस्पृश्य, पृष्पाक्षतान् गृहीत्वा) ममोपात्तसमस्त दुरितक्षयद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं करिष्यमाणस्य कर्मणः निर्विघ्नेन परिसमाप्त्यर्थम् आदौ विघ्नेश्वरपूजां करिष्ये।

ॐ गृणानां त्वा गृणपंति हवामहे कविं केवीनामुंपमश्रंवस्तमम्। ज्येष्ठराजं ब्रह्मणां ब्रह्मणस्पत् आ नः शृण्वन्नृतिभिः सीद् सादनम्॥ अस्मिन् हरिद्राबिम्बे महागणपतिं ध्यायामि, आवाहयामि।

ॐ महागणपतये नमः आसनं समर्पयामि।
पादयोः पाद्यं समर्पयामि। हस्तयोरध्यं समर्पयामि।
आचमनीयं समर्पयामि।
ॐ भूर्भुवस्सुवः। शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।
स्नानानन्तरमाचमनीयं समर्पयामि।
वस्नार्थमक्षतान् समर्पयामि।
यज्ञोपवीताभरणार्थे अक्षतान् समर्पयामि।
दिव्यपरिमलगन्धान् धारयामि।
गन्धस्योपरि हरिद्राकुङ्कुमं समर्पयामि। अक्षतान् समर्पयामि।
पुष्पमालिकां समर्पयामि। पुष्पैः पूजयामि।

#### ॥ अर्चना ॥

१. ॐ सुमुखाय नमः

१०. ॐ गणाध्यक्षाय नमः

२. ॐ एकदन्ताय नमः

११. ॐ फालचन्द्राय नमः

३. ॐ कपिलाय नमः

१२. ॐ गजाननाय नमः

४. ॐ गजकर्णकाय नमः

१३. ॐ वऋतुण्डाय नमः

५. ॐ लम्बोदराय नमः

१४. ॐ शूर्पकर्णाय नमः

६. ॐ विकटाय नमः

१५. ॐ हेरम्बाय नमः

७. ॐ विघ्नराजाय नमः

१६. ॐ स्कन्दपूर्वजाय नमः

८. ॐ विनायकाय नमः

१७. ॐ सिद्धिविनायकाय नमः

९. ॐ धूमकेतवे नमः

१८. ॐ विघ्नेश्वराय नमः

नानाविधपरिमलपत्रपुष्पाणि समर्पयामि॥ धूपमाघ्रापयामि।

अलङ्कारदीपं सन्दर्शयामि।

नैवेद्यम्।

ताम्बूलं समर्पयामि।

कर्पूरनीराजनं समर्पयामि।

कर्पूरनीराजनानन्तरमाचमनीयं समर्पयामि।

वऋतुण्डमहाकाय कोटिसूर्यसमप्रभ। अविघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा॥

प्रार्थनाः समर्पयामि।

अनन्तकोटिप्रदक्षिणनमस्कारान् समर्पयामि। छत्रचामरादिसमस्तोपचारान् समर्पयामि।

# ॥ प्रधान पूजा - एकादशीपूजा॥

शुक्राम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्। प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविद्रोपशान्तये॥

प्राणान् आयम्य। ॐ भूः + भूर्भुवः सुव्रोम्।

#### ॥सङ्कल्पः॥

ममोपात्तसमस्तदुरितक्षयद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं शुभे शोभने मुहूर्ते अद्यब्रह्मणः द्वितीयपरार्द्धे श्वेतवराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे प्रथमे पादे जम्बूद्वीपे भारतवर्षे भरतखण्डे मेरोः दक्षिणेपार्श्वे शकाब्दे अस्मिन् वर्तमाने व्यावहारिके प्रभवादि षष्टिसंवत्सराणां मध्ये ( ) नाम संवत्सरे उत्तरायणे / दक्षिणायने (ग्रीष्म / वर्ष / शरद् / हेमन्त / शिशिर / वसन्त) ऋतौ (मेष / वृषभ / मिथुन / कर्कटक / सिंह / कन्या / तुला / वृश्चिक / धनुर् / मकर / कुम्भ / मीन) मासे (शुक्न / कृष्ण) पक्षे (एकादश्यां / द्वादश्यां) शुभितथौ (इन्दु / भौम / बुध / गुरु / भृगु / स्थिर / भानु) वासरयुक्तायाम् ( ) नक्षत्र ( ) नाम योग ( ) करण युक्तायां च एवंगुणविशेषणविशिष्टायाम् अस्याम् (एकादश्यां / द्वादश्यां) शुभितथौ अस्माकं सहकुटुम्बानां क्षेमस्थैर्य-धैर्य-वीर्य-विजय आयुरारोग्य ऐश्वर्याभिवृद्धर्थम् धर्मार्थकाममोक्षचतुर्विधफलपुरुषार्थसिद्धर्थं पुत्रपौत्राभिवृद्धर्थम् इष्टकाम्यार्थसिद्धर्थम् मम इहजन्मनि पूर्वजन्मनि जन्मान्तरे च सम्पादितानां ज्ञानाज्ञानकृतमहापातकचतुष्टय व्यतिरिक्तानां रहस्यकृतानां प्रकाशकृतानां सर्वेषां पापानां सद्य अपनोदनद्वारा सकल पापक्षयार्थं श्रीभूमिनीलासमेतश्रीमहाविष्णुप्रीत्यर्थं यावच्छक्ति ध्यानावाहनादि षोडशोपचारपूजां करिष्ये तदङ्गं कलशपूजां च करिष्ये।

<sup>&</sup>lt;sup>४</sup>पृष्टं ५७२ पश्यताम्

<sup>&#</sup>x27;पृष्टं ५७३ पश्यताम्

६पृष्टं ५७४ पश्यताम्

श्रीविघ्नेश्वराय नमः यथास्थानं प्रतिष्ठापयामि। (गणपति प्रसादं शिरसा गृहीत्वा)

#### ॥ आसन-पूजा॥

पृथिव्या मेरुपृष्ठ ऋषिः। सुतलं छन्दः। कूर्मो देवता॥

पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता। त्वं च धारय मां देवि पवित्रं चाऽऽसनं कुरु॥

#### ॥ घण्टापूजा ॥

आगमार्थं तु देवानां गमनार्थं तु रक्षसाम्। घण्टारवं करोम्यादौ देवताऽऽह्वानकारणम्॥

#### ॥ कलशपूजा ॥

ॐ कलशाय नमः दिव्यगन्धान् धारयामि। ॐ गङ्गायै नमः। ॐ यमुनायै नमः। ॐ गोदावर्यै नमः। ॐ सरस्वत्यै नमः। ॐ नर्मदायै नमः। ॐ सिन्धवे नमः। ॐ कावेर्यै नमः। ॐ सप्तकोटिमहातीर्थान्यावाहयामि।

(अथ कलशं स्पृष्ट्वा जपं कुर्यात्) आपो वा इद॰ सर्वं विश्वां भूतान्यापंः प्राणा वा आपंः पृशव् आपोऽन्नमापोऽमृतमापंः सम्राडापों विराडापंः स्वराडापृश्छन्दाृङ्स्यापो ज्योतीृङ्ष्यापो यजू्ङ्ष्यापंः सत्यमापः सर्वां देवता आपो भूर्भुवः सुवराप ओम्॥

> कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः। मूले तत्र स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः॥

कुक्षौ तु सागराः सर्वे सप्तद्वीपा वसुन्धरा। ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदोऽप्यथर्वणः। अङ्गेश्च सहिताः सर्वे कलशाम्बुसमाश्रिताः॥

गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति। नर्मदे सिन्धुकावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु॥

सर्वे समुद्राः सरितः तीर्थानि च ह्रदा नदाः। आयान्तु विष्णुपूजार्थं दुरितक्षयकारकाः॥ ॐ भूर्भुवः सुवो भूर्भुवः सुवो भूर्भुवः सुवेः।

(इति कलशजलेन सर्वोपकरणानि आत्मानं च प्रोक्ष्य।)

#### ॥ आत्मपूजा ॥

ॐ आत्मने नमः, दिव्यगन्धान् धारयामि।

१. ॐ आत्मने नमः ४. ॐ जीवात्मने नमः

२. ॐ अन्तरात्मने नमः ५. ॐ परमात्मने नमः

३. ॐ योगात्मने नमः ६. ॐ ज्ञानात्मने नमः

#### समस्तोपचारान् समर्पयामि।

देहो देवालयः प्रोक्तो जीवो देवः सनातनः। त्यजेदज्ञाननिर्माल्यं सोऽहं भावेन पूजयेत्॥

# ॥ पीठपूजा ॥

१. ॐ आधारशक्त्ये नमः ८. ॐ रत्नवेदिकाये नमः

२. ॐ मूलप्रकृत्यै नमः ९. ॐ स्वर्णस्तम्भाय नमः

३. ॐ आदिकूर्माय नमः १०. ॐ श्वेतच्छत्राय नमः

४. ॐ आदिवराहाय नमः ११. ॐ कल्पकवृक्षाय नमः

५. ॐ अनन्ताय नमः १२. ॐ क्षीरसमुद्राय नमः

६. ॐ पृथिव्ये नमः १३. ॐ सितचामराभ्यां नमः

७. ॐ रत्नमण्डपाय नमः १४. ॐ योगपीठासनाय नमः

#### ॥ गुरु ध्यानम्॥

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुर्गुरुर्देवो महेश्वरः। गुरुः साक्षात् परं ब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः॥

# ॥ षोडशोपचारपूजा॥

ध्यायेत् चतुर्भुजं देवं शङ्ख्यक्रगदाधरम्। पीताम्बरयुगोपेतं लक्ष्मीयुक्तं विभूषितम्। लसत्कौस्तुभशोभाढ्यं मेघश्यामं सुलोचनम्॥ अस्मिन् बिम्बे श्रीभूमिनीलासमेतं महाविष्णुं ध्यायामि।

सहस्रंशीर्षा पुरुषः। सहस्राक्षः सहस्रंपात्। स भूमिं विश्वतो वृत्वा। अत्यंतिष्ठद्दशाङ्गुलम्॥

अस्मिन् बिम्बे श्रीभूमिनीलासमेतं महाविष्णुम् आवाहयामि।

पुरुष एवेद सर्वम्। यद्भूतं यच् भव्यम्। उतामृतत्वस्येशांनः। यदन्नेनातिरोहंति॥

#### आसनं समर्पयामि।

पृतावानस्य मिहुमा। अतो ज्यायाईश्च पूर्रुषः। पादौंऽस्य विश्वां भूतानिं। त्रिपादंस्यामृतंं दिवि॥ पादां समर्पयामि।

त्रिपादूर्ध्व उदैत्पुरुषः। पादौँ उस्येहा ऽऽभवात्पुनः। ततो विश्वङ्कां कामत्। साशनानशने अभि॥ अर्घ्यं समर्पयामि।

तस्माँद्विराडंजायत। विराजो अधि पूर्रुषः। स जातो अत्यरिच्यत। पृश्चाद्भृमिमथों पुरः॥ आचमनीयं समर्पयामि।

यत्पुरुषेण ह्विषां। देवा यज्ञमतंन्वत। वसन्तो अस्याऽऽसीदाज्यम्। ग्रीष्म इध्मः श्ररद्धविः॥ मधुपर्कं समर्पयामि।

स्प्तास्यांऽऽसन् परिधयः। त्रिः सप्त स्मिधः कृताः। देवा यद्यज्ञं तन्वानाः। अबंधन् पुरुषं पृशुम्॥ शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि। स्नानानन्तरम् आचमनीयं समर्पयामि।

> तं युज्ञं बहिषि प्रौक्षन्ं। पुरुषं जातमंग्रतः। तेनं देवा अयेजन्त। साध्या ऋषंयश्च ये॥ वस्नं समर्पयामि।

तस्मौद्यज्ञार्थ्सर्वेहुतंः। सम्भृतं पृषदाज्यम्। पृशू इस्ता इश्चेके वायुव्यान्। आरुण्यान्ग्राम्याश्च ये॥

#### यज्ञोपवीतं समर्पयामि।

तस्मौद्यज्ञाथ्संर्वहुतंः। ऋचः सामानि जज्ञिरे। छन्दार्श्स जज्ञिरे तस्मौत्। यजुस्तस्मादजायत॥

दिव्यपरिमलगन्धान् धारयामि। गन्धस्योपरि हरिद्राकुङ्कुमं समर्पयामि। अक्षतान् समर्पयामि।

> तस्मादश्वां अजायन्त। ये के चोंभ्यादंतः। गार्वो ह जिज्ञेरे तस्मांत्। तस्मांज्ञाता अजावयंः॥ पुष्पाणि समर्पयामि। पुष्पैः पूजयामि।

#### ॥ अङ्गपूजा ॥

ॐ वराहाय नमः — पादौ पूजयामि ξ. सङ्कर्षणाय नमः — गुल्फो पूजयामि ₹. कालात्मने नमः — जानुनी पूजयामि ₹. — जङ्घे पूजयामि विश्वरूपाय नमः 8. ५. क्रोढाय नमः — ऊरू पूजयामि — कटिं पूजयामि भोक्रे नमः દ્દ. — मेढ़ं पूजयामि विष्णवे नमः *9*. — नाभिं पूजयामि हिरण्यगर्भाय नमः ۷. — कुक्षिं पूजयामि श्रीवत्सधारिणे नमः 9. परमात्मने नमः — हृदयं पूजयामि ۶٥. सर्वास्त्रधारिणे नमः — वक्षः पूजयामि ११. — कण्ठं पूजयामि १२. वनमालिने नमः

मुखं पूजयामिनेत्राणि पूजयामि

१३. सर्वात्मने नमः

१४.

सहस्राक्षाय नमः

- १५. सुप्रभाय नमः ललाटं पूजयामि
- १६. चम्पकनासिकाय नमः नासिकां पूजयामि
- १७. सर्वेशाय नमः कर्णौ पूजयामि
- १८. सहस्रशिरसे नमः शिरः पूजयामि
- १९. नीलमेघनिभाय नमः केशान् पूजयामि
- २०. महापुरुषाय नमः सर्वाणि अङ्गानि पूजयामि

## ॥ चतुर्विंशति नामपूजा॥

१. ॐ केशवाय नमः

२. ॐ नारायणाय नमः

३. ॐ माधवाय नमः

४. ॐ गोविन्दाय नमः

५. ॐ विष्णवे नमः

६. ॐ मधुसूदनाय नमः

७. ॐ त्रिविक्रमाय नमः

८. ॐ वामनाय नमः

९. ॐ श्रीधराय नमः

१०. ॐ हृषीकेशाय नमः

११. ॐ पद्मनाभाय नमः

१२. ॐ दामोदराय नमः

१३. ॐ सङ्कर्षणाय नमः

१४. ॐ वास्देवाय नमः

१५. ॐ प्रद्युम्नाय नमः

१६. ॐ अनिरुद्धाय नमः

१७. ॐ पुरुषोत्तमाय नमः

१८. ॐ अधोक्षजाय नमः

१९. ॐ नृसिंहाय नमः

२०. ॐ अच्युताय नमः

२१. ॐ जनार्दनाय नमः

२२. ॐ उपेन्द्राय नमः

२३. ॐ हरये नमः

२४. ॐ श्रीकृष्णाय नमः

# ॥ विष्णुसहस्रनामावलिः॥

|                           | 9  |                  |    |
|---------------------------|----|------------------|----|
| विश्वस्मै नमः             |    | शर्वाय नमः       |    |
| विष्णवे नमः               |    | शिवाय नमः        |    |
| वषद्वाराय नमः             |    | स्थाणवे नमः      |    |
| भूतभव्यभवत्प्रभवे नमः     |    | भूतादये नमः      |    |
| भूतकृते नमः               |    | निधयेऽव्ययाय नमः | 30 |
| भूतभृते नमः               |    | सम्भवाय नमः      |    |
| भावाय नमः                 |    | भावनाय नमः       |    |
| भूतात्मने नमः             |    | भर्त्रे नमः      |    |
| भूतभावनाय नमः             |    | प्रभवाय नमः      |    |
| पूतात्मने नमः             | १० | प्रभवे नमः       |    |
| परमात्मने नमः             |    | ईश्वराय नमः      |    |
| मुक्तानां परमायै गतये नमः |    | स्वयम्भुवे नमः   |    |
| अव्ययाय नमः               |    | शम्भवे नमः       |    |
| पुरुषाय नमः               |    | आदित्याय नमः     |    |
| साक्षिणे नमः              |    | पुष्कराक्षाय नमः | ४० |
| क्षेत्रज्ञाय नमः          |    | महास्वनाय नमः    |    |
| अक्षराय नमः               |    | अनादिनिधनाय नमः  |    |
| योगाय नमः                 |    | धात्रे नमः       |    |
| योगविदां नेत्रे नमः       |    | विधात्रे नमः     |    |
| प्रधानपुरुषेश्वराय नमः    | २० | धातव उत्तमाय नमः |    |
| नारसिंहवपुषे नमः          |    | अप्रमेयाय नमः    |    |
| श्रीमते नमः               |    | हृषीकेशाय नमः    |    |
| केशवाय नमः                |    | पद्मनाभाय नमः    |    |
| पुरुषोत्तमाय नमः          |    | अमरप्रभवे नमः    |    |
| सर्वस्मै नमः              |    | विश्वकर्मणे नमः  | ५० |
|                           |    |                  |    |

| 14 3/16/4 11 1141/22 |    |                        |     |
|----------------------|----|------------------------|-----|
| मनवे नमः             |    | विक्रमाय नमः           |     |
| त्वष्टे नमः          |    | ऋमाय नमः               |     |
| स्थविष्ठाय नमः       |    | अनुत्तमाय नमः          | ८०  |
| स्थविराय ध्रुवाय नमः |    | दुराधर्षाय नमः         |     |
| अग्राह्याय नमः       |    | कृतज्ञाय नमः           |     |
| शाश्वताय नमः         |    | कृतये नमः              |     |
| कृष्णाय नमः          |    | आत्मवते नमः            |     |
| लोहिताक्षाय नमः      |    | सुरेशाय नमः            |     |
| प्रतर्देनाय नमः      |    | शरणाय नमः              |     |
| प्रभूताय नमः         | ६० | शर्मणे नमः             |     |
| त्रिककुष्याम्ने नमः  |    | विश्वरेतसे नमः         |     |
| पवित्राय नमः         |    | प्रजाभवाय नमः          |     |
| मङ्गलाय परस्मै नमः   |    | अह्ने नमः              | ९०  |
| ईशानाय नमः           |    | संवत्सराय नमः          |     |
| प्राणदाय नमः         |    | व्यालाय नमः            |     |
| प्राणाय नमः          |    | प्रत्ययाय नमः          |     |
| ज्येष्ठाय नमः        |    | सर्वदर्शनाय नमः        |     |
| श्रेष्ठाय नमः        |    | अजाय नमः               |     |
| प्रजापतये नमः        |    | सर्वेश्वराय नमः        |     |
| हिरण्यगर्भाय नमः     | 90 | सिद्धाय नमः            |     |
| भूगर्भाय नमः         |    | सिद्धये नमः            |     |
| माधवाय नमः           |    | सर्वादये नमः           |     |
| मधुसूदनाय नमः        |    | अच्युताय नमः           | १०० |
| ईश्वराय नमः          |    | वृषाकपये नमः           |     |
| विक्रमिणे नमः        |    | अमेयात्मने नमः         |     |
| धन्विने नमः          |    | सर्वयोगविनिस्सृताय नमः |     |
| मेधाविने नमः         |    | वसवे नमः               |     |
|                      |    |                        |     |
|                      |    |                        |     |

| विश्वासहस्रमानावालः |     |                   | 52  |
|---------------------|-----|-------------------|-----|
| वसुमनसे नमः         |     | कवये नमः          |     |
| सत्याय नमः          |     | लोकाध्यक्षाय नमः  |     |
| समात्मने नमः        |     | सुराध्यक्षाय नमः  |     |
| असम्मिताय नमः       |     | धर्माध्यक्षाय नमः |     |
| समाय नमः            |     | कृताकृताय नमः     |     |
| अमोघाय नमः          | ११० | चतुरात्मने नमः    |     |
| पुण्डरीकाक्षाय नमः  |     | चतुर्व्यूहाय नमः  |     |
| वृषकर्मणे नमः       |     | चतुर्दष्ट्राय नमः |     |
| वृषाकृतये नमः       |     | चतुर्भुजाय नमः    | १४० |
| रुद्राय नमः         |     | भ्राजिष्णवे नमः   |     |
| बहुशिरसे नमः        |     | भोजनाय नमः        |     |
| बभ्रवे नमः          |     | भोक्रे नमः        |     |
| विश्वयोनये नमः      |     | सहिष्णवे नमः      |     |
| शुचिश्रवसे नमः      |     | जगदादिजाय नमः     |     |
| अमृताय नमः          |     | अनघाय नमः         |     |
| शाश्वतस्स्थाणवे नमः | १२० | विजयाय नमः        |     |
| वरारोहाय नमः        |     | जेत्रे नमः        |     |
| महातपसे नमः         |     | विश्वयोनये नमः    |     |
| सर्वगाय नमः         |     | पुनर्वसवे नमः     | १५० |
| सर्वविद्धानवे नमः   |     | उपेन्द्राय नमः    |     |
| विष्वक्सेनाय नमः    |     | वामनाय नमः        |     |
| जनार्दनाय नमः       |     | प्रांशवे नमः      |     |
| वेदाय नमः           |     | अमोघाय नमः        |     |
| वेदविदे नमः         |     | शुचये नमः         |     |
| अव्यङ्गाय नमः       |     | ऊर्जिताय नमः      |     |
| वेदाङ्गाय नमः       | १३० | अतीन्द्राय नमः    |     |
| वेदविदे नमः         |     | सङ्ग्रहाय नमः     |     |
|                     |     |                   |     |
|                     |     |                   |     |

| सर्गाय नमः          |    | सुरानन्दाय नमः    |     |
|---------------------|----|-------------------|-----|
| धृतात्मने नमः १     | ६० | गोविन्दाय नमः     |     |
| नियमाय नमः          |    | गोविदां पतये नमः  |     |
| यमाय नमः            |    | मरीचये नमः        |     |
| वेद्याय नमः         |    | दमनाय नमः         | १९० |
| वैद्याय नमः         |    | हंसाय नमः         |     |
| सदायोगिने नमः       |    | सुपर्णाय नमः      |     |
| वीरघ्ने नमः         |    | भुजगोत्तमाय नमः   |     |
| माधवाय नमः          |    | हिरण्यनाभाय नमः   |     |
| मधवे नमः            |    | सुतपसे नमः        |     |
| अतीन्द्रियाय नमः    |    | पद्मनाभाय नमः     |     |
| महामायाय नमः १      | ७० | प्रजापतये नमः     |     |
| महोत्साहाय नमः      |    | अमृत्यवे नमः      |     |
| महाबलाय नमः         |    | सर्वदृशे नमः      |     |
| महाबुद्धये नमः      |    | सिंहाय नमः        | २०० |
| महावीर्याय नमः      |    | सन्धात्रे नमः     |     |
| महाशक्तये नमः       |    | सन्धिमते नमः      |     |
| महाद्युतये नमः      |    | स्थिराय नमः       |     |
| अनिर्देश्यवपुषे नमः |    | अजाय नमः          |     |
| श्रीमते नमः         |    | दुर्मर्षणाय नमः   |     |
| अमेयात्मने नमः      |    | शास्त्रे नमः      |     |
| महाद्रिधृषे नमः १   | ८० | विश्रुतात्मने नमः |     |
| महेष्वासाय नमः      |    | सुरारिघ्ने नमः    |     |
| महीभर्त्रे नमः      |    | गुरवे नमः         |     |
| श्रीनिवासाय नमः     |    | गुरुतमाय नमः      | २१० |
| सतां गतये नमः       |    | धाम्ने नमः        |     |
| अनिरुद्धाय नमः      |    | सत्याय नमः        |     |
|                     |    |                   |     |

| अनिमिषाय नमः<br>स्रग्विणे नमः<br>वाचस्पतये उदारिधये नमः<br>अग्रण्ये नमः<br>ग्रामण्ये नमः<br>श्रीमते नमः २२०  | सत्कृताय नमः<br>साधवे नमः<br>जह्नवे नमः<br>नारायणाय नमः<br>नराय नमः<br>असङ्ख्येयाय नमः   |  |
|--|--|--|
| न्यायाय नमः नेत्रे नमः समीरणाय नमः सहस्रमूर्भे नमः विश्वात्मने नमः सहस्रपदे नमः आवर्तनाय नमः निवृत्तात्मने नमः संवृताय नमः सहस्रपर्दनाय नमः अहःसंवर्तकाय नमः अहःसंवर्तकाय नमः धरणीधराय नमः प्रसादाय नमः प्रसात्रात्मने नमः विश्वधृषे नमः विश्वधृषे नमः | अप्रमेयात्मने नमः<br>विशिष्टाय नमः<br>शिष्टकृते नमः २५०<br>शुचये नमः<br>सिद्धार्थाय नमः<br>सिद्धसङ्कल्पाय नमः<br>सिद्धिसाधनाय नमः<br>वृषाहिणे नमः<br>वृषमाय नमः<br>वृष्णवेणे नमः<br>वृष्पर्वणे नमः<br>वृष्पेत्राय नमः<br>वर्धमानाय नमः<br>वर्धमानाय नमः<br>श्रितसागराय नमः<br>सुभुजाय नमः<br>सुभुजाय नमः |  |

| वाग्मिने नमः           |     | कामघ्ने नमः        |     |
|------------------------|-----|--------------------|-----|
| महेन्द्राय नमः         |     | कामकृते नमः        |     |
| वसुदाय नमः             |     | कान्ताय नमः        |     |
| वसवे नमः               | २७० | कामाय नमः          |     |
| नैकरूपाय नमः           |     | कामप्रदाय नमः      |     |
| बृहद्रूपाय नमः         |     | प्रभवे नमः         |     |
| शिपिविष्टाय नमः        |     | युगादिकृते नमः     | 300 |
| प्रकाशनाय नमः          |     | युगावर्ताय नमः     |     |
| ओजस्तेजोद्युतिधराय नमः |     | नैकमायाय नमः       |     |
| प्रकाशात्मने नमः       |     | महाशनाय नमः        |     |
| प्रतापनाय नमः          |     | अदृश्याय नमः       |     |
| ऋद्धाय नमः             |     | व्यक्तरूपाय नमः    |     |
| स्पष्टाक्षराय नमः      |     | सहस्रजिते नमः      |     |
| मन्त्राय नमः           | २८० | अनन्तजिते नमः      |     |
| चन्द्रांशवे नमः        |     | इष्टाय नमः         |     |
| भास्करद्युतये नमः      |     | अविशिष्टाय नमः     |     |
| अमृतांशूद्भवाय नमः     |     | शिष्टेष्टाय नमः    | ३१० |
| भानवे नमः              |     | शिखण्डिने नमः      |     |
| शशबिन्दवे नमः          |     | नहुषाय नमः         |     |
| सुरेश्वराय नमः         |     | वृषाय नमः          |     |
| औषधाय नमः              |     | ऋोधघ्ने नमः        |     |
| जगतस्सेतवे नमः         |     | ऋोधकृत्कर्त्रे नमः |     |
| सत्यधर्मपराऋमाय नमः    |     | विश्वबाहवे नमः     |     |
| भूतभव्यभवन्नाथाय नमः   | २९० | महीधराय नमः        |     |
| पवनाय नमः              |     | अच्युताय नमः       |     |
| पावनाय नमः             |     | प्रथिताय नमः       |     |
| अनलाय नमः              |     | प्राणाय नमः        | ३२० |
|                        |     |                    |     |
|                        |     |                    |     |

| प्राणदाय नमः       |     | पद्मगर्भाय नमः         |     |
|--------------------|-----|------------------------|-----|
| वासवानुजाय नमः     |     | शरीरभृते नमः           |     |
| अपान्निधये नमः     |     | महर्द्धये नमः          | ३५० |
| अधिष्ठानाय नमः     |     | ऋद्धाय नमः             |     |
| अप्रमत्ताय नमः     |     | वृद्धात्मने नमः        |     |
| प्रतिष्ठिताय नमः   |     | महाक्षाय नमः           |     |
| स्कन्दाय नमः       |     | गरुडध्वजाय नमः         |     |
| स्कन्दधराय नमः     |     | अतुलाय नमः             |     |
| धुर्याय नमः        |     | शरभाय नमः              |     |
| वरदाय नमः          | ३३० | भीमाय नमः              |     |
| वायुवाहनाय नमः     |     | समयज्ञाय नमः           |     |
| वासुदेवाय नमः      |     | हविर्हरये नमः          |     |
| बृहद्भानवे नमः     |     | सर्वलक्षणलक्षण्याय नमः | ३६० |
| आदिदेवाय नमः       |     | लक्ष्मीवते नमः         |     |
| पुरन्दराय नमः      |     | समितिञ्जयाय नमः        |     |
| अशोकाय नमः         |     | विक्षराय नमः           |     |
| तारणाय नमः         |     | रोहिताय नमः            |     |
| ताराय नमः          |     | मार्गीय नमः            |     |
| शूराय नमः          |     | हेतवे नमः              |     |
| शौरये नमः          | ३४० | दामोदराय नमः           |     |
| जनेश्वराय नमः      |     | सहाय नमः               |     |
| अनुकूलाय नमः       |     | महीधराय नमः            |     |
| शतावर्ताय नमः      |     | महाभागाय नमः           | ०७६ |
| पद्मिने नमः        |     | वेगवते नमः             |     |
| पद्मनिभेक्षणाय नमः |     | अमिताशनाय नमः          |     |
| पद्मनाभाय नमः      |     | उद्भवाय नमः            |     |
| अरविन्दाक्षाय नमः  |     | क्षोभणाय नमः           |     |
|                    |     |                        |     |
|                    |     |                        |     |

| देवाय नमः       |     | शक्तिमतां श्रेष्ठाय नमः |     |
|-----------------|-----|-------------------------|-----|
| श्रीगर्भाय नमः  |     | धर्माय नमः              |     |
| परमेश्वराय नमः  |     | धर्मविदुत्तमाय नमः      |     |
| करणाय नमः       |     | वैकुण्ठाय नमः           |     |
| कारणाय नमः      |     | पुरुषाय नमः             |     |
| कर्त्रे नमः     | ३८० | प्राणाय नमः             |     |
| विकर्त्रे नमः   |     | प्राणदाय नमः            |     |
| गहनाय नमः       |     | प्रणवाय नमः             |     |
| गुहाय नमः       |     | पृथवे नमः               | ४१० |
| व्यवसायाय नमः   |     | हिरण्यगर्भाय नमः        |     |
| व्यवस्थानाय नमः |     | शत्रुघ्नाय नमः          |     |
| संस्थानाय नमः   |     | व्याप्ताय नमः           |     |
| स्थानदाय नमः    |     | वायवे नमः               |     |
| ध्रुवाय नमः     |     | अधोक्षजाय नमः           |     |
| परर्द्धये नमः   |     | ऋतवे नमः                |     |
| परमस्पष्टाय नमः | ३९० | सुदर्शनाय नमः           |     |
| तुष्टाय नमः     |     | कालाय नमः               |     |
| पुष्टाय नमः     |     | परमेष्ठिने नमः          |     |
| शुभेक्षणाय नमः  |     | परिग्रहाय नमः           | ४२० |
| रामाय नमः       |     | उग्राय नमः              |     |
| विरामाय नमः     |     | संवत्सराय नमः           |     |
| विरताय नमः      |     | दक्षाय नमः              |     |
| मार्गाय नमः     |     | विश्रामाय नमः           |     |
| नेयाय नमः       |     | विश्वदक्षिणाय नमः       |     |
| नयाय नमः        |     | विस्ताराय नमः           |     |
| अनयाय नमः       | 800 | स्थावरस्थाणवे नमः       |     |
| वीराय नमः       |     | प्रमाणाय नमः            |     |

| अर्थाय नमः ४३० सूक्ष्माय नमः सुघोषाय नमः महाकोशाय नमः महाभोगाय नमः महाभोगाय नमः महाभागाय नमः महाभागाय नमः महाभागाय नमः जितकोधाय नमः चिदारणाय नमः स्थिष्ठाय नमः चिदारणाय नमः स्थापनाय नमः स्थापने नमः नेकात्मने नमः केकात्मने नमः थेठ० वित्तराय नमः वित्तराय नमः यज्ञाय नमः वत्तराय नमः वत्तराय नमः यज्ञाय नमः स्वापनाय नमः प्रज्ञाय नमः प | बीजायाव्ययाय नमः     | स्म्खाय नमः     |
|---|----------------------|-----------------|
| अनर्थाय नमः  महाकोशाय नमः  महाकोशाय नमः  महाभोगाय नमः  महाभागाय नमः  अनिर्विण्णाय नमः  स्थिवष्ठाय नमः  अभवे नमः  धर्मयूपाय नमः  महामखाय नमः  महामखाय नमः  महामखाय नमः  स्वत्राय नमः  अभवे नमः  अभवे नमः  अभवे नमः  अभवे नमः  अभवे नमः  अभवे नमः  स्वापनाय नमः  महामखाय नमः  नक्षत्रनेमये नमः  अभवे नमः  अभाय नमः  अभवे नमः  स्वर्माय नमः  स्वर्माय नमः  चल्सराय नमः  वल्सराय नमः  उष्णि नमः  अभवे नमः  अभवे नमः  अभवे नमः  सर्वाय नमः  अभवे नमः  सर्वाय नमः  सर्वाय नमः  अभवे नमः  अभवे नमः  सर्वे नमः  अभवे नमः  अभवे नमः  अभवे नमः  | अर्थाय नमः ४३०       | स्क्ष्माय नमः   |
| महाकोशाय नमः महाभोगाय नमः महाभोगाय नमः स्विह्याय नमः अनिर्विण्णाय नमः स्थिविष्ठाय नमः अभुवे नमः अभुवे नमः धर्मयूपाय नमः महामखाय नमः महामखाय नमः महामखाय नमः अ४० नक्षत्रिणे नमः अमाय नमः अमाय नमः अमाय नमः अमाय नमः अस्ते नमः चल्सराय नमः चल्सराय नमः अ७० समीहनाय नमः चल्सराय नमः चल्सने नमः चल्सराय नमः चल्सने नमः चल्पाय नमः चलपाय नमः  | अनर्थाय नमः          | सुघोषाय नमः     |
| महाभोगाय नमः सुहदे नमः ४६० महाभागाय नमः मनोहराय नमः अनिर्विण्णाय नमः जितक्रोधाय नमः स्थिवष्ठाय नमः विदारणाय नमः धर्मयूपाय नमः स्वापनाय नमः महामखाय नमः स्वशाय नमः नक्षत्रनेमये नमः ४४० नक्षत्रिणे नमः नैकात्मने नमः श्वामाय नमः वत्सराय नमः वत्सराय नमः यज्ञाय नमः वत्सराय नमः यज्ञाय नमः चज्ञाय नमः प्रेष्णे नमः धर्मशुपे नमः स्ताङ्गतये नमः धर्मशुपे नमः स्ताङ्गतये नमः धर्मशुपे नमः स्ताङ्गतये नमः स्वर्षिने नमः स्ताङ्गतये नमः सते नमः स्राय नमः अ५० सर्वर्षिने नमः स्ताङ्गतये नमः अ५० सर्वदर्षिने नमः स्राय नमः असते नमः असते नमः  | महाकोशाय नमः         |                 |
| अनिर्विण्णाय नमः स्थिविष्ठाय नमः अभुवे नमः धर्मयूपाय नमः महामखाय नमः नक्षत्रनेमये नमः अभाय नमः चल्सराय नमः वल्सराय नमः वल्सराय नमः वल्सने नमः चल्सने नमः चल्सने नमः चल्सने नमः प्रज्ञाय नमः प्रज्ञाय नमः भहेज्याय नमः भत्रज्ञाय नमः भत्रज्ञाय नमः सत्राय नमः अभवे नमः धर्मभूषे नमः धर्मभूषे नमः सर्वदर्शिने नमः सर्वदर्शिने नमः असते नमः असते नमः   | •                    | सुहृदे नमः ४६०  |
| स्थिविष्ठाय नमः अभुवे नमः धर्मयूपाय नमः महामखाय नमः नक्षत्रनेमये नमः अभवे नमः अठ० नक्षत्रनेमये नमः अठ० नक्षत्रिणे नमः अमाय नमः अमाय नमः अमाय नमः अमाय नमः वत्सराय नमः यज्ञाय नमः यज्ञाय नमः महेज्याय नमः भतेत्रवे नमः स्विष्णाय नमः वत्सराय नमः वत्सराय नमः चत्सराय नमः चत्सराय नमः चत्सराय नमः चत्सराय नमः चत्सराय नमः धर्मशुपे नमः धर्मशुपे नमः धर्मशुपे नमः धर्मशुपे नमः स्विष्णीने नमः सर्विष्णीने नमः सर्वेदर्शिने नमः विमुक्तात्मने नमः असरे नमः  | महाधनाय नमः          |                 |
| अभुवे नमः धर्मयूपाय नमः महामखाय नमः महामखाय नमः नक्षत्रनेमये नमः अ४० नक्षत्रिणे नमः अमाय नमः अमाय नमः अमाय नमः अमाय नमः अमार्य नमः अमार्य नमः वत्सराय नमः वत्सराय नमः वत्सराय नमः वत्सराय नमः यज्ञाय नमः यज्ञाय नमः प्रज्ञाय नमः महेज्याय नमः भताङ्गतये नमः अ५० धर्मणे नमः धर्मणे नमः सर्वदर्शिने नमः विमुक्तात्मने नमः असते नमः  | अनिर्विण्णाय नमः     | जितक्रोधाय नमः  |
| धर्मयूपाय नमः महामखाय नमः नक्षत्रनेमये नमः अ४० व्यापिने नमः स्ववशाय नमः नेकात्मने नमः स्वापनाय नमः विमुक्तात्मने नमः स्ववशाय नमः स्ववशाय नमः विमुक्तात्मने नमः स्ववशाय नमः स्ववशाय नमः नेकात्मने नमः नेकात्मने नमः नेकात्मने नमः विस्ताय नमः वत्सराय नमः वत्सराय नमः वत्सराय नमः वत्सराय नमः प्रज्ञाय नमः प्रमृषे नमः प्रमृषे नमः प्रमृषे नमः पर्वदर्शिने नमः सर्वदर्शिने नमः सर्वे नमः असरे नमः असरे नमः   | स्थविष्ठाय नमः       | वीरबाहवे नमः    |
| महामखाय नमः नक्षत्रनेमये नमः अ४० नक्षत्रिणे नमः श्वमाय नमः वत्सराय नमः वत्सराय नमः श्वन्याय नमः श्वन्याय नमः सहेज्याय नमः महेज्याय नमः भतेज्याय नमः सताङ्गतये नमः सताङ्गतये नमः सर्वदर्शिने नमः विमुक्तात्मने नमः असते नमः असते नमः  | अभुवे नमः            | विदारणाय नमः    |
| नक्षत्रनेमये नमः ४४० व्यापिने नमः नैकात्मने नमः सैकात्मने नमः सैकात्मने नमः सैकात्मने नमः सैकात्मने नमः वत्सराय नमः ४७० समीहनाय नमः वत्सराय नमः वित्सने नमः इज्याय नमः प्रत्रगर्भाय नमः प्रत्रगर्भाय नमः प्रत्रगर्भाय नमः पर्मगुपे नमः पर्मगुपे नमः स्ताङ्गतये नमः सर्वदर्शिने नमः सर्वदर्शिने नमः असते नमः असते नमः असते नमः असते नमः  | धर्मयूपाय नमः        | स्वापनाय नमः    |
| नक्षत्रिणे नमः क्षमाय नमः क्षमाय नमः क्षामाय नमः वत्सराय नमः वत्सराय नमः वत्सराय नमः वत्सराय नमः वत्सराय नमः वत्सराय नमः विम्कात्मे नमः धर्मकृते नमः धर्मकृते नमः सर्वदर्शिने नमः विम्कात्मने नमः असते नमः असते नमः   | महामेखाय नमः         | स्ववशाय नमः     |
| क्षमाय नमः विमुक्तात्मने नमः नैककर्मकृते नमः विस्तराय नमः वित्सराय नमः विष्कृते नमः विद्वित्तराय नमः विद्वित्तर्तराय नमः विद्वित्तर्तर्वत्तर्तर्वत् | नक्षत्रनेमये नमः ४४० | व्यापिने नमः    |
| क्षामाय नमः वत्सराय नमः ४७०<br>समीहनाय नमः वत्सलाय नमः<br>यज्ञाय नमः विमुक्तात्मने नमः धर्मश्रुव नमः<br>सताङ्गतय नमः ४५०<br>सत्विमुक्तात्मने नमः असते नमः<br>असते नमः   | नक्षत्रिणे नमः       |                 |
| समीहनाय नमः यज्ञाय नमः यज्ञाय नमः इज्याय नमः महेज्याय नमः महेज्याय नमः अतवे नमः सताङ्गतये नमः सर्वदर्शिने नमः विमुक्तात्मने नमः वत्सलाय नमः विद्यलाय नमः प्रमण्य नमः धर्मगुपे नमः धर्मकृते नमः धर्मणे नमः सर्वे नमः सर्वे नमः असते नमः  | क्षमाय नमः           | नैककर्मकृते नमः |
| यज्ञाय नमः विमुक्तात्मने नमः वित्सने नमः वित्सने नमः वित्सने नमः विवस्तिने नमः विवस्तिने नमः विवस्तिने नमः विवस्तिने नमः विवस्तिने नमः असते नमः असते नमः  | क्षामाय नमः          | वत्सराय नमः ४७० |
| इज्याय नमः  | समीहनाय नमः          | वत्सलाय नमः     |
| महेज्याय नमः धनेश्वराय नमः धर्मगुपे नमः धर्मगुपे नमः धर्मकृते नमः धर्मकृते नमः सर्वदर्शिने नमः सर्वदर्शिने नमः सर्वेत नमः असते नमः असते नमः   | यज्ञाय नमः           | I               |
| ऋतवे नमः       धर्मगुपे नमः         सत्राय नमः       धर्मकृते नमः         सताङ्गतये नमः       ४५०       धर्मिणे नमः         सर्वदर्शिने नमः       सते नमः         विमुक्तात्मने नमः       असते नमः  | इज्याय नमः           | रत्नगर्भाय नमः  |
| सत्राय नमः धर्मकृते नमः<br>सताङ्गतये नमः ४५० धर्मिणे नमः<br>सर्वदर्शिने नमः सते नमः<br>विमुक्तात्मने नमः असते नमः   | महेज्याय नमः         |                 |
| सताङ्गतये नमः ४५० धर्मिणे नमः<br>सर्वदर्शिने नमः सते नमः<br>विमुक्तात्मने नमः असते नमः  | ऋतवे नमः             |                 |
| सर्वदर्शिने नमः सते नमः<br>विमुक्तात्मने नमः असते नमः   | सत्राय नमः           |                 |
| विमुक्तात्मने नमः असते नमः  | •                    | धर्मिणे नमः     |
|   | सर्वदर्शिने नमः      |                 |
| सर्वज्ञाय नमः ४८०   | विमुक्तात्मने नमः    | असते नमः        |
|   | सर्वज्ञाय नमः        | क्षराय नमः ४८०  |
| ज्ञानाय उत्तमाय नमः अक्षराय नमः   | ज्ञानाय उत्तमाय नमः  | अक्षराय नमः     |
| सुव्रताय नमः अविज्ञात्रे नमः  | सुव्रताय नमः         | अविज्ञात्रे नमः |
|   |                      |                 |

| सहस्रांशवे नमः   | I   | सत्यसन्धाय नमः           | ५१० |
|------------------|-----|--------------------------|-----|
| विधात्रे नमः     |     | दाशार्हाय नमः            |     |
| कृतलक्षणाय नमः   |     | सात्त्वतां पतये नमः      |     |
| गभस्तिनेमये नमः  |     | जीवाय नमः                |     |
| सत्त्वस्थाय नमः  |     | विनयितासाक्षिणे नमः      |     |
| सिंहाय नमः       |     | मुकुन्दाय नमः            |     |
| भूतमहेश्वराय नमः |     | ॲमितविक्रमाय नमः         |     |
| आदिदेवाय नमः     | ४९० | अम्भोनिधये नमः           |     |
| महादेवाय नमः     |     | अनन्तात्मने नमः          |     |
| देवेशाय नमः      |     | महोदधिशयाय नमः           |     |
| देवभृद्गुरवे नमः |     | अन्तकाय नमः              | ५२० |
| उत्तराय नमः      |     | अजाय नमः                 |     |
| गोपतये नमः       |     | महार्हाय नमः             |     |
| गोन्ने नमः       |     | स्वाभाव्याय नमः          |     |
| ज्ञानगम्याय नमः  |     | जितामित्राय नमः          |     |
| पुरातनाय नमः     |     | प्रमोदनाय नमः            |     |
| शरीरभूतभृते नमः  |     | आनन्दाय नमः              |     |
| भोक्रे नमः       | ५०० | नन्दनाय नमः              |     |
| कपीन्द्राय नमः   |     | नन्दाय नमः               |     |
| भूरिदक्षिणाय नमः |     | सत्यधर्मणे नमः           |     |
| सोमपाय नमः       |     | त्रिविक्रमाय नमः         | ५३० |
| अमृतपाय नमः      |     | महर्षये कपिलाचार्याय नमः |     |
| सोमाय नमः        |     | कृतज्ञाय नमः             |     |
| पुरुजिते नमः     |     | मेदिनीपतये नमः           |     |
| पुरुसत्तमाय नमः  |     | त्रिपदाय नमः             |     |
| विनयाय नमः       |     | त्रिदशाध्यक्षाय नमः      |     |
| जयाय नमः         |     | महाशृङ्गाय नमः           |     |
|                  | l   |                          |     |
|                  |     |                          |     |

| कृतान्तकृते नमः        |     | ज्योतिरादित्याय नमः   |     |
|------------------------|-----|-----------------------|-----|
| महावराहाय नमः          |     | सहिष्णवे नमः          |     |
| गोविन्दाय नमः          |     | गतिसत्तमाय नमः        |     |
| सुषेणाय नमः            | ५४० | सुधन्वने नमः          |     |
| कनकाङ्गिदने नमः        |     | खण्डपरशवे नमः         |     |
| गुह्याय नमः            |     | दारुणाय नमः           |     |
| गभीराय नमः             |     | द्रविणप्रदाय नमः      | 400 |
| गहनाय नमः              |     | दिवस्पृशे नमः         |     |
| गुप्ताय नमः            |     | सर्वदग्व्यासाय नमः    |     |
| चक्रगदाधराय नमः        |     | वाचस्पतयेऽयोनिजाय नमः |     |
| वेधसे नमः              |     | त्रिसाम्ने नमः        |     |
| स्वाङ्गाय नमः          |     | सामगाय नमः            |     |
| अजिताय नमः             |     | साम्ने नमः            |     |
| कृष्णाय नमः            | ५५० | निर्वाणाय नमः         |     |
| दृढाय नमः              |     | भेषजाय नमः            |     |
| सङ्कर्षणायाच्युताय नमः |     | भिषजे नमः             |     |
| वरुणाय नमः             |     | सन्त्रासकृते नमः      | ५८० |
| वारुणाय नमः            |     | शमाय नमः              |     |
| वृक्षाय नमः            |     | शान्ताय नमः           |     |
| पुष्कराक्षाय नमः       |     | निष्टायै नमः          |     |
| महामनसे नमः            |     | शान्त्यै नमः          |     |
| भगवते नमः              |     | परायणाय नमः           |     |
| भगघ्ने नमः             |     | शुभाङ्गाय नमः         |     |
| आनन्दिने नमः           | ५६० | शान्तिदाय नमः         |     |
| वनमालिने नमः           |     | स्रष्ट्रे नमः         |     |
| हलायुधाय नमः           |     | कुमुदाय नमः           |     |
| आदित्याय नमः           |     | कुवलेशयाय नमः         | ५९० |
|                        |     |                       |     |
|                        |     |                       |     |

| 14 3/16/4/11 1141/2 |     |                       |     |
|---------------------|-----|-----------------------|-----|
| गोहिताय नमः         |     | नन्दये नमः            |     |
| गोपतये नमः          |     | ज्योतिर्गणेश्वराय नमः |     |
| गोन्ने नमः          |     | विजितात्मने नमः       | ६२० |
| वृषभाक्षाय नमः      |     | अविधेयात्मने नमः      |     |
| वृषप्रियाय नमः      |     | सत्कीर्तये नमः        |     |
| अनिवर्तिने नमः      |     | छिन्नसंशयाय नमः       |     |
| निवृत्तात्मने नमः   |     | उदीर्णाय नमः          |     |
| सङ्केषेत्रे नमः     |     | सर्वतश्चक्षुषे नमः    |     |
| क्षेमकृते नमः       |     | अनीशाय नमः            |     |
| शिवाय नमः           | ६०० | शाश्वतस्स्थिराय नमः   |     |
| श्रीवत्सवक्षसे नमः  |     | भूशयाय नमः            |     |
| श्रीवासाय नमः       |     | भूषणाय नमः            |     |
| श्रीपतये नमः        |     | भूतये नमः             | ६३० |
| श्रीमतां वराय नमः   |     | विशोकाय नमः           |     |
| श्रीदाय नमः         |     | शोकनाशनाय नमः         |     |
| श्रीशाय नमः         |     | अर्चिष्मते नमः        |     |
| श्रीनिवासाय नमः     |     | अर्चिताय नमः          |     |
| श्रीनिधये नमः       |     | कुम्भाय नमः           |     |
| श्रीविभावनाय नमः    |     | विशुद्धात्मने नमः     |     |
| श्रीधराय नमः        | ६१० | विशोधनाय नमः          |     |
| श्रीकराय नमः        |     | अनिरुद्धाय नमः        |     |
| श्रेयसे नमः         |     | अप्रतिरथाय नमः        |     |
| श्रीमते नमः         |     | प्रद्युम्नाय नमः      | ६४० |
| लोकत्रयाश्रयाय नमः  |     | अमितविक्रमाय नमः      |     |
| स्वक्षाय नमः        |     | कालनेमिनिघ्ने नमः     |     |
| स्वङ्गाय नमः        |     | वीराय नमः             |     |
| शतानन्दाय नमः       |     | शौरये नमः             |     |
|                     |     |                       |     |
|                     |     |                       |     |

| शूरजनेश्वराय नमः    |     | महाकर्मणे नमः    |     |
|---------------------|-----|------------------|-----|
| त्रिलोकात्मने नमः   |     | महातेजसे नमः     |     |
| त्रिलोकेशाय नमः     |     | महोरगाय नमः      |     |
| केशवाय नमः          |     | महाऋतवे नमः      |     |
| केशिघ्ने नमः        |     | महायज्वने नमः    |     |
| हरये नमः            | ६५० | महायज्ञाय नमः    |     |
| कामदेवाय नमः        |     | महाहविषे नमः     |     |
| कामपालाय नमः        |     | स्तव्याय नमः     |     |
| कामिने नमः          |     | स्तवप्रियाय नमः  | ६८० |
| कान्ताय नमः         |     | स्तोत्राय नमः    |     |
| कृतागमाय नमः        |     | स्तुतये नमः      |     |
| अनिर्देश्यवपुषे नमः |     | स्तोत्रे नमः     |     |
| विष्णवे नमः         |     | रणप्रियाय नमः    |     |
| वीराय नमः           |     | पूर्णाय नमः      |     |
| अनन्ताय नमः         |     | पूरियत्रे नमः    |     |
| धनञ्जयाय नमः        | ६६० | पुण्याय नमः      |     |
| ब्रह्मण्याय नमः     |     | पुण्यकीर्तये नमः |     |
| ब्रह्मकृते नमः      |     | अनामयाय नमः      |     |
| ब्रह्मणे नमः        |     | मनोजवाय नमः      | ६९० |
| ब्रह्मणे नमः        |     | तीर्थकराय नमः    |     |
| ब्रह्मविवर्धनाय नमः |     | वसुरेतसे नमः     |     |
| ब्रह्मविदे नमः      |     | वसुप्रदाय नमः    |     |
| ब्राह्मणाय नमः      |     | वसुप्रदाय नमः    |     |
| ब्रह्मिणे नमः       |     | वासुदेवाय नमः    |     |
| ब्रह्मज्ञाय नमः     |     | वसुवे नमः        |     |
| ब्राह्मणप्रियाय नमः | ०७३ | वसुमनसे नमः      |     |
| महाऋमाय नमः         |     | हिवषे नमः        |     |
|                     |     |                  |     |
|                     |     |                  |     |

| सद्गतये नमः       |     | नैकस्मै नमः       |     |
|-------------------|-----|-------------------|-----|
| सत्कृतये नमः      | 900 | सवाय नमः          |     |
| सत्तायै नमः       |     | काय नमः           |     |
| सद्भुतये नमः      |     | कस्मै नमः         |     |
| सत्परायणाय नमः    |     | यस्मै नमः         | ७३० |
| शूरसेनाय नमः      |     | तस्मै नमः         |     |
| यदुश्रेष्ठाय नमः  |     | पदायानुत्तमाय नमः |     |
| सन्निवासाय नमः    |     | लोकबन्धवे नमः     |     |
| सुयामुनाय नमः     |     | लोकनाथाय नमः      |     |
| भूतावासाय नमः     |     | माधवाय नमः        |     |
| वासुदेवाय नमः     |     | भक्तवत्सलाय नमः   |     |
| सर्वोसुनिलयाय नमः | ७१० | सुवर्णवर्णाय नमः  |     |
| अनलाय नमः         |     | हेमाङ्गाय नमः     |     |
| दर्पघ्ने नमः      |     | वराङ्गाय नमः      |     |
| दर्पदाय नमः       |     | चन्दनाङ्गदिने नमः | ०४० |
| दप्ताय नमः        |     | वीरघ्ने नमः       |     |
| दुर्धराय नमः      |     | विषमाय नमः        |     |
| अपराजिताय नमः     |     | शून्याय नमः       |     |
| विश्वमूर्तये नमः  |     | घृताशिषे नमः      |     |
| महामूर्तये नमः    |     | अचलाय नमः         |     |
| दीप्तमूर्तये नमः  |     | चलाय नमः          |     |
| अमूर्तिमते नमः    | ७२० | अमानिने नमः       |     |
| अनेकमूर्तये नमः   |     | मानदाय नमः        |     |
| अव्यक्ताय नमः     |     | मान्याय नमः       |     |
| शतमूर्तये नमः     |     | लोकस्वामिने नमः   | ७५० |
| शतान्नाय नमः      |     | त्रिलोकधृषे नमः   |     |
| एकस्मै नमः        |     | सुमेधसे नमः       |     |
|                   |     |                   |     |

| मेधजाय नमः               |     | दुरावासाय नमः           | ०८० |
|--------------------------|-----|-------------------------|-----|
| धन्याय नमः               |     | दुरारिघ्ने नमः          |     |
| सत्यमेधसे नमः            |     | शुभाङ्गाय नमः           |     |
| धराधराय नमः              |     | लोकसारङ्गाय नमः         |     |
| तेजोवृषाय नमः            |     | सुतन्तवे नमः            |     |
| द्युतिधराय नमः           |     | तन्तुवर्धनाय नमः        |     |
| सर्वशस्त्रभृतां वराय नमः |     | इन्द्रकर्मणे नमः        |     |
| प्रग्रहाय नमः            | ०३७ | महाकर्मणे नमः           |     |
| निग्रहाय नमः             |     | कृतकर्मणे नमः           |     |
| व्यग्राय नमः             |     | कृतागमाय नमः            |     |
| नैकशृङ्गाय नमः           |     | उद्भवाय नमः             | ७९० |
| गदाग्रजाय नमः            |     | सुन्दराय नमः            |     |
| चतुर्मूर्तये नमः         |     | सुन्दाय नमः             |     |
| चतुर्बोहवे नमः           |     | रत्ननाभाय नमः           |     |
| चतुर्व्यूहाय नमः         |     | सुलोचनाय नमः            |     |
| चतुर्गतये नमः            |     | अर्काय नमः              |     |
| चतुरात्मने नमः           |     | वाजसनाय नमः             |     |
| चतुर्भावाय नमः           | ०७७ | शृङ्गिणे नमः            |     |
| चतुर्वेदविदे नमः         |     | जयन्ताय नमः             |     |
| एकपदे नमः                |     | सर्वविज्ञयिने नमः       |     |
| समावर्ताय नमः            |     | सुवर्णबिन्दवे नमः       | ८०० |
| अनिवृत्तात्मने नमः       |     | अक्षोभ्याय नमः          |     |
| दुर्जयाय नमः             |     | सर्ववागीश्वरेश्वराय नमः |     |
| दुरतिऋमाय नमः            |     | महाह्रदाय नमः           |     |
| दुर्लभाय नमः             |     | महागर्ताय नमः           |     |
| दुर्गमाय नमः             |     | महाभूताय नमः            |     |
| दुर्गाय नमः              |     | महानिधये नमः            |     |
|                          |     |                         |     |
|                          |     |                         |     |

|                         |     | भयनाशनाय नमः    |     |
|-------------------------|-----|-----------------|-----|
| कुन्दराय नमः            |     | अणवे नमः        |     |
| कुन्दाय नमः             |     | बृहते नमः       |     |
| पर्जन्याय नमः           | ८१० | कृशाय नमः       |     |
| पावनाय नमः              | ·   | स्थूलाय नमः     |     |
| अनिलाय नमः              |     | गुणभृते नमः     |     |
| अमृताशाय नमः            |     | निर्गुणाय नमः   | ०४১ |
| अमृतवपुषे नमः           |     | महते नमः        |     |
| सर्वज्ञाय नमः           |     | अधृताय नमः      |     |
| सर्वतोमुखाय नमः         |     | स्वधृताय नमः    |     |
| सुलभाय नमः              |     | स्वास्याय नमः   |     |
| सुव्रताय नमः            |     | प्राग्वंशाय नमः |     |
| सिद्धाय नमः             |     | वंशवर्धनाय नमः  |     |
| शत्रुजिते नमः           | ८२० | भारभृते नमः     |     |
| शत्रुतापनाय नमः         |     | कथिताय नमः      |     |
| न्यग्रोधाय नमः          |     | योगिने नमः      |     |
| उदुम्बराय नमः           |     | योगीशाय नमः     | ८५० |
| अश्वत्थाय नमः           |     | सर्वकामदाय नमः  |     |
| चाणूरान्ध्रनिषूदनाय नमः |     | आश्रमाय नमः     |     |
| सहस्राचिषे नमः          |     | श्रमणाय नमः     |     |
| सप्तजिह्वाय नमः         |     | क्षामाय नमः     |     |
| सप्तैधसे नमः            |     | सुपर्णाय नमः    |     |
| सप्तवाहनाय नमः          |     | वायुवाहनाय नमः  |     |
| अमूर्तये नमः            | ८३० | धनुर्धराय नमः   |     |
| अनघाय नमः               |     | धनुर्वेदाय नमः  |     |
| अचिन्त्याय नमः          |     | दण्डाय नमः      |     |
| भयकृते नमः              |     | दमयित्रे नमः    | ८६० |
|                         |     |                 |     |

|     | भोक्रे नमः          |  |
|-----|---------------------|--|
|     | सुखदाय नमः          |  |
|     | नैकजाय नमः          | ८९०  |
|     | अग्रजाय नमः         |  |
|     | अनिर्विण्णाय नमः    |  |
|     | सदामर्षिणे नमः      |  |
|     | लोकाधिष्ठानाय नमः   |  |
|     | अद्भुताय नमः        |  |
|     | सनाते नमः           |  |
| ०७ऽ | सनातनतमाय नमः       |  |
|     | कपिलाय नमः          |  |
|     | कपये नमः            |  |
|     | अव्ययाय नमः         | ९००  |
|     | स्वस्तिदाय नमः      |  |
|     |                     |  |
|     | स्वस्तये नमः        |  |
|     |                     |  |
|     | स्वस्तिदक्षिणाय नमः |  |
|     | अरौद्राय नमः        |  |
| ८८० | कुण्डलिने नमः       |  |
|     | चिक्रिणे नमः        |  |
|     | विक्रमिणे नमः       |  |
|     | ऊर्जितशासनाय नमः    | ९१०  |
|     | शब्दातिगाय नमः      |  |
|     |                     |  |
|     |                     |  |
|     | शर्वरीकराय नमः      |  |
|     |                     | नैकजाय नमः अग्रजाय नमः अनिर्विण्णाय नमः सदामर्षिणे नमः लोकाधिष्ठानाय नमः अद्भुताय नमः सनाते नमः सनाते नमः कपेलाय नमः कपेलाय नमः कपये नमः अव्ययाय नमः स्वस्तिदाय नमः स्वस्तिकृते नमः स्वस्तिदक्षिणाय नमः अरौद्राय नमः अरौद्राय नमः उरौद्राय नमः विक्रमिणे नमः विक्रमिणे नमः शब्दातिगाय नमः शब्दसहाय नमः श्रिशिराय नमः |

| ावज्युसहस्रनामावालः    |     |                        | 4/  |
|------------------------|-----|------------------------|-----|
| अऋूराय नमः             |     | भुवो भुवे नमः          |     |
| पेशलाय नमः             |     | लक्ष्म्यै नमः          |     |
| दक्षाय नमः             |     | सुवीराय नमः            |     |
| दक्षिणाय नमः           |     | रुचिराङ्गदाय नमः       |     |
| क्षमिणां वराय नमः      |     | जननायं नमः             |     |
| विद्वत्तमाय नमः        | ९२० | जनजन्मादये नमः         |     |
| वीतभयाय नमः            |     | भीमाय नमः              |     |
| पुण्यश्रवणकीर्तनाय नमः |     | भीमपराऋमाय नमः         |     |
| उत्तारणाय नमः          |     | आधारनिलयाय नमः         | ९५० |
| दुष्कृतिघ्ने नमः       |     | अधात्रे नमः            |     |
| पुण्याय नमः            |     | पुष्पहासाय नमः         |     |
| दुस्स्वप्ननाशनाय नमः   |     | प्रजागराय नमः          |     |
| वीरघ्ने नमः            |     | ऊर्ध्वगाय नमः          |     |
| रक्षणाय नमः            |     | सत्पथाचाराय नमः        |     |
| सन्धो नमः              |     | प्राणदाय नमः           |     |
| जीवनाय नमः             | ९३० | प्रणवाय नमः            |     |
| पर्यवस्थिताय नमः       |     | पणाय नमः               |     |
| अनन्तरूपाय नमः         |     | प्रमाणाय नमः           |     |
| अनन्तश्रिये नमः        |     | प्राणनिलयाय नमः        | १६० |
| जितमन्यवे नमः          |     | प्राणभृते नमः          |     |
| भयापहाय नमः            |     | प्राणजीवनाय नमः        |     |
| चतुरश्राय नमः          |     | तत्त्वाय नमः           |     |
| गभीरात्मने नमः         |     | तत्त्वविदे नमः         |     |
| विदिशाय नमः            |     | एकात्मने नमः           |     |
| व्यादिशाय नमः          |     | जन्ममृत्युजरातिगाय नमः |     |
| दिशाय नमः              | ९४० | भूर्भुवस्स्वस्तरवे नमः |     |
| अनादये नमः             |     | ताराय नमः              |     |
|                        |     |                        |     |
|                        |     |                        |     |

यज्ञगृह्याय नमः

अन्नादाय नमः

अन्नाय नमः

सिवत्रे नमः
प्रिपतामहाय नमः
प्रज्ञाय नमः
यज्ञपतये नमः
यज्ञवने नमः
यज्ञाङ्गाय नमः
यज्ञवाहनाय नमः
यज्ञभृते नमः
यज्ञकृते नमः
यज्ञभुजे नमः
यज्ञभुजे नमः
यज्ञभुजे नमः
यज्ञभुजे नमः
यज्ञभुजे नमः
यज्ञभुजे नमः

आत्मयोनये नमः स्वयञ्जाताय नमः वैखानाय नमः सामगायनाय नमः देवकीनन्दनाय नमः स्रष्टे नमः 990 क्षितीशाय नमः पापनाशनाय नमः शङ्खभृते नमः नन्दिकने नमः चिक्रणे नमः शार्ङ्गधन्वने नमः गदाधराय नमः रथाङ्गपाणये नमः अक्षोभ्याय नमः सर्वप्रहरणायुधाय नमः 8000

॥इति श्रीविष्णुसहस्रनामावलिः सम्पूर्णा॥

# ॥ कृष्णाष्टोत्तरशतनामाविलः॥

श्रीकृष्णाय नमः तीलामानुषिवग्रहाय नमः श्रीवत्सकौस्तुभधराय नमः वासुदेवाय नमः यशोदावत्सलाय नमः सनातनाय नमः हरये नमः १० वसुदेवात्मजाय नमः चतुर्भुजात्तचऋासि- गदाशङ्काम्बुजायुधाय नमः

धेनुकासुरमर्दनाय नमः तुलसीदामभूषणाय नमः €0 स्यमन्तकमणेर्हर्त्रे नमः तृणीकृततृणावर्ताय नमः यमलार्जुनभञ्जनाय नमः नरनारायणात्मकाय नमः उत्तालतालभेत्रे नमः कुजाकृष्णाम्बरधराय नमः तमालश्यामलाकृतये नमः मायिने नमः गोपगोपीश्वराय नमः परमपुरुषाय नमः

९०

१००

बाणासुरकरान्तकाय नमः मुष्टिकासुरचाणूरमल्लयुद्ध-य्धिष्ठिरप्रतिष्ठात्रे नमः विशारदाय नमः बर्हिबर्हावतंसकाय नमः संसारवैरिणे नमः पार्थसारथये नमः कंसारये नमः मुरारये नमः अव्यक्ताय नमः गीतामृतमहोदधये नमः नरकान्तकाय नमः 00 कालीयफणिमाणिक्यरञ्जितश्री-अनादिब्रह्मचारिणे नमः कृष्णाव्यसनकर्षकाय नमः पदाम्बुजाय नमः शिशुपालशिरश्छेत्रे नमः दामोदराय नमः यज्ञभोक्रे नमः दुर्योधनकुलान्तकाय नमः विदुराऋरवरदाय नमः दानवेन्द्रविनाशकाय नमः विश्वरूपप्रदर्शकाय नमः नारायणाय नमः परब्रह्मणे नमः सत्यवाचे नमः पन्नगाशनवाहनाय नमः सत्यसङ्कल्पाय नमः जलक्रीडासमासक्तगोपी-सत्यभामारताय नमः जयिने नमः वस्त्रापहारकाय नमः 60 पुण्यश्लोकाय नमः स्भद्रापूर्वजाय नमः तीर्थपादाय नमः विष्णवे नमः वेदवेद्याय नमः भीष्ममुक्तिप्रदायकाय नमः जगद्गरवे नमः दयानिधये नमः सर्वतीर्थात्मकाय नमः जगन्नाथाय नमः सर्वग्रहरूपिणे नमः वेण्नादविशारदाय नमः

विणुनादविशारदाय नमः सवग्रहरूपण नम् वृषभासुरविध्वंसिने नमः परात्पराय नमः ॥इति श्री ब्रह्माण्डमहापुराणे वायुप्रोक्ते श्री कृष्णाष्टोत्तरशतनामावितः सम्पूर्णा॥

## ॥ उत्तराङ्गपूजा ॥

यत्पुर्रुषं व्यंदधुः। कृतिधा व्यंकल्पयन्। मुखं किमंस्य को बाहू। कावूरू पादांवुच्येते॥ श्री भूमीनीलासमेतमहाविष्णवे नमः धूपमाघ्रापयामि।

ब्राह्मणौंऽस्य मुखंमासीत्। बाहू रांजन्यः कृतः। ऊरू तदस्य यद्वैश्यः। पुद्धाः शूद्रो अंजायत॥

उद्दींप्यस्व जातवेदोऽपुघ्रन्निर्ऋतिं ममं।
पुशू श्र्श्च मह्यमार्वह जीवंनं च दिशों दिश॥
मा नों हिश्सीज्ञातवेदो गामश्वं पुरुषं जगंत्।
अविंश्रदग्च आगंहि श्रिया मा परिपातय॥
श्री भूमीनीलासमेतमहाविष्णवे नमः अलङ्कारदीपं सन्दर्शयामि।

ॐ भूर्भुवः सुवंः। + ब्रह्मणे स्वाहाँ।

चन्द्रमा मनंसो जातः। चक्षोः सूर्यो अजायत। मुखादिन्द्रंश्चाग्निश्चं। प्राणाद्वायुरंजायत॥

श्रीभूमिनीलासमेत महाविष्णवे नमः ( ) निवेदयामि, अमृतापिधानमसि। निवेदनानन्तरम् आचमनीयं समर्पयामि।

नाभ्यां आसीदन्तरिक्षम्। शीर्ष्णो द्यौः समेवर्तत। पुन्न्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्। तथा लोकाः अंकल्पयन्॥

> पूगीफलसमायुक्तं नागवल्लीदलैर्युतम्। कर्पूरचूर्णसंयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्॥

श्री भूमीनीलासमेतमहाविष्णवे नमः कर्पूरताम्बूलं समर्पयामि।

वेदाहमेतं पुरुषं महान्तम्। आदित्यवंणं तमंसस्तु पारे। सर्वाणि रूपाणि विचित्य धीरः। नामानि कृत्वाऽभिवदन् यदास्ते॥ श्री भूमीनीलासमेतमहाविष्णवे नमः समस्त अपराध क्षमापनार्थं कर्पूरनीराजनं दर्शयामि। कर्पूरनीरजनानन्तरम् आचमनीयं समर्पयामि।

धाता पुरस्ताद्यमुंदाज्हारं। श्राकः प्रविद्वान् प्रदिश्श्वतंस्रः। तमेवं विद्वानमृतं इह भंवति। नान्यः पन्था अयंनाय विद्यते॥ योऽपां पुष्पं वेदं। पुष्पंवान् प्रजावान् पशुमान् भंवति। चन्द्रमा वा अपां पुष्पम्। पुष्पंवान् प्रजावान् पशुमान् भंवति। य एवं वेदं। योऽपामायतंनं वेदं। आयतंनवान् भवति।

> औं तद्धृह्म। औं तद्घायुः। औं तदात्मा। ओं तथ्सत्यम्। ओं तथ्सर्वम्। ओं तत्पुरोर्नमः॥

अन्तश्चरितं भूतेषु गुहायां विश्वमूर्तिषु। त्वं यज्ञस्त्वं वषद्कारस्त्वमिन्द्रस्त्वः रुद्रस्त्वं विष्णुस्त्वं ब्रह्म त्वं प्रजापितः। त्वं तदाप आपो ज्योती रसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः सुवरोम्॥

श्री भूमीनीलासमेतमहाविष्णवे नमः वेदोक्तमत्रपुष्पाञ्जलिं समर्पयामि।

सुवर्णरजतैर्युक्तं चामीकरविनिर्मितम्। स्वर्णपुष्यं प्रदास्यामि गृह्यतां मधुसूदन॥ स्वर्णपुष्यं समर्पयामि। प्रदक्षिणं करोम्यद्य पापानि नुत माधव। मयार्पितान्यशेषाणि परिगृह्य कृपां कुरु॥

यानि कानि च पापानि जन्मान्तरकृतानि च। तानि तानि विनश्यन्ति प्रदक्षिण पदे पदे॥

नमस्ते देवदेवेश नमस्ते भक्तवत्सल। नमस्ते पुण्डरीकाक्ष वासुदेवाय ते नमः॥

नमः सर्विहितार्थाय जगदाधाररूपिणे। साष्टाङ्गोऽयं प्रणामोऽस्तु जगन्नाथ मया कृतः॥ अनन्तकोटिप्रदक्षिणनमस्कारान् समर्पयामि।

युज्ञेनं युज्ञमंयजन्त देवाः। तानि धर्माणि प्रथमान्यांसन्। ते हु नाकं महिमानः सचन्ते। यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः॥ छत्रचामरादिसमस्तोपचारान् समर्पयामि।

# ॥ अर्घ्यप्रदानम्॥

ममोपात्त समस्तदुरितक्षयद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थम् एकादशीपुण्यकाले महाविष्णुपूजान्ते क्षीरार्घ्यप्रदानं करिष्ये॥

> एकादश्यामुपोष्यैव पारणात् पूर्वकालतः। इदमर्घ्यं प्रदास्यामि गृहाण सुरवन्दित॥ महाविष्णवे नमः इदमर्घ्यमिदमर्घ्यमिदमर्घ्यम्॥

नमोऽस्तु केशवादिभ्यः सर्वलोकैकवन्दिताः। इदमर्घ्यं प्रदास्यामि सुप्रीतो भव सर्वदा॥ केशवादिभ्यः इदमर्घ्यमिदमर्घ्यमिदमर्घ्यम्। कूर्मरूपाय देवाय मत्स्यरूप नमोऽस्तुते।। नीलमेघस्वरूपाय अर्घ्यं दत्तं मया प्रभो॥ विष्णवे नमः इदमर्घ्यमिदमर्घ्यमदमर्घ्यम्॥

क्षीरोद्भवे महालक्ष्मि सुप्रसन्ने सुरेश्वरि। सर्वप्रदे जगद्धन्द्ये गृह्णीदार्घ्यमिदं रमे॥॥ महालक्ष्म्ये नमः इदमर्घ्यमिदमर्घ्यमिदमर्घ्यम्। अनेन अर्घ्यप्रदानेन भगवान् सर्वात्मकः श्री लक्ष्मीनारायणः प्रीयताम्।

हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः। अनन्तपुण्यफलदम् अतः शान्तिं प्रयच्छ मे॥ एकादशीपुण्यकाले अस्मिन् मया क्रियमाण महाविष्णुपूजायां यद्देयमुपायनदानं तत्प्रत्यायाम्नार्थं हिरण्यं श्रीभूमिनीलासमेत श्री महाविष्णुप्रीतिं कामयमानः मनसोद्दिष्टाय ब्राह्मणाय सम्प्रददे नमः न मम। अनया पूजया श्रीभूमिनीलासमेतः श्रीमहाविष्णुः प्रीयताम्।

# ॥ विसर्जनम्॥

यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपः पूजा क्रियादिषु। न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतम्॥

इदं व्रतं मया देव कृतं प्रीत्यै तव प्रभो। न्यूनं सम्पूर्णतां यातु त्वत्प्रसादाञ्जनाईन॥

अस्मात् बिम्बात् श्रीभूमिनीलासमेतश्रीमहाविष्णुं यथास्थानं प्रतिष्ठापयामि (अक्षतानर्पित्वा देवमुत्सर्जयेत्।) अनया पुजया श्रीभूमिनीलासमेतः श्रीमहाविष्णुः प्रीयताम्। कायेन वाचा मनसेन्द्रियैर्वा बुद्ध्याऽऽत्मना वा प्रकृतेः स्वभावात्। करोमि यद्यत् सकलं परस्मै नारायणायेति समर्पयामि॥

ॐ तत्सद्बह्मार्पणमस्तु।

सालग्रामशिलावारि पापहारि शरीरिणाम्। आजन्मकृतपापानां प्रायश्चित्तं दिने दिने॥

अकालमृत्युहरणं सर्वव्याधिनिवारणम्। सर्वपापक्षयकरं विष्णुपादोदकं शुभम्॥ इति तीर्थं पीत्वा शिरसि प्रसादं धारयेत्।

## ॥ उत्तरस्मिन् दिने पारणम्॥

अज्ञानतिमिरान्धस्य व्रतेनानेन केशव। प्रसीद सुमुखो नाथ ज्ञानदृष्टिप्रदो भव॥



# ॥ श्रीरामनवमी-पूजा ॥

# ॥ पूर्वाङ्गविघ्नेश्वरपूजा॥

(आचम्य)

शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्। प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये॥

प्राणान् आयम्य। ॐ भूः + भूर्भुवः सुव्रोम्। (अप उपस्पृश्य, पुष्पाक्षतान् गृहीत्वा) ममोपात्तसमस्त दुरितक्षयद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं करिष्यमाणस्य कर्मणः निर्विघ्नेन परिसमाप्त्यर्थम् आदौ विघ्नेश्वरपूजां करिष्ये।

ॐ गृणानां त्वा गृणपंति हवामहे कविं केवीनाम्प्रमश्रंवस्तमम्। ज्येष्ठराजं ब्रह्मणां ब्रह्मणस्पत् आ नः शृण्वन्नृतिभिः सीद् सादनम्॥ अस्मिन् हरिद्राबिम्बे महागणपतिं ध्यायामि, आवाहयामि।

ॐ महागणपतये नमः आसनं समर्पयामि।
पादयोः पाद्यं समर्पयामि। हस्तयोरध्यं समर्पयामि।
आचमनीयं समर्पयामि।
ॐ भूर्भुवस्सुवः। शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।
स्नानानन्तरमाचमनीयं समर्पयामि।
वस्नार्थमक्षतान् समर्पयामि।
यज्ञोपवीताभरणार्थे अक्षतान् समर्पयामि।
दिव्यपरिमलगन्थान् धारयामि।
गन्थस्योपरि हरिद्राकुङ्कुमं समर्पयामि। अक्षतान् समर्पयामि।
पुष्पमालिकां समर्पयामि। पुष्पैः पुजयामि।

### ॥ अर्चना ॥

| १. | <b>ॐ</b> | सुमुखाय नमः    | १०. ॐ         | गणाध्यक्षाय नमः    |
|----|----------|----------------|---------------|--------------------|
| ₹. | <i>ॐ</i> | एकदन्ताय नमः   | ११. ॐ         | फालचन्द्राय नमः    |
| ₹. | <i>ॐ</i> | कपिलाय नमः     | <b>१</b> २. ૐ | गजाननाय नमः        |
| ४. | <i>ॐ</i> | गजकर्णकाय नमः  | १३. ॐ         | वऋतुण्डाय नमः      |
| ۷. | <i>ॐ</i> | लम्बोदराय नमः  | १४. ॐ         | शूर्पकर्णाय नमः    |
| €. | ૐ        | विकटाय नमः     | १५. ॐ         | हेरम्बाय नमः       |
| છ. | <i>ॐ</i> | विघ्नराजाय नमः | १६. ॐ         | स्कन्दपूर्वजाय नमः |
| ۷. | ૐ        | विनायकाय नमः   | १७. ॐ         | सिद्धिविनायकाय नमः |
| ۶. | <i>ॐ</i> | धूमकेतवे नमः   | १८. ॐ         | विघ्नेश्वराय नमः   |

नानाविधपरिमलपत्रपुष्पाणि समर्पयामि॥ धूपमाघ्रापयामि। अलङ्कारदीपं सन्दर्शयामि। नैवेद्यम्। ताम्बूलं समर्पयामि। कर्पूरनीराजनं समर्पयामि। कर्पूरनीराजनानन्तरमाचमनीयं समर्पयामि। वऋतुण्डमहाकाय कोटिसूर्यसमप्रभ। अविघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा॥ प्रार्थनाः समर्पयामि। अनन्तकोटिप्रदक्षिणनमस्कारान् समर्पयामि। छत्रचामरादिसमस्तोपचारान् समर्पयामि।

# ॥ प्रधान-पूजा - श्रीराम-पूजा॥

शुक्राम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्। प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविद्योपशान्तये॥

प्राणान् आयम्य। ॐ भूः + भूर्भुवः सुव्रोम्।

#### ॥सङ्कल्पः॥

ममोपात्तसमस्तदुरितक्षयद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं शुभे शोभने मुहूर्ते अद्यब्रह्मणः द्वितीयपरार्द्धे श्वेतवराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे किलयुगे प्रथमे पादे जम्बूद्वीपे भारतवर्षे भरतखण्डे मेरोः दक्षिणेपार्श्वे शकाब्दे अस्मिन् वर्तमाने व्यावहारिके प्रभवादि षष्टिसंवत्सराणां मध्ये () नाम संवत्सरे उत्तरायणे वसन्त-ऋतौ (मेष/मीन) मासे शुक्रपक्षे नवम्यां शुभितथौ (इन्दु/भौम/बुध/गुरु/भृगु /स्थिर/भानु) वासरयुक्तायाम् (आर्द्रा/पुनर्वसू/पुष्य) नक्षत्रयुक्तायां ()-योग ()-करण-युक्तायां च एवं गुण-

विशेषण-विशिष्टायाम् अस्याम् नवम्यां शुभितथौ अस्माकं सहकुटुम्बानां क्षेमस्थैर्य-धैर्य-वीर्य-विजय आयुरारोग्य ऐश्वर्याभिवृद्धर्थम् धर्मार्थकाममोक्ष-चतुर्विधफलपुरुषार्थसिद्धर्थं पुत्रपौत्राभिवृद्धर्थम् इष्टकाम्यार्थसिद्धर्थम् मम इहजन्मिन पूर्वजन्मिन जन्मान्तरे च सम्पादितानां ज्ञानाज्ञानकृतमहा-पातकचतुष्टय व्यतिरिक्तानां रहस्यकृतानां प्रकाशकृतानां सर्वेषां पापानां सद्य अपनोदनद्वारा सकल पापक्षयार्थं श्रीसीतालक्ष्मणभरतशत्रुघ्नहनुमत्समेत श्रीरामचन्द्रप्रीत्यर्थं श्रीरामनवमीपुण्यकाले कल्पोक्तप्रकारेण यथाशिक्त श्रीरामचन्द्रपूजां करिष्ये। तदङ्गं कलशपूजां च करिष्ये। श्रीविघ्नेश्वराय नमः यथास्थानं प्रतिष्ठापयामि। (गणपित प्रसादं शिरसा गृहीत्वा)

#### ॥ आसन-पूजा ॥

पृथिव्या मेरुपृष्ठ ऋषिः। सुतलं छन्दः। कूर्मो देवता॥

पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता। त्वं च धारय मां देवि पवित्रं चाऽऽसनं कुरु॥

#### ॥ घण्टापूजा ॥

आगमार्थं तु देवानां गमनार्थं तु रक्षसाम्। घण्टारवं करोम्यादौ देवताऽऽह्वानकारणम्॥

#### ॥ कलशपूजा॥

ॐ कलशाय नमः दिव्यगन्धान् धारयामि। ॐ गङ्गायै नमः। ॐ यमुनायै नमः। ॐ गोदावर्यै नमः। ॐ सरस्वत्यै नमः। ॐ नर्मदायै नमः। ॐ सिन्धवे नमः। ॐ कावेर्यै नमः। ॐ सप्तकोटिमहातीर्थान्यावाहयामि।

(अथ कलशं स्पृष्ट्वा जपं कुर्यात्) आपो वा इद॰ सर्वं विश्वां भूतान्यापंः प्राणा वा आपंः पृशव् आपोऽन्नमापोऽमृंतमापंः सम्राडापों विराडापंः स्वराडापृश्छन्दाः स्यापो ज्योतीः ष्ट्रापो यजू ष्ट्रापंः सत्यमापः सर्वा देवता आपो भूर्भुवः सुवराप ओम्॥

> कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः। मूले तत्र स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः॥

कुक्षौ तु सागराः सर्वे सप्तद्वीपा वसुन्धरा। ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदोऽप्यथर्वणः। अङ्गेश्च सहिताः सर्वे कलशाम्बुसमाश्रिताः॥

गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति। नर्मदे सिन्धुकावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु॥

सर्वे समुद्राः सरितः तीर्थानि च ह्रदा नदाः। आयान्तु विष्णुपूजार्थं दुरितक्षयकारकाः॥ ॐ भूर्भुवः सुवो भूर्भुवः सुवेः।

(इति कलशजलेन सर्वोपकरणानि आत्मानं च प्रोक्ष्य।)

#### ॥ आत्मपूजा ॥

🕉 आत्मने नमः, दिव्यगन्धान् धारयामि।

१. ॐ आत्मने नमः ४. ॐ जीवात्मने नमः

२. ॐ अन्तरात्मने नमः ५. ॐ परमात्मने नमः

३. ॐ योगात्मने नमः ६. ॐ ज्ञानात्मने नमः

## समस्तोपचारान् समर्पयामि।

देहो देवालयः प्रोक्तो जीवो देवः सनातनः। त्यजेदज्ञाननिर्माल्यं सोऽहं भावेन पूजयेत्॥

# ॥ पीठपूजा॥

१. ॐ आधारशक्त्ये नमः ८. ॐ रत्नवेदिकाये नमः

२. ॐ मूलप्रकृत्यै नमः ९. ॐ स्वर्णस्तम्भाय नमः

३. ॐ आदिकूर्माय नमः १०. ॐ श्वेतच्छत्राय नमः

४. ॐ आदिवराहाय नमः ११. ॐ कल्पकवृक्षाय नमः

५. ॐ अनन्ताय नमः १२. ॐ क्षीरसमुद्राय नमः

६. ॐ पृथिव्यै नमः १३. ॐ सितचामराभ्यां नमः

७. ॐ रत्नमण्डपाय नमः १४. ॐ योगपीठासनाय नमः

#### ॥ गुरु ध्यानम्॥

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुर्गुरुर्देवो महेश्वरः। गुरुः साक्षात् परं ब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः॥

# ॥ षोडशोपचारपूजा॥

वैदेही-सहितं सुर-द्रुम-तले हैमे महामण्डपे मध्येपुष्पकमासने मणिमये वीरासने सुस्थितम्। अग्रे वाचयति प्रभञ्जन-सुते तत्त्वं मुनिभ्यः परं व्याख्यान्तं भरतादिभिः परिवृतं रामं भजे श्यामलम्॥

वामे भूमि-सुता पुरश्च हनुमान् पश्चात् सुमित्रा-सुतः शत्रुघ्नो भरतश्च पार्श्व-दलयोर्-वाय्वादि-कोणेषु च। सुग्रीवश्च विभीषणश्च युवराट् तारा-सुतो जाम्बवान् मध्ये नील-सरोज-कोमल-रुचिं रामं भजे श्यामलम्॥

श्री-सीता-लक्ष्मण-भरत-शत्रुघ्न-हनुमत्-समेत-श्री-रामचन्द्रं ध्यायामि। (अथ प्राणप्रतिष्ठा)

आवाहयामि विश्वेशं वैदेही-वल्लभं विभुम्। कौसल्या-तनयं विष्णुं श्री-रामं प्रकृतेः परम्॥ श्रीरामाय नमः - आवाहयामि।

वामे सीताम् आवाहयामि। पुरस्तात् हनुमन्तम् आवाहयामि । पश्चात् लक्ष्मणम् आवाहयामि। उत्तरस्यां शत्रुघ्नमवाहयामि । दक्षिणस्यां दिशि भरतम् आवाहयामि । वायव्यायां सुग्रीवम् आवाहयामि । ऐशान्यां विभीषणम् आवाहयामि । आग्नेय्याम् अङ्गदम् आवाहयामि । नैर्ऋत्यां जाम्बवन्तम् आवाहयामि ॥

रत्न-सिंहासनारूढ सर्व-भूपाल-वन्दित। आसनं ते मया दत्तं प्रीतिं जनयतु प्रभो॥ सपरिवाराय श्रीरामाय नमः- आसनं समर्पयामि।

पादाङ्गुष्ठ-समुद्भूत-गङ्गा-पावित-विष्टप। पाद्यार्थमुदकं राम ददामि परिगृह्यताम्॥ सपरिवाराय श्रीरामाय नमः- पाद्यं समर्पयामि।

वालखिल्यादिभिर्-विप्रैस्-त्रिसन्थ्यं प्रयतात्मभिः। अर्घ्यः आराधित विभो ममार्घ्यं राम गृह्यताम्॥ सपरिवाराय श्रीरामाय नमः- अर्घ्यं समर्पयामि।

आचान्ताम्भोधिना राम मुनिना परिसेवित। मया दत्तेन तोयेन कुर्वाचमनमीश्वर॥ सपरिवाराय श्रीरामाय नमः- आचमनीयं समर्पयामि।

नमः श्री-वासुदेवाय तत्त्व-ज्ञान-स्वरूपिणे । मधुपर्कं गृहाणेमं जानकीपतये नमः॥ सपरिवाराय श्रीरामाय नमः- मधुपर्कं समर्पयामि। कामधेनु-समुद्भूत-क्षीरेणेन्द्रेण राघव। अभिषिक्त अखिलार्थाप्त्रे स्नाहि मद्-दत्त-दुग्धतः॥ सपरिवाराय श्रीरामाय नमः- क्षीराभिषेकं समर्पयामि।

हनूमता मधुवनोद्भूतेन मधुना प्रभो। प्रीत्याऽभिषेचित-तनो मधुना स्नाहि मेऽद्य भोः॥ सपरिवाराय श्रीरामाय नमः- मध्वभिषेकं समर्पयामि।

त्रैलोक्य-ताप-हरण-नाम-कीर्तन राघव। मधूत्थ-ताप-शान्त्यर्थं स्नाहि क्षीरेण वै पुनः॥ सपरिवाराय श्रीरामाय नमः- मध्वभिषेकान्ते पुनः क्षीराभिषेकं समर्पयामि।

नदी-नद-समुद्रादि-तोयैर्-मन्नाभिसंस्कृतैः। पट्टाभिषिक्त राजेन्द्र स्नाहि शुद्ध-जलेन मे॥ सपरिवाराय श्रीरामाय नमः- शुद्धोदक-स्नानं समर्पयामि। स्नानोत्तरम् आचमनीयं समर्पयामि।

हित्वा पीताम्बरं चीर-कृष्णाजिन-धराच्युत। परिधत्स्वाद्य मे वस्रं स्वर्ण-सूत्र-विनिर्मितम्॥ सपरिवाराय श्रीरामाय नमः- वस्रं समर्पयामि।

राजर्षि-वंश-तिलक रामचन्द्र नमोऽस्तु ते। यज्ञोपवीतं विधिना निर्मितं धत्स्व मे प्रभो॥ सपरिवाराय श्रीरामाय नमः- उपवीतं समर्पयामि।

किरीटादीनि राजेन्द्र हंसकान्तानि राघव।

विभूषणानि धृत्वाऽद्य शोभस्व सह सीतया॥ सपरिवाराय श्रीरामाय नमः- आभरणम् समर्पयामि।

सन्थ्या-समान-रुचिना नीलाभ्र-सम-विग्रह। लिम्पामि तेऽङ्गकं राम चन्दनेन मुदा हृदि॥ सपरिवाराय श्रीरामाय नमः- गन्धान् धारयामि। गन्धस्योपरि हरिद्रा-कुङ्कमं समर्पयमि।

अक्षतान् कुङ्कमोन्मिश्रान् अक्षय्य-फल-दायक। अर्पये तव पादाज्ञे शालि-तण्डुल-सम्भवान्॥ सपरिवाराय श्रीरामाय नमः- अक्षतान् समर्पयामि।

चम्पकाशोक-पुन्नागैर्-जलजैस्-तुलसी-दलैः। पूजयामि रघूत्तंस पूज्यं त्वां सनकादिभिः॥ सपरिवाराय श्रीरामाय नमः- पुष्पाणि समर्पयामि।

## ॥ अङ्ग-गुण-पूजा॥

अहल्या-उद्धारकाय नमः पाद-रजः पूजयामि शरणागत-रक्षकाय नमः पाद-कान्तिं पूजयामि गङ्गा-नदी-प्रवर्तन-पराय नमः पाद-तलं पूजयामि सीता-संवाहित-पदाय नमः पाद-तलं पूजयामि दुन्दुभि-काय-विक्षेपकाय नमः पादाङ्गुष्ठं पूजयामि विनत-कल्प-द्रुमाय नमः गुल्फौ पूजयामि उङ्घे पूजयामि जङ्घे पूजयामि

जानुनी पूजयामि जानु-न्यस्त-कराम्बुजाय नमः वीरासन-अध्यासिने नमः ऊरू पूजयामि पीताम्बर-अलङ्कृताय नमः कटिं पूजयामि मध्यं पूजयामि आकाश-मध्यगाय नमः अरि-निग्रह-पराय नमः कटि-लम्बितम् असिं पूजयामि अब्धि-मेखला-पतये नमः मध्य-लम्बित-मेखला-दाम पूजयामि उदरं पूजयामि उदर-स्थित-ब्रह्माण्डाय नमः जगत्-त्रय-गुरवे नमः विल-त्रयं पूजयामि सीतानुलेपित-काश्मीर-चन्दनाय नमः वक्षः पूजयामि अभय-प्रदान-शोण्डाय नमः दक्षिण-बाह्-दण्डं पूजयामि वितरण-जित-कल्पद्रुमाय नमः दक्षिण-कर-तलं पूजयामि आशर-निरसन-पराय नमः दक्षिण-कर-स्थित-शरं पूजयामि ज्ञान-विज्ञान-भासकाय नमः चिन्मुद्रां पूजयामि मुनि-सङ्घार्पित-दिव्य-पदाय नमः वाम-भुज-दण्डं पूजयामि दशानन-काल-रूपिणे नमः वाम-हस्त-स्थित-कोदण्डं पुजयामि अंसौ पूजयामि शत-मख-दत्त-शत-पुष्कर-स्रजे नमः कृत्त-दशानन-किरीट-कूटाय नमः अंस-लम्बित-निषङ्ग-द्वयं पूजयामि

सीता-बाहु-लतालिङ्गिताय नमः कण्ठं पूजयामि स्मित-भाषिणे नमः स्मितं पूजयामि नित्य-प्रसन्नाय नमः मुख-प्रसादं पूजयामि सत्य-वाचे नमः
कपालि-पूजिताय नमः
चक्षुःश्रवः-प्रभु-पूजिताय नमः
अनासादित-पाप-गन्धाय नमः
पुण्डरीकाक्षाय नमः
अपाङ्ग-स्यन्दि-करुणाय नमः
विना-कृत-रुषे नमः
कस्तूरी-तिलकाङ्किताय नमः
राजाधिराज-वेषाय नमः
मुनि-मण्डल-पूजिताय नमः
मोहित-मुनि-जनाय नमः
जानकी-व्यजन-वीजिताय नमः

हनुमदर्पित-चूडामणये नमः

सुमन्नानुग्रह-पराय नमः कम्पिताम्भोधये नमः तिरस्कृत-लङ्केश्वराय नमः वन्दित-जनकाय नमः सम्मानित-त्रिजटाय नमः गन्धर्व-राज-प्रतिमाय नमः असहाय-हत-खर-दूषणादि-चतुर्दश-सहस्र-राक्षसाय नमः वाचं पूजयामि कपोलौ पूजयामि श्रोत्रे पूजयामि घ्राणं पूजयामि अक्षिणी पूजयामि अरुणापाङ्ग-द्वयं पूजयामि अनाथ-रक्षक-कटाक्षं पूजयामि फालं पूजयामि किरीटं पूजयामि जटा-मण्डलं पूजयामि पुंसां मोहनं रूपं पूजयामि विद्युद्-विद्योतित-कालाभ्र-सदृश-कान्तिं पूजयामि करुणारस-उद्वेक्षित-कटाक्ष-धारां पुजयामि तेजोमयरूपं पूजयामि आहार्य-कोपं पूजयामि धैर्यं पूजयामि विनयं पूजयामि अतिमानुष-सौलभ्यं पूजयामि लोकोत्तर-सौन्दर्यं पूजयामि पराक्रमं पूजयामि

श्रीरामाय नमः

आलिङ्गित-आञ्चनेयाय नमः लब्ध-राज्य-परित्यक्रे नमः दर्भ-शायिने नमः सर्वेश्वराय नमः भक्त-वात्सल्यं पूजयामि धर्मं पूजयामि लोकानुवर्तनं पूजयामि सर्वाण्यङ्गानि सर्वांश्च पूजयामि

गुणान्

२०

## ॥ रामाष्टोत्तरशतनामाविलः ॥

सत्यव्रताय नमः

व्रतधराय नमः

रामभद्राय नमः
रामचन्द्राय नमः
शाश्वताय नमः
राजीवलोचनाय नमः
श्रीमते नमः
राजेन्द्राय नमः
रघुपुङ्गवाय नमः
जानकीवल्लभाय नमः
जौत्राय नमः
जैत्राय नमः
जनार्दनाय नमः
विश्वामित्रप्रियाय नमः
दान्ताय नमः
शरणत्राणतत्पराय नमः

वालिप्रमथनाय नमः

सत्यविक्रमाय नमः

वाग्मिने नमः सत्यवाचे नमः

सदा हनुमदाश्रिताय नमः कौसलेयाय नमः खरध्वंसिने नमः विराधवधपण्डिताय नमः विभीषणपरित्रात्रे नमः हरकोदण्डखण्डनाय नमः सप्ततालप्रभेन्ने नमः दशग्रीवशिरोहराय नमः जामदग्र्यमहादर्पदलनाय नमः ताटकान्तकाय नमः वेदान्तसाराय नमः वेदात्मने नमः भवरोगस्य भेषजाय नमः दूषणत्रिशिरोहन्ने नमः त्रिमूर्तये नमः त्रिगुणात्मकाय नमः त्रिविक्रमाय नमः

| त्रिलोकात्मने नमः        |    | सुग्रीवेप्सितराज्यदाय नमः |    |
|--------------------------|----|---------------------------|----|
| पुण्यचारित्रकीर्तनाय नमः | ४० | सर्वपुण्याधिकफलाय नमः     |    |
| त्रिलोकरक्षकाय नमः       |    | स्मृतसर्वाघनाशनाय नमः     |    |
| धन्विने नमः              |    | अनादये नमः                |    |
| दण्डकारण्यकर्तनाय नमः    |    | आदिपुरुषाय नमः            | 90 |
| अहल्याशापशमनाय नमः       |    | महापूरुषाय नमः            |    |
| पितृभक्ताय नमः           |    | पुण्योदयाय नमः            |    |
| वरप्रदाय नमः             |    | दयासाराय नमः              |    |
| जितेन्द्रियाय नमः        |    | पुराणपुरुषोत्तमाय नमः     |    |
| जितक्रोधाय नमः           |    | स्मितवऋाय नमः             |    |
| जितामित्राय नमः          |    | मितभाषिणे नमः             |    |
| जगद्गुरवे नमः            | ५० | पूर्वभाषिणे नमः           |    |
| ऋक्षवानरसङ्घातिने नमः    |    | राघवाय नमः                |    |
| चित्रकूटसमाश्रयाय नमः    |    | अनन्तगुणगम्भीराय नमः      |    |
| जयन्तत्राणवरदाय नमः      |    | धीरोदात्तगुणोत्तमाय नमः   | ८० |
| सुमित्रापुत्रसेविताय नमः |    | मायामानुषचारित्राय नमः    |    |
| सर्वदेवादिदेवाय नमः      |    | महादेवादिपूजिताय नमः      |    |
| मृतवानरजीवनाय नमः        |    | सेतुकृते नमः              |    |
| मायामारीचहन्त्रे नमः     |    | जितवारीशाय नमः            |    |
| महादेवाय नमः             |    | सर्वतीर्थमयाय नमः         |    |
| महाभुजाय नमः             |    | हरये नमः                  |    |
| सर्वदेवस्तुताय नमः       | ६० | श्यामाङ्गाय नमः           |    |
| सौम्याय नमः              |    | सुन्दराय नमः              |    |
| ब्रह्मण्याय नमः          |    | शूराय नमः                 |    |
| मुनिसंस्तुताय नमः        |    | पीतवाससे नमः              | ९० |
| महायोगाय नमः             |    | धनुर्धराय नमः             |    |
| महोदाराय नमः             |    | सर्वयज्ञाधिपाय नमः        |    |
|                          |    |                           |    |
|                          |    |                           |    |

२०

यज्विने नमः जरामरणवर्जिताय नमः शिवलिङ्गप्रतिष्ठात्रे नमः सर्वापगुणवर्जिताय नमः

परमात्मने न्मः

पर्स्मे ब्रह्मणे नमः

सिचदानन्दविग्रहाय नमः

परस्मै ज्योतिषे नमः

परस्मै धाम्ने नमः

पराकाशाय नमः

परात्पराय नमः

परेशाय नमः

पारगाय नमः

पाराय नमः

सर्वदेवात्मकाय नमः

पराय नमः

॥इति श्री पद्मपुराणे उत्तरखण्डे श्री-रामाष्टोत्तरशतनामाविलः सम्पूर्णा॥

# ॥ सीताष्टोत्तरशतनामाविलः॥

श्रीसीतायै नमः

जानको नमः

देव्यै नमः

वैदेह्ये नमः

राघवप्रियायै नमः

रमायै नमः

अवनिसुतायै नमः

रामायै नमः

राक्षसान्तप्रकारिण्ये नमः

रत्नगुप्तायै नमः १०

मातुलुङ्गौ नमः

मैथिल्ये नमः

भक्ततोषदायै नमः

पद्माक्षजाये नमः

कञ्जनेत्रायै नमः

स्मितास्यायै नमः

नूपुरस्वनायै नृमः

वैकुण्ठनिलयायै नमः

मायै नमः

श्रियै नमः

मुक्तिदायै नमः

कामपूरण्यै नमः

नृपात्मजायै नमः

हेमवर्णायै नमः मृदुलाङ्ग्री नमः

सुभाषिण्यै नमः

कुशाम्बिकायै नमः

दिव्यदायै नमः

| लवमात्रे नमः               |    | दिव्यरूपायै नमः          |    |
|----------------------------|----|--------------------------|----|
| मनोहरायै नमः               | ३० | त्रैलोक्यपालिन्यै नमः    |    |
| हनुमद्वन्दितपदायै नमः      |    | अन्नपूर्णायै नमः         |    |
| मुग्धायै नमः               |    | महालक्ष्म्यै नमः         |    |
| केयूरधारिण्यै नमः          |    | धियै नमः                 | ६० |
| अशोकवनमध्यस्थायै नमः       |    | लञ्जायै नमः              |    |
| रावणादिकमोहिन्यै नमः       |    | सरस्वत्ये नमः            |    |
| विमानसंस्थितायै नमः        |    | शान्त्ये नमः             |    |
| सुभुवे नमः                 |    | पुष्ट्ये नमः             |    |
| सुकेश्यै नमः               |    | क्षमायै नमः              |    |
| रशनान्वितायै नमः           |    | गौर्ये नमः               |    |
| रजोरूपायै नमः              | ४० | प्रभाये नमः              |    |
| सत्त्वरूपायै नमः           |    | अयोध्यानिवासिन्यै नमः    |    |
| तामस्यै नमः                |    | वसन्तशीतलायै नमः         |    |
| वह्निवासिन्यै नमः          |    | गोर्ये नमः               | 90 |
| हेममृगासक्तचित्तायै नमः    |    | स्नानसन्तुष्टमानसायै नमः |    |
| वाल्मीक्याश्रमवासिन्यै नमः |    | रमानामभद्रसंस्थायै नमः   |    |
| पतिव्रतायै नमः             |    | हेमकुम्भपयोधरायै नमः     |    |
| महामायायै नमः              |    | सुरार्चितायै नमः         |    |
| पीतकौशेयवासिन्यै नमः       |    | धृत्यै नमः               |    |
| मृगनेत्रायै नमः            |    | कान्त्यै नमः             |    |
| बिम्बोष्ठ्ये नमः           | ५० | स्मृत्यै नमः             |    |
| धनुर्विद्याविशारदायै नमः   |    | मेधायै नमः               |    |
| सौम्यरूपायै नमः            |    | विभावर्यै नमः            |    |
| दशरथसुषायै नमः             |    | लघूदरायै नमः             | ८० |
| चामरवीजितायै नमः           |    | वरारोहायै नमः            |    |
| सुमेधादुहित्रे नमः         |    | हेमकङ्कणमण्डितायै नमः    |    |
| - • •                      |    | , ,                      |    |
|                            |    |                          |    |

कम्बुकण्ठायै नमः

रम्भोरुवे नमः

द्विजपत्यर्पितनिजभूषायै नमः
राघवतोषिण्यै नमः
श्रीरामसेवानिरतायै नमः
रत्नताटङ्कधारिण्यै नमः
रामवामाङ्गसंस्थायै नमः
रामचन्द्रैकरञ्जन्यै नमः
सरयूजलसङ्कीडाकारिण्यै नमः
राममोहिन्यै नमः
राममोहिन्यै नमः
पुण्यायै नमः
पुण्यायै नमः
पुण्यायै नमः
कलावत्यै नमः
कलकण्ठायै नमः

गजगामिन्यै नमः रामार्पितमनायै नमः रामवन्दितायै नमः 800 रामवल्लभाये नमः श्रीरामपदचिह्नाङ्कायै नमः रामरामेतिभाषिण्यै नमः रामपर्यङ्कशयनायै नमः रामाङ्गिक्षालिन्यै नमः वरायै नमः कामधेन्वन्नसन्तुष्टायै नमः मातुलुङ्गकरे धृतायै नमः दिव्यचन्दनसंस्थायै नमः श्रियै नमः ११० मूलकासुरमर्दिन्यै नमः

॥इति श्री आनन्दरामायणे श्री सीताष्टोत्तरशतनामाविलः सम्पूर्णा॥

# ॥ हनुमदृष्टोत्तरशतनामावलिः ॥

आञ्चनेयाय नमः
महावीराय नमः
हनूमते नमः
मारुतात्मजाय नमः
तत्त्वज्ञानप्रदाय नमः
सीतादेवीमुद्राप्रदायकाय नमः
अशोकविनकाच्छेत्रे नमः

सर्वमायाविभञ्जनाय नमः सर्वबन्धविमोक्रे नमः रक्षोविध्वंसकारकाय नमः १० परविद्यापरीहर्त्रे नमः परशौर्यविनाशनाय नमः परमन्ननिराकर्त्रे नमः परयन्त्रप्रभेदकाय नमः

| मर्जगरीनाणिने नाम             |    | रामदूताय नमः            |    |
|-------------------------------|----|-------------------------|----|
| सर्वग्रहविनाशिने नमः          |    | प्रतापवते नमः           |    |
| भीमसेनसहायकृते नमः            |    |                         |    |
| सर्वदुःखहराय नमः              |    | वानराय नमः              |    |
| सर्वलोकचारिणे नमः             |    | केसरीसुताय नमः          |    |
| मनोजवाय नमः                   |    | सीताशोकनिवारणाय नमः     |    |
| पारिजातद्रुमूलस्थाय नमः       | २० | अञ्जनागर्भसम्भूताय नमः  |    |
| सर्वमन्त्रस्वरूपवते नमः       |    | बालार्कसदृशाननाय नमः    |    |
| सर्वतत्र्रस्वरूपिणे नमः       |    | विभीषणप्रियकराय नमः     |    |
| सर्वयत्रात्मकाय नमः           |    | दशग्रीवकुलान्तकाय नमः   |    |
| कपीश्वराय नमः                 |    | लक्ष्मणप्राणदात्रे नमः  | ५० |
| महाकायाय नमः                  |    | वज्रकायाय नमः           |    |
| सर्वरोगहराय नमः               |    | महाद्युतये नमः          |    |
| प्रभवे नमः                    |    | चिरञ्जीविने नमः         |    |
| बलसिद्धिकराय नमः              |    | रामभक्ताय नमः           |    |
| सर्वविद्यासम्पत्प्रदायकाय नमः |    | दैत्यकार्यविघातकाय नमः  |    |
| कपिसेनानायकाय नमः             | ३० | अक्षहन्रे नमः           |    |
| भविष्यचतुराननाय नमः           |    | काश्चनाभाय नमः          |    |
| कुमारब्रह्मचारिणे नमः         |    | पञ्चवऋाय नमः            |    |
| र्ब्नकुण्डलदीप्तिमते नमः      |    | महातपसे नमः             |    |
| चश्चलद्वालसन्नद्ध-            |    | लङ्किणीभञ्जनाय नमः      | ६० |
| लम्बमानशिखोञ्चलाय नमः         |    | श्रीमते नमः             |    |
| गन्धर्वविद्यातत्त्वज्ञाय नमः  |    | सिंहिकाप्राणभञ्जनाय नमः |    |
| महाबलपराऋमाय नमः              |    | गन्धमादनशैलस्थाय नमः    |    |
| कारागृहविमोक्रे नमः           |    | लङ्कापुरविदाहकाय नमः    |    |
| शृङ्खलाबन्धमोचकाय नमः         |    | सुग्रीवसचिवाय नमः       |    |
| सागरोत्तारकाय नमः             |    | धीराय नमः               |    |
| प्राज्ञाय नमः                 | ४० | शूराय नमः               |    |
|                               |    |                         |    |
|                               |    |                         |    |

दृढव्रताय नमः दैत्यकुलान्तकाय नमः कालनेमिप्रमथनाय नमः स्रार्चिताय नमः ९० हरिमर्कटमर्कटाय नमः महातेजसे नमः 00 रामचुडामणिप्रदाय नमः दान्ताय नमः कामरूपिणे नमः शान्ताय नमः प्रसन्नात्मने नमः पिङ्गलाक्षाय नमः शतकण्ठमदापहृते नमः वर्धिमैनाकपूजिताय नमः योगिने नमः कबलीकृतमार्तण्डमण्डलाय नमः रामकथालोलाय नमः विजितेन्द्रियाय नमः सीतान्वेषणपण्डिताय नमः रामसुग्रीवसन्धात्रे नमः महिरावणमर्दनाय नमः वज्रदंष्ट्राय नमः स्फटिकाभाय नमः वज्रनखाय नमः 800 रुद्रवीर्यसमुद्भवाय नमः वागधीशाय नमः ८० इन्द्रजित्प्रहितामोघ-नवव्याकृतिपण्डिताय नमः चतुर्बाहवे नमः ब्रह्मास्त्रविनिवारकाय नमः पार्थध्वजाग्रसंवासिने नमः दीनबन्धवे नमः शरपञ्जरहेलकाय नमः महात्मने नमः दशबाहवे नमः भक्तवत्सलाय नमः लोकपूज्याय नमः सञ्जीवननगाहर्त्रे नमः जाम्बवत्प्रीतिवर्धनाय नमः श्चये नमः सीतासमेतश्रीराम-वाग्मिने नमः पादसेवाधुरन्धराय नमः

॥इति श्री हनुमदष्टोत्तरशतनामावलिः सम्पूर्णा॥

## ॥ रामाष्टोत्तरशतनामावलिः॥

रामाय नमः रावण-संहार-कृत-मानुष-विग्रहाय नमः कौसल्या-सुकृत-व्रात-फलाय नमः दशरथात्मजाय नमः लक्ष्मणार्चित-पादाज्ञाय नमः सर्व-लोक-प्रियङ्कराय नमः साकेत-वासि-नेत्राज्ज-सम्प्रीणन-दिवाकराय नमः विश्वामित्र-प्रियाय नमः शान्ताय नमः ताटका-ध्वान्त-भास्कराय नमः सुबाहु-राक्षस-रिपवे नमः कौशिकाध्वर-पालकाय नमः अहल्या-पाप-संहर्त्रे नमः जनकेन्द्र-प्रियातिथये नमः पुरारि-चाप-दलनाय नमः वीर-लक्ष्मी-समाश्रयाय नमः सीता-वरण-माल्याढ्याय नमः जामदग्य-मदापहाय नमः वैदेही-कृत-शृङ्गाराय नमः पितृ-प्रीति-विवर्धनाय नमः २० ताताज्ञोत्सृष्ट-हस्त-स्थ-राज्याय नमः सत्य-प्रतिश्रवाय नमः तमसा-तीर-संवासिने नमः गुहानुग्रह-तत्पराय नमः

स्मन्न-सेवित-पदाय नमः

भरद्वाज-प्रियातिथये नमः चित्रकूट-प्रिय-स्थानाय नमः पादुका-न्यस्त-भू-भराय नमः अनस्या-अङ्गरागाङ्क-सीता-साहित्य-शोभिताय नमः दण्डकारण्य-सश्चारिणे नमः 3 o विराध-स्वर्ग-दायकाय नमः रक्षः-कालान्तकाय नमः सर्व-म्नि-सङ्घ-मुदावहाय नमः प्रतिज्ञात-आशर-वधाय नमः शरभङ्ग-गति-प्रदाय नमः अगस्त्यार्पित-बाणास-खङ्ग-तूणीर-मण्डिताय नमः प्राप्त-पश्चवटी-वासाय नमः गृध्रराज-सहायवते नमः कामि-शूर्पणखा-कर्ण-नास-च्छेद-नियामकाय नमः खरादि-राक्षस-त्रातखण्डनावितसञ्जनाय नमः सीता-संश्लिष्ट-कायाभा-जित-विद्युद्-युताम्बुदाय नमः मारीच-हन्ने नमः मायाढ्याय नमः जटायुर्-मोक्ष-दायकाय नमः कबन्ध-बाह्-लवनाय नमः शबरी-प्रार्थितातिथये नमः हनुमद्-वन्दित-पदाय नमः

स्ग्रीव-स्हदेऽव्ययाय नमः दैत्य-कङ्काल-विक्षेपिणे नमः सप्त-साल-प्रभेदकाय नमः 40 एकेषु-हत-वालिने नमः तारा-संस्तुत-सद्गुणाय नमः कपीन्द्री-कृत-सुग्रीवाय नमः सर्व-वानर-पूजिताय नमः वायु-सूनु-समानीत-सीता-सन्देश-नन्दिताय नमः जैत्र-यात्रोद्यताय नमः जिष्णवे नमः विष्णु-रूपाय नमः निराकृतये नमः कम्पिताम्भोनिधये नमः €0 सम्पत-प्रदाय नमः सेतु-निबन्धनाय नमः लङ्का-विभेदन-पटवे नमः निशाचर-विनाशकाय नमः कुम्भकर्णाख्य-कुम्भीन्द्र-मृगराज-पराक्रमाय नमः मेघनाद-वधोद्युक्त-लक्ष्मणास्त्र-बलप्रदाय नमः दशग्रीवान्धतामिस्र-प्रमापण-प्रभाकराय नमः इन्द्रादि-देवता-स्तुत्याय नमः चन्द्राभ-मुख-मण्डलाय नमः विभीषणार्पित-निशाचर-

राज्याय नमः 00 वृष-प्रियाय नमः वैश्वानर-स्तुत-गुणावनिपुत्री-समागताय नमः पुष्पक-स्थान-स्भगाय नमः पुण्यवत्-प्राप्य-दर्शनाय नमः राज्याभिषिक्ताय नमः राजेन्द्राय नमः राजीव-सदृशेक्षणाय नमः लोक-तापापहर्त्रे नमः धर्म-संस्थापनोद्यताय नमः शरण्याय नमः 60 कीर्तिमते नमः नित्याय वदान्याय नमः करुणार्णवाय नमः संसार-सिन्धु-सम्मग्न-तारकाख्या-महोञ्चलाय नमः मध्राय नमः मधुरोक्तये नमः मधुरा-नायकाग्रजाय नमः शम्बूक-दत्त-स्वर्लोकाय नमः शम्बराराति-सुन्दराय नमः अश्वमेध-महायाजिने नमः वाल्मीकि-प्रीतिमते नमः वशिने नमः स्वयं रामायण-श्रोत्रे नमः पुत्र-प्राप्ति-प्रमोदिताय नमः

ब्रह्मादि-स्तुत-माहात्म्याय नमः ब्रह्मार्ष-गण-पूजिताय नमः वर्णाश्रम-रताय नमः वर्णाश्रम-धर्म-नियामकाय नमः रक्षा-पराय नमः राज-वंश-प्रतिष्ठापन-तत्पराय नमः १०० गन्धर्व-हिंसा-संहारिणे नमः धृतिमते नमः दीन-वत्सलाय नमः ज्ञानोपदेष्ट्रे नमः वेदान्त-वेद्याय नमः भक्त-प्रियङ्कराय नमः वैकुण्ठ-वासिने नमः चराचर-विमुक्ति-दाय नमः १०८

॥इति ब्रह्मयामले रामरहस्ये प्रोक्ता श्री-राम-अष्टोत्तरशत-नामावलिः सम्पूर्णा॥

## ॥ सीताष्टोत्तरशतनामाविलः॥

सीतायै नमः
सीर-ध्वज-सृतायै नमः
सीमातीत-गुणोञ्चलायै नमः
सौन्दर्य-सार-सर्वस्व-भूतायै नमः
सौभाग्य-दायिन्यै नमः
देव्यै नमः
देवार्चित-पदायै नमः
देवार्चित-पदायै नमः
दशरथ-स्रुषायै नमः
रामायै नमः
राम-प्रियायै नमः
रम्यायै नमः
राकेन्द्र-वदनोञ्चलायै नमः

वीर्य-शुल्कायै नमः वीर-पल्यै नमः वियन्मध्यायै नमः वर-प्रदाये नमः पति-व्रताये नमः पङ्कि-कण्ठ-नाशिन्यै नमः पावन-स्मृतये नमः वन्दारु-वत्सलाये नमः वीर-मात्रे नमः वृत-रघूत्तमाये नमः सम्पत्-कर्ये नमः सदा-तुष्टाये नमः साक्षिण्ये नमः

|                       |    |                                  | . • |
|-----------------------|----|----------------------------------|-----|
| साधु-सम्मतायै नमः     |    | अनसूया-अङ्गरागाङ्कायै नमः        |     |
| नित्यायै नमः          |    | अनस्यायै नमः                     |     |
| नियत-संस्थानायै नमः   |    | सूरि-वन्दितायै नमः               |     |
| नित्यानन्दायै नमः     | ३० | अशोक-वनिका-स्थानायै नमः          |     |
| नुति-प्रियायै नमः     |    | अशोकायै नमः                      |     |
| पृथ्यै नमः            |    | शोक-विनाशिन्यै नमः               |     |
| पृथ्वी-सुतायै नमः     |    | सूर्य-वंश-सुषायै नमः             | ६०  |
| पुत्र-दायिन्यै नमः    |    | सूर्य-मण्डलान्तस्स्थ-वल्लभायै नम | :   |
| प्रकृत्ये परस्ये नमः  |    | श्रुत-मात्राघ-हरणायै नमः         |     |
| हनूमत्-स्वामिन्यै नमः |    | श्रुति-सन्निहितेक्षणायै नमः      |     |
| हृद्याये नमः          |    | पुष्प-प्रियायै नमः               |     |
| हृदय-स्थाये नमः       |    | पुष्पक-स्थायै नमः                |     |
| हताशुभायै नमः         |    | पुण्य-लभ्यायै नमः                |     |
| हंस-युक्तायै नमः      | ४० | पुरातन्यै नमः                    |     |
| हंस-गतये नमः          |    | पुरुषार्थ-प्रदायै नमः            |     |
| हर्ष-युक्तायै नमः     |    | पूज्यायै नमः                     |     |
| हताशरायै नमः          |    | 6                                | 90  |
| सार-रूपायै नमः        |    | परन्तपायै नमः                    |     |
| सार-वचसे नमः          |    | पद्म-प्रियायै नमः                |     |
| साध्यै नमः            |    | पद्म-हस्तायै नमः                 |     |
| सरमा-प्रियायै नमः     |    | पद्माये नमः                      |     |
| त्रिलोक-वन्द्यायै नमः |    | पद्म-मुख्यै नमः                  |     |
| त्रिजटा-सेव्यायै नमः  |    | शुभाये नमः                       |     |
| त्रिपथ-गार्चिन्यै नमः | ५० | जन-शोक-हरायै नमः                 |     |
| त्राण-प्रदायै नमः     |    | जन्म-मृत्यु-्शोक-विनाशिन्यै नमः  |     |
| त्रात-काकायै नमः      |    | जगद्-रूपायै नमः                  |     |
| तृणी-कृत-दशाननायै नमः |    | 5                                | ८०  |
|                       |    |                                  |     |

जय-दाये नमः
जनकात्मजाये नमः
नाथनीय-कटाक्षाये नमः
नाथाये नमः
नाथेक-तत्पराये नमः
नक्षत्र-नाथ-वदनाये नमः
नष्ट-दोषाये नमः
नयावहाये नमः
विह्न-पाप-हराये नमः
विह्न-पाप-हराये नमः
विह्न-पाप-हराये नमः
विह्न-पाप-हराये नमः
विह्न-पाप-हराये नमः
विह्न-पाप-स्राये नमः
विह्न-पाप-स्राये नमः
विह्न-पाप-स्राये नमः
विह्न-पाप-स्राये नमः
विह्न-पाप-स्राये नमः

भव्य-गुणायै नमः भात्र्ये नमः भरत-वन्दितायै नमः स्वर्णाङ्गौ नमः सुखकर्ये नमः 800 सुग्रीवाङ्गद-सेवितायै नमः वैदेह्ये नमः विनताघौघ-नाशिन्यै नमः विधि-वन्दितायै नमः लोक-मात्रे नमः लोचनान्त-स्थित-कारुण्य-सागरायै नमः कृताकृत-जगद्धेतवे नमः कृत-राज्याभिषेककायै नमः

इदम् अष्टोत्तर-शतं सीता-नाम्नां तु या वधूः। भक्ति-युक्ता पठेत् सा तु पुत्र-पौत्रादि-नन्दिता॥

धन-धान्य-समृद्धा च दीर्घ-सौभाग्य-दर्शिनी। पुंसाम् अपि स्तोत्रम् इदं पठनात् सर्व-सिद्धि-दम्॥

॥इति ब्रह्मयामले रामरहस्ये प्रोक्ता श्री-सीता-अष्टोत्तरशत-नामावलिः सम्पूर्णा॥

# ॥ हनुमद्ष्टोत्तरशतनामाविलः॥

हनुमते नमः अञ्जना-सूनवे नमः

वराङ्गनायै नमः भक्ति-गम्यायै नमः

> धीमते नमः केसरि-नन्दनाय नमः

30

80

40

वातात्मजाय नमः तृणीकृत-दशाननाय नमः वर-गुणाय नमः कुल्या-कल्प-महाम्भोधये नमः वानरेन्द्राय नमः सिंहिका-प्राण-नाशनाय नमः विरोचनाय नमः स्रसा-विजयोपाय-वेत्रे नमः सुग्रीव-सचिवाय नमः सुर-वरार्चिताय नमः श्रीमते नमः १० जाम्बवन्नुत-माहात्म्याय नमः सूर्य-शिष्याय नमः जीविताहत-लक्ष्मणाय नमः जम्बुमालि-रिपवे नमः स्ख-प्रदाय नमः जम्भ-वैरि-साध्वस-नाशनाय नमः ब्रह्म-दत्त-वराय नमः ब्रह्म-भूताय नमः अस्रावध्याय नमः ब्रह्मर्षि-सन्नुताय नमः राक्षसारये नमः जितेन्द्रियाय नमः सेनापति-विनाशनाय नमः जितारातये नमः लङ्कापुर-प्रदग्धे नमः वालानल-सुशीतलाय नमः राम-दूताय नमः रणोत्कटाय नमः वानर-प्राण-सन्दात्रे नमः सञ्जीवनी-समाहर्त्रे नमः वालि-सूनु-प्रियङ्कराय नमः २० सर्व-सैन्य-प्रहर्षकाय नमः महारूप-धराय नमः रावणाकम्प्य-सौमित्रि-नयन-स्फुट-मान्याय नमः भक्तिमते नमः भीमाय नमः अशोक-वनिका-च्छेदिने नमः भीम-पराऋमाय नमः भीम-दर्प-हराय नमः सीता-वात्सल्य-भाजनाय नमः विषीदद्-भूमि-तनयार्पित-भक्त-वत्सलाय नमः भर्त्सिताशराय नमः रामाङ्गलीयकाय नमः रघु-वंश-प्रिय-कराय नमः चूडामणि-समानेत्रे नमः रण-धीराय नमः राम-दुःखापहारकाय नमः अक्ष-हन्ने नमः रयाकराय नमः भरतार्पित-सन्देशाय नमः विक्षतारये नमः

| भगवच्छ्रिष्ट-विग्रहाय नमः    |    | भूति-दायकाय नमः                   |
|------------------------------|----|-----------------------------------|
| अर्जुन-ध्वज-वासिने नमः       |    | भूत-सन्नुताय नमः                  |
| तर्जिताशर-नायकाय नमः         |    | भुक्ति-मुक्ति-प्रदाय नमः          |
| महते नमः                     | ६० | भूम्ने नमः                        |
| महा-मधुर-वाचे नमः            |    | भुज-निर्जित-राक्षसाय नमः          |
| महात्मने नमः                 |    | वाल्मीकि-स्तुत-माहात्म्याय नमः    |
| मातरिश्व-जाय नमः             |    | विभीषण-सुहृदे नमः                 |
| मरुनुताय नमः                 |    | विभवे नमः ९०                      |
| महोदार-गुणाय नमः             |    | अनुकम्पा-निधये नमः                |
| मधु-वन-प्रियाय नमः           |    | पम्पा-तीर-चारिणे नमः              |
| महा-धैर्याय नमः              |    | प्रतापवते नमः                     |
| महा-वीर्याय नमः              |    | ब्रह्मास्त्र-हत-रामादि-जीवनाय नमः |
| मिहिराधिक-कान्तिमते नमः      |    | ब्रह्म-वत्सलाय नमः                |
| अन्नदाय नमः                  | 90 | जय-वार्ताहराय नमः                 |
| वसुदाय नमः                   |    | जेत्रे नमः                        |
| वाग्मिने नमः                 |    | जानकी-शोक-नाशनाय नमः              |
| ज्ञान-दाय नमः                |    | जानकी-राम-साहित्य-कारिणे नमः      |
| वत्सलाय नमः                  |    | जन-सुख-प्रदाय नमः १००             |
| वशिने नमः                    |    | बहु-योजन-गन्ने नमः                |
| वशीकृताखिल-जगते नमः          |    | बल-वीर्य-गुणाधिकाय नमः            |
| वरदाय नमः                    |    | रावणालय-मर्दिने नमः               |
| वानराकृतये नमः               |    | राम-पादाज्ज-वाहकाय नमः            |
| भिक्षु-रूप-प्रतिच्छन्नाय नमः |    | राम-नाम-लसद्-वऋाय नमः             |
| अभौति-दाय नमः                | ८० | रामायण-कथादताय नमः                |
| भीति-वर्जिताय नमः            |    | राम-स्वरूप-विलसन्मानसाय नमः       |
| भूमी-धर-हराय नमः             |    | राम-बल्लभाय नमः १०८               |
| •                            |    | 1                                 |

इत्थम् अष्टोत्तर-शतं नाम्नां वातात्मजस्य यः। अनुसन्ध्यं पठेत् तस्य मारुतिः सम्प्रसीदति। प्रसन्ने मारुतौ रामो भुक्ति-मुक्ती प्रयच्छति॥

॥इति ब्रह्मयामले रामरहस्ये प्रोक्ता श्री-हनुमद्-अष्टोत्तरशत-नामावलिः सम्पूर्णा॥

#### ॥ उत्तराङ्गपूजा ॥

वनस्पति-रसोद्भूतो गन्धाढ्यो धूप उत्तमः। रामचन्द्र महीपाल धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्॥

सपरिवाराय श्रीरामाय नमः- धूपम् आघ्रापयामि।

ज्योतिषां पतये तुभ्यं नमो रामाय वेधसे। गृहाण मङ्गलं दीपं त्रैलोक्य-तिमिरापहम्॥

सपरिवाराय श्रीरामाय नमः- अलङ्कारदीपं सन्दर्शयामि। ओं भूर्भुवस्सुवः + ब्रह्मणे स्वाहा।

> इदं दिव्यान्नम् अमृतं रसैः षङ्गिः समन्वितम्। रामचन्द्रेश नैवेद्यं सीतेश प्रतिगृह्यताम्॥

सपरिवाराय श्रीरामाय नमः- नैवेद्यं निवेदयामि। मध्ये मध्ये पानीयं समर्पयामि। निवेदनोत्तरम् आचमनीयं समर्पयामि।

> नागवल्ली-दलैर्-युक्तं पूगी-फल-समन्वितम्। ताम्बूलं गृह्यतां राम कर्पूरादि-समन्वितम्॥

सपरिवाराय श्रीरामाय नमः- कर्पूरताम्बूलं समर्पयामि।

मङ्गलार्थं महीपाल नीराजनमिदं हरे। सङ्गहाण जगन्नाथ रामचन्द्र नमोऽस्तु ते॥

सपरिवाराय श्रीरामाय नमः- समस्त-अपराध-क्षमापणार्थं समस्त-दुरित-उपशान्त्यर्थं समस्त-सन्मङ्गल-अवाध्यर्थं कर्पूर-नीराजनं दर्शयामि। रक्षां धारयामि। कल्पवृक्ष-समुद्भूतैः पुरुहूतादिभिः सुमैः। पुष्पाञ्जलिं ददाम्यद्य पूजिताय आशर-द्विषे॥

योऽपां पुष्पं वेदे। पुष्पंवान् प्रजावाँन् पशुमान् भंवति। चन्द्रमा वा अपां पुष्पम्। पुष्पंवान् प्रजावाँन् पशुमान् भंवति। य एवं वेदे। योऽपामायतंनं वेदे। आयतंनवान् भवति।

औं तद्घृह्म। औं तद्घृयः। औं तद्गृत्मा। औं तथ्मृत्यम्। औं तथ्मर्वम्। औं तत्पुरोर्नमः॥

अन्तश्चरितं भूतेषु गुहायां विश्वमूर्तिषु। त्वं यज्ञस्त्वं वषद्वारस्त्विमन्द्रस्त्वः रुद्रस्त्वं विष्णुस्त्वं ब्रह्म त्वं प्रजापितः। त्वं तंदाप् आपो ज्योती रसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः सुवरोम्॥ सपरिवाराय श्रीरामाय नमः- वेदोक्तमन्त्रपुष्पाञ्जलिं समर्पयामि।

> मन्दाकिनी-समुद्भूत-काश्चनाज्ज-स्रजा विभो। सम्मानिताय शक्रेण स्वर्ण-पृष्पं ददामि ते॥

सपरिवाराय श्रीरामाय नमः- स्वर्ण-पुष्पम् समर्पयामि।

चराचरं व्याप्नुवन्तम् अपि त्वां रघु-नन्दन। प्रदक्षिणं करोम्यद्य मदग्रे मूर्ति-संयुतम्॥

सपरिवाराय श्रीरामाय नमः- प्रदक्षिणं करोमि।

ध्येयं सदा परिभव-घ्रम् अभीष्ट-दोहं तीर्थास्पदं शिव-विरिश्चि-नुतं शरण्यम्। भृत्यार्ति-हं प्रणत-पाल-भवाब्धि-पोतं वन्दे महापुरुष ते चरणारविन्दम्॥ त्यका सुदुस्त्यज-सुरेप्सित-राज्य-लक्ष्मीं धर्मिष्ठ आर्य-वचसा यदगाद् अरण्यम्। माया-मृगं दियतयेप्सितम् अन्वधावत् वन्दे महापुरुष ते चरणारविन्दम्॥

साङ्गोपाङ्गाय साराय जगतां सनकादिभिः। वन्दिताय वरेण्याय राघवाय नमो नमः ॥

सपरिवाराय श्रीरामाय नमः- नमस्कारान् समर्पयामि।

## ॥ प्रार्थना ॥

त्वमक्षरोऽसि भगवन् व्यक्ताव्यक्त-स्वरूप-धृत्। यथा त्वं रावणं हत्वा यज्ञ-विघ्न-करं खलम्। लोकान् रक्षितवान् राम तथा मन्मानसाश्रयम्॥१॥

रजस्तमश्च निर्हत्य त्वत्पूजालस्य-कारकम्। सत्त्वम् उद्रेचय विभो त्वत्पूजादर-सिद्धये॥२॥

विभूतिं वर्षय गृहे पुत्रपौत्राभिवृद्धिकृत्। कल्याणं कुरु मे नित्यं कैवल्यं दिश चान्ततः॥३॥

विधितोऽविधितो वाऽपि या पूजा क्रियते मया। तां त्वं सन्तुष्टहृदयो यथावद् विहितामिव॥४॥

स्वीकृत्य परमेशान मात्रा मे सह सीतया। लक्ष्मणादिभिरप्यत्र प्रसादं कुरु मे सदा॥५॥

प्रार्थनाः समर्पयामि॥

# हनुमत्कृतं श्री-सीता-राम-स्तोत्रम्

अयोध्या-पुर-नेतारं मिथिला-पुर-नायिकाम्। इक्ष्वाकूणाम् अलङ्कारं वैदेहानाम् अलङ्कियाम्॥१॥ रघूणां कुल-दीपं च निमीनां कुल-दीपिकाम्। सूर्य-वंश-समुद्भूतं सोम-वंश-समुद्भवाम्॥२॥

पुत्रं दशरथस्यापि पुत्रीं जनक-भूपतेः। वसिष्ठ-अनुमताचारं शतानन्द-मतानुगाम्॥३॥

कौसल्या-गर्भ-सम्भूतं वेदि-गर्भोदितां स्वयम्। पुण्डरीक-विशालाक्षं स्फुरद्-इन्दीवरेक्षणाम्॥४॥

चन्द्र-कान्त-आननाम्भोजं चन्द्रबिम्ब-उपमाननाम्। मत्त-मातङ्ग-गमनं मत्त-सारस-गामिनीम्॥५॥

चन्दनार्द्र-भुजा-मध्यं कुङ्कुमाक्त-कुच-स्थलीम्। चापालङ्कृत-हस्ताङ्गं पद्मालङ्कृत-पाणिकाम्॥६॥

शरणागतगोप्तारं प्रणिपातप्रसादिकाम्। ताली-दल-श्यामलाङ्गं तप्त-चामीकर-प्रभाम्॥७॥

दिव्य-सिंहासनारूढं दिव्य-स्नग्-वस्न-भूषणाम्। अनुक्षणं कटाक्षाभ्याम् अन्योन्य-ईक्षण-काङ्किणौ॥८॥

अन्योन्य-सदशाकारौ त्रैलोक्य-गृह-दम्पती। इमौ युवां प्रणम्याहं भजाम्यद्य कृतार्थताम्॥९॥

अनया स्तोति यः स्तुत्या रामं सीतां च भक्तितः। तस्य तौ तनुतां प्रीतौ सम्पदः सकला अपि॥१०॥

इतीदं रामचन्द्रस्य जानकाश्च विशेषतः। कृतं हनुमता पुण्यं स्तोत्रं सद्यो विमृक्ति-दम्। यः पठेत्प्रातरुत्थाय सर्वान् कामानवाप्नुयात्॥११॥ ॥इति श्री-हनूमत्कृतं श्री-सीतारामस्तोत्रं सम्पूर्णम्॥ एकातपत्रच्छायायां शासिताशेषभूमिक। मम छत्रमिदं रत्नजालकं राम गृह्यताम्॥

छत्रम् समर्पयामि।

रक्षोराजानुजाभ्यां ते कृतं चामरसेवया। वीजयेऽहं कराभ्यां ते चामरद्वयमादरात्॥

चामरम् वीजयामि।

रामायणं साधु गीतं सुताभ्यां श्रुतवानसि। मयाऽपि गीयमानं ते स्तोत्रं चित्ताय रोचताम॥

गीतम् गायामि।

वीणावेणुमृदङ्गादिवाद्यैस्त्वां प्रीणयाम्यहम्। मददम्भाहङ्कृतीनां नाशको भव राघव॥

वाद्यम् घोषयामि।

आरुह्य सीतया सार्धं दत्तामान्दोलिकां मया। विभाहि भूषितो राम मत्कृते पूजनोत्सवे॥

आन्दोलिकां समर्पयामि।

मया कल्पितपल्याणं महान्तं मम घोटकम्। मदंसे चरणं न्यस्य मुदाऽऽरोह रघूत्तम॥

अश्वान् आरोहयामि।

गजेन महताऽऽयान्तमाकाङ्कान्ति स्म नागराः। द्रष्टुं त्वां मगजे भाहि दृष्ट्वा नन्देयमप्यहम्॥

गजान् आरोहयामि।

समस्तराजोपचारदेवोपचारपूजाः समर्पयामि।

मनसा वचसा कायेनागसां शतमन्वहम्। धियाऽधिया च रचये क्षमस्व सहजक्षम॥ आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम्। पूजाविधिं न जानामि क्षमस्व पुरुषोत्तम॥

## ॥ अर्घ्य-प्रदानम्॥

शुक्राम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्। प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये॥

प्राणान् आयम्य। ॐ भूः + भूर्भुवः सुव्रोम्। ममोपात्त + प्रीत्यर्थम् अद्य पूर्वोक्त + शुभितथौ श्रीरामचन्द्रपूजान्ते अर्घ्यप्रदानं करिष्ये (इति सङ्कल्प्य)।

> राम रात्रिश्चराराते क्षीरमध्वाज्यकल्पितम्। पूजान्तेऽर्घ्यं मया दत्तं स्वीकृत्य वरदो भव॥

श्री-सीता-लक्ष्मण-भरत-शत्रुघ्न-हनुमत्-समेत-श्री-रामचन्द्र-परब्रह्मणे नमः इदमर्घ्यं इदमर्घ्यं इदमर्घ्यम्॥

अनेनार्ध्यप्रदानेन श्री-सीता-लक्ष्मण-भरत-शत्रुघ्न-हनुमत्-समेत-श्री-रामचन्द्रः प्रीयताम्।

> हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः। अनन्तपुण्यफलदम् अतः शान्तिं प्रयच्छ मे॥

श्री-रामनवमी-पुण्यकाले अस्मिन् मया क्रियमाण श्रीरामपूजायां यद्देयमुपायनदा तत्प्रतिनिधित्वेन हिरण्यं श्री-सीता-लक्ष्मण-भरत-शत्रुघ्न-हनुमत्-समेत-श्री-रामचन्द्र-प्रीतिं कामयमानः मनसोद्दिष्टाय ब्राह्मणाय सम्प्रददे नमः न मम।

अनया पूजया श्री-सीता-लक्ष्मण-भरत-शत्रुघ्न-हनुमत्-समेत-श्री-रामचन्द्रः प्रीयताम्।

## ॥ विसर्जनम्॥

यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपः पूजा क्रियादिषु। न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतम्॥

इदं व्रतं मया देव कृतं प्रीत्यै तव प्रभो। न्यूनं सम्पूर्णतां यातु त्वत्प्रसादाञ्जनार्द्दन॥

अस्मात् बिम्बात् श्री-सीता-लक्ष्मण-भरत-शत्रुघ्न-हनुमत्-समेत-श्री-रामचन्द्रं यथास्थानं प्रतिष्ठापयामि। (अक्षतानर्पित्वा देवमुत्सर्जयेत्।)

> कायेन वाचा मनसेन्द्रियैर्वा बुद्ध्याऽऽत्मना वा प्रकृतेः स्वभावात्। करोमि यद्यत् सकलं परस्मे नारायणायेति समर्पयामि॥

अनया पूजया श्री-सीता-लक्ष्मण-भरत-शत्रुघ्न-हनुमत्-समेत-श्री-रामचन्द्रः प्रीयताम्। ॐ तत्सद्बह्मार्पणमस्तु।

#### ॥ कथा ॥

#### अगस्त्य उवाच

रहस्यं कथयिष्यामि सुतीक्ष्ण मुनिसत्तम। चैत्रे नवम्यां प्राक्पक्षे दिवापुण्ये पुनर्वसौ॥१॥

उदये गुरुगौरांशे स्वोचस्थे ग्रहपश्चके। मेष पूर्षाणे सम्प्राप्ते लग्ने कर्कटकाह्वये॥२॥

आविरासीत्स कलया कौसल्यायां परः पुमान्। तस्मिन्दिने तु कर्तव्यमुपवासव्रतं सदा॥३॥

तत्र जागरणं कुर्याद्रघुनाथपुरो भुवि। प्रतिमायां यथाशक्ति पूजा कार्या यथाविधि॥४॥

प्रातर्दशम्यांस्नात्वेव कृत्वा सन्ध्यादिकाः क्रियाः। सम्पूज्य विधिवद् रामं भक्त्या वित्तानुसारतः॥५॥ ब्राह्मणान् भोजयेत् सम्यक् दक्षिणाभिश्च तोषयेत्। गोभूतिलहिरण्याद्यैर्वस्त्रालङ्करणैस्तथा॥६॥

रामभक्तान्प्रयत्नेन प्रीणयेत्परया मुदा। एवं यः कुरुते भक्त्या श्रीरामनवमीव्रतम्॥७॥

अनेकजन्मासिद्धानि पापानि सुबहूनि च। भस्मीकृत्य व्रजत्येव तद्विष्णोः परम पदम्॥८॥

सर्वेषामप्ययं धर्मो भुक्तिमुक्त्येकसाधनः। अशुचिर्वाऽपि पापिष्ठः कृत्वेदं व्रतमुत्तमम्। पूज्यः स्यात्सर्वभूतानां यथा रामस्तथैव सः॥९॥

यस्तु रामनवम्यां वै भुङ्के स तु नराधमः। कुम्भीपाकेषु घोरेषु गच्छत्येव न संशयः॥१०॥

अकृत्वा रामनवमीव्रतं सर्वव्रतोत्तमम्। व्रतान्यन्यानि कुरुते न तेषां फलभाग्भवेत्॥११॥

रहस्यकृतपापानि प्रख्यातानि बहून्यपि। महान्ति च प्रणश्यन्ति श्रीरामनवमीव्रतात्॥१२॥

एकामपि नरो भक्त्या श्रीरामनवमीं मुने। उपोष्य कृतकृत्यः स्यात्सर्वपापैः प्रमुच्यते॥१३॥

नरो रामनवम्यां तु श्रीरामप्रतिमाप्रदः। विधानेन मुनिश्रेष्ठ स मुक्तो नात्र संशयः॥१४॥

## सुतीक्ष्ण उवाच

श्रीरामप्रतिमादानविधानं वा कथं मुने। कथय त्वं हि रामेऽपि भक्तस्य मम विस्तरात्॥१५॥

#### अगस्त्य उवाच

कथायिष्यामि तद्विद्वन् प्रतिमादानम्त्तमम्॥१६॥

विधानं चापि यत्नेन यतस्त्वं वैष्णवोत्तमः। अष्टम्यां चैत्रमासे तु शुक्लपक्षे जितेन्द्रियः॥१७॥

दन्तधावनपूर्वं तु प्रातः स्नायाद्यथाविधि। नद्यां तडागे कूपे वा ह्रदे प्रस्रवणेऽपि वा॥१८॥

ततः सन्ध्यादिका कार्याः संस्मरन् राघवं हृदि। गृहमासाद्य विप्रेन्द्र कुर्यादौपासनादिकम्॥१९॥

दान्तं कुटुम्बिनं विप्रं वेदशास्त्रपरं सदा। श्रीरामपूजानिरतं सुशीलं दम्भवर्जितम्॥२०॥

विधिज्ञं राममन्त्राणां राममन्नैकसाधनम्। आह्य भक्त्या सम्पूज्य वृणुयात्प्रार्थयन्निति॥२१॥

श्रीरामप्रतिमादानं करिष्येऽहं द्विजोत्तम। तत्राचार्यो भव प्रीतः श्रीरामोऽसि त्वमेव च॥२२॥

इत्युक्ता पूज्य विप्रं तं स्नापयित्वा ततः परम्। तैलेनाभ्यज्य पयसा चिन्तयन्नाघवं हृदि॥२३॥

श्वेताम्बरधरः श्वेतगन्धमाल्यानि धारयेत्। अर्चितो भूषितश्चेव कृतमाध्याह्निकक्रियः॥२४॥

आचार्यं भोजयेद् भक्त्या सात्त्विकान्नैः सुविस्तरम्। भुञ्जीत स्वयमप्येवं हृदि राममनुस्मरन्॥२५॥

एकभक्तव्रती तत्र सहाचार्यो जितेन्द्रियः। शृण्वन्नामकथां दिव्यामहःशेषं नयेन्मुने॥२६॥

सायं सन्ध्यादिकाः कुर्यात्क्रिया राममनुस्मरन्। आचार्यसहितो रात्रावधःशायी जितन्द्रियः॥२७॥

वसेत्स्वयं न चैकान्ते श्रीरामार्पितमानसः। ततः प्रातः समुत्थाय स्नात्वा सन्ध्यां यथाविधि॥२८॥ प्रातः सर्वाणि कर्माणि शीघ्रमेव समापयेत्। ततः स्वस्थमना भूत्वा विद्वद्भिः सहितोऽनघ॥२९॥

स्वगृहे चोत्तरे देशे दानस्योञ्चलमण्डपम्। चतुर्द्वारं पताकाढ्यं सवितानं सतोरणम्॥३०॥

मनोहरं महोत्सेधं पुष्पाद्यैः समलङ्कृतम्। शङ्खचऋहनूमद्भिः प्रारद्वारे समलङ्कृतम्॥३१॥

गरुत्मच्छाङ्गंबाणैश्च दक्षिणे समलकृतम्। गदाखङ्गाङ्गदेश्चेव पश्चिमे च विभूषितम्॥३२॥

पद्मस्वस्तिकनीलैश्च कौबेर्यां समलङ्कृतम्। मध्यहस्तचतुष्काढ्यवेदिकायुक्तमायतम् ॥३३॥

प्रविश्य गीतनृत्यैश्च वाद्यैश्चापि समन्वितम्। पुण्याहं वाचयित्वा च विद्वद्भिः प्रीतमानसः॥३४॥

ततः सङ्कल्पयेद्देवं राममेव स्मरन्मुने। अस्यां रामनवम्यां तु रामाराधनतत्परः॥३५॥

उपोष्याष्टसु यामेषु पूजयित्वा यथाविधि। इमां स्वर्णमयीं रामप्रतिमां तु प्रयत्नतः॥३६॥

श्रीरामप्रीतये दास्ये रामभक्ताय धीमते। प्रीतो रामो हरत्वाशु पापानि सुबहूनि मे॥३७॥

अनेकजन्मसंसिद्धान्यभ्यस्तानि महान्ति च। विलिखेत्सर्वतोभद्रं वेदिकोपरि सुन्दरम्॥३८॥

मध्ये तीर्थोदकैर्युक्तं पात्र संस्थाप्य चार्चितम्। सौवर्णे राजते ताम्रे पात्रे षट्कोणमालिखेत्॥३९॥

ततः स्वर्णमयीं रामप्रतिमां पलमात्रतः। निर्मितां द्विभुजां रम्यां वामाङ्कस्थितजानकीम्॥४०॥ बिभ्रतीं दक्षिणे हस्ते ज्ञानमुद्रां महामुने। वामेनाधःकरेणाराद्देवीमालिङ्ग्य संस्थिताम्॥४१॥

सिंहासने राजते च पलद्वयविनिर्मिते। पञ्चामृतस्नानपूर्वं सम्पूज्य विधिवत्ततः॥४२॥

मूलमन्त्रेण नियतो न्यासपूर्वमतन्द्रितः। दिवैवं विधिवत् कृत्वा रात्रौ जागरणं ततः॥४३॥

दिव्यां रामकथां श्रुत्वा रामभक्तिसमन्वितः। गीतनृत्यादिभिश्चेव रामस्तोत्रैरनेकधा॥४४॥

रामाष्टकेश्च संस्तुत्य गन्धपुष्पाक्षतादिभिः। कर्पूरागुरुकस्तूरीकह्लाराद्यैरनेकधा ॥४५॥

सम्पूज्य विधिवद् भक्त्या दिवारात्रं नयेद्वुधः। ततः प्रातः समुत्थाय स्नानसन्ध्यादिकाः क्रियाः॥४६॥

समाप्य विधिवद्रामं पूजयेद्विधिवन्मुने। ततो होमं प्रकुर्वीत मूलमन्नेण मन्नवित्॥४७॥

पूर्वोक्तपद्मकुण्डे वा स्थण्डिले वा समाहितः। लोकिकाग्रौ विधानेन शतमष्टोत्तरं मुने॥४८॥

साज्येन पायसेनैव स्मरन्नाममनन्यधीः। ततो भक्त्या सुसन्तोष्य आचार्यं पूजयेन्मुने॥४९॥

कुण्डलाभ्यां सरलाभ्यामङ्गुलीयैरनेकधा। गन्धपुष्पाक्षतैर्वस्त्रेर्विचित्रैस्तु मनोहरैः॥५०॥

ततो रामं स्मरन्दद्यादिमं मन्नमुदीरयेत्। इमां स्वर्णमयीं रामप्रतिमां समलङ्कृताम्॥५१॥

चित्रवस्रयुगच्छन्नरामोऽहं राघवाय ते। श्रीरामप्रीतये दास्ये तुष्टो भवतु राघवः॥५२॥ इति दत्त्वा विधानेन दद्याद्वै दक्षिणां ध्रुवम्। अन्नेभ्यश्च यथाशक्त्या गोहिरण्यादि भक्तितः॥५३॥

दद्याद्वासोयुगं धान्यं तथाऽलङ्करणानि च। एवं यः कुरुते रामप्रतिमादानमुत्तमम्॥५४॥

ब्रह्महत्यादिपापेभ्यो मुच्यते नात्र संशयः। तुलापुरुषदानादिफलमाप्नोति सुव्रत॥५५॥

अनेकजन्मसंसिद्धपापेभ्यो मुच्यते ध्रुवम्। बहुनाऽत्र किमुक्तेन मुक्तिस्तस्य करे स्थिता॥५६॥

कुरुक्षेत्रे महापुण्ये सूर्यपर्वण्यशेषतः। तुलापुरुषदानाद्येः कृतैर्यक्षभते फलम्। तत्फलं लभते मर्त्यो दानेनानेन सुव्रत॥५७॥

## सुतीक्ष्ण उवाच

प्रायेण हि नराः सर्वे दरिद्राः कृपणा मुने। कैः कर्तव्यं कथमिदं व्रतं ब्रूहि महामुने॥५८॥

#### अगस्त्य उवाच

दरिद्रश्च महाभाग स्वस्य वित्तानुसारतः॥५९॥

पलार्धेन तदर्धेन तदर्धार्धेन वा पुनः। वित्तशाठ्यमकृत्वेव कुर्यादेवं व्रतं मुने॥६०॥

यदि घोरतरं दुष्टं पातकं नेहते क्वचित्। अकिश्वनोऽपि यन्नेन उपोष्य नवमीदिने॥६१॥

एकचित्तोऽपि विधिवत्सर्वपापैः प्रमुच्यते। प्रातःस्नानं च विधिवत्कृत्वा सन्ध्यादिकाः क्रियाः॥६२॥

गोभूतिलहिरण्यादि दद्याद्वित्तानुसारतः। श्रीरामचन्द्रभक्तेभ्यो विद्वद्धयः श्रद्धयान्वितः॥६३॥ पारणं त्वथ कुर्वीत ब्राह्मणैश्च स्वबन्धुभिः। एवं यः कुरुते भक्त्या सर्वपापैः प्रमुच्यते॥६४॥

प्राप्ते श्रीरामनवमीदिने मर्त्यो विमूढधीः। उपोषणं न कुरुते कुम्भीपाकेषु पच्यते॥६५॥

यत्किश्चिद्राममुद्दिश्य क्रियते न स्वशक्तितः। रौरवे स तु मूढात्मा पच्यते नात्र संशयः॥६६॥

## सुतीक्ष्ण उवाच

यामाष्टके तु पूजा वै तत्र चोक्ता महामुने। मूलमन्त्रेणं संयुक्ता तां कथां वद सुव्रत॥६७॥

#### अगस्त्य उवाच

सर्वेषां राममन्नाणां मन्नराज षडक्षरम्। मुमूर्षोर्मणिकण्यान्ते अधीदकनिवासिनः॥६८॥

अहं दिशामि ते मन्नं तारकस्योपदेशतः। श्रीराम राम रामेति एतत्तारकमुच्यते॥६९॥

अतस्त्वं जानकीनाथपरं ब्रह्माभिधीयसे। तारकं ब्रह्म चेत्युक्तं तेन पूजा प्रशस्यते॥७०॥

पीठाङ्गदेवतानां तु आवृत्तीनां तथैव च। आदावेव प्रकुर्वीत देवस्य प्रीतमानस॥७१॥

उपचारैःषोडशभिः पूजा कार्या यथाविधि। आवाहनं स्थापनं च सम्मुखीकरणं तथा॥७२॥

एवं मुद्रां प्रार्थनां च पूजामुद्रां प्रयत्नतः। शङ्खपूजां प्रकुर्वीत पूर्वोक्तविधिना ततः॥७३॥

कलशं वामभागे च पूजाद्रव्याणि चादरात्। पीठे सम्पूज्य यत्नेन आत्मानं मन्नमुचरेत्॥७४॥ पात्रासादनमप्येवं कुर्याद्यामेष्वतन्द्रितः। पीताम्बराणि देवाय प्रापयत्रर्चयेत्सुधीः॥७५॥

स्वर्णयज्ञोपवीतानि दद्याद्देवाय भक्तितः। नानारत्नविचित्राणि दद्यादाभरणानि च॥७६॥

हिमाम्बुघृष्टं रुचिरं घनसारमनोहरम्। क्रमात्तु मूलमन्नेण उपचारान्प्रकल्पयेत्॥७७॥

कह्नारैः केतकैर्जात्यैः पुन्नागाद्यैः प्रपूजयेत्। चम्पकेः शतपत्रेश्च सुगन्धैः सुमनोहरैः॥७८॥

पाद्यचन्दनधूपैश्च तत्तन्मन्नैः प्रपूजयेत्। भक्ष्यभोज्यादिकं भक्त्या देवाय विधिनाऽर्पयेत्॥७९॥

येन सोपस्करं देवं दत्त्वा पापैः प्रमुच्यते। जन्मकोटिकृतैर्घोरेर्नानारूपैश्च दारुणः॥८०॥

विमुक्तः स्यात्क्षणादेव राम एव भवेन्मुने। श्रद्दधानस्य दातव्यं श्रीरामनवमीव्रतम्॥८१॥

सर्वलोकहितायेदं पवित्रं पापनाशनम्। लोहेन निर्मितं वाऽपि शिलया दारुणाऽपि वा॥८२॥

एकेनैव प्रकारेण यस्मै कस्मै च वा मुने। कृतं सर्वं प्रयत्नेन यत्किश्चिदपि भक्तितः॥८३॥

जपेदेकान्तमासीनो यावत्स दशमीदिनम्। अनेन स्यात्पुनः पूजा दशम्यां भोजयेद् द्विजान्॥८४॥

भक्त्या भोज्यैर्बहुविधैर्दद्याद् भक्त्या च दक्षिणाम्। कृतकृत्यो भवेत्तेन सद्यो रामः प्रसीदति॥८५॥

तूष्णीं तिष्ठन्नरो वाऽपि पुनरावृत्तिवर्जितः। द्वादशाब्दे कृतेनापि यत्पापं चापि मुच्यते॥८६॥ विलयं याति तत्सर्वं श्रीरामनवमीव्रतम्। जपं च रामनन्त्राणां यो न जानाति तस्य वै॥८७॥

उपोष्य संस्मरेद्रामं न्यासपूर्वमतन्द्रितः। गुरोर्लब्धमिमं मन्नं न्यसेन्त्र्यासपुरःसरम्॥८८॥

यामे यामे च विधिना कुर्यात्पूजां समाहितः। मुमुक्षुश्च सदा कुर्योच्छ्रीरामनवमीत्रतम्। मुच्यते सर्वपापेभ्यो याति ब्रह्म सनातनम्॥८९॥

॥इति श्रीस्कान्दपुराणे अगस्त्यसंहितायामगस्तिसुतीक्ष्णसंवादे रामनवमीव्रत-विधिः सम्पूर्णः॥

# ॥ श्री-शङ्कर-भगवत्पाद-पूजा॥

# ॥ पूर्वाङ्गविघ्नेश्वरपूजा॥

(आचम्य)

शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्। प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये॥

प्राणान् आयम्य। ॐ भूः + भूर्भुवः सुव्रोम्। (अप उपस्पृश्य, पुष्पाक्षतान् गृहीत्वा) ममोपात्तसमस्त दुरितक्षयद्वारा

श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं करिष्यमाणस्य कर्मणः

निर्विघ्नेन परिसमास्यर्थम् आदौ विघ्नेश्वरपूजां करिष्ये।

ॐ गुणानां त्वा गुणपंति १ हवामहे कविं कविानामुप्मश्रवस्तमम्। ज्येष्ठराजं ब्रह्मणां ब्रह्मणस्पत् आ नः शृण्वन्नूतिभिः सीद् सादनम्॥

अस्मिन् हरिद्राबिम्बे महागणपतिं ध्यायामि, आवाहयामि।

ॐ महागणपतये नमः आसनं समर्पयामि। पादयोः पाद्यं समर्पयामि। हस्तयोरध्यं समर्पयामि। आचमनीयं समर्पयामि। ॐ भूर्भुवस्सुवः। शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि। स्नानानन्तरमाचमनीयं समर्पयामि। वस्नार्थमक्षतान् समर्पयामि। यज्ञोपवीताभरणार्थे अक्षतान् समर्पयामि। दिव्यपरिमलगन्थान् धारयामि। गन्थस्योपरि हरिद्राकुङ्कुमं समर्पयामि। अक्षतान् समर्पयामि।

पुष्पमालिकां समर्पयामि। पुष्पैः पूजयामि।

## ॥ अर्चना ॥

१. ॐ सुमुखाय नमः १०. ॐ गणाध्यक्षाय नमः

२. ॐ एकदन्ताय नमः ११. ॐ फालचन्द्राय नमः

३. ॐ कपिलाय नमः १२. ॐ गजाननाय नमः

४. ॐ गजकर्णकाय नमः १३. ॐ वऋतुण्डाय नमः

५. ॐ लम्बोदराय नमः १४. ॐ शूर्पकर्णाय नमः

६. ॐ विकटाय नमः १५. ॐ हेरम्बाय नमः

७. ॐ विघ्नराजाय नमः १६. ॐ स्कन्दपूर्वजाय नमः

८. ॐ विनायकाय नमः १७. ॐ सिद्धिविनायकाय नमः

९. ॐ धूमकेतवे नमः १८. ॐ विघ्नेश्वराय नमः

नानाविधपरिमलपत्रपुष्पाणि समर्पयामि॥ धूपमाघ्रापयामि। अलङ्कारदीपं सन्दर्शयामि। नैवेद्यम्। ताम्बूलं समर्पयामि।

कर्प्रनीराजनं समर्पयामि।

कर्पूरनीराजनानन्तरमाचमनीयं समर्पयामि। वऋतुण्डमहाकाय कोटिसूर्यसमप्रभ। अविघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा॥ प्रार्थनाः समर्पयामि। अनन्तकोटिप्रदक्षिणनमस्कारान् समर्पयामि। छत्रचामरादिसमस्तोपचारान् समर्पयामि।

# ॥ प्रधान-पूजा - श्री-शङ्कर-भगवत्पाद-पूजा॥

शुक्राम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्। प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविद्रोपशान्तये॥

प्राणान् आयम्य। ॐ भूः + भूर्भुवः सुव्रोम्।

## ॥ सङ्कल्पः ॥

ममोपात्तसमस्तदुरितक्षयद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं शुभे शोभने मुहूर्ते अद्यब्रह्मणः द्वितीयपरार्द्धे श्वेतवराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे किलयुगे प्रथमे पादे जम्बूद्वीपे भारतवर्षे भरतखण्डे मेरोः दक्षिणेपार्श्वे शकाब्दे अस्मिन् वर्तमाने व्यावहारिके प्रभवादि षष्टिसंवत्सराणां मध्ये () नाम संवत्सरे उत्तरायणे / दक्षिणायने वसन्तऋतौ मेष/वृषभ-वैशाख-मासे शुक्लपक्षे पश्चम्यां शुभितथौ (इन्दु / भौम / बुध / गुरु / भृगु / स्थिर / भानु) वासरयुक्तायाम् (आर्द्रा/?) नक्षत्र () योग () करण-युक्तायां च एवं गुण विशेषण विशिष्टायाम् अस्यां पश्चम्यां शुभितथौ श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थम्

 उत्तराषाढा-नक्षत्रे धनूराशौ आविर्भूतानां श्रीमत्-शङ्कर-विजयेन्द्र-सरस्वती-संयमीन्द्राणाम् अस्माकं जगद्गुरूणां दीर्घ-आयुः-आरोग्य-

<sup>&</sup>lt;sup>७</sup>पृष्टं ५७२ पश्यताम्

८पृष्टं ५७३ पश्यताम्

९पृष्टं ५७४ पश्यताम्

सिद्धार्थं,

- तैः सङ्कल्पितानां सर्वेषां लोक-क्षेमार्थ-कार्याणां वेद-शास्त्रादि-सम्प्रदाय-पोषण-कार्याणां विविध-क्षेत्र-यात्रायाश्च अविघ्नतया सम्पूर्त्यर्थं
- कामकोटि-गुरु-परम्परायां कामकोटि-भक्त-जनानाम् अचश्रल-भावशुद्ध-दढतर-भक्ति-सिद्धार्थं, परस्पर-ऐकमत्य-सिद्धार्थं
- भारतीयानां महाजनानां विघ्न-निवृत्ति-पूर्वक-सत्कार्य-प्रवृत्ति-द्वारा ऐहिक-आमुष्मिक-अभ्युदय-प्राप्त्यर्थम्, असत्कार्येभ्यः निवृत्त्यर्थं
- भारतीयानां सन्ततेः सनातन-सम्प्रदाये श्रद्धा-भक्त्योः अभिवृद्धार्थं
- सर्वेषां द्विपदां चतुष्पदाम् अन्येषां च प्राणि-वर्गाणाम् आरोग्य-युक्त-सुख-जीवन-अवाध्यर्थम्
- अस्माकं सहकुटुम्बानां क्षेमस्थैर्य-धैर्य-वीर्य-विजय आयुरारोग्य ऐश्वर्याभिवृद्धर्थम् धर्मार्थकाममोक्षचतुर्विधफलपुरुषार्थसिद्धर्थं पुत्रपौत्राभि-वृद्धर्थम् इष्टकाम्यार्थसिद्धर्थं विवेक-वैराग्य-सिद्धर्थम् मम इहजन्मिन पूर्वजन्मिन जन्मान्तरे च सम्पादितानां ज्ञानाज्ञानकृतमहापातकचतुष्टय व्यतिरिक्तानां रहस्यकृतानां प्रकाशकृतानां सर्वेषां पापानां सद्य अपनोदनद्वारा सकल पापक्षयार्थं

श्रीमत्-शङ्करभगवत्पाद-प्रीत्यर्थं श्री-शङ्कर-जयन्ती-महोत्सवे यथाशक्ति-ध्यान-आवाहनादि-षोडशोपचारैः श्रीमत्-शङ्कर-भगवत्पादाचार्य-पूजां करिष्ये। तदङ्गं कलशपूजां च करिष्ये।

श्रीविघ्नेश्वराय नमः यथास्थानं प्रतिष्ठापयामि। (गणपति प्रसादं शिरसा गृहीत्वा)

#### ॥ आसन-पूजा॥

पृथिव्या मेरुपृष्ठ ऋषिः। सुतलं छन्दः। कूर्मो देवता॥

पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता। त्वं च धारय मां देवि पवित्रं चाऽऽसनं कुरु॥

## ॥ घण्टापूजा ॥

आगमार्थं तु देवानां गमनार्थं तु रक्षसाम्। घण्टारवं करोम्यादौ देवताऽऽह्वानकारणम्॥

## ॥ कलशपूजा॥

ॐ कलशाय नमः दिव्यगन्धान् धारयामि। ॐ गङ्गायै नमः। ॐ यमुनायै नमः। ॐ गोदावर्यै नमः। ॐ सरस्वत्यै नमः। ॐ नर्मदायै नमः। ॐ सिन्धवे नमः। ॐ कावेर्यै नमः। ॐ सप्तकोटिमहातीर्थान्यावाहयामि।

(अथ कलशं स्पृष्ट्वा जपं कुर्यात्) आपो वा इदश् सर्वं विश्वां भूतान्यापः प्राणा वा आपः पृशव् आपोऽन्नमापोऽमृतमापः सम्राडापो विराडापः स्वराडापृश्छन्दाृश्स्यापो ज्योतीृश्र्ष्यापो यज्रृश्र्ष्यापः सत्यमापः सर्वा देवता आपो भूर्भुवः सुवराप ओम्॥

> कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः। मूले तत्र स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः॥

कुक्षो तु सागराः सर्वे सप्तद्वीपा वसुन्धरा। ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदोऽप्यथर्वणः। अङ्गेश्च सहिताः सर्वे कलशाम्बुसमाश्रिताः॥

गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति। नर्मदे सिन्धुकावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु॥

सर्वे समुद्राः सरितः तीर्थानि च ह्रदा नदाः। आयान्तु श्रीमत्-शङ्कर-भगवत्पादाचार्याःपूजार्थं दुरितक्षयकारकाः॥

ॐ भूर्भुवः सुवो भूर्भुवः सुवो भूर्भुवः सुवंः।

(इति कलशजलेन सर्वोपकरणानि आत्मानं च प्रोक्ष्य।)

### ॥ आत्मपूजा ॥

ॐ आत्मने नमः, दिव्यगन्धान् धारयामि।

१. ॐ आत्मने नमः ४. ॐ जीवात्मने नमः

२. ॐ अन्तरात्मने नमः ५. ॐ परमात्मने नमः

३. ॐ योगात्मने नमः ६. ॐ ज्ञानात्मने नमः

### समस्तोपचारान् समर्पयामि।

देहो देवालयः प्रोक्तो जीवो देवः सनातनः। त्यजेदज्ञाननिर्माल्यं सोऽहं भावेन पूजयेत्॥

## ॥ पीठपूजा ॥

१. ॐ आधारशक्त्ये नमः ८. ॐ रत्नवेदिकाये नमः

२. ॐ मूलप्रकृत्यै नमः ९. ॐ स्वर्णस्तम्भाय नमः

३. ॐ आदिकूर्माय नमः १०. ॐ श्वेतच्छुत्राय नमः

४. ॐ आदिवराहाय नमः ११. ॐ कल्पकवृक्षाय नमः

५. ॐ अनन्ताय नमः १२. ॐ क्षीरसमुद्राय नमः

६. ॐ पृथिव्यै नमः १३. ॐ सितचामराभ्यां नमः

७. ॐ रत्नमण्डपाय नमः १४. ॐ योगपीठासनाय नमः

#### ॥गुरु ध्यानम्॥

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुर्गुरुर्देवो महेश्वरः। गुरुः साक्षात् परं ब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः॥

# ॥ षोडशोपचारपूजा॥ ॥ प्रधान-पूजा॥

श्रुति-स्मृति-पुराणानाम् आलयं करुणालयम्। नमामि भगवत्पाद-शङ्करं लोक-शङ्करम्॥ श्रीमत्-शङ्कर-भगवत्पादाचार्यान् ध्यायामि।

अज्ञानान्तर्गहन-पतितान् आत्म-विद्योपदेशैः त्रातुं लोकान् भव-दव-शिखा-ताप-पापच्यमानान्। मुक्का मौनं वट-विटपिनो मूलतो निष्पतन्ती शम्भोर्मूर्तिश्चरति भुवने शङ्कराचार्य-रूपा॥

नर्मस्ते रुद्र मृन्यवं उतो त् इषंवे नर्मः। नर्मस्ते अस्तु धन्वंने बाहुभ्यांमुत ते नर्मः॥ ॐ हीं नुमः शिवायं। सुद्योजातं प्रंपद्यामि।

> यमाश्रिता गिरां देवी नन्दयत्यात्म-संश्रितान्। तमाश्रये श्रिया जुष्टं शङ्करं करुणा-निधिम्॥ श्रीमत्-शङ्कर-भगवत्पादाचार्यान् आवाहयामि।

या त इषुंः शिवतंमा शिवं ब्भूवं ते धनुंः। शिवा शंर्व्यां या तव तयां नो रुद्र मृडय॥ ॐ हीं नुमः शिवायं। सद्योजाताय वै नमो नमंः।

> श्री-गुरुं भगवत्पादं शरण्यं भक्त-वत्सलम्। शिवं शिव-करं शुद्धम् अप्रमेयं नमाम्यहम्॥ श्रीमत्-शङ्कर-भगवत्पादाचार्येभ्यो नमः, आसनं समर्पयामि।

> > नित्यं शुद्धं निराकारं निराभासं निरञ्जनम्। नित्य-बोधं चिदानन्दं गुरुं ब्रह्म नमाम्यहम्॥

श्रीमत्-शङ्कर-भगवत्पादाचार्येभ्यो नमः, स्वागतं व्याहरामि। पूर्ण-कुम्भं समर्पयामि। या ते रुद्र शिवा तुनूरघोराऽपांपकाशिनी। तयां नस्तुनुवा शन्तंमया गिरिंशन्ताभिचांकशीहि॥ ॐ हीं नुमः शिवायं। भवे भवे नातिं भवे भवस्व माम्।

> सर्व-तन्त्र-स्व-तन्त्राय सदात्माद्वेत-रूपिणे। श्रीमते शङ्करार्याय वेदान्त-गुरवे नमः॥

श्रीमत्-शङ्कर-भगवत्पादाचार्येभ्यो नमः, पाद्यं समर्पयामि।

यामिषुं गिरिशन्त हस्ते बिभुष्यस्तेवे। शिवां गिरित्र तां कुरु मा हि सीः पुरुषं जगत्॥ ॐ हीं नमः शिवायं। भवोद्भेवाय नमंः॥

> वेदान्तार्थाभिधानेन सर्वानुग्रह-कारिणम्। यति-रूप-धरं वन्दे शङ्करं लोक-शङ्करम्॥

श्रीमत्-शङ्कर-भगवत्पादाचार्येभ्यो नमः, अर्घ्यं समर्पयामि। शिवेन वर्चसा त्वा गिरिशाच्छांवदामसि। यथां नः सर्वृमिञ्जगंदयक्ष्म र सुमना असंत्॥ ॐ हीं नुमः शिवायं। वामुदेवाय नमः।

> संसाराब्धि-निषण्णाज्ञ-निकर-प्रोद्दिधीर्षया। कृत-संहननं वन्दे भगवत्पाद-शङ्करम्॥

श्रीमत्-शङ्कर-भगवत्पादाचार्येभ्यो नमः, आचमनीयं समर्पयामि। श्रीमत्-शङ्कर-भगवत्पादाचार्येभ्यो नमः, मधुपर्कं समर्पयामि।

अध्यंवोचदिधवृक्ता प्रंथमो दैव्यों भिषक्। अही ईश्च सर्वां अम्भय-न्थ्सर्वांश्च यातुधान्यंः॥ ॐ हीं नुमः शिवायं। ज्येष्ठाय नर्मः।

> यत्-पाद-पङ्कज-ध्यानात् तोटकाद्या यतीश्वराः। बभूवुस्तादशं वन्दे शङ्करं षण्मतेश्वरम्॥

श्रीमत्-शङ्कर-भगवत्पादाचार्येभ्यो नमः, स्नपयामि। (श्रीरुद्र-चमक-पुरुषसूक्त-उपनिषद्भिः स्नापयित्वा) स्नानानन्तरम् आचमनीयं समर्पयामि। असौ यस्ताम्रो अंरुण उत बुभुः सुंमुङ्गलंः। ये चेमा॰ रुद्रा अभितों दिक्षु श्रिताः संहस्रशोऽवैषा॰ हेर्ड ईमहे॥ ॐ हीं नुमः शिवायं। श्रेष्ठाय नर्मः।

> नमः श्री-शङ्कराचार्य-गुरवे शङ्करात्मने। शरीरिणां शङ्कराय शङ्कर-ज्ञान-हेतवे॥

श्रीमत्-शङ्कर-भगवत्पादाचार्येभ्यो नमः, वस्त्रं समर्पयामि। असौ योऽवसर्पति नीलंग्रीवो विलोहितः। उतैनं गोपा अंदशृत्रदंशन्नुदहार्यः। उतैनं विश्वां भूतानि स दृष्टो मृंडयाति नः॥ ॐ हीं नमः शिवायं। रुद्राय नमंः।

> हर-लीलावताराय शङ्कराय वरौजसे। कैवल्य-कलना-कल्प-तरवे गुरवे नमः॥

श्रीमत्-शङ्कर-भगवत्पादाचार्येभ्यो नमः, यज्ञोपवीतं समर्पयामि।

प्रचार्यं सर्व-लोकेषु सञ्चार्यं हृदयाम्बुजे। विचार्यं सर्व-वेदान्तैः आचार्यं शङ्करं भजे॥

श्रीमत्-शङ्कर-भगवत्पादाचार्येभ्यो नमः, भस्मोद्धूलनं रुद्राक्ष-मालिकां च समर्पयामि।

नमों अस्तु नीलंग्रीवाय सहस्राक्षायं मीढुषें। अथो ये अस्य सत्वांनोऽहं तेभ्योऽकरुं नमंः॥ ॐ हीं नुमः शिवायं। कालांय नमंः।

> याऽनुभूतिः स्वयं-ज्योतिः आदित्येशान-विग्रहा। शङ्कराख्या च तं नौमि सुरेश्वर-गुरुं परम्॥

श्रीमत्-शङ्कर-भगवत्पादाचार्येभ्यो नमः, दिव्य-परिमल-गन्धान् धारयामि। गन्धस्योपरि हरिद्रा-कुङ्कमं समर्पयामि।

> आनन्द-घनमद्वन्द्वं निर्विकारं निरञ्जनम्। भजेऽहं भगवत्पादं भजतामभय-प्रदम्॥

श्रीमत्-शङ्कर-भगवत्पादाचार्येभ्यो नमः, दण्डं समर्पयामि।

प्र मृंश्च धन्वंनस्त्वमुभयोरार्ह्नियोर्ज्याम्। याश्चं ते हस्त इषंवः परा ता भंगवो वप॥ ॐ हीं नमः शिवायं। कलंविकरणाय नमः।

> तं वन्दे शङ्कराचार्यं लोक-त्रितय-शङ्करम्। सत्-तर्क-नखरोद्गीर्ण-वावदूक-मतङ्गजम्॥

श्रीमत्-शङ्कर-भगवत्पादाचार्येभ्यो नमः, अक्षतान् समर्पयामि।

अवतत्य धनुस्त्व सहंस्राक्ष शतेषुधे। निशीर्य शत्यानां मुखां शिवो नेः सुमनां भव॥ ॐ हीं नुमः शिवायं। बलंविकरणाय नर्मः।

> नमामि शङ्कराचार्य-गुरु-पाद-सरोरुहम्। यस्य प्रसादान्मूढोऽपि सर्व-ज्ञो भवति स्वयम्॥

श्रीमत्-शङ्कर-भगवत्पादाचार्येभ्यो नमः, पुष्प-मालां समर्पयामि। पुष्पैः पूजयामि।

# श्री-शङ्कर-चतुर्विंशति-नामावल्या अङ्गपूजा

| ۶.         | अष्ट-वर्ष-चतुर्वेदिने नमः     | पादौ पूजयामि       |
|------------|-------------------------------|--------------------|
| ₹.         | द्वादशाखिल-शास्त्र-विदे नमः   | गुल्फौ पूजयामि     |
| ₹.         | सर्व-लोक-ख्यात-शीलाय नमः      | जङ्घे पूजयामि      |
| ٧.         | प्रस्थान-त्रय-भाष्य-कृते नमः  | जानुनी पूजयामि     |
| ۷.         | पद्मपादादि-सच्छिष्याय नमः     | ऊरू पूजयामि        |
| ξ.         | पाषण्ड-ध्वान्त-भास्कराय नमः   | कटिं पूजयामि       |
| <i>७</i> . | अद्वैत-स्थापनाचार्याय नमः     | गुह्यं पूजयामि     |
| ۷.         | द्वैतादि-द्विप-केसरिणे नमः    | नाभिं पूजयामि      |
| ۶.         | व्यास-नन्दित-सिद्धान्ताय नमः  | उदरं पूजयामि       |
| १०.        | वाद-निर्जित-मण्डनाय नमः       | वक्षःस्थलं पूजयामि |
| ११.        | षण्मत-स्थापनाचार्याय नमः      | हृदयं पूजयामि      |
| १२.        | षड्-गुणैश्वर्य-मण्डिताय नमः   | कण्ठं पूजयामि      |
| १३.        | सर्व-लोकानुग्रह-कृते नमः      | स्कन्धौ पूजयामि    |
| १४.        | सर्व-ज्ञ-त्वादि-भूषणाय नमः    | हस्तौ पूजयामि      |
| १५.        | श्रुति-स्मृति-पुराणार्थाय नमः | वऋं पूजयामि        |
| १६.        | श्रुत्येक-शरण-प्रियाय नमः     | चिबुकं पूजयामि     |
| १७.        | सकृत्-स्मरण-सन्तुष्टाय नमः    | ओष्ठौ पूजयामि      |
| १८.        | शरणागत-वत्सलाय नमः            | कपोलौ पूजयामि      |
| १९.        | निर्व्याज-करुणा-मूर्तये नमः   | नासिकां पूजयामि    |
| २०.        | निरहम्भाव-गोचराय नमः          | नेत्रे पूजयामि     |
| २१.        | संशान्त-भक्त-हृत्-तापाय नमः   | कर्णौ पूजयामि      |
| २२.        | सर्व-ज्ञान-फल-प्रदाय नमः      | ललाटं पूजयामि      |
| २३.        | सदसद्-वस्तु-विमुखाय नमः       | शिरः पूजयामि       |

२४. सत्ता-सामान्य-विग्रहाय नमः सर्वाण्यङ्गानि पूजयामि

# ॥ आदिशङ्कराचार्याष्टोत्तरशतनामाविलः॥

श्रीशङ्कराचार्यवर्याय नमः ब्रह्मज्ञानप्रदायकाय नमः अज्ञानतिमिरादित्याय नमः सुज्ञानाम्बुधिचन्द्रमसे नमः वर्णाश्रमप्रतिष्ठात्रे नमः श्रीमते नमः मुक्तिप्रदायकाय नमः शिष्योपदेशनिरताय नमः भक्ताभीष्टप्रदायकाय नमः स्क्ष्मतत्त्वरहस्यज्ञाय नमः१० कार्याकार्यप्रबोधकाय नमः ज्ञानमुद्राश्चितकराय नमः शिष्य-हृत्ताप-हारकाय नमः परिव्राज्याश्रमोद्धर्त्रे नमः सर्वतत्रस्वतत्रधिये नमः अद्वेतस्थापनाचार्याय नमः साक्षाच्छङ्कररूपभृते नमः षण्मतस्थापनाचार्याय नमः त्रयीमार्गप्रकाशकाय नमः वेदवेदान्ततत्त्वज्ञाय नमः २० दुर्वादिमतखण्डनाय नमः वैराग्यनिरताय नमः शान्ताय नमः संसारार्णवतारकाय नमः प्रसन्नवदनाम्भोजाय नमः

परमार्थप्रकाशकाय नमः पुराणस्मृतिसारज्ञाय नमः नित्यतृप्ताय नमः महते नमः श्चये नमः 30 नित्यानन्दाय नमः निरातङ्काय नमः निःसङ्गाय नमः निर्मलात्मकाय नमः निर्ममाय नमः निरहङ्काराय नमः विश्ववन्द्यपदाम्बुजाय नमः सत्त्वप्रधानाय नमः सद्धावाय नमः सङ्ख्यातीतगुणोञ्चलाय नमः अनघाय नमः सारहृदयाय नमः स्धिये नमः सारस्वतप्रदाय नमः सत्यात्मने नमः पुण्यशीलाय नमः साङ्कायोगविचक्षणाय नमः तपोराशये नमः महातेजसे नमः गुणत्रयविभागविदे नमः

कलिघ्राय नमः कालधर्मज्ञाय नमः तमोगुणनिवारकाय नमः भगवते नमः भारतीजेत्रे नमः शारदाह्वानपण्डिताय नमः धर्माधर्मविभागज्ञाय नमः लक्ष्यभेदप्रदर्शकाय नमः नादबिन्दुकलाभिज्ञाय नमः योगिहृत्पद्मभास्कराय नमः E o अतीन्द्रिय-ज्ञाननिधये नमः नित्यानित्यविवेकवते नमः चिदानन्दाय नमः चिन्मयात्मने नमः परकायप्रवेशकृते नमः अमानुष-चरित्राढ्याय नमः क्षेमदायिने नमः क्षमाकराय नमः भवाय नमः भद्रप्रदाय नमः 00 भूरिमहिम्ने नमः विश्वरञ्जकाय नमः स्वप्रकाशाय नमः सदाधाराय नमः विश्वबन्धवे नमः श्भोदयाय नमः विशालकीर्तये नमः

वागीशाय नमः सर्वलोकहितोत्सुकाय नमः कैलासयात्रा-सम्प्राप्तचन्द्रमौलि-प्रपूजकाय नमः 60 काश्यां श्रीचऋराजाख्य-यन्नस्थापन-दीक्षिताय नमः श्रीचऋ्रात्मक-ताटङ्क-पोषिताम्बा-मनोरथाय नमः श्रीब्रह्मसूत्रोपनिषद्भाष्यादिग्रन्थ-कल्पकाय नमः चतुर्दिक्रतुराम्नायप्रतिष्ठात्रे नमः महामतये नमः द्विसप्ततिमतोच्छेत्रे नमः सर्वदिग्विजयप्रभवे नमः काषायवसनोपेताय नमः भस्मोद्ध्लितविग्रहाय नमः ज्ञानात्मकैकदण्डाढ्याय नमः कमण्डलुलसत्कराय नमः व्याससन्दर्शनप्रीताय नमः भगवत्पादसंज्ञकाय नमः चतुःषष्टिकलाभिज्ञाय नमः ब्रह्मराक्षस-मोक्षदाय नमः सौन्दर्यलहरीमुख्यबहुस्तोत्रविधाय-काय नमः श्रीमन्मण्डनमिश्राख्यस्वयम्भूजय-सन्ताय नमः तोटकाचार्यसम्पूज्याय नमः

पद्मपादार्चिताङ्किकाय नमः हस्तामलकयोगीन्द्रब्रह्मज्ञान-१०० प्रदायकाय नमः सुरेश्वरादि-सच्छिष्य-सन्त्रासाश्रम-दायकाय नमः निर्व्याजकरुणामूर्तये नमः जगत्पुज्याय नमः

जगद्गुरवे नमः भेरीपटहवाद्यादिराजलक्षण-लक्षिताय नमः सकृत्स्मरणसन्तुष्टाय नमः सर्वज्ञाय नमः ज्ञानदायकाय नमः श्रीशङ्करभगवत्पादाचार्येभ्यो नमः

॥इति श्री आदिशङ्कराचार्याष्टोत्तरशतनामाविलः सम्पूर्णा॥

## आचार्यपरम्परानामाविः

### ॥ पूर्वाचार्याः ॥

- १. श्रीमते दक्षिणामूर्तये २. श्रीमते विष्णवे नमः ३. श्रीमते ब्रह्मणे नमः ४. श्रीमते वसिष्ठाय नमः ५. श्रीमते शक्तये नमः ६. श्रीमते पराशराय नमः ७. श्रीमते शकाय नमः श्रीमते द्रक्षिणामर्तये नमः

- श्रीमते वसिष्ठाय नमः
- श्रीमते पराशराय नमः
- श्रीमते शुकाय नमः
- श्रीमते गौड्रपादाय नमः
- श्रीमते गोविन्द-भगवत्पादाय नमः
- श्रीमते शङ्कर-भंगवत्पादायं नमः

#### ॥ भगवत्पादशिष्याः ॥

- १. श्रीमते पद्मपादाचार्याय नमः
- २. श्रीमते स्रेश्वराचार्याय नमः
- ३. श्रीमते हस्तामलकाचार्याय नमः
- ४. श्रीमते तोटकाचार्याय नमः
- ५. श्रीमते पृथिवीधवाचार्याय नमः
- ६. श्रीमते सर्वज्ञात्म-इन्द्रसरस्वत्यै नमः

#### ७. अन्येभ्यः भगवत्पाद-शिष्येभ्यो नमः

#### ॥ कामकोटि-आचार्याः ॥

- १. श्रीमते शङ्कर-भगवत्पादाय नमः
- २. श्रीमते सुरेश्वराचार्याय नमः
- ३. श्रीमते सर्वज्ञात्म-इन्द्रसरस्वत्यै नमः
- ४. श्रीमते सत्यबोध-इन्द्रसरस्वत्यै नमः
- ५. श्रीमते ज्ञानानन्द-इन्द्रसरस्वत्यै नमः
- ६. श्रीमते शुद्धानन्द-इन्द्रसरस्वत्यै नमः
- ७. श्रीमते आनन्दज्ञान-इन्द्रसरस्वत्यै नमः
- ८. श्रीमते कैवल्यानन्द-इन्द्रसरस्वत्ये नमः
- ९. श्रीमते कृपाशङ्कर-इन्द्रसरस्वत्यै नमः
- १०. श्रीमते विश्वरूप-स्रेश्वर-इन्द्रसरस्वत्ये नमः
- ११. श्रीमते शिवानन्द-चिद्धन-इन्द्रसरस्वत्ये नमः
- १२. श्रीमते सार्वभौम-चन्द्रशेखर-इन्द्रसरस्वत्यै नमः
- १३. श्रीमते काष्ठमौन-सचिद्धन-इन्द्रसरस्वत्ये नमः
- १४. श्रीमते भैरवजिद्-विद्याघन-इन्द्रसरस्वत्यै नमः
- १५. श्रीमते गीष्पति-गङ्गाधर-इन्द्रसरस्वत्यै नमः
- १६. श्रीमते उज्ज्वलशङ्कर-इन्द्रसरस्वत्यै नमः
- १७. श्रीमते गौड-सदाशिव-इन्द्रसरस्वत्यै नमः
- १८. श्रीमते सुर-इन्द्रसरस्वत्यै नमः
- १९. श्रीमते मार्तण्ड-विद्याघन-इन्द्रसरस्वत्यै नमः
- २०. श्रीमते मूकशङ्कर-इन्द्रसरस्वत्यै नमः
- २१. श्रीमते जाह्नवी-चन्द्रचूड-इन्द्रसरस्वत्यै नमः
- २२. श्रीमते परिपूर्णबोध-इन्द्रसरस्वत्यै नमः
- २३. श्रीमते सचित्सुख-इन्द्रसरस्वत्यै नमः
- २४. श्रीमते कोङ्कण-चित्सुख-इन्द्रसरस्वत्यै नमः
- २५. श्रीमते सचिदानन्दघन-इन्द्रसरस्वत्यै नमः

- २६. श्रीमते प्रज्ञाघन-इन्द्रसरस्वत्यै नमः
- २७. श्रीमते चिद्विलास-इन्द्रसरस्वत्यै नमः
- २८. श्रीमते महादेव-इन्द्रसरस्वत्यै नमः
- २९. श्रीमते पूर्णबोध-इन्द्रसरस्वत्यै नमः
- ३०. श्रीमते भक्तियोग-बोध-इन्द्रसरस्वत्यै नमः
- ३१. श्रीमते शीलनिधि-ब्रह्मानन्दघन-इन्द्रसरस्वत्ये नमः
- ३२. श्रीमते चिदानन्दघन-इन्द्रसरस्वत्यै नमः
- ३३. श्रीमते भाषापरमेष्ठि-सचिदानन्दघन-इन्द्रसरस्वत्यै नमः
- ३४. श्रीमते चन्द्रशेखर-इन्द्रसरस्वत्यै नमः
- ३५. श्रीमते बहुरूप-चित्सुख-इन्द्रसरस्वत्यै नमः
- ३६. श्रीमते चित्सुखानन्द-इन्द्रसरस्वत्ये नमः
- ३७. श्रीमते विद्याघन-इन्द्रसरस्वत्यै नमः
- ३८. श्रीमते धीरशङ्कर-इन्द्रसरस्वत्यै नमः
- ३९. श्रीमते सिचद्विलास-इन्द्रसरस्वत्यै नमः
- ४०. श्रीमते शोभन-महादेव-इन्द्रसरस्वत्यै नमः
- ४१. श्रीमते गङ्गाधर-इन्द्रसरस्वत्यै नमः
- ४२. श्रीमते ब्रह्मानन्दघन-इन्द्रसरस्वत्यै नमः
- ४३. श्रीमते आनन्दघन-इन्द्रसरस्वत्यै नमः
- ४४. श्रीमते पूर्णबोध-इन्द्रसरस्वत्यै नमः
- ४५. श्रीमते परमशिव-इन्द्रसरस्वत्यै नमः
- ४६. श्रीमते सान्द्रानन्द-बोध-इन्द्रसरस्वत्यै नमः
- ४७. श्रीमते चन्द्रशेखर-इन्द्रसरस्वत्यै नमः
- ४८. श्रीमते अद्वैतानन्दबोध-इन्द्रसरस्वत्यै नमः
- ४९. श्रीमते महादेव-इन्द्रसरस्वत्यै नमः
- ५०. श्रीमते चन्द्रचूड-इन्द्रसरस्वत्यै नमः
- ५१. श्रीमते विद्यातीर्थ-इन्द्रसरस्वत्यै नमः
- ५२. श्रीमते शङ्करानन्द-इन्द्रसरस्वत्ये नमः

- श्रीमते अद्वैतब्रह्मानन्दाय नमः
- श्रीमते विद्यारण्याय नमः
- अन्येभ्यः विद्यातीर्थ-शङ्करानन्द-शिष्येभ्यो नमः
- ५३. श्रीमते पूर्णानन्द-सदाशिव-इन्द्रसरस्वत्ये नमः
- ५४. श्रीमते व्यासाचल-महादेव-इन्द्रसरस्वत्ये नमः
- ५५. श्रीमते चन्द्रचूड-इन्द्रसरस्वत्यै नमः
- ५६. श्रीमते सदाशिवबोध-इन्द्रसरस्वत्यै नमः
- ५७. श्रीमते परमशिव-इन्द्रसरस्वत्यै नमः
  - श्रीमते सदाशिवब्रह्म-इन्द्रसरस्वत्यै नमः
- ५८. श्रीमते विश्वाधिक-आत्मबोध-इन्द्रसरस्वत्यै नमः
- ५९. श्रीमते भगवन्नाम-बोध-इन्द्रसरस्वत्ये नमः
- ६०. श्रीमते अद्वैतात्मप्रकाश-इन्द्रसरस्वत्ये नमः
- ६१. श्रीमते महादेव-इन्द्रसरस्वत्यै नमः
- ६२. श्रीमते शिवगीतिमाला-चन्द्रशेखर-इन्द्रसरस्वत्ये नमः
- ६३. श्रीमते महादेव-इन्द्रसरस्वत्यै नमः
- ६४. श्रीमते चन्द्रशेखर-इन्द्रसरस्वत्यै नमः
- ६५. श्रीमते सुदर्शन-महादेव-इन्द्रसरस्वत्यै नमः
- ६६. श्रीमते चन्द्रशेखर-इन्द्रसरस्वत्यै नमः
- ६७. श्रीमते महादेव-इन्द्रसरस्वत्यै नमः
- ६८. श्रीमते चन्द्रशेखर-इन्द्रसरस्वत्यै नमः
- ६९. श्रीमते जयेन्द्रसरस्वत्यै नमः
- ७०. श्रीमते शङ्करविजयेन्द्रसरस्वत्यै नमः

श्रीमत्-शङ्कर-भगवत्पादाचार्येभ्यो नमः, नानाविध-परिमल-पत्र-पुष्पाणि समर्पयामि।

विज्यं धर्नुः कपूर्दिनो विशंल्यो बार्णवा । उत्। अनेशन्नस्येषंव आभुरंस्य निषुङ्गिथेः॥ ॐ हीं नुमः शिवायं। बलाय नर्मः। संसार-सागरं घोरम् अनन्त-क्लेश-भाजनम्। त्वामेव शरणं प्राप्य निस्तरन्ति मनीषिणः॥

श्रीमत्-शङ्कर-भगवत्पादाचार्येभ्यो नमः, धूपम् आघ्रापयामि। या ते हेतिर्मीदुष्टम् हस्ते बुभूवं ते धर्नुः। तयाऽस्मान् विश्वतस्त्वमयक्ष्मया परिञ्जुज॥ ॐ हीं नुमः शिवायं। बर्लप्रमथनाय नर्मः।

> नमस्तस्मै भगवते शङ्कराचार्य-रूपिणे। येन वेदान्त-विद्येयम् उद्धृता वेद-सागरात्॥

श्रीमत्-शङ्कर-भगवत्पादाचार्येभ्यो नमः, दीपं दर्शयामि। ॐ भूर्भुवः सुवंः। + ब्रह्मणे स्वाहाँ। नमंस्ते अस्त्वायुंधायानांतताय धृष्णवेँ। उभाभ्यांमुत ते नमों बाहुभ्यां तव धन्वंने॥ ॐ हीं नमः शिवायं। सर्वभूतदमनाय नमंः।

भगवत्पाद-पादाज्ज-पांसवः सन्तु सन्ततम्। अपारासार-संसार-सागरोत्तार-सेतवः ॥

श्रीमत्-शङ्कर-भगवत्पादाचार्येभ्यो नमः, अमृतं महानैवेद्यं पानीयं च निवेदयामि। मध्ये मध्ये अमृतपानीयं समर्पयामि। अमृतापिधानमसि। हस्तप्रक्षालनं समर्पयामि। पादप्रक्षालनं समर्पयामि। निवेदनानन्तरम् आचमनीयं समर्पयामि।

परिं ते धन्वंनो हेतिर्स्मान्वृंणक्तु विश्वतः। अथो य इंषुधिस्तवाऽऽरे अस्मन्नि धेहि तम्॥ ॐ हीं नुमः शिवायं। मुनोन्मंनाय नर्मः।

श्रीमत्-शङ्कर-भगवत्पादाचार्येभ्यो नमः, ताम्बूलं समर्पयामि। नमस्ते अस्तु भगवन् विश्वेश्वरायं महादेवायं त्र्यम्बकायं त्रिपुरान्तकायं त्रिकाग्निकालायं कालाग्निरुद्रायं नीलकण्ठायं मृत्युञ्जयायं सर्वेश्वरायं सदाशिवायं श्रीमन्महादेवाय नमः॥ अज्ञान-तिमिरान्थस्य ज्ञानाञ्जन-शलाकया। चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः॥

श्रीमत्-शङ्कर-भगवत्पादाचार्येभ्यो नमः, नीराजनं दर्शयामि। नीराजनानन्तरम् आचमनीयं समर्पयामि। श्रीमत्-शङ्कर-भगवत्पादाचार्येभ्यो नमः, समस्तोपचारान् समर्पयामि।

यानि कानि च पापानि जन्मान्तर-कृतानि च। तानि तानि विनश्यन्ति प्रदक्षिण-पदे पदे॥

श्रीमत्-शङ्कर-भगवत्पादाचार्येभ्यो नमः, प्रदक्षिणं करोमि।

आचार्यान् भगवत्पादान् षण्मत-स्थापकान् हितान्। परहंसान् नुमोऽद्वैत-स्थापकान् जगतो गुरून्॥

श्रीमत्-शङ्कर-भगवत्पादाचार्येभ्यो नमः, नमस्कारान् समर्पयामि।

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुर्गुरुर्देवो महेश्वरः। गुरुरेव परं ब्रह्म तस्मे श्री-गुरवे नमः॥

अखण्ड-मण्डलाकारं व्याप्तं येन चराचरम्। तत्-पदं दर्शितं येन तस्मै श्री-गुरवे नमः॥

अनेक-जन्म-सम्प्राप्त-कर्म-बन्ध-विदाहिने। आत्म-ज्ञान-प्रदानेन तस्मै श्री-गुरवे नमः॥

विशुद्ध-विज्ञान-घनं शुचिं हार्द-तमोनुदम्। दया-सिन्धुं लोक-बन्धुं शङ्करं नौमि सद्-गुरुम्॥

देह-बुद्धा तु दासोऽस्मि जीव-बुद्धा त्वदंशकः। आत्म-बुद्धा त्वमेवाहमिति मे निश्चिता मतिः॥

एकः शाखी शङ्कराख्यश्चतुर्धा स्थानं भेजे ताप-शान्त्यै जनानाम्। शिष्य-स्कन्धेः शिष्य-शाखैर्महद्भिः ज्ञानं पुष्पं यत्र मोक्षः प्रसृतिः॥

गामाऋम्य पदेऽधिकाश्चि निबिडं स्कन्धैश्चतुर्भिस्तथा व्यावृण्वन् भुवनान्तरं परिहरंस्तापं स-मोह-ज्वरम्। यः शाखी द्विज-संस्तुतः फलित तत् स्वाद्यं रसाख्यं फलम् तस्मै शङ्कर-पादपाय महते तन्मस्नि-सन्ध्यं नमः॥ श्रीमत्-शङ्कर-भगवत्पादाचार्येभ्यो नमः, स्तोत्रं समर्पयामि। प्रार्थनाः समर्पयामि।

गुरु-पादोदक-प्राशनम्—

अविद्या-मूल-नाशाय जन्म-कर्म-निवृत्तये। ज्ञान-वैराग्य-सिद्धार्थं गुरु-पादोदकं शुभम्॥



# ॥स्वस्ति-वचनम्/गुरुवन्दनम्॥

॥ॐ श्री-गुरुभ्यो नमः॥ ॥श्री-महात्रिपुरसुन्दरी-समेत-श्री-चन्द्रमौलीश्वराय नमः॥ ॥श्री-काश्री-कामकोटि-पीठाधिपति-जगद्गुरु-श्री-शङ्कराचार्य श्री-चरणयोः प्रणामाः॥

#### स्वस्ति

श्रीमद्-अखिल-भूमण्डलालङ्कार-त्रयस्त्रिंशत्-कोटि-देवता-सेवित-श्री-कामाक्षी-देवी-सनाथ-श्रीमद्-एकाम्रनाथ-श्री-महादेवी-सनाथ-श्री-हस्तिगिरिनाथ-साक्षात्कार-परमाधिष्ठान-सत्यव्रत-नामाङ्कित-काश्री-दिव्य-क्षेत्रे, शारदामठ-सुस्थितानाम्, अतुलित-सुधारस-माधुर्य-कमलासन-कामिनी-धम्मिल्ल-सम्फुल्ल-मिल्लका-मालिका-निःष्यन्द-मकरन्द-झरी-सौवस्तिक-वाङ्गिगुम्फ-विजृम्भणानन्द-तुन्दिलित-मनीषि-मण्डलानाम्, अनवरताद्वैत-विद्या-विनोद-रसिकानां निरन्तरालङ्कृतीकृत-शान्ति-दान्ति-भूम्नाम्, सकल-भुवन-चक्र-प्रतिष्ठापक-श्रीचक्र-प्रतिष्ठा-विख्यात-यशोऽलङ्कृतानाम्, निखिल-पाषण्ड-षण्ड-कण्टकोत्पाटनेन विशदीकृत-वेद-वेदान्त-मार्ग-षण्मत-प्रतिष्ठापकाचार्याणाम्, परमहंस-परिव्राजकाचार्यवर्य-जगद्गुरु-श्रीमत्-शङ्करभगवत्पादाचार्याणाम्, अधिष्ठाने सिंहासनाभिषिक्त-श्रीमत्-चन्द्रशेखरेन्द्र-सरस्वती-श्रीपादानाम् अन्तेवासिवर्य-श्रीमद्-जयेन्द्र-सरस्वती-श्रीपादानाम् अन्तेवासिवर्य-श्रीमत्-शङ्करविजयेन्द्र-सरस्वती-श्रीपादानां चरण-निलनयोः सप्रश्रयं साञ्जलिबन्धं च नमस्कुर्मः॥

## ॥ तोटकाष्टकम्॥

शङ्करं शङ्कराचार्यं केशवं बादरायणम्। सूत्रभाष्यकृतौ वन्दे भगवन्तौ पुनः पुनः॥

नारायणं पद्मभुवं वसिष्ठं शक्तिं च तत्पुत्रपराशरं च व्यासं शुकं गौडपदं महान्तं गोविन्दयोगीन्द्रमथास्य शिष्यम्। श्री-शङ्कराचार्यमथास्य पद्मपादं च हस्तामलकं च शिष्यम् तं तोटकं वार्तिककारमन्यानस्मद्गुरून् सन्ततमानतोऽस्मि॥

विदिताखिल-शास्त्र-सुधा-जलधे महितोपनिषत्-कथितार्थ-निधे। हृदये कलये विमलं चरणं भव शङ्कर देशिक मे शरणम्॥१॥

करुणा-वरुणालय पालय मां भव-सागर-दुःख-विदून-हृदम्। रचयाखिल-दर्शन-तत्त्व-विदं भव शङ्कर देशिक मे शरणम्॥२॥

भवता जनता सुहिता भविता निज-बोध-विचारण-चारु-मते। कलयेश्वर-जीव-विवेक-विदं भव शङ्कर देशिक मे शरणम्॥३॥

भव एव भवानिति मे नितरां समजायत चेतिस कौतुकिता। मम वारय मोह-महा-जलिधं भव शङ्कर देशिक मे शरणम्॥४॥

सुकृतेऽधिकृते बहुधा भवतो भविता सम-दर्शन-लालसता। अतिदीनमिमं परिपालय मां भव शङ्कर देशिक मे शरणम्॥५॥ जगतीमवितुं कलिताकृतयो विचरन्ति महा-महसश्छलतः। अहिमांशुरिवात्र विभासि पुरो भव शङ्कर देशिक मे शरणम्॥६॥

गुरु-पुङ्गव पुङ्गव-केतन ते समतामयतां न हि कोऽपि सुधीः। शरणागत-वत्सल तत्त्व-निधे भव शङ्कर देशिक मे शरणम्॥७॥

विदिता न मया विशदैक-कला न च किश्चन काश्चनमस्ति गुरो। द्रुतमेव विधेहि कृपां सहजां भव शङ्कर देशिक मे शरणम्॥८॥॥इति श्री-तोटकाचार्यविरचितं श्री-तोटकाष्टकं सम्पूर्णम्॥

# ॥श्री-शङ्कर-भगवत्पाद-प्रशस्ति-सङ्ग्रहः॥ देव-वन्दनम्

सदा बाल-रूपाऽपि विघ्नाद्रि-हन्नी महा-दन्ति-वन्नाऽपि पश्चास्य-मान्या। विधीन्द्रादि-मृग्या गणेशाभिधा मे विधत्तां श्रियं काऽपि कल्याण-मूर्तिः॥१॥

—गणेशस्तुतिः - सुब्रह्मण्यभुजङ्गं शङ्करभगवत्पादकृतम् - १

पुस्तक-जप-वट-हस्ते वरदाभय-चिह्न-चारु-बाहु-लते। कर्पूरामल-देहे वागीश्वरि शोधयाशु मम चेतः॥२॥

— प्रपञ्चसारः शङ्करभगवत्पादकृतः ८/७०

## गुरुपरम्परावन्दनम्

नारायणः पद्म-भवो वसिष्ठः शक्तिश्च तत्-पुत्र-पराशरश्च। व्यासः शुको गौड-पदो यतीन्द्रो गोविन्द-योगीति गुरु-ऋमोऽयम्॥१॥

> आद्यः श्री-शङ्कराचार्यो भगवत्पाद-संज्ञकः। अवतीर्णः शम्भुरिति प्रथितः कालटी-पदे॥२॥

सुरेश्वरः पद्मपदो हस्तामलक-तोटकौ। सर्वज्ञश्चेति तच्छिष्याः प्रथिता गुरु-सन्निभाः॥३॥ शङ्करः कामकोट्याख्यं पीठं काश्र्यां व्यराजयत्। प्रत्यस्थापयदद्वैतं पीठे सर्वज्ञके स्थितः॥४॥

आत्मानमनु सर्वज्ञं सुरेश्वर-मते स्थितम्। गोप्तारं कामकोट्याख्य-पीठस्य व्यदधाद् गुरुः॥५॥

तदाद्येन्द्र-सरस्वत्याख्याऽविच्छिन्ना परम्परा। पाति नो गुरु-वर्याणां शारदा-मठ-सुस्थिता॥६॥

श्री-शङ्करार्यमपरं श्री-शिवा-शिव-रूपिणम्। पूज्य-श्री-कामकोट्याख्य-पीठ-गं तं दया-निधिम्॥७॥

अपार-करुणा-सिन्धुं ज्ञान-दं शान्त-रूपिणम्। श्री-चन्द्रशेखर-गुरुं प्रणमामि मुदाऽन्वहम्॥८॥

देवे देहे च देशे च भक्त्यारोग्य-सुख-प्रदम्। बुध-पामर-सेव्यं तं श्री-जयेन्द्रं नमाम्यहम्॥९॥

नमामः शङ्करान्वाख्य-विजयेन्द्र-सरस्वतीम्। श्री-गुरुं शिष्ट-मार्गानुनेतारं सन्मति-प्रदम्॥१०॥

### गुरु-पादुका-पश्चकम्

— गोविन्द-भगवत्-पूज्यपाद-सन्निधौ शङ्कर-भगवत्पाद-कृतम्

जगञ्जनि-स्थेम-लयालयाभ्याम् अगण्य-पुण्योदय-भाविताभ्याम्। त्रयी-शिरोजात-निवेदिताभ्यां नमो नमः श्री-गुरु-पादुकाभ्याम्॥१॥

विपत्-तमः-स्तोम-विकर्तनाभ्यां विशिष्ट-सम्पत्ति-विवर्धनाभ्याम्। नमञ्जनाशेष-विशेष-दाभ्यां नमो नमः श्री-गुरु-पादुकाभ्याम्॥२॥

समस्त-दुस्तर्क-कलङ्क-पङ्कापनोदन-प्रौढ-जलाशयाभ्याम् । निराश्रयाभ्यां निखिलाश्रयाभ्यां नमो नमः श्री-गुरु-पादुकाभ्याम्॥३॥

ताप-त्रयादित्य-करार्दितानां छाया-मयीभ्यामति-शीतलाभ्याम्। आपन्न-संरक्षण-दीक्षिताभ्यां नमो नमः श्री-गुरु-पादुकाभ्याम्॥४॥ यतो गिरोऽप्राप्य धिया समस्ता ह्रिया निवृत्ताः सममेव नित्याः। ताभ्यामजेशाच्युत-भाविताभ्यां नमो नमः श्री-गुरु-पादुकाभ्याम्॥५॥

ये पादुका-पश्चकमादरेण पठन्ति नित्यं प्रयताः प्रभाते। तेषां गृहे नित्य-निवास-शीला श्री-देशिकेन्द्रस्य कटाक्ष-लक्ष्मीः॥६॥

## भगवत्पादकृतं गुरु-वन्दनम्

प्रज्ञा-वैशाख-वेध-क्षुभित-जल-निधेर्वेद-नाम्नोऽन्तर-स्थं भूतान्यालोक्य मग्नान्यविरत-जनन-ग्राह-घोरे समुद्रे। कारुण्यादुद्दधारामृतमिदममरैर्दुर्लभं भूत-हेतोः यस्तं पूज्याभिपूज्यं परम-गुरुममुं पाद-पातैर्नतोऽस्मि॥१॥

यत्-प्रज्ञालोक-भासा प्रतिहतिमगमत् स्वान्त-मोहान्धकारो मञ्जोन्मञ्जं च घोरे ह्यसकृदुपजनोदन्वति त्रासने मे। यत्-पादावाश्रितानां श्रुति-शम-विनय-प्राप्तिरग्र्या ह्यमोघा तत्-पादौ पावनीयौ भव-भय-विनुदौ सर्व-भावैर्नमस्ये॥२॥

—माण्डक्य-कारिका-भाष्यम

यैरिमे गुरुभिः पूर्वं पद-वाक्य-प्रमाणतः। व्याख्याताः सर्व-वेदान्ताः तान् नित्यं प्रणतोऽस्म्यहम्॥३॥

—तैत्तिरीयोपनिषद्भाष्यम्

विमथ्य वेदोदधितः समुद्धृतं सुरैर्महाब्धेस्तु महात्मभिर्यथा। तथाऽमृतं ज्ञानमिदं हि यैः पुरा नमो गुरुभ्यः परमीक्षितं च यैः॥४॥

—उपदेशसाहस्याम्

सर्व-वेदान्त-सिद्धान्त-गोचरं तमगोचरम्। गोविन्दं परमानन्दं सद्गुरुं प्रणतोऽस्म्यहम्॥५॥

अखण्डानन्द-सम्बोधो वन्दनाद् यस्य जायते। गोविन्दं तमहं वन्दे चिदानन्द-तनुं गुरुम्॥६॥ नमो नमस्ते गुरवे महात्मने विमुक्त-सङ्गाय सदुत्तमाय। नित्याद्वयानन्द-रस-स्वरूपिणे भूम्ने सदाऽपार-दयाम्बु-धाम्ने॥७॥

स्वाराज्य-साम्राज्य-विभृतिरेषा भवत्-कृपा-श्री-महिम-प्रसादात्। प्राप्ता मया श्री-गुरवे महात्मने नमो नमस्तेऽस्तु पुनर्नमोऽस्तु॥८॥

स्वामिन् नमस्ते नत-लोक-बन्धो कारुण्य-सिन्धो पतितं भवाब्धौ। मामुद्धरात्मीय-कटाक्ष-दृष्ट्या ऋज्याऽतिकारुण्य-सुधाभिवृष्ट्या॥९॥

—विवेकचूडामणिः

वन्दे गुरूणां चरणारविन्दे सन्दर्शित-स्वात्म-सुखावबोधे। जनस्य ये जाङ्गलिकायमाने संसार-हालाहल-मोह-शान्त्यै॥१०॥

—योगताराविः १

श्री-गुरु-चरण-द्वन्द्वं वन्देऽहं मथित-दुस्सह-द्वन्द्वम्। भ्रान्ति-ग्रहोपशान्तिं पांसु-मयं यस्य भसितमातनुते॥११॥

—स्वात्मनिरूपणम् १/१

### वेदान्ताचार्यवन्दना

आदौ शिवस्ततो विष्णुः ततो ब्रह्मा ततः परम्। वसिष्ठश्च ततः शक्तिः ततः षष्ठः पराशरः॥१॥ ततो व्यासः शुकः पश्चाद् गौडपादाभिधस्ततः। गोविन्दार्य-गुरुस्तस्माच्छङ्कराचार्य-संज्ञकः ॥२॥ पद्मपादः सुरेशश्च हस्तामलक-तोटकौ। वेदान्त-शिक्षा-गुरव आचार्याः पान्तु मां सदा॥३॥

—हुल्स्ब्-कोशतः

सदाशिव-समारम्भां शङ्कराचार्य-मध्यमाम्। अस्मदाचार्य-पर्यन्तां वन्दे गुरु-परम्पराम्॥४॥

नारायणं पद्म-भुवं वसिष्ठं शक्तिश्च तत्-पुत्र-पराशरं च। व्यासं शुकं गौड-पदं महान्तं गोविन्द-योगीन्द्रमथास्य शिष्यम्॥५॥

श्री-शङ्कराचार्यमथास्य पद्म-पादं च हस्तामलकं च शिष्यम्। तं तोटकं वार्तिक-कारमन्यान् अस्मद्-गुरून् सन्ततमानतोऽस्मि॥६॥

—साम्प्रदायिकश्लोकाः

# मार्कण्डेय-संहितायां भगवत्पाद-प्रशंसा

श्री-शङ्कर-गुरु-चरण-स्मरणम् अभीष्टार्थ-करणमखिलानाम्। सम्भवतु सर्वदा मम सम-रस-सुख-भाग्य-दान-निपुणतरम्॥१॥

श्री-शङ्कराचार्य-पदारविन्द-सेवा हि सर्वेप्सित-कल्प-वल्ली। लभ्येत जन्मान्तर-पुण्य-योगात् सुजन्मभिः शुद्ध-मनोभिषङ्गैः॥२॥

शङ्कर-गुरु-चरणाम्बुजम् अखिल-जगन्मङ्गलं मनस्यनिशम्। कलयामि कलि-मलापहम् अमित-सुखाधायकं बुधेन्द्राणाम्॥३॥

लोकानुग्रह्-तत्परः पर-शिवः सम्प्रार्थितो ब्रह्मणा चार्वाकादि-मत-प्रभेद-निपुणां बुद्धिं सदा धारयन्। कालट्याख्य-पुरोत्तमे शिव-गुरुर्विद्याधिनाथश्च यः तत्-पत्र्यां शिव-तारके समुदितः श्री-शङ्कराख्यां वहन्॥४॥ महात्रिपुरसुन्दरी-रमण-चन्द्रमौलीश्वर-प्रसाद-परिलब्ध-वाङ्मय-विभूषिताशान्तरम्। निरन्तरमुपास्महे निरुपमात्म-विद्या-नदी-नदी-नद-पति-प्रभं मनसि शङ्करायं गुरुम्॥५॥

## तोटकाष्टकम्

विदिताखिल-शास्त्र-सुधा-जलधे महितोपनिषत्-कथितार्थ-निधे। हृदये कलये विमलं चरणं भव शङ्कर देशिक मे शरणम्॥१॥

करुणा-वरुणालय पालय मां भव-सागर-दुःख-विदून-हृदम्। रचयाखिल-दर्शन-तत्त्व-विदं भव शङ्कर देशिक मे शरणम्॥२॥

भवता जनता सुहिता भविता निज-बोध-विचारण-चारु-मते। कलयेश्वर-जीव-विवेक-विदं भव शङ्कर देशिक मे शरणम्॥३॥

भव एव भवानिति मे नितरां समजायत चेतिस कौतुकिता। मम वारय मोह-महा-जलिधं भव शङ्कर देशिक मे शरणम्॥४॥

सुकृतेऽधिकृते बहुधा भवतो भविता सम-दर्शन-लालसता। अतिदीनमिमं परिपालय मां भव शङ्कर देशिक मे शरणम्॥५॥

जगतीमवितुं कलिताकृतयो विचरन्ति महामहसश्छलतः। अहिमांशुरिवात्र विभासि पुरो\* भव शङ्कर देशिक मे शरणम्॥६॥

गुरु-पुङ्गव पुङ्गव-केतन ते समतामयतां न हि कोऽपि सुधीः। शरणागत-वत्सल तत्त्व-निधे भव शङ्कर देशिक मे शरणम्॥७॥

विदिता न मया विशदैक-कला न च किश्चन काश्चनमस्ति गुरो। द्रुतमेव विधेहि कृपां सह-जां भव शङ्कर देशिक मे शरणम्॥८॥

[\* गुरो इति पाठान्तरम्]

# भगवत्पाद-शिष्यैः कृताः गुरु-स्तुतयः

येषां धी-सूर्य-दीस्या प्रतिहतिमगमन्नाशमेकान्ततो मे ध्वान्तं स्वान्तस्य हेतुर्जनन-मरण-सन्तान-दोलाधिरूढेः। येषां पादौ प्रपन्नाः श्रुति-शम-विनयैर्भूषिताः शिष्य-सङ्घाः सद्यो मुक्तौ स्थितास्तान् यति-वर-महितान् यावदायुर्नमामि॥१॥

—श्रुतिसारसमुद्धरणं तोटकाचार्यकृतम् १८८

वेदान्तोदर-वर्ति भास्वदमलं ध्वान्त-च्छिदस्मद्-धियः दिव्यं ज्ञानमतीन्द्रियेऽपि विषये व्याहन्यते न क्वचित्। यो नो न्याय-शलाकयैव निखिलं संसार-बीजं तमः प्रोत्सार्याविरकार्षीद् गुरु-गुरुः पूज्याय तस्मै नमः॥२॥

—नैष्कर्म्यसिद्धिः - श्रीसुरेश्वराचार्यकृता ४.७६-७७

आ शैलादुदयात् तथाऽस्त-गिरितो भास्वद्-यशोराशिभिः व्याप्तं विश्वमनन्धकारमभवद् यस्य स्म शिष्यैरिदम्। आराद् ज्ञान-गभस्तिभिः प्रतिहतश्चन्द्रायते भास्करः तस्मै शङ्कर-भानवे तनु-मनोवाग्भिर्नमः स्यात् सदा॥३॥

यत्-प्रज्ञोदधि-युक्ति-शब्दन-खज-श्रद्धैक-सन्नेत्रक-स्थैर्य-स्तम्भ-मुमुक्षु-दुःखित-कृपा-यत्नोत्थ-बोधामृतम्। पीत्वा जन्म-मृति-प्रवाह-विधुरा मोक्षं ययुर्मोक्षिणः तं वन्देऽत्रि-कुल-प्रसूतममलं वेधोभिधं मद्-गुरुम्॥४॥

—बृहदारण्यकभाष्यवार्त्तिकम् - सुरेश्वराचार्यकृतम्

नमाम्यभोगि-परिवार-सम्पदं निरस्त-भूतिमनुमार्ध-विग्रहम्। अनुग्रमुन्मृदित-काल-लाञ्छनं विना-विनायकमपूर्व-शङ्करम्॥५॥

यद्-वऋ-मानस-सरः-प्रतिलब्ध-जन्म-भाष्यारविन्द-मकरन्द-रसं पिबन्ति। प्रत्याशमुन्मुख-विनीत-विनेय-भृङ्गाः तान् भाष्य-वित्तक-गुरून् प्रणमामि मूर्प्रा॥६॥ वक्तारमासाद्य यमेव नित्या सरस्वती स्वार्थ-समन्विताऽऽसीत्। निरस्त-दुस्तर्क-कलङ्क-पङ्का नमामि तं शङ्करमर्चिताङ्किम्॥७॥

—सङ्क्षेपशारीरकं श्रीसर्वज्ञात्मेन्द्रसरस्वतीश्रीचरणैः कृतम्

# सदाशिवब्रह्मेन्द्रविरचितायां जगद्गुरुरत्नमालायां भगवत्पाद-चरितम्

यदबोध-वशादहं ममेदं तिदहेत्यादिरुदेति भूरि-भेदः। तदखण्डमनन्तमिद्वतीयं परमानन्द-मयं पदं श्रयेयम्॥१॥

किलना बिलनाऽखिले खिलेऽपि स्खिलिते श्रौत-पथेऽपथे प्रवृद्धे। जप-होम-तपस्सु नाम-शेषेष्वपि यातेषु सुभाषितेषु शोषम्॥२॥

जगदीक्षण-विह्वलामृतान्धो-निगद-व्यक्त-कृपा-रसानुबन्धम् । प्रणिदिश्य गुहं पुरैव गन्तुं प्रणिबन्धुं च मखान् द्विषश्च यन्तुम्॥३॥

अवतार्य सुरान् परांश्च पूर्वं विधि-विष्णिवन्द्र-मुखान् विनोद-पूर्वम्। स्वयमप्यवतीर्य सुत्युरार्या-कमितुः श्री-शिव-शर्मणो विचार्य॥४॥

उदभूत् सदने निटाल-दृग् यो मद-भाजां सुधियां प्रमाथ-योग्ये। शिशुरर्पयतान्मुमुक्षु-भाग्यं स शुभं शङ्कर-देशिकः सुभोग्यम्॥५॥

प्रति-चन्द्र-भवं निवृत्ति-धर्मा श्रित-गोविन्द-मुनेरवाप्त-धर्मा। जयतात् कृत-सूत्र-भाष्य-कर्मा स्वयमन्ते-वसतां वितीर्ण-शर्मा॥६॥

कुहनान्त्यज-विश्वनाथ-सृष्टो द्रुहिण-व्यास-वरोदितानुशिष्टः। ममतां मम तावदेष भिन्द्यान्नमतश्चोपरतिं ददात्वनिन्द्याम्॥७॥

प्रविशन् बदरीमवाप्य सद्यः परमाचार्य-पदार्चनं ऋमाद् यः। धवलाचलमाप्य योऽप्यमाद्यच्छिव-लावण्यमुदीक्ष्य तं प्रपद्ये॥८॥

प्रतिपादित-लिङ्ग-पश्चकेऽमुं प्रणिवर्त्याशु तिरोहिते गिरीशे। विनिवृत्य स दिग्-जय-प्रवृत्तो विविधैः शिष्य-वरैर्विभातु चित्ते॥९॥ अथ कान्यकुमार-सन्धि-सेतु-स्थिलनी-वैङ्कट-कालहस्ति-यातुः। यमि-नेतुरमुष्य काञ्चि-यात्रा शमिदानीं शम-दं क्रियाद् विचित्रा॥१०॥

श्रित-निर्मल-राजसेन-चोल-क्षिति-पालोद्धृत-विप्र-देव-शालः । वरदस्य तथाऽऽम्र-नायकस्याप्युरु-वेश्म-द्वय-कृञ्जयाय मे स्यात्॥११॥

प्रकृतिं च गुहाश्रयां महोग्रां स्व-कृते चक्र-वरे प्रवेश्य योऽग्रे। अकृताश्रित-सोम्य-मूर्तिमार्यां सुकृतं नः स चिनोतु शङ्करार्यः॥१२॥

उपयात्मु बुधेषु सर्व-दिग्भ्यः प्रदिशन्नाशु पराभवं य एभ्यः। विधृताखिल-वित्-पदश्च काञ्च्यामधृतार्तिः स दिशेच्छ्रियं च काञ्चित्॥१३॥

समितिष्ठिपदा-हिमाद्रि-सेव्यं ऋमशो धर्म-विचारणाय दिव्यम्। अधि-काञ्चि च शारदा-मठं योऽभ्यधिकं नः सुखमातनोतु सोऽयम्॥१४॥

परमन्तिक-सत्-सुरेश्वराद्यैः परमाद्वैत-मतं स्फुटं प्रवेद्य। परि-काञ्चिपुरं परे विलीनः परमायास्तु शिवाय सद्गुरुर्नः॥१५॥

## कामकोटि-परम्परागतैः आचार्यैः कृताः स्तुतयः

नमस्तस्मै भगवते शङ्कराचार्य-रूपिणे। येन वेदान्त-विद्येयमुद्धृता वेद-सागरात्॥१॥

—विद्यारण्यमुनिविरचितायाम् अपरोक्षानुभूतिदीपिकायाम्

स्तुवन्मोह-तमः-स्तोम-भानु-भावमुपेयुषः । स्तुमस्तान् भगवत्पादान् भव-रोग-भिषग्-वरान्॥२॥

—सदाशिवेन्द्रसरस्वतीश्रीचरणैः कृता ब्रह्मसूत्रवृत्तिः

वेदान्तार्थाभिधानेन सर्वानुग्रह-कारिणम्। यति-रूप-धरं वन्दे शङ्करं लोक-शङ्करम्॥३॥

— नवपश्चाशत्तमैः आचार्यैः श्रीभगवन्नामबोधेन्द्रसरस्वतीश्रीचरणैः कृतं हरिहराद्वैतभूषणम्

यमाश्रिता गिरां देवी नन्दयत्यात्म-संश्रितान्। तमाश्रये श्रिया जुष्टं शङ्करं करुणा-निधिम्॥४॥

— नवपञ्चाशत्तमैः आचार्यैः श्रीभगवन्नामबोधेन्द्रसरस्वतीश्रीचरणैः प्रणीतम् विवरणप्रमेयसङ्ग्रहात्मकम् अद्वैतभूषणम्

> सर्व-तन्त्र-स्वतन्त्राय सदाऽऽत्माद्वैत-वेदिने। श्रीमते शङ्करार्याय वेदान्त-गुरवे नमः॥५॥

अविप्रुत-ब्रह्मचर्यान् अन्वितेन्द्र-सरस्वतीन्। आत्त-मिथ्यावार-पथान् अद्वैताचार्य-सङ्कथान्॥६॥

आ-सेतु-हिमवच्छैलं सदाचार-प्रवर्तकान्। जगद्-गुरून् स्तुमः काश्ची-शारदा-मठ-संश्रयान्॥७॥

—पश्चपष्टितमैः पीठाधिपतिभिः श्रीमत्सुदर्शनमहादेवेन्द्रसरस्वतीश्रीचरणैः प्रणीतः जगद्गुरु-परम्परा-स्तवः

गुरुर्नाम्ना महिम्ना च शङ्करो यो विराजते। तदीयाङ्कि-गलद्-रेणु-गणायास्तु नमो मम॥८॥

—अष्टषष्टितमाचार्यैः श्रीचन्द्रशेखरेन्द्रसरस्वतीश्रीचरणैः प्रणीतम्

कामाक्षी-करुणा-रूपं कामकोटि-जगद्गुरुम्। चिन्मूर्तिं कलये चित्ते शङ्कराचार्यमव्ययम्॥९॥

—नवषष्टितमाचार्यैः श्रीजयेन्द्रसरस्वतीश्रीचरणैः प्रणीतम्

भजेऽहं भगवत्पादं भारतीय-शिखामणिम्। अद्वैत-मैत्री-सद्भाव-चेतनायाः प्रबोधकम्॥१०॥

—सप्ततितमाचार्यैः श्रीशङ्करविजयेन्द्रसरस्वतीश्रीचरणैः प्रणीतम्

# शङ्कर-चरित्र-ग्रन्थेषु

मेधावी निगम-पटुर्बहु-श्रुतो वा येनर्ते न कलयिता किलात्म-तत्त्वम्। तन्नेत्रं तमसि च दिव्य-दृष्टि-दायि श्रेयो नः प्रदिशतु धाम देशिकाख्यम्॥१॥

—-पुण्यश्लोकमञ्जरी

नमामि शङ्कराचार्य-गुरु-पाद-सरोरुहम्। यस्य प्रसादान्मूढोऽपि सर्वज्ञोऽहं सदाऽस्म्यहम्॥२॥

वेदे ब्रह्म-समस्तदङ्ग-निचये गर्गोपमस्तत्-कथा-तात्पर्यार्थ-विवेचने गुरु-समस्तत्-कर्म-संवर्णने। आसीज्जैमिनिरेव तद्-वचन-ज-प्रोद्घोध-कन्दे समो व्यासेनैव विभाति सद्गुरुरसौ श्री-शङ्कराख्यः क्षितौ॥३॥

अद्वैतार्णव-पूर्ण-चन्द्रमभिदा-पद्माटवी-भास्करं विद्वत्-कोटि-समर्चिताङ्गि-युगलं प्रद्वेष-कक्षानलम्। हृद्याभेद्य-समस्त-वेद-जनित-प्रोद्यद्-विवेकाङ्करं स्विद्यद्-वागमृतं परात्-पर-गुरुं श्री-शङ्करं तं भजे॥४॥

—आनन्दगिरीयशङ्करविजयः

गामाऋम्य पदेऽधिकाञ्चि निबिडं स्कन्धैश्चतुर्भिस्तथा व्यावृण्वन् भुवनान्तरं परिहरंस्तापं स-मोह-ज्वरम्। यः शाखी द्विज-संस्तुतः फलति तत् स्वाद्यं रसाख्यं फलं तस्मै शङ्कर-पादपाय महते तन्मस्नि-सन्ध्यं नमः॥५॥

—व्यासाचलीयशङ्करविजयः

देशे कालंडि-नाम्नि केरल-धरा-शोभा-करे सद्-द्विजे जातः श्रीपति-मन्दिरस्य सविधे सर्वज्ञतां प्राप्तवान्। भूत्वा षोडश-वत्सरे यति-वरो गत्वा बदर्याश्रमं कर्ता भाष्य-निबन्धनस्य सु-कविः श्री-शङ्करः पावनः॥६॥

—गोविन्दानन्दरचिते शङ्कराचार्यचरिते

अज्ञानान्तर्गहन-पतितान् आत्म-विद्योपदेशैः त्रातुं लोकान् भव-दव-शिखा-ताप-पापच्यमानान्। मुक्का मौनं वट-विटपिनो मूलतो निष्पतन्ती शम्भोर्मूर्तिश्चरति भुवने शङ्कराचार्य-रूपा॥७॥

— नवकालिदासमाधवकविकृतः शङ्करदिग्विजयः

केमे शङ्कर-सद्गुरोर्गुण-गणा दिग्-जाल-कूलङ्कषाः कालोन्मीलित-मालती-परिमलावष्टम्भ-मुष्टिन्धयाः । काहं हन्त तथापि सद्गुरु-कृपा-पीयूष-पारम्परी-मग्नोन्मग्न-कटाक्ष-वीक्षण-बलादस्मि प्रशस्तोऽर्हताम्॥८॥

—सङ्केपशङ्करविजये

श्रीमच्छङ्कर-सद्गुरोर्भगवतोऽगाधामसाधारणीं वाणीं नः प्रतनीयसीं मुहुरिमां गाढुं समुत्कण्ठते। तन्मूर्तिः प्रभुरेव भक्त-जनता-वात्सल्य-वैपुल्य-भूः अस्मै साधु ददातु शस्त-दयया हस्तावलम्बं हरः॥९॥

—वल्लीसहायकविकृतौ आचार्यदिग्विजये

## अन्यैः वेदान्ताचार्यैः कृताः स्तुतयः

प्रचार्यं सर्व-लोकेषु सश्चार्यं हृदयाम्बुजे। विचार्यं सर्व-वेदान्तैः आचार्यं शङ्करं भजे॥१॥

—नारायणीयोपनिषद्भाष्ये

भगवत्पाद-पादाज्ज-पांसवः सन्तु सन्ततम्। अपारासार-संसार-सागरोत्तार-सतवः॥२॥

—चित्सुखाचार्याणां भाष्यभावप्रकाशिकायाम्

उद्धृत्य वेद-पयसः कमलामिवाब्धेः आलिङ्गिःताखिल-जगत्-प्रभवैक-मूर्तिम्। विद्यामशेष-जगतां सुख-दामदाद् यः तं शङ्करं विमल-भाष्य-कृतं नमामि॥३॥

—विवरणाचार्याणां पश्चपादिकाविवरणे

यद्-भाष्याम्बुज-जात-जात-मधुर-प्रेयोमधु-प्रार्थना-सार्थ-व्यग्र-धियः समग्र-मरुतः स्वर्गऽपि निर्वेदिनः। यस्मिन् मुक्ति-पथः पथीन-मुनिभिः सम्प्रार्थितः सम्बभौ तस्मै भाष्य-कृते नमोऽस्तु भगवत्पादाभिधां बिभ्रते॥४॥

—आनन्दगिर्याचार्याणां सूत्रभाष्यव्याख्यायां - ६

श्री-गुरुं भगवत्पादं शरण्यं भक्त-वत्सलम्। शिवं शिव-करं शुद्धमप्रमेयं नमाम्यहम्॥५॥

—अद्वैतसभायाः ब्रह्मविद्यापत्रिकायां प्रकाशिते अज्ञातकर्तृके गुर्वष्टके

तं वन्दे शङ्कराचार्यं लोक-त्रितय-शङ्करम्। सत्-तर्क-नखरोद्गीर्ण-वावदूक-मतङ्गजम्॥६॥

—तत्त्वबोधभगवत्प्रणीते तत्त्वबोधे

आनन्द-घनमद्वन्द्वं निर्विकारं निरञ्जनम्। भजेऽहं भगवत्पादं भजतामभय-प्रदम्॥७॥

—मनीषा-पश्चक-व्याख्याने

यद्-भाष्योक्तेर्लव-परिजुषश्छात्र-वर्गा महान्तः निर्भिन्दन्ति प्रबल-मतयो वादि-शैलं समस्तम्। यैर्वेदाब्धेरमृतमिव सद्-भाष्यमापत् प्रकाशं तत्-पादाज्ञं स्फुरत् हृदये ह्युद्धतं सर्वदा मे॥८॥

—मनीषापश्चरत्नलघुविवरणे

महा-मोह-पङ्के विरिश्चाचरान्तं प्रजा-हस्तिनं मग्नमालोक्य भाष्यैः। जलैः क्षालयित्वाऽऽत्म-विद्या-दिवं यो नयत्येकलं शङ्करं तं नमामि॥९॥

— ज्ञानामृतयतेः कृतौ विद्यासुरभिसंज्ञके नैष्कर्म्यसिद्धिविवरणे

संसार-सर्प-परिदष्ट-विनष्ट-जन्तु-सञ्जीवनाय परया कृपयोपपन्नः। ब्रह्मावबोध-परमौषधमुद्वहन् यः तं शङ्करं परतरं भिषजां भजामि॥१०॥

—अद्वैतबोधामृतम्

वेदान्ताम्भोगभीरा नय-मकर-कुला ब्रह्म-विद्याङ्ग-षण्डा पाषण्डोत्तुङ्ग-वृक्ष-प्रमथन-निपुणा मान-वीची-तरङ्गा। यस्यास्योत्था सरस्वत्यखिल-भव-भय-ध्वंसिनी शङ्करस्य गङ्गा शम्भोः कपदीदिव निखिल-गुरोनीमि तत्-पाद-पद्मम्॥११॥

—ज्ञानघनपादानां तत्त्वशुद्धौ

सूत्र-प्रग्रह-वेद-वाजिनि महन्मीमांसक-स्यन्दने तिष्ठन् भाष्य-पिनाकमुञ्चल-गुणं कृत्वाऽऽत्म-धी-सायकम्। आकृष्य प्रदहन्नशेष-विपदां मूलं पुराणां त्रयं भूयान्नोऽभिनवः पुरारिरशुभस्योच्छित्तये शङ्करः॥१२॥

—-रामानन्दस्य ऋजु-विवरण-व्याख्यायाम्

यद्-भाष्य-सागर-ज-युक्ति-मणीन् प्रकीर्णान् प्राप्याधुना कतिपयान् कवयो भवन्ति। तस्मै नमो जन-मनोज्ज-दिवाकराय कृत्स्नागमार्थ-निलयाय यतीश्वराय॥१३॥

---बोधनिधि-कृते उपदेश-प्रकरण-विवरणे

वेदान्तार्थं गभीरं ह्यति-सुगमतया बोधयामीति विष्णुः व्यासात्माऽसूत्रयत् तद् दुरिधगममभूद् वादि-दुर्बुद्धि-भेदात्। भिन्दन् दुर्बुद्धि-भेदं य इह करुणयाऽभाष्ययद् भाष्यमेतत् तं वन्दे सर्व-वन्द्यं त्रि-जगित भगवत्पाद-संज्ञं महेशम्॥१४॥

—-रामानन्दसरस्वतीकृतविवरणोपन्यासे

त्रि-वर्गेणात्रान्ते जनन-मरणादि-व्रण-भुवा जनेऽस्मिन् सर्वस्मिंस्तिमिर-परिणाहैक-शरणे। निषेक्तुं निध्यातोऽमृतमग-पतिः शङ्कर इति स्व-नाम व्याख्यातुं जयति कुहना-भिक्षुरनिशम्॥१५॥

—अभिनवद्राविडाचार्य-श्रीबालकृष्णानन्दसरस्वतीनां शारीरकमीमांसाभाष्यवार्तिके

श्री-सम्बन्धमुदीक्ष्य वाचक-पदे यान् शार्ङ्गिणं वैष्णवाः चन्द्रोत्तंस-पदास्पदत्व-कलनाच्छम्भुं च शैवा विदुः। आनन्दाद्वय-शोभमान-परम-प्रेमास्पदं योगिनः तान् पादाम्बुज-रेणु-धूत-तमसो वन्दे सदा श्री-गुरून्॥१६॥

—गङ्गाधरसरस्वत्याख्यभिक्षुणा रचितायाम् आत्मसाम्राज्यसिद्धिव्याख्यायाम्

नमः श्री-शङ्कराचार्य-गुरवे शङ्करात्मने। शरीरिणां शङ्कराय शङ्कर-ज्ञान-हेतवे॥१७॥

—-नृसिंहाश्रमविरचितायां तत्वबोधिन्याख्यायां सङ्क्षेपशारीरकटीकायाम्

याऽनुभूतिः स्वयं-ज्योतिरादित्येशान-विग्रहा। शङ्कराख्या च तं नौमि सुरेश्वर-गुरुं परम्॥१८॥

—-नृसिंहप्रज्ञम्निकृते बृहदारण्यकभाष्यवार्तिकन्यायतत्त्वविवरणे

संसाराब्धि-निषण्णाज्ञ-निकर-प्रोज्जिहीर्षया। कृत-संहननं वन्दे शङ्करं लोक-शङ्करम्॥१९॥

—विज्ञानवासयतिरचितायां पश्चपादिकाव्याख्यायाम्

वेदान्तार्थ-तदाभास-क्षीर-नीर-विवेकिनम्। नमामि भगवत्पादं पर-हंस-धुरन्धरम्॥२०॥

—अमलानन्दसरस्वतीनां वेदान्तकल्पतरौ

नाना-भाष्यादृता सा सगुण-फल-गतिर्वैध-विद्या-विशेषैः तत्-तद्-देशाप्ति-रम्या सरिदिव सकला यत्र यात्यंश-भूयम्। तस्मिन्नानन्द-सिन्धावितमहित फले भाव-विश्रान्ति-मुद्रा शास्त्रस्योद्घाटिता यैः प्रणमत हृदि तान् नित्यमाचार्य-पादान्॥२१॥

—अप्पयदीक्षितानां न्यायरक्षामणौ

प्रचण्ड-पाखण्ड-विखण्डनोद्यतं त्रयी-शिरोर्थ-प्रतिपादने रतम्। बुधैर्नुतं योग-कलाभिरावृतं नमामि तं शङ्कर-देशिकं ततम्॥२२॥

—सचिदानन्दसरस्वतीकृतायाम् आर्याव्याख्यायाम्

दृष्ट्वा यो दिव्य-दृष्टिः किल-युग-समये "मन्द-भाग्या मनुष्याः तस्मात् तन्त्र-प्रपश्चः सुर-यजन-विधिर्मत्-कृतो निष्फलः स्यात्"। इत्याविर्भूय पृथ्यां पुनरिप कृतवांस्तन्त्र-सारं गिरीशः तं वन्दे शङ्कराख्यं महिततम-मनः-प्रार्थनीयार्थ-रूपम्॥२३॥

—प्रपञ्चसारसम्बन्धदीपिकायाम्

येनाद्वन्द्वमखण्डमक्षय-पदं प्रादर्शि तापापहं भाष्य-ग्रन्थि-निबन्धनैः श्रुति-शिरोवाक्यार्थ-विद्योतिभिः। नित्यो यत्र समस्त-सद्-गुण-गणस्तं शङ्कराचार्य-गीर् विख्यातं मुनि-मौलि-लालित-पद-द्वन्द्वं सदा संश्रये॥२४॥

—-रामतीर्थस्वामिरचितायाम् अन्वयार्थप्रकाशिकाख्यायां सङ्क्षेपशारीरकव्याख्यायाम्

वेदान्त-व्रात-नीरं शत-पथ-कथित-न्याय-रत्न-प्रपूरं पारावारं सुतारं निगम-मुख-षडङ्गात्म-सद्-ग्राह-घोरम्। कारं-कारं सुगाहं श्रुत-मत-मथितैर्ब्रह्म-विद्यामृतं यः प्रादादाय तस्मादशरण-शरणं शङ्करं तं नमामः॥२५॥

—आनन्दपूर्णरचितायां न्यायकल्पलतिकानाम्र्यां सुरेश्वरवार्तिकटीकायाम्

वेदान्तार्थ-विभासकाय गुरवे शान्ताय सन्त्यासिने नाना-वादि-नगेन्द्र-सङ्घ-पवये योगीन्द्र-वन्द्याय च। मोह-ध्वान्त-दिवाकराय भगवत्पादाभिधां बिभ्रते तस्मै भाष्य-कृते नमोऽस्तु सततं पूर्णाय बोधात्मने॥२६॥

—तैत्तिरीयभाष्यटीकायाम्

ये वेदान्त-सुधोदधिं सुमनसां निःश्रेयसाय स्वयं निर्मथ्योदहरन्निरूपण-गुणावृत्तेन चेतोमथा। अद्वैतामृतमासुरानुशयिनामास्वादनीयेतरत् तानाऽऽस्माक-गुरोरुपैमि भगवत्पादादिमान् देशिकान्॥२७॥

—कृष्णानन्दयतिकृतौ सिद्धान्तसिद्धाञ्जने

काले शिवः ऋम-वशात् कलि-दोष-दुष्टे यः सम्प्रदाय-रहितं तदपेक्ष्य भूयः। क्षोण्यामवातरदशेष-जगद्धितार्थी श्री-शङ्कराख्यममलं गुरुमाश्रये तम्॥२८॥

—नारायणकृतौ प्रपश्चसारार्थदीपे

वेदाद्यागम-दुग्ध-सिन्धु-मथनात् तन्मेय-मन्थाद्रिणा दिव्याभोग-विचार-वासुकि-वशादाश्रित्य धेर्यं परम्। ब्रह्मोद्बोध-सुधां विधाय दयया मर्त्यानमर्त्यानमी कुर्वन्तो गुरवो जयन्ति जगतां लक्ष्मीश-वद् रक्षकाः॥२९॥

—वरदराजपण्डितकृतौ खण्डनमण्डने

यदीय-वाक्-सूर्य-रुचि-प्रणाशितः हृदन्ध-कारो नमतामशेषतः। महात्मनः शिष्य-हिते सदा रतान् नमामि तान् शङ्कर-पूज्य-देशिकान्॥३०॥

—शङ्कुकविरचिते कैवल्यनवनीते

यद्-वन्नाम्बुज-निस्सृतं परमकं श्री-सूत्र-भाष्यामृतं पीत्वा मादश-जीव-भङ्ग-निचया नन्दन्ति मोक्षाङ्गणे। नाना-वादि-मदेभ-भञ्जन-महा-व्यग्रोग्र-कण्ठीरवान् वन्दे व्यास-मुनीन्द्र-शङ्कर-मुखान् सद्-देशिकांस्तानहम्॥३१॥

—अमरेश्वरशास्त्रिरचिते अज्ञानध्वान्तचण्डभास्करे

यो लोकोपकृति-प्रविष्ट-हृदयो जित्वाऽतिबाह्यं मतं श्रीमच्छङ्कर-शब्द-पूर्व-भगवत्पादाभिधानं गतम्। सद्-वेदान्त-रहस्य-वत् स्फुटितवान् गोप्यं रहो-मानवं तं वन्दे भगवन्तमन्तक-रिपुं सर्वान्तराय-च्छिदम्॥३२॥

—कामेश्वरसूरिकृतायाम् अरुणामोदिनीनाम्यां सौन्दर्यलहरीव्याख्यायाम्

अखिल-पर-हंस-देशिकमागम-गृढार्थ-दर्शकं प्राज्ञम्। स्वानन्द-पूर्ण-सागरमनिशमहं नौमि शङ्कराचार्यम्॥३३॥

—नागनाथरचिते आत्मबोधप्रकरणे

विष्णवे व्यास-रूपाय ब्रह्म-सूत्र-कृते नमः। महेशाय च तद्-भाष्य-कृते शङ्कर-रूपिणे॥३४॥

—अल्लालसूरिरचिते भामतीतिलके

हर-लीलावताराय शङ्कराय वरौजसे। कैवल्य-कलना-कल्प-तरवे गुरवे नमः॥३५॥

— उमामहेश्वररचितायां तत्त्वचन्द्रिकायाम्

यत्-पादाञ्ज-प्रभव-विमल-श्री-परागालि-भास्वान् मत्-स्वान्त-स्थं प्रणुदित तमः-पुञ्जमत्यन्त-चण्डम्। यत्-कारुण्य-प्रव-परिजुषा तारितोऽनेन तूर्णं संसाराब्धिः प्रणितरिनशं स्याद् गुरूणां पदाञ्जे॥३६॥

—सीतारामसूरिरचिते वेदान्तकौस्तुमे

पाराशर्य-वचोविलास-मसृणैः सूत्रैः क्रमेणाततैः अत्यस्तैः प्रकटीचकार भगवान् यो भाष्य-संज्ञं पटम्। अज्ञानोद्भव-जाड्य-नाश-करणं स्वानन्द-दं सेविनां तं वन्देऽखिल-योगि-वन्द्य-चरणं श्री-शङ्करं शं-करम्॥३७॥

—कमलाकरदेवकृतौ आनन्दविलासे

योऽयं दैवत-सार्वभौम-विभवो विश्वाधिको रुद्र इ त्याद्यैराद्य-वचोभिरद्वयपरेरद्यापि संस्तूयते। अद्वैतात्म-विबोधनाय विदुषामिच्छा-समङ्गीकृत-श्रीमच्छङ्कर-देशिकेन्द्र-वपुषं श्री-शङ्करं भावये॥३८॥

—शङ्कराचार्याष्टके

## शङ्कर-वाङ्गहिमा

अधिगत-भिदा पूर्वाचार्यानुपेत्य सहस्र-धा सरिदिव मही-भागान् सम्प्राप्य शौरि-पदोद्गता। जयति भगवत्पाद-श्रीमन्मुखाम्बुज-निर्गता जनन-हरणी सूक्तिर्ब्रह्माद्वयैक-परायणा॥१॥

—अप्पय्यदीक्षितानां सिद्धान्तलेशसङ्ग्रहे

संसाराध्विन ताप-भानु-किरण-प्रोद्भृत-दाह-व्यथा-खिन्नानां जल-काङ्क्षया मरु-भुवि श्रान्त्या परिभ्राम्यताम्। अत्यासन्न-सुखाम्बुधिं सुख-करं ब्रह्माद्वयं दर्शय-न्त्येषा शङ्कर-भारती विजयते निर्वाण-सन्दायिनी॥२॥

—विवेकचूडामणौ

### जय-घोषः

श्री-शङ्कराचार्य-वर्य ब्रह्म-ज्ञान-प्रदायक। अज्ञान-तिमिरादित्य सुज्ञानाब्यि-सुधाकर॥१॥

```
ज्ञान-मुद्राश्चित-कर शिष्य-हृत्-ताप-हारक।
कम्र-मुक्ति-गृह-द्वार-कवाट-घ्न-पदाम्बुज ॥२॥
```

(स्वामिन् ! जय ! विजयी भव !)

षण्मत-स्थापनाचार्यत्रयी-मार्ग-प्रकाशक। प्रसन्न-वदनाम्भोज परमार्थ-प्रकाशक॥३॥

ज्ञानात्मकैक-दण्डाढ्य कमण्डलु-लसत्-कर। काषाय-वसनोपेत भस्मोद्धृलित-विग्रह॥४॥

(स्वामिन् ! जय ! विजयी भव !)

श्रीमत्-कैलास-निलय-सच्छिवांशावतारक। कालटी-क्षेत्र-निवसदार्याम्बा-गर्भ-संश्रित ॥५॥

शिवादि-गुरु-वंशाम्बुनिधि-राकेश-सन्निभ। पितृ-दत्तान्वर्थ-भूत-शङ्कराख्या-समुख्वल॥६॥

(स्वामिन् ! जय ! विजयी भव !)

अभ्यस्त-वेद-वेदाङ्ग निखिलागम-पारग। दरिद्र-ब्राह्मणी-दत्त-भिक्षामलक-तोषित ॥७॥

स्वर्णामलक-सद्घृष्टि-प्रसादानन्दित-द्विज । अष्ट-वर्ष-चतुर्-वेदिन् द्वादशाखिल-शास्त्र-ग॥८॥

(स्वामिन् ! जय ! विजयी भव !)

सरिद्-वर्त्मातप-श्रान्त-मातृ-दुःखापनोदक। नऋ-ग्रह-व्याज-मातृ-मत-पारमहंस्यक ॥९॥

चिन्तना-मात्र-सान्निध्य-करणाश्वासिताम्बक। सोमोद्भवा-तटी-क्रप्त-सौम्य-गोविन्द-सेवन ॥१०॥

(स्वामिन् ! जय ! विजयी भव !)

```
गोविन्दार्य-मुखावाप्त-महावाक्य-चतुष्टय।
योग-सिद्धि-गृहीतेन्दुभवा-पूर-कमण्डलो॥११॥
```

गुर्वनुज्ञात-विश्वेश-दिदृक्षा-गमनोत्सुक। चण्डालाकार-विश्वेश-प्रश्नानुप्रश्न-हर्षित॥१२॥

(स्वामिन् ! जय ! विजयी भव !)

विश्वेशानुग्रहावाप्त-भाष्य-ग्रथन-नैपुण । भाष्य-स्फुट-श्रुतिशिरो-मत-तत्त्वाभिलापक॥१३॥

यदूद्वह-प्रोक्त-गीता-याथातथ्य-विवेचक। ब्रह्मसूत्रार्थ-संवाद-हृष्यत्-सत्यवती-सुत॥१४॥

(स्वामिन् ! जय ! विजयी भव !)

मन्दाकिनी-झरी-रम्य-भाष्य-पावित-भूतल। भाष्य-सार-प्रकरण-कृत-जिज्ञास्-तोषण ॥१५॥

सौन्दर्य-लहरी-मुख्य-बहु-स्तोत्र-विधायक । योगजाग्नि-कृत-स्वाम्बा-यज्ञ-स्थापित-सत्पथ॥१६॥

(स्वामिन् ! जय ! विजयी भव !)

त्रिरधीतात्मीय-भाष्य-सनन्दन-समाश्रय। कुकूलानल-कूट-स्थ-कुमारिल-कृतानते॥१७॥

कर्मैक-पथिकोद्दण्ड-मण्डनान्त्याश्रम-प्रद। कञ्ज-योन्यवतार-श्री-सुरेश्वर-सुदेशिक ॥१८॥

(स्वामिन् ! जय ! विजयी भव !)

यथावत्-तत्त्व-विज्ञातृ-हस्तामलक-सद्गुरो । तोटकाभिव्यक्त-भक्ति-तत्त्व-ज्ञानाढ्य-शिष्यक॥१९॥

पृथ्वीधवादि-शिष्यौघ-शिरोधृत-पद-द्वय । शारदा-स्थापना-पृत-ऋश्यशृङ्ग-गिरि-स्थल॥२०॥

(स्वामिन् ! जय ! विजयी भव !)

ककुडाय-महायात्रा-पवित्रित-महीतल। रामेश्वरादि-मेर्वन्त-प्रतिष्ठापित-सन्मत॥२१॥

अद्वैत-स्थापनाचार्य भगवत्पाद-संज्ञक। वेद-वेदान्त-सम्प्रोक्त-रक्षार्थ-मठ-कल्पन॥२२॥

(स्वामिन् ! जय ! विजयी भव !)

कैलास-यात्रा-सम्प्राप्त-चन्द्रमौलि-प्रपूजक। नेपाल-केदार-वर-सिद्धि-लिङ्ग-निधायक ॥२३॥

चिदम्बर-सभा-न्यस्त-मोक्ष-लिङ्ग यतीश्वर। तुङ्गा-भद्रा-सङ्ग-भूमि-भोग-लिङ्ग-समर्चन ॥२४॥

(स्वामिन् ! जय ! विजयी भव !)

श्रीचऋ्रात्मक-ताटङ्क-पोषिताम्बा-मनोरथ । काञ्च्यां श्रीचऋ-राजाख्य-यन्न-स्थापन-दीक्षित॥२५॥

भेरी-पटह-वाद्यादि-राज-लक्षण-लक्षित। सर्वज्ञ-पीठाध्यारोह-लुप्त-सार्वज्ञ्य-संशय॥२६॥

(स्वामिन् ! जय ! विजयी भव !)

वादार्थागत-सर्वज्ञ-बाल-सन्न्यास-दायक। शारदा-मठ-मेरु-श्री-योगलिङ्गाभिषेचन ॥२७॥

सोपान-पश्चकोद्धोष-कृत-शिष्यानुशासन। सत्यव्रत-समाख्यात-काश्च्यन्तरित-विग्रह॥२८॥

(स्वामिन् ! जय ! विजयी भव !)

काश्चीपुराभरण-कामद-कामकोटि-पीठाभिषिक्त वर-देशिक-सार्वभौम। सार्वज्ञ्य-शक्त्यधिगताखिल-मन्न-तन्न-चक्र-प्रतिष्ठिति-विजृम्भित-चातुरीक॥२९॥

(स्वामिन् ! जय ! विजयी भव !)



अयं पद्यसङ्ग्रहः

\* श्रीमचन्द्रशेखरेन्द्रसरस्वतीश्रीपादानां षष्ट्यब्दपूर्त्यवसरे प्रकाशिते ब्रह्मसूत्रभाष्यपुस्तके

\* श्रीशङ्करभक्तजनसभया प्रकाशिते अद्वैताक्षरमालिकायाः द्वितीयसंस्करणपुस्तके

\* शिमिळि-वेङ्कट-राधाकृष्णशास्त्रिभिः सङ्कलितायां श्रीशङ्करभगवत्पादप्रशस्तिमञ्जर्यां च सङ्गृहीतानि आचार्यप्रशस्तिरूपाणि पद्यानि आधृत्य सङ्कलितः

> जय जय शङ्कर हर हर शङ्कर जय जय शङ्कर हर हर शङ्कर। काश्री-शङ्कर कामकोटि-शङ्कर हर हर शङ्कर जय जय शङ्कर॥

कायेन वाचा मनसेन्द्रियैर्वा बुद्ध्याऽऽत्मना वा प्रकृतेः स्वभावात्। करोमि यद् यत् सकलं परस्मै नारायणायेति समर्पयामि॥

अनेन पूजनेन श्रीमत्-शङ्कर-भगवत्पादाचार्याः प्रीयन्ताम्। ॐ तत् सद् ब्रह्मार्पणमस्तु।



## ॥श्रीमिचदिलासीय-शङ्करविजयविलासे श्रीमत्-शङ्कर-भगवत्पाद-अवतार-घट्टः॥

#### ॥ पञ्चमोऽध्यायः ॥

व्यराजत तदार्याम्बा शिवैकायत्तचेतना। दृष्ट्वा शिवगुरुर्यज्वा भार्यामार्यां च गर्भिणीम्॥३४॥

वृषाचलेशं सततं स्मरन्नेकाग्रचेतसा। दयालुतां स्तुवन् शम्भोदीनेष्वपि महत्स्वपि॥३५॥

ववृधे स पयोराशिः पूर्णेन्दोरिव दर्शनात्। ततः सा दशमे मासि सम्पूर्णशुभलक्षणे॥३६॥

दिवसे माधवर्ती च स्वोचस्थे ग्रहपश्चके। मध्याह्रे चाभिजिन्नाममुहूर्ते चार्द्रया युते॥३७॥

उदयाचलवेलेव भानुमन्तं महौजसम्। प्रासूत तनयं साध्वी गिरिजेव षडाननम्॥३८॥

जयन्तमिव पौलोमी व्यासं सत्यवती यथा। तदैवाग्रे निरीक्ष्येयमनुभूयेव वेदनाम्॥३९॥

चतुर्भुजमुदाराङ्गं त्रिणेत्रं चन्द्रशेखरम्। दुनिरीक्ष्यैः स्वतेजोभिर्भासयन्तं दिशो दश॥४०॥

दिवाकरकराकारैगौरैरीषद्विलोहितैः । एवमाकारमालोक्य विस्मिता विह्वला भिया॥४१॥

किं किं किमिदमाश्चर्यमन्यदेव मदीप्सितम्। परं त्वन्यत् समुद्भृतमिति चिन्ताभृति स्वयम्॥४२॥

उद्वीक्षन्त्यां प्रणमितुं तस्यां कुतुकतायुजि। ससृजुः पुष्पवर्षाणि देवा भुव्यन्तरिक्षगाः॥४३॥ कह्नारकलिकागन्धबन्धुरो मरुदाववौ। दिशः प्रकाशिताकाशाः सा धरा सादरा बभौ॥४४॥

प्रायः प्रदक्षिणज्वाला जज्वलुर्यज्ञपावकाः। प्रसन्नमभवचित्तं सतां प्रतपतामपि॥४५॥

इत्थमन्यद्विलोक्यापि प्रश्निता विनयान्विता। वृषाचलेशं निश्चित्य प्रादुर्भूतमतन्द्रिता॥४६॥

स्वामिन् दर्शय मे लीला बालभावऋमोचिताः। इत्थं सा प्रार्थयामास साध्वी भूयो महेश्वरम्॥४७॥

ततः किशोरवत्सोऽपि किश्चिद्विचलिताधरः। ताडयन् चरणो हस्तो रुरोदैव क्षणादसौ॥४८॥

आर्या साऽपि तदैवासीन्मायामोहितमानसा। जगन्मोहकरी माया महेशितुरनीदशी॥४९॥

तत्रत्यास्तु जना नार्यो नाविन्दन् वृत्तमीदशम्। बालकं मेनिरे प्रोद्यदिन्दुबिम्बमिवोञ्चलम्॥५०॥

तत्रत्या वृद्धनार्योऽपि यथोचितमथाचरन्। ततः श्रुत्वा पिता सोऽपि निधिं प्राप्येव निर्धनः॥५१॥

मुमुदे नितरां चित्ते वित्तेशं नाभ्यलक्षत। आविर्भावं तु जानाति शम्भोर्नाबोधयच सा॥५२॥

स्नात्वा शिवगुरुर्यज्वा यज्वनामग्रणीस्ततः। विप्रानाकारयामास पुरन्ध्रीरपि सर्वतः॥५३॥

तदोत्सवो महानासीत् पुरे सद्मिन सन्ततम्। धान्यराशिं मखिभ्योऽसो विज्ञो भूयः प्रदत्तवान्॥५४॥

धनानि भूरि विप्रेभ्यो वेदविद्धो दिदेश सः। वासांसि भूयो दिव्यानि सफलानि प्रदत्तवान्॥५५॥ पुरन्ध्रीणां च नीरन्ध्रं वस्तुजातान्यदादसौ। घटोघ्नीर्बहुशो गाश्च सालङ्काराः सदक्षिणाः॥५६॥

वृषाचलेशः सततं प्रीयतामित्यसौ ददौ। ततः शिवगुरुर्यज्वा ब्राह्मणान् पूर्वतोऽधिकम्॥५७॥

सन्तर्प्य बन्धुभिः सार्धं मुदितो न्यवसत् सुधीः। बालभावे विशालाक्षमतिविस्तृतवक्षसम्॥५८॥

आजानुलम्बितभुजं सुविशालनिटालकम्। आरक्तोपान्तनयनविनिन्दितसरोरुहम्॥५९॥

मुखकान्तिपराभूतराकाहिमकराकृतिम् । भासा गौर्या प्रसृतया प्रोद्यन्तमिव भास्करम्॥६०॥

शङ्ख्यकध्वजाकाररेखाचिह्नपदाम्बुजम्। द्वात्रिंशल्लक्षणोपेतं विद्युदाभकलेवरम्॥६१॥

प्रमोदं दृष्टमात्रेण दिशन्तं तं स्तनन्धयम्। पायम्पायं दृशा प्रेम्णा श्रीकृष्णमिव गोपिका॥६२॥

प्रपेदे न क्षणं तृप्तिं चकोरीव सुधाकरम्। तादृशं बालकं दृष्ट्वा त्वार्याम्बा शुभलक्षणम्। तिष्ठति स्म सुखेनैव लालयन्ती तन्भवम्॥६३॥

॥इति श्रीचिद्विलासीयश्रीशङ्करविजयविलासे श्रीशङ्करभगवत्पादाचार्याणाम् अवतारघट्टः सम्पूर्णः॥

## ॥ काञ्चां सर्वज्ञपीठारोहण-घट्टः॥ ॥ पञ्चविंशोऽध्यायः॥

श्रीचऋपश्चाद्भागे तु कामाक्षीं ज्ञानरूपिणीम्॥४४॥

प्रतिष्ठाप्य च पूजायै ब्राह्मणान् विनियुज्य च। एकाम्रेश्वरपूजार्थं विप्रानादिश्य भूयसः॥४५॥

श्रीमद्वरदराजस्य नमस्यायै नियुज्य च। सर्वज्ञपीठमारोढुमुत्सेहे देशिकोत्तमः॥४६॥

ततोऽशरीरिणी वाणी नभोमार्गाद् व्यजृम्भत। भो यतिन् भवता सर्वविद्यास्वपि विशेषतः॥४७॥

कृत्वा प्रसङ्गं विद्वद्भिः जित्वा तान् अखिलानपि। सर्वज्ञपीठमारोढुम् उचितं नन् भूतले॥४८॥

इति वाचं समाकर्ण्य किमेतदिति विस्मितः। किश्चिदालोचयन्नास्त किं करोमीति मानसे॥४९॥

ताम्रपर्णीसरित्तीरवासिनो विबुधास्तदा। षड्टर्शिनीसुधावार्धिपारदश्वगुणोन्नताः ॥५०॥

आगत्य तं देशिकेन्द्रं प्रणिपत्येदमूचिरे। भिदा सत्यमिवाभाति त्वया त्वैक्यं निगद्यते॥५१॥

देवभेदो मूर्तिभेदः प्रत्यक्षेणात्र लक्ष्यते। स्वर्गादिफलभेदश्च सर्वशास्त्रविनिश्चितः॥५२॥

तत्प्रत्यक्षं च मिथ्येति कथयस्यधुना यते। इति ब्रुवत्सु विद्वत्सु शङ्कराचायदेशिकः॥५३॥

शृणुतात्रोत्तरं विप्राः ब्रह्मैकं तु सनातनम्। इन्द्रोपेन्द्रधनेन्द्राद्यास्तद्विभूतय एव हि॥५४॥

मृदि कुम्भो यथा भाति कनके कङ्कणं यथा। जले वीचिर्यथा भाति तथेदं च विभाव्यते॥५५॥

यां देवतां भजन्ते ये तत्सारूप्यं प्रयान्ति ते। ये वा पुण्यं चरन्तीह ते स्वर्गे फलभोगिनः॥५६॥ एको देव इति श्रुत्या जगत् सर्वं तदाकृतिः। तद्भिन्नमन्यन्नास्त्येव वेदान्तैकविनिश्चितम्॥५७॥

तस्मादखण्डमात्मानमद्वयानन्दलक्षणम् । ज्ञात्वा गुरुप्रसादेन मुक्ता भवत नान्यथा॥५८॥

श्रुतिस्मृतिपुराणोक्तेः वचनैरिति देशिकः। भेदवादरतान् विप्रान् आधायाद्वैतपारगान्॥५९॥

ततस्ततो विपश्चिद्भिः प्रणतश्चातिभक्तितः। गीतवादित्रनिर्घोषैः जयवादसमुख्यलैः॥६०॥

आरुरोहाथ सर्वज्ञपीठं देशिकपुङ्गवः। पुष्पवृष्टिः पपाताथ ववुर्वाताः सुगन्धयः॥६१॥

॥इति श्रीचिद्विलासीयश्रीशङ्करविजयविलासे श्रीशङ्करभगवत्पादाचार्याणां काञ्च्यां सर्वज्ञपीठारोहणघट्टः सम्पूर्णः॥



# ॥ श्री-लक्ष्मी-नृसिंह-जयन्ती-पूजा ॥

## ॥ पूर्वाङ्गविघ्नेश्वरपूजा॥

(आचम्य)

शुक्राम्बरधरं विष्णुं शशिवणं चतुर्भुजम्। प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्रोपशान्तये॥

प्राणान् आयम्य। ॐ भूः + भूर्भुवः सुव्रोम्। (अप उपस्पृश्य, पुष्पाक्षतान् गृहीत्वा) ममोपात्तसमस्त दुरितक्षयद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं करिष्यमाणस्य कर्मणः निर्विघ्नेन परिसमाप्त्यर्थम् आदौ विघ्नेश्वरपूजां करिष्ये।

ॐ गृणानां त्वा गृणपंति हवामहे कविं केवीनामुंपमश्रंवस्तमम्। ज्येष्ठराजं ब्रह्मणां ब्रह्मणस्पत् आ नः शृण्वन्नृतिभिः सीद् सादनम्॥ अस्मिन् हरिद्राबिम्बे महागणपतिं ध्यायामि, आवाहयामि।

ॐ महागणपतये नमः आसनं समर्पयामि।
पादयोः पाद्यं समर्पयामि। हस्तयोरध्यं समर्पयामि।
आचमनीयं समर्पयामि।
ॐ भूर्भुवस्सुवः। शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।
स्नानानन्तरमाचमनीयं समर्पयामि।
वस्नार्थमक्षतान् समर्पयामि।
यज्ञोपवीताभरणार्थे अक्षतान् समर्पयामि।
दिव्यपरिमलगन्थान् धारयामि।
गन्थस्योपरि हरिद्राकुङ्कुमं समर्पयामि। अक्षतान् समर्पयामि।
पुष्पमालिकां समर्पयामि। पुष्पैः पुजयामि।

#### ॥ अर्चना ॥

१. ॐ सुमुखाय नमः १०. ॐ गणाध्यक्षाय नमः २. ॐ एकदन्ताय नमः ११. ॐ फालचन्द्राय नमः ३. ॐ कपिलाय नमः १२. ॐ गजाननाय नमः ४. ॐ गजकर्णकाय नमः १३. ॐ वऋतुण्डाय नमः ५. ॐ लम्बोदराय नमः १४. ॐ शूर्पकर्णाय नमः ६. ॐ विकटाय नमः १५. ॐ हेरम्बाय नमः ७. ॐ विघ्रराजाय नमः १६. ॐ स्कन्दपूर्वजाय नमः ८. ॐ विनायकाय नमः १७. ॐ सिद्धिविनायकाय नमः ९. ॐ धूमकेतवे नमः १८. ॐ विघ्नेश्वराय नमः

नानाविधपरिमलपत्रपुष्पाणि समर्पयामि॥ धूपमाघ्रापयामि। अलङ्कारदीपं सन्दर्शयामि। नैवेद्यम्। ताम्बूलं समर्पयामि। कर्पूरनीराजनं समर्पयामि। कर्पूरनीराजनानन्तरमाचमनीयं समर्पयामि। वऋतुण्डमहाकाय कोटिसूर्यसमप्रभ। अविघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा॥ प्रार्थनाः समर्पयामि। अनन्तकोटिप्रदक्षिणनमस्कारान् समर्पयामि। छत्रचामरादिसमस्तोपचारान् समर्पयामि।

## ॥ प्रधान-पूजा - श्री-लक्ष्मी-नृसिंहपूजा॥

शुक्राम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्। प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविद्रोपशान्तये॥

प्राणान् आयम्य। ॐ भूः + भूर्भुवः सुव्रोम्।

#### ॥सङ्कल्पः॥

ममोपात्तसमस्तदुरितक्षयद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं शुभे शोभने मुहूर्ते अद्यब्रह्मणः द्वितीयपरार्द्धे श्वेतवराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे प्रथमे पादे जम्बूद्वीपे भारतवर्षे भरतखण्डे मेरोः दक्षिणेपार्श्वे शकाब्दे अस्मिन् वर्तमाने व्यावहारिके प्रभवादि षष्टिसंवत्सराणां मध्ये () १० नाम संवत्सरे उत्तरायणे / दक्षिणायने वसन्तऋतौ मेषमासे

<sup>&</sup>lt;sup>१°</sup>पृष्टं ५७२ पश्यताम्

श्कुपक्षे चतुर्दश्यां शुभितथौ (इन्दु / भौम / बुध / गुरु / भृगु / स्थिर / भान्) वासरयुक्तायाम् (स्वाती/?) नक्षत्र () निया नम्योग () करण युक्तायां च एवं गुण विशेषण विशिष्टायाम् अस्यां चतुर्दश्यां शुभितथौ अस्माकं सहकुटुम्बानां क्षेमस्थैर्य-धैर्य-वीर्य-विजय आयुरारोग्य ऐश्वर्याभिवृद्धार्थम् धर्मार्थकाममोक्षचतुर्विधफलपुरुषार्थसिद्धार्थं पुत्रपौत्राभिवृद्धार्थम् इष्टकाम्यार्थसिद्धार्थम् मम इहजन्मिन पूर्वजन्मिन जन्मान्तरे च सम्पादितानां ज्ञानाज्ञानकृतमहापातकचतुष्टय व्यतिरिक्तानां रहस्यकृतानां प्रकाशकृतानां सर्वेषां पापानां सद्य अपनोदनद्वारा सकल पापक्षयार्थं श्री नृसिंह-जयन्ती-पृण्यकाले यथाशिक्त-ध्यान-आवाहनादि-षोडशोपचारैः श्री-नृसिंह-पूजां करिष्ये। तदङ्गं कलशपूजां च करिष्ये। श्रीविघ्नेश्वराय नमः यथास्थानं प्रतिष्ठापयामि। (गणपित प्रसादं शिरसा गृहीत्वा)

#### ॥ आसन-पूजा॥

पृथिव्या मेरुपृष्ठ ऋषिः। सुतलं छन्दः। कूर्मो देवता॥

पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता। त्वं च धारय मां देवि पवित्रं चाऽऽसनं कुरु॥

#### ॥ घण्टापूजा ॥

आगमार्थं तु देवानां गमनार्थं तु रक्षसाम्। घण्टारवं करोम्यादौ देवताऽऽह्वानकारणम्॥

#### ॥ कलशपूजा ॥

ॐ कलशाय नमः दिव्यगन्धान् धारयामि। ॐ गङ्गायै नमः। ॐ यमुनायै नमः। ॐ गोदावर्यै नमः। ॐ सरस्वत्यै नमः। ॐ नर्मदायै नमः। ॐ सिन्धवे नमः। ॐ कावेर्यै नमः।

<sup>&</sup>lt;sup>११</sup>पृष्टं ५७३ पश्यताम्

<sup>&</sup>lt;sup>१२</sup>पृष्टं ५७४ पश्यताम्

ॐ सप्तकोटिमहातीर्थान्यावाहयामि।

(अथ कलशं स्पृष्ट्वा जपं कुर्यात्) आपो वा इद सर्वं विश्वां भूतान्यापः प्राणा वा आपः पृशव् आपोऽन्नमापोऽमृत्मापः सम्राडापो विराडापः स्वराडापृश्छन्दा इस्यापो ज्योती इष्यापो यजू इष्यापः स्त्यमापः सर्वा देवता आपो भूर्भुवः सुवराप ओम्॥

> कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः। मूले तत्र स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः॥

कुक्षो तु सागराः सर्वे सप्तद्वीपा वसुन्धरा। ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदोऽप्यथर्वणः। अङ्गेश्च सहिताः सर्वे कलशाम्बुसमाश्रिताः॥

गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति। नर्मदे सिन्धुकावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु॥

सर्वे समुद्राः सरितः तीर्थानि च ह्रदा नदाः। आयान्तु विष्णुपूजार्थं दुरितक्षयकारकाः॥ ॐ भूर्भुवः सुवो भूर्भुवः सुवो भूर्भुवः सुवेः।

(इति कलशजलेन सर्वोपकरणानि आत्मानं च प्रोक्ष्य।)

#### ॥ आत्मपूजा ॥

ॐ आत्मने नमः, दिव्यगन्धान् धारयामि।

१. ॐ आत्मने नमः ४. ॐ जीवात्मने नमः

२. ॐ अन्तरात्मने नमः ५. ॐ परमात्मने नमः

३. ॐ योगात्मने नमः ६. ॐ ज्ञानात्मने नमः

#### समस्तोपचारान् समर्पयामि।

देहो देवालयः प्रोक्तो जीवो देवः सनातनः। त्यजेदज्ञाननिर्माल्यं सोऽहं भावेन पूजयेत्॥

## ॥ पीठपूजा ॥

१. ॐ आधारशक्त्ये नमः ८. ॐ रत्नवेदिकायै नमः

२. ॐ मूलप्रकृत्यै नमः ९. ॐ स्वर्णस्तम्भाय नमः

३. ॐ आदिकूर्माय नमः १०. ॐ श्वेतच्छत्राय नमः

४. ॐ आदिवराहाय नमः ११. ॐ कल्पकवृक्षाय नमः

५. ॐ अनन्ताय नमः १२. ॐ क्षीरसमुद्राय नमः

६. ॐ पृथिव्ये नमः १३. ॐ सितचामराभ्यां नमः

७. ॐ रत्नमण्डपाय नमः १४. ॐ योगपीठासनाय नमः

#### ॥गुरु ध्यानम्॥

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुर्गुरुर्देवो महेश्वरः। गुरुः साक्षात् परं ब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः॥

## ॥ षोडशोपचारपूजा॥

ध्यायामि देवदेवं तं शङ्खचक्रगदाधरम्। नृसिंहं भीषणं भद्रं लक्ष्मीयुक्तं विभूषितम्॥ अस्मिन् बिम्बे श्री-लक्ष्मी-नृसिंहं ध्यायामि।

स्हस्रंशीर्षा पुरुषः। स्हस्राक्षः स्हस्रंपात्। स भूमिं विश्वतो वृत्वा। अत्यंतिष्ठद्दशाङ्गुलम्॥ अस्मिन् बिम्बे श्री-लक्ष्मी-नृसिंहम् आवाहयामि। पुरुष एवंद सर्वम्। यद्भूतं यच् भव्यम्। उतामृत्त्वस्येशांनः। यदन्नेनातिरोहंति॥ आसनं समर्पयामि।

पृतावानस्य मिहुमा। अतो ज्यायाईश्च पूर्रुषः। पादौं उस्य विश्वां भूतानि। त्रिपादंस्यामृतं दिवि॥ पादां समर्पयामि।

त्रिपादूर्ध्व उदैत्पुर्रुषः। पादौँ उस्येहा ऽऽभं वात्पुनः। ततो विश्वङ्कां कामत्। साशनानशने अभि॥ अर्घ्यं समर्पयामि।

तस्माँद्विराडंजायत। विराजो अधि पूर्रुषः। स जातो अत्यरिच्यत। पृश्चाद्भृमिमथो पुरः॥ आचमनीयं समर्पयामि।

यत्पुरुषेण ह्विषां। देवा यज्ञमतंन्वत। वसन्तो अस्याऽऽसीदाज्यम्। ग्रीष्म इध्मः श्ररद्धविः॥ मधुपर्कं समर्पयामि।

स्प्तास्यांऽऽसन् परिधयः। त्रिः स्प्त स्मिधः कृताः। देवा यद्यज्ञं तंन्वानाः। अबंधन् पुरुषं पृशुम्॥ शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि। स्नानानन्तरम् आचमनीयं समर्पयामि।

> तं युज्ञं बहिषि प्रौक्षन्। पुरुषं जातमंग्रतः। तेनं देवा अयेजन्त। साध्या ऋषंयश्च ये॥ वस्त्रं समर्पयामि।

तस्मौद्यज्ञार्थ्सर्वहृतंः। सम्भृतं पृषदाज्यम्। पुशू इस्ता इश्वेके वायुव्यान्। आरुण्यान्ग्राम्याश्च ये॥ यज्ञोपवीतं समर्पयामि।

तस्मौद्यज्ञाथ्सर्वहुतंः। ऋचः सामानि जज्ञिरे। छन्दार्श्स जिज्ञेरे तस्मौत्। यजुस्तस्मादजायत॥ दिव्यपरिमलगन्धान् धारयामि। गन्धस्योपरि हरिद्राकुङ्कुमं समर्पयामि। अक्षतान् समर्पयामि।

> तस्मादश्वां अजायन्त। ये के चोंभयादंतः। गार्वो ह जिज्ञरे तस्मौत्। तस्मौज्ञाता अजावयः॥ पुष्पाणि समर्पयामि। पुष्पैः पूजयामि।

#### ॥ अङ्गपूजा ॥

- 🕉 अनघाय नमः पादौ पूजयामि ξ.
- वामनाय नमः गुल्फो पूजयामि ₹.
- ₹.
- ४. वैकुण्ठवासिने नमः ऊरू पूजयामि
- ५. पुरुषोत्तमाय नमः मेढ्रं पूजयामि
- ६. वासुदेवाय नमः कटिं पूजयामि
- ७. हृषीकेशाय नमः नाभिं पूजयामि
- माधवाय नमः हृदयं पूजयामि ۷.
- ९. मधुसूदनाय नमः कण्ठं पूजयामि १०. वराहाय नमः बाहून् पूजयामि
- ११. नृसिंहाय नमः हस्तान् पूजयामि
- दैत्यसूदनाय नमः मुखं पूजयामि १३.

- १६. दामोदराय नमः नासिकां पूजयामि
- १४. पुण्डरीकाक्षाय नमः— नेत्रे पूजयामि
- १५. गरुडध्वजाय नमः श्रोत्रे पूजयामि
- १६. गोविन्दाय नमः ललाटं पूजयामि
- १७. अच्युताय नमः शिरः पूजयामि
- १८. श्री-नृसिंहाय नमः सर्वाणि अङ्गानि पूजयामि

## ॥ चतुर्विंशति नामपूजा॥

- १. ॐ केशवाय नमः
- २. ॐ नारायणाय नमः
- ३. ॐ माधवाय नमः
- ४. ॐ गोविन्दाय नमः
- ५. ॐ विष्णवे नमः
- ६. ॐ मधुसूदनाय नमः
- ७. ॐ त्रिविक्रमाय नमः
- ८. ॐ वामनाय नमः
- ९. ॐ श्रीधराय नमः
- १०. ॐ हृषीकेशाय नमः
- ११. ॐ पद्मनाभाय नमः
- १२. ॐ दामोदराय नमः

- १३. ॐ सङ्कर्षणाय नमः
- १४. ॐ वासुदेवाय नमः
- १५. ॐ प्रद्युम्नाय नमः
- १६. ॐ अनिरुद्धाय नमः
- १७. ॐ पुरुषोत्तमाय नमः
- १८. ॐ अधोक्षजाय नमः
- १९. ॐ नृसिंहाय नमः
- २०. ॐ अच्युताय नमः
- २१. ॐ जनार्दनाय नमः
- २२. ॐ उपेन्द्राय नमः
- २३. ॐ हरये नमः
- २४. ॐ श्रीकृष्णाय नमः

## ॥श्री-लक्ष्मी-नृसिंहाष्टोत्तरशतनामाविलः॥

श्रीनृसिंहाय नमः महासिंहाय नमः दिव्यसिंहाय नमः महाबलाय नमः उग्रसिंहाय नमः महादेवाय नमः

| उपेन्द्राय नमः        |    | सुरारिघ्नाय नमः   |    |
|-----------------------|----|-------------------|----|
| अग्निलोचनाय नमः       |    | सदार्तिघ्राय नमः  |    |
| रौद्राय नमः           |    | सदाशिवाय नमः      |    |
| शौरये नमः             | १० | गुणभद्राय नमः     |    |
| महावीराय नमः          |    | महाभद्राय नमः     |    |
| स्विक्रमपराक्रमाय नमः |    | बलभद्राय नमः      |    |
| हरिकोलाहलाय नमः       |    | सुभद्रकाय नमः     | ४० |
| चिक्रिणे नमः          |    | करालाय नमः        |    |
| विजयाय नमः            |    | विकरालाय नमः      |    |
| अजयाय नमः             |    | गतायुषे नमः       |    |
| अव्ययाय नमः           |    | सर्वकर्तृकाय नमः  |    |
| दैत्यान्तकाय नमः      |    | भैरवाडम्बराय नमः  |    |
| परब्रह्मणे नमः        |    | दिव्याय नमः       |    |
| अघोराय नमः            | २० | अगम्याय नमः       |    |
| घोरविक्रमाय नमः       |    | सर्वशत्रुजिते नमः |    |
| ज्वालामुखाय नमः       |    | अमोघास्त्राय नमः  |    |
| ज्वालामालिने नमः      |    | शस्त्रधराय नमः    | ५० |
| महाज्वालाय नमः        |    | सव्यजूटाय नमः     |    |
| महाप्रभवे नमः         |    | सुरेश्वराय नमः    |    |
| निटिलाक्षाय नमः       |    | सहस्रबाहवे नमः    |    |
| सहस्राक्षाय नमः       |    | वज्रनखाय नमः      |    |
| दुर्निरीक्ष्याय नमः   |    | सर्वसिद्धये नमः   |    |
| प्रतापनाय नमः         |    | जनार्दनाय नमः     |    |
| महादंष्ट्राय नमः      | 30 | अनन्ताय नमः       |    |
| प्राज्ञाय नमः         |    | भगवते नमः         |    |
| हिरण्यक-निषूदनाय नमः  |    | स्थूलाय नमः       |    |
| चण्डकोपिने नमः        |    | अगम्याय नमः       | ६० |

| परावराय नमः  |    | परमेश्वराय नमः      |     |  |  |
|--|----|---------------------|-----|--|--|
| सर्वमन्नैकरूपाय नमः                                    |    | श्रीवत्सवक्षसे नमः  |     |  |  |
| सर्वयन्त्रविदारणाय नमः                                 |    | श्रीवासाय नमः       |     |  |  |
| अव्ययाय नमः  |    | विभवे नमः           |     |  |  |
| परमानन्दाय नमः   |    | सङ्कर्षणाय नमः      |     |  |  |
| कालजिते नमः  |    | प्रभवे नमः          | ९०  |  |  |
| खगवाहनाय नमः   |    | त्रिविक्रमाय नमः    |     |  |  |
| भक्तातिवत्सलाय नमः                                     |    | त्रिलोकात्मने नमः   |     |  |  |
| अव्यक्ताय नमः  |    | कालाय नमः           |     |  |  |
| सुव्यक्ताय नमः   | ७० | सर्वेश्वराय नमः     |     |  |  |
| सुलभाय नमः   |    | विश्वम्भराय नमः     |     |  |  |
| शुचये नमः  |    | स्थिराभाय नमः       |     |  |  |
| लोकैकनायकाय नमः  |    | अच्युताय नमः        |     |  |  |
| सर्वाय नमः   |    | पुरुषोत्तमाय नमः    |     |  |  |
| शरणागतवत्सलाय नमः                                      |    | अधोक्षजाय नमः       |     |  |  |
| धीराय नमः  |    | अक्षयाय नमः         | १०० |  |  |
| धराय नमः   |    | सेव्याय नमः         |     |  |  |
| सर्वज्ञाय नमः  |    | वनमालिने नमः        |     |  |  |
| भीमाय नमः  |    | प्रकम्पनाय नमः      |     |  |  |
| भीमपराऋमाय नमः   | ८० | गुरवे नमः           |     |  |  |
| देवप्रियाय नमः   |    | लोकगुरवे नमः        |     |  |  |
| नुताय नमः  |    | स्रष्ट्रे नमः       |     |  |  |
| पूज्याय नमः  |    | परस्मै ज्योतिषे नमः |     |  |  |
| भवहते नमः  |    | परायणाय नमः         | १०८ |  |  |
| ॥इति श्री-लक्ष्मी-नृसिंहाष्टोत्तरशतनामावलिः सम्पूर्णा॥ |    |                     |     |  |  |

### ॥ उत्तराङ्गपूजा ॥

यत्पुरुषं व्यंदधुः। कृतिधा व्यंकल्पयन्। मुखं किमंस्य को बाहू। कावूरू पादांवुच्येते॥ श्री-लक्ष्मी-नृसिंहाय नमः धूपमाघ्रापयामि।

ब्राह्मणौंऽस्य मुखंमासीत्। बाहू रांजन्यः कृतः। ऊरू तदस्य यद्वैश्यः। पुद्धाः शूद्रो अंजायत॥

उद्दींप्यस्व जातवेदोऽपृघ्रन्निर्ऋतिं मर्म।
पृशूङ्श्च मह्यमार्वह् जीवेनं च दिशों दिश॥
मा नों हि॰सीज्ञातवेदो गामश्वं पुरुषं जर्गत्।
अबिभूदग्न आर्गहि श्रिया मा परिपातय॥
श्री-लक्ष्मी-नृसिंहाय नमः अलङ्कारदीपं सन्दर्शयामि।

ॐ भूर्भुवः सुवंः। + ब्रह्मणे स्वाहाँ।

चन्द्रमा मनंसो जातः। चक्षोः सूर्यो अजायत। मुखादिन्द्रेश्चाग्निश्चं। प्राणाद्वायुरंजायत॥

श्री-लक्ष्मी-नृसिंहाय नमः ( ) पानकं च निवेदयामि, अमृतापिधानमसि। निवेदनानन्तरम् आचमनीयं समर्पयामि।

नाभ्यां आसीद्न्तरिक्षम्। शीर्ष्णो द्यौः समंवर्तत। पद्मां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्। तथां लोकाः अंकल्पयन्॥

पूर्गीफलसमायुक्तं नागवहीदलैर्युतम्। कर्पूरचूर्णसंयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्॥ श्री-लक्ष्मी-नृसिंहाय नमः ताम्बूलं समर्पयामि। वेदाहमेतं पुरुषं महान्तम्। आदित्यवंणं तमंसस्तु पारे। सर्वाणि रूपाणि विचित्य धीरंः। नामानि कृत्वाऽभिवदन् यदास्ते॥ श्री-लक्ष्मी-नृसिंहाय नमः समस्त अपराध क्षमापनार्थं कर्पूरनीराजनं दर्शयामि। कर्पूरनीरजनानन्तरम् आचमनीयं समर्पयामि।

धाता पुरस्ताद्यमुंदाज्हारं। श्राकः प्रविद्वान् प्रदिश्रश्वतंस्रः। तमेवं विद्वानमृतं इह भवति। नान्यः पन्था अयंनाय विद्यते॥ योऽपां पुष्पं वेदं। पुष्पंवान् प्रजावान् पशुमान् भवति। चन्द्रमा वा अपां पुष्पम्। पुष्पंवान् प्रजावान् पशुमान् भवति। य एवं वेदं। योऽपामायतंनं वेदं। आयतंनवान् भवति।

> औं तद्वृह्म। औं तद्वायुः। ओं तदात्मा। ओं तथ्सत्यम्। ओं तथ्सर्वम्। ओं तत्पुरोुर्नमः॥

अन्तश्चरितं भूतेषु गुहायां विश्वमूर्तिषु। त्वं यज्ञस्त्वं वषद्कारस्त्वमिन्द्रस्त्वः रुद्रस्त्वं विष्णुस्त्वं ब्रह्म त्वं प्रजापितः। त्वं तंदाप आपो ज्योती रसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः सुवरोम्॥

श्री-लक्ष्मी-नृसिंहाय नमः वेदोक्तमन्त्रपुष्पाञ्जलिं समर्पयामि।

सुवर्णरजतैर्युक्तं चामीकरविनिर्मितम्। स्वर्णपुष्पं प्रदास्यामि गृह्यतां मधुसूदन॥ स्वर्णपुष्पं समर्पयामि।

प्रदक्षिणं करोम्यद्य पापानि नुत माधव।

मयार्पितान्यशेषाणि परिगृह्य कृपां कुरु॥ यानि कानि च पापानि जन्मान्तरकृतानि च। तानि तानि विनश्यन्ति प्रदक्षिण पदे पदे॥

नमस्ते देवदेवेश नमस्ते भक्तवत्सल। नमस्ते पुण्डरीकाक्ष वासुदेवाय ते नमः॥

नमः सर्वहितार्थाय जगदाधाररूपिणे। साष्टाङ्गोऽयं प्रणामोऽस्तु जगन्नाथ मया कृतः॥ अनन्तकोटिप्रदक्षिणनमस्कारान् समर्पयामि।

युज्ञेनं युज्ञमंयजन्त देवाः। तानि धर्माणि प्रथमान्यांसन्। ते हु नाकं महिमानः सचन्ते। यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः॥ - छत्रचामरादिसमस्तोपचारान् समर्पयामि।

## ॥ लक्ष्मी-नृसिंह-करुणारस-स्तोत्रं॥

श्रीमत्-पयोनिधि-निकेतन चक्रपाणे भोगीन्द्र-भोग-मणि-राजित-पुण्य-मूर्ते । योगीश शाश्वत शरण्य भवाब्धि-पोत लक्ष्मी-नृसिंह मम देहि करावलम्बम्॥१॥

ब्रह्मेन्द्र-रुद्र-मरुदर्क-किरीट-कोटि-सङ्घट्टिताङ्कि-कमलामल-कान्ति-कान्त। लक्ष्मी-लसत्-कुच-सरोरुह्-राजहंस लक्ष्मी-नृसिंह मम देहि करावलम्बम्॥२॥

संसार-दाव-दहनाकर-भी-करोरु-ज्वालावलीभिरतिदग्ध-तनूरुहस्य । त्वत्-पाद-पद्म-सरसी-शरणागतस्य लक्ष्मी-नृसिंह मम देहि करावलम्बम्॥३॥ संसार-जाल-पतितस्य जगन्निवास सर्वेन्द्रियार्थ-बडिशाग्र-झषोपमस्य । प्रोत्कम्पित-प्रचुर-तालुक-मस्तकस्य लक्ष्मी-नृसिंह मम देहि करावलम्बम्॥४॥

संसार-कूपमितघोरमगाध-मूलं सम्प्राप्य दुःख-शत-सर्प-समाकुलस्य। दीनस्य देव कृपया पदमागतस्य लक्ष्मी-नृसिंह मम देहि करावलम्बम्॥५॥

संसार-भीकर-करीन्द्र-कराभिघात-निष्पीड्यमान-वपुषः सकलार्ति-नाश। प्राण-प्रयाण-भव-भीति-समाकुलस्य लक्ष्मी-नृसिंह मम देहि करावलम्बम्॥६॥

संसार-सर्प-विष-दिग्ध-महोग्र-तीव्र-दंष्ट्राग्र-कोटि-परिदष्ट-विनष्ट-मूर्तेः । नागारि-वाहन सुधाब्धि-निवास शौर लक्ष्मी-नृसिंह मम देहि करावलम्बम्॥७॥

संसार-वृक्षमघ-बीजमनन्त-कर्म-शाखा-युतं करण-पत्रमनङ्ग-पुष्पम्। आरुह्य दुःख-फलितं पततं दयालो लक्ष्मी-नृसिंह मम देहि करावलम्बम्॥८॥

संसार-सागर-विशाल-कराल-काल-नऋ-ग्रह-ग्रसित-निग्रह-विग्रहस्य । व्यग्रस्य राग-निचयोर्मि-निपीडितस्य लक्ष्मी-नृसिंह मम देहि करावलम्बम्॥९॥

संसार-सागर-निमञ्जनमृह्यमानम् दीनं विलोकय विभो करुणा-निधे माम्। प्रह्लाद-खेद-परिहार-परावतार लक्ष्मी-नृसिंह मम देहि करावलम्बम्॥१०॥ संसार-घोर-गहने चरतो मुरारे मारोग्र-भीकर-मृग-प्रचुरादितस्य । आर्तस्य मत्सर-निदाघ-सुदुःखितस्य लक्ष्मी-नृसिंह मम देहि करावलम्बम्॥११॥

बद्ध्वा गले यम-भटा बहु तर्जयन्तः कर्षन्ति यत्र भव-पाश-शतैर्युतं माम्। एकाकिनं परवशं चिकतं दयालो लक्ष्मी-नृसिंह मम देहि करावलम्बम्॥१२॥

लक्ष्मीपते कमलनाभ सुरेश विष्णो यज्ञेश यज्ञ मधुसूदन विश्वरूप। ब्रह्मण्य केशव जनार्दन वासुदेव लक्ष्मी-नृसिंह मम देहि करावलम्बम्॥१३॥

एकेन चक्रमपरेण करेण शङ्ख्यम् अन्येन सिन्धु-तनयाम् अवलम्ब्य तिष्ठन्। वामेतरेण वरदाभय-पद्म-चिह्नं लक्ष्मी-नृसिंह मम देहि करावलम्बम्॥१४॥

अन्थस्य मे हृत-विवेक-महाधनस्य चोरैर्-महाबलिभिरिन्द्रिय-नामधेयैः । मोहान्धकार-कुहरे विनिपातितस्य लक्ष्मी-नृसिंह मम देहि करावलम्बम्॥१५॥

प्रह्लाद-नारद-पराशर-पुण्डरीक-व्यासादि-भागवत-पुङ्गव-हन्निवास । भक्तानुरक्त-परिपालन-पारिजात लक्ष्मी-नृसिंह मम देहि करावलम्बम्॥१६॥

लक्ष्मी-नृसिंह-चरणाज्ञ-मधुव्रतेन स्तोत्रं कृतं शुभकरं भुवि शङ्करेण। ये तत् पठन्ति मनुजा हरि-भक्ति-युक्ताः ते यान्ति तत्-पद-सरोजमखण्ड-रूपम्॥१७॥ ॥इति श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यस्य श्री-गोविन्द-भगवत्पूज्य-पाद-शिष्यस्य श्रीमच्छङ्करभगवतः कृतौ श्री-लक्ष्मी-नृसिंह-करुणारस-स्तोत्रं सम्पूर्णम्॥

## ॥श्री-लक्ष्मी-नृसिंह-पञ्चरत्न-स्तोत्रम्॥

त्वत्-प्रभु-जीव-प्रियमिच्छिसि चेन्नरहरि-पूजां कुरु सततं प्रतिबिम्बालङ्कृति-धृति-कुशलो बिम्बालङ्कृतिमातनुते । चेतो-भृङ्ग भ्रमसि वृथा भव-मरु-भूमौ विरसायां भज भज लक्ष्मी-नरसिंहानघ-पद-सरसिज-मकरन्दम्॥१॥

शुक्तौ रजत-प्रतिभा जाता कटकाद्यर्थ-समर्था चेद् दुःखमयी ते संसृतिरेषा निर्वृति-दाने निपुणा स्यात् । चेतो-भृङ्ग भ्रमसि वृथा भव-मरु-भूमौ विरसायां भज भज लक्ष्मी-नरसिंहानघ-पद-सरसिज-मकरन्दम्॥२॥

आकृति-साम्याच्छाल्मिल-कुसुमे स्थल-निलनत्व-भ्रममकरोः गन्ध-रसाविह किमु विद्येते विफलं भ्राम्यसि भृश-विरसेऽस्मिन् । चेतो-भृङ्ग भ्रमिस वृथा भव-मरु-भूमौ विरसायां भज भज लक्ष्मी-नरसिंहानघ-पद-सरसिज-मकरन्दम्॥३॥

स्रक्-चन्दन-विनतादीन् विषयान् सुखदान् मत्वा तत्र विहरसे गन्ध-फली-सदृशा ननु तेऽमी भोगानन्तर-दुःख-कृतः स्युः । चेतो-भृङ्ग भ्रमसि वृथा भव-मरु-भूमौ विरसायां भज भज लक्ष्मी-नरसिंहानघ-पद-सरसिज-मकरन्दम्॥४॥

तव हितमेकं वचनं वक्ष्ये शृणु सुख-कामो यदि सततं स्वप्ने दृष्टं सकलं हि मृषा जाग्रति च स्मर तद्वदिति। चेतो-भृङ्ग भ्रमसि वृथा भव-मरु-भूमौ विरसायां भज भज लक्ष्मी-नरसिंहानघ-पद-सरसिज-मकरन्दम्॥५॥

॥इति श्रीमद्-गोविन्दभगवत्पाद-शिष्य-श्रीमच्छङ्कर-भगवत्पाद-विरचितं श्री-लक्ष्मी-नृसिंह-पश्चरत्न-स्तोत्रं सम्पूर्णम्॥

## ॥श्रीमद्भागवते महापुराणे सप्तमस्कन्धे अष्टमोऽध्यायः॥

#### श्रीनारद उवाच

अथ दैत्यसुताः सर्वे श्रुत्वा तदनुवर्णितम्। जगृहर्निरवद्यत्वान्नेव गुर्वनुशिक्षितम्॥१॥

अथाचार्यसृतस्तेषां बुद्धिमेकान्तसंस्थिताम्। आलक्ष्य भीतस्त्वरितो राज्ञ आवेदयद्यथा॥२॥

श्रुत्वा तदप्रियं दैत्यो दुःसहं तनयानयम्। कोपावेशचलद्गात्रः पुत्रं हन्तुं मनो दधे॥३॥

क्षिप्त्वा परुषया वाचा प्रह्लादमतदर्हणम्। आहेक्षमाणः पापेन तिरश्चीनेन चक्षुषा॥४॥

प्रश्रयावनतं दान्तं बद्धाञ्जलिमवस्थितम्। सर्पः पदाहत इव श्वसन्प्रकृतिदारुणः॥५॥

## श्रीहिरण्यकशिपुरुवाच

हे दुर्विनीत मन्दात्मन्कुलभेदकराधम। स्तब्धं मच्छासनोद्वृत्तं नेष्ये त्वाद्य यमक्षयम्॥६॥

कुद्धस्य यस्य कम्पन्ते त्रयो लोकाः सहेश्वराः। तस्य मेऽभीतवन्मूढ शासनं किं बलोऽत्यगाः॥७॥

#### श्रीप्रहाद उवाच

न केवलं मे भवतश्च राजन्स वै बलं बलिनां चापरेषाम्। परेऽवरेऽमी स्थिरजङ्गमा ये ब्रह्मादयो येन वशं प्रणीताः॥८॥

स ईश्वरः काल उरुक्रमोऽसावोजः सहः सत्त्वबलेन्द्रियात्मा। स एव विश्वं परमः स्वशक्तिभिः सृजत्यवत्यत्ति गुणत्रयेशः॥९॥ जह्यासुरं भाविममं त्वमात्मनः समं मनो धत्स्व न सन्ति विद्विषः। ऋतेऽजितादात्मन उत्पथे स्थितात्तिष्कि ह्यनन्तस्य महत्समर्हणम्॥१०॥

दस्यून्पुरा षण्न विजित्य लुम्पतो मन्यन्त एके स्वजिता दिशो दश। जितात्मनो ज्ञस्य समस्य देहिनां साधोः स्वमोहप्रभवाः कुतः परे॥११॥

### श्रीहिरण्यकशिपुरुवाच

व्यक्तं त्वं मर्तुकामोऽसि योऽतिमात्रं विकत्थसे। मुमूर्षूणां हि मन्दात्मन्ननु स्युर्विक्लवा गिरः॥१२॥

यस्त्वया मन्दभाग्योक्तो मदन्यो जगदीश्वरः। क्वासौ यदि स सर्वत्र कस्मात्स्तम्भे न दृश्यते॥१३॥

सोऽहं विकत्थमानस्य शिरः कायाद्धरामि ते। गोपायेत हरिस्त्वाद्य यस्ते शरणमीप्सितम्॥१४॥

एवं दुरुक्तेर्मुहुरर्दयत्रुषा सुतं महाभागवतं महासुरः। खङ्गं प्रगृह्योत्पतितो वरासनात्स्तम्भं तताडातिबलः स्वमुष्टिना॥१५॥

तदैव तस्मिन्निनदोऽतिभीषणो बभूव येनाण्डकटाहमस्फुटत्। यं वै स्वधिष्णयोपगतं त्वजादयः श्रुत्वा स्वधामात्ययमङ्ग मेनिरे॥१६॥

स विक्रमन्पुत्रवधेप्सुरोजसा निशम्य निर्हादमपूर्वमद्भुतम्। अन्तःसभायां न ददर्श तत्पदं वितत्रसुर्येन सुरारियूथपाः॥१७॥

सत्यं विधातुं निजभृत्यभाषितं व्याप्तिं च भूतेष्वखिलेषु चात्मनः। अदृश्यतात्यद्भुतरूपमुद्वहन्स्तम्भे सभायां न मृगं न मानुषम्॥१८॥

स सत्त्वमेनं परितो विपश्यन्स्तम्भस्य मध्यादनुनिर्जिहानम्। नायं मृगो नापि नरो विचित्रमहो किमेतन्नृमृगेन्द्ररूपम्॥१९॥

मीमांसमानस्य समृत्थितोऽग्रतो नृसिंहरूपस्तदलं भयानकम्। प्रतप्तचामीकरचण्डलोचनं स्फुरत्सटाकेशरजृम्भिताननम्॥२०॥ करालदंष्ट्रं करवालचश्चल क्षुरान्तजिह्नं भ्रुकुटीमुखोल्बणम्। स्तब्धोर्ध्वकर्णं गिरिकन्दराद्भुत व्यात्तास्यनासं हनुभेदभीषणम्॥२१॥

दिविस्पृशत्कायमदीर्घपीवर ग्रीवोरुवक्षःस्थलमल्पमध्यमम्। चन्द्रांशुगौरेश्छुरितं तनूरुहैर्विष्वग्भुजानीकशतं नखायुधम्॥२२॥

दुरासदं सर्वनिजेतरायुध प्रवेकविद्रावितदैत्यदानवम्। प्रायेण मेऽयं हरिणोरुमायिना वधः स्मृतोऽनेन समुद्यतेन किम्॥२३॥

एवं ब्रुवंस्त्वभ्यपतद्भदायुधो नदन्नृसिंहं प्रति दैत्यकुअरः। अलक्षितोऽग्रौ पतितः पतङ्गमो यथा नृसिंहौजसि सोऽसुरस्तदा॥२४॥

न तद्विचित्रं खलु सत्त्वधामनि स्वतेजसा यो नु पुरापिबत्तमः। ततोऽभिपद्याभ्यहनन्महासुरो रुषा नृसिंहं गदयोरुवेगया॥२५॥

तं विक्रमन्तं सगदं गदाधरो महोरगं तार्क्ष्यसुतो यथाग्रहीत्। स तस्य हस्तोत्कलितस्तदासुरो विक्रीडतो यद्वदहिर्गरुत्मतः॥२६॥

असाध्वमन्यन्त हृतौकसोऽमरा घनच्छदा भारत सर्वधिष्ण्यपाः। तं मन्यमानो निजवीर्यशङ्कितं यद्धस्तमुक्तो नृहरिं महासुरः। पुनस्तमासञ्जत खङ्गचर्मणी प्रगृह्य वेगेन गतश्रमो मृधे॥२७॥

तं श्येनवेगं शतचन्द्रवर्त्मभिश्चरन्तमच्छिद्रमुपर्यधो हरिः। कृत्वाट्टहासं खरमुत्स्वनोल्बणं निमीलिताक्षं जगृहे महाजवः॥२८॥

विष्वक्स्फुरन्तं ग्रहणातुरं हरिर्व्यालो यथाखुं कुलिशाक्षतत्वचम्। द्वार्यूरुमापत्य ददार लीलया नखैर्यथाहिं गरुडो महाविषम्॥२९॥

संरम्भदुष्प्रेक्ष्यकराललोचनो व्यात्ताननान्तं विलिहन्स्वजिह्नया। असृग्लवाक्तारुणकेशराननो यथात्रमाली द्विपहत्यया हरिः॥३०॥

नखाङ्करोत्पाटितहृत्सरोरुहं विसृज्य तस्यानुचरानुदायुधान्। अहन्समस्तान्नखशस्त्रपाणिभिर्दोर्दण्डयूथोऽनुपथान्सहस्रशः ॥३१॥ सटावधूता जलदाः परापतन्त्रहाश्च तदृष्टिविमुष्टरोचिषः। अम्भोधयः श्वासहता विचुक्षुभुर्निर्ह्रादभीता दिगिभा विचुऋुशुः॥३२॥

द्यौस्तत्सटोत्क्षिप्तविमानसङ्कुला प्रोत्सर्पत क्ष्मा च पदाभिपीडिता। शैलाः समुत्पेतुरमुष्य रंहसा तत्तेजसा खं ककुभो न रेजिरे॥३३॥

ततः सभायामुपविष्टमुत्तमे नृपासने सम्भृततेजसं विभुम्। अलक्षितद्वैरथमत्यमर्षणं प्रचण्डवक्रं न बभाज कश्चन॥३४॥

निशाम्य लोकत्रयमस्तकज्वरं तमादिदैत्यं हरिणा हतं मृधे। प्रहर्षवेगोत्कलितानना मृहुः प्रसूनवर्षेववृषुः सुरस्त्रियः॥३५॥

तदा विमानाविलिभिर्नभस्तलं दिदक्षतां सङ्कलमास नाकिनाम्। सुरानका दुन्दुभयोऽथ जिन्नरे गन्धर्वमुख्या ननृतुर्जगुः स्नियः॥३६॥

> तत्रोपव्रज्य विबुधा ब्रह्मेन्द्रगिरिशादयः। ऋषयः पितरः सिद्धा विद्याधरमहोरगाः॥३७॥

मनवः प्रजानां पतयो गन्धर्वाप्सरचारणाः। यक्षाः किम्पुरुषास्तात वेतालाः सहकिन्नराः॥३८॥

ते विष्णुपार्षदाः सर्वे सुनन्दकुमुदादयः। मूर्प्नि बद्धाञ्जलिपुटा आसीनं तीव्रतेजसम्। इंडिरे नरशार्दुलं नातिदूरचराः पृथक्॥३९॥

#### श्रीब्रह्मोवाच

नतोऽस्म्यनन्ताय दुरन्तशक्तये विचित्रवीर्याय पवित्रकर्मणे। विश्वस्य सर्गस्थितिसंयमान्गुणैः स्वलीलया सन्दधतेऽव्ययात्मने॥४०॥

#### श्रीरुद्र उवाच

कोपकालो युगान्तस्ते हतोऽयमसुरोऽल्पकः। तत्सुतं पाह्युपसृतं भक्तं ते भक्तवत्सल॥४१॥

### श्रीइन्द्र उवाच

प्रत्यानीताः परम भवता त्रायता नः स्वभागा दैत्याक्रान्तं हृदयकमलं तद्गृहं प्रत्यबोधि। कालग्रस्तं कियदिदमहो नाथ शुश्रूषतां ते मुक्तिस्तेषां न हि बहुमता नारसिंहापरैः किम्॥४२॥

## श्रीऋषय ऊचुः

त्वं नस्तपः परममात्थ यदात्मतेजो येनेदमादिपुरुषात्मगतं ससर्क्थ। तद्विप्रलुप्तममुनाद्य शरण्यपाल रक्षागृहीतवपुषा पुनरन्वमंस्थाः॥४३॥

### श्रीपितर ऊचुः

श्राद्धानि नोऽधिबुभुजे प्रसमं तन् जैर् दत्तानि तीर्थसमयेऽप्यपिबत्तिलाम्बु। तस्योदरान्नखविदीर्णवपाद्य आर्च्छत् तस्मै नमो नृहरयेऽखिलधर्मगोन्ने॥४४॥

### श्रीसिद्धा ऊचुः

यो नो गतिं योगसिद्धामसाधुरहार्षीद्योगतपोबलेन। नाना दर्पं तं नखैर्विददार तस्मै तुभ्यं प्रणताः स्मो नृसिंह॥४५॥

## श्रीविद्याधरा ऊचुः

विद्यां पृथग्धारणयानुराद्धां न्यषेधदज्ञो बलवीर्यदप्तः। स येन सङ्ख्ये पशुवद्धतस्तं मायानृसिंहं प्रणताः स्म नित्यम्॥४६॥

## श्रीनागा ऊचुः

येन पापेन रत्नानि स्त्रीरत्नानि ह्तानि नः। तद्वक्षःपाटनेनासां दत्तानन्द नमोऽस्तु ते॥४७॥

#### श्रीमनव ऊचुः

मनवो वयं तव निदेशकारिणो दितिजेन देव परिभूतसेतवः। भवता खलः स उपसंहृतः प्रभो करवाम ते किमनुशाधि किङ्करान्॥४८॥

### श्रीप्रजापतय ऊचुः

प्रजेशा वयं ते परेशाभिसृष्टा न येन प्रजा वै सृजामो निषिद्धाः। स एष त्वया भिन्नवक्षा नु शेते जगन्मङ्गलं सत्त्वमूर्तेऽवतारः॥४९॥

## श्रीगन्धर्वा ऊचुः

वयं विभो ते नटनाट्यगायका येनात्मसाद्वीर्यबलौजसा कृताः। स एष नीतो भवता दशामिमां किमृत्पथस्थः कुशलाय कल्पते॥५०॥

#### श्रीचारणा ऊचुः

हरे तवाङ्गिपङ्काजं भवापवर्गमाश्रिताः। यदेष साधुहच्छयस्त्वयासुरः समापितः॥५१॥

## श्रीयक्षा ऊचुः

वयमनुचरमुख्याः कर्मभिस्ते मनोज्ञैस् त इह दितिसुतेन प्रापिता वाहकत्वम्। स तु जनपरितापं तत्कृतं जानता ते नरहर उपनीतः पश्चतां पश्चविंश॥५२॥

## श्रीकिम्पुरुषा ऊचुः

वयं किम्पुरुषास्त्वं तु महापुरुष ईश्वरः। अयं कुपुरुषो नष्टो धिक्नृतः साधुभिर्यदा॥५३॥

## श्रीवैतालिका ऊचुः

सभासु सत्रेषु तवामलं यशो गीत्वा सपर्यां महतीं लभामहे। यस्तामनैषीद्वशमेष दुर्जनो द्विष्ट्या हतस्ते भगवन्यथामयः॥५४॥

## श्रीकिन्नरा ऊचुः

वयमीश किन्नरगणास्तवानुगा दितिजेन विष्टिममुनानुकारिताः। भवता हरे स वृजिनोऽवसादितो नरसिंह नाथ विभवाय नो भव॥५५॥

## श्रीविष्णुपार्षदा ऊचुः

अद्यैतद्धरिनररूपमद्भुतं ते दृष्टं नः शरणद सर्वलोकशर्म। सोऽयं ते विधिकर ईश विप्रशप्तस्तस्येदं निधनमनुग्रहाय विद्यः॥५६॥ ॥इति श्रीमद्भागवते महापुराणे पारमहंस्यां संहितायां सप्तमस्कन्धे अष्टमोऽध्यायः॥

## ॥श्रीमद्भागवते महापुराणे सप्तमस्कन्धे नवमोऽध्यायः॥ श्रीनारद उवाच

एवं सुरादयः सर्वे ब्रह्मरुद्रपुरः सराः। नोपैतुमशकन्मन्यु संरम्भं सुदुरासदम्॥१॥

साक्षात्श्रीः प्रेषिता देवैर्दञ्चा तं महदद्भुतम्। अदृष्टाश्रुतपूर्वत्वात्सा नोपेयाय शङ्किता॥२॥

प्रह्लादं प्रेषयामास ब्रह्मावस्थितमन्तिके। तात प्रशमयोपेहि स्विपत्रे कुपितं प्रभुम्॥३॥

तथेति शनके राजन्महाभागवतोऽर्भकः। उपेत्य भुवि कायेन ननाम विधृताञ्जलिः॥४॥

स्वपादमूले पतितं तमर्भकं विलोक्य देवः कृपया परिप्नुतः। उत्थाप्य तच्छीष्णर्यदधात्कराम्बुजं कालाहिवित्रस्तिधयां कृताभयम्॥५॥

स तत्करस्पर्शधुताखिलाशुभः सपद्यभिव्यक्तपरात्मदर्शनः। तत्पादपद्मं हृदि निर्वृतो दधौ हृष्यत्तनुः क्लिन्नहृदश्रुलोचनः॥६॥ अस्तौषीद्धरिमेकाग्र मनसा सुसमाहितः। प्रेमगद्गदया वाचा तत्र्यस्तहृदयेक्षणः॥७॥

#### श्रीप्रहाद उवाच

ब्रह्मादयः सुरगणा मुनयोऽथ सिद्धाः सत्त्वैकतानगतयो वचसां प्रवाहैः। नाराधितुं पुरुगुणैरधुनापि पिप्रुः किं तोष्टुमहिति स मे हिरिरुग्रजातेः॥८॥

मन्ये धनाभिजनरूपतपःश्रुतौजस् तेजःप्रभावबलपौरुषबुद्धियोगाः । नाराधनाय हि भवन्ति परस्य पुंसो भक्त्या तुतोष भगवान्गजयूथपाय॥९॥

विप्राद्विषड्गुणयुतादरविन्दनाभ पादारविन्दविमुखात्श्वपचं वरिष्ठम्। मन्ये तदर्पितमनोवचनेहितार्थ प्राणं पुनाति स कुलं न तु भूरिमानः॥१०॥

नैवात्मनः प्रभुरयं निजलाभपूर्णो मानं जनादविदुषः करुणो वृणीते। यद्यञ्जनो भगवते विदधीत मानं तच्चात्मने प्रतिमुखस्य यथा मुखश्रीः॥११॥

तस्मादहं विगतविक्कव ईश्वरस्य सर्वात्मना महि गृणामि यथा मनीषम्। नीचोऽजया गुणविसर्गमनुप्रविष्टः पूयेत येन हि पुमाननुवर्णितेन॥१२॥

सर्वे ह्यमी विधिकरास्तव सत्त्वधाम्नो ब्रह्मादयो वयमिवेश न चोद्विजन्तः। क्षेमाय भूतय उतात्मसुखाय चास्य विक्रीडितं भगवतो रुचिरावतारैः॥१३॥ तद्यच्छ मन्युमसुरश्च हतस्त्वयाद्य मोदेत साधुरिप वृश्चिकसर्पहत्या। लोकाश्च निवृतिमिताः प्रतियन्ति सर्वे रूपं नृसिंह विभयाय जनाः स्मरन्ति॥१४॥

नाहं बिभेम्यजित तेऽतिभयानकास्य जिह्वार्कनेत्रभुकुटीरभसोग्रदंष्ट्रात् । आन्त्रस्रजःक्षतजकेशरशङ्कुकर्णान् निर्हादभीतदिगिभादरिभिन्नखाग्रात्॥१५॥

त्रस्तोऽस्म्यहं कृपणवत्सल दुःसहोग्र संसारचऋकदनाद्गसतां प्रणीतः। बद्धः स्वकर्मभिरुशत्तम तेऽङ्क्षिमूलं प्रीतोऽपवर्गशरणं ह्वयसे कदा नु॥१६॥

यस्मात्प्रियाप्रियवियोगसंयोगजन्म शोकाग्निना सकलयोनिषु दह्यमानः। दुःखौषधं तदपि दुःखमतद्धियाहं भूमन्भ्रमामि वद मे तव दास्ययोगम्॥१७॥

सोऽहं प्रियस्य सुहृदः परदेवताया लीलाकथास्तव नृसिंह विरिश्चगीताः। अञ्जस्तितर्म्यनुगृणन्गुणविप्रमुक्तो दुर्गाणि ते पदयुगालयहंससङ्गः॥१८॥

बालस्य नेह शरणं पितरौ नृसिंह नार्तस्य चागदमुदन्वति मञ्जतो नौः। तप्तस्य तत्प्रतिविधिर्य इहाञ्जसेष्टस् तावद्विभो तनुभृतां त्वदुपेक्षितानाम्॥१९॥

यस्मिन्यतो यर्हि येन च यस्य यस्माद् यस्मै यथा यदुत यस्त्वपरः परो वा। भावः करोति विकरोति पृथक्स्वभावः सश्चोदितस्तदखिलं भवतः स्वरूपम्॥२०॥ माया मनः सृजिति कर्ममयं बलीयः कालेन चोदितगुणानुमतेन पुंसः। छन्दोमयं यदजयार्पितषोडशारं संसारचक्रमज कोऽतितरेत्त्वदन्यः॥२१॥

स त्वं हि नित्यविजितात्मगुणः स्वधाम्ना कालो वशीकृतविसृज्यविसर्गशक्तिः। चक्रे विसृष्टमजयेश्वर षोडशारे निष्पीड्यमानमुपकर्ष विभो प्रपन्नम्॥२२॥

दृष्टा मया दिवि विभोऽखिलिधण्यपानाम् आयुः श्रियो विभव इच्छिति याञ्जनोऽयम्। येऽस्मत्पितुः कुपितहासविजृम्भितभू विस्फूर्जितेन लुलिताः स तु ते निरस्तः॥२३॥

तस्मादमूस्तनुभृतामहमाशिषोऽज्ञ आयुः श्रियं विभवमैन्द्रियमाविरिश्चात्। नेच्छामि ते विलुलितानुरुविक्रमेण कालात्मनोपनय मां निजभृत्यपार्श्वम्॥२४॥

कुत्राशिषः श्रुतिसुखा मृगतृष्णिरूपाः क्वेदं कलेवरमशेषरुजां विरोहः। निर्विद्यते न तु जनो यदपीति विद्वान् कामानलं मधुलवैः शमयन्दुरापैः॥२५॥

काहं रजःप्रभव ईश तमोऽधिकेऽस्मिन् जातः सुरेतरकुले क तवानुकम्पा। न ब्रह्मणो न तु भवस्य न वै रमाया यन्मेऽर्पितः शिरसि पद्मकरः प्रसादः॥२६॥

नैषा परावरमतिर्भवतो ननु स्याज् जन्तोर्यथात्मसुहृदो जगतस्तथापि। संसेवया सुरतरोरिव ते प्रसादः सेवानुरूपमुदयो न परावरत्वम्॥२७॥ एवं जनं निपतितं प्रभवाहिकूपे कामाभिकाममनु यः प्रपतन्प्रसङ्गात्। कृत्वात्मसात्सुरर्षिणा भगवन्गृहीतः सोऽहं कथं नु विसृजे तव भृत्यसेवाम्॥२८॥

मत्प्राणरक्षणमनन्त पितुर्वधश्च मन्ये स्वभृत्यऋषिवाक्यमृतं विधातुम्। खङ्गं प्रगृह्य यदवोचदसद्विधित्सुस् त्वामीश्वरो मदपरोऽवतु कं हरामि॥२९॥

एकस्त्वमेव जगदेतममुष्य यत्त्वम् आद्यन्तयोः पृथगवस्यसि मध्यतश्च। सृष्ट्वा गुणव्यतिकरं निजमाययेदं नानेव तैरवसितस्तदनुप्रविष्टः॥३०॥

त्वम्वा इदं सदसदीश भवांस्ततोऽन्यो माया यदात्मपरबुद्धिरियं ह्यपार्था। यद्यस्य जन्म निधनं स्थितिरीक्षणं च तद्वैतदेव वसुकालवदष्टितर्वोः॥३१॥

न्यस्येदमात्मिन जगद्विलयाम्बुमध्ये शेषेत्मना निजसुखानुभवो निरीहः। योगेन मीलितदगात्मिनपीतिनद्रस् तुर्ये स्थितो न तु तमो न गुणांश्च युङ्के॥३२॥

तस्यैव ते वपुरिदं निजकालशक्त्या सञ्चोदितप्रकृतिधर्मण आत्मगूढम्। अम्भस्यनन्तशयनाद्विरमत्समाधेर् नाभेरभूत्स्वकणिकावटवन्महाज्जम्॥३३॥

तत्सम्भवः कविरतोऽन्यदपश्यमानस् त्वां बीजमात्मिन ततं स बहिर्विचिन्त्य। नाविन्ददब्दशतमप्सु निमञ्जमानो जातेऽङ्करे कथमुहोपलभेत बीजम्॥३४॥ स त्वात्मयोनिरतिविस्मित आश्रितोऽडां कालेन तीव्रतपसा परिशुद्धभावः। त्वामात्मनीश भृवि गन्धमिवातिसूक्ष्मं भूतेन्द्रियाशयमये विततं ददर्श॥३५॥

एवं सहस्रवदनाङ्गिशिरःकरोरु नासाद्यकर्णनयनाभरणायुधाढ्यम्। मायामयं सदुपलक्षितसन्निवेशं दृष्ट्वा महापुरुषमाप मुदं विरिश्चः॥३६॥

तस्मै भवान्हयशिरस्तनुवं हि बिभ्रद् वेदद्रुहावतिबलौ मधुकैटभाख्यौ। हत्वानयच्छ्रतिगणांश्च रजस्तमश्च सत्त्वं तव प्रियतमां तनुमामनन्ति॥३७॥

इत्थं नृतिर्यगृषिदेवझषावतारैर् लोकान्विभावयसि हंसि जगत्प्रतीपान्। धर्मं महापुरुष पासि युगानुवृत्तं छन्नः कलौ यदभवस्त्रियुगोऽथ स त्वम्॥३८॥

नैतन्मनस्तव कथासु विकुण्ठनाथ सम्प्रीयते दुरितदुष्टमसाधु तीव्रम्। कामातुरं हर्षशोकभयेषणातं तस्मिन्कथं तव गतिं विमृशामि दीनः॥३९॥

जिह्वैकतोऽच्युत विकर्षति मावितृप्ता शिश्नोऽन्यतस्त्वगुदरं श्रवणं कृतश्चित्। घ्राणोऽन्यतश्चपलदक्क च कर्मशक्तिर् बह्च्यः सपत्र्य इव गेहपतिं लुनन्ति॥४०॥

एवं स्वकर्मपतितं भववैतरण्याम् अन्योन्यजन्ममरणाशनभीतभीतम्। पश्यञ्जनं स्वपरविग्रहवैरमैत्रं हन्तेति पारचर पीपृहि मूढमद्य॥४१॥ को न्वत्र तेऽखिलगुरो भगवन्प्रयास उत्तारणेऽस्य भवसम्भवलोपहेतोः। मूढेषु वै महदनुग्रह आर्तबन्धो किं तेन ते प्रियजनाननुसेवतां नः॥४२॥

नैवोद्विजे पर दुरत्ययवैतरण्यास् त्वद्वीर्यगायनमहामृतमग्नचित्तः । शोचे ततो विमुखचेतस इन्द्रियार्थ मायासुखाय भरमुद्वहतो विमूढान्॥४३॥

प्रायेण देव मुनयः स्वविमुक्तिकामा मौनं चरन्ति विजने न परार्थनिष्ठाः। नैतान्विहाय कृपणान्विमुमुक्ष एको नान्यं त्वदस्य शरणं भ्रमतोऽनुपश्ये॥४४॥

यन्मैथुनादिगृहमेधिसुखं हि तुच्छं कण्डूयनेन करयोरिव दुःखदुःखम्। तृप्यन्ति नेह कृपणा बहुदुःखभाजः कण्डूतिवन्मनसिजं विषहेत धीरः॥४५॥

मौनव्रतश्रुततपोऽध्ययनस्वधर्म व्याख्यारहोजपसमाधय आपवर्ग्याः। प्रायः परं पुरुष ते त्वजितेन्द्रियाणां वार्ता भवन्त्युत न वात्र तु दाम्भिकानाम्॥४६॥

रूपे इमे सदसती तव वेदसृष्टे बीजाङ्क्षराविव न चान्यदरूपकस्य।

युक्ताः समक्षेमुभयत्र विचक्षन्ते त्वां योगेन वह्निमिव दारुषु नान्यतः स्यात्॥४७॥

त्वं वायुरग्निरविनिर्वियदम्बु मात्राः प्राणेन्द्रियाणि हृदयं चिदनुग्रहश्च। सर्वं त्वमेव सगुणो विगुणश्च भूमन् नान्यत्त्वदस्त्यपि मनोवचसा निरुक्तम्॥४८॥ नैते गुणा न गुणिनो महदादयो ये सर्वे मनः प्रभृतयः सहदेवमर्त्याः। आद्यन्तवन्त उरुगाय विदन्ति हि त्वाम् एवं विमृश्य सुधियो विरमन्ति शब्दात्॥४९॥

तत्तेऽर्हत्तम नमः स्तुतिकर्मपूजाः कर्म स्मृतिश्चरणयोः श्रवणं कथायाम्। संसेवया त्वियं विनेति षडङ्गया किं भक्तिं जनः परमहंसगतौ लभेत॥५०॥

#### श्रीनारद उवाच

एतावद्वर्णितगुणो भक्त्या भक्तेन निर्गुणः। प्रहादं प्रणतं प्रीतो यतमन्युरभाषत॥५१॥

#### श्रीभगवानुवाच

प्रह्राद भद्र भद्रं ते प्रीतोऽहं तेऽसुरोत्तम। वरं वृणीष्वाभिमतं कामपूरोऽस्म्यहं नृणाम्॥५२॥

मामप्रीणत आयुष्मन्दर्शनं दुर्लभं हि मे। दृष्ट्वा मां न पुनर्जन्तुरात्मानं तप्तुमर्हति॥५३॥

प्रीणन्ति ह्यथ मां धीराः सर्वभावेन साधवः। श्रेयस्कामा महाभाग सर्वासामाशिषां पतिम्॥५४॥

#### श्रीनारद उवाच

एवं प्रलोभ्यमानोऽपि वरैर्लोकप्रलोभनैः। एकान्तित्वाद्भगवति नैच्छत्तानसुरोत्तमः॥५५॥ ॥इति श्रीमद्भागवते महापुराणे पारमहंस्यां संहितायां सप्तमस्कन्धे नवमोऽध्यायः॥

### ॥ अर्घ्यप्रदानम्॥

ममोपात्त समस्तदुरितक्षयद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थम् नृसिंह-जयन्ती-पुण्यकाले श्री-लक्ष्मी-नृसिंह-पूजान्ते क्षीरार्घ्यप्रदानं करिष्ये॥

> हिरण्याक्षवधार्थाय भूभारोत्तरणाय च। परित्राणाय साधूनां जातो विष्णुर्नृकेसरी। गृहाणार्घ्यं मया दत्तं सलक्ष्मी-नृहरे स्वयम्॥ श्री-लक्ष्मी-नृसिंहाय नमः इदमर्घ्यमिदमर्घ्यमददम्प्यम्॥

> > अनेन अर्घ्यप्रदानेन भगवान् सर्वात्मकः श्री-लक्ष्मी-नृसिंहः प्रीयताम्।

हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः। अनन्तपुण्यफलदम् अतः शान्तिं प्रयच्छ मे॥

श्री-लक्ष्मी-नृसिंह-जयन्ती-पुण्यकाले अस्मिन् मया क्रियमाण महाविष्णुपूजायां यद्देयमुपायनदानं तत्प्रत्यायाम्नार्थं हिरण्यं श्री-लक्ष्मी-नृसिंह-प्रीतिं क्रामयमानः

मनसोद्दिष्टाय ब्राह्मणाय सम्प्रददे नमः न मम। अनया पूजया श्री-लक्ष्मी-नृसिंहः प्रीयताम्।

### ॥ विसर्जनम्॥

यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपः पूजा क्रियादिषु। न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतम्॥

इदं व्रतं मया देव कृतं प्रीत्यै तव प्रभो। न्यूनं सम्पूर्णतां यातु त्वत्प्रसादाञ्जनाईन॥

मद्वंशे ये नरा जाता ये जनिष्यन्ति चापरे। तांस्त्वमुद्धर देवेश दुःसहाद्भवसागरात्॥ पातकार्णवमग्नस्य व्याधिदुःखाम्बुवारिभिः। तीव्रेश्च परिभूतस्य मोहदुःखगतस्य मे॥

करावलम्बनं देहि शेषशायिन् जगत्पते। श्रीनृसिंह रमाकान्त भक्तानां भयनाशन॥

क्षीराब्धिनिवासिन् त्वं चक्रपाणे जनार्दन। व्रतेनानेन देवेश भुक्तिमुक्तिप्रदो भव॥

अस्मात् बिम्बात् श्री-लक्ष्मी-नृसिंहं यथास्थानं प्रतिष्ठापयामि (अक्षतानर्पित्वा देवमुत्सर्जयेत्।) अनया पूजया श्री-लक्ष्मी-नृसिंहः प्रीयताम्।

> कायेन वाचा मनसेन्द्रियैर्वा बुद्ध्याऽऽत्मना वा प्रकृतेः स्वभावात्। करोमि यद्यत् सकलं परस्मे नारायणायेति समर्पयामि॥

> > ॐ तत्सद्बह्मार्पणमस्तु।

सालग्रामशिलावारि पापहारि शरीरिणाम्। आजन्मकृतपापानां प्रायश्चित्तं दिने दिने॥

अकालमृत्युहरणं सर्वव्याधिनिवारणम्। सर्वपापक्षयकरं विष्णुपादोदकं शुभम्॥ इति तीर्थं पीत्वा शिरसि प्रसादं धारयेत्।

ॐ तत्सद्बह्मार्पणमस्तु।

### ॥ नृसिंह-जयन्ती-व्रत-कथा॥

#### सूत उवाच

हिरण्यकशिपुं हत्वा देवदेवं जगद्गुरुम्। सुखासीनं च नृहरिं शान्तकोपं रमापतिम्॥१॥

प्रह्लादो ज्ञानिनां श्रेष्ठः पालयन् राज्यमुत्तमम्। एकाकी च तदुत्सङ्गे प्रियं वचनमब्रवीत्॥२॥

#### प्रह्लाद् उवाच

नमस्ते भगवन्विष्णो नृसिंहरूपिणे नमः। त्वद्भक्तोऽहं सुरेशैकं त्वां पृच्छामि तु तत्त्वतः॥३॥

स्वामिस्त्वार्य ममाभिन्ना भक्तिर्जाता त्वनेकधा। कथं च ते प्रियो जातः कारणं मे वद प्रभो॥४॥

### नृसिंह उवाच

कथयामि महाप्राज्ञ शृणुष्वैकाग्रमानसः। भक्तेर्यत्कारणं वत्स प्रियत्वस्य च कारणम्॥५॥

पुरा काले ह्यभूद् विप्रः किश्चित्त्वं नाप्यधीतवान्। नाना त्वं वासुदेवो हि वेश्यासंसक्तमानसः॥६॥

तस्मिञ्जातु न चैव त्वं चकर्थ सुकृतं कियत्। कृतवान्मद्वतं चैकं वेश्यासङ्गतिलालसः॥७॥

मद्गतस्य प्रभावेण भक्तिर्जाता तवानघ।

#### प्रह्लाद् उवाच

श्रीनृसिंहोच्यतां तावत्कस्य पुत्रश्च किं व्रतम्॥८॥ वेश्यायां वर्तमानेन कथं तच कृतं मया। येन त्वत्प्रीतिमापन्नो वक्तमहिसि साम्प्रतम्॥९॥

#### नृसिंह उवाच

पुराऽवन्तीपुरे ह्यासीद्राह्मणो वेदपारगः। तस्य नाम सुशर्मेति बहुलोकेषु विश्रुतः॥१०॥

नित्यहोमिक्रयां चैव विदधाति द्विजोत्तमः। ब्राह्मिक्रयासु नियतं सर्वासु किल तत्परः॥११॥

अग्निष्टोमादिभिर्यज्ञैरिष्टाः सर्वे सुरोत्तमाः। तस्य भार्या सुशीलाभूद्विख्याता भुवनत्रये॥१२॥

पतिव्रता सदाचारा पतिभक्तिपरायणा। जज्ञिरेस्या सुताः पश्च तस्माद्विजवरात्तथा॥१३॥

सदाचारेषु विद्वांसः पितृभक्तिपरायणाः। तेषां मध्ये कनिष्ठस्त्वं वेश्यासङ्गतितत्परः॥१४॥

तया निषेध्यमानेन सुरापानं त्वया कृतम्। सुवर्ण चाप्यपहृतं चौरेः सार्ध त्वया बहु॥१५॥

विलासिन्या समं चैव त्वया चीर्णमघं बहु। एकदा सद्गृहे चाऽऽसीन्म मन्कलिस्त्वया सह॥१६॥

तेन कलहभावेन व्रतमेतत्त्वया कृतम्। अज्ञानान्मद्भतं जातं व्रतानामुत्तमं हि तत्॥१७॥

तस्यां विहारयोगेन रात्रौ जागरणं कृतम्। वेश्याया वक्षम्भं किश्चित्प्रजातं न त्वया सह॥१८॥

रात्रौ जागरणं चीर्णं त्यक्तं भोग्यमनेकधा। व्रतेनानेन चीर्णेन मोदन्ति दिवि देवताः॥१९॥

सृष्टयर्थे च पुरा ब्रह्मा चक्रे ह्येतदनुत्तमम्। मद्रतस्य प्रभावेण निर्मितं सचराचरम्॥२०॥ ईश्वरेण पुरा चीर्णं वधार्थं त्रिपुरस्य च। माहात्म्येन व्रतस्याऽऽशु त्रिपुरस्तु निपातितः॥२१॥

अन्यश्च बहुभिर्देवैर्ऋषिभिश्च पुराऽनघ। राजभिश्च महाप्राज्ञैर्विदितं व्रतमुत्तमम्॥२२॥

एतद्वतप्रभावेण सर्वे सिद्धिमुपागताः। वेश्याऽपि मित्रिया जाता त्रैलोक्ये सुखचारिणी॥२३॥

ईदशं मद्भतं वत्स त्रैलोक्ये तु सुविश्रुतम्। कलहेन विलासिन्या व्रतमेतदुपस्थितम्॥२४॥

प्रह्लाद तेन ते भक्तिर्मिय जाता ह्यनुत्तमा। धूर्तया च विलासिन्या ज्ञात्वा व्रतदिनं मम॥२५॥

कलहश्च कृतो येन मद्वतं च कृतं भवेत्। सा वेश्या त्वप्सरा जाता भुक्ता भोगाननेकशः॥२६॥

मुक्ता कर्मविलीना तु त्वं प्रसाद विशस्व माम्। कार्यार्थं च भवानास्ते मच्छरीरपृथक्तया॥२७॥

विधाय सर्वकार्याणि शीघ्रं चैव गमिष्यसि। इदं व्रतमवश्यं ये प्रकरिष्यन्ति मानवाः॥२८॥

न तेषां पुनरावृत्तिर्मत्तः कल्पशतैरपि। अपुत्रो लभते पुत्रान्मद्भक्तश्च सुवर्चसः॥२९॥

दरिद्रो लभते लक्ष्मी धनदस्य च यादृशी। तेजःकामो लभत्तेजो राज्येच्छू राज्यमुत्तमम्॥३०॥

आयुःकामो लभेदायुर्यादृशं च शिवस्य हि। स्त्रीणां व्रतमिदं साधुपुत्रदं भाग्यदं तथा॥३१॥

अवैधव्यकरं तासां पुत्रशोकविनाशनम्। धनधान्यकरं चैव जातिश्रैष्ट्यकरं शुभम्॥३२॥ सार्वभौमसुखं तासां दिव्यं सौख्यं भवेत्ततः। स्त्रियो वा पुरुषाश्चापि कुर्वन्ति व्रतमुत्तमम्॥३३॥

तेभ्योऽहं प्रददे सौख्यं भुक्तिमुक्ति-समन्वितम्। बहुनोक्तेन किं वत्स व्रतस्यास्य फलं महत्॥३४॥

मद्गतस्य फलं वक्तुं नाहं शक्तो न शङ्करः। ब्रह्मा चतुर्भिवंऋश्च न लभेन्महिमावधिम्॥३५॥

#### प्रह्लाद् उवाच

भगवंस्त्वत्प्रसादेन श्रुतं व्रतमनुत्तमम्। व्रतस्यास्य फलं साधु त्वयि मे भक्तिकारणम्॥३६॥

स्वामिञ्जातं विशेषण त्वत्तः पापनिकृन्तनम्। अधुना श्रोतुमिच्छामि व्रतस्यास्य विधिं परम्॥३७॥

कस्मिन्मासे भवेदेतत्कस्मिन्वा तिथिवासरे। एतद्विस्तरतो देव वक्तुमर्हसि साम्प्रतम्॥३८॥

विधिना येन वै स्वामिन् समग्रफलभुग्भवेत्। ममोपरि कृपां कृत्वा ब्रूहि त्वं सकलं प्रभो॥३९॥

#### नृसिंह उवाच

साधु साधु महाभाग व्रतस्यास्य विधिं परम्। सर्वं कथयतो मेऽद्य त्वमेकाग्रमनाः शृण॥४०॥

वैशाखशुक्रपक्षे तु चतुर्दश्यां समाचरेत्। मज्जन्मसम्भवं पुण्यं व्रतं पापप्रणाशनम्॥४१॥

वर्षे वर्षे तु कर्तव्यं मम सन्तुष्टिकारकम्। महापुण्यमिदं श्रेष्ठं मानुषैर्भवभीरुभिः॥४२॥

तेनैव क्रियमाणेन सहस्रद्वादशीफलम्। जायते तद्वते वच्मि मानुषाणां महात्मनाम्॥४३॥ स्वाती नक्षत्रयोगेन शनिवारेण संयुते। सिद्धियोगस्य संयोगे वणिजे करणे तथा॥४४॥

पुण्यसौभाग्ययोगेन लभ्यते दैवयोगतः। सर्वेरतेस्तु संयुक्तं हत्याकोटिविनाशनम्॥४५॥

एतदन्यतरे योगे तद्दिनं पापनाशनम्। केवलेऽपि च कर्तव्यं मद्दिने व्रतमुत्तमम्॥४६॥

अन्यथा नरकं याति यावचन्द्रदिवाकरौ। यथा यथा प्रवृत्तिः स्यात्पातकस्य कलौ युगे॥४७॥

तथा तथा प्रणश्यन्ति सर्वे धर्मा न संशयः। एतद्वतप्रभावेण मद्भक्तिः स्याद्द्रात्मनाम्॥४८॥

विचार्येत्थं प्रकर्तव्यं माधवे मासि तद्वतम्। नियमश्च प्रकर्तव्यो दन्तधावनपूर्वकम्॥४९॥

श्रीनृसिंह महोग्रस्त्वं दयां कृत्वा ममोपरि। अद्याहं ते विधास्यामि व्रतं निर्विघ्नतां नय॥५०॥

#### इति नियममन्नः।

व्रतस्थेन न कर्तव्या सङ्गतिः पापिभिः सह। मिथ्यालापो न कर्तव्यः समग्रफलकाङ्किणा॥५१॥

स्रीभिर्दृष्टेश्च आलापान्व्रतस्थो नैव कारयेत्। स्मर्तव्यं च महारूपं मद्दिने सकलं शुभे॥५२॥

ततो मध्याह्रवेलायां नद्यादौ विमले जले। गृहे वा देवखाते वा तडागे विमले शुभे॥५३॥

वैदिकेन च मन्नेण स्नानं कृत्वा विचक्षणः। मृत्तिकागोमयेनैव तथा धात्रीफलेन च॥५४॥ तिलैश्च सर्वपापन्नः स्नानं कृत्वा महात्मभिः। परिधाय शुचिर्वासो नित्यकर्म समाचरेत्॥५५॥

ततो गृहं समागत्य स्मरन् मां भक्तियोगतः। गोमयेन प्रलिप्याथ कुर्यादष्टदलं शुभम्॥५६॥

कलशं तत्र संस्थाप्य ताम्रं रत्नसमन्वितम्। तस्योपरि न्यसेत् पात्रं वंशजं व्रीहिपूरितम्॥५७॥

हैमी तत्र च मन्मूर्तिः स्थाप्या लक्षम्यास्तथैव च। पलेन वा तदर्धेन तदर्धार्धेन वा पुनः॥५८॥

यथाशक्त्याऽथवा कार्या वित्तशाठ्यविवर्जितैः। पश्चामृतेन संस्नाप्य पूजनं तु समाचरेत्॥५९॥

ततो ब्राह्मणमाहूय तमाचार्यमलोलुपम्। सदाचारसमायुक्तं शान्तं दान्तं जितेन्द्रियम्॥६०॥

आचार्यवचनाद्धीमान् पूजां कुर्याद्यथाविधि। मण्डपं कारयेत्तत्र पुष्पस्तबकशोभितम्॥६१॥

ऋतुकालोद्भवैः पुष्पैः पूजयेत्स्वस्थमानसः। उपचारः षोडेशभिमन्नैर्वेदोद्भवैस्तथा। शुभैः पौराणिकैर्मन्नैः पूजनीयो यथाविधि॥६२॥

चन्दनं शीतलं दिव्यं चन्द्रकुङ्कुममिश्रितम्। ददामि तव तुष्ट्यर्थं नृसिंह परमेश्वर॥६३॥

#### इति चन्दनम्।

कालोद्भवानि पुष्पाणि तुलस्यादीनि वै प्रभो। सम्यक् गृहाण देवेश लक्ष्म्या सह नमोऽस्तु ते॥६४॥ इति पुष्पाणि। कृष्णागुरुमयं धूपं श्रीनृसिंह जगत्पते। तव तुष्ट्ये प्रदास्यामि सर्वदेव नमोऽस्तु ते॥६५॥

इति धूपम्।

सर्वतेजोद्भवं तेजस्तस्माद्दीपं ददामि ते। श्रीनृसिंह महाबाहो तिमिरं मे विनाशय॥६६॥

इति दीपम्।

नैवेद्यं सौख्यदं चारु भक्ष्यभोज्यसमन्वितम्। ददामि ते रमाकान्त सर्वपापक्षयं कुरु॥६७॥ इति नैवेद्यम।

> नृसिंहाच्युत देवेश लक्ष्मीकान्त जगत्पते। अनेनार्घ्यप्रदानेन सफलाः स्युर्मनोरथाः॥६८॥

इति अर्घ्यम्।

पीताम्बर महाबाहो प्रह्लादभयनाशन। यथाभूतेनार्चनेन यथोक्तफलदो भव॥६९॥

इति प्रार्थना॥

रात्रौ जागरणं कार्यं गीतवादित्रनिःस्वनैः। पुराणश्रवणाद्येश्च श्रोतव्याश्च कथाः शुभाः॥७०॥

ततः प्रभातसमये स्नानं कृत्वा जितेन्द्रियः। पूर्वोक्तेन विधानेन पूजयेन्मां प्रयत्नतः॥७१॥

वैष्णवान्प्रजपेन्मन्नान् मदग्रे स्वस्थमानसः। ततो दानानि देयानि वक्ष्यमाणानि चानघ॥७२॥

पात्रेभ्यस्तु द्विजेभ्यो हि लोकद्वयजिगीषया। सिंहः स्वर्णमयो देयो मम सन्तोषकारकः॥७३॥ गोभूतिलहिरण्यानि दयानि च फलेप्सुभिः। शय्या सतूलिका देया सप्तधान्यसमन्विता॥७४॥

अन्यानि च यथाशक्त्या देयानि मम तुष्टये। वित्तशाठ्यं न कुर्वीत यथोक्तफलकाङ्क्षया॥७५॥

ब्राह्मणान् भोजयेद्भक्त्या तेभ्यो दद्याश्च दक्षिणाम्। निर्धनेनापि कर्तव्यं देयं शक्त्यनुसारतः॥७६॥

सर्वेषामेव वर्णानामधिकारोऽस्ति मद्भते। मद्भक्तेस्तु विशेषेण कर्तव्यं मत्परायणैः॥७७॥

तद्वंशे न भवेदुःखं न दोषो मत्प्रसादतः। मद्वंशे ये नरा जाता ये निष्पत्तिपरायणाः॥७८॥

तान् समुद्धर देवेश दुस्तराद्भवसागरात्। पातकार्णवमग्नस्य व्याधिदुःखाम्बुवासिभिः॥७९॥

जीवैस्तु परिभूतस्य मोहदुःखगतस्य मे। करावलम्बनं देहि शेषशायिअगत्पते॥८०॥

श्रीनृसिंह रमाकान्त भक्तानां भयनाशन। क्षीराम्बुनिधिवासिंस्त्वं चऋपाणे जनार्दन॥८१॥

व्रतेनानेन देवेश भुक्तिमुक्तिप्रदो भव। एवं प्रार्थ्य ततो देवं विसृज्य च यथाविधि॥८२॥

उपहारादिकं सर्वमाचार्याय निवेदयेत्। दक्षिणाभिस्तु सन्तोष्य ब्राह्मणांस्तु विसर्जयेत्। मध्याह्ने तु सुसंयत्तो भुञ्जीत सह बन्धुभिः॥॥८३॥

य इदं शृणुयाद्भक्त्या व्रतं पापप्रणाशनम्। तस्य श्रवणमात्रेण ब्रह्महत्या व्यपोहति॥८४॥

पवित्रं परमं गृह्यं कीर्तयेद्यस्तु मानवः। सर्वान् कामानवाप्नोति व्रतस्यास्य फलं लभेत्॥८५॥ इति हेमाद्रौ नृसिंहपुराणे नृसिंहचतुर्दशीव्रतकथा समाप्ता॥

# ॥ श्री-वरमहालक्ष्मी-पूजा ॥

## ॥ पूर्वाङ्गविघ्नेश्वरपूजा॥

(आचम्य)

शुक्राम्बरधरं विष्णुं शशिवणं चतुर्भुजम्। प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये॥

प्राणान् आयम्य। ॐ भूः + भूर्भुवः सुव्रोम्। (अप उपस्पृश्य, पुष्पाक्षतान् गृहीत्वा) ममोपात्तसमस्त दुरितक्षयद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं करिष्यमाणस्य कर्मणः निर्विघ्नेन परिसमाप्त्यर्थम् आदौ विघ्नेश्वरपूजां करिष्ये।

ॐ गृणानां त्वा गृणपंति र हवामहे कृविं केवीनामुंपमश्रंवस्तमम्। ज्येष्ठराजुं ब्रह्मणां ब्रह्मणस्पत् आ नः शृण्वन्नृतिभिः सीद् सादेनम्॥ अस्मिन् हरिद्राबिम्बे महागणपतिं ध्यायामि, आवाहयामि।

ॐ महागणपतये नमः आसनं समर्पयामि। पादयोः पाद्यं समर्पयामि। हस्तयोरघ्यं समर्पयामि। आचमनीयं समर्पयामि। ॐ भूर्भुवस्सुवः। शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि। स्नानानन्तरमाचमनीयं समर्पयामि। वस्नार्थमक्षतान् समर्पयामि। यज्ञोपवीताभरणार्थे अक्षतान् समर्पयामि। दिव्यपरिमलगन्थान् धारयामि। गन्थस्योपरि हरिद्राकुङ्कुमं समर्पयामि। अक्षतान् समर्पयामि। पुष्पमालिकां समर्पयामि। पुष्पैः पूजयामि।

#### ॥ अर्चना ॥

१. ॐ सुमुखाय नमः

१०. ॐ गणाध्यक्षाय नमः

२. ॐ एकदन्ताय नमः

११. ॐ फालचन्द्राय नमः

३. ॐ कपिलाय नमः

१२. ॐ गजाननाय नमः

४. ॐ गजकर्णकाय नमः

१३. ॐ वऋतुण्डाय नमः

५. ॐ लम्बोदराय नमः

१४. ॐ शूर्पकर्णाय नमः

६. ॐ विकटाय नमः

१५. ॐ हेरम्बाय नमः

७. ॐ विघ्नराजाय नमः ८. ॐ विनायकाय नमः

१६. ॐ स्कन्दपूर्वजाय नमः १७. ॐ सिद्धिविनायकाय नमः

९. ॐ धूमकेतवे नमः

१८. ॐ विघ्नेश्वराय नमः

नानाविधपरिमलपत्रपुष्पाणि समर्पयामि॥ धूपमाघ्रापयामि। अलङ्कारदीपं सन्दर्शयामि। नैवेद्यम्। ताम्बूलं समर्पयामि। कर्पूरनीराजनं समर्पयामि। कर्पूरनीराजनानन्तरमाचमनीयं समर्पयामि।

वऋतुण्डमहाकाय कोटिसूर्यसमप्रभ। अविघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा॥

प्रार्थनाः समर्पयामि।

अनन्तकोटिप्रदक्षिणनमस्कारान् समर्पयामि। छत्रचामरादिसमस्तोपचारान् समर्पयामि।

### ॥ प्रधान-पूजा — श्रीमहालक्ष्मी-पूजा॥

शुक्राम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्। प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविद्रोपशान्तये॥

#### ॥ सङ्कल्पः ॥

ममोपात्तसमस्तदुरितक्षयद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं शुभे शोभने मुहूर्ते अद्यब्रह्मणः द्वितीयपरार्द्धे श्वेतवराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे किलयुगे प्रथमे पादे जम्बूद्वीपे भारतवर्षे भरतखण्डे मेरोः दक्षिणेपार्श्वे शकाब्दे अस्मिन् वर्तमाने व्यावहारिके प्रभवादि षष्टिसंवत्सराणां मध्ये () विं नाम संवत्सरे दक्षिणायने वर्ष-ऋतौ (कटक/सिंह)-श्रावण-मासे शुक्रपक्षे () शुभितथौ भृगुवासरयुक्तायाम् () विशेषण विशिष्टायाम् अस्याम् () शुभितथौ अस्माकं सकुटुम्बायाः क्षेमस्थैर्य-धैर्य-वीर्य-विजय आयुरारोग्य ऐश्वर्याभिवृद्धार्थम् धर्मार्थकाममोक्षचतुर्विधफलपुरुषार्थसिद्धार्थं पुत्रपौत्राभिवृद्धार्थम् धर्मार्थकाममोक्षचतुर्विधफलपुरुषार्थसिद्धार्थं पुत्रपौत्राभिवृद्धार्थम् इष्टकाम्यार्थसिद्धार्थम् मम इहजन्मिन पूर्वजन्मिन जन्मान्तरे च सम्पादितानां ज्ञानाज्ञानकृतमहापातकचतुष्टय व्यतिरिक्तानां रहस्यकृतानां प्रकाशकृतानां सर्वेषां पापानां सद्य अपनोदनद्वारा सकल पापक्षयार्थं आयुष्मत्सत्सन्तानसमृद्धार्थं दीर्घसौमङ्गल्यावास्यर्थं श्रीवरमहालक्ष्मी-पूजां करिष्ये। तदङ्गं कलशपूजां च करिष्ये।

श्रीविघ्नेश्वराय नमः यथास्थानं प्रतिष्ठापयामि। शोभनार्थे क्षेमाय पुनरागमनाय च।

(गणपति प्रसादं शिरसा गृहीत्वा)

१३पृष्टं ५७२ पश्यताम्

<sup>&</sup>lt;sup>१४</sup>पृष्टं ५७३ पश्यताम्

<sup>&</sup>lt;sup>१५</sup>पृष्टं ५७४ पश्यताम्

<sup>&</sup>lt;sup>१६</sup>पृष्टं ५७५ पश्यताम्

#### ॥ आसन-पूजा॥

पृथिव्या मेरुपृष्ठ ऋषिः। सुतलं छन्दः। कूर्मो देवता॥

पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता। त्वं च धारय मां देवि पवित्रं चाऽऽसनं कुरु॥

#### ॥ घण्टापूजा ॥

आगमार्थं तु देवानां गमनार्थं तु रक्षसाम्। घण्टारवं करोम्यादौ देवताऽऽह्वानकारणम्॥

#### ॥ कलशपूजा ॥

ॐ कलशाय नमः दिव्यगन्धान् धारयामि। ॐ गङ्गायै नमः। ॐ यमुनायै नमः। ॐ गोदावर्यै नमः। ॐ सरस्वत्यै नमः। ॐ नर्मदायै नमः। ॐ सिन्धवे नमः। ॐ कावेर्यै नमः। ॐ सप्तकोटिमहातीर्थान्यावाहयामि।

(अथ कलशं स्पृष्ट्वा जपं कुर्यात्) आपो वा इदः सर्वं विश्वां भूतान्यापः प्राणा वा आपः पृशव् आपोऽन्नमापोऽमृत्मापः सम्राडापो विराडापः स्वराडापृश्छन्दाः स्यापो ज्योतीः इष्यापो यज्रू इष्यापः स्त्यमापः सर्वा देवता आपो भूर्भवः स्वराप ओम्॥

> कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः। मूले तत्र स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः॥

कुक्षौ तु सागराः सर्वे सप्तद्वीपा वसुन्धरा। ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदोऽप्यथर्वणः। अङ्गश्च सहिताः सर्वे कलशाम्बुसमाश्रिताः॥ गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति। नर्मदे सिन्धुकावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु॥

सर्वे समुद्राः सरितः तीर्थानि च ह्रदा नदाः। आयान्तु विष्णुपूजार्थं दुरितक्षयकारकाः॥ ॐ भूर्भुवः सुवो भूर्भुवः सुवो भूर्भुवः सुवेः।

(इति कलशजलेन सर्वोपकरणानि आत्मानं च प्रोक्ष्य।)

#### ॥ आत्मपूजा ॥

ॐ आत्मने नमः, दिव्यगन्धान् धारयामि।

१. ॐ आत्मने नमः ४. ॐ जीवात्मने नमः

२. ॐ अन्तरात्मने नमः ५. ॐ परमात्मने नमः

३. ॐ योगात्मने नमः ६. ॐ ज्ञानात्मने नमः

#### समस्तोपचारान् समर्पयामि।

देहो देवालयः प्रोक्तो जीवो देवः सनातनः। त्यजेदज्ञाननिर्माल्यं सोऽहं भावेन पूजयेत्॥

### ॥ पीठपूजा ॥

१. ॐ आधारशक्त्ये नमः ८. ॐ रत्नवेदिकायै नमः

२. ॐ मूलप्रकृत्यै नमः ९. ॐ स्वर्णस्तम्भाय नमः

३. ॐ ओदिकूर्माय नमः १०. ॐ श्वेतच्छत्राय नमः

४. ॐ आदिवराहाय नमः ११. ॐ कल्पकवृक्षाय नमः

५. ॐ अनन्ताय नमः १२. ॐ क्षीरसमुद्राय नमः

६. ॐ पृथिव्ये नमः १३. ॐ सितचामराभ्यां नमः

७. ॐ रत्नमण्डपाय नमः १४. ॐ योगपीठासनाय नमः

#### ॥गुरु ध्यानम्॥

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुर्गुरुर्देवो महेश्वरः। गुरुः साक्षात् परं ब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः॥

### ॥ षोडशोपचारपूजा॥

पद्मासनां पद्मकरां पद्ममालाविभूषिताम्। क्षीरसागरसम्भूतां हेमवर्णसमप्रभाम्॥

क्षीरवर्गसमं वस्त्रं दधानां हरिवल्लभाम्। भावये भक्तियोगेन कलशेऽस्मिन् मनोहरे॥ अस्मिन् कुम्भे (प्रतिमायां) श्री-वरलक्ष्मीं ध्यायामि।

बालभानुप्रतीकाशे पूर्णचन्द्रनिभानने। सूत्रेऽस्मिन् सुस्थिरा भूत्वा प्रयच्छ बहुलान् वरान्॥ इति दोरस्थापनम्।

सर्वमङ्गलमाङ्गल्ये विष्णुवक्षस्थलालये। आवाहयामि देवि त्वामभीष्टफलदा भव॥ श्री-वरलक्ष्मीमावाहयामि।

अनेकरत्नखचितं क्षीरसागरसम्भवे। स्वर्णसिहासनं देवि स्वीकुरुष्व हरिप्रिये॥ श्री-वरलक्ष्म्यै नमः आसनं समर्पयामि। गङ्गादिसरिदानीतं गन्धपुष्पसमन्वितम्। पाद्यं ददामि ते देवि प्रसीद परमेश्वरि॥ श्री-वरलक्ष्म्यै नमः पाद्यं समर्पयामि। गङ्गानदीसमानीतं सुवर्णकलशस्थितम्। गृहाणार्घ्यं मया दत्तं पुत्रपौत्रफलप्रदे॥ श्री-वरलक्ष्म्यै नमः अर्घ्यं समर्पयामि।

प्रसन्नं शीतलं तोयं प्रसन्नमुखपङ्कजे। गृहाणाचमनार्थाय गरुडध्वजवल्लभे॥ श्री-वरलक्ष्म्यै नमः आचमनं समर्पयामि।

महालक्ष्मि महादेवि मध्वाज्यदिधसंयुतम्। मधुपर्कं गृहाणेमं मधुसूदनवल्ल्भे॥ श्री-वरलक्ष्म्यै नमः मधुपर्कं समर्पयामि।

पयोदिधघृतैर्युक्तं शर्करामधुसंयुतम्। पञ्चामृतं गृहाणेदं वरलक्ष्मि नमोऽस्तु ते॥ श्री-वरलक्ष्म्यै नमः पञ्चामृतं समर्पयामि।

हेमकुम्भस्थितं स्वच्छं गङ्गादिसरिदाहृतम्। स्नानार्थं सलिलं देवि गृह्यतां सागरात्मजे॥ श्री-वरलक्ष्म्यै नमः स्नानं समर्पयामि।

दिव्याम्बरयुगं सूक्ष्मं कश्चकं च मनोहरम्। वरलक्ष्मि महादेवि गृहाणेदं मयाऽपितम्॥ श्री-वरलक्ष्म्यै नमः वस्त्रं समर्पयामि।

माङ्गल्यमणिसंयुक्तं मुक्ता-विद्रुमसंयुतम्। दत्तं मङ्गलसूत्रं च गृहाण हरिवल्लभे॥ श्री-वरलक्ष्म्यै नमः कण्ठसूत्रं समर्पयामि।

रत्नताटङ्ककेयूरहारकङ्कणभूषिते । भूषणानि महार्हाणि गृहाण करुणानिधे॥ श्री-वरलक्ष्म्यै नमः आभरणानि समर्पयामि।

कर्पूरचन्दनोपेतं कस्तूरीकुङ्कुमान्वितम्। सर्वगन्धं गृहाणाद्य सर्वमङ्गलदायिनि॥ श्री-वरलक्ष्म्यै नमः गन्धान् धारयामि।

शालिजातान् चन्द्रवर्णान् स्निग्धमौक्तिकसन्निभान्। अक्षतान् देवि गृह्णीष्व पङ्कजाक्षस्य वल्लभे॥ श्री-वरलक्ष्म्यै नमः अक्षतान् समर्पयामि।

मन्दारपारिजाताङ्गेः केतक्युत्पलपाटलैः। मल्लिकाजातिवकुलैः पुष्पैस्त्वां पूजयाम्यहम्॥ श्री-वरलक्ष्म्यै नमः पुष्पमालां समर्पयामि। पुष्पैः पूजयामि।स्

#### ॥ अङ्गपूजा ॥

- १. वरलक्ष्म्यै नमः पादौ पूजयामि
- २. महालक्ष्म्यै नमः गुल्फौ पूजयामि
- ३. इन्दिरायै नमः जङ्के पूजयामि
- ४. चण्डिकायै नमः जानुनी पूजयामि
- ५. क्षीराब्धितनयायै नमः ऊरू पूजयामि
- ६. पीताम्बरधारिण्यै नमः— कटिं पूजयामि
- ७. सागरसम्भवायै नमः गुह्यं पूजयामि
- ८. नारायणप्रियायै नमः नाभिं पूजयामि
- ९. जगत्कुक्ष्यै नमः कुक्षिं पूजयामि
- १०. विश्वजनन्यै नमः वक्षः पूजयामि
- ११. सुस्तन्ये नमः स्तनौ पूजयामि

| १२. | कम्बुकण्ठ्ये नमः | — कण्ठ पूजयार् | मे |
|-----|------------------|----------------|----|
|     |                  |                |    |

१३. सुन्दर्ये नमः — स्कन्धौ पूजयामि

१४. पद्महस्तायै नमः — हस्तान् पूजयामि

१५. बहुप्रदायै नमः — बाहून् पूजयामि

— वऋं पूजयामि १६. चन्द्रवदनाये नमः

१७. चश्चलायै नमः — चुबुकं पूजयामि

१८. बिम्बोष्ठ्ये नमः — ओष्ठं पूजयामि

— अधरं पूजयामि १९. अनघायै नमः

२०. सुकपोलायै नमः — कपोलौ पूजयामि

२१. फलप्रदाये नमः — फालम् पूजयामि

२२. नीलालकायै नमः — अलकान् पूजयामि

— शिरः पूजयामि २३. शिवायै नमः

२४. सर्वमङ्गलायै नमः — सर्वाण्यङ्गानि पूजयामि

### ॥ अष्टलक्ष्मी-अर्चना॥

६. विजयलक्ष्म्यै नमः

१. आदिलक्ष्म्यै नमः

२. धान्यलक्ष्म्यै नमः ७. विद्यालक्ष्म्यै नमः

८. धनलक्ष्म्यै नमः ३. धेर्यलक्ष्म्यै नमः

४. गजलक्ष्म्यै नमः ९. वरलक्ष्म्यै नमः

५. सन्तानलक्ष्म्यै नमः १०. महालक्ष्म्ये नमः

### ॥ लक्ष्म्यष्टोत्तरशतनामाविलः॥

सर्वभूतहितप्रदायै नमः श्रद्धायै नमः विभूत्यै नमः प्रकृत्यै नमः विकृत्यै नमः

विद्यायै नमः

| सुरभ्ये नमः         |   | अशोकायै नमः          |    |
|---------------------|---|----------------------|----|
| परमात्मिकायै नमः    |   | अमृतायै नमः          |    |
| वाचे नमः            |   | दीप्तायै नमः         |    |
| पद्मालयायै नमः १    | 0 | लोकशोकविनाशिन्यै नमः |    |
| पद्माये नमः         |   | धर्मनिलयायै नमः      |    |
| शुचये नमः           |   | करुणायै नमः          |    |
| स्वाहायै नमः        |   | लोकमात्रे नमः        | ४० |
| स्वधायै नमः         |   | पद्मप्रियायै नमः     |    |
| सुधायै नमः          |   | पद्महस्तायै नमः      |    |
| धन्यायै नमः         |   | पद्माक्ष्ये नमः      |    |
| हिरण्मय्ये नमः      |   | पद्मसुन्दर्ये नमः    |    |
| लक्ष्म्यै नमः       |   | पद्मोद्भवायै नमः     |    |
| नित्यपुष्टायै नमः   |   | पद्ममुख्यै नम्ः      |    |
| विभावर्ये नमः २     | 0 | पद्मनाभप्रियायै नमः  |    |
| अदित्यै नमः         |   | रमायै नमः            |    |
| दित्यै नमः          |   | पद्ममालाधरायै नमः    |    |
| दीप्तायै नमः        |   | देव्ये नमः           | ५० |
| वसुधायै नमः         |   | पद्मिन्यै नमः        |    |
| वसुधारिण्यै नमः     |   | पद्मगन्धिन्यै नमः    |    |
| कमलायै नमः          |   | पुण्यगन्धायै नमः     |    |
| कान्तायै नमः        |   | सुप्रसन्नायै नमः     |    |
| क्षमायै नमः         |   | प्रसादाभिमुख्यै नमः  |    |
| क्षीरोदसम्भवायै नमः |   | प्रभाये नमः          |    |
| अनुग्रहपदायै नमः ३  | 0 | चन्द्रवदनायै नमः     |    |
| बुद्धये नमः         |   | चन्द्रायै नमः        |    |
| अनघायै नमः          |   | चन्द्रसहोदर्ये नमः   |    |
| हरिवल्लभायै नमः     |   | चतुर्भुजायै नमः      | ६० |
|                     |   | - <del>-</del>       |    |
|                     |   |                      |    |

| चन्द्ररूपायै नमः                                |             | धनधान्यकर्ये नमः             |     |  |  |  |  |
|---|-------------|------------------------------|-----|--|--|--|--|
| इन्दिराये नमः                                   |             | सिद्धौ नमः                   |     |  |  |  |  |
| इन्दुशीतलायै नमः                                |             | स्रेणसोम्यायै नमः            |     |  |  |  |  |
| आह्रादजनन्यै नमः                                |             | शुभप्रदायै नमः               |     |  |  |  |  |
| पुष्ट्ये नमः                                    |             | नृपवेश्मगतानन्दायै नमः       |     |  |  |  |  |
| शिवायै नमः                                      |             | वरलक्ष्म्यै नमः              | ९०  |  |  |  |  |
| शिवकर्ये नमः                                    |             | वसुप्रदायै नमः               |     |  |  |  |  |
| सत्यै नमः                                       |             | शुभायै नमः                   |     |  |  |  |  |
| विमलायै नमः                                     |             | हिरण्यप्राकारायै नमः         |     |  |  |  |  |
| विश्वजनन्यै नमः                                 | ००          | समुद्रतनयायै नमः             |     |  |  |  |  |
| तुष्ट्ये नमः                                    |             | जयायै नमः                    |     |  |  |  |  |
| दारिद्यनाशिन्यै नमः                             |             | मङ्गलायै देव्यै नमः          |     |  |  |  |  |
| प्रीतिपुष्करिण्यै नमः                           |             | विष्णुवक्षःस्थलस्थितायै नमः  |     |  |  |  |  |
| शान्तायै नमः                                    |             | विष्णुपत्र्यै नमः            |     |  |  |  |  |
| शुक्रमाल्याम्बरायै नमः                          |             | प्रसन्नाक्ष्यै नमः           |     |  |  |  |  |
| श्रियै नमः                                      |             | नारायणसमाश्रितायै नमः        | १०० |  |  |  |  |
| भास्कर्ये नमः                                   |             | दारिद्यध्वंसिन्यै नमः        |     |  |  |  |  |
| बिल्वनिलयायै नमः                                |             | देव्यै नमः                   |     |  |  |  |  |
| वरारोहायै नमः                                   |             | सर्वोपद्रवहारिण्यै नमः       |     |  |  |  |  |
| यशस्विन्यै नमः                                  | ८०          | नवदुर्गायै नमः               |     |  |  |  |  |
| वसुन्धरायै नमः                                  |             | महाकाल्यै नमः                |     |  |  |  |  |
| उदाराङ्गायै नमः                                 |             | ब्रह्मविष्णुशिवात्मिकायै नमः |     |  |  |  |  |
| हरिण्यै नमः                                     |             | त्रिकालज्ञानसम्पन्नायै नमः   |     |  |  |  |  |
| हेममालिन्यै नमः                                 |             | भुवनेश्वर्ये नमः             |     |  |  |  |  |
| ॥इति श्री लक्ष्म्यष्टोत्तरशतनामाविलः सम्पूर्णा॥ |             |                              |     |  |  |  |  |
| "=" " " " " " " " " " " " " " " " " " "         | - · · · · · |                              |     |  |  |  |  |

॥इति श्री लक्ष्म्यष्टीत्तरशतनामावितः सम्पूर्णो॥ श्री-वरलक्ष्म्यै नमः नानाविधपरिमलपत्रपुष्पाणि समर्पयामि।

### ॥ उत्तराङ्गपूजा ॥

धूपं ददामि ते रम्यं गुग्गुल्वगरुसंयुतम्। गृहाण त्वं महालक्ष्मि भक्तानामिष्टदायिनि॥ श्री-वरलक्ष्म्यै नमः धूपमाघ्रापयामि।

साज्यं त्रिवर्तिसंयुक्तं सर्वाभीष्टप्रदायिनि। दीपं गृहाण कमले देहि मे सर्वमीप्सितम्॥ श्री-वरलक्ष्म्यै नमः अलङ्कार-दीपं सन्दर्शयामि।

नानाभक्ष्यसमायुक्तं नानाफलसमन्वितम्। नैवेद्यं गृह्यतां देवि नारायणकुटुम्बिनि॥ श्री-वरलक्ष्म्यै नमः नैवेद्यं समर्पयामि।

उशीरवासितं तोयं शीतलं शशिसोदरि। पानाय गृह्यतां देवि पारावारतनूभवे॥ श्री-वरलक्ष्म्यै नमः पानीयं समर्पयामि।

पूगीफलं सकर्पूरं नागवल्लीदलानि च। चूर्णं च चन्द्रसहजे गृह्यन्तां हरिवल्लभे॥ श्री-वरलक्ष्म्यै नमः ताम्बूलं समर्पयामि।

नीराजनं नीरजाक्षि नारायणविलासिनि । गृह्यतामर्पितं भक्त्या गरुडध्वजभामिनि॥ श्रीवरलक्ष्म्यै नमः कर्पूरनीराजनं समर्पयामि।

पुष्पाञ्जलिं गृहाणेमं पुरुषोत्तमवल्लभे। वरलक्ष्मि नमस्तुभ्यं वरान्देहि ममाखिलान्॥ श्रीवरलक्ष्म्यै नमः मन्नपुष्पाञ्जलिं समर्पयामि। सर्वमङ्गललाभाय सर्वपापनिवृत्तये। प्रदक्षिणं करोम्यद्य प्रसीद परमेश्वरि॥ श्रीवरलक्ष्म्यै नमः प्रदक्षिणं समर्पयामि।

नमोऽस्तु नालीकनिभाननायै नमोऽस्तु नारायणवल्लभायै । नमोऽस्तु रत्नाकरसम्भवायै नमोऽस्तु लक्ष्म्यै जगतां जनन्यै॥ श्रीवरलक्ष्म्यै नमः नमस्कारान् समर्पयामि।

आयुरारोग्यमैश्वर्यं पुत्रपौत्रान् पशून् धनम्। शत्रुक्षयं महालक्ष्मि प्रयच्छ करुणानिधे॥ श्रीवरलक्ष्म्यै नमः प्रार्थनाः समर्पयामि।

### ॥ दोरग्रन्थि-पूजा॥

कमलायै नमः — प्रथमग्रन्थिं पूजयामि।
रमायै नमः — द्वितीयग्रन्थिं पूजयामि।
लोकमात्रे नमः — तृतीयग्रन्थिं पूजयामि।
विश्वजनन्यै नमः — चतुर्थग्रन्थिं पूजयामि।
महालक्ष्म्यै नमः — पश्चमग्रन्थिं पूजयामि।
क्षीराब्धितनयायै नमः — षष्ठग्रन्थिं पूजयामि।
विश्वसाक्षिण्यै नमः — सप्तमग्रन्थिं पूजयामि।
हरिवल्लभायै नमः — अष्टमग्रन्थिं पूजयामि।
चन्द्रसहोदर्यै नमः — नवमग्रन्थिं पूजयामि।

सर्वमङ्गलमाङ्गल्ये सर्वपापप्रणाशिनि। दोरकं प्रतिगृह्णामि सुप्रीता भव सर्वदा॥ इति दोरकं हस्तेन गृहीत्वा।

करिष्यामि व्रतं देवि त्वद्भक्ता त्वत्परायणा। श्रियं देहि यशो देहि सौभाग्यं देहि मे शुभे॥

नवतन्तुसमायुक्तं नवग्रन्थिसमन्वितम्। बध्नीयां दक्षिणे हस्ते दोरकं हरिवल्लभे॥ इति दोरकं बध्नीयात।

### ॥ अर्घ्यम्॥

ममोपात्तसमस्तदुरितक्षयद्वारा श्री-वरलक्ष्मी-प्रीत्यर्थं वरलक्ष्मीपूजान्ते क्षीरार्घ्यप्रदानं करिष्ये॥

> गोक्षीरेण युतं देवि गन्धपुष्पसमन्वितम्। अर्घ्यं गृहाण वरदे वरलक्ष्मि नमोऽस्तु ते॥

श्री-वरलक्ष्म्यै नमः इदमर्घ्यम् इदमर्घ्यम्।

#### ॥ उपायन-दानम्॥

इन्दिरा प्रतिगृह्णाति इन्दिरा वै ददाति च। इन्दिरा तारयेद् द्वाभ्यां इन्दिराये नमो नमः॥

हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः। अनन्तपुण्यफलदम् अतः शान्तिं प्रयच्छ मे॥

श्रीवरमहालक्ष्मीपूजाकाले अस्मिन् मया क्रियमाण श्रीवरमहालक्ष्मीपूजायां यद्देयमुपायनदानं तत्प्रत्यायाम्नार्थं हिरण्यं श्रीवरमहालक्ष्मीप्रीतिं कामयमानः

मनसोदिष्टाय ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे नमः न मम। अनया पूजया श्रीवरमहालक्ष्मीः प्रीयताम्। इति उपायनं दत्त्वा सुवासिनीश्च सम्पूजयेत्॥ इति वरलक्ष्मीपूजाविधिः॥

### ॥ प्रार्थना ॥

दामोदिर नमस्तेऽस्तु नमस्रैलोक्यमातृके। नमस्तेऽस्तु महालक्ष्मि त्राहि मां परमेश्वरि॥

सर्वदा देहि मे द्रव्यं दानायापि च भुक्तये। धनधान्यं धरां हर्षं कीर्तिम् आयुश्च देहि मे॥

यन्मया वाञ्छितं देवि तत्सर्वं सफलं कुरु। न बाधन्तां कुकर्माणि सङ्कटं मे निवारय॥

#### ॥ कनकधारास्तवम्॥

अङ्गं हरेः पुलकभूषणमाश्रयन्ती भृङ्गाङ्गनेव मुकुलाभरणं तमालम्। अङ्गीकृताखिलविभूतिरपाङ्गलीला माङ्गल्यदास्तु मम मङ्गलदेवतायाः॥१॥

मुग्धा मुहुर्विदधती वदने मुरारेः प्रेमत्रपाप्रणिहितानि गतागतानि। माला दशोर्मधुकरीव महोत्पले या सा मे श्रियं दिशतु सागरसम्भवायाः॥२॥

आमीलिताक्षमिधगम्य मुदा मुकुन्दम् आनन्दकन्दमिनमेषमनङ्गतन्त्रम् । आकेकरस्थितकनीनिकपक्ष्मनेत्रम् भृत्यै भवेन्मम भुजङ्गशयाङ्गनायाः॥३॥

बाह्वन्तरे मधुजितः श्रितकौस्तुभे या हारावलीव हरिनीलमयी विभाति। कामप्रदा भगवतोऽपि कटाक्षमाला कल्याणमावहतु मे कमलालयायाः॥४॥ कालाम्बुदालिलिलितोरिस कैटभारेः धाराधरे स्फुरित या तिडदङ्गनेव। मातुः समस्तजगतां महनीयमूर्तिः भद्राणि मे दिशतु भार्गवनन्दनायाः॥५॥

प्राप्तं पदं प्रथमतः खलु यत्प्रभावात् माङ्गल्यभाजि मधुमाथिनि मन्मथेन। मय्यापतेत्तदिह मन्थरमीक्षणार्धम् मन्दालसं च मकरालयकन्यकायाः॥६॥

विश्वामरेन्द्रपदवीभ्रमदानदक्षम् आनन्दहेतुरिधकं मुरविद्विषोऽपि। ईषन्निषीदतु मयि क्षणमीक्षणार्द्धम् इन्दीवरोदरसहोदरमिन्दिरायाः ॥७॥

इष्टा विशिष्टमतयोऽपि यया दयाई-दृष्ट्या त्रिविष्टपपदं सुलभं लभन्ते। दृष्टिः प्रहृष्टकमलोदरदीप्तिरिष्टाम् पृष्टिं कृषीष्ट मम पुष्करविष्टरायाः॥८॥

दद्याद्दयानुपवनो द्रविणाम्बुधाराम् अस्मिन्निञ्चनित्रङ्गशिशौ विषण्णे। दुष्कर्मघर्ममपनीय चिराय दूरम् नारायणप्रणयिनीनयनाम्बुवाहः॥९॥

गीर्देवतेति गरुडध्वजसुन्दरीति शाकम्भरीति शशिशेखरवल्लभेति। सृष्टिस्थितिप्रलयकेलिषु संस्थितायै तस्यै नमस्त्रिभुवनैकगुरोस्तरुण्यै॥१०॥

श्रुत्यै नमोऽस्तु शुभकर्मफलप्रसूत्यै रत्यै नमोऽस्तु रमणीयगुणार्णवायै। शक्त्यै नमोऽस्तु शतपत्रनिकेतनायै पुष्ट्यै नमोऽस्तु पुरुषोत्तमवल्लभायै॥११॥ नमोऽस्तु नालीकनिभाननायै नमोऽस्तु दुग्धोदधिजन्मभूम्यै। नमोऽस्तु सोमामृतसोदरायै नमोऽस्तु नारायणवल्लभायै॥१२॥

नमोऽस्तु हेमाम्बुजपीठिकायै नमोऽस्तु भूमण्डलनायिकायै। नमोऽस्तु देवादिदयापरायै नमोऽस्तु शाङ्गायुधवल्लभायै॥१३॥

नमोऽस्तु देव्यै भृगुनन्दनायै नमोऽस्तु विष्णोरुरसि स्थितायै। नमोऽस्तु लक्ष्म्यै कमलालयायै नमोऽस्तु दामोदरवल्लभायै॥१४॥

नमोऽस्तु कान्त्यै कमलेक्षणायै नमोऽस्तु भूत्यै भुवनप्रसूत्यै। नमोऽस्तु देवादिभिरर्चितायै नमोऽस्तु नन्दात्मजवल्लभायै॥१५॥

सम्पत्कराणि सकलेन्द्रियनन्दनानि साम्राज्यदानविभवानि सरोरुहाक्षि। त्वद्वन्दनानि दुरिताहरणोद्यतानि मामेव मातरनिशं कलयन्तु मान्ये॥१६॥

यत्कटाक्षसमुपासनाविधिः सेवकस्य सकलार्थसम्पदः। सन्तनोति वचनाङ्गमानसैः त्वां मुरारिहृदयेश्वरीं भजे॥१७॥

सरसिजनिलये सरोजहस्ते धवलतमांशुकगन्धमाल्यशोभे । भगवति हरिवल्लभे मनोज्ञे त्रिभुवनभूतिकरि प्रसीद मह्यम्॥१८॥ दिग्धस्तिभिः कनककुम्भमुखावसृष्ट-स्वर्वाहिनी विमलचारुजलाप्नुताङ्गीम्। प्रातर्नमामि जगतां जननीमशेष-लोकाधिनाथगृहिणीम् अमृताब्धिपुत्रीम्॥१९॥

> कमले कमलाक्षवल्लभे त्वं करुणापूरतरङ्गितैरपाङ्गेः । अवलोकय मामिकश्चनानां प्रथमं पात्रमकृत्रिमं दयायाः॥२०॥

स्तुवन्ति ये स्तुतिभिरमीभिरन्वहम् त्रयीमयीं त्रिभुवनमातरं रमाम्। गुणाधिका गुरुतरभाग्यभागिनो भवन्ति ते भुवि बुधभाविताशयाः॥२१॥

देवि प्रसीद जगदीश्वरि लोकमातः कल्याणगात्रि कमलेक्षणजीवनाथे। दारिद्यभीतिहृदयं शरणागतं माम् आलोकय प्रतिदिनं सदयैरपाङ्गेः॥

॥इति श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यस्य श्री-गोविन्द-भगवत्पूज्य-पाद-शिष्यस्य श्रीमच्छङ्करभगवतः कृतौ श्री-कनकधारास्तवं सम्पूर्णम्॥

### ॥ महालक्ष्म्यष्टकम् ॥

#### इन्द्र उवाच

नमस्तेऽस्तु महामाये श्रीपीठे सुरपूजिते। शङ्खचऋगदाहस्ते महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते॥१॥

नमस्ते गरुडारूढे कोलासुरभयङ्करि। सर्वपापहरे देवि महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते॥२॥ सर्वज्ञे सर्ववरदे सर्वदृष्टभयङ्करि। सर्वदुःखहरे देवि महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते॥३॥

सिद्धिबुद्धिप्रदे देवि भुक्तिमुक्तिप्रदायिनि। मन्त्रमूर्ते सदा देवि महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते॥४॥

आद्यन्तरहिते देवि आद्यशक्तिमहेश्वरि। योगजे योगसम्भूते महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते॥५॥

स्थूलसूक्ष्ममहारौद्रे महाशक्ति महोदरे। महापापहरे देवि महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते॥६॥

पद्मासनस्थिते देवि परब्रह्मस्वरूपिणि। परमेशि जगन्मातर्महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते॥७॥

श्वेताम्बरधरे देवि नानालङ्कारभूषिते। जगत्स्थिते जगन्मातर्महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते॥८॥

महालक्ष्म्यष्टकं स्तोत्रं यः पठेद्धक्तिमान्नरः। सर्वसिद्धिमवाप्नोति राज्यं प्राप्नोति सर्वदा॥

एककाले पठेन्नित्यं महापापविनाशनम्। द्विकालं यः पठेन्नित्यं धनधान्यसमन्वितः॥

त्रिकालं यः पठेन्नित्यं महाशत्रुविनाशनम्। महालक्ष्मीर्भवेन्नित्यं प्रसन्ना वरदा शुभा॥

॥इति श्रीमद्वद्मपुराणे श्री-महालक्ष्म्यष्टकं सम्पूर्णम्॥

#### ॥ अपराध-क्षमापनम्॥

न्यूनं वाऽप्यगुणं वाऽपि यन्मया मोहितं कृतम्। सर्वं तदस्तु सम्पूर्णं त्वत्प्रसादान्महेश्वरि॥ लक्ष्मि त्वत्कृपया नित्यं कृता पूजा तवाऽऽज्ञया। स्थिरा भव गृहे ह्यस्मिन् मम सन्तानकर्मणि॥ कायेन वाचा मनसेन्द्रियैर्वा बुद्ध्याऽऽत्मना वा प्रकृतेः स्वभावात्। करोमि यद्यत् सकलं परस्मे नारायणायेति समर्पयामि॥

सर्वं तत्सद्बह्मार्पणमस्तु।

#### ॥ कथा॥

#### सूत उवाच

कैलासशिखरे रम्ये सर्वदेवनिषेविते। गौर्या सह महादेवो दीव्यन्नक्षेवनोदतः॥१॥

जितोऽसि त्वं मया चाऽऽह पार्वती परमेश्वरम्। सोऽपि त्वं च जितेत्याह सुविवादस्तयोरभूत्॥२॥

चित्रनेमिस्तदा पृष्टो मृषावादमभाषत। तदा कोपसमाविष्टा गौरी शापं ददौ ततः॥३॥

कुष्ठी भव मृषावादिन् चित्रनेमिर्हतप्रभः। नानृतेन समं पापं क्वाऽपि दृष्टं श्रुतं मया॥४॥

चित्रनेमिर्महाप्राज्ञः सत्यं वदति नो मृषा। प्रसादः क्रियतां देवि देवीमाह वृषध्वजः॥५॥

प्रसादसुमुखी तस्मै विशापं च जगाद सा। यदा सरोवरे रम्ये करिष्यन्ति शुचिव्रतम्॥६॥

ततः स्वर्गणिकाः सर्वं यक्ष्यन्ति त्वां समाहिताः। तदा तव विशापः स्यादित्युक्तः स पपात ह॥७॥

ततः कतिपयाहोभिश्चित्रनेमिः सरोवरे। कुष्ठी भूत्वा वसंस्तत्र ददर्श स्वर्विलासिनीः॥८॥ देवतापूजनासक्ताः पप्रच्छ प्रणिपत्यताः। किमेतद्भो महाभागाः किं पूजा किं च वाञ्छितम्॥९॥

किं मया च ह्यनुष्ठेयमिहामुत्र फलप्रदम्। इति व्रतं चित्रनेमिः पप्रच्छ स्वर्विलासिनीः॥१०॥

येनाहे गिरिजाशापान्मोक्ष्यामि चिरदुःखतः। ता ऊचुः क्रियतामद्य त्वया चैतदनुत्तमम्॥११॥

वरलक्ष्मीव्रतं दिव्यं सर्वकामसमृद्धिदम्। यदा रवौ कुलीरस्थे मासे च श्रावणे तथा॥१२॥

गङ्गायमुनयोर्योगे तुङ्गभद्रासरित्तटे। तस्मिन्वै श्रावणे मासि शुक्लपक्षे भृगोर्दिने॥१३॥

प्रारब्धव्यं व्रतं तत्र महालक्ष्म्या यतात्मभिः। सुवर्णप्रतिमां कुर्याचतुर्भुजसमन्विताम्॥१४॥

पूर्व गृहमलङ्कृत्य तोरणै रङ्गवल्लिभिः। गृहस्य पूर्वदिग्भागे ईशान्यां च विशेषतः॥१५॥

प्रस्थमितांस्तण्डुलांश्च भूमौ निक्षिप्य पद्मके। संस्थाप्य कलशं तत्र तीर्थतोयैः प्रपूरयेत्॥१६॥

फलानि च विनिक्षिप्य सुवर्णं प्रक्षिपेत्ततः। पल्लवांश्च विनिक्षिप्य वस्त्रेणाच्छाद्य यत्नतः॥१७॥

प्रतिमां स्थापयेत्तत्र पूजयेच यथाविधि। अग्र्युत्तारणपूर्वं तु शुद्धस्नानं यथाऋमम्॥१८॥

पश्चामृतेन स्नपनं कारयेन्मन्नतः सुधीः। अभिषेकं ततः कृत्वा देवीसूक्तेन वै ततः॥१९॥

अष्टगन्धेः समभ्यर्च्य पल्लवैश्च समर्चयेत्। अश्वत्थवटबिल्वाम्रमालतीदाडिमास्तथा॥२०॥ एतेषां पत्राण्यादाय एकविंशतिसङ्ख्यया। नामाविधेस्तथा पुष्पैर्मालत्यादिसमुद्भवैः॥२१॥

धूपदीपैर्महालक्ष्मीं पूजयेत् सर्वकामदाम्। पायसैर्भक्ष्यभोज्येश्च नानाव्यञ्जनसंयुतैः॥२२॥

एकविंशतिसङ्ख्याकैरपूपैः पूजयेच्छिवाम्। निवेद्य सर्वदेव्ये तु वरं स वृणुयात्ततः॥२३॥

नृत्यगीतादिसहितो देवीं सम्प्रार्थयेच्छ्रियम्। रमां सरस्वतीं ध्यायेच्छ्रचीं च प्रियवादिनीम्॥२४॥

एवं व्रतविधिं तस्मै कथियत्वा विधानतः। पञ्चवायनकान् दत्त्वा कथां शृण्वीत यत्नतः॥२५॥

तथा मौनं गृहीत्वा तु पश्चार्तिक्येन पूजयेत्। व्रतं च कुर्वता गृह्य एकं पूगफलं तथा॥२६॥

पर्णेकं चूर्णरहितं चर्वणीयं प्रयत्नतः। चैलखण्डे दढं बद्धा प्रातः पश्येद्विचक्षणः॥२७॥

आरक्तं यदि जायेत कुर्याद्वतमनुतमम्। नोचेन्न तद्वतं कार्यं सर्वथा भूतिमिच्छता॥२८॥

अनेनैव विधानेन व्रतं गृह्णीत यत्नतः। अप्सरोभिः कृतं सम्यग्वतं सर्वसमृद्धिदम्॥२९॥

पूजावसानपर्यन्तं चित्रनेमिरलोकयत्। धूपधूमं समाघ्राय घृतदीपप्रभावतः॥३०॥

गतकुष्ठः स्वर्णतेजाः शुचिस्तद्गतमानसः। अहं यत्नात् करिष्यामि व्रतं सर्वसमृद्धिदम्॥३१॥

इत्युक्ता सर्वदेवीस्तु कारयामास तत्क्षणात्। सुवर्णनिर्मितां देवीं वस्त्रालङ्कारसंयुताम्॥३२॥ पूर्वोक्तेन विधानेन पूजां कृत्वा प्रयत्नतः। ततो वैणवपात्राणि फलान्नेश्च सदक्षिणैः॥३३॥

एकविंशतिपक्वान्नैः पूरितानि विधाय च। पञ्चवायनकान्येवं कृत्वादात्तु यथाऋमम्॥३४॥

विप्राय चाथ यतये देव्ये तु ब्रह्मचारिणे। सुवासिन्ये ततस्त्वेकमर्पितं चित्रनेमिना॥३५॥

एवं सम्यक् ऋमेणैतद्दत्त्वा वायनपश्चकम्। ततो गृहं गतः सोऽथ देवीं नत्वा यथाऋमम्॥३६॥

नागवल्लीदलं त्वेकं ऋमुकं चूर्णवजितम्। भक्षययित्वा तु चैलान्ते बद्धा प्रातर्निरैक्षत॥३७॥

आरक्ते च ततो जाते व्रतं चक्रे स भक्तितः। अद्याहं गतपापोऽस्मि देवीदर्शनयोगतः॥३८॥

एतत्सम्यग्वतं चीर्णं भक्तिभावेन यन्मया। चित्रनेमिव्रतं कृत्वा कैलासं शङ्करालयम्॥३९॥

गत्वा प्रणम्य देवेशं देवीमादरपूर्वकम्। पार्वती च तदा प्राह चित्रनेमे स्वपुत्रवत्॥४०॥

पालनीयो मया त्वं च सत्यमित्यवधार्यताम्। चित्रनेमिस्तदा प्राह पार्वतीं हरवल्लभे॥४१॥

तव पादाम्बुजं दृष्टं वरलक्ष्मीप्रसादतः। महादेवस्ततः प्राहं चित्रनेमिं शुचिव्रतम्॥४२॥

अद्यप्रभृति कैलासे भुङ्क्ष भोगान् यथेप्सितान्। पश्चाद्गन्तासि वैकुण्ठं वरस्यास्य प्रसादतः॥४३॥

पार्वत्यापि कृतं पूर्वं पुत्रलाभार्थमेव च। लब्धश्च षण्मुखो देव्या व्रतराजप्रसादतः॥४४॥ नन्दश्च विक्रमादित्यो राज्यं प्राप्तौ महाव्रतौ। नन्दश्च कान्तया हीनः कान्तां लेभे सुलक्षणाम्॥४५॥

तया च तद् व्रतं कृत्स्नं कृतं वै पुत्रहेतवे। पुत्रं प्रसुषुवे सा च त्रैलोक्यभरणक्षमम्॥४६॥

इह भुक्का तु विपुलान्भोगान्वै सुमनोहरान्। तदाप्रभृति लोकेऽस्मिन् वरलक्ष्मीव्रतं शुभम्॥४७॥

व्रतं करोति या नारी नरो वाऽपि शुचिव्रतः। भुक्ता भोगांश्च विपुलानन्ते शिवपुरं व्रजेत्॥४८॥

इत्याख्यातं मया विप्रा वरलक्ष्मीव्रतं शुभम्। य इदं शृणुयान्नित्यं श्रावयेद्वा समाहितः॥४९॥

धनं धान्यमवाप्नोति वरलक्ष्मीप्रसादतः॥५०॥

॥इति श्रीभविष्योत्तरपुराणे श्रावणशुऋवारे वरलक्ष्मीव्रतं सम्पूर्णम्॥

# ॥ श्रीकृष्णजन्माष्टमी-पूजा॥

(मूलम्—श्री-व्रतराजः)

व्रतपूर्वदिने दन्तधावनपूर्वकं कृतैकभक्तो व्रतदिने कृतनित्यिक्रियो देवताः प्रार्थयेत्—

> सूर्यः सोमो यमः कालसन्थ्या भूतान्यहःक्षपा। पवनो दिक्पतिर्भूमिराकाशं खेचरा नराः। ब्रह्मशासनमास्थाय कल्पन्तामिह सन्निधिम्॥

इत्युक्ता सफलं पुष्पाक्षतजलपूर्णं ताम्रपात्रमादाय मासपक्षाद्युिहरख्य अमुकफलकामं पापक्षयकामो वा कृष्णप्रीतये कृष्णजन्माष्टमीव्रतं करिष्ये इति सङ्कल्प्य।

> वासुदेवं समुद्दिश्य सर्वपापप्रशान्तये। उपवासं करिष्यामि कृष्णाष्टम्यां नभस्यहम्॥

अद्य कृष्णाष्टमी देवी नभश्चन्द्रं सरोहिणीम्। अर्चियत्वोपवासेन भोक्ष्येऽहमपरेऽहिन॥

एनसो मोक्षकामोऽस्मि यगोविन्दवियोनिजम्। तन्मे मुश्चतु मां त्राहि पतितं शोकसागरे॥

आजन्ममरणं यावद् यन्मया दुष्कृतं कृतम्। तत्प्रणाशय गोविन्द प्रसीद पुरुषोत्तम॥

इत्युक्ता पात्रस्थं जलं निक्षिपेत्।

ततः कदली-स्तम्भ-वासोभि-राम्र-पश्चव-युत-सजल-पूर्ण-कलशेर्दीपैः पुष्प-मालाभिर्युतमगुरु-धूपित-मग्नि-खङ्ग-कृष्णच्छाग-रक्षामणि-द्वार-न्यस्त-मुसलादि-युतं मङ्गलोपेतं षष्ठया देव्याधिष्ठितं देवक्याः सूतिकागृहं विधाय तस्य समन्ताद्भित्तिषु कुसुमाञ्जलीन् देवगन्धर्वादीन् खङ्ग-चर्मधर-वसुदेव-देवकी-नन्द-यशोदा-गर्ग-गोपी-गोपान्-कंस-नियुक्तान् गो-धेनु-कुञ्जरान्-यमुनां तन्मध्ये कालियमन्यच तत्कालीनं गोकुलचरितं यथासम्भवं लिखित्वा सूतिकागृहमध्ये प्रछदपटावृतं मञ्चकं स्थापियत्वा मध्याह्रे नद्यादौ तिलैः स्नात्वा अर्धरात्रे श्रीकृष्णं सपरिवारं सुपूजयेत्॥

## ॥ पूर्वाङ्गविघ्नेश्वरपूजा॥

(आचम्य)

शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्। प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविद्रोपशान्तये॥

प्राणान् आयम्य। ॐ भूः + भूर्भुवः सुव्रोम्। (अप उपस्पृश्य, पुष्पाक्षतान् गृहीत्वा) ममोपात्तसमस्त दुरितक्षयद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं करिष्यमाणस्य कर्मणः निर्विघ्नेन परिसमाप्त्यर्थम् आदौ विघ्नेश्वरपूजां करिष्ये। ॐ गृणानां त्वा गृणपंति हवामहे कविं केवीनाम्प्रमश्रंवस्तमम्। ज्येष्ठराजं ब्रह्मणां ब्रह्मणस्पत् आ नः शृण्वन्नृतिभिः सीद् सादनम्॥ अस्मिन् हरिद्राबिम्बे महागणपतिं ध्यायामि, आवाहयामि।

ॐ महागणपतये नमः आसनं समर्पयामि।
पादयोः पाद्यं समर्पयामि। हस्तयोरध्यं समर्पयामि।
आचमनीयं समर्पयामि।
ॐ भूर्भुवस्सुवः। शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।
स्नानानन्तरमाचमनीयं समर्पयामि।
वस्नार्थमक्षतान् समर्पयामि।
यज्ञोपवीताभरणार्थे अक्षतान् समर्पयामि।
दिव्यपरिमलगन्थान् धारयामि।
गन्थस्योपरि हरिद्राकुङ्कुमं समर्पयामि। अक्षतान् समर्पयामि।
पुष्पमालिकां समर्पयामि। पुष्पैः पुजयामि।

## ॥ अर्चना ॥

१. ॐ सुमुखाय नमः १०. ॐ गणाध्यक्षाय नमः २. ॐ एकदन्ताय नमः ११. ॐ फालचन्द्राय नमः ३. ॐ कपिलाय नमः १२. ॐ गजाननाय नमः ४. ॐ गजकर्णकाय नमः १३. ॐ वऋतुण्डाय नमः ५. ॐ लम्बोदराय नमः १४. ॐ शूर्पकर्णाय नमः ६. ॐ विकटाय नमः १५. ॐ हेरम्बाय नमः ७. ॐ विघ्नराजाय नमः १६. ॐ स्कन्दपूर्वजाय नमः ८. ॐ विनायकाय नमः १७. ॐ सिद्धिविनायकाय नमः ९. ॐ धूमकेतवे नमः १८. ॐ विघ्नेश्वराय नमः

नानाविधपरिमलपत्रपुष्पाणि समर्पयामि॥ धूपमाघ्रापयामि। अलङ्कारदीपं सन्दर्शयामि।
नैवेद्यम्।
ताम्बूलं समर्पयामि।
कर्पूरनीराजनं समर्पयामि।
कर्पूरनीराजनानन्तरमाचमनीयं समर्पयामि।
वऋतुण्डमहाकाय कोटिसूर्यसमप्रभ।
अविघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा॥
प्रार्थनाः समर्पयामि।
अनन्तकोटिप्रदक्षिणनमस्कारान् समर्पयामि।
छत्रचामरादिसमस्तोपचारान् समर्पयामि।

## ॥ प्रधान-पूजा — श्रीकृष्ण-पूजा॥

शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्। प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविद्योपशान्तये॥

प्राणान् आयम्य। ॐ भूः + भूर्भुवः सुवरोम्।

#### ॥ सङ्कल्पः॥

ममोपात्तसमस्तद्रितक्षयद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं शुभे शोभने मुहूर्ते अद्यब्रह्मणः द्वितीयपरार्द्धे श्वेतवराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे किलयुगे प्रथमे पादे जम्बूद्वीपे भारतवर्षे भरतखण्डे मेरोः दक्षिणेपार्श्वे शकाब्दे अस्मिन् वर्तमाने व्यावहारिके प्रभवादि षष्टिसंवत्सराणां मध्ये () नाम संवत्सरे दक्षिणायने वर्ष-ऋतौ (कर्कटक/सिंह)-श्रावण-मासे कृष्णपक्षे अष्टम्यां शुभितिथौ (इन्दु/भौम/बुध/गुरु/भृगु /स्थिर/भानु) वासरयुक्तायाम् (कृत्तिका/रोहिणी/मृगशीर्ष) नक्षत्रयुक्तायां ()-योग ()-करण-युक्तायां च एवं गुण-विशेषण-विशिष्टायाम् अस्याम् नवम्यां शुभितथौ अस्माकं सहकुटुम्बानां क्षेमस्थैर्य-धैर्य-वीर्य-विजय आयुरारोग्य ऐश्वर्याभिवृद्धर्थम् धर्मार्थकाममोक्ष-

चतुर्विधफलपुरुषार्थसिद्धार्थं पुत्रपौत्राभिवृद्धार्थम् इष्टकाम्यार्थसिद्धार्थम् मम इहजन्मनि पूर्वजन्मनि जन्मान्तरे च सम्पादितानां ज्ञानाज्ञानकृतमहा-पातकचतुष्टय व्यतिरिक्तानां रहस्यकृतानां प्रकाशकृतानां सर्वेषां पापानां सद्य अपनोदनद्वारा सकल पापक्षयार्थं श्रावण-कृष्ण-जन्माष्मी-पुण्यकाले देवकी-सहित-श्रीकृष्ण-प्रीत्यर्थं देवकी-सहित-श्रीकृष्ण-प्रसाद-सिध्यर्थं कल्पोक्त-प्रकारेण देवकी-सहित-श्रीकृष्ण-पूजां करिष्ये।

तदङ्गं कलशपूजां च करिष्ये।

श्रीविघ्नेश्वराय नमः यथास्थानं प्रतिष्ठापयामि। (गणपति प्रसादं शिरसा गृहीत्वा)

#### ॥ आसन-पूजा॥

पृथिव्या मेरुपृष्ठ ऋषिः। सुतलं छन्दः। कूर्मो देवता॥

पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता। त्वं च धारय मां देवि पवित्रं चाऽऽसनं कुरु॥

#### ॥ घण्टापूजा॥

आगमार्थं तु देवानां गमनार्थं तु रक्षसाम्। घण्टारवं करोम्यादौ देवताऽऽह्वानकारणम्॥

#### ॥ कलशपूजा॥

ॐ कलशाय नमः दिव्यगन्धान् धारयामि। ॐ गङ्गायै नमः। ॐ यमुनायै नमः। ॐ गोदावर्यै नमः। ॐ सरस्वत्यै नमः। ॐ नर्मदायै नमः। ॐ सिन्धवे नमः। ॐ कावेर्यै नमः। ॐ सप्तकोटिमहातीर्थान्यावाहयामि।

(अथ कलशं स्पृष्ट्वा जपं कुर्यात्) आपो वा इदः सर्वं विश्वां भूतान्यापः प्राणा वा आपः पृशव् आपोऽन्नमापोऽमृंतमापंः सम्राडापों विराडापंः स्वराडापृश्छन्दाः स्यापो ज्योतीः ष्ट्रणपो यज्र्ष्ट्रष्यापंः सत्यमापः सर्वा देवता आपो भूर्भुवः सुवराप ओम्॥

> कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः। मूले तत्र स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः॥

कुक्षौ तु सागराः सर्वे सप्तद्वीपा वसुन्धरा। ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदोऽप्यथर्वणः। अङ्गेश्च सहिताः सर्वे कलशाम्बुसमाश्रिताः॥

गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति। नर्मदे सिन्धुकावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु॥

सर्वे समुद्राः सरितः तीर्थानि च ह्रदा नदाः। आयान्तु विष्णुपूजार्थं दुरितक्षयकारकाः॥ ॐ भूर्भुवः सुवो भूर्भुवः सुवो भूर्भुवः सुवंः।

(इति कलशजलेन सर्वोपकरणानि आत्मानं च प्रोक्ष्य।)

#### ॥ आत्मपूजा ॥

ॐ आत्मने नमः, दिव्यगन्धान् धारयामि।

१. ॐ आत्मने नमः ४. ॐ जीवात्मने नमः

२. ॐ अन्तरात्मने नमः ५. ॐ परमात्मने नमः

३. ॐ योगात्मने नमः ६. ॐ ज्ञानात्मने नमः

## समस्तोपचारान् समर्पयामि।

देहो देवालयः प्रोक्तो जीवो देवः सनातनः। त्यजेदज्ञाननिर्माल्यं सोऽहं भावेन पूजयेत्॥

## ॥ पीठपूजा ॥

१. ॐ आधारशक्त्ये नमः

२. ॐ मूलप्रकृत्यै नमः

३. ॐ आदिकूर्माय नमः

४. ॐ आदिवराहाय नमः

५. ॐ अनन्ताय नमः

६. ॐ पृथिव्यै नमः

७. ॐ रत्नमण्डपाय नमः

८. ॐ रत्नवेदिकायै नमः

९. ॐ स्वर्णस्तम्भाय नमः

१०. ॐ श्वेतच्छत्राय नमः

११. ॐ कल्पकवृक्षाय नमः

१२. ॐ क्षीरसमुद्राय नमः

१३. ॐ सितचामराभ्यां नमः

१४. ॐ योगपीठासनाय नमः

#### ॥गुरु ध्यानम्॥

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुर्गुरुर्देवो महेश्वरः। गुरुः साक्षात् परं ब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः॥

## ॥श्रीकृष्णजन्माष्टमी-षोडशोपचारपूजा॥

गायद्भिः किन्नराद्यैः सततपरिवृता वेणुवीणानिनादैः
भृङ्गारादर्श-कुन्तप्रवर-कृतकरैः किङ्करैः सेव्यमाना।
पर्यङ्के स्वास्तृते या मुदिततरमुखी पुत्रिणी सम्यगास्ते
सा देवी देवमाता जयति सुवदना देवकी दिव्यरूपा॥

इति देवकीं ध्यात्वा।

ध्यायामि बालकं सुप्तं मात्रङ्के स्तनपायिनम्। श्रीवत्स-वक्षसं शान्तं नीलोत्पल-दलच्छविम्॥ एवं देवक्या सहितं श्रीकृष्णं ध्यात्वा।

ॐ नमो देव्यै श्रियै नमः इति श्रियं ध्यात्वा, आवाह्य।

ॐ नमो वसुदेवाय नमः इति देवकीसहितं वसुदेवं ध्यात्वा, आवाह्य।

🕉 नमो नन्दाय नमः इति यशोदासहितं नन्दं ध्यात्वा, आवाह्य।

ॐ नमो बलदेवाय नमः इति श्रीकृष्णसिहतं बलदेवं ध्यात्वा, आवाह्य।
ॐ नमश्रण्डिकायै नमः इति चण्डिकां ध्यात्वा आवाह्य।
ततः श्रीकृष्णपूजां कुर्यात्। ध्यानम्—

कृष्णं चतुर्भुजं देवं शङ्खचऋगदाधरम्। पीताम्बरयुगोपतं लक्ष्मीयुक्तं विभूषितम्॥

लसत्कौस्तुभ-शोभाढ्यं मेघश्यामं सुलोचनम्। ध्यायामि पुण्डरीकाक्षं जगदानन्दकारकम्॥

#### श्रीकृष्णं ध्यायामि।

सहस्रंशीर्षा पुरुषः। सहस्राक्षः सहस्रंपात्। स भूमिं विश्वतो वृत्वा। अत्यंतिष्ठद्दशाङ्गुलम्॥

आगच्छ देवदेवेश जगद्योने रमापते। बिम्बे चास्मिन्नधिष्ठाने सन्निधेहि कृपां कुरु॥

## श्रीकृष्णमावाहयामि।

पुरुष एवेद श्सर्वम्। यद्भूतं यच् भव्यम्। उतामृतत्वस्येशांनः। यदन्नेनातिरोहंति॥

देवदेव जगन्नाथ गरुडासनसंस्थित। गृहाणासनकं दिव्यं जगद्धातर्नमोऽस्तु ते॥

## सपरिवाराय कृष्णाय नमः, आसनं समर्पयामि।

पुतावानस्य मिहुमा। अतो ज्यायाईश्च पूरुंषः। पादौंऽस्य विश्वां भूतानिं। त्रिपादंस्यामृतंं दिवि॥

नानातीर्थाहृतं शुद्धं निर्मलं पुष्पमिश्रितम्। पाद्यं गृहाण दैत्यारे विश्वरूप नमोऽस्तु ते॥

#### सपरिवाराय कृष्णाय नमः, पाद्यं समर्पयामि।

त्रिपादूर्ध्व उदैत्पुरुषः। पादौँ उस्येहा ऽऽभवात्पुर्नः। ततो विश्वङ्कां ऋामत्। साशनानशने अभि॥

गन्धपुष्पाक्षतोपेतं फलेन च समन्वितम्। अर्घ्यं गृहाण देवेश मया दत्तं हि भक्तितः॥ सपरिवाराय कृष्णाय नमः, अर्घ्यं समर्पयामि।

तस्माँद्विराडंजायत। विराजो अधि पूर्रुषः। स जातो अत्यरिच्यत। पृश्लाद्भूमिमथो पुरः॥

गङ्गादिसर्वतीर्थेभ्यो मयाऽऽनीतं सुशीतलम्। गृहाणाचमनं देव विश्वकाय नमोऽस्तु ते॥ सपरिवाराय कृष्णाय नमः, आचमनीयं समर्पयामि।

यत्पुरुषेण ह्विषां। देवा यज्ञमतंन्वत। वसन्तो अस्याऽऽसीदाज्यम्। ग्रीष्म इध्मः श्ररद्धविः॥

दिध क्षौद्रं घृतं शुद्धं किपलायाः सुगन्धि यत्। सुस्वादु मधुरं शौरे मधुपर्कं गृहाण भोः॥ सपरिवाराय कृष्णाय नमः, मधुपर्कं समर्पयामि।

पश्चामृतेन स्नपनं करिष्यामि सुरोत्तम। क्षीरोदधिनिवासाय लक्ष्मीकान्ताय ते नमः॥ सपरिवाराय कृष्णाय नमः, पश्चामृतस्नानं समर्पयामि।

सप्तास्यांऽऽसन् परिधयः। त्रिः सप्त समिधः कृताः। देवा यद्यज्ञं तन्वानाः। अबंध्रन् पुरुषं पृशुम्॥ मन्दाकिनी गौतमी च यमुना च सरस्वती। ताभ्यः स्नानार्थमानीतं गृहाण शिशिरं जलम्॥

सपरिवाराय कृष्णाय नमः, स्नानं समर्पयामि। स्नानानन्तरमाचमनीयं समर्पयामि।

> तं युज्ञं बहिषि प्रौक्षन्ं। पुरुषं जातमंग्रतः। तेनं देवा अयंजन्त। साध्या ऋषंयश्च ये॥

> शुद्ध-जाम्बूनद-प्रख्ये तटिद्धासुर-रोचिषी। मयोपपादिते तुभ्यं वाससी च गृहाण भोः॥

सपरिवाराय कृष्णाय नमः, वस्रं समर्पयामि।

तस्मौद्यज्ञाथ्सेर्वहुतः। सम्भृतं पृषदाज्यम्। पृशू इस्ता इश्चेके वायव्यान्। आरुण्यान्ग्राम्याश्च ये॥

दामोदर नमस्तेऽस्तु त्राहि मां भवसागरात्। ब्रह्मसूत्रं मया दत्तं गृहाण पुरुषोत्तम॥

सपरिवाराय कृष्णाय नमः, यज्ञोपवीतं समर्पयामि।

किरीटकुण्डलादीनि काश्चीवलययुग्मकम्। कौस्तुभं वनमालां च भूषणानि भजस्व भोः॥ सपरिवाराय कृष्णाय नमः, आभरणानि समर्पयामि।

तस्मौद्यज्ञाथ्संर्वहुतंः। ऋचः सामानि जज्ञिरे। छन्दार्श्स जज्ञिरे तस्मौत्। यजुस्तस्मादजायत॥

मलयाचलसम्भूतं गन्धसारं मनोहरम्। हृदयानन्दनं चारु प्रीत्यर्थे प्रतिगृह्यताम्॥ सपरिवाराय कृष्णाय नमः, चन्दनं समर्पयामि। तस्मादश्वां अजायन्त। ये के चोभयादेतः। गार्वो ह जिज्ञरे तस्मात्। तस्माज्ञाता अजावयः॥

मालतीचम्पकादीनि यूथिकावकुलानि च। तुलसीपत्रमिश्राणि गृहाण सुरसत्तम॥

# सपरिवाराय कृष्णाय नमः, पुष्पाणि समर्पयामि।

#### ॥ अङ्गपूजा ॥

- गोविन्दाय नमः —पादौ पूजयामि ξ.
- २. माधवाय नमः —जङ्घे पूजयामि
- ३. मधुसूदनाय नमः —कटिं पूजयामि ४. पद्मनाभाय नमः —नाभिं पूजयामि
- ५. हषीकेशाय नमः —हृदयं पूजयामि
- ६. सङ्कर्षणाय नमः —स्तनौ पूजयामि
- ७. वामनाय नमः —बाहू पूजयामि
- ८. दैत्यसूदनाय नमः —हस्तौ पूजयामि
- ९. हरिकेशाय नमः —कण्ठं पूजयामि
- १०. चारुमुखाय नमः —मुखं पूजयामि
- ११. त्रिविक्रमाय नमः —नासिकां पूजयामि
- १२. पुण्डरीकाक्षाय नमः-नेत्रे पूजयामि
- १३. नृसिंहाय नमः —श्रोत्रे पूजयामि
- १४. उपेन्द्राय नमः —ललाटं पूजयामि
- १५. हरये नमः —शिरः पूजयामि
- १६. श्रीकृष्णाय नमः —सर्वाणि अङ्गानि पूजयामि

## ॥ चतुर्विंशति नामपूजा॥

- १. ॐ केशवाय नमः
- २. ॐ नारायणाय नमः
- ३. ॐ माधवाय नमः
- ४. ॐ गोविन्दाय नमः
- ५. ॐ विष्णवे नमः
- ६. ॐ मधुसूदनाय नमः
- ७. ॐ त्रिविक्रमाय नमः
- ८. ॐ वामनाय नमः
- ९. ॐ श्रीधराय नमः
- १०. ॐ हृषीकेशाय नमः
- ११. ॐ पद्मनाभाय नमः
- १२. ॐ दामोदराय नमः

- १३. ॐ सङ्कर्षणाय नमः
- १४. ॐ वासुदेवाय नमः
- १५. ॐ प्रद्युम्नाय नमः
- १६. ॐ अनिरुद्धाय नमः
- १७. ॐ पुरुषोत्तमाय नमः
- १८. ॐ अधोक्षजाय नमः
- १९. ॐ नृसिंहाय नमः
- २०. ॐ अच्युताय नमः
- २१. ॐ जनार्दनाय नमः
- २२. ॐ उपेन्द्राय नमः
- २३. ॐ हरये नमः
- २४. ॐ श्रीकृष्णाय नमः

## ॥ कृष्णाष्टोत्तरशतनामाविलः॥

१०

श्रीकृष्णाय नमः

कमलानाथाय नमः

वासुदेवाय नमः

सनातनाय नमः

वस्देवात्मजाय नमः

पुण्याय नमः

लीलामानुषविग्रहाय नमः

श्रीवत्सकौस्तुभधराय नमः

यशोदावत्सलाय नमः

हरये नमः

चतुर्भुजात्तचक्रासि-

गदाशङ्खाम्बुजायुधाय नमः

देवकीनन्दनाय नमः

श्रीशाय नमः

नन्दगोपप्रियात्मजाय नमः

यमुनावेगसंहारिणे नमः

बलभद्रप्रियानुजाय नमः

पूतनाजीवितहराय नमः

शकटासुरभञ्जनाय नमः नन्दव्रजजनानन्दिने नमः

सिचदानन्दविग्रहाय नमः

नवनीतविलिप्ताङ्गाय नमः

नवनीतनटाय नमः

अनघाय नमः

२०

| 2, 1101(1(\(\)\)         |     |                            |    |
|--------------------------|-----|----------------------------|----|
| नवनीतनवाहाराय नमः        |     | अजाय नमः                   |    |
| मुचुकुन्दप्रसादकाय नमः   |     | निरञ्जनाय नमः              |    |
| षोडशस्त्रीसहस्रेशाय नमः  |     | कामजनकाय नमः               |    |
| त्रिभङ्गीमधुरांकृतये नमः |     | कञ्जलोचनाय नमः             |    |
| शुकवागमृताब्धीन्दवे नमः  |     | मधुघ्ने नमः                |    |
| गोविन्दाय नमः            |     | मथुरानाथाय नमः             |    |
| योगिनां पतये नमः         | 3 o | द्वारकानायकाय नमः          |    |
| वत्सवाटचराय नमः          |     | बलिने नमः                  |    |
| अनन्ताय नमः              |     | बृन्दावनान्तसश्चारिणे नमः  |    |
| धेनुकासुरमर्दनाय नमः     |     | तुलसीदामभूषणाय नमः         | ६० |
| तृणीकृततृणावर्ताय नमः    |     | स्यमन्तकमणेर्हर्त्रे नमः   |    |
| यमलार्जुनभञ्जनाय नमः     |     | नरनारायणात्मकाय नमः        |    |
| उत्तालतालभेत्रे नमः      |     | कुङ्जाकृष्णाम्बरधराय नमः   |    |
| तमालश्यामलाकृतये नमः     |     | मायिने नमः                 |    |
| गोपगोपीश्वराय नमः        |     | परमपूरुषाय नमः             |    |
| योगिने नमः               |     | मुष्टिकासुरचाणूरमल्लयुद्ध- |    |
| कोटिसूर्यसमप्रभाय नमः    | ४०  | विशारदाय नमः               |    |
| इलापतये नमः              |     | संसारवैरिणे नमः            |    |
| परस्मै ज्योतिषे नमः      |     | कंसारये नमः                |    |
| यादवेन्द्राय नमः         |     | मुरारये नमः                |    |
| यदूद्वहाय नमः            |     | नरकान्तकाय नमः             | 90 |
| वनमालिने नमः             |     | अनादिब्रह्मचारिणे नमः      |    |
| पीतवाससे नमः             |     | कृष्णाव्यसनकर्षकाय नमः     |    |
| पारिजातापहारकाय नमः      |     | शिशुपालशिरश्छेत्रे नमः     |    |
| गोवर्धनाचलोद्धर्त्रे नमः |     | दुर्योधनकुलान्तकाय नमः     |    |
| गोपालाय नमः              |     | विदुराऋरवरदाय नमः          |    |
| सर्वपालकाय नमः           | ५०  | विश्वरूपप्रदर्शकाय नमः     |    |
|                          |     |                            |    |
|                          |     |                            |    |

सत्यवाचे नमः
सत्यसङ्कल्पाय नमः
सत्यभामारताय नमः
जियने नमः ८०
सुभद्रापूर्वजाय नमः
विष्णवे नमः
भीष्ममुक्तिप्रदायकाय नमः
जगद्गुरवे नमः
जगद्गुरवे नमः
जगन्नाथाय नमः
वेणुनादविशारदाय नमः
वृषभासुरविध्वंसिने नमः
बाणासुरकरान्तकाय नमः
युधिष्ठिरप्रतिष्ठात्रे नमः

बर्हिबर्हावतंसकाय नमः पार्थसारथये नमः अव्यक्ताय नमः गीतामृतमहोदधये नमः

कालीयफणिमाणिक्यरञ्जितश्री-पदाम्बुजाय नमः दामोदराय नमः यज्ञभोक्रे नमः दानवेन्द्रविनाशकाय नमः नारायणाय नमः परब्रह्मणे नमः पन्नगाशनवाहनाय नमः १०० जलक्रीडासमासक्तगोपी-वस्रापहारकाय नमः पुण्यश्लोकाय नमः तीर्थपादाय नमः वेदवेद्याय नमः दयानिधये नमः सर्वतीर्थात्मकाय नमः सर्वग्रहरूपिणे नमः परात्पराय नमः

॥इति श्री ब्रह्माण्डमहापुराणे वायुप्रोक्ते श्री कृष्णाष्टोत्तरशतनामावितः सम्पूर्णा॥

९०

## ॥ उत्तराङ्गपूजा ॥

यत्पुर्रुषं व्यंदधुः। कृतिधा व्यंकल्पयन्। मुखं किमस्य को बाहू। कावूरू पादांवुच्येते॥

वनस्पतिरसोद्भृतं कालागरुसमन्वितम्। धूपं गृहाण गोविन्द गुणसागर गोपते॥

#### सपरिवाराय कृष्णाय नमः, धूपमाघ्रापयामि।

ब्राह्मणौऽस्य मुखंमासीत्। बाहू राजन्यः कृतः। ऊरू तदस्य यद्वैश्यः। पुन्नाः शूद्रो अंजायत॥

यज्ञेश्वराय देवाय तथा यज्ञोद्भवाय च। यज्ञानां पतये नाथ गोविन्दाय नमो नमः॥

साज्यं त्रिवर्तिसंयुक्तं वह्निना योजितं मया। दीपं गृहाण देवेश त्रैलोक्यतिमिरापह॥ सपरिवाराय कृष्णाय नमः, दीपं दर्शयामि।

ॐ भूर्भुवः सुवंः। + ब्रह्मणे स्वाहाँ।

चन्द्रमा मनंसो जातः। चक्षोः सूर्यो अजायत। मुखादिन्द्रेश्चाग्निश्चे। प्राणाद्वायुरंजायत॥

विश्वेश्वराय विश्वाय तथा विश्वोद्भवाय च। विश्वस्य पतये तुभ्यं गोविन्दाय नमो नमः॥

शाल्योदनं पायसं च सिताघृतविमिश्रितम्। नानापक्वान्नसंयुक्तं नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम्॥

सपरिवाराय कृष्णाय नमः, सूपसिहतं शाल्योदनं शाकोपदंसं निवेदयामि।

मध्ये मध्ये अमृतपानीयं समर्पयामि । उत्तरापोशनं समर्पयामि। हस्तप्रक्षालनं समर्पयामि । पादप्रक्षालनं समर्पयामि । गण्डूषं समर्पयामि। हस्तप्रक्षालनं समर्पयामि । आचमनीयं समर्पयामि। सपरिवाराय कृष्णाय नमः,

शष्कुली-लवनचिपिट-गुडचिपिट-गुड-शुण्ठी-नवनीतादीनि, जम्बूफल-तित्रिणीफल-प्रभृतीनि नानाफलानि च निवेदयामि। नाभ्यां आसीद्न्तरिक्षम्। शीर्ष्णो द्यौः समंवर्तत। पुन्न्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्। तथा लोका अंकल्पयन्॥

> पूगीफलसमायुक्तं नागवल्ली-दलैर्युतम्। कर्पूरचूर्णसंयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्॥

## सपरिवाराय कृष्णाय नमः, कर्पूरताम्बूलं निवेदयामि।

वेदाहमेतं पुरुषं महान्तम्। आदित्यवंर्णं तमंस्सतु पारे। सर्वाणि रूपाणि विचित्य धीरंः। नामांनि कृत्वाऽभिवदन् यदास्ते॥

> नीराजयेत्ततो भक्त्या मङ्गलं समुदीरयन्। जय-मङ्गल-निर्घोषैर्देवदेवं समर्चयेत्॥

सपरिवाराय कृष्णाय नमः, कर्पूरनीराजनं दर्शयामि।

धाता पुरस्ताद्यमुंदाज्हारं। श्रुकः प्रविद्वान् प्रदिश्रश्चतंस्रः। तमेवं विद्वानमृतं इह भंवति। नान्यः पन्था अयंनाय विद्यते॥ योऽपां पुष्पं वेदं। पुष्पंवान् प्रजावान् पशुमान् भंवति। चन्द्रमा वा अपां पुष्पम्। पुष्पंवान् प्रजावान् पशुमान् भंवति। य एवं वेदं। योऽपामायतंनं वेदं। आयतंनवान् भवति।

> ओं तद्घृह्म। ओं तद्घृयुः। ओं तद्गृत्मा। ओं तथ्मत्यम्। ओं तथ्मर्वम्। ओं तत्पुरोर्नमः॥

अन्तश्चरितं भूतेषु गृहायां विश्वमूर्तिषु। त्वं यज्ञस्त्वं वषद्कारस्त्वमिन्द्रस्त्वः रुद्रस्त्वं विष्णुस्त्वं ब्रह्म त्वं प्रजापितः। त्वं तदाप् आपो ज्योती रसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः सुवरोम्॥

### सपरिवाराय कृष्णाय नमः, वेदोक्तमन्त्रपुष्पाञ्जलिं समर्पयामि।

दत्वा पुष्पाञ्जलिं चैव प्रदक्षिणपुरस्सरम्। प्रणमेद्दण्डवद्भूमौ भक्तिप्रह्वः पुनः पुनः॥

स्तुत्वा नानाविधैः स्तोत्रैः प्रार्थयेत जगत्पतिम्। नमस्तुभ्यं जगन्नाथ देवकीतनय प्रभो॥

वसुदेवात्मजानन्त यशोदानन्दवर्धन। गोविन्द गोकुलाधार गोपीकान्त नमोऽस्तु ते॥

## सपरिवाराय कृष्णाय नमः, प्रदक्षिणनमस्कारान् समर्पयामि।

ततो जातकर्मनालच्छेदषष्ठीपूजानामकरणकर्माणि सङ्क्षेपेण कार्याणि।

## ॥ अर्घ्यप्रदानम्॥

ततस्तु दापयेदर्घ्यम् इन्दोरुदयतः शुचिः। कृष्णाय प्रथमं दद्याद्देवकीसहिताय च॥

नालिकेरेण शुद्धेन दद्यादर्घ्यं विचक्षणः। कृष्णाय परया भक्त्या शङ्खे कृत्वा विधानतः॥

जातः कंसवधार्थाय भूभारोत्तारणाय च। पाण्डवानां हितार्थाय धर्मसंस्थापनाय च॥

कौरवाणां विनाशाय दैत्यानां निधनाय च। गृहाणार्घ्यं मया दत्तं देवकीजनित प्रभो॥

सपरिवाराय कृष्णाय नमः, इदमर्घ्यमिदमर्घ्यमिदमर्घ्यम्॥

पूजिताभ्यः सर्वाभ्यो देवताभ्यः तत्तन्नाममन्नेण अर्घ्यं दद्यात्

१. ॐ देवक्यै नमः —इदमर्घ्यम्

ॐ वसुदेवाय नमः ₹. —इदमर्घ्यम् ३. ॐ रोहिण्यै नमः <u></u>इदमर्घ्यम् ४. ॐ सबलायै नमः —इदमर्घ्यम् ॐ सात्यक्ये नमः —इदमर्घ्यम् ٤. —इदमर्घ्यम् ॐ उद्धवाय नमः €. —इदमर्घ्यम् ७. ॐ अकराय नमः ॐ उग्रसेनादि-यादवेभ्यो नमः —इदमर्घ्यम् —इदमर्घ्यम् ९. ॐ नन्दाय नमः १०. ॐ यशोदायै नमः —इदमर्घ्यम ११. ॐ तत्कालप्रसूताभ्यः गोपगोपिकाभ्यो नमः—इदमर्घ्यम् १३. ॐ कालिन्द्ये नमः —इदमर्घ्यम् १४. ॐ काल्ये नमः —इदमर्घ्यम

#### इति पृथक्पृथगर्घ्यं दत्वा॥

ततश्चन्द्रोदये रोहिणीयुतं चन्द्रं स्थण्डिले प्रतिमायां वा नाममन्रेण सम्पूज्य।

ततस्तु रोहिणीयुक्तं चन्द्रं सम्पूज्य भक्तितः। स्तुत्वा तु स्तोत्रमन्त्रेण चन्द्रायार्घ्यं प्रदापयेत्॥

आप्यायस्वेति मन्नेण देवसमीपे चन्दनिबम्बे रोहिणीसिहतं चन्द्रमावाह्य षोडशोपचारैः सम्पूजयेत्॥ चन्द्रप्रार्थना—

ज्योत्स्नायाः पतये तुभ्यं ज्योतिषां पतये नमः। नमस्ते रोहिणीकान्त सुधावास नमोऽस्तु ते॥

नमो मण्डलदीपाय शिरोरत्नाय धूर्जटे। कलाभिर्वर्धमानाय नमश्चन्द्राय चारवे॥ इति प्रणमेत्। ज्योत्स्रापते नमस्तुभ्यं नमस्ते ज्योतिषां पते। नमस्ते रोहिणीकान्त नमस्ते युवमोहन॥ इति स्तुत्वा।

शङ्क्षे कृत्वा ततस्तोयं सपुष्पफलचन्दनम्। जानुभ्यामवनीं गत्वा चन्द्रायार्घ्यं निवेदयेत्॥

#### चन्द्रार्घ्यमन्नः-

क्षीरोदार्णवसम्भूत अत्रिनेत्रसमुद्भव। रोहिणीश गृहाणार्घ्यं रमाभ्रातर्मनःपते॥

रोहिणीसहिताय चन्द्राय नमः इदमर्घ्यम् (त्रिः) इत्यर्घ्यं दत्वा देवकीसहिताय कृष्णाय छत्रचामराद्युपचारं कृत्वा पूजां समाप्य कृष्णावतारघट्टं पठेत्॥

युज्ञेनं युज्ञमंयजन्त देवाः। तानि धर्माणि प्रथमान्यांसन्। ते हु नाकं महिमानः सचन्ते। यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः॥ सपरिवाराय कृष्णाय नमः, छत्रचामरादिसमस्तोपचारान् समर्पयामि।

> अनघं वामनं शौरिं वैकुण्ठं पुरुषोत्तमम्। वासुदेवं हृषीकेशं माधवं मधुसूदनम्॥१॥ वराहं पुण्डरीकाक्षं नृसिंहं दैत्यसूदनम्। दामोदरं पद्मनाभं केशवं गरुडध्वजम्॥२॥

गोविन्दमच्युतं कृष्णमनन्तमपराजितम्। अधोक्षजं जगद्वीजं सर्गस्थित्यन्तकारणम्॥३॥

अनादिनिधनं विष्णुं त्रिलोकेशं त्रिविक्रमम्। नारायणं चतुर्बाहुं शङ्खचक्रगदाधरम्॥४॥

पीताम्बरधरं नित्यं वनमालाविभूषितम्। श्रीवत्साङ्कं जगत्सेतुं श्रीकृष्णं श्रीधरं हरिम्॥५॥ शरणं त्वां प्रपद्येऽहं सर्वकामार्थसिद्धये। प्रणममामि सदा देवं वासुदेवं जगत्पतिम्॥६॥

#### इति मन्नैः प्रणम्य॥

त्राहि मां सर्वलोकेश हरे संसारसागरात्। त्राहि मां सर्वपापघ्न दुःखशोकार्णवात्प्रभो। सर्वलोकेश्वर त्राहि पतितं मां भवार्णवे॥१॥

देवकीनन्दन श्रीश हरे संसारसागरात्। त्राहि मां सर्वदुःखघ्न रोगशोकार्णवाद्धरे॥२॥

दुर्वृत्तात्रायसे विष्णो ये स्मरन्ति सकृत्सकृत्। सोऽहं देवातिदुर्वृत्तस्त्राहि मां शोकसागरात्॥३॥

पुष्कराक्ष निमग्नोऽहं मायाव्यज्ञानसागरे। त्राहि मां देवदेवेश त्वत्तो नान्योऽस्ति रक्षिता॥४॥

यद्वाल्ये यच कौमारे यौवने यच वार्धके। तत्पुण्यं वृद्धिमायातु पापं हर हलायुध॥५॥

## इति मन्नैः प्रार्थयेत्॥

ततः स्तोत्रं पठन् पुराणश्रवणादिना जागरं कुर्यात्॥ द्वितीयेऽह्नि प्रातःकाले स्नानादिनित्यकर्म कृत्वा पूर्ववद्देवं पूजयित्वा ब्राह्मणान् भोजयेत्॥

तेभ्यः सुवर्णधेनुवस्नादि दत्त्वा कृष्णो मे प्रीयतामिति वदेत्॥

यं देवं देवकी देवी वसुदेवादजीजनत्। भौमस्य ब्रह्मणो गुप्त्ये तस्मे ब्रह्मात्मने नमः॥

नमस्ते वासुदेवाय गोब्राह्मणहिताय च। शान्तिरस्तु शिवं चास्तु इत्युक्का मां विसर्जयेत्॥

इति प्रतिमामुद्वास्य तां ब्राह्मणाय दत्त्वा पारणं कृत्वा व्रतं समापयेत्॥

सर्वस्मै सर्वेश्वराय सर्वेषां पतये सर्वसम्भवाय गोविन्दाय नमो नम इति पारणे॥

> भूताय भूतपतये नम इति समापने मन्नः॥ इति पूजाविधिः॥



हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः। अनन्तपुण्यफलदम् अतः शान्तिं प्रयच्छ मे॥

श्री-कृष्णजन्माष्टमी-पुण्यकाले अस्मिन् मया क्रियमाण सपरिवार-कृष्णपूजायां यद्देयमुपायनदानं तत्प्रतिनिधित्वेन हिरण्यं सपरिवार-श्री-कृष्ण-प्रीतिं कामयमानः मनसोद्दिष्टाय ब्राह्मणाय सम्प्रददे नमः न मम।

अनया पूजया सपरिवार-श्रीकृष्णः प्रीयताम्।

कायेन वाचा मनसेन्द्रियैर्वा बुद्ध्याऽऽत्मना वा प्रकृतेः स्वभावात्। करोमि यद्यत् सकलं परस्मे नारायणायेति समर्पयामि॥

ॐ तत्सद्बह्मार्पणमस्तु।



## ॥ जन्माष्टमी-व्रत-कथा॥

(मूलम्—श्री-व्रतराजः)

## युधिष्ठिर उवाच

जन्माष्टमीव्रतं ब्रूहि विस्तरेण ममाच्युत। कस्मिन्काले समुत्पन्नं किं पुण्यं को विधिः स्मृतः॥१॥

#### श्रीकृष्ण उवाच

मल्लयुद्धे परावृत्ते शमिते कुकुरान्धके। स्वजनैर्बन्धुभिः स्त्रीभिः समः स्निग्धैः समावृते॥२॥

हते कंसासुरे दुष्टे मथुरायां युधिष्ठिर। देवकी मां परिष्वज्य कृत्वोत्सङ्गे रुरोद ह॥३॥

वसुदेवोऽपि तत्रैव वात्सल्यात्प्ररुरोद ह। समालिङ्ग्याश्रुवदनः पुत्र पुत्रेत्युवाच ह॥४॥

सगद्गदस्वरो दीनो बाष्पपर्याकुलेक्षणः। बलभद्रं च मां चैव परिष्वज्य मुदा पुनः॥५॥

अद्य मे सफलं जन्म जीवितं च सुजीवितम्। उभाभ्यामद्य पुत्राभ्यां समुद्भूतः समागमः॥६॥

एवं हर्षेण दाम्पत्यं हृष्टं पुष्टं तदा ह्यभूत्। प्रणिपत्य जनाः सर्वे बभूवुस्ते प्रहर्षिताः॥७॥

एवं महोत्सवं दृष्ट्वा मामूचुर्मधुसूदनम्।

#### जना ऊचुः

प्रसादः क्रियतामस्य लोकस्याऽऽर्तस्य दुःखहन्॥८॥

यस्मिन्दिने च प्रासूत देवकी त्वां जनार्दन। तिद्दनं देहि वैकुण्ठ कुर्मस्तत्र महोत्सवम्॥९॥

एवं स्तुतो जनौघेन वासुदेवो मयेक्षितः। विलोक्य बलभद्रं च मां च हृष्टतनूरुहः॥१०॥

उवाच स ममादेशाल्लोकाञ्जन्माष्टमीव्रतम्। मथुरायां ततः पश्चात् पार्थ सम्यक् प्रकाशितम्॥११॥

कुर्वन्तु ब्राह्मणाः सर्वे व्रतं जन्माष्टमीदिने। क्षत्रिया वैश्यजातीयाः शुद्रा येऽन्येऽपि धर्मिणः॥१२॥

### युधिष्ठिर उवाच

कीदशं तद्वतं देवदेव सर्वैरनुष्ठितम्। जन्माष्टमीति संज्ञं च पवित्रं पापनाशनम्॥१३॥

येन त्वं तुष्टिमायासि कार्त्स्येन प्रभवाव्यय। एतन्मे तत्त्वतो ब्रूहि सविधानं सविस्तरम्॥१४॥

### श्रीकृष्ण उवाच

मासि भाद्रपदेष्टम्यां निशीथे कृष्णपक्षके। शशाङ्के वृषराशिस्थे ऋक्षे रोहिणीसंज्ञके॥१५॥

योगेऽस्मिन्वसुदेवाद्धि देवकी मामजीजनत्। भगवत्याश्च तत्रैव क्रियते सुमहोत्सवः॥१६॥

योगेऽस्मिन्कथितेऽष्टम्यां सिंहराशिगते रवौ। सप्तम्यां लघुभुक् कुर्याद्दन्तधावनपूर्वकम्॥१७॥

उपवासस्य नियमं रात्रौ स्वप्याञ्जितेन्द्रियः। केवलेनोपवासेन तस्मिञ्जन्मदिने मम॥१८॥

सप्तजन्मकृतात्पापान्मुच्यते नात्र संशयः। उपावृत्तस्य पापेभ्यो यस्तु वासोगुणैः सह॥१९॥

उपवासः स विज्ञेयः सर्वभोगविवर्जितः। ततोऽष्टम्यां तिलैः स्नात्वा नद्यादौ विमले जले॥२०॥

सुदेशे शोभनं कुर्यादेवक्याः सूतिकागृहम्। सितपीतैस्तथा रक्तैः कर्बुरैरितरैरपि॥२१॥

वासोभिः शोभितं कृत्वा समन्तात्कलशैर्नवैः। पुष्पैः फलैरनेकैश्च दीपालिभिरितस्ततः॥२२॥

पुष्पमालाविचित्रं च चन्दनागुरुधूपितम्। अतिरम्यमनौपम्यं रक्षामणिविभूषितम्॥२३॥ हरिवंशस्य चरितं गोकुलं च विलेखयेत्। ततो वादिबनिनदेवींणावेणुरवाकुलम्॥२४॥

नृत्यगीतक्रमोपेतं मङ्गलैश्च समन्ततः। वेष्टकारीं लोहखङ्गं कृष्णछागं च यत्नतः॥२५॥

द्वारे विन्यस्य मुसलं रक्षितं रक्षपालकैः। षष्ठया देव्याधिष्ठितं च तद्गृहं चोत्सवैस्तथा॥२६॥

एवंविभवसारेण कृत्वा तत्स्तिकागृहम्। तन्मध्ये प्रतिमा स्थाप्या सा चाप्यष्टविधा स्मृता॥२७॥

काश्चनी राजती ताम्री पैत्तली मृन्मयी तथा। वार्क्षी मणिमयी चैव वर्णकैर्लिखता तथा॥२८॥

सर्वलक्षणसम्पूर्णा पर्यङ्के चाष्टशल्यके। प्रतप्तकाश्चनाभासां महाहाँ सुतपस्विनीम्॥२९॥

प्रसूतां च प्रसुप्तां च स्थापयन्मश्रकोपरि। मां तत्र बालकं सुप्तं पर्यङ्के स्तनपायिनम्॥३०॥

श्रीवत्सवक्षसं शान्तं नीलोत्पलदलच्छविम्। यशोदा तत्र चैकस्मिन् प्रदेशे सूतिकागृहे॥३१॥

तद्वच कल्पयेत् पार्थ प्रसूतां वरकन्यकाम्। तथैव मम पार्श्वस्थाः कृताञ्जलिपुटा नृप॥३२॥

देवा ग्रहास्तथा नागा यक्षविद्याधराभराः। प्रणताः पुष्पमालाग्रचारुहस्ताः सुरासुराः॥३३॥

सश्चरन्त इवाऽऽकाशे प्रहारैरुदितोदितैः। वसुदेवोऽपि तत्रैव खङ्गचर्मधरः स्थितः॥३४॥

कश्यपो वसुदेवोऽयमदितिश्चैव देवकी। शेगे वै बलदेवोऽयं यशोदादितिरन्वभूत्॥३५॥ नन्दः प्रजापतिर्दक्षो गर्गश्चापि चतुर्मुखः। गोप्यश्चाप्सरसश्चेव गोपाश्चापि दिवौकसः॥३६॥

एषोऽवतारो राजेन्द्र कंसोऽयं कालनेमिजः। तत्र कंसनियुक्ताश्च मोहिता योगनिद्रया॥३७॥

गोधेनुकुञ्जराश्चेव दानवाः शस्त्रपाणयः। नृत्यतश्चाप्सरोभिस्ते गन्धर्वा गीततत्पराः॥३८॥

लेखनीयश्च तत्रैव कालियो यमुनाह्रदे। इत्येवमादि यत्किश्चिद्विद्यते चरितं मम॥३९॥

लेखियत्वा प्रयत्नेन पूजयेद्भक्तितत्परः। रम्यमेवं बीजपूरैः पुष्पमालादिशोभितम्॥४०॥

कालदेशोद्भवैः पुष्पैः फलैश्चापि युधिष्ठिर। पाद्यार्घ्यैः पूजयेद्भक्त्या गन्धपुष्पाक्षतैः सह। मन्नेणानेन कौन्तेय देवकी पूजयेन्नरः॥४१॥

गायद्भिः किन्नराद्यैः सततपरिवृता वेणुवीणानिनादैः
भृङ्गारादर्शकुम्भप्रवरवृतकरैः किङ्करैः सेव्यमाना।
पर्यङ्के स्वास्तृते यामुदिततरमुखी पुत्रिणी सम्यगास्ते
सा देवी देवमाता जयतु च ससुता देवकी कान्तरूपा॥४२॥

पादावभ्यञ्जयन्ती श्रीदेवक्याश्चरणान्तिके। निषण्णा पङ्कजे पूज्या दिव्यगन्धातुलेपनैः॥४३॥

पङ्कजैः पूजयेद्देवीं नमो देव्यै श्रिया इति। देववत्से नमस्तेऽस्तु कृष्णोत्पादनतत्परा॥४४॥

पापक्षयकरा देवी तुष्टिं यातु मयाऽर्चिता। प्रणवादिनमोऽन्तं च पृथङ्गामानुकीर्तनम्॥४५॥

कुर्यात्पूजा विधिज्ञश्च सर्वपापापनुत्तये। देवक्ये वसुदेवाय वासुदेवाय चैव हि॥४६॥ बलदेवाय नन्दाय यशोदायै पृथक् पृथक्। क्षीरादिस्नपनं कृत्वा चन्दनेनानुलेपयेत्॥४७॥

विध्यन्तरमपीच्छन्ति केचिदत्रैव सूरयः। चन्द्रोदये शशाङ्काय अर्घ्यं दत्त्वा हरिं स्मरन्॥४८॥

अनघं वामनं शौरिं वैकुण्ठं पुरुषोत्तमम्। वासुदेवं हृषीकेशं माधवं मधुसूदनम्॥४९॥

वराहं पुण्डरीकाक्षं नृसिंहं ब्रह्मणः प्रियम्। समस्तस्यापि जगतः सृष्टिस्थित्यन्तकारकम्॥५०॥

अनादिनिधनं विष्णुं त्रैलोक्येशं त्रिविक्रमम्। नारायणं चतुर्बाहुं शङ्खचक्रगदाधरम्॥५१॥

पीताम्बरधरं नित्यं वनमालाविभूषितम्। श्रीवत्साक्षं जगत्सेतुं श्रीपतिं श्रीधरं हरिम्॥५२॥

योगेश्वराय देवाय योगिनां पतये नमः। योगोद्भवाय नित्याय गोविन्दाय नमो नमः॥५३॥

यज्ञेश्वराय देवाय तथा यज्ञोद्भवाय च। यज्ञानां पतये नाथ गोविन्दाय नमो नमः॥५४॥

विश्वेश्वराय विश्वाय तथा विश्वोद्भवाय च। विश्वस्य पतये तुभ्यं गोविन्दाय नमो नमः॥५५॥

जगन्नाथ नमस्तुभ्यं संसारभयनाशन। जगदीशाय देवाय भूतानां पतये नमः॥५६॥

धर्मेश्वराय धर्माय सम्भवाय जगत्पते। धर्मज्ञाय च देवाय गोविन्दाय नमो नमः॥५७॥

एताभ्यां चैव मन्नाभ्यां नैवेद्यं शयनं तथा। चन्द्रायार्घ्यं च मन्नेण अनेनैवाथ दापयेत्॥५८॥ क्षीरोदार्णवसम्भूत अत्रिगोत्रसमुद्भव। गृहाणार्घ्यं शशाङ्केश रोहिण्या सहितो मम॥५९॥

ज्योस्नापते नमस्तुभ्यं ज्योतिषां पतये नमः। नमस्ते रोहिणीकान्त अर्घ्यं नः प्रतिगृह्यताम्॥६०॥

स्थण्डिले स्थापयेदेवं शशाङ्कं रोहिणीयुतम्। देवक्या वसुदेवं च नन्दं चैव यशोदया॥६१॥

बलदेवं मया सार्धं भक्त्या परमया नृप। सम्पूज्य विधिवद्देहि किं नाऽऽप्नोत्यतिदुर्लभम्॥६२॥

एकादशीनां विंशत्यः कोटयो याः प्रकीर्तिताः। ताभिः कृष्णाष्टमी तुल्या ततोऽनन्तचतुर्दशी॥६३॥

अर्धरात्रे वसोर्धारां पातयेद् द्रव्यसर्पिषा। ततो वर्धापयेन्नालं षष्ठीनामादिकं मम॥६४॥

कर्तव्यं तत्क्षणाद्रात्रौ प्रभाते नवमीदिने। यथा मम तथा कार्यो भगवत्या महोत्सवः॥६५॥

ब्राह्मणान् भोजयेद्भक्त्या तेभ्यो दद्याच दक्षिणाम्। हिरण्यं मेदिनीं गावो वासांसि कुसुमानि च॥६६॥

यद्यदिष्टतमं तत्तत्कृष्णो मे प्रीयतामिति। यं देवं देवकी देवीं वसुदेवादजीजनत्॥६७॥

भौमस्य ब्रह्मणो गुप्त्ये तस्मै ब्रह्मात्मने नमः। नमस्ते वासुदेवाय गोब्राह्मणहिताय च॥६८॥

शान्तिरस्तु शिवं चास्तु इत्युक्ता मां विसर्जयेत्। ततो बन्धुजनौघं च दीनानाथांश्च भोजयेत्॥६९॥

भोजयित्वा सुशान्तांस्तान् स्वयं भुञ्जीत वाग्यतः। एवं यः कुरुते देव्या देवक्याः सुमहोत्सवम्॥७०॥ प्रतिवर्षं विधानेन मद्भक्तो धर्मनन्दन। नरो वा यदि वा नारी यथोक्तं लभते फलम्॥७१॥

पुत्रसन्तानमारोग्यं सौभाग्यमतुलं लभेत्। इह धर्मरतिर्भूत्वा मृतो वैकुण्ठमाप्रुयात्॥७२॥

तत्र देवविमानेन वर्षलक्षं युधिष्ठिर। भोगान्नानाविधान् भुक्ता पुण्यशेषादिहागतः॥७३॥

सर्वकामसमृद्धे च सर्वाशुभविवर्जिते। कुले नृपतिशीलानां जायते हृच्छयोपमः॥७४॥

यस्मिन सदैव देशे तु लिखितं तु पटार्पितम्। मम जन्मदिनं भक्त्या सर्वालङ्कारभूषितम्॥७५॥

पूज्यते पाण्डवश्रेष्ठ जनैरुत्सवसंयुतैः। परचक्रभयं तत्र न कदाऽपि भवेत्पुनः॥७६॥

पर्जन्यः कामवर्षी स्यादीतिभ्यो न भयं भवेत्। गृहे वा पूज्यते यत्र देवक्याश्चरितं मम॥७७॥

तत्र सर्वं समृद्धं स्यान्नोपसर्गादिकं भवेत्। पशुभ्यो नकुलाद्यालात्पापरोगाच पातकात्॥७८॥

राजतश्चोरतो वाऽपि न कदाचिद्भयं भवेत्। संसर्गेणापि यो भक्त्या व्रतं पश्येदनाकुलम्। सोऽपि पापविनिर्मुक्तः प्रयाति हरिमन्दिरम्॥७९॥

जन्माष्टमीं जनमनोनयनाभिरामा पापापहां सपदि नन्दितनन्दगोपाम्। यो देवकी सुतयुतां च भजेद्धि भक्त्या पुत्रानवाप्य समुपैति पदं स विष्णोः॥८०॥ ॥इति भविष्योत्तरे जन्माष्टमीव्रतकथा॥

## ॥ शिष्टाचारप्राप्ता जन्माष्टमीव्रतकथा॥

#### व्यास उवाच

निवृत्ते भारते युद्धे कृतशौचो युधिष्ठिरः। उवाच वाक्यं धर्मात्मा कृष्णं देविकनन्दनम्॥१॥

### युधिष्ठिर उवाच

त्वत्प्रसादात्तु गोविन्द निहताः शत्रवो रणे। कर्णश्च निहतः सैन्ये त्वत्प्रसादात्किरीटिना॥२॥

जेता को युधि भीष्मस्य यस्य मृत्युर्न विद्यते। अजेयोऽपि जितः सोऽपि त्वत्प्रसादाञ्जनार्दन॥३॥

प्राप्तं निष्कण्टकं राज्यं कृत्वा कर्म सुदुष्करम्। आचारो दण्डनीतिश्च राजधर्माः क्रियान्विताः॥४॥

अधुना श्रोतुमिच्छामि शुभं जन्माष्टमीव्रतम्। जन्माष्टमी व्रतं ब्रूहि विस्तरेण ममाच्युत॥५॥

कुतः काले समुत्पन्नं किं पुण्यं को विधिः स्मृतः।

#### श्रीकृष्ण उवाच

शृणु राजन्प्रवक्ष्यामि व्रतानामुत्तमं व्रतम्॥६॥

यतः प्रभृति विख्यातं फलेन विधिनान्वितम्। राजवंशसमुत्पन्नैर्दैत्यानीकैः सुपीडिता॥७॥

धरा भारसमाकान्ता ब्रह्माणं शरणं ययौ। ज्ञात्वा तदा प्रभुर्ब्रह्मा भूमेभीरं समाहितः॥८॥

श्वेतदीपं समागत्य सर्वदेवसमन्वितः। समाहितमतिर्ब्रह्मा मां तुष्टाव विशां पते॥९॥ स्तुत्या तयाऽहं सम्प्रीतस्तेषां दग्गोचरोऽभवम्। दृष्ट्वा मां प्रणिपत्याऽऽशु भक्तिभावसमन्विताः॥१०॥

ब्रह्माणमग्रतः कृत्वा तुष्टाः सर्वे दिवौकसः। विजिज्ञपुर्महराज भूमिभारापनुत्तये॥११॥

उपधार्य तदा तेषां वचनं चान्वचिन्तयम्। केनोपायन हन्तव्या दानवाः क्षत्रियोद्भवाः॥१२॥

स्वधर्मनिरताः सर्वे महाबलपराऋमाः। ततो निश्चित्य मनसा ब्रह्माणमहमब्रुवम्॥१३॥

वसुदेवो देवकी च प्रजाकामौ पुरा नृप। भक्त्या मां भजमानौ तौ तप्तवन्तौ महत्तपः॥१४॥

तयोः प्रसन्नः सुप्रीतो याचतं वरमुत्तमम्। अब्रुवं तावपि ततो वरयामासतुः किल॥१५॥

यदि देव प्रसन्नोऽसि त्वादृशौ नौ भवेत्सुतः। तथेति च मया ताभ्यामुक्तं प्रीतेन चेतसा॥१६॥

तत्कामपूरणार्थाय सम्भविष्याम्यहं तयोः। दिवौकसोऽपि स्वांशेन सम्भवन्तु सुरस्रियः॥१७॥

योगमाया च नन्दस्य यशोदायां भविष्यति। देवक्या जठरे गर्भमनन्तं धाम मामकम्॥१८॥

सन्निकृष्य च सा तूर्णं रोहिण्या जठरं नयेत्। इति सन्दिश्य तान् सर्वानहमन्तर्हितोऽभवम्॥१९॥

ततो देवैः समं ब्रह्मा तां दिशं प्रणिपत्य च। आश्वास्य च महीं देवीं वरधाम्नि जगाम ह॥२०॥

ततोऽहं देवकीगर्भमाविशं स्वेन तेजसा। हतेषु षद्गु बालेषु देवक्या औग्रसेनिना। कारागृहस्थितायाश्च वसुदेवेन वै सह॥२१॥ गतेऽर्धरात्रसमये सुप्ते सर्वजने निशि। भाद्रे मास्यसिते पक्षेऽष्टम्यां ब्रह्मर्क्षसंयुजि॥२२॥

सर्वग्रहशुभे काले प्रसन्नहृदयाशये। आविरासं निजेनैव रुपेण ह्यवनीपते॥२३॥

वसुदेवोऽपि मां दृष्ट्वा हर्षशोकसमन्वितः। भीतः कंसादतितरां तुष्टाव च कृताञ्जलिः॥२४॥

पुनः पुनः प्रणम्याथ प्रार्थयामास सादरम्।

#### वसुदेव उवाच

अलौकिकमिदं रूपं दुर्दर्शं योगिनामपि॥२५॥

यत्तेजसाऽरिष्टगृहमभवत्सम्प्रकाशितम् । उद्धिजे भगवत्कंसाद्यो मे बालानघातयत्॥२६॥

उपसंहर तस्माच एतद्रूपमलौकिकम्। शङ्खचक्रगदापद्मलसत्कौस्तुभमालिनम्॥२७॥

किरीटहारमुकुटकेयूरवलयाङ्कितम् । तडिद्वसनसंवीतक्वणत्काश्चनमेखलम्॥२८॥

स्फुरद्राजीवताम्राक्षं स्निग्धाञ्जनसमप्रभम्। महामरकतस्वच्छं कोटिसूर्यसमप्रभम्॥२९॥

#### कृष्ण उवाच

एवं सम्प्रार्थितो राजन्वसुदेवेन वै तदा। तेनैव निजरूपेण भूत्वाऽहं प्राकृतः शिशुः॥३०॥

नय मां गोकुलमिति वसुदेवमचोदयम्। समादायागमत्सोऽपि नन्दगोकुलमञ्जसा॥३१॥

द्वाराण्यपाकृतान्यासन्मत्प्रभावात्स्वयं प्रभो। ददौ मार्गं च कालिन्दीजलकश्लोलमालिनी॥३२॥ ततो यशोदाशयने न्यस्य माऽऽनकदुन्दुभिः। तत्पर्यङ्के स्थितां गृह्य दारिकामगमत्पुनः॥३३॥

द्वाराणि पिहितान्यासन् पूर्ववन्निगडं ततः। विन्यस्य पादयोरास्ते शयने न्यस्य दारिकाम्॥३४॥

ततो रुरोद महता स्वरेणाऽऽपूर्य सा दिशः। तस्या रुदितशब्देन उत्थिता रक्षका गृहात्॥३५॥

कंसायाऽऽगत्य चाचख्युः प्रसूता देवकीति च। सोऽपि तल्पात्समुत्थाय भयेनातीव विह्वलः॥३६॥

जगाम सूतिकागेहं देवक्याः प्रस्खलन्पथि। दारिकां शयनादृह्य रुदत्याश्चेव स्वस्वसुः॥३७॥

अपोथयच्छिलापृष्ठे साऽपि तस्य कराच्युता। उवाच कंसमाभाष्य देवी ह्याकाशगा सती॥३८॥

किं मया हतया मन्द जातः कुत्रापि ते रिपुः। इत्युक्तः सोऽप्यभूत्कंसः परमोद्विग्रमानसः॥३९॥

आज्ञापयामास ततो बालानां कदनाय वै। दानवा अपि बालानां कदनं चकुरुद्यताः॥४०॥

वनेषूपवने चैव पुरग्रामव्रजेष्वपि। अहं च गोकुले स्थित्वा पूतनां बालघातिनीम्॥४१॥

स्तनं दातुं प्रवृत्तां च प्राणैः सममशोषयम्। तृणावर्तबकारिष्टान् धेनुकं केशिनं तथा॥४२॥

अन्यानपि खलान् हत्वा स्वप्रभावमदर्शयम्। ततश्च मथुरां गत्वा हत्वा कंसादिदानवान्॥४३॥

ज्ञातीनां परमं हर्षं कृतवानस्मि सादरम्। देवकीवसुदेवौ च परिष्वज्य मुदा मम॥४४॥ आनन्दर्जैर्जर्लेर्मूर्प्रि सेचयामासतुर्नृप। तस्मिन् रङ्गवरे मल्लान् हत्वा चाणूरमुख्यकान्॥४५॥

गजं कुवलयापीडं कंसभ्रातॄननेकशः। एवं हतेऽसुरे कंसे सर्वलोकैककण्टके॥४६॥

अन्येषु दुष्टदैत्येषु सर्वलोकभयङ्करम्। लोकाः समुत्सुकाः सर्वे मांसमेत्योचुरादृताः॥४७॥

कृष्ण कृष्ण महायोगिन् भक्तानामभयप्रद। प्रलयात्पाहि नो देव शरणागतवत्सलः॥४८॥

अनाथनाथ सर्वज्ञ सर्वभूतिहते रत। किश्चिद् विज्ञाप्यतेऽस्माभिस्तन्नो वक्तुं त्वमर्हसि॥४९॥

तव जन्मदिनं लोके न ज्ञातं केनचित्क्वचित्। ज्ञात्वा च तत्त्वतः सर्वे कुर्मो वर्धापनोत्सवम्॥५०॥

तेषां दृष्ट्वा तु तां भक्तिं श्रद्धामिप च सौहृदम्। मया जन्मदिनं तेभ्यः ख्यातं निर्मलचेतसा॥५१॥

श्रुत्वा तेऽपि तथा चऋर्विधिना येन तच्छृणु। पार्थ तद्दिवसे प्राप्ते दन्तधावनपूर्वकम्॥५२॥

स्नात्वा पुण्यजले शुद्धे वाससी परिधाय च। निर्वर्त्यावश्यकं कर्म व्रतसङ्कल्पमाचरेत्॥५३॥

अद्य स्थित्वा निराहारः श्वोभूते तु परेऽहनि। भोक्ष्यामि पुण्डरीकाक्ष शरणं मे भवाव्यय॥५४॥

गृहीत्वा नियमं चैव सम्पाद्यार्चनसाधनम्। मण्डपं शोभनं कृत्वा फलपुष्पादिभिर्युतम्॥५५॥

तिस्मिन्मां पूजयेद्भक्त्या गन्धपुष्पादिभिः क्रमात्। उपचारैः षोडशभिद्वीदशाक्षरविद्यया॥५६॥ सद्यःप्रसूतां जननीं वसुदेवं च मारिषः। बलदेवसमायुक्तां रोहिणीं गुणशोभिनीम्॥५७॥

नन्दं यशोदां गोपीश्च गोपान् गाश्चेव सर्वशः। गोकुलं यमुनां चैव योगमायां च दारिकाम्॥५८॥

यशोदाशयने सुप्तां सद्योजातां वरप्रभाम्। एवं सम्पूजयेत्सम्यङ्गाममन्नैः पृथक्पृथक्॥५९॥

सुवर्णरौप्यताम्रारमृदादिभिरलङ्कृताः । काष्ठपाषाणरचिताश्चित्रमय्योऽथ लेखिताः॥६०॥

प्रतिमा विविधाः प्रोक्तास्तासु चान्यतमां यजेत्। रात्रौ जागरणं कुर्याद्गीतनृत्यादिभिः सह॥६१॥

पुराणैः स्तोत्रपाठैश्च जातनामादिसूत्सवैः। श्वभूते पारणं कुर्याद् द्विजान् सम्भोज्य यत्नतः॥६२॥

एवं कृते महाराज व्रतानामुत्तमे व्रते। सर्वान्कामानवाप्नोति विष्णुलोके महीयते॥६३॥

मोहान्न कुरुते यस्तु याति संसारगह्वरे। तस्मात्कुर्वन्प्रयत्नेन निष्पापो जायते नरः॥६४॥

अत्रैवोदाहरन्तीममितिहासं पुरातनम्। अङ्गदेशोद्भवो राजा मित्रजिन्नाम नामतः॥६५॥

तस्य पुत्रो महातेजः सत्यजित्सत्पथे स्थितः। पालयामास धर्मज्ञो विधिवद्रञ्जयन्प्रजाः॥६६॥

तस्यैवं वर्तमानस्य कदाचिद्दैवयोगतः। पापण्डैः सह संवासो बभूव बहुवासरम्॥६७॥

तत्संसर्गात्स नृपतिरधर्मनिरतोऽभवत्। वेदशास्त्रपुराणानि विनिन्द्य बहुशो नृप॥६८॥ ब्राह्मणेषु तथा धर्मे विद्वेषं परमं गतः। एवं बहुतिथे काले गते भरतसत्तम॥६९॥

कालेन निधनप्राप्तो यमदूतवशं गतः। बद्धा पाशैर्नीयमानो यमदूतैर्यमान्तिकम्॥७०॥

पीडितस्ताड्यमानोऽसौ दुष्टसङ्गवशं गतः। नरके पतितः पापो यातनां बहवत्सरम्॥७१॥

भुक्ता पापस्य शेषेण पैशाची योनिमास्थितः। तृषाक्षुधासमाक्रान्तो भ्रमन्स मरुधन्वसु॥७२॥

कस्यचित्त्वथ वैश्यस्य देहमाविश्य संस्थितः। सह तेनैव सम्प्राप्तो मथुरा पुण्यदां पुरीम्॥७३॥

तत्रत्येरक्षकेः सोऽथ तद्देहात्तु बहिष्कृतः। बभ्राम विपिने सोऽपि ऋषीणामाश्रमेष्वपि॥७४॥ कदाचिद् दैवयोगेन मम् जन्माष्ट्रमीदिने।

क्रियमाणां महापूजां व्रतिभिर्मुनिभिर्द्धिजैः॥७५॥

रात्रौ जागरणं चैव नामसङ्कीर्तनादिभिः। ददर्श सर्वं विधिवच्छुश्राव च हरेः कथाः॥७६॥

निष्पापस्तत्क्षणादेव शुद्धनिर्मलमानसः। प्रेतदेहं समुत्सृज्य विष्णुलोकं विमानतः॥७७॥

मम दूतैः समानीतो दिव्यभोगसमन्वितः। मम सान्निध्यमापन्नो व्रतस्यास्य प्रभावतः॥७८॥

नित्यमेव व्रतं चैतत् पुराणे सार्वकालिकम्। गीयते विधिवत्सम्यङ्गुनिभिस्तत्त्वदर्शिभिः॥७९॥

सार्वकालिकमेवैतत्कृत्वा कामानवाप्नुयात्। एतत्ते सर्वमाख्यातं व्रतानामृत्तमं व्रतम्। मम सान्निध्यकृद्राजन्किं भूयः श्रोतुमिच्छसि॥८०॥ ॥इति भविष्ये जन्माष्टमीव्रतकथा

## ॥ व्रतोद्यापनम्॥

## युधिष्ठिर उवाच

उद्यापनविधिं ब्रूहि सर्वदेव दयानिधे। येन सम्पूर्णतां याति व्रतमेतदनुत्तमम्॥१॥

#### श्रीकृष्ण उवाच

पूर्णां तिथिमनुप्राप्य वित्तचित्तादिसंयुतः। पूर्वेद्युरेकभक्ताशी स्वपेन्मां संस्मरन्हदि॥२॥

प्रातरुत्थाय संस्मृत्य पुण्यश्लोकान् समाहितः। निर्वर्त्यावश्यकं कर्म ब्राह्मणान्स्वस्ति वाचयेत्॥३॥

गुरुमानीय धर्मज्ञं वेदवेदाङ्गपारगम्। वृणुयादृत्विजश्चैव वस्त्रालङ्करणादिभिः॥४॥

पलेन वा तदर्धेन तदर्धार्धेन वा पुनः। शक्त्या वाऽपि नृपश्रेष्ठ वित्तशाट्यविवर्जितः॥५॥

सौवर्णीं प्रतिमां कुर्यात्पाद्यार्घ्याचमनीयकम्। पात्रं सम्पाद्य विधिवत्पृजोपकरणं तथा॥६॥

गोचर्ममात्रं संलिप्य मध्ये मण्डलमाचरेत्। ब्रह्माद्या देवतास्तत्र स्थापयित्वा प्रपूजयेत्॥७॥

मण्डपं रचयेत्तत्र कदलीस्तम्भमण्डितम्। चतुर्द्वारसमोपेतं फलपुष्पादिशोभितम्॥८॥

वितानं तत्र बध्नीयाद्विचित्रं चैव शोभनम्। मण्डले स्थापयेत्कुम्भं ताम्रं वा मृन्मयं शुचिम्॥९॥

तस्योपरि न्यसेत्पात्रं राजतं वैष्णवं तु वा। वाससाऽऽच्छाद्य कौन्तेय पूजयेत्तत्र मां बुधः॥१०॥ उपचारैः षोडशभिर्मन्नैरेतैः समाहितः। ध्यात्वाऽऽवाह्यामृतीकृत्य स्वागतादिभिरादरात्॥११॥

ध्यायेचतुर्भुजं देवं शङ्ख्यक्रगदाधरम्। पीताम्बरयुगोपेतं लक्ष्मीयुक्तं विभूषितम्। लसत्कौस्तुभशोभाढ्यं मेघश्यामं सुलोचनम्॥१२॥

#### ध्यानम्॥

आगच्छ, देवदेवेश जगद्योने रमापते। शुद्धे ह्यस्मिन्नधिष्ठाने सन्निधेहि कृपां कुरु॥१३॥

#### आवाहनम्॥

देवदेव जगन्नाथ गरुडासनसंस्थित। गृहाण चाऽऽसनं दिव्यं जगद्धातर्नमोऽस्त् ते॥१४॥

#### आसनम्॥

नानातीर्थाहृतं तोयं निर्मलं पुष्पमिश्रितम्। पाद्यं गृहाण देवेश विश्वरूप नमोऽस्त् ते॥१५॥

#### पाद्यम्॥

गङ्गादिसर्वतीर्थेभ्यो भक्त्याऽऽनीतं सुशीतलम्। गन्धपुष्पाक्षतोपेतं गृहाणार्घ्यं नमोऽस्तु ते॥१६॥

## अर्घ्यम्॥

कृष्णावेणीसमुद्भृतं कालिन्दीजलसंयुतम्। गृहाणाऽऽचमनं देव विश्वकाय नमोऽस्तु ते॥१७॥

#### आचमनम्॥

दिध क्षौद्रं घृतं शुद्धं किपलायाः सुगन्धि यत्। सुस्वादु मधुरं शौरे मधुपर्कं गृहाण मे॥१८॥

### मधुपर्कम्॥ पुनराचमनम्॥

पश्चामृतेन स्नपनं करिष्यामि सुरोत्तम। क्षीरोदधिनिवासाय लक्ष्मीकान्ताय ते नमः॥१९॥

पश्चामृतस्नानम्॥

मन्दाकिनी गौतमी च यमुना च सरस्वती। ताभ्यः स्नानार्थमानीतं गृहाण शिशिरं जलम्॥२०॥

स्नानम्॥ पुनराचमनम्॥

शुद्धजाम्बूनदप्रख्ये तडिद्धासुररोचिषी। मयोपपादिते तुभ्यं वाससी प्रतिगृह्यताम्॥२१॥

वस्रयुग्मम्॥

यज्ञोपवीतमिति यज्ञोपवीतम्॥

किरीटकुण्डलादीनि काश्चीवलययुग्मकम्। कौस्तुमं वनमालां च भूषणानि भजस्व मे॥२२॥

भूषणानि॥

मलयाचलसम्भूतं घनसारं मनोहरम्। हृदयानन्दनं चारु चन्दनं प्रतिगृह्यताम्॥२३॥

चन्दनम्॥

अक्षताश्च सुरश्रेष्ठेति कुङ्कुमाक्षतान्।

मालतीचम्पकादीनि यूथिकाबकुलानि च। तुलसीपत्रमिश्राणि गृहाण सुरसत्तम॥२४॥

पुष्पाणि॥

अथाङ्गपूजा-

अघनाशनाय नमः — पादौ पूजयामि। वामनाय नमः — गुल्फौ पूजयामि।

शौरये नमः — जङ्घे पूजयामि। वैकुण्ठवासिने नमः — ऊरू पूजयामि। पुरुषोत्तमाय नमः — मेढुं पूजयामि। वासुदेवाय नमः — कटिं पूजयामि। हृषीकेशाय नमः — नाभिं पूजयामि। माधवाय नमः — हृदयं पूजयामि। मधुसूदनाय नमः — कण्ठं पूजयामि। वराहाय नमः — बाह्न् पूजयामि। नृसिंहाय नमः — हस्तौ पूजयामि। दैत्यसूदनाय नमः — मुखं पूजयामि। दामोदराय नमः — नासिकां पूजयामि। पुण्डरीकाक्षाय नमः — नेत्रे पूजयामि। गरुडध्वजाय नमः — श्रोत्रे पूजयामि। गोविन्दाय नमः — ललाटं पूजयामि। अच्युताय नमः — शिरः पूजयामि। कृष्णाय नमः — सर्वाङ्गं पूजयामि॥

#### अथ परिवारदेवतापूजा—

देवकीं वस्देवं च रोहिणीं सबलां तथा। सात्यिकं चोद्धवाकूरावुग्रसेनादियादवान्॥२५॥

नन्दं यशोदां तत्कालप्रसूतां गोपगोपिकाः। कालिन्दीं कालियं चैव पूजयेन्नाममन्नतः॥२६॥

वनस्पतिरसोद्भतं कालागुरुसमन्वितम्। धूपं गृहाण गोविन्द गुणसागर गोपते॥२७॥

धूपम्॥

साज्यं त्रिवर्तिसंयुक्तम्॥ दीपम्॥

> शाल्योदनं पायसं च सिताघृतविमिश्रितम्। नानापक्वान्नसंयुक्तं नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम्॥२८॥

नैवेद्यम्। उत्तरापोशनम्॥ इदं फलिमिति फलम्॥ पूगीफलिमिति ताम्बूलम्॥ हिरण्यगर्भेति दक्षिणाम्॥

> नीराजयेत्ततो भक्त्या मङ्गलं समुदीरयन्। जयमङ्गलनिर्घोषैर्देवदेवं समर्चयेत्॥२९॥

नीराजनम्॥

दत्त्वा पुष्पाञ्जलिं चैव प्रदक्षिणपुरःसरम्। प्रणमेद्दण्डवद् भूभौ भक्तिप्रह्वः पुनः पुनः॥३०॥

स्तुत्वा नानाविधैः स्तोत्रैः प्रार्थयेत जगत्पतिम्॥

नमस्तुभ्यं जगन्नाथ देवकीतनय प्रभो। वसुदेवात्मजानन्त यशोदानन्दवर्धन॥३१॥

गोविन्द गोकुलाधार गोपीकान्त नमोऽस्तु ते। ततस्तु दापयेदर्घ्यमिन्दोरुदयतः शुचिः॥३२॥

कृष्णाय प्रथमं दद्याद् देवकीसहिताय च। नालिकेरेण शुद्धेन मुक्तमर्घ्यं विचक्षण॥३३॥

कृष्णाय परया भक्त्या शङ्खे कृत्वा विधानतः॥

जातः कंसवधार्थाय भूभारोत्तारणाय च। कौरवाणां विनाशाय दैत्यानां निधनाय च॥३४॥ पाण्डवानां हितार्थाय धर्मसंस्थापनाय च। गृहाणार्घ्यं मया दत्तं देवकीसहितो हरे॥३५॥

#### कृष्णार्घ्यमत्रः॥

शङ्के कृत्वा ततस्तोयं सपुष्पफलचन्दनम्। जानुभ्यामवनिं गत्वा चन्द्रायार्घ्यं निवेदयेत्॥३६॥

क्षीरोदार्णवसम्भूत अत्रिगोत्रसमुद्भव। गृहाणार्घ्यं मया दत्तं रोहिण्या सहित प्रभो॥३७॥

ज्योत्स्नापते नमस्तुभ्यं नमस्ते ज्योतिषां पते। नमस्ते रोहिणीकान्त गृहाणार्घ्यं नमोऽस्तु ते॥३८॥

#### चन्द्रार्घ्यमन्नः॥

इत्थं सम्पूज्य देवेशं रात्रौ जागरणं चरेत्। गीतनृत्यादिना चैव पुराणश्रवणादिभिः॥३९॥

प्रत्यूषे विमले स्नात्वा पूजियत्वा जगद्गुरुम्। पायसेन तिलाज्यैश्च मूलमन्नेण भक्तितः॥४०॥

अष्टोत्तरशतं हुत्वा ततः पुरुषसूक्ततः। इदं विष्णुरिति प्रोक्ता जुहुयाद्वै घृताहुतीः॥४१॥

होमशेषं समाप्याथ पूर्णाहुतिपुरःसरम्। आचार्यं पूजयेद्भक्त्या भूषणाच्छादनादिभिः॥४२॥

गामेकां कपिलां दद्याद् व्रतसम्पूर्तिहेतवे। पयस्विनीं सुशीलां च सवत्सां सगुणां तथा॥४३॥

स्वर्णशृङ्गीं रौप्यखुरां कांस्यदोहनिकायुताम्। रत्नपुच्छां ताम्रपृष्ठीं स्वर्णघण्टासमन्विताम्॥४४॥

वस्रच्छन्नां दक्षिणाढ्यामेवं सम्पूर्णतां व्रजेत्। कपिलाया अभावे तु गौरन्याऽपि प्रदीयते॥४५॥ ततो दद्याच ऋत्विग्भ्योऽन्येभ्यश्चैव यथाविधि। शय्यां सोपस्करां दद्याद् व्रतसम्पूर्तिहेतवे॥४६॥

ब्राह्मणान्भोजयेत्पश्चादष्टौ तेभ्यश्च दक्षिणाम्। कलशानन्नसम्पूर्णान्दद्याचैव समाहितः॥४७॥

दीनान्धकृपणांश्चैव यथार्हं प्रतिपूजयेत्। प्राप्यानुज्ञां तथा तेभ्यो भुञ्जीत सह बन्धुभिः॥४८॥

एवं कृते महाराज व्रतोद्यापनकर्मणि। निष्पापस्तत्क्षणादेव जायते विबुधोपमः॥४९॥

पुत्रपौत्रसमायुक्तो धनधान्यसमन्वितः। भुक्का भोगांश्चिरं कालमन्ते मम पुरं व्रजेत्॥५०॥

॥इति श्रीभविष्यपुराणे कृष्णयुधिष्ठिरसंवादे जन्माष्टमीव्रतोद्यापनं सम्पूर्णम्॥

## ॥श्रीमद्भागवते महापुराणे दशमस्कन्धे पूर्वार्धे तृतीयोऽध्यायः॥

## श्रीशुक उवाच

अथ सर्वगुणोपेतः कालः परमशोभनः। यर्ह्यवाजनजन्मर्क्षं शान्तर्क्षग्रहतारकम्॥१॥

दिशः प्रसेदुर्गगनं निर्मलोडुगणोदयम्। मही मङ्गलभूयिष्ठ पुरग्रामव्रजाकरा॥२॥

नद्यः प्रसन्नसलिला हृदा जलरुहश्रियः। द्विजालिकुलसन्नाद स्तवका वनराजयः॥३॥

ववौ वायुः सुखस्पर्शः पुण्यगन्धवहः शुचिः। अग्नयश्च द्विजातीनां शान्तास्तत्र समिन्धत॥४॥

मनांस्यासन्प्रसन्नानि साधूनामसुरद्रुहाम्। जायमानेऽजने तस्मिन्नेदुर्दुन्दुभयः समम्॥५॥ जगुः किन्नरगन्धर्वास्तुष्टुवुः सिद्धचारणाः। विद्याधर्यश्च ननृतुरप्सरोभिः समं मुदा॥६॥

मुमुचुर्मुनयो देवाः सुमनांसि मुदान्विताः। मन्दं मन्दं जलधरा जगर्जुरनुसागरम्॥७॥

निशीथे तम उद्भूते जायमाने जनार्दने। देवक्यां देवरूपिण्यां विष्णुः सर्वगृहाशयः। आविरासीद्यथा प्राच्यां दिशीन्दुरिव पुष्कलः॥८॥

तमद्भुतं बालकमम्बुजेक्षणं चतुर्भुजं शङ्खगदाद्युदायुधम्। श्रीवत्सलक्ष्मं गलशोभिकोस्तुमं पीताम्बरं सान्द्रपयोदसौभगम्॥९॥

महार्हवैदूर्यिकरीटकुण्डल-त्विषा परिष्वक्तसहस्रकुन्तलम्। उद्दामकाभ्र्यङ्गदकङ्कणादिभिर्-विरोचमानं वसुदेव ऐक्षत॥१०॥

स विस्मयोत्फुछविलोचनो हरिं सुतं विलोक्यानकदुन्दुभिस्तदा। कृष्णावतारोत्सवसम्भ्रमोऽस्पृशन् मुदा द्विजेभ्योऽयुतमाप्नुतो गवाम्॥११॥

अथैनमस्तौदवधार्य पूरुषं परं नताङ्गः कृतधीः कृताञ्जलिः। स्वरोचिषा भारत सूतिकागृहं विरोचयन्तं गतभीः प्रभाववित्॥१२॥

## श्रीवसुदेव उवाच

विदितोऽसि भवान्साक्षात्पुरुषः प्रकृतेः परः। केवलानुभवानन्द स्वरूपः सर्वबुद्धिदृक्॥१३॥ स एव स्वप्रकृत्येदं सृष्ट्वाग्रे त्रिगुणात्मकम्। तदनु त्वं ह्यप्रविष्टः प्रविष्ट इव भाव्यसे॥१४॥

यथेमेऽविकृता भावास्तथा ते विकृतैः सह। नानावीर्याः पृथग्भूता विराजं जनयन्ति हि॥१५॥

सन्निपत्य समुत्पाद्य दृश्यन्तेऽनुगता इव। प्रागेव विद्यमानत्वान्न तेषामिह सम्भवः॥१६॥

एवं भवान्बुद्धनुमेयलक्षणैर्-ग्राह्मैर्गुणैः सन्नपि तद्गुणाग्रहः। अनावृतत्वाद्वहिरन्तरं न ते सर्वस्य सर्वात्मन आत्मवस्तुनः॥१७॥

य आत्मनो दृश्यगुणेषु सन्निति व्यवस्यते स्वव्यतिरेकतोऽबुधः। विनानुवादं न च तन्मनीषितं सम्यग्यतस्त्यक्तमुपाददत्पुमान्॥१८॥

त्वतोऽस्य जन्मस्थितिसंयमान्विभो वदन्त्यनीहादगुणादविक्रियात्। त्वयीश्वरे ब्रह्मणि नो विरुध्यते त्वदाश्रयत्वादुपचर्यते गुणैः॥१९॥

स त्वं त्रिलोकस्थितये स्वमायया बिभर्षि शुक्कं खलु वर्णमात्मनः। सर्गाय रक्तं रजसोपबृंहितं कृष्णं च वर्णं तमसा जनात्यये॥२०॥

त्वमस्य लोकस्य विभो रिरक्षिषुर्-गृहेऽवतीर्णोऽसि ममाखिलेश्वर। राजन्यसंज्ञासुरकोटियूथपैर्-निर्व्यूद्यमाना निहनिष्यसे चमूः॥२१॥ अयं त्वसभ्यस्तव जन्म नौ गृहे श्रुत्वाग्रजांस्ते न्यवधीत्सुरेश्वर। स तेऽवतारं पुरुषेः समर्पितं श्रुत्वाधुनैवाभिसरत्युदायुधः ॥२२॥

## श्रीशुक उवाच

अथैनमात्मजं वीक्ष्य महापुरुषलक्षणम्। देवकी तमुपाधावत्कंसाद्गीता सुविस्मिता॥२३॥

## श्रीदेवक्युवाच

रूपं यत्तत्प्राहरव्यक्तमाद्यं ब्रह्म ज्योतिर्निर्गुणं निर्विकारम्। सत्तामात्रं निर्विशेषं निरीहं स त्वं साक्षाद्विष्णुरध्यात्मदीपः॥२४॥ नष्टे लोके द्विपरार्धावसाने महाभूतेष्वादिभूतं गतेषु। व्यक्तेऽव्यक्तं कालवेगेन याते भवानेकः शिष्यतेऽशेषसंज्ञः॥२५॥ योऽयं कालस्तस्य तेऽव्यक्तबन्धो चेष्टामाहुश्चेष्टते येन विश्वम्। निमेषादिर्वत्सरान्तो महीयास् तं त्वेशानं क्षेमधाम प्रपद्ये॥२६॥ मर्त्यो मृत्युव्याल्भीतः पलायन् लोंकोन्सर्वान्निर्भयं नाध्यगेच्छत्। त्वत्पादाजं प्राप्य यहच्छयाद्य स्स्थः शेते मृत्युरस्मादपैति॥२७॥ स त्वं घोरादुग्रसेनात्मजान्नस्-त्राहि त्रस्तान्भृत्यवित्रासहासि। रूपं चेदं पौरुषं ध्यानधिष्ययं

मा प्रत्यक्षं मांसदृशां कृषीष्ठाः॥२८॥

जन्म ते मय्यसौ पापो मा विद्यान्मधुसूदन। समुद्विजे भवद्धेतोः कंसादहमधीरधीः॥२९॥

उपसंहर विश्वात्मन्नदो रूपमलौकिकम्। शङ्खचक्रगदापद्म श्रिया जुष्टं चतुर्भुजम्॥३०॥

विश्वं यदेतत्स्वतनौ निशान्ते यथावकाशं पुरुषः परो भवान्। बिभर्ति सोऽयं मम गर्भगोऽभू-दहो नृलोकस्य विडम्बनं हि तत्॥३१॥

## श्रीभगवानुवाच

त्वमेव पूर्वसर्गेऽभूः पृश्निः स्वायम्भुवे सति। तदायं सुतपा नाम प्रजापतिरकल्मषः॥३२॥

युवां वै ब्रह्मणादिष्टौ प्रजासर्गे यदा ततः। सन्नियम्येन्द्रियग्रामं तेपाथे परमं तपः॥३३॥

वर्षवातातपहिम घर्मकालगुणानन्। सहमानौ श्वासरोध विनिर्धूतमनोमलौ॥३४॥

शीर्णपर्णानिलाहारावुपशान्तेन चेतसा। मत्तः कामानभीप्सन्तौ मदाराधनमीहतुः॥३५॥

एवं वां तप्यतोस्तीव्रं तपः परमदुष्करम्। दिव्यवर्षसहस्राणि द्वादशेयुर्मदात्मनोः॥३६॥

तदा वां परितुष्टोऽहममुना वपुषानघे। तपसा श्रद्धया नित्यं भक्त्या च हृदि भावितः॥३७॥

प्रादुरासं वरदराड्युवयोः कामदित्सया। व्रियतां वर इत्युक्ते मादृशो वां वृतः सुतः॥३८॥

अजुष्टग्राम्यविषयावनपत्यौ च दम्पती। न वव्राथेऽपवर्गं मे मोहितौ देवमायया॥३९॥ गते मिय युवां लब्ध्वा वरं मत्सदृशं सुतम्। ग्राम्यान्भोगानभुञ्जाथां युवां प्राप्तमनोरथौ॥४०॥

अदृष्ट्वान्यतमं लोके शीलौदार्यगुणैः समम्। अहं सुतो वामभवं पृश्लिगर्भ इति श्रुतः॥४१॥

तयोर्वां पुनरेवाहमदित्यामास कश्यपात्। उपेन्द्र इति विख्यातो वामनत्वाच वामनः॥४२॥

तृतीयेऽस्मिन्भवेऽहं वै तेनैव वपुषाथ वाम्। जातो भूयस्तयोरेव सत्यं मे व्याहृतं सति॥४३॥

एतद्वां दर्शितं रूपं प्राग्जन्मस्मरणाय मे। नान्यथा मद्भवं ज्ञानं मर्त्यलिङ्गेन जायते॥४४॥

युवां मां पुत्रभावेन ब्रह्मभावेन चासकृत्। चिन्तयन्तौ कृतस्नेहौ यास्येथे मद्गतिं पराम्॥४५॥

#### श्रीशुक उवाच

इत्युक्तासीद्धरिस्तूष्णीं भगवानात्ममायया। पित्रोः सम्पश्यतोः सद्यो बभूव प्राकृतः शिशुः॥४६॥

ततश्च शौरिर्भगवत्प्रचोदितः
सुतं समादाय स सूतिकागृहात्।
यदा बहिर्गन्तुमियेष तह्यजा
या योगमायाजनि नन्दजायया॥४७॥

तया हतप्रत्ययसर्ववृत्तिषु द्वाःस्थेषु पौरेष्वपि शायितेष्वथ। द्वारश्च सर्वाः पिहिता दुरत्यया बृहत्कपाटायसकीलशृङ्खलेः ॥४८॥

ताः कृष्णवाहे वसुदेव आगते
स्वयं व्यवर्यन्त यथा तमो रवेः।
ववर्ष पर्जन्य उपांशुगर्जितः
शेषोऽन्वगाद्वारि निवारयन्फणैः॥४९॥

मघोनि वर्षत्यसकृद्यमानुजा गम्भीरतोयौघजवोर्मिफेनिला । भयानकावर्तशताकुला नदी मार्गं ददौ सिन्धुरिव श्रियः पतेः॥५०॥

नन्दव्रजं शौरिरुपेत्य तत्र तान् गोपान्प्रसुप्तानुपलभ्य निद्रया। सुतं यशोदाशयने निधाय तत् सुतामुपादाय पुनर्गृहानगात्॥५१॥

देवक्याः शयने न्यस्य वसुदेवोऽथ दारिकाम्। प्रतिमुच्य पदोर्लोहमास्ते पूर्ववदावृतः॥५२॥

यशोदा नन्दपत्नी च जातं परमबुध्यत। न तिल्लङ्गं परिश्रान्ता निद्रयापगतस्मृतिः॥५३॥

॥इति श्रीमद्भागवते महापुराणे पारमहंस्यां संहितायां दशमस्कन्धे पूर्वार्धे तृतीयोऽध्यायः॥



## ॥ श्री-सिद्धिविनायक-पूजा ॥

## ॥ पूर्वाङ्गविघ्नेश्वरपूजा॥

(आचम्य)

शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्। प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविद्योपशान्तये॥ प्राणान् आयम्य। ॐ भूः + भूर्भुवः सुव्रोम्। (अप उपस्पृश्य, पृष्पाक्षतान् गृहीत्वा) ममोपात्तसमस्त दुरितक्षयद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं करिष्यमाणस्य कर्मणः निर्विघ्नेन परिसमाप्त्यर्थम् आदौ विघ्नेश्वरपूजां करिष्ये।

ॐ गृणानां त्वा गृणपंति हवामहे कविं केवीनामुंपमश्रंवस्तमम्। ज्येष्ठराजं ब्रह्मणां ब्रह्मणस्पत् आ नः शृण्वन्नूतिभिः सीद् सादेनम्॥ अस्मिन् हरिद्राबिम्बे महागणपतिं ध्यायामि, आवाहयामि।

ॐ महागणपतये नमः आसनं समर्पयामि। पादयोः पाद्यं समर्पयामि। हस्तयोरध्यं समर्पयामि। आचमनीयं समर्पयामि। ॐ भूर्भुवस्सुवः। शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि। स्नानानन्तरमाचमनीयं समर्पयामि। वस्नार्थमक्षतान् समर्पयामि। यज्ञोपवीताभरणार्थे अक्षतान् समर्पयामि। दिव्यपरिमलगन्थान् धारयामि। गन्थस्योपरि हरिद्राकुङ्कुमं समर्पयामि। अक्षतान् समर्पयामि। पुष्पमालिकां समर्पयामि। पुष्पैः पूज्यामि।

#### ॥ अर्चना ॥

१. ॐ सुमुखाय नमः

१०. ॐ गणाध्यक्षाय नमः

२. ॐ एकदन्ताय नमः

११. ॐ फालचन्द्राय नमः

३. ॐ कपिलाय नमः

१२. ॐ गजाननाय नमः

४. ॐ गजकर्णकाय नमः

१३. ॐ वऋतुण्डाय नमः

५. ॐ लम्बोदराय नमः

१४. ॐ शूर्पकर्णाय नमः

६. ॐ विकटाय नमः

१५. ॐ हेरम्बाय नमः

७. ॐ विघ्नराजाय नमः

१६. ॐ स्कन्दपूर्वजाय नमः

८. ॐ विनायकाय नमः

१७. ॐ सिद्धिविनायकाय नमः

९. ॐ धूमकेतवे नमः

१८. ॐ विघ्नेश्वराय नमः

नानाविधपरिमलपत्रपुष्पाणि समर्पयामि॥ धूपमाघ्रापयामि।

अलङ्कारदीपं सन्दर्शयामि।

नैवेद्यम्।

ताम्बूलं समर्पयामि।

कर्पूरनीराजनं समर्पयामि।

कर्पूरनीराजनानन्तरमाचमनीयं समर्पयामि।

वऋतुण्डमहाकाय कोटिसूर्यसमप्रभ। अविघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा॥

प्रार्थनाः समर्पयामि।

अनन्तकोटिप्रदक्षिणनमस्कारान् समर्पयामि।

छत्रचामरादिसमस्तोपचारान् समर्पयामि।

## ॥ प्रधान-पूजा — श्री-सिद्धिवनायक-पूजा॥

शुक्राम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्। प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविद्रोपशान्तये॥

प्राणान् आयम्य। ॐ भूः + भूर्भुवः सुव्रोम्।

#### ॥सङ्कल्पः॥

ममोपात्तसमस्तदुरितक्षयद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं शुभे शोभने मुहूर्ते अद्यब्रह्मणः द्वितीयपरार्द्धे श्वेतवराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे किलयुगे प्रथमे पादे जम्बूद्वीपे भारतवर्षे भरतखण्डे मेरोः दक्षिणेपार्श्वे शकाब्दे अस्मिन् वर्तमाने व्यावहारिके प्रभवादि षष्टिसंवत्सराणां मध्ये () भाम संवत्सरे दक्षिणायने वर्ष-ऋतौ (सिंह/कन्या)-भाद्रपदमासे शुक्रपक्षे चतुर्थ्यां शुभितिथौ () वासरयुक्तायाम् () भावत्य पृणं विशेषण विशिष्टायाम् अस्याम् चतुर्थ्यां शुभितिथौ अस्माकं सकुटुम्बानां क्षेमस्थैर्य-धैर्य-वीर्य-विजय-आयुरारोग्य-ऐश्वर्याभिवृद्धर्थम् धर्मार्थकाममोक्ष-चतुर्विधफलपुरुषार्थसिद्धर्थं पुत्रपौत्राभिवृद्धर्थम् इष्टकाम्यार्थसिद्धर्थं मम इहजन्मिन पूर्वजन्मिन जन्मान्तरे च सम्पादितानां ज्ञानाज्ञानकृतमहा-पातकचतुष्टय-व्यतिरिक्तानां रहस्यकृतानां प्रकाशकृतानां सर्वेषां पापानां सद्य अपनोदनद्वारा सकल-पापक्षयार्थं श्री-सिद्धिविनायक-प्रसादसिद्धर्थं यथाशक्ति-ध्यानावाहनादिषोडशोपचारैः श्री-सिद्धिविनायक-पूजां करिष्ये। तदङ्गं कलशपुजां च करिष्ये।

श्रीविघ्नेश्वराय नमः यथास्थानं प्रतिष्ठापयामि। शोभनार्थे क्षेमाय पुनरागमनाय च।

<sup>&</sup>lt;sup>१७</sup>पृष्टं ५७२ पश्यताम्

१८ पृष्टं ५७३ पश्यताम्

<sup>&</sup>lt;sup>१९</sup>पृष्टं ५७४ पश्यताम्

२°पृष्टं ५७५ पश्यताम्

(गणपति प्रसादं शिरसा गृहीत्वा)

#### ॥ आसन-पूजा॥

पृथिव्या मेरुपृष्ठ ऋषिः। सुतलं छन्दः। कूर्मो देवता॥ पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता। त्वं च धारय मां देवि पवित्रं चाऽऽसनं कुरु॥

#### ॥ घण्टापूजा ॥

आगमार्थं तु देवानां गमनार्थं तु रक्षसाम्। घण्टारवं करोम्यादौ देवताऽऽह्वानकारणम्॥

#### ॥ कलशपूजा॥

ॐ कलशाय नमः दिव्यगन्धान् धारयामि। ॐ गङ्गायै नमः। ॐ यमुनायै नमः। ॐ गोदावर्यै नमः। ॐ सरस्वत्यै नमः। ॐ नर्मदायै नमः। ॐ सिन्धवे नमः। ॐ कावेर्यै नमः। ॐ सप्तकोटिमहातीर्थान्यावाहयामि।

(अथ कलशं स्पृष्ट्वा जपं कुर्यात्) आपो वा इदः सर्वं विश्वां भूतान्यापः प्राणा वा आपः पृशव् आपोऽन्नमापोऽमृतमापः सम्राडापो विराडापः स्वराडापृश्छन्दाः स्यापो ज्योतीः इष्यापो यज्रू इष्यापः सत्यमापः सर्वा देवता आपो भूर्भवः स्वराप ओम्॥

> कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः। मूले तत्र स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः॥

कुक्षौ तु सागराः सर्वे सप्तद्वीपा वसुन्धरा। ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदोऽप्यथर्वणः। अङ्गेश्च सहिताः सर्वे कलशाम्बुसमाश्रिताः॥ गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति। नर्मदे सिन्धुकावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु॥

सर्वे समुद्राः सरितः तीर्थानि च ह्रदा नदाः। आयान्तु विष्णुपूजार्थं दुरितक्षयकारकाः॥ ॐ भूर्भुवः सुवो भूर्भुवः सुवो भूर्भुवः सुवेः।

(इति कलशजलेन सर्वोपकरणानि आत्मानं च प्रोक्ष्य।)

#### ॥ आत्मपूजा॥

ॐ आत्मने नमः, दिव्यगन्धान् धारयामि।

१. ॐ आत्मने नमः ४. ॐ जीवात्मने नमः

२. ॐ अन्तरात्मने नमः ५. ॐ परमात्मने नमः

३. ॐ योगात्मने नमः ६. ॐ ज्ञानात्मने नमः

#### समस्तोपचारान् समर्पयामि।

देहो देवालयः प्रोक्तो जीवो देवः सनातनः। त्यजेदज्ञाननिर्माल्यं सोऽहं भावेन पूजयेत्॥

## ॥ पीठपूजा ॥

१. ॐ आधारशक्त्ये नमः ८. ॐ रत्नवेदिकायै नमः

२. ॐ मूलप्रकृत्यै नमः ९. ॐ स्वर्णस्तम्भाय नमः

३. ॐ आदिकूर्माय नमः १०. ॐ श्वेतच्छत्राय नमः

४. ॐ आदिवराहाय नमः ११. ॐ कल्पकवृक्षाय नमः

५. ॐ अनन्ताय नमः १२. ॐ क्षीरसमुद्राय नमः

६. ॐ पृथिव्यै नमः १३. ॐ सितचामराभ्यां नमः

७. ॐ रत्नमण्डपाय नमः १४. ॐ योगपीठासनाय नमः

#### ॥ गुरु ध्यानम्॥

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुर्गुरुर्देवो महेश्वरः। गुरुः साक्षात् परं ब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः॥

#### ॥ प्राण-प्रतिष्ठा ॥

असुनीते पुनरिति ऋचं पठित्वा गर्भाधानादिपश्चदशसंस्कार सिद्धयर्थं पश्चदशप्रणवावृत्तीः करिष्ये इति सङ्कल्प्य पश्चदशवारं प्रणवमावर्त्य तचक्षुर्देवहितम् इति मन्नेण देवस्याज्येन नेत्रोन्मीलनं कृत्वा पश्चोपचारैः पूजनं कुर्यात्। आसनविधिं कृत्वा पुरुषसूक्त-न्यासान् विधाय पूजनमारभेत्॥

## ॥ षोडशोपचारपूजा॥

करिष्ये गणनाथस्य व्रतं सम्पत्करं शुभम्। भक्तानामिष्टवरदं सर्वमङ्गल-कारणम्॥

एकदन्तं शूर्पकर्णं गजवऋं चतुर्भुजम्। पाशाङ्कुशधरं देवं ध्यायेत् सिद्धिविनायकम्॥

ध्यायेद् देवं महाकायं तप्तकाश्चनसन्निभम्। चतुर्भुजं महाकायं सर्वाभरणभूषितम्॥

दन्ताक्षमाला-परशु-पूर्णमोदक-हस्तकम् । मोदकासक्त-शुण्डाग्रम् एकदन्तं विनायकम्॥

## अस्मिन् बिम्बे/प्रतिमायां/चित्रपटे श्री-सिद्धिविनायकं ध्यायामि।

आवाहयामि विघ्नेश सुरराजार्चितेश्वर। अनाथनाथ सर्वज्ञ पूजार्थं गणनायक॥

स्हस्रंशीर्षा पुरुषः। स्हस्राक्षः स्हस्रंपात्। स भूमिं विश्वतो वृत्वा। अत्यंतिष्ठद्दशाङ्गुलम्॥

## अस्मिन् बिम्बे/प्रतिमायां/चित्रपटे श्री-सिद्धिविनायकम् आवाहयामि।

विचित्ररत्नरचितं दिव्यास्तरणसंयुतम्। स्वर्णसिंहासनं चारु गृहाण सुरपूजित॥

पुरुष पृवेद सर्वम्। यद्भूतं यच् भव्यम्। उतामृतत्वस्येशांनः। यदन्नेनातिरोहंति॥

#### श्री-सिद्धिविनायकाय नमः, आसनं समर्पयामि।

सर्वतीर्थसमानीतं पाद्यं गन्धादिसंयुतम्। विघ्रराज गृहाणेनदं भगवन् भक्तवत्सल॥

प्तावानस्य मिहुमा। अतो ज्यायाईश्च पूर्रुषः। पादौंऽस्य विश्वां भूतानिं। त्रिपादंस्यामृतं दिवि॥ श्री-सिद्धिविनायकाय नमः, पाद्यं समर्पयामि।

अर्घ्यं च फलसंयुक्तं गन्धपुष्पाक्षतैर्युतम्। गणाध्यक्ष नमस्तेऽस्तु गृहाण करुणानिधे॥

त्रिपादूर्ध्व उदैत्पुरुषः। पादौँ उस्येहा ऽऽभंवातपुनेः। ततो विश्वङ्कांकामत्। साशनानशने अभि॥ श्री-सिद्धिविनायकाय नमः, अर्घ्यं समर्पयामि।

विनायक नमस्तुभ्यं त्रिदशैरभिवन्दित। गङ्गाहृतेन तोयेन शीघ्रमाचमनं कुरु॥

तस्माँद्विराडंजायत। विराजो अधि पूर्रुषः। स जातो अत्यंरिच्यत। पृश्चाद्भृमिमथो पुरः॥

श्री-सिद्धिविनायकाय नमः, आचमनीयं समर्पयामि।

दध्याज्यमधुसंयुक्तं मधुपर्कं मयाऽऽहृतम्। गृहाण सर्वलोकेश गणनाथ नमोऽस्तु ते॥

यत्पुरुंषेण ह्विषां। देवा यज्ञमतंन्वत। वसन्तो अस्याऽऽसीदाज्यम्। ग्रीष्म इध्मः श्ररद्धविः॥ श्री-सिद्धिविनायकाय नमः, मधुपर्कं समर्पयामि।

पयो दिध घृतं चैव शर्करामधुसंयुतम्। पञ्चामृतं गृहाणेदं स्नानाय गणनायक॥ श्री-सिद्धिविनायकाय नमः, पञ्चामृतस्नानम् समर्पयामि।

गङ्गादिसर्वतीर्थेभ्य आनीतं तोयमुत्तमम्। भक्त्या समर्पितं तुभ्यं स्नानायाभीष्टदायक॥

स्प्रास्यांऽऽसन् परिधयंः। त्रिः सप्त समिधंः कृताः। देवा यद्यज्ञं तंन्वानाः। अबंध्रन् पुरुषं पृशुम्॥ श्री-सिद्धिविनायकाय नमः, शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि। स्नानानन्तरम् आचमनीयं समर्पयामि।

> रक्तवस्रयुगं देव दिव्यं काश्चनसम्भवम्। सर्वप्रद गृहाणेदं लम्बोदर हरात्मज॥

तं युज्ञं बहिषि प्रौक्षन्। पुरुषं जातमंग्रतः। तेनं देवा अयजन्त। साध्या ऋषयश्च ये॥ श्री-सिद्धिविनायकाय नमः, वस्नं समर्पयामि।

राजतं ब्रह्मसूत्रं च काश्चनं चोत्तरीयकम्। गृहाण चारु सर्वज्ञ भक्तानां वरदो भव॥

तस्मौद्यज्ञाथ्सेर्वहुतेः। सम्भृतं पृषदाज्यम्। पृशू इस्ता इश्चेत्रे वायव्यान्। आरण्यान्ग्राम्याश्च ये॥

#### श्री-सिद्धिविनायकाय नमः, यज्ञोपवीतं समर्पयामि।

उद्यद्भास्करसङ्काशं सन्ध्यावदरुणं प्रभो। वीरालङ्करणं दिव्यं सिन्दूरं प्रतिगृह्यताम्॥

श्री-सिद्धिविनायकाय नमः, सिन्दूरं समर्पयामि।

नानाविधानि दिव्यानि नानारत्नोञ्चलानि च। भूषणानि गृहाणेश पार्वतीप्रियनन्दन॥ श्री-सिद्धिविनायकाय नमः, आभरणानि समर्पयामि।

> कस्तूरीरोचनाचन्द्रकुङ्क्षमेश्च समन्वितम्। विलेपनं सुरश्रेष्ठ चन्दनं प्रतिगृह्यताम्॥

तस्मौद्यज्ञाथ्संर्वृहृतंः। ऋचः सामानि जज्ञिरे। छन्दार्शसे जज्ञिरे तस्मौत्। यजुस्तस्मांदजायत॥

## श्री-सिद्धिविनायकाय नमः, दिव्यपरिमलगन्धान् धारयामि। गन्धस्योपरि हरिद्राकुङ्कुमं समर्पयामि।

रक्ताक्षतांश्च देवेश गृहाण द्विरदानन। ललाटपटले चन्द्रस्तस्योपरि विधार्यताम्॥

श्री-सिद्धिविनायकाय नमः, अक्षतान् समर्पयामि।

माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि मे प्रभो। मयाऽऽहृतानि पुष्पाणि पूजार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

करवीरैर्जातिकुसुमैश्चम्पकैर्बकुलैः शुभैः। शतपत्रेश्च कह्नारैरर्चयेद् गणनायकम्॥

तस्मादश्वां अजायन्त। ये के चोंभयादेतः। गार्वो ह जिज्ञेरे तस्मांत्। तस्मांज्ञाता अजावयः॥

# श्री-सिद्धिविनायकाय नमः, पुष्पाणि समर्पयामि। पुष्पैः पूजयामि। ॥ अङ्गपूजा॥

| ۶.         | पार्वतीनन्दनाय | नमः — पादौ     | पूजयामि |
|------------|----------------|----------------|---------|
| ₹.         | गणेशाय         | नमः — गुल्फो   | पूजयामि |
| ₹.         | जगद्धात्रे     | नमः — जङ्घे    | पूजयामि |
| ٧.         | जगद्वल्लभाय    | नमः — जानुनी   | पूजयामि |
| ۷.         | उमापुत्राय     | नमः — ऊरू      | पूजयामि |
| €.         | विकटाय         | नमः — कटिं     | पूजयामि |
| <i>9</i> . | गुहाग्रजाय     | नमः — गुह्यं   | पूजयामि |
| ۷.         | महत्तमाय       | नमः — मेढ्रं   | पूजयामि |
| ۶.         | नाथाय          | नमः — नाभिं    | पूजयामि |
| १०.        | उत्तमाय        | नमः — उदरं     | पूजयामि |
| ११.        | विनायकाय       | नमः — वक्षः    | पूजयामि |
| १२.        | पाशच्छिदे      | नमः — पार्श्वी | पूजयामि |
| १३.        | हेरम्बाय       | नमः — हृदयं    | पूजयामि |
| १४.        | कपिलाय         | नमः — कण्ठं    | पूजयामि |
| १५.        | स्कन्दाग्रजाय  | नमः — स्कन्धौ  | पूजयामि |
| १६.        | हरसुताय        | नमः — हस्तान्  | पूजयामि |
| १७.        | ब्रह्मचारिणे   | नमः — बाहून्   | पूजयामि |
| १८.        | सुमुखाय        | नमः — मुखं     | पूजयामि |
| १९.        | एकदन्ताय       | नमः — दन्तौ    | पूजयामि |
| २०.        | विघ्ननेत्रे    | नमः — नेत्रे   | पूजयामि |
| २१.        | शूर्पकर्णाय    | नमः — कर्णौ    | पूजयामि |
| २२.        | फालचन्द्राय    | नमः — फालं     | पूजयामि |
| २३.        | नागाभरणाय      | नमः — नासिकां  | पूजयामि |
|            |                |                |         |

| २४. | चिरन्तनाय       | नमः — | चुबुकं         | पूजयामि |
|-----|-----------------|-------|----------------|---------|
| २५. | स्थूलोष्ठाय     | नमः — | ओष्ठौ          | पूजयामि |
| २६. | गलन्मदाय        | नमः — | गण्डो          | पूजयामि |
| २७. | कपिलाय          | नमः — | कचान्          | पूजयामि |
| २८. | शिवप्रियाय      | नमः — | शिरः           | पूजयामि |
| २९. | सर्वमङ्गलासुताय | नमः — | सर्वाण्यङ्गानि | पूजयामि |

## ॥ एकविंशति-पत्र-पूजा॥

| <b>?.</b>  | सुमुखाय       | नमः — मालती       | -पत्रं समर्पयामि  |
|------------|---------------|-------------------|-------------------|
| २.         | उमापुत्राय    | नमः — माची        | -पत्रं समर्पयामि  |
| ₹.         | हेरम्बाय      | नमः — बृहती       | -पत्रं समर्पयामि  |
| ٧.         | लम्बोदराय     | नमः — बिल्व       | -पत्रं समर्पयामि  |
| <b>4.</b>  | द्विरदाननाय   | नमः — दूर्वा      | -पत्रं समर्पयामि  |
| ξ.         | धूमकेतवे      | नमः — दुर्धूर     | -पत्रं समर्पयामि  |
| <i>७</i> . | बृहते         | नमः — बदरी        | -पत्रं समर्पयामि  |
| ۷.         | अपवर्गदाय     | नमः — अपामार्ग    | -पत्रं समर्पयामि  |
| ۶.         | द्वेमातुराय   | नमः — तुलसी       | -पत्रं समर्पयामि  |
| १०.        | चिरन्तनाय     | नमः — चूत         | -पत्रं समर्पयामि  |
| ११.        | कपिलाय        | नमः — करवीर       | -पत्रं समर्पयामि  |
| १२.        | विष्णुस्तुताय | नमः — विष्णुकान्त | ा-पत्रं समर्पयामि |
| १३.        | अमलाय         | नमः — आमलकी       | -पत्रं समर्पयामि  |
| १४.        | महते          | नमः — मरुवक       | -पत्रं समर्पयामि  |
| १५.        | सिन्धूराय     | नमः — सिन्धूर     | -पत्रं समर्पयामि  |
| १६.        | गजाननाय       | नमः — जाती        | -पत्रं समर्पयामि  |
| १७.        | गण्डगलन्मदाय  | नमः — गण्डली      | -पत्रं समर्पयामि  |
|            |               |                   |                   |

- १८. शङ्करीप्रियाय नमः शमी -पत्रं समर्पयामि
- १९. भृङ्गजत्कटाय नमः भृङ्गराज -पत्रं समर्पयामि
- २०. अर्जुनदन्ताय नमः अर्जुन -पत्रं समर्पयामि
- २१. अर्कप्रभाय नमः अर्क -पत्रं समर्पयामि

## ॥ एकविंशति-पुष्प-पूजा॥

| የ.         | पश्चास्य   | -गणपतये नमः — पुन्नाग   | -पुष्पं समर्पयामि |
|------------|------------|-------------------------|-------------------|
| ₹.         | महा        | -गणपतये नमः — मन्दार    | -पुष्पं समर्पयामि |
| ₹.         | धीर        | -गणपतये नमः — दाडिमी    | -पुष्पं समर्पयामि |
| ٧.         | विष्वक्से  | न-गणपतये नमः — वकुल     | -पुष्पं समर्पयामि |
| <b>4.</b>  | आमोद       | -गणपतये नमः — अमृणाल    | -पुष्पं समर्पयामि |
| ξ.         | प्रमथ      | -गणपतये नमः — पाटली     | -पुष्पं समर्पयामि |
| <i>७</i> . | रुद्र      | -गणपतये नमः — द्रोण     | -पुष्पं समर्पयामि |
| ۷.         | विद्या     | -गणपतये नमः — दुर्धूर   | -पुष्पं समर्पयामि |
| ۶.         | विघ्न      | -गणपतये नमः — चम्पक     | -पुष्पं समर्पयामि |
| १०.        | दुरित      | -गणपतये नमः — रसाल      | -पुष्पं समर्पयामि |
| ११.        | कामिताथ    | र्ग-गणपतये नमः — केतकी  | -पुष्पं समर्पयामि |
| १२.        | सम्मोह     | -गणपतये नमः — माधवी     | -पुष्पं समर्पयामि |
| १३.        | विष्णु     | -गणपतये नमः — श्यामक    | -पुष्पं समर्पयामि |
| १४.        | ईश         | -गणपतये नमः — अर्क      | -पुष्पं समर्पयामि |
| १५.        | गजास्य     | -गणपतये नमः — कह्वार    | -पुष्पं समर्पयामि |
| १६.        | सर्वसिद्धि | -गणपतये नमः — सेवन्तिका | -पुष्पं समर्पयामि |
| १७.        | वीर        | -गणपतये नमः — बिल्व     | -पुष्पं समर्पयामि |
| १८.        | कन्दर्प    | -गणपतये नमः — करवीर     | -पुष्पं समर्पयामि |
| १९         | उच्छिष्ट   | -गणपतये नमः — कन्द      | -पष्पं समर्पयामि  |

२०. ब्रह्म -गणपतये नमः — पारिजात -पुष्पं समर्पयामि

२१. ज्ञान -गणपतये नमः — जाती -पुष्पं समर्पयामि

## ॥ एकविंशति-दूर्वायुग्म-पूजा॥

नमः — दूर्वायुग्मं समर्पयामि। गणाधिपाय ξ. नमः — दूर्वायुग्मं समर्पयामि। पाशाङ्कुशधराय ₹. नमः — दूर्वायुग्मं समर्पयामि। आखुवाहनाय ₹. नमः — दूर्वायुग्मं समर्पयामि। विनायकाय 8. नमः — दूर्वायुग्मं समर्पयामि। ईशपुत्राय ٤. नमः — दूर्वायुग्मं समर्पयामि। सर्वसिद्धि-प्रदाय नमः — दूर्वायुग्मं समर्पयामि। 6 एकदन्ताय नमः — दूर्वायुग्मं समर्पयामि। इभवऋाय नमः — दूर्वायुग्मं समर्पयामि। मूषिकवाहनाय नमः — दूर्वायुग्मं समर्पयामि। १०. कुमारगुरवे नमः — दूर्वायुग्मं समर्पयामि। कपिलवर्णाय ११. नमः — दूर्वायुग्मं समर्पयामि। ब्रह्मचारिणे १२. नमः — दूर्वायुग्मं समर्पयामि। मोदकहस्ताय १३. नमः — दूर्वायुग्मं समर्पयामि। सुरश्रेष्ठाय १४. नमः — दूर्वायुग्मं समर्पयामि। गजनासिकाय १५. कपित्थफल-प्रियाय नमः — दूर्वायुग्मं समर्पयामि। १६. नमः — दूर्वायुग्मं समर्पयामि। .ए१ गजमुखाय नमः — दूर्वायुग्मं समर्पयामि। १८. सुप्रसन्नाय नमः — दूर्वायुग्मं समर्पयामि। १९. सुराग्रजाय नमः — दूर्वायुग्मं समर्पयामि। उमापुत्राय २०. नमः — दूर्वायुग्मं समर्पयामि। स्कन्दप्रियाय २१.

## ॥ गणपत्यष्टोत्तरशतनामाविलः॥

गणेश्वराय नमः गणक्रीडाय नमः महागणपतये नमः विश्वकर्त्र नमः विश्वमुखाय नमः दुर्जयाय नमः धूर्जयाय नमः जयाय नमः स्रूपाय नमः सर्वनेत्राधिवासाय नमः 80 वीरासनाश्रयाय नमः योगाधिपाय नमः तारकस्थाय नमः पुरुषाय नमः गजकर्णकाय नमः चित्राङ्गाय नमः श्यामदशनाय नमः भालचन्द्राय नमः चतुर्भुजाय नमः शम्भुतेजसे नमः २० यज्ञकायाय नमः सर्वात्मने नमः सामबृंहिताय नमः कुलाचलांसाय नमः व्योमनाभये नमः

कल्पद्रुमवनालयाय नमः निम्ननाभये नमः स्थूलकुक्षये नमः पीनवक्षसे नमः बृहद्भुजाय नमः 30 पीनस्कन्धाय नमः कम्बुकण्ठाय नमः लम्बोष्ठाय नमः लम्बनासिकाय नमः सर्वावयवसम्पूर्णाय नमः सर्वलक्षणलक्षिताय नमः इक्ष्चापधराय नमः शुलिने नमः कान्तिकन्दलिताश्रयाय नमः अक्षमालाधराय नमः 80 ज्ञानमुद्रावते नमः विजयावहाय नमः कामिनी-कामना-काम-मालिनी-केलि-लालिताय नमः अमोघसिद्धये नमः आधाराय नमः आधाराधेयवर्जिताय नमः इन्दीवरदलश्यामाय नमः इन्दुमण्डलनिर्मलाय नमः कर्मसाक्षिणे नमः

| गणपत्यष्टात्तरशतनामावालः |    |                           | 268 |
|--------------------------|----|---------------------------|-----|
| कर्मकर्त्रे नमः          | ५० | वन्द्याय नमः              |     |
| कर्माकर्मफलप्रदाय नमः    |    | वज्रनिवारणाय नमः          |     |
| कमण्डलुधराय नमः          |    | विश्वकर्त्रे नमः          |     |
| कल्पाय नमः               |    | विश्वचक्षुषे नमः          | ८०  |
| कपर्दिने नमः             |    | हवनाय नमः                 |     |
| कटिसूत्रभृते नमः         |    | हव्यकव्यभुजे नमः          |     |
| कारुण्यदेहाय नमः         |    | स्वतन्त्राय नमः           |     |
| कपिलाय नमः               |    | सत्यसङ्कल्पाय नमः         |     |
| गुह्यागमनिरूपिताय नमः    |    | सौभाग्यवर्धनाय नमः        |     |
| गुहाशयाय नमः             |    | कीर्तिदाय नमः             |     |
| गुहाब्धिस्थाय नमः        | ६० | शोकहारिणे नमः             |     |
| घटकुम्भाय नमः            |    | त्रिवर्गफलदायकाय नमः      |     |
| घटोदराय नमः              |    | चतुर्बाहवे नमः            |     |
| पूर्णानन्दाय नमः         |    | चतुर्दन्ताय नमः           | ९०  |
| परानन्दाय नमः            |    | चतुर्थी-तिथि-सम्भवाय नमः  |     |
| धनदाय नमः                |    | सहस्रशीर्ष्णे पुरुषाय नमः |     |
| धरणीधराय नमः             |    | सहस्राक्षाय नमः           |     |
| बृहत्तमाय नमः            |    | सहस्रपदे नमः              |     |
| ब्रह्मपराय नमः           |    | कामरूपाय नमः              |     |
| ब्रह्मण्याय नमः          |    | कामगतये नमः               |     |
| ब्रह्मवित्प्रियाय नमः    | 90 | द्विरदाय नमः              |     |
| भव्याय नमः               |    | द्वीपरक्षकाय नमः          |     |
| भूतालयाय नमः             |    | क्षेत्राधिपाय नमः         |     |
| भोगदात्रे नमः            |    | क्षमाभर्त्रे नमः          | १०० |
| महामनसे नमः              |    | लयस्थाय नमः               |     |
| वरेण्याय नमः             |    | लड्डुकप्रियाय नमः         |     |
| वामदेवाय नमः             |    | प्रतिवादिमुखस्तम्भाय नमः  |     |
|                          |    |                           |     |
|                          |    |                           |     |

दुष्टचित्तप्रसादनाय नमः भगवते नमः भक्तिसुलभाय नमः याज्ञिकाय नमः याजकप्रियाय नमः

॥इति श्री गणेशपुराणे उपासनाखण्डे श्री गणपत्यष्टोत्तरशतनामाविलः सम्पूर्णा॥

> दशाङ्गं गुग्गुलुं धूपं सुगन्धं च मनोहरम्। गृहाण सर्वदेवेश उमापुत्र नमोऽस्तु ते॥

यत्पुर्रुषं व्यंदधुः। कृतिधा व्यंकल्पयन्। मुखं किमस्य को बाहू। कावूरू पादांवुच्येते॥

श्री-सिद्धिविनायकाय नमः, धूपमाघ्रापयामि।

सर्वज्ञ सर्वलोकेश त्रैलोक्यतिमिरापह। गृहाण मङ्गलं दीपं रुद्रप्रिय नमोऽस्तु ते॥

ब्राह्मणौऽस्य मुखंमासीत्। बाहू रांजन्यः कृतः। ऊरू तदंस्य यद्वैश्यः। पुद्धाः शूद्रो अंजायत॥

उद्दींप्यस्व जातवेदोऽपृघ्नित्रर्ऋतिं ममं।
पृश्क्ष्य मह्यमावंह जीवंनं च दिशों दिश॥
मा नों हिश्सीज्ञातवेदो गामश्वं पुरुषं जगंत्।
अविंश्रदग्र आगंहि श्रिया मा परिपातय॥
श्री-सिद्धिविनायकाय नमः, अलङ्कारदीपं सन्दर्शयामि।
दीपानन्तरम् आचमनीयं समर्पयामि।

ॐ भूर्भुवः सुवंः। + ब्रह्मणे स्वाहाँ।

चन्द्रमा मनंसो जातः। चक्षोः सूर्यो अजायत। मुखादिन्द्रेश्चाग्निश्चे। प्राणाद्वायुरंजायत॥

नानाखाद्यमयं दिव्यं नैवेद्यं ते निवेदितम्। मया भक्त्या शिवापुत्र गृहाण गणनायक॥

श्री-सिद्धिविनायकाय नमः, () निवेदयामि, अमृतापिधानमसि। निवेदनानन्तरम् आचमनीयं समर्पयामि।

एलोशीरलवङ्गादिकर्पूरपरिवासितम् । प्राशनार्थं कृतं तोयं गृहाण गणनायक॥ मध्ये मध्ये पानीयं समर्पयामि। उत्तरापोशनं मुखप्रक्षालनं च समर्पयामि।

> मलयाचलसम्भूतं कर्पूरेण समन्वितम्। करोद्वर्तनकं चारु गृह्यतां जगतः पते॥ करोद्वर्तनम् समर्पयामि।

बीजपूराम्रपनसखजूरीकदलीफलम् । नारिकेलफलं दिव्यं गृहाण गणनायक॥

इदं फलं मया देव स्थापितं पुरतस्तव। तेन मे सफलावाप्तिर्भवेज्जन्मनि जन्मनि॥

श्री-सिद्धिविनायकाय नमः, फलं समर्पयामि।

एकविंशतिसङ्ख्याकान् मोदकान् घृतपाचितान्। नैवेद्यं सफलं दद्यान्नमस्ते विघ्ननाशिने॥

श्री-सिद्धिविनायकाय नमः, मोदकान् समर्पयामि।

पूगीफलं महिद्दव्यं नागवल्ल्या दलैर्युतम्। कर्पूरैलासमायुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्॥ नाभ्यां आसीदन्तिरक्षिम्। शीष्णों द्यौः समंवर्तत। पुद्धां भूमिर्दिशः श्रोत्रात। तथां लोकाः अंकल्पयन्॥ श्री-सिद्धिविनायकाय नमः, कर्पूरताम्बूलं समर्पयामि।

वज्रमाणिक्यवैदूर्यमुक्ताविद्रुममण्डितम्। पुष्परागसमायुक्तं भूषणं प्रतिगृह्यताम्॥ श्री-सिद्धिविनायकाय नमः, भूषणानि समर्पयामि।

दूर्वायुग्मं गृहीत्वा तु गन्धपुष्पाक्षतैर्युतम्। पूजयेत्सिद्धिविघ्नेशं प्रत्येकं पूर्वनामभिः॥

गणाधिप नमस्तेऽस्तु उमापुत्राघनाशन। एकदन्तेभवक्रेति तथा मूषकवाहन॥

विनायकेशपुत्रेति सर्वसिद्धिप्रदायक। कुमारगुरवे नित्यं पूजनीयः प्रयत्नतः॥

इति दूर्वार्पणम्॥

नमो व्रातपतये नमो गणपतये नमः प्रमथपतये नमस्ते अस्तु लम्बोदरायैकदन्ताय विघ्नविनाशिने शिवसुताय श्रीवरदमूर्तये नमो नमः॥

> विघ्नेश्वर विशालाक्ष सर्वाभीष्टफलप्रद। प्रदक्षिणं करोमि त्वां सर्वान्कामान् प्रयच्छ मे॥

चन्द्रादित्यौ च धरणी विद्युदग्निस्तथैव च। त्वमेव सर्वतेजांसि आर्तिक्यं प्रतिगृह्यताम्॥

वेदाहमेतं पुरुषं महान्तम्। आदित्यवंर्णं तमंस्सतु पारे। सर्वाणि रूपाणि विचित्य धीरंः। नामांनि कृत्वाऽभिवदन् यदास्ते॥

श्री-सिद्धिविनायकाय नमः, समस्त-अपराध-क्षमापनार्थं कर्पूरनीराजनं दर्शयामि।

कर्पूरनीरजनानन्तरम् आचमनीयं समर्पयामि। रक्षां धारयामि। पुष्पैः पूजयामि।

धाता पुरस्ताद्यमुंदाज्हारं। श्राकः प्रविद्वान् प्रदिश्श्चतंस्रः। तमेवं विद्वानमृतं इह भंवति। नान्यः पन्था अर्यनाय विद्यते॥ योऽपां पुष्पं वेदं। पुष्पंवान् प्रजावान् पशुमान् भंवति। चन्द्रमा वा अपां पुष्पम्। पुष्पंवान् प्रजावान् पशुमान् भंवति। य एवं वेदं। योऽपामायतंनं वेदं। आयतंनवान् भवति।

ओं तद्वृह्म। ओं तद्वायुः। ओं तदात्मा। ओं तथ्सुत्यम्। ओं तथ्सर्वम्। ओं तत्पुरोुर्नमः॥

अन्तश्चरितं भूतेषु गुहायां विश्वमूर्तिषु। त्वं यज्ञस्त्वं वषद्कारस्त्वमिन्द्रस्त्वः रुद्रस्त्वं विष्णुस्त्वं ब्रह्म त्वं प्रजापितः। त्वं तदाप आपो ज्योती रसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः सुवरोम्॥

यो वेदादौ स्वंरः प्रोक्तो वेदान्ते च प्रतिष्ठितः। तस्यं प्रकृतिंलीनस्य यः परंः स महेश्वंरः॥ श्री-सिद्धिविनायकाय नमः, वेदोक्तमन्नपुष्पाञ्जलिं समर्पयामि।

> नमस्ते विघ्नसंहत्रे नमस्ते ईप्सितप्रद। नमस्ते देवदेवेश नमस्ते गणनायक॥

विनायकेशपुत्रस्त्वं गजराज सुरोत्तम देहि मे सकलान् कामान् वन्दे सिद्धिविनायक

स।

स्प्तास्यांऽऽसन् परि्धयः। त्रिः स्प्ति स्मिधः कृताः देवा यद्यज्ञं तन्वानाः। अबंधुन् पुंरुषं पृशुम् श्री-सिद्धिविनायकाय नमः, नमस्कारान् समर्पयामि।

युज्ञेनं युज्ञमंयजन्त देवाः। तानि धर्माणि प्रथमान्यांसन्। ते ह् नाकं महिमानः सचन्ते। यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः॥ श्री-सिद्धिविनायकाय नमः, छत्रचामर-नृत्त-गीत-वाद्यादि

समस्तराजोपचारान् समर्पयामि।

यन्मयाऽऽचरितं देव व्रतमेतत् सुदुर्लभम्। गणेश त्वं प्रसन्नः सन् सफलं कुरु सर्वदा॥

विनायक गणेशान सर्वदेवनमस्कृत। पार्वतीप्रिय विघ्नेश मम विघ्नान्निवारय॥

नमो नमो गणेशाय नमस्ते विश्वरूपिणे। निर्विघ्नं कुरु मे कामं नमामि त्वां गजानन॥

अगजाननपद्मार्कं गजाननमहर्निशम्। अनेकदं तं भक्तानाम् एकदन्तमुपास्महे॥

विनायक वरं देहि महात्मन् मोदकप्रिय। अविघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा॥

प्रार्थनाः समर्पयामि।

## ॥ अर्घ्यम्॥

ममोपात्तसमस्तदुरितक्षयद्वारा श्री-सिद्धिविनायक-प्रीत्यर्थं श्री-सिद्धिविनायक-पूजान्ते क्षीरार्घ्यप्रदानं करिष्ये॥

(हस्ते साक्षतपुष्पं क्षीरं गृहीत्वा)

अर्घ्यं गृहाण हेरम्ब वरप्रद विनायक। गन्धपुष्पाक्षतैर्युक्तं भक्त्या दत्तं मया प्रभो॥१॥

## श्री-सिद्धिविनायकाय नमः, इदमर्घ्यम् इदमर्घ्यम्।

नमस्ते भिन्नदन्ताय नमस्ते हरसूनवे। इदमर्घ्यं प्रदास्यामि गृहाण गणनायक॥२॥

श्री-सिद्धिविनायकाय नमः, इदमर्घ्यम् इदमर्घ्यम्।

नमस्तुभ्यं गणेशाय नमस्ते विघ्ननायक। पुनरर्घ्यं प्रदास्यामि गृहाण गणनायक॥३॥

श्री-सिद्धिविनायकाय नमः, इदमर्घ्यम् इदमर्घ्यम्।

#### ॥ उपायन-दानम्॥

आचार्य पूजा

अद्यपूर्वोक्त-एवङ्गुण-विशेषण-विशिष्टायामस्यां चतुर्थ्यां शुभितिथौ श्री-सिद्धिविनायक-पूजा-फलसिद्धार्थं ब्राह्मणपूजाम् उपायन-दानं च करिष्ये॥ श्री-महागणपित-स्वरूपस्य ब्राह्मणस्य इदमासनम्। गन्धादि-सकलाराधनैः स्वर्चितम्॥

[अथैकविंशतिं गृह्य मोदकान् घृतपाचितान्। स्थापयित्वा गणाध्यक्षसमीपे कुरुनन्दन॥

दश विप्राय दातव्याः स्थापयेद् दश आत्मिन। एकं गणाधिपे दद्यात् सघृतं मोदकं शुभम्]॥ वायनमन्त्रः

दशानां मोदकानां च फलदक्षिणया युतम्। विप्राय फलसिद्धयर्थं वायनं प्रददाम्यहम्॥ प्रतिमा-दान-मन्त्रः

विनायकस्य प्रतिमां वस्त्रयुग्मेन वेष्टिताम्। तुभ्यं सम्प्रददे विप्र प्रीयतां में गजाननः॥

गणेशः प्रतिगृह्णाति गणेशो वै ददाति च। गणेशस्तारकोभाभ्यां गणेशाय नमो नमः॥ हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः। अनन्तपुण्यफलदम् अतः शान्तिं प्रयच्छ मे॥

श्री-विनायक-चतुर्थी-पुण्यकाले अस्मिन् मया क्रियमाण-श्री-सिद्धिविनायक-पूजायां यद्देयमुपायनदानं तत्प्रत्यायाम्नार्थं हिरण्यं श्री-सिद्धिविनायक-प्रीतिं कामयमानः मनसोद्दिष्टाय ब्राह्मणाय सम्प्रददे नमः न मम।

अनया पूजया श्री-सिद्धिविनायकः प्रीयताम्।

## ॥ प्रार्थना ॥ ॥ महागणेशपश्चरत्नम् ॥

मुदाकरात्तमोदकं सदाविमुक्तिसाधकम् कलाधरावतंसकं विलासिलोकरक्षकम्। अनायकैकनायकं विनाशितेभदैत्यकम् नताशुभाशुनाशकं नमामि तं विनायकम्॥१॥

नतेतरातिभीकरं नवोदितार्कभास्वरम् नमत्सुरारिनिर्जरं नताधिकापदुद्धरम्। सुरेश्वरं निधीश्वरं गजेश्वरं गणेश्वरम् महेश्वरं तमाश्रये परात्परं निरन्तरम्॥२॥

समस्तलोकशङ्करं निरस्तदैत्यकुञ्जरम् दरेतरोदरं वरं वरेभवऋमक्षरम्। कृपाकरं क्षमाकरं मुदाकरं यशस्करम् मनस्करं नमस्कृतां नमस्करोमि भास्वरम्॥३॥

अिकश्चनार्तिमार्जनं चिरन्तनोक्तिभाजनम् पुरारिपूर्वनन्दनं सुरारिगर्वचर्वणम्। प्रपञ्चनाशभीषणं धनञ्जयादिभूषणम् कपोलदानवारणं भजे पुराणवारणम्॥४॥ नितान्तकान्तदन्तकान्तिमन्तकान्तकात्मजम् अचिन्त्यरूपमन्तहीनमन्तरायकृन्तनम् । हृदन्तरे निरन्तरं वसन्तमेव योगिनाम् तमेकदन्तमेव तं विचिन्तयामि सन्ततम्॥५॥

महागणेशपश्चरत्नमादरेण योऽन्वहम् प्रजल्पति प्रभातके हृदि स्मरन् गणेश्वरम्। अरोगतामदोषतां सुसाहितीं सुपुत्रताम् समाहितायुरष्टभूतिमभ्युपैति सोऽचिरात्॥

॥इति श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यस्य श्री-गोविन्द-भगवत्पूज्य-पाद-शिष्यस्य श्रीमच्छङ्करभगवतः कृतौ श्री-महागणेशपञ्चरत्नं सम्पूर्णम्॥

## ॥ गणेशभुजङ्गम्॥

रणत् क्षुद्रघण्टानिनादाभिरामम् चलत् ताण्डवोद्दण्डवत्पद्मतालम्। लसत् तुन्दिलाङ्गोपरिव्यालहारम् गणाधीशमीशानसूनुं तमीडे॥१॥

ध्वनिध्वंसवीणालयोल्लासिवऋम् स्फुरच्छुण्डदण्डोल्लसद्बीजपूरम्। गलद्दर्पसौगन्ध्यलोलालिमालम् गणाधीशमीशानसूनुं तमीडे॥२॥

प्रकाशञ्जपारक्तरन्तप्रसून-प्रवालप्रभातारुणज्योतिरेकम्। प्रलम्बोदरं वऋतुण्डैकदन्तम् गणाधीशमीशानसुनुं तमीडे॥३॥ विचित्रस्फुरद्रलमालाकिरीटम् किरीटोल्लसचन्द्ररेखाविभूषम्। विभूषेकभूषं भवध्वंसहेतुम् गणाधीशमीशानसूनुं तमीडे॥४॥

उदश्चद्भुजावल्लरीदृश्यमूलोच्-चलद्-भ्रूलता-विभ्रमभ्राजदक्षम्। मरुत् सुन्दरीचामरैः सेव्यमानम् गणाधीशमीशानसूनुं तमीडे॥५॥

स्फुरन्निष्ठुरालोलपिङ्गाक्षितारम् कृपाकोमलोदारलीलावतारम्। कलाबिन्दुगं गीयते योगिवर्यैर्-गणाधीशमीशानसूनुं तमीडे॥६॥

यमेकाक्षरं निर्मलं निर्विकल्पम् गुणातीतमानन्दमाकारशून्यम्। परं पारमोङ्कारमाम्नायगर्भम् वदन्ति प्रगल्भं पुराणं तमीडे॥७॥

चिदानन्दसान्द्राय शान्ताय तुभ्यम् नमो विश्वकर्त्रे च हर्त्रे च तुभ्यम्। नमोऽनन्तलीलाय कैवल्यभासे नमो विश्वबीज प्रसीदेशसूनो॥८॥

इमं सुस्तवं प्रातरुत्थाय भक्त्या पठेद्यस्तु मर्त्यो लभेत्सर्वकामान्। गणेशप्रसादेन सिद्धान्ति वाचो गणेशे विभौ दुर्लभं किं प्रसन्ने॥९॥

॥इति श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यस्य श्री-गोविन्द-भगवत्पूज्य-पाद-शिष्यस्य श्रीमच्छङ्करभगवतः कृतौ श्री-गणेशभुजङ्गं सम्पूर्णम्॥

## ॥ वक्रतुण्डमहागणपतिसहस्रनामस्तोत्रम्॥ मुनिरुवाच

कथं नाम्नां सहस्रं तं गणेश उपदिष्टवान्। शिवदं तन्ममाचक्ष्व लोकानुग्रहतत्पर॥१॥

#### ब्रह्मोवाच

देवः पूर्वं पुरारातिः पुरत्रयजयोद्यमे। अनर्चनाद्गणेशस्य जातो विघ्नाकुलः किल॥२॥

मनसा स विनिर्धार्य ददृशे विघ्नकारणम्। महागणपतिं भक्त्या समभ्यर्च्य यथाविधि॥३॥

विघ्नप्रशमनोपायमपृच्छदपरिश्रमम् । सन्तुष्टः पूजया शम्भोर्महागणपतिः स्वयम्॥४॥

सर्वविघ्रप्रशमनं सर्वकामफलप्रदम्। ततस्तस्मै स्वयं नाम्नां सहस्रमिदमब्रवीत्॥५॥

अस्य श्रीवऋतुण्डमहागणपितसहस्रनामस्तोत्रमन्नस्य महागणपितऋषिः। अनुष्टुप् छन्दः। महागणपितर्देवता। गं बीजम्। हुं शक्तिः। स्वाहा कीलकम्। चतुर्विधपुरुषार्थसिद्धार्थे जपे विनियोगः।

#### ॥ करन्यासः ॥

गणेश्वरो गणकीड इत्यङ्गुष्ठाभ्यां नमः। कुमारगुरुरीशान इति तर्जनीभ्यां नमः। ब्रह्माण्डकुम्भश्चिद्योमेति मध्यमाभ्यां नमः। रक्तो रक्ताम्बरधर इत्यनामिकाभ्यां नमः। सर्वसद्गुरुसंसेव्य इति कनिष्ठिकाभ्यां नमः। लुप्तविघ्नः स्वभक्तानामिति करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

## ॥ हृद्यादिन्यासः॥

छन्दश्छन्दोद्भव इति हृदयाय नमः। निष्कलो निर्मल इति शिरसे स्वाहा। सृष्टिस्थितिलयक्रीड इति शिखायै वषट्। ज्ञानं विज्ञानमानन्द इति कवचाय हुम्। अष्टाङ्गयोगफलभृदिति नेत्रत्रयाय वौषट्। अनन्तशक्तिसहित इत्यस्राय फट्। भूर्भुवः स्वरोम् इति दिग्बन्धः।

### ॥ ध्यानम्॥

गजवदनमचिन्त्यं तीक्ष्णदंष्ट्रं त्रिनेत्रम् बृहदुदरमशेषं भूतिराजं पुराणम्। अमरवरसुपूज्यं रक्तवर्णं सुरेशम् पशुपतिसुतमीशं विघ्नराजं नमामि॥

खर्वं स्थूलतनुं गजेन्द्रवदनं लम्बोदरं सुन्दरम् प्रस्यन्दन्मदगन्धलुब्धमधुपव्यालोलगण्डस्थलम्। दन्ताघातविदारितारिरुधिरैः सिन्दूरशोभाकरम् वन्दे शैलसुतासुतं गणपतिं सिद्धिप्रदं कामदम्॥

सकलविघ्नविनाशनद्वारा श्रीमहागणपतिप्रसादसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

## ॥स्तोत्रम्॥

## श्रीगणपतिरुवाच

ॐ गणेश्वरो गणकीडो गणनाथो गणाधिपः। एकदन्तो वऋतुण्डो गजवक्रो महोदरः॥१॥

लम्बोदरो धूम्रवर्णो विकटो विघ्ननाशनः। सुमुखो दुर्मुखो बुद्धो विघ्नराजो गजाननः॥२॥ भीमः प्रमोद आमोदः सुरानन्दो मदोत्कटः। हेरम्बः शम्बरः शम्भुर्लम्बकर्णो महाबलः॥३॥

नन्दनो लम्पटो भीमो मेघनादो गणञ्जयः। विनायको विरूपाक्षो वीरः शूरवरप्रदः॥४॥

महागणपतिर्बुद्धिप्रियः क्षिप्रप्रसादनः। रुद्रप्रियो गणाध्यक्ष उमापुत्रोऽघनाशनः॥५॥

कुमारगुरुरीशानपुत्रो मूषकवाहनः। सिद्धिप्रियः सिद्धिपतिः सिद्धः सिद्धिविनायकः॥६॥

अविघ्नस्तुम्बुरुः सिंहवाहनो मोहिनीप्रियः। कटङ्कटो राजपुत्रः शाकलः सम्मितोऽमितः॥७॥

कूष्माण्डसामसम्भूतिर्दुर्जयो धूर्जयो जयः। भूपतिर्भुवनपतिर्भूतानां पतिरव्ययः॥८॥

विश्वकर्ता विश्वमुखो विश्वरूपो निधिर्गुणः। कविः कवीनामृषभो ब्रह्मण्यो ब्रह्मवित्प्रियः॥९॥

ज्येष्ठराजो निधिपतिर्निधिप्रियपतिप्रियः। हिरण्मयपुरान्तःस्थः सूर्यमण्डलमध्यगः॥१०॥

कराहतिध्वस्तसिन्धुसिललः पूषदन्तभित्। उमाङ्क्षकेलिकुतुकी मुक्तिदः कुलपावनः॥११॥

किरीटी कुण्डली हारी वनमाली मनोमयः। वैमुख्यहतदैत्यश्रीः पादाहतिजितक्षितिः॥१२॥

सद्योजातः स्वर्णमुञ्जमेखली दुर्निमित्तहृत्। दुःस्वप्नहृत्प्रसहनो गुणी नादप्रतिष्ठितः॥१३॥

सुरूपः सर्वनेत्राधिवासो वीरासनाश्रयः। पीताम्बरः खण्डरदः खण्डवैशाखसंस्थितः॥१४॥ चित्राङ्गः श्यामदशनो भालचन्द्रो हविर्भुजः। योगाधिपस्तारकस्थः पुरुषो गजकर्णकः॥१५॥

गणाधिराजो विजयः स्थिरो गजपतिर्ध्वजी। देवदेवः स्मरः प्राणदीपको वायुकीलकः॥१६॥

विपश्चिद्वरदो नादो नादभिन्नमहाचलः। वराहरदनो मृत्युञ्जयो व्याघ्राजिनाम्बरः॥१७॥

इच्छाशक्तिभवो देवत्राता दैत्यविमर्दनः। शम्भुवऋोद्भवः शम्भुकोपहा शम्भुहास्यभूः॥१८॥

शम्भुतेजाः शिवाशोकहारी गौरीसुखावहः। उमाङ्गमलजो गौरीतेजोभूः स्वर्धुनीभवः॥१९॥

यज्ञकायो महानादो गिरिवर्ष्मा शुभाननः। सर्वात्मा सर्वदेवात्मा ब्रह्ममूर्धा ककुप्श्रुतिः॥२०॥

ब्रह्माण्डकुम्भश्चिद्योमभालःसत्यशिरोरुहः। जगञ्जन्मलयोन्मेषनिमेषोऽग्न्यर्कसोमदक्॥२१॥

गिरीन्द्रैकरदो धर्माधर्मोष्ठः सामबृंहितः। ग्रहर्क्षदशनो वाणीजिह्वो वासवनासिकः॥२२॥

भूमध्यसंस्थितकरो ब्रह्मविद्यामदोदकः। कुलाचलांसः सोमार्कघण्टो रुद्रशिरोधरः॥२३॥

नदीनदभुजः सर्पाङ्गुलीकस्तारकानखः। व्योमनाभिः श्रीहृदयो मेरुपृष्ठोऽर्णवोदरः॥२४॥

कुक्षिस्थयक्षगन्धर्वरक्षःकिन्नरमानुषः । पृथ्वीकटिः सृष्टिलिङ्गः शैलोरुर्दस्रजानुकः॥२५॥

पातालजङ्घो मुनिपात्कालाङ्गुष्ठस्रयीतनुः। ज्योतिर्मण्डललाङ्गुलो हृदयालाननिश्चलः॥२६॥ हृत्पद्मकर्णिकाशाली वियत्केलिसरोवरः। सद्भक्तध्याननिगडः पूजावारिनिवारितः॥२७॥

प्रतापी काश्यपो मन्ता गणको विष्टपी बली। यशस्वी धार्मिको जेता प्रथमः प्रमथेश्वरः॥२८॥

चिन्तामणिर्द्वीपपतिः कल्पद्रुमवनालयः। रत्नमण्डपमध्यस्थो रत्नसिंहासनाश्रयः॥२९॥

तीव्राशिरोद्धृतपदो ज्वालिनीमौलिलालितः। नन्दानन्दितपीठश्रीर्भोगदो भूषितासनः॥३०॥

सकामदायिनीपीठः स्फुरदुग्रासनाश्रयः। तेजोवतीशिरोरत्नं सत्यानित्यावतंसितः॥३१॥

सविघ्ननाशिनीपीठः सर्वशक्त्यम्बुजालयः। लिपिपद्मासनाधारो वह्निधामत्रयालयः॥३२॥

उन्नतप्रपदो गूढगुल्फः संवृतपार्ष्णिकः। पीनजङ्घः श्लिष्टजानुः स्थूलोरुः प्रोन्नमत्कटिः॥३३॥

निम्ननाभिः स्थूलकुक्षिः पीनवक्षा बृहद्भुजः। पीनस्कन्धः कम्बुकण्ठो लम्बोष्ठो लम्बनासिकः॥३४॥

भग्नवामरदस्तुङ्गसव्यदन्तो महाहनुः। हस्वनेत्रत्रयः शूर्पकर्णो निबिडमस्तकः॥३५॥

स्तबकाकारकुम्भाग्रो रत्नमौलिर्निरङ्कुशः। सर्पहारकटीसूत्रः सर्पयज्ञोपवीतवान्॥३६॥

सर्पकोटीरकटकः सर्पग्रैवेयकाङ्गदः। सर्पकक्षोदराबन्धः सर्पराजोत्तरच्छदः॥३७॥

रक्तो रक्ताम्बरधरो रक्तमालाविभूषणः। रक्तेक्षणो रक्तकरो रक्तताल्वोष्ठपश्लवः॥३८॥ श्वेतः श्वेताम्बरधरः श्वेतमालाविभूषणः।

श्वेतातपत्ररुचिरः श्वेतचामरवीजितः॥३९॥

सर्वावयवस्म्पूर्णः सूर्वलक्षणलक्षितः।

सर्वाभरणशोभोढ्यः सर्वशोभासमन्वितः॥४०॥

सर्वमङ्गलमाङ्गल्यः सर्वकारणकारणम्। सर्वदेववरः शार्ङ्गी बीजपूरी गदाधरः॥४१॥

इक्षुचापधरः शूली चक्रपाणिः सरोजभृत्। पाशी धृतोत्पलः शालिमञ्जरीभृत्स्वदन्तभृत्॥४२॥

कल्पवल्लीधरो विश्वाभयदैककरो वशी। अक्षमालाधरो ज्ञानमुद्रावान् मुद्गरायुधः॥४३॥

पूर्णपात्री कम्बुधरो विधृताङ्कुशमूलकः। करस्थाम्रफलश्चृतकलिकाभृत्कुठारवान्॥४४॥

पुष्करस्थस्वर्णघटीपूर्णरत्नाभिवर्षकः । भारतीसुन्दरीनाथो विनायकरतिप्रियः॥४५॥

महालक्ष्मीप्रियतमः सिद्धलक्ष्मीमनोरमः। रमारमेशपूर्वाङ्गो दक्षिणोमामहेश्वरः॥४६॥

महीवराहवामाङ्गो रतिकन्दर्पपश्चिमः। आमोदमोदजननः सम्प्रमोदप्रमोदनः॥४७॥

संवर्धितमहावृद्धिऋद्धिसिद्धिप्रवर्धनः । दन्तसौमुख्यसुमुखः कान्तिकन्दिलताश्रयः॥४८॥

मदनावत्याश्रिताङ्गिः कृतवैमुख्यदुर्मुखः। विघ्नसम्पल्लवः पद्मः सर्वोन्नतमदद्रवः॥४९॥

विघ्नकृत्रिम्नचरणो द्राविणीशक्तिसत्कृतः। तीव्राप्रसन्ननयनो ज्वालिनीपालितैकदृक्॥५०॥ मोहिनीमोहनो भोगदायिनीकान्तिमण्डनः। कामिनीकान्तवऋश्रीरिधष्ठतवसुन्धरः ॥५१॥

वसुधारामदोन्नादो महाशङ्ख्यनिधिप्रियः। नमद्वसुमतीमाली महापद्मनिधिः प्रभुः॥५२॥

सर्वसद्गुरुसंसेव्यः शोचिष्केशहृदाश्रयः। ईशानमूर्धा देवेन्द्रशिखः पवननन्दनः॥५३॥

प्रत्युग्रनयनो दिव्यो दिव्यास्त्रशतपर्वधृक्। ऐरावतादिसर्वाशावारणो वारणप्रियः॥५४॥

वज्राद्यस्नपरीवारो गणचण्डसमाश्रयः। जयाजयपरिकरो विजयाविजयावहः॥५५॥

अजयार्चितपादाङ्गो नित्यानन्दवनस्थितः। विलासिनीकृतोल्लासः शोण्डी सौन्दर्यमण्डितः॥५६॥

अनन्तानन्तसुखदः सुमङ्गलसुमङ्गलः। ज्ञानाश्रयः क्रियाधार इच्छाशक्तिनिषेवितः॥५७॥

सुभगासंश्रितपदो लिलतालिलताश्रयः। कामिनीपालनः कामकामिनीकेलिलालितः॥५८॥

सरस्वत्याश्रयो गौरीनन्दनः श्रीनिकेतनः। गुरुगुप्तपदो वाचासिद्धो वागीश्वरीपतिः॥५९॥

निलनीकामुको वामारामो ज्येष्ठामनोरमः। रौद्रीमुद्रितपादाङ्गो हुम्बीजस्तुङ्गशक्तिकः॥६०॥

विश्वादिजननत्राणः स्वाहाशक्तिः सकीलकः। अमृताब्धिकृतावासो मदघूर्णितलोचनः॥६१॥

उच्छिष्टोच्छिष्टगणको गणेशो गणनायकः। सार्वकालिकसंसिद्धिर्नित्यसेव्यो दिगम्बरः॥६२॥ अनपायोऽनन्तदृष्टिरप्रमेयोऽजरामरः । अनाविलोऽप्रतिहृतिरच्युतोऽमृतमक्षरः॥६३॥

अप्रतर्क्योऽक्षयोऽजय्योऽनाधारोऽनामयोऽमलः। अमेयसिद्धिरद्वेतमघोरोऽग्निसमाननः॥६४॥

अनाकारोऽब्धिभूम्यग्निबलघ्नोऽव्यक्तलक्षणः। आधारपीठमाधार आधाराधेयवर्जितः॥६५॥

आखुकेतन आशापूरक आखुमहारथः। इक्षुसागरमध्यस्थ इक्षुभक्षणलालसः॥६६॥

इक्षुचापातिरेकश्रीरिक्षुचापनिषेवितः । इन्द्रगोपसमानश्रीरिन्द्रनीलसमद्युतिः॥६७॥

इन्दीवरदलश्याम इन्दुमण्डलमण्डितः। इध्मप्रिय इडाभाग इडावानिन्दिराप्रियः॥६८॥

इक्ष्वाकुविघ्नविध्वंसी इतिकर्तव्यतेप्सितः। ईशानमौलिरीशान ईशानप्रिय ईतिहा॥६९॥

ईषणात्रयकल्पान्त ईहामात्रविवर्जितः। उपेन्द्र उडुभृन्मौलिरुडुनाथकरप्रियः॥७०॥

उन्नतानन उत्तुङ्ग उदारस्निदशाग्रणीः। ऊर्जस्वानूष्मलमद ऊहापोहदुरासदः॥७१॥

ऋग्यजुःसामनयन ऋद्धिसिद्धिसमर्पकः। ऋजुचित्तैकस्लभो ऋणत्रयविमोचनः॥७२॥

लुप्तविघ्नः स्वभक्तानां लुप्तशक्तिः सुरद्विषाम्। लुप्तश्रीर्विमुखार्चानां लूताविस्फोटनाशनः॥७३॥

एकारपीठमध्यस्थ एकपादकृतासनः। एजिताखिलदैत्यश्रीरेधिताखिलसंश्रयः॥७४॥ ऐश्वर्यनिधिरैश्वर्यमैहिकामुष्मिकप्रदः। ऐरम्मदसमोन्मेष ऐरावतसमाननः॥७५॥

ओङ्कारवाच्य ओङ्कार ओजस्वानोषधीपतिः। औदार्यनिधिरौद्धत्यधैर्य औन्नत्यनिःसमः॥७६॥

अङ्कुशः सुरनागानामङ्कुशाकारसंस्थितः। अः समस्तविसर्गान्तपदेषु परिकीर्तितः॥७७॥

कमण्डलुधरः कल्पः कपर्दी कलभाननः। कर्मसाक्षी कर्मकर्ता कर्माकर्मफलप्रदः॥७८॥

कदम्बगोलकाकारः कूष्माण्डगणनायकः। कारुण्यदेहः कपिलः कथकः कटिसूत्रभृत्॥७९॥

खर्वः खङ्गप्रियः खङ्गः खान्तान्तःस्थः खनिर्मलः। खल्वाटशृङ्गनिलयः खट्वाङ्गी खन्दुरासदः॥८०॥

गुणाढ्यो गहनो गद्यो गद्यपद्यसुधार्णवः। गद्यगानप्रियो गर्जो गीतगीर्वाणपूर्वजः॥८१॥

गुह्याचाररतो गुह्यो गुह्यागमनिरूपितः। गुहाशयो गुडाब्थिस्थो गुरुगम्यो गुरुर्गुरुः॥८२॥

घण्टाघर्घरिकामाली घटकुम्भो घटोदरः। ङकारवाच्यो ङाकारो ङकाराकारशुण्डभृत्॥८३॥

चण्डश्चण्डेश्वरश्चण्डी चण्डेशश्चण्डविक्रमः। चराचरपिता चिन्तामणिश्चर्वणलालसः॥८४॥

छन्दश्छन्दोद्भवश्छन्दो दुर्लक्ष्यश्छन्दविग्रहः। जगद्योनिर्जगत्साक्षी जगदीशो जगन्मयः॥८५॥

जप्यो जपपरो जाप्यो जिह्वासिंहासनप्रभुः। स्रवद्गण्डोष्ठसद्धानझङ्कारिभ्रमराकुलः॥८६॥ टङ्कारस्फारसंरावष्टङ्कारमणिनूपुरः । ठद्वयीपल्लवान्तस्थसर्वमन्त्रेषु सिद्धिदः॥८७॥

डिण्डिमुण्डो डाकिनीशो डामरो डिण्डिमप्रियः। ढक्कानिनादमुदितो ढौङ्को दुण्ढिविनायकः॥८८॥

तत्त्वानां प्रकृतिस्तत्त्वं तत्त्वम्पदनिरूपितः। तारकान्तरसंस्थानस्तारकस्तारकान्तकः ॥८९॥

स्थाणुः स्थाणुप्रियः स्थाता स्थावरं जङ्गमं जगत्। दक्षयज्ञप्रमथनो दाता दानं दमो दया॥९०॥

दयावान्दिव्यविभवो दण्डभृद्दण्डनायकः। दन्तप्रभिन्नाभ्रमालो दैत्यवारणदारणः॥९१॥

दंष्ट्रालग्नद्वीपघटो देवार्थनृगजाकृतिः। धनं धनपतेर्बन्धुर्धनदो धरणीधरः॥९२॥

ध्यानैकप्रकटो ध्येयो ध्यानं ध्यानपरायणः। ध्वनिप्रकृतिचीत्कारो ब्रह्माण्डावलिमेखलः॥९३॥

नन्द्यो नन्दिप्रियो नादो नादमध्यप्रतिष्ठितः। निष्कलो निर्मलो नित्यो नित्यानित्यो निरामयः॥९४॥

परं व्योम परं धाम परमात्मा परं पदम्। परात्परः पशुपतिः पशुपाशविमोचनः। पूर्णानन्दः परानन्दः पुराणपुरुषोत्तमः॥९५॥

पद्मप्रसन्नवदनः प्रणताज्ञाननाशनः। प्रमाणप्रत्ययातीतः प्रणतार्तिनिवारणः॥९६॥

फणिहस्तः फणिपतिः फूत्कारः फणितप्रियः। बाणार्चिताङ्कियुगलो बालकेलिकुतूहली। ब्रह्म ब्रह्मार्चितपदो ब्रह्मचारी बृहस्पतिः॥९७॥

बृहत्तमो ब्रह्मपरो ब्रह्मण्यो ब्रह्मवित्प्रियः। बृहन्नादाग्र्यचीत्कारो ब्रह्माण्डावलिमेखलः॥९८॥ भूक्षेपदत्तलक्ष्मीको भर्गो भद्रो भयापहः। भगवान् भक्तिसुलभो भूतिदो भूतिभूषणः॥९९॥

भव्यो भूतालयो भोगदाता भूमध्यगोचरः। मन्रो मन्नपतिर्मन्री मदमत्तो मनोरमः॥१००॥

मेखलाहीश्वरो मन्दगतिर्मन्दनिभेक्षणः। महाबलो महावीर्यो महाप्राणो महामनाः॥१०१॥

यज्ञो यज्ञपतिर्यज्ञगोप्ता यज्ञफलप्रदः। यशस्करो योगगम्यो याज्ञिको याजकप्रियः॥१०२॥

रसो रसप्रियो रस्यो रञ्जको रावणार्चितः। राज्यरक्षाकरो रत्नगर्भो राज्यसुखप्रदः॥१०३॥

लक्षो लक्षपतिर्लक्ष्यो लयस्थो लड्डकप्रियः। लासप्रियो लास्यपरो लाभकृष्लोकविश्रुतः॥१०४॥

वरेण्यो वह्निवदनो वन्द्यो वेदान्तगोचरः। विकर्ता विश्वतश्चक्षुर्विधाता विश्वतोमुखः॥१०५॥

वामदेवो विश्वनेता वज्रिवज्रनिवारणः। विवस्वद्बन्धनो विश्वाधारो विश्वेश्वरो विभुः॥१०६॥

शब्दब्रह्म शमप्राप्यः शम्भुशक्तिगणेश्वरः। शास्ता शिखाग्रनिलयः शरण्यः शम्बरेश्वरः॥१०७॥

षडुतुकुसुमस्रग्वी षडाधारः षडक्षरः। संसारवैद्यः सर्वज्ञः सर्वभेषजभेषजम्॥१०८॥

सृष्टिस्थितिलयक्रीडः सुरकुञ्जरभेदकः। सिन्दूरितमहाकुम्भः सदसद्भक्तिदायकः॥१०९॥

साक्षी समुद्रमथनः स्वयंवेद्यः स्वदक्षिणः। स्वतन्त्रः सत्यसङ्कल्पः सामगानरतः सुखी॥११०॥ हंसो हस्तिपिशाचीशो हवनं हव्यकव्यभुक्। हव्यं हुतप्रियो हृष्टो हृक्षेखामन्त्रमध्यगः॥१११॥

क्षेत्राधिपः क्षमाभर्ता क्षमाक्षमपरायणः। क्षिप्रक्षेमकरः क्षेमानन्दः क्षोणीसुरद्रुमः॥११२॥

धर्मप्रदोऽर्थदः कामदाता सौभाग्यवर्धनः। विद्याप्रदो विभवदो भुक्तिमुक्तिफलप्रदः॥११३॥

आभिरूप्यकरो वीरश्रीप्रदो विजयप्रदः। सर्ववश्यकरो गर्भदोषहा पुत्रपौत्रदः॥११४॥

मेधादः कीर्तिदः शोकहारी दौर्भाग्यनाशनः। प्रतिवादिमुखस्तम्भो रुष्टचित्तप्रसादनः॥११५॥

पराभिचारशमनो दुःखहा बन्धमोक्षदः। लवस्रुटिः कला काष्ठा निमेषस्तत्परक्षणः॥११६॥

घटी मुहूर्तः प्रहरो दिवा नक्तमहर्निशम्। पक्षो मासर्त्वयनाब्दयुगं कल्पो महालयः॥११७॥

राशिस्तारा तिथियोंगो वारः करणमंशकम्। लग्नं होरा कालचक्रं मेरुः सप्तर्षयो ध्रुवः॥११८॥

राहुर्मन्दः कविर्जीवो बुधो भौमः शशी रविः। कालः सृष्टिः स्थितिर्विश्वं स्थावरं जङ्गमं जगत्॥११९॥

भूरापोऽग्निर्मरुद्धोमाहङ्कृतिः प्रकृतिः पुमान्। ब्रह्मा विष्णुः शिवो रुद्र ईशः शक्तिः सदाशिवः॥१२०॥

त्रिदशाः पितरः सिद्धा यक्षा रक्षांसि किन्नराः। सिद्धविद्याधरा भूता मनुष्याः पशवः खगाः॥१२१॥

समुद्राः सरितः शैला भूतं भव्यं भवोद्भवः। साङ्क्यां पातञ्जलं योगं पुराणानि श्रुतिः स्मृतिः॥१२२॥ वेदाङ्गानि सदाचारो मीमांसा न्यायविस्तरः। आयुर्वेदो धनुर्वेदो गान्धर्वं काव्यनाटकम्॥१२३॥

वैखानसं भागवतं मानुषं पाश्चरात्रकम्। शैवं पाशुपतं कालामुखं भैरवशासनम्॥१२४॥

शाक्तं वैनायकं सौरं जैनमार्हतसंहिता। सदसद्यक्तमव्यक्तं सचेतनमचेतनम्॥१२५॥

बन्धो मोक्षः सुखं भोगो योगः सत्यमणुर्महान्। स्वस्ति हुम्फट् स्वधा स्वाहा श्रौषट् वौषट् वषण्णमः॥१२६॥

ज्ञानं विज्ञानमानन्दो बोधः संवित्समोऽसमः। एक एकाक्षराधार एकाक्षरपरायणः॥१२७॥

एकाग्रधीरेकवीर एकोऽनेकस्वरूपधृक्। द्विरूपो द्विभुजो द्यक्षो द्विरदो द्वीपरक्षकः॥१२८॥

द्वैमातुरो द्विवदनो द्वन्द्वहीनो द्वयातिगः। त्रिधामा त्रिकरस्रेता त्रिवर्गफलदायकः॥१२९॥

त्रिगुणात्मा त्रिलोकादिस्त्रिशक्तीशस्त्रिलोचनः। चतुर्विधवचोवृत्तिपरिवृत्तिप्रवर्तकः॥१३०॥

चतुर्बाहुश्चतुर्दन्तश्चतुरात्मा चतुर्भुजः। चतुर्विधोपायमयश्चतुर्वर्णाश्रमाश्रयः ॥१३१॥

चतुर्थीपूजनप्रीतश्चतुर्थीतिथिसम्भवः । पञ्चाक्षरात्मा पञ्चात्मा पञ्चास्यः पञ्चकृत्तमः॥१३२॥

पश्चाधारः पश्चवर्णः पश्चाक्षरपरायणः। पश्चतालः पश्चकरः पश्चप्रणवमातृकः॥१३३॥

पश्चब्रह्ममयस्फूर्तिः पश्चावरणवारितः। पश्चभक्षप्रियः पश्चबाणः पश्चशिवात्मकः॥१३४॥ षद्गोणपीठः षद्गक्रधामा षङ्गन्थिभेदकः। षडङ्गध्वान्तविध्वंसी षडङ्गुलमहाह्रदः॥१३५॥

षण्मुखः षण्मुखभ्राता षद्गक्तिपरिवारितः। षड्वैरिवर्गविध्वसी षडूर्मिभयभञ्जनः॥१३६॥

षद्गर्कदूरः षद्गर्मा षड्गणः षड्रसाश्रयः। सप्तपातालचरणः सप्तद्वीपोरुमण्डलः॥१३७॥

सप्तस्वर्लोकमुकुटः सप्तसप्तिवरप्रदः। सप्ताङ्गराज्यसुखदः सप्तर्षिगणवन्दितः॥१३८॥

सप्तच्छन्दोनिधिः सप्तहोत्रः सप्तस्वराश्रयः। सप्ताब्धिकेलिकासारः सप्तमातृनिषेवितः॥१३९॥

सप्तच्छन्दो मोदमदः सप्तच्छन्दो मखप्रभुः। अष्टमूर्तिर्ध्ययमूर्तिरष्टप्रकृतिकारणम् ॥१४०॥

अष्टाङ्गयोगफलभृदष्टपत्राम्बुजासनः। अष्टशक्तिसमानश्रीरष्टैश्वर्यप्रवर्धनः ॥१४१॥

अष्टपीठोपपीठश्रीरष्टमातृसमावृतः । अष्टभैरवसेव्योऽष्टवसुवन्द्योऽष्टमूर्तिभृत्॥१४२॥

अष्टचऋस्फुरन्मूर्तिरष्टद्रव्यहविःप्रियः । अष्टश्रीरष्टसामश्रीरष्टैश्वर्यप्रदायकः । नवनागासनाध्यासी नवनिध्यनुशासितः॥१४३॥

नवद्वारपुरावृत्तो नवद्वार्रानेकेतनः। नवनाथमहानाथो नवनागविभूषितः॥१४४॥

नवनारायणस्तुल्यो नवदुर्गानिषेवितः। नवरत्नविचित्राङ्गो नवशक्तिशिरोद्धृतः॥१४५॥

दशात्मको दशभुजो दशदिक्पतिवन्दितः। दशाध्यायो दशप्राणो दशेन्द्रियनियामकः॥१४६॥ दशाक्षरमहामन्त्रो दशाशाव्यापिविग्रहः। एकादशमहारुद्रैःस्तुतश्चेकादशाक्षरः ॥१४७॥

द्वादशद्विदशाष्टादिदोर्दण्डास्त्रनिकेतनः । त्रयोदशभिदाभिन्नो विश्वेदेवाधिदैवतम्॥१४८॥

चतुर्दशेन्द्रवरदश्चतुर्दशमनुप्रभुः । चतुर्दशाद्यविद्याढ्यश्चतुर्दशजगत्पतिः॥१४९॥

सामपश्चदशः पश्चदशीशीतांशुनिर्मलः। तिथिपश्चदशाकारस्तिथ्या पश्चदशार्चितः॥१५०॥

षोडशाधारनिलयः षोडशस्वरमातृकः। षोडशान्तपदावासः षोडशेन्दुकलात्मकः॥१५१॥

कलासप्तदशी सप्तदशसप्तदशाक्षरः। अष्टादशद्वीपपतिरष्टादशपुराणकृत्॥१५२॥

अष्टादशौषधीसृष्टिरष्टादशविधिः स्मृतः। अष्टादशलिपिव्यष्टिसमष्टिज्ञानकोविदः॥१५३॥

अष्टादशान्नसम्पत्तिरष्टादशविजातिकृत्। एकविंशः पुमानेकविंशत्यङ्गुलिपल्लवः॥१५४॥

चतुर्विंशतितत्त्वात्मा पश्चविंशाख्यपूरुषः। सप्तविंशतितारेशः सप्तविंशतियोगकृत्॥१५५॥

द्वात्रिंशद्भैरवाधीशश्चतुस्त्रिंशन्महाह्नदः । षद्गिंशत्तत्त्वसम्भूतिरष्टत्रिंशत्कलात्मकः॥१५६॥

पञ्चाशद्विष्णुशक्तीशः पञ्चाशन्मातृकालयः। द्विपञ्चाशद्वपुःश्रेणी त्रिषष्ट्यक्षरसंश्रयः। पञ्चाशदक्षरश्रेणीपञ्चाशद्रुद्रविग्रहः ॥१५७॥

चतुःषष्टिमहासिद्धियोगिनीवृन्दवन्दितः। नमदेकोनपश्चाशन्मरुद्वर्गनिरर्गलः ॥१५८॥ चतुःषष्ट्यर्थनिर्णेता चतुःषष्टिकलानिधिः। अष्टषष्टिमहातीर्थक्षेत्रभैरववन्दितः॥१५९॥

चतुर्नवतिमन्नात्मा षण्णवत्यधिकप्रभुः। शतानन्दः शतधृतिः शतपत्रायतेक्षणः॥१६०॥

शतानीकः शतमखः शतधारावरायुधः। सहस्रपत्रनिलयः सहस्रफणिभूषणः॥१६१॥

सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात्। सहस्रनामसंस्तुत्यः सहस्राक्षबलापहः॥१६२॥

दशसाहस्रफणिभृत्फणिराजकृतासनः । अष्टाशीतिसहस्राद्यमहर्षिस्तोत्रपाठितः॥१६३॥

लक्षाधारः प्रियाधारो लक्षाधारमनोमयः। चतुर्लक्षजपप्रीतश्चतुर्लक्षप्रकाशकः ॥१६४॥

चतुरशीतिलक्षाणां जीवानां देहसंस्थितः। कोटिसूर्यप्रतीकाशः कोटिचन्द्रांशुनिर्मलः॥१६५॥

शिवोद्भवाद्यष्टकोटिवैनायकधुरन्धरः। सप्तकोटिमहामन्त्रमन्त्रितावयवद्युतिः॥१६६॥

त्रयस्रिंशत्कोटिसुरश्रेणीप्रणतपादुकः । अनन्तदेवतासेच्यो ह्यनन्तश्भदायकः॥१६७॥

अनन्तनामानन्तश्रीरनन्तोऽनन्तसौख्यदः। अनन्तशक्तिसहितो ह्यनन्तमुनिसंस्तुतः॥१६८॥

## ॥ फलश्रुतिः ॥

इति वैनायकं नाम्नां सहस्रमिदमीरितम्। इदं ब्राह्मे मुहूर्ते यः पठित प्रत्यहं नरः॥१६९॥ करस्थं तस्य सकलमैहिकामुष्मिकं सुखम्। आयुरारोग्यमैश्वर्यं धेर्यं शौर्यं बलं यशः॥१७०॥

मेधा प्रज्ञा धृतिः कान्तिः सौभाग्यमभिरूपता। सत्यं दया क्षमा शान्तिर्दाक्षिण्यं धर्मशीलता॥१७१॥

जगत्संवननं विश्वसंवादो वेदपाटवम्। सभापाण्डित्यमौदार्यं गाम्भीर्यं ब्रह्मवर्चसम्॥१७२॥

ओजस्तेजः कुलं शीलं प्रतापो वीर्यमार्यता। ज्ञानं विज्ञानमास्तिक्यं स्थैर्यं विश्वासता तथा॥१७३॥

धनधान्यादिवृद्धिश्च सकृदस्य जपाद्भवेत्। वश्यं चतुर्विधं विश्वं जपादस्य प्रजायते॥१७४॥

राज्ञो राजकलत्रस्य राजपुत्रस्य मन्निणः। जप्यते यस्य वश्यार्थे स दासस्तस्य जायते॥१७५॥

धर्मार्थकाममोक्षाणामनायासेन साधनम्। शाकिनीडाकिनीरक्षोयक्षग्रहभयापहम् ॥१७६॥

साम्राज्यसुखदं सर्वसपत्नमदमर्दनम्। समस्तकलहध्वंसि दग्धबीजप्ररोहणम्॥१७७॥

दुःस्वप्रशमनं कुद्धस्वामिचित्तप्रसादनम्। षड्वर्गाष्टमहासिद्धित्रिकालज्ञानकारणम् ॥१७८॥

परकृत्यप्रशमनं परचक्रप्रमर्दनम्। सङ्गाममार्गे सर्वेषामिदमेकं जयावहम्॥१७९॥

सर्ववन्ध्यत्वदोषघ्नं गर्भरक्षेककारणम्। पठ्यते प्रत्यहं यत्र स्तोत्रं गणपतेरिदम्॥१८०॥

देशे तत्र न दुर्भिक्षमीतयो दुरितानि च। न तद्गेहं जहाति श्रीयंत्रायं जप्यते स्तवः॥१८१॥ क्षयकुष्ठप्रमेहार्शभगन्दरविषूचिकाः । गुल्मं प्लीहानमाध्मानमतिसारं महोदरम्॥१८२॥

कासं श्वासमुदावर्तं शूलं शोफामयोदरम्। शिरोरोगं विमें हिक्कां गण्डमालामरोचकम्॥१८३॥

वातिपत्तकफद्धन्द्वत्रिदोषजनितज्वरम् । आगन्तुविषमं शीतमुष्णं चैकाहिकादिकम्॥१८४॥

इत्याद्युक्तमनुक्तं वा रोगदोषादिसम्भवम्। सर्वं प्रशमयत्याशु स्तोत्रस्यास्य सकुञ्जपः॥१८५॥

प्राप्यतेऽस्य जपात्सिद्धिः स्त्रीशूद्रैः पतितैरपि। सहस्रनाममन्त्रोऽयं जपितव्यः शुभाप्तये॥१८६॥

महागणपतेः स्तोत्रं सकामः प्रजपन्निदम्। इच्छया सकलान् भोगानुपभुज्येह पार्थिवान्॥१८७॥

मनोरथफलैर्दिव्यैर्व्योमयानैर्मनोरमैः । चन्द्रेन्द्रभास्करोपेन्द्रब्रह्मशर्वादिसद्मस्॥१८८॥

कामरूपः कामगतिः कामदः कामदेश्वरः। भुक्ता यथेप्सितान्भोगानभीष्टैः सह बन्धुभिः॥१८९॥

गणेशानुचरो भूत्वा गणो गणपतिप्रियः। नन्दीश्वरादिसानन्दैर्नन्दितः सकलैर्गणैः॥१९०॥

शिवाभ्यां कृपया पुत्रनिर्विशेषं च लालितः। शिवभक्तः पूर्णकामो गणेश्वरवरात्पुनः॥१९१॥

जातिस्मरो धर्मपरः सार्वभौमोऽभिजायते। निष्कामस्तु जपन्नित्यं भक्त्या विघ्नेशतत्परः॥१९२॥

योगसिद्धिं परां प्राप्य ज्ञानवैराग्यसंयुतः। निरन्तरे निराबाधे परमानन्दसंज्ञिते॥१९३॥ विश्वोत्तीर्णे परे पूर्णे पुनरावृत्तिवर्जिते। लीनो वैनायके धाम्नि रमते नित्यनिर्वृते॥१९४॥

यो नामभिर्हुतैर्दत्तैः पूजयेदर्चयेन्नरः। राजानो वश्यतां यान्ति रिपवो यान्ति दासताम्॥१९५॥

तस्य सिध्यन्ति मन्नाणां दुर्लभाश्चेष्टसिद्धयः। मुलमन्नादपि स्तोत्रमिदं प्रियतमं मम॥१९६॥

नभस्ये मासि शुक्लायां चतुर्थ्यां मम जन्मनि। दूर्वाभिर्नामभिः पूजां तर्पणं विधिवचरेत्॥१९७॥

अष्टद्रव्यैर्विशेषेण कुर्याद्धक्तिस्संयुतः। तस्येप्सितं धनं धान्यमैश्वर्यं विजयो यशः॥१९८॥

भविष्यति न सन्देहः पुत्रपौत्रादिकं सुखम्। इदं प्रजपितं स्तोत्रं पठितं श्रावितं श्रुतम्॥१९९॥

व्याकृतं चर्चितं ध्यातं विमृष्टमभिवन्दितम्। इहामुत्र च विश्वेषां विश्वेश्वर्यप्रदायकम्॥२००॥

स्वच्छन्दचारिणाप्येष येन सन्धार्यते स्तवः। स रक्ष्यते शिवोद्भूतैर्गणैरध्यष्टकोटिभिः॥२०१॥

लिखितं पुस्तकस्तोत्रं मन्नभूतं प्रपूजयेत्। तत्र सर्वोत्तमा लक्ष्मीः सन्निधत्ते निरन्तरम्॥२०२॥

> दानेरशेषैरखिलेर्व्रतेश्च तीर्थेरशेषैरखिलेर्मखैश्च । न तत्फलं विन्दति यद्गणेश-सहस्रनामस्मरणेन सद्यः॥२०३॥

एतन्नाम्नां सहस्रं पठित दिनमणौ प्रत्यहं प्रोज्जिहाने सायं मध्यन्दिने वा त्रिषवणमथवा सन्ततं वा जनो यः। स स्यादैश्वर्यधुर्यः प्रभवित वचसां कीर्तिमुचैस्तनोति दारिद्यं हन्ति विश्वं वशयित सुचिरं वर्धते पुत्रपौत्रैः॥२०४॥ अकिश्चनोऽप्येकचित्तो नियतो नियतासनः। प्रजपंश्चतुरो मासान् गणेशार्चनतत्परः॥२०५॥

दरिद्रतां समुन्मूल्य सप्तजन्मानुगामपि। लभते महतीं लक्ष्मीमित्याज्ञा पारमेश्वरी॥२०६॥

आयुष्यं वीतरोगं कुलमितविमलं सम्पदश्चार्तिनाशः कीर्तिर्नित्यावदाता भवति खलु नवा कान्तिरव्याजभव्या। पुत्राः सन्तः कलत्रं गुणवदिभमतं यद्यदन्यच्च तत्तत् नित्यं यः स्तोत्रमेतत् पठित गणपतेस्तस्य हस्ते समस्तम्॥२०७॥

> गणञ्जयो गणपतिर्हेरम्बो धरणीधरः। महागणपतिर्बुद्धिप्रियः क्षिप्रप्रसादनः॥२०८॥

अमोघसिद्धिरमृतमन्त्रश्चिन्तामणिर्निधिः । सुमङ्गलो बीजमाशापूरको वरदः कलः॥२०९॥

काश्यपो नन्दनो वाचासिद्धो दुण्ढिर्विनायकः। मोदकैरेभिरत्रैकविंशत्या नामभिः पुमान्॥२१०॥

उपायनं ददेद्धत्त्वा मत्प्रसादं चिकीर्षति। वत्सरं विघ्नराजोऽस्य तथ्यमिष्टार्थसिद्धये॥२११॥

यः स्तौति मद्गतमना ममाराधनतत्परः। स्तुतो नाम्ना सहस्रेण तेनाहं नात्र संशयः॥२१२॥

नमो नमः सुरवरपूजिताङ्ग्र्ये नमो नमो निरुपममङ्गलात्मने। नमो नमो विपुलदयैकसिद्ध्ये नमो नमः करिकलभाननाय ते॥२१३॥

किङ्किणीगणरचितचरणः प्रकटितगुरुमितचारुकरणः । मदजललहरीकलितकपोलः शमयतु दुरितं गणपतिनाम्ना॥२१४॥ ॥इति श्रीगणेशपुराणे उपासनाखण्डे ईश्वरगणेशसंवादे गणेशसहस्रनामस्तोत्रं नाम षद्गत्वारिंशोऽध्यायः॥

## ॥ अपराध-क्षमापनम्॥

यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपः पूजािक्रयादिषु। न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्यो वन्दे गजाननम्॥ अनया पूजया श्री-सिद्धिविनायकः प्रीयताम्॥

कायेन वाचा मनसेन्द्रियैर्वा बुद्ध्याऽऽत्मना वा प्रकृतेः स्वभावात्। करोमि यद्यत् सकलं परस्मै नारायणायेति समर्पयामि॥

ॐ तत्सद्बह्मार्पणमस्तु।

### ॥ कथा॥

शौनकाद्या ऋषिगणा नैमिषारण्यवासिनः। सूतं पौराणिकं श्रेष्ठमिदमूचुर्वचस्तदा॥१॥

### ऋषय ऊचुः

निर्विघ्ने तु कार्याणि कथं सिध्यन्ति सूतज। अर्थसिद्धिः कथं नॄणां पुत्रसौभाग्यसम्पदः॥२॥

दम्पत्योः कलहे चैव बन्धुभेदे तथा नृणाम्। उदासीनेषु लोकेषु कथं सुमुखता भवेत्॥३॥

विद्यारम्भे तथा नॄणां वाणिज्ये च कृषौ तथा। नृपतेः परचक्रं च जयसिद्धिः कथं भवेत्॥४॥

कां देवतां नमस्कृत्य कार्यसिद्धिर्भवेन्नृणाम्। एतत् समस्तं विस्तार्य ब्रूहि मे सूत पृच्छतः॥५॥

### सूत उवाच

सन्नद्धयोः पुरा विप्राः कुरुपाण्डवसेनयोः। पृष्टवान् देवकीपुत्रं कुन्तीपुत्रो युधिष्ठिरः॥६॥

## युधिष्ठिर उवाच

निर्विघ्नेन जयं मह्यं वद त्वां देवकीसुत। कां देवतां नमस्कृत्य सम्यग्राज्यं लभेमहि॥७॥

### कृष्ण उवाच

पूजयस्व गणाध्यक्षमुमा-मल-समुद्भवम्। तस्मिन् सम्पूजिते देवे ध्रुवं राज्यमवाप्स्यसि॥८॥

## युधिष्ठिर उवाच

देव केन विधानेन पूजनीयो गणाधिपः। पूजितस्तु तिथौ कस्यां सिद्धिदो गणपो भवेत्॥९॥

### कृष्ण उवाच

मासि भाद्रपदे शुक्ले चतुर्थ्यां पूजयेत्रृप। मासि माघे श्रावणे वा मार्गशीर्षेऽथवा भवेत्॥१०॥

गजवऋं तु शुक्लायां चतुर्थ्यां पूजयेन्नृप। यदा चोत्पद्यते भक्तिस्तदा पूज्यो गणाधिपः॥११॥

प्रातः शुक्रतिलैः स्नात्वा मध्याह्ने पूजयेन्नृप। निष्कमात्रसुवर्णेन तदर्धार्धेन वा पुनः॥१२॥

स्वशक्त्या गणनाथस्य स्वर्णरौप्यमयाकृतिम्। अथवा मृन्मयीं कुर्याद् वित्तशाठ्यं न कारयेत्॥१३॥

एकदन्तं शूर्पकर्णं गजवऋं चतुर्भुजम्। पाशाङ्कुशधरं देवं ध्यायेत् सिद्धिविनायकम्॥१४॥ ध्यात्वा चानेन मन्नेण स्नाप्य पञ्चामृतैः पृथक्। गणाध्यक्षेति नाम्ना वै गन्धं दद्याच भक्तितः॥१५॥

आवाहनार्थे पाद्यं च दत्त्वा पश्चात् प्रयत्नतः। रक्तवस्रयुगं सर्वप्रदं दद्याच भक्तितः॥१६॥

विनायकेति पुष्पाणि धूपं चोमासुताय च। दीपं रुद्रप्रियायेति नैवेद्यं विघ्ननाशिने॥१७॥

किश्चित् सुवर्णं पूजां च ताम्बूलं च समर्पयेत्। ततो दूर्वाङ्करान् गृह्य विंशतिं चैकमेव हि॥१८॥

पूजनीयः प्रयत्नेन एभिर्नामपदैः पृथक्। गणाधिप नमस्तेऽस्तु उमापुत्राघनाशन॥१९॥

विनायकेशपुत्रेति सर्वसिद्धिप्रदायक। एकदन्तेभवक्रेति तथा मूषकवाहन॥२०॥

कुमारगुरवे तुभ्यं पूजनीयः प्रयत्नतः। दूर्वायुग्मं गृहीत्वा तु गन्धपुष्पाक्षतैर्युतम्॥२१॥

एकैकेन तु नाम्ना वै दत्त्वैकं सर्वनामिभः। अथैकविंशतिं गृह्य मोदकान् घृतपाचितान्॥२२॥

स्थापयित्वा गणाध्यक्षसमीपे कुरुनन्दन। दश विप्राय दातव्याः स्वयं ग्राह्मास्तथा दश॥२३॥

एकं गणाधिपे दद्यात् सनैवेद्यं नृपोत्तम। विनायकस्य प्रतिमां ब्राह्मणाय निवेदयेत्॥२४॥

विनायकस्य प्रतिमां वस्त्रयुग्मेन वेष्टिताम्। तुभ्यं सम्प्रददे विप्र प्रीयतां मे गजाननः॥२५॥

विनायक गणेश त्वं सर्वदेवनमस्कृत। पार्वतीप्रिय विघ्नेश मम विघ्नं विनाशय॥२६॥ गणेशः प्रतिगृह्णाति गणेशो वै ददाति च। गणेशस्तारकोभाभ्यां गणेशाय नमो नमः॥२७॥

कृत्वा नैमित्तिकं कर्म पूजयेदिष्टदेवताम्। ब्राह्मणान् भोजयेत् पश्चाद् भुश्चीयात् तैलवर्जितम्॥२८॥

एवं कृते धर्मराज गणनाथस्य पूजने। विजयस्ते भवेन्नूनं सत्यं सत्यं मयोदितम्॥२९॥

त्रिपुरं हन्तुकामेन पूजितः शूलपाणिना। शक्रेण पूजितः पूर्वं वृत्रासुरवधेच्छया॥३०॥

अन्वेषयन्त्या भर्तारं पूजितोऽहल्यया पुरा। नलस्यान्वेषणार्थाय दमयन्त्या पुराऽऽचितः॥३१॥

रघुनाथेन तद्वच सीतायान्वेषणे पुरा। द्रष्टुं सीतां महाभागां वीरेण च हनूमता॥३२॥

भगीरथेन तद्वच गङ्गामानयता पुरा। अमृतोत्पादनार्थाय तथा देवासुरैरपि॥३३॥

अमृतं हरता पूर्वं वैनतेयेन पक्षिणा। आराधितो गणाध्यक्षो ह्यमृतं च हृतं बलात्॥३४॥

रुक्मिणीहेतुकामेन पूजितोऽसौ मया प्रभुः। तस्य प्रसादाद्राजेन्द्र रुक्मिणीं प्राप्तवानहम्॥३५॥

यदा पूर्वं हि दैत्येन हृतो रुक्मिणिनन्दनः। आराधितो मया तद्वद् रुक्मिण्या सहितेन च॥३६॥

कुष्ठव्याधियुतेनाथ साम्बेनाऽऽराधितः पुरा। जयकामस्तथा शीघ्रं त्वमाराधय शाङ्करिम्॥३७॥

विद्याकामो लभेद् विद्यां धनकामो धनं तथा। जयं च जयकामस्तु पुत्रार्थी विन्दते सुतान्॥३८॥ पतिकामा च भर्तारं सौभाग्यं च सुवासिनी। विधवा पूजयित्वा तु वैधव्यं नाप्नुयात्क्वचित्॥३९॥

वैष्णव्याद्यासु दीक्षासु आदौ पूज्यो गणाधिपः। तस्मिन् सम्पूजिते विष्णुरीशो भानुस्तथा ह्युमा॥४०॥

हव्यवाहमुखा देवाः पूजिताः स्युर्न संशयः। चण्डिकाद्या मातृगणाः परितुष्टा भवन्ति च॥४१॥

तस्मिन्सम्पूजिते विप्रा भक्त्या सिद्धिविनायके। एवं कृते धर्मराज गणनाथस्य पूजने॥४२॥

प्राप्स्यसि त्वं स्वकं राज्यं हत्वा शत्रून् रणाजिरे। सिध्यन्ति सर्वकार्याणि नात्र कार्यो विचारणा॥४३॥

एवम्क्तस्तु कृष्णेन सानुजः पाण्डुनन्दनः। पूजयामास देवस्य पुत्रं त्रिपुरघातिनः॥४४॥ शत्रुसङ्घं निहत्यासौ प्राप्तवात्राज्यमोजसा।

### सूत उवाच

यः पूजयेन्मन्दभाग्यो गणेशं सिद्धिदायकम्॥४५॥

सिध्यन्ति तस्य कार्याणि मनसा चिन्तितान्यपि। ख्यातिं गमिष्यते तेन नाम्ना सिद्धिविनायकः॥४६॥

य इदं शृणुयान्नित्यं श्रावयेद् वा समाहितः। सिध्यन्ति सर्वकार्याणि विनायकप्रसादतः॥४७॥ ॥इति सिद्धिविनायकव्रतं भविष्योक्तं सम्पूर्णम्॥

# ॥स्यमन्तकोपाख्यानम्॥

॥सारभूतः श्लोकः॥

"सिंहः प्रसेनम् अवधीत् सिंहो जाम्बवता हतः।

सुकुमारक मा रोदीः तव ह्येष स्यमन्तकः॥"
॥स्यमन्तकोपाख्यानपठने प्रमाणवचनानि॥

कन्यादित्ये चतुर्थ्यां च शुक्के चन्द्रस्य दर्शनम्।
मिथ्याभिदूषणं कुर्यात् तस्मात् पश्येन्न तं तदा॥
तद्दोषशान्तये जाप्यं विष्णुनोक्तं स्यमन्तकम्॥
(व्रतचूडामण्यादौ व्रतग्रन्थेषु)
ये शृण्वन्ति तवाख्यानं स्यमन्तकमणीयकम्॥
चन्द्रस्य चरितं सर्वं तेषां दोषो न जायते॥१३२॥
(अत्रैव अग्रे उपाख्याने)

## नन्दिकेश्वर उवाच

शृणुष्वैकाग्रचित्तः सन् व्रतं गाणेश्वरं महत्। चतुर्थ्यां शुक्रपक्षे तु सदा कार्यं प्रयत्नतः॥१॥

सनत्कुमार योगीन्द्र यदीच्छेच्छुभमात्मनः। नारी वा पुरुषो वाऽपि यः कुर्याद् विधिवद् व्रतम्॥२॥

मोचयत्याशु विप्रेन्द्र सङ्कष्टाद् व्रतिनं हि तत्। अपवादहरं चैव सर्वविघ्नप्रणाशनम्॥३॥

कान्तारे विषमे वाऽपि रणे राजकुलेऽथवा। सर्वसिद्धिकरं विद्धि व्रतानामृत्तमं व्रतम्॥४॥

गजाननप्रियं चाथ त्रिषु लोकेषु विश्रुतम्। अतो न विद्यते ब्रह्मन् सर्वसङ्कष्टनाशनम्॥५॥

## सनत्कुमार उवाच

केन चादौ पुरा चीर्णं मर्त्यलोकं कथं गतम्। एतत्समस्तं विस्तार्य ब्रूहि गाणेश्वरं व्रतम्॥६॥

## नन्दिकेश्वर उवाच

चक्रे व्रतं जगन्नाथो वासुदेवः प्रतापवान्। आदिष्टं नारदेनैव वृथालाञ्छनमुक्तये॥७॥

### सनत्कुमार उवाच

षङ्गुणैश्वर्य-सम्पन्नः सृष्टिसंहार-कारकः। वासुदेवो जगद्यापी प्राप्तवान् लाञ्छनं कथम्॥८॥ एतदाश्चर्यमाख्यानं ब्रूहि त्वं नन्दिकेश्वर।

## नन्दिकेश्वर उवाच

भूमिभारनिवृत्त्यर्थं वसुदेवसुतावुभौ॥९॥

रामकृष्णौ समुत्पन्नौ पद्मनाभ-फणीश्वरौ। जरासन्धभयात् कृष्णो द्वारकां समकल्पयत्॥१०॥

विश्वकर्माणमाहूय पुरीं हाटकनिर्मिताम्। तत्र षोडशसाहस्रं स्त्रीणां चैव शताधिकम्॥११॥

भवनानि मनोज्ञानि तेषां मध्ये व्यकल्पयत्। पारिजाततरुं मध्ये तासां भोगाय कल्पयत्॥१२॥

यादवानां गृहास्तत्र षट् पश्चाशच कोटयः। अन्येऽपि बहवो लोका वसन्ति विगतज्वराः॥१३॥

यत् किश्चित् त्रिषु लोकेषु सुन्दरं तत्र दृश्यते। सत्राजितप्रसेनाख्यो पुत्रावुग्रस्य विश्रुतौ॥१४॥

अम्भोधितीरमासाद्य तन्मनस्कतया च सः। सत्राजितस्तपस्तेपे सूर्यमुद्दिश्य बुद्धिमान्॥१५॥

व्रतं निरशनं गृह्य सूर्यसम्बद्धलोचनः। ततः प्रसन्नो भगवान् सत्राजितपुरः स्थितः॥१६॥ सत्राजितोऽपि तुष्टाव दृष्ट्वा देवं दिवाकरम्। तेजोराशे नमस्तेऽस्तु नमस्ते सर्वतोमुख॥१७॥

विश्वव्यापिन् नमस्तेऽस्तु नमस्ते विश्वरूपिणे। काश्यपेय नमस्तेऽस्तु हरिदश्व नमोऽस्तु ते॥१८॥

ग्रहराज नमस्तेऽस्तु नमस्ते चण्डरोचिषे। वेदत्रय नमस्तेऽस्तु सर्वदेव नमोऽस्तु ते॥१९॥

प्रसीद पाहि देवेश सुदृष्ट्या मां दिवाकर। इत्थं संस्तूयमानोऽसौ देवदेवो दिवाकरः॥२०॥

स्निग्धगम्भीरमधुरं सत्राजितमुवाच ह।

## सूर्य उवाच

वरं ब्रूहि प्रदास्यामि यत् ते मनसि वर्तते॥२१॥ सत्राजित महाभाग तुष्टोऽहं तव निश्चयात्।

### सत्राजित उवाच

स्यमन्तकमणिं देहि यदि तुष्टोऽसि भास्कर॥२२॥ ददौ तस्य च तद् रत्नं स्वकण्ठादवतार्य सः।

#### भास्कर उवाच

भाराष्टकं शातकुम्भं स्रवतेऽसौ महामणिः॥२३॥

शुचिष्मता सदा धार्यं रत्नमेतन्महोत्तमम्। सत्राजित क्षणेनैतदशुचिं हन्ति मानवम्। इत्युक्ताऽन्तर्दधे देवस्तेजोराशिर्दिवाकरः॥२४॥

तत्कण्ठरत्नज्वलमानरूपी पुरीं स कृष्णस्य विवेश सत्वरम्। दृष्ट्वा तु लोका मनसा दिवाकरं सञ्चिन्तयन्तो हि विमुष्टदृष्टयः॥२५॥ समागतोऽयं हरिदश्वदीधिति-र्जनार्दनं द्रष्टुमसंशयेन। नायं सहस्रांशुरितीह लोकाः सत्राजितोऽयं मणिकण्ठभास्वान्॥२६॥

स्यमन्तकं महारत्नं दृष्ट्वा तत्कण्ठमण्डले। स्पृहां चक्रे जगन्नाथो न जहार मणिं तु सः॥२७॥

सत्राजितो जातभयो याचियष्यिति मां हरिः। प्रसेनाय ददौ भ्रात्रे धार्योऽयं शुचिना त्वया॥२८॥

एकदा कण्ठदेशेऽसौ क्षित्वा तं मणिमुत्तमम्। मृगया क्रीडनार्थाय ययौ कृष्णेन संयुतः॥२९॥

अश्वारूढोऽशुचिश्वासौ हतः सिंहेन तत्क्षणात्। रत्नमादाय सिंहोऽपि गच्छन् जाम्बवता हतः॥३०॥

नीत्वा स विवरे रत्नं ददौ पुत्राय जाम्बवान्। पुरीं विवेश कृष्णोऽपि स्वकैः सर्वैः समावृतः॥३१॥

प्रसेनोऽद्यापि नाऽऽयाति हतः कृष्णेन निश्चितम्। मणिलोभेन हा कष्टं बान्धवः पापिना हतः॥३२॥

द्वारकावासिनः सर्वे जना ऊचुः परस्परम्। वृथापवादसन्तप्तः कृष्णोऽपि निरगाच्छनैः॥३३॥

सहैव तैर्गतोऽरण्यं दृष्ट्वा सिंहेन पातितम्। प्रसेनं वाहनयुतं तत्पदानुचरः शनैः॥३४॥

ऋक्षेण निहतं दृष्ट्वा कृष्णश्चर्क्षबिलं गतः। विवेश योजनशतमन्थकारं स्वतेजसा॥३५॥

निवारयन् ददर्शाग्रे प्रासादं बद्धभूमिकम्। तं कुमारं जाम्बवतो दोलायाममितद्युतिम्॥३६॥ माणिक्यं लम्बमानं च ददर्श भगवान् हरिः। रूपयौवनसम्पन्नां कन्यां जाम्बवतीं पुनः॥३७॥

दोलां दोलयमानां च ददर्श कमलेक्षणः। महान्तं विस्मयं चक्रे दृष्ट्वा तां चारुहासिनीम्। दोलां दोलयमाना सा जगौ गीतिमदं मुहुः॥३८॥

सिंहः प्रसेनमवधीत् सिंहो जाम्बवता हतः। सुकुमारक मा रोदीस्तव ह्येष स्यमन्तकः॥३९॥

मदनज्वरदाहार्ता दृष्ट्वा तं कमलेक्षणम्। उवाच ललितं बाला गम्यतां गम्यतामिति॥४०॥

रत्नं गृहीत्वा वेगेन यावच्छेते तु जाम्बवान्। इत्याकण्यं वचः शौरिः शङ्कं दध्मो प्रतापवान्॥४१॥

आकर्ण्य सहसोत्थाय युयुधे ऋक्षराट् ततः। तयोर्युद्धमभूद्धोरं हरिजाम्बवतोस्तदा॥४२॥

द्वारकावासिनः सर्वे गतास्ते सप्तमे दिने। मृतः कृष्णो भक्षितो वा निःसन्दिग्धं विचार्य च॥४३॥

परलोकिक्रयां चकुः परेतस्य तु ते तदा। एकविंशिद्दिनं यावद् बाहुप्रहरणो विभुः॥४४॥

युयुधे तेन ऋक्षेण युद्धकर्मणि तोषितः। जाम्बवान् प्राक्तनं स्मृत्वा दृष्ट्वा देवबलं महत्॥४५॥

### जाम्बवानुवाच

अजेयोऽहं सुरैः सर्वैर्यक्षराक्षसदानवैः। त्वया जितोऽहं देवेश देवस्त्वमसि निश्चितम्॥४६॥

जाने त्वां वैष्णवं तेजो नान्यथा बलमीदशम्। इति प्रसाद्य देवेशं ददौ माणिक्यमुत्तमम्॥४७॥ सुतां जाम्बवतीं नाम भार्यार्थं वरवर्णिनीम्। पाणिं वै ग्राहयामास देवदेवं च जाम्बवान्॥४८॥

मणिमादाय देवोऽपि जाम्बवत्याऽपि संयुतः। तद्गृतान्तं समाचष्टे द्वारकावासिनां स्वयम्॥४९॥

सत्राजितस्य माणिक्यं दत्तवान् संसदि स्थितः। मिथ्यापवादसंशुद्धिं प्राप्तवान् मधुसूदनः॥५०॥

सत्राजितोऽपि सन्नस्तः कृष्णाय प्रददौ सुताम्। सत्यभामां महाबुद्धिस्तदा सर्वगुणान्विताम्॥५१॥

शतधन्वाकूरमुखा यादवा दुष्टमानसाः। सत्राजितेन ते वैरं चकू रत्नाभिलाषिणः॥५२॥

दुरात्मा शतधन्वाऽपि गते कृष्णे च कुत्रचित्। सत्राजितं निहत्याशु मणिं जग्राह पापधीः॥५३॥

कृष्णस्य पुरतः सत्या समाचष्टे विचेष्टितम्। अन्तर्हृष्टो बहिःकोपी कृष्णः कपटनायकः॥५४॥

बलदेवपुरो वाक्यमुवाच धरणीधरः। हत्वा सत्राजितं दुष्टो मणिमादाय गच्छति॥५५॥

निहत्य शतधन्वानं गृह्णीमो रत्नमावयोः। मम भोग्यं च तद् रत्नं भविष्यति सुनिश्चितम्॥५६॥

एतच्छुत्वा भयत्रस्तः शतधन्वाऽपि यादवः। आह्याकूरनामानं माणिक्यं प्रददौ च सः॥५७॥

आरुह्य वडवां वेगान्निर्गतो दक्षिणां दिशम्। रथस्थावनुगच्छेतां तदा रामजनार्दनौ॥५८॥

शतयोजनमात्रेण ममार वडवा तदा। पलायमानो निहतः पदातिस्तु पदातिना॥५९॥ रथस्थे बलदेवे तु हरिणा रत्नलोभतः। न दृष्टं तत्र तद्रत्नं बलदेवपुरोऽवदत्॥६०॥

तदाकर्ण्य महारोषादुवाच वचनं बली। कपटी त्वं सदा कृष्ण लोभी पापी सुनिश्चितम्॥६१॥

अर्थाय स्वजनं हंसि कस्त्वां बन्धुः समाश्रयेत्। अनेकशपथैः कृष्णो बलदेवं प्रसादयत्॥६२॥

सोऽपि धिक् कष्टमित्युक्ता ययौ वैदर्भमण्डलम्। कृष्णोऽपि रथमारुह्य द्वारकां प्रययौ पुनः॥६३॥

तथैवोचुर्जनाः सर्वे न साधीयानयं हरिः। निष्कासितो रत्नलोभाज्येष्ठो भ्राता बलो बली॥६४॥

तच्छुत्वा दीनवदनः पापीयानिव संस्थितः। वृथाभिशापात् सन्तप्तो बभूव स जगत्पतिः॥६५॥

अकूरोऽपि विनिष्क्रम्य तीर्थयात्रानिमित्ततः। काशीं गत्वा सुखेनासौ यजन् यज्ञपतिं प्रभुम्॥६६॥

तोषमुत्पादयामास तेन द्रव्येण बुद्धिमान्। सुरालयगृहेश्चित्रैर्नगरं समकल्पयत्॥६७॥

न दुर्भिक्षं न वै रोग ईतयो न च विड्वरम्। शुचिना धार्यते यत्र मणिः सूर्यस्य निश्चितम्॥६८॥

जानन्नपि हि तत् सर्वं मानुषं भावमाश्रितः। लोकाचारं तथा मायामज्ञानं च समाश्रितः॥६९॥

बन्धुवैरं समुत्पन्नं लाञ्छनं समुपस्थितम्। वृथापवादबहुलं जायमानं कथं सहे॥७०॥

इति चिन्तातुरं कृष्णं नारदः समुपस्थितः। गृहीत्वा तत्कृतां पूजां सुखासीनस्ततोऽब्रवीत्॥७१॥

#### नारद उवाच

किमर्थं खिद्यसे देव किं वा ते शोककारणम्। यथावृत्तं समाचष्टे नारदाय च केशवः॥७२॥

### नारद उवाच

जानामि कारणं देव यदर्थं लाञ्छनं तव। त्वया भाद्रपदे शुक्कचतुर्थ्यां चन्द्रदर्शनम्॥७३॥ कृतं तेन समुत्पन्नं लाञ्छनं तु वृथैव हि।

## श्रीकृष्ण उवाच

वद नारद मे शीघ्रं को दोषश्चन्द्रदर्शने॥७४॥ किमर्थं तु द्वितीयायां तस्य कुर्वन्ति दर्शनम्।

### नारद उवाच

गणनाथेन संशप्तश्चन्द्रमा रूपगर्वतः॥७५॥ त्वद्दर्शने नराणां हि वृथानिन्दा भविष्यति।

## श्रीकृष्ण उवाच

किमर्थं गणनाथेन शप्तश्चन्द्रः सुधामयः॥७६॥ इदमाख्यानकं श्रेष्ठं यथावद् वक्तुमर्हसि।

#### नारद उवाच

गणानामाधिपत्ये च रुद्रेण विहितः पुरा॥७७॥

अणिमा महिमा चैव लघिमा गरिमा तथा। प्राप्तिः प्राकाम्यमीशित्वं वशित्वं चाष्टसिद्धयः॥७८॥

भार्यार्थं प्रददौ देवो गणेशस्य प्रजापतिः। पूजयित्वा गणाध्यक्षं स्तुतिं कर्तुं प्रचऋमे॥७९॥

### ब्रह्मोवाच

गजवऋ गणाध्यक्ष लम्बोदर वरप्रद। विघ्नाधीश्वर देवेश सृष्टिसंहारकारक॥८०॥

यः पूजयेद् गणाध्यक्षं मोदकाद्यैः प्रयत्नतः। तस्य प्रजायते सिद्धिर्निविघ्नेन न संशयः॥८१॥

असम्पूज्य गणाध्यक्षं ये वाञ्छन्ति सुरासुराः। न तेषां जायते सिद्धिः कल्पकोटिशतैरपि॥८२॥ त्वद्भक्त्या तु गणाध्यक्ष विष्णुः पालयते सदा। रुद्रोऽपि संहरत्याशु त्वद्भक्तयैव करोम्यहम्॥८३॥

इत्थं संस्तूयमानोऽसौ देवदेवो गजाननः। उवाच परमप्रीतो ब्रह्माणं जगतां पतिम्॥८४॥

### श्रीगणेश उवाच

वरं ब्रूहि प्रदास्यामि यत् ते मनसि वर्तते।

### ब्रह्मोवाच

क्रियमाणस्य मे सृष्टिर्निविघ्नं जायतां प्रभो॥८५॥ एवमस्त्विति देवोऽसौ गृहीत्वा मोदकान् करे। सत्यलोकात् समागच्छन् स्वेच्छया गगने शनैः॥८६॥

चन्द्रलोकं समासाद्य चलितो गणनायकः। उपहासं तदा चक्रे सोमो रूपमदान्वितः॥८७॥

तं दृष्ट्वा कोपताम्राक्षो गणनाथः शशाप ह। दर्शनीयः सुरूपोऽहं सुन्दरश्चाहमित्यथ॥८८॥

गर्वितोऽसि शशाङ्क त्वं फलं प्राप्स्यसि सत्वरम्। अद्यप्रभृति लोकास्त्वां न हि पश्यन्ति पापिनम्॥८९॥ ये पश्यन्ति प्रमादेन त्वां नरा मृगलाञ्छनम्। मिथ्याभिशापसंयुक्ता भविष्यन्तीह ते ध्रुवम्॥९०॥

हाहाकारो महाञ्जातः श्रुत्वा शापं च भीषणम्। अत्यन्तं स्नानवदनश्चन्द्रो जलमथाविशत्॥९१॥

कुमुदं कौमुदीनाथः स्थितस्तत्र कृतालयः। ततो देवर्षिगन्धर्वा निराशा दीनमानसाः॥९२॥

तुरासाहं पुरोधाय जग्मुस्ते तं पितामहम्। देवं शशंसुश्चन्द्रस्य गणेशस्य च चेष्टितम्॥९३॥

दत्तः शापो गणेशेन कथयामासुरादरात्। विचार्य भगवान् ब्रह्मा तान् सुरानिदमब्रवीत्॥९४॥

गणेशशापो देवेन्द्र शकाते केन वाऽन्यथा। कर्तुं रुद्रेण न मया विष्णुना चापि निश्चितम्॥९५॥

तमेव देवदेवेशं व्रजध्वं शरणं सुराः। स एव शापमोक्षं च करिष्यति न संशयः॥९६॥

## देवा ऊचुः

केनोपायेन वरदो गजवऋो गणेश्वरः। पितामह महाप्राज्ञ तदस्माकं वद प्रभो॥९७॥

## पितामह उवाच

चतुर्थ्यां देवदेवोऽसौ पूजनीयः प्रयत्नतः। कृष्णपक्षे विशेषेण नक्तं कुर्याच तद् व्रतम्॥९८॥

अपूपेर्घृतसंयुक्तेर्मोदकेः परितोषयेत्। मध्रान्नं हविष्यं च स्वयं भुञ्जीत वाग्यतः॥९९॥

स्वर्णरूपं गणेशस्य दातव्यं द्विजसत्तम। शत्त्या च दक्षिणां दद्याद् वित्तशाठ्यं न कारयेत्॥१००॥ एवं श्रुत्वा च तैः सर्वेगीष्पतिः प्रेषितस्तदा। स गत्वा कथयामास चन्द्राय ब्रह्मणोदितम्॥१०१॥

व्रतं चक्रे ततश्चन्द्रो यथोक्तं ब्रह्मणा पुरा। आविर्बभूव भगवान् गणेशो व्रततोषितः॥१०२॥

तं क्रीडमानं गणनायकं च तृष्टाव दृष्ट्वा तु कलानिधानः। त्वं कारणं कारणकारणानां वेत्तासि वेद्यं च विभो प्रसीद॥१०३॥

प्रसीद देवेश जगन्निवास गणेश लम्बोदर वऋतुण्ड। विरिश्चिनारायणपूज्यमान क्षमस्व मे गर्वकृतं च हास्यम्॥१०४॥

ये त्वामसम्पूज्य गणेश नूनं वाच्छन्ति मूढाः स्वकृतार्थसिद्धिम्। ते दैवनष्टा निभृतं च लोके ज्ञातो मया ते सकलः प्रभावः॥१०५॥

ये चाप्युदासीनतरास्तु पापाः ते यान्ति वासं नरके सदैव। हेरम्ब लम्बोदर मे क्षमस्व दुश्चेष्टितं तत् करुणासमुद्र॥१०६॥

एवं संस्तूयमानोऽसौ चन्द्रेणाह गजाननः। तुष्टोऽहं तव दास्यामि वरं ब्रूहि निशाकर॥१०७॥

#### चन्द्र उवाच

लोकानां दर्शनीयोऽहं भवामि पुनरेव हि। विशापोऽहं भविष्यामि त्वत्प्रसादाद् गणेश्वर॥१०८॥

### गणेश उवाच

वरमन्यं प्रदास्यामि नैतद् देयं मया तव। ततो ब्रह्मादयः सर्वे समाजग्मुर्भयार्दिताः॥१०९॥

विशापं कुरु देवेश प्रार्थयामो वयं तव। विशापमकरोच्चन्द्रं कमलासनगौरवात्॥११०॥

भाद्रशुक्कचतुर्थ्यां तु ये पश्यन्ति सदैव हि। मिथ्यापवादमावर्षं प्राप्स्यन्तीह न संशयः॥१९१॥

मासादौ पूर्वमेव त्वां ये पश्यन्ति सदा जनाः। भद्रायां श्कुपक्षस्य तेषां दोषो न जायते॥११२॥

तदाप्रभृति लोकोऽयं द्वितीयायां कृतादरः। पुनरेव तु पप्रच्छ कलावान् गणनायकम्॥११३॥ केनोपायेन देवेश तुष्टो भवसि तद्वद।

## गणेश उवाच

यश्च कृष्णचतुर्थ्यां तु मोदकाद्येः प्रपूज्य माम्॥११४॥

रोहिण्या सहितं त्वां च समभ्यर्च्यार्घ्यदानतः। यथाशक्त्या च मद्रूपं स्वर्णेन परिकल्पितम्॥११५॥

दत्त्वा द्विजाय भुश्जीत कथां श्रुत्वा विधानतः। सदा तस्य करिष्यामि सङ्कष्टस्य निवारणम्॥११६॥

भाद्रशुक्रचतुर्थ्यां तु मृन्मयी प्रतिमा शुभा। हेमाभावे तु कर्तव्या नानापुष्पैः प्रपूज्य माम्॥११७॥

ब्राह्मणान् भोजयेत् पश्चाञ्चागरं च विशेषतः। स्थापयेदव्रणं कुम्भं धान्यस्योपरि शोभितम्॥११८॥

यथाशक्त्या च मद्रूपं शातकुम्भेन निर्मितम्। वस्रद्वयसमाच्छन्नं मोदकाद्यः प्रपुज्य माम्॥११९॥

रक्ताम्बरधरो मर्त्यो ब्रह्मचर्यव्रतः शुचिः। रोहिणीसहितं त्वां च पूजयेत् स्थाप्य मत्पुरः॥१२०॥

रजतस्य तु रूपं ते कृत्वा शक्त्या विनिर्मितम्। वस्रं शिवप्रियायेति उपवस्रं गणाधिपे॥१२१॥

गन्धं लम्बोदरायेति पुष्पं सिद्धिप्रदायके। धूपं गजमुखायेति दीपं मूषकवाहने॥१२२॥

विघ्ननाथाय नैवेद्यं फलं सर्वार्थसिद्धिदे। ताम्बुलं कामरूपाय दक्षिणां धनदाय च॥१२३॥

इक्षुदण्डेर्मोदकेश्च होमं कुर्याच नामिनः। विसर्जनं ततः कुर्यात् सर्वसिद्धिप्रदायकम्॥१२४॥

एवं सम्पूज्य विघ्नेशं कथां श्रुत्वा विधानतः। मन्नेणानेन तत् सर्वं ब्राह्मणाय निवेदयेत्॥१२५॥

दानेनानेन देवेश प्रीतो भव गणेश्वर। सर्वत्र सर्वदा देव निर्विघ्नं कुरु सर्वदा॥१२६॥

मानोन्नतिं च राज्यं च पुत्रपौत्रान् प्रदेहि मे। गाश्च धान्यं च वासांसि दद्यात् सर्वं स्वशक्तितः॥१२७॥

दत्त्वा तु ब्राह्मणे सर्वं स्वयं भुञ्जीत वाग्यतः। मोदकापूपमधुरं लवणक्षारवर्जितम्॥१२८॥

एवं करोति यश्चन्द्र तस्याहं सर्वदा जयम्। सिद्धिं च धनधान्ये च दादामि विपुलां प्रजाम्॥१२९॥

इत्युक्तान्तर्दधे देवो विघ्नराजो विनायकः। तद् व्रतं कुरु कृष्ण त्वं ततः सिद्धिमवाप्स्यसि॥१३०॥

नारदेनैवमुक्तस्तु व्रतं चक्रे हरिः स्वयम्। मिथ्यापवादं निर्मृज्य ततः कृष्णोऽभवच्छुचिः॥१३१॥ ये शृण्वन्ति तवाख्यानं स्यमन्तकमणीयकम्। चन्द्रस्य चरितं सर्वं तेषां दोषो न जायते॥१३२॥

भाद्रशुक्लचतुर्थ्यां तु क्वचिचन्द्रस्य दर्शनम्। जातं तत्परिहारार्थं श्रोतव्यं सर्वमेव हि॥१३३॥

यदा यदा मनःकष्टं सन्देह उपजायते। तदा तदा च श्रोतव्यमाख्यानं कष्टनाशनम्। एवमुक्ता गतो देवो गणेशः कृष्णतोषितः॥१३४॥

यदा यदा पश्यति कार्यमुत्थितं नारी नरश्चाथ करोति तद् व्रतम्। सिध्यन्ति कार्याणि मनेप्सितानि किं दुर्लमं विघ्नहरे प्रसन्ने॥१३५॥

॥इति श्रीस्कन्दपुराणे नन्दिकेश्वरसनत्कुमारसंवादे स्यमन्तकोपाख्यानं सम्पूर्णम्॥

# ॥ श्री-धन्वन्तरिपूजा ॥

# ॥ पूर्वाङ्गविघ्नेश्वरपूजा॥

(आचम्य)

शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्। प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये॥

प्राणान् आयम्य। ॐ भूः + भूर्भुवः सुव्रोम्। (अप उपस्पृश्य, पुष्पाक्षतान् गृहीत्वा) ममोपात्तसमस्त दुरितक्षयद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं करिष्यमाणस्य कर्मणः निर्विघ्नेन परिसमाप्त्यर्थम् आदौ विघ्नेश्वरपूजां करिष्ये। ॐ गृणानां त्वा गृणपंति हवामहे कविं केवीनामुंपमश्रंवस्तमम्। ज्येष्ठराजं ब्रह्मणां ब्रह्मणस्पत् आ नः शृण्वन्नृतिभिः सीद् सादनम्॥ अस्मिन् हरिद्राबिम्बे महागणपतिं ध्यायामि, आवाहयामि।

ॐ महागणपतये नमः आसनं समर्पयामि।
पादयोः पाद्यं समर्पयामि। हस्तयोरध्यं समर्पयामि।
आचमनीयं समर्पयामि।
ॐ भूर्भुवस्सुवः। शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।
स्नानानन्तरमाचमनीयं समर्पयामि।
वस्नार्थमक्षतान् समर्पयामि।
यज्ञोपवीताभरणार्थे अक्षतान् समर्पयामि।
दिव्यपरिमलगन्थान् धारयामि।
गन्थस्योपरि हरिद्राकुङ्कुमं समर्पयामि। अक्षतान् समर्पयामि।
पुष्पमालिकां समर्पयामि। पुष्पैः पुजयामि।

## ॥ अर्चना ॥

१. ॐ सुमुखाय नमः १०. ॐ गणाध्यक्षाय नमः २. ॐ एकदन्ताय नमः ११. ॐ फालचन्द्राय नमः ३. ॐ कपिलाय नमः १२. ॐ गजाननाय नमः ४. ॐ गजकर्णकाय नमः १३. ॐ वऋतुण्डाय नमः ५. ॐ लम्बोदराय नमः १४. ॐ शूर्पकर्णाय नमः ६. ॐ विकटाय नमः १५. ॐ हेरम्बाय नमः ७. ॐ विघ्नराजाय नमः १६. ॐ स्कन्दपूर्वजाय नमः ८. ॐ विनायकाय नमः १७. ॐ सिद्धिविनायकाय नमः ९. ॐ धूमकेतवे नमः १८. ॐ विघ्नेश्वराय नमः

नानाविधपरिमलपत्रपुष्पाणि समर्पयामि॥ धूपमाघ्रापयामि। अलङ्कारदीपं सन्दर्शयामि। नैवेद्यम्। ताम्बूलं समर्पयामि। कर्पूरनीराजनं समर्पयामि। कर्पूरनीराजनानन्तरमाचमनीयं समर्पयामि। वऋतुण्डमहाकाय कोटिसूर्यसमप्रभ। अविघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा॥ प्रार्थनाः समर्पयामि। अनन्तकोटिप्रदक्षिणनमस्कारान् समर्पयामि। छत्रचामरादिसमस्तोपचारान् समर्पयामि।

# ॥ प्रधान-पूजा — धन्वन्तरिपूजा॥

शुक्राम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्। प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविद्रोपशान्तये॥

प्राणान् आयम्य। ॐ भूः + भूर्भुवः सुव्रोम्।

### ॥ सङ्कल्पः॥

ममोपात्तसमस्तदुरितक्षयद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं शुभे शोभने मृहूते अद्यब्रह्मणः द्वितीयपरार्द्धे श्वेतवराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे प्रथमे पादे जम्बूद्वीपे भारतवर्षे भरतखण्डे मेरोः दक्षिणेपार्श्वे शकाब्दे अस्मिन् वर्तमाने व्यावहारिके प्रभवादि षष्टिसंवत्सराणां मध्ये () ११ नाम संवत्सरे दक्षिणायने शरद्-ऋतौ तुला-मासे कृष्णपक्षे त्रयोदश्यां शुभितथौ (इन्दु / भौम / बुध / गुरु / भृगु / स्थिर / भानु) वासरयुक्तायाम्

२१पृष्टं ५७२ पश्यताम्

() २२ नक्षत्र () २३ नाम योग () करण युक्तायां च एवं गुण विशेषण विशिष्टायाम् अस्याम् त्रयोदश्यां शुभितथौ अस्माकं सहकुटुम्बानां क्षेमस्थैर्य-धैर्य-वीर्य-विजय आयुरारोग्य ऐश्वर्याभिवृद्धर्थम् धर्मार्थकाममोक्ष-चतुर्विधफलपुरुषार्थसिद्धर्थं पुत्रपौत्राभिवृद्धर्थम् इष्टकाम्यार्थसिद्धर्थम् मम इहजन्मिन पूर्वजन्मिन जन्मान्तरे च सम्पादितानां ज्ञानाज्ञानकृतमहा-पातकचतुष्टय व्यतिरिक्तानां रहस्यकृतानां प्रकाशकृतानां सर्वेषां पापानां सद्य अपनोदनद्वारा सकल पापक्षयार्थं श्रीधन्वन्तरि-देवता-प्रीत्यर्थं श्री धन्वन्तरि-देवता-प्रीति-पूर्वकम् आयुष्य-आरोग्य-ऐश्वर्य-अभिवृद्धर्थं यावच्छिक्ति ध्यानावाहनादि षोडशोपचार धन्वन्तरि-पूजां करिष्ये तदङ्गं कलशपूजां च करिष्ये।

श्रीविघ्नेश्वराय नमः यथास्थानं प्रतिष्ठापयामि। (गणपति प्रसादं शिरसा गृहीत्वा)

### ॥ आसन-पूजा॥

पृथिव्या मेरुपृष्ठ ऋषिः। सुतलं छन्दः। कूर्मो देवता॥

पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता। त्वं च धारय मां देवि पवित्रं चाऽऽसनं कुरु॥

### ॥ घण्टापूजा ॥

आगमार्थं तु देवानां गमनार्थं तु रक्षसाम्। घण्टारवं करोम्यादौ देवताऽऽह्वानकारणम्॥

### ॥ कलशपूजा ॥

ॐ कलशाय नमः दिव्यगन्धान् धारयामि। ॐ गङ्गायै नमः। ॐ यमुनायै नमः। ॐ गोदावर्यै नमः। ॐ सरस्वत्यै नमः। ॐ नर्मदायै नमः। ॐ सिन्धवे नमः। ॐ कावेर्यै नमः।

<sup>&</sup>lt;sup>२२</sup>पृष्टं ५७३ पश्यताम्

२३पृष्टं ५७४ पश्यताम्

ॐ सप्तकोटिमहातीर्थान्यावाहयामि।

(अथ कलशं स्पृष्ट्वा जपं कुर्यात्) आपो वा इद सर्वं विश्वां भूतान्यापः प्राणा वा आपः पृशव् आपोऽन्नमापोऽमृत्मापः सम्राडापो विराडापः स्वराडापृश्छन्दा इस्यापो ज्योती इष्यापो यजू इष्यापः स्त्यमापः सर्वा देवता आपो भूर्भुवः सुवराप ओम्॥

> कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः। मूले तत्र स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः॥

कुक्षौ तु सागराः सर्वे सप्तद्वीपा वसुन्धरा। ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदोऽप्यथर्वणः। अङ्गेश्च सहिताः सर्वे कलशाम्बुसमाश्रिताः॥

गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति। नर्मदे सिन्धुकावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु॥

सर्वे समुद्राः सरितः तीर्थानि च ह्रदा नदाः। आयान्तु विष्णुपूजार्थं दुरितक्षयकारकाः॥ ॐ भूर्भुवः सुवो भूर्भुवः सुवो भूर्भुवः सुवंः।

(इति कलशजलेन सर्वोपकरणानि आत्मानं च प्रोक्ष्य।)

### ॥ आत्मपूजा ॥

ॐ आत्मने नमः, दिव्यगन्धान् धारयामि।

१. ॐ आत्मने नमः ४. ॐ जीवात्मने नमः

२. ॐ अन्तरात्मने नमः ५. ॐ परमात्मने नमः

३. ॐ योगात्मने नमः ६. ॐ ज्ञानात्मने नमः

### समस्तोपचारान् समर्पयामि।

देहो देवालयः प्रोक्तो जीवो देवः सनातनः। त्यजेदज्ञाननिर्माल्यं सोऽहं भावेन पूजयेत्॥

# ॥ पीठपूजा ॥

१. ॐ आधारशक्त्ये नमः ८. ॐ रत्नवेदिकायै नमः

२. ॐ मूलप्रकृत्यै नमः ९. ॐ स्वर्णस्तम्भाय नमः

३. ॐ आदिकूर्माय नमः १०. ॐ श्वेतच्छत्राय नमः

४. ॐ आदिवराहाय नमः ११. ॐ कल्पकवृक्षाय नमः

५. ॐ अनन्ताय नमः १२. ॐ क्षीरसमुद्राय नमः

६. ॐ पृथिव्यै नमः १३. ॐ सितचामराभ्यां नमः

७. ॐ रत्नमण्डपाय नमः १४. ॐ योगपीठासनाय नमः

### ॥गुरु ध्यानम्॥

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुर्गुरुर्देवो महेश्वरः। गुरुः साक्षात् परं ब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः॥

# ॥ षोडशोपचारपूजा॥

चतुर्भुजं पीतवस्त्रं सर्वालङ्कारशोभितम्। ध्याये धन्वन्तरिं देवं सुरासुरनमस्कृतम्॥

युवानं पुण्डरीकाक्षं सर्वाभरणभूषितम्। दधानममृतस्यैव कमण्डलुं श्रिया युतम्॥

यज्ञ-भोग-भुजं देवं सुरासुरनमस्कृतम्। ध्याये धन्वन्तरिं देवं श्वेताम्बरधरं शुभम्॥ अस्मिन् बिम्बे श्री धन्वन्तरिं ध्यायामि।

स्हस्रंशीर्षा पुरुषः। स्हस्राक्षः सहस्रंपात्। स भूमिं विश्वतो वृत्वा। अत्यंतिष्ठद्दशाङ्गुलम्॥ अस्मिन् बिम्बे श्री धन्वन्तरिम् आवाहयामि।

पुरुष पुवेद सर्वम्। यद्भूतं यच् भव्यम्। उतामृत्त्वस्येशानः। यदन्नेनातिरोहंति॥ आसनं समर्पयामि।

पुतावानस्य मिहुमा। अतो ज्यायाईश्च पूर्रुषः। पादौं उस्य विश्वां भूतानि। त्रिपादंस्यामृतं दिवि॥ पादां समर्पयामि।

त्रिपादूर्ध्व उदैत्पुर्रुषः। पादौंऽस्येहाऽऽभंबात्पुनंः। ततो विश्वङ्कांकामत्। साशनानशने अभि॥ अर्घ्यं समर्पयामि।

तस्माँद्विराडंजायत। विराजो अधि पूर्रुषः। स जातो अत्यरिच्यत। पृश्चाद्भृमिमथों पुरः॥ आचमनीयं समर्पयामि।

यत्पुरुषेण ह्विषां। देवा यज्ञमतंन्वत। वसन्तो अस्याऽऽसीदाज्यम्। ग्रीष्म इध्मः श्ररद्धविः॥ मधुपर्कं समर्पयामि।

स्प्रास्याऽऽसन् परिधयः। त्रिः सप्त स्मिधः कृताः। देवा यद्यज्ञं तन्वानाः। अबंध्नन् पुरुषं पृशुम्॥

# शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि। स्नानानन्तरम् आचमनीयं समर्पयामि।

तं युज्ञं ब्रहिषि प्रौक्षन्ं। पुरुषं जातमंग्रतः। तेनं देवा अर्यजन्त। साध्या ऋषयश्च ये॥ वस्नं समर्पयामि।

तस्मौद्यज्ञात्सेर्वहुतंः। सम्भृतं पृषदाज्यम्। पृशू इस्ता इश्चेके वायव्यान्। आरुण्यान्ग्राम्याश्च ये॥ यज्ञोपवीतं समर्पयामि।

तस्मौद्यज्ञात्सेर्वृहुतंः। ऋचः सामोनि जज्ञिरे। छन्दार्श्सि जज्ञिरे तस्मौत्। यजुस्तस्मोदजायत॥ दिव्यपरिमलगन्धान् धारयामि। गन्धस्योपरि हरिद्राकुङ्कुमं समर्पयामि। अक्षतान् समर्पयामि।

> तस्मादश्वां अजायन्त। ये के चोंभयादंतः। गार्वो ह जिज्ञेरे तस्मांत्। तस्मांज्ञाता अजावयंः॥ पुष्पाणि समर्पयामि। पुष्पैः पूजयामि।

### ॥ अङ्गपूजा ॥

- १. ॐ वराहाय नमः पादौ पूजयामि
- २. सङ्कर्षणाय नमः गुल्फौ पूजयामि
- ३. कालात्मने नमः जानुनी पूजयामि
- ४. विश्वरूपाय नमः जङ्घे पूजयामि
- ५. क्रोढाय नमः ऊरू पूजयामि
- ६. भोक्रे नमः कटिं पूजयामि

- ७. विष्णवे नमः मेढ्रं पूजयामि
- ८. हिरण्यगर्भाय नमः नाभिं पूजयामि
- ९. श्रीवत्सधारिणे नमः कुक्षिं पूजयामि
- १०. परमात्मने नमः हृदयं पूजयामि
- ११. सर्वास्त्रधारिणे नमः वक्षः पूजयामि
- १२. वनमालिने नमः कण्ठं पूजयामि
- १३. सर्वात्मने नमः मुखं पूजयामि
- १४. सहस्राक्षाय नमः नेत्राणि पूजयामि
- १५. सुप्रभाय नमः ललाटं पूजयामि
- १६. चम्पकनासिकाय नमः नासिकां पूजयामि
- १७. सर्वेशाय नमः कर्णौ पूजयामि
- १८. सहस्रशिरसे नमः शिरः पूजयामि
- १९. नीलमेघनिभाय नमः केशान् पूजयामि
- २०. महापुरुषाय नमः सर्वाणि अङ्गानि पूजयामि

# ॥ चतुर्विंशति नामपूजा॥

- १. ॐ केशवाय नमः
- २. ॐ नारायणाय नमः
- ३. ॐ माधवाय नमः
- ४. ॐ गोविन्दाय नमः
- ५. ॐ विष्णवे नमः
- ६. ॐ मधुसूदनाय नमः
- ७. ॐ त्रिविक्रमाय नमः
- ८. ॐ वामनाय नमः
- ९. ॐ श्रीधराय नमः

- १०. ॐ हृषीकेशाय नमः
- ११. ॐ पद्मनाभाय नमः
- १२. ॐ दामोदराय नमः
- १३. ॐ सङ्कर्षणाय नमः
- १४. ॐ वासुदेवाय नमः
- १५. ॐ प्रद्युम्नाय नमः
- १६. ॐ अनिरुद्धाय नमः
- १७. ॐ पुरुषोत्तमाय नमः
- १८. ॐ अधोक्षजाय नमः

30

१९. ॐ नृसिंहाय नमः

२०. ॐ अच्युताय नमः

२१. ॐ जनार्दनाय नमः

२२. ॐ उपेन्द्राय नमः

२३. ॐ हरये नमः

२४. ॐ श्रीकृष्णाय नमः

# ॥धन्वन्तर्यष्टोत्तरशतनामाविलः॥

धन्वन्तरये नमः

सुधापूर्णकलशाढ्यकराय नमः

हरये नमः

जरामृतित्रस्तदेवप्रार्थना-

साधकाय नमः

प्रभवे नमः

निर्विकल्पाय नमः

निस्समानाय नमः

मन्दस्मितमुखाम्बुजाय नमः

आञ्जनेयप्रापिताद्रये नमः

पार्श्वस्थविनतासुताय नमः १०

निमग्रमन्दरधराय नमः

कूर्मरूपिणे नमः

बृहत्तनवे नमः

नीलकुश्चितकेशान्ताय नमः

परमाद्भुतरूपधृते नमः

कटाक्षवीक्षणाश्वस्तवास् किने नमः

सिंहविक्रमाय नमः

स्मर्तृहृद्रोगहरणाय नमः

महाविष्णवंशसम्भवाय नमः

प्रेक्षणीयोत्पलश्यामाय नमः

आयुर्वेदाधिदैवताय नमः भेषजग्रहणानेहस्स्मरणीय-

मयजात्रहणानहरस्मरणाय-

पदाम्बुजाय नमः

नवयौवनसम्पन्नाय नमः

किरीटान्वितमस्तकाय नमः

नऋकुण्डलसंशोभि-

श्रवणद्वयशष्कुलये नमः

दीर्घपीवरदोर्दण्डाय नमः

कम्बुग्रीवाय नमः

अम्बुजेक्षणाय नमः

चतुर्भुजाय नमः

शङ्खधराय नमः चऋहस्ताय नमः

वरप्रदाय नमः

सुधापात्रोपरिलसदाम्रपत्र-

लसत्कराय नमः

शतपद्याढ्यहस्ताय नमः

कस्तूरीतिलकाश्चिताय नमः

सुकपोलाय नमः

सुनासाय नमः

सुन्दरभूलताश्चिताय नमः

स्वङ्गुलीतलशोभाढ्याय नमः गृढजत्रवे नमः 80 महाहनवे नमः दिव्याङ्गदलसद्वाहवे नमः केयूरपरिशोभिताय नमः विचित्ररत्नखचितवलयद्वय-शोभिताय नमः समोल्लसत्सुजातांसाय नमः अङ्गुलीयविभूषिताय नमः स्धागन्धरसास्वादमिलद्भङ्ग-मनोहराय नमः लक्ष्मीसमर्पितोत्फुल्ल-कञ्जमालालसद्गलाय नमः लक्ष्मीशोभितवक्षस्काय नमः वनमालाविराजिताय नमः नवरत्नमणीक्रुप्तहारशोभित-कन्धराय नमः हीरनक्षत्रमालादिशोभारञ्जित-दिङ्गखाय नमः विरजाय नमः अम्बरसंवीताय नमः विशालोरवे नमः पृथुश्रवसे नमः निम्रनाभये नमः स्क्ष्ममध्याय नमः स्थूलजङ्घाय नमः निरञ्जनाय नमः ६०

सुलक्षणपदाङ्गुष्ठाय नमः सर्वसामुद्रिकान्विताय नमः अलक्तकारक्तपादाय नमः मूर्तिमते नमः वार्धिपूजिताय नमः सुधार्थान्योन्यसंयुध्यद्देवदैतेय-सान्त्वनाय नमः कोटिमन्मथसङ्काशाय नमः सर्वावयवसुन्दराय नमः अमृतास्वादनोद्युक्तदेवसङ्घ-परिष्टुताय नमः पुष्पवर्षणसंयुक्तगन्धर्वकुल-सेविताय नमः *9*0 शङ्खतूर्यमृदङ्गादि-सुवादित्राप्सरोवृताय नमः विष्वक्सेनादियुक्पार्श्वाय नमः सनकादिमुनिस्तुताय नमः साश्चर्यसस्मितचतुर्मुखनेत्र-समीक्षिताय नमः साशङ्कसम्भ्रमदितिदन्वंश्य-समीडिताय नमः नमनोन्मुखदेवादिमौलीरत्न-लसत्पदाय नमः दिव्यतेजसे नमः पुञ्जरूपाय नमः सर्वदेवहितोत्सुकाय नमः स्वनिर्गमक्षुब्धदुग्धवाराशये नमः ८० दुन्दुभिस्वनाय नमः गन्धर्वगीतापदानश्रवणोत्क-महामनसे नमः निष्किश्चनजनप्रीताय नमः भवसम्प्राप्तरोगहृते नमः अन्तर्हितसुधापात्राय नमः महात्मने नमः मायिकाग्रण्ये नमः क्षणार्धमोहिनीरूपाय नमः सर्वस्रीशुभलक्षणाय नमः मदमत्तेभगमनाय नमः 90 सर्वलोकविमोहनाय नमः स्रंसन्नीवीग्रन्थिबन्धासक्त-दिव्यकराङ्ग्रुलिने नमः रत्नदर्वीलसद्धस्ताय नमः देवदैत्यविभागकृते नमः सङ्ख्यातदेवतान्यासाय नमः दैत्यदानववश्चकाय नमः देवामृतप्रदात्रे नमः परिवेषणहृष्टिधये नमः

उन्मुखोन्मुखदैत्येन्द्रदन्त-पङ्किविभाजकाय नमः पुष्पवत्सुविनिर्दिष्टराहुरक्षःशिरोहराय नमः 800 राहुकेतुग्रहस्थानपश्चाद्गति-विधायकाय नमः अमृतालाभनिर्विण्णयुध्यद्देवारि-स्दनाय नमः गरुत्मद्वाहनारूढाय नमः सर्वेशस्तोत्रसंयुताय नमः स्वस्वाधिकारसन्तुष्ट-शऋवह्न्यादिपूजिताय नमः मोहिनीदर्शनायात-स्थाणुचित्तविमोहकाय नमः शचीस्वाहादिदिक्पालपत्नी-मण्डलसन्नुताय नमः वेदान्तवेद्यमहिम्ने नमः सर्वलोकैकरक्षकाय नमः राजराजप्रपूज्याङ्गये नमः ११० चिन्तितार्थप्रदायकाय नमः

॥इति श्री धन्वन्तर्यष्टोत्तरशतनामाविलः सम्पूर्णा॥

# ॥ उत्तराङ्गपूजा ॥

यत्पुरुषं व्यंदधुः। कृतिधा व्यंकल्पयन्। मुखं किमस्य को बाहू। कावूरू पादांवुच्येते॥ दशाङ्गं गुग्गुलं धूपं सुगन्धं सुमनोहरम्। धूपं गृहाण देवेश सर्वभूत मनोहर॥ श्री धन्वन्तरये नमः धूपमाघ्रापयामि। ब्राह्मणौऽस्य मुखंमासीत्। बाहू रांजन्यः कृतः। ऊरू तदस्य यद्वैश्यः। पुद्धाः शूद्रो अंजायत॥

उद्दींप्यस्व जातवेदोऽपृघ्निर्ऋतिं ममं।
पृशूरश्च मह्यमावंह जीवंनं च दिशों दिश॥
मा नों हिर्सीञ्चातवेदो गामश्वं पुरुषं जगंत्।
अबिंभृदग्न आगंहि श्रिया मा परिपातय॥
श्री धन्वन्तरये नमः अलङ्कारदीपं सन्दर्शयामि।

चन्द्रमा मनंसो जातः। चक्षोः सूर्यो अजायत। मुखादिन्द्रेश्चाग्निश्चे। प्राणाद्वायुरंजायत॥

- श्री धन्वन्तरये नमः ( ) निवेदयामि, अमृतापिधानमसि। निवेदनानन्तरम् आचमनीयं समर्पयामि।

नाभ्यां आसीद्न्तरिक्षम्। शीर्ष्णो द्यौः समंवर्तत। पुद्धां भूमिर्दिशः श्रोत्रांत्। तथां लोकाः अंकल्पयन्॥

> पूगीफलसमायुक्तं नागवल्लीदलैर्युतम्। कर्पूरचूर्णसंयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्॥

श्री धन्वन्तरये नमः कर्पूरताम्बूलं समर्पयामि।

वेदाहमेतं पुरुषं महान्तम्। आदित्यवंर्णं तमंस्सतु पारे। सर्वाणि रूपाणि विचित्य धीरंः। नामांनि कृत्वाऽभिवदन् यदास्तै॥

श्री धन्वन्तरये नमः समस्त अपराध क्षमापनार्थं कर्पूरनीराजनं दर्शयामि। कर्पूरनीरजनानन्तरम् आचमनीयं समर्पयामि। धाता पुरस्ताद्यमुंदाज्हारं। श्राकः प्रविद्वान् प्रदिश्रश्चतंस्रः।
तमेवं विद्वानमृतं इह भंवति। नान्यः पन्था अर्यनाय विद्यते॥
योऽपां पुष्पं वेदं। पुष्पंवान् प्रजावान् पशुमान् भंवति।
चन्द्रमा वा अपां पुष्पम्। पुष्पंवान् प्रजावान् पशुमान् भंवति।
य एवं वेदं। योऽपामायतंनं वेदं। आयतंनवान् भवति।
औं तद्वाद्यः। औं तदात्मा। औं तथ्मत्यम्।
औं तथ्मवीम्। औं तत्पुरोर्नमः॥
अन्तश्चरतिं भूतेषु गुहायां विश्वमूर्तिषु।

त्वं यज्ञस्त्वं वषद्भारस्त्वमिन्द्रस्त्वः रुद्रस्त्वं विष्णुस्त्वं ब्रह्म त्वं प्रजापितः।
त्वं तंदाप आपो ज्योती रसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भृवस्सुवरोम्॥
श्री धन्वन्तरये नमः वेदोक्तमन्त्रपुष्पाञ्जितं समर्पयामि।
स्वर्णरजतैर्युक्तं चामीकरिवनिर्मितम्।
स्वर्णपुष्पं प्रदास्यामि गृह्यतां मधुसूदन॥ - स्वर्णपुष्पं समर्पयामि
प्रदक्षिणं करोम्यद्य पापानि नृत माधव।
मयार्पितान्यशेषाणि परिगृह्य कृपां कुरु॥
यानि कानि च पापानि जन्मान्तरकृतानि च।
तानि तानि विनश्यन्ति प्रदक्षिण पदे पदे॥
नमस्ते देवदेवेश नमस्ते भक्तवत्सल।
नमस्ते पुण्डरीकाक्ष वासुदेवाय ते नमः॥
नमः सर्वहितात्र्थाय जगदाधाररूपिणे।
साष्टाङ्गोऽयं प्रणामोस्तु जगन्नाथ मया कृतः॥
- अनन्तकोटिप्रदक्षिणनमस्कारान् समर्पयामि

युज्ञेनं युज्ञमंयजन्त देवाः। तानि धर्माणि प्रथमान्यांसन्। ते ह नाकं महिमानः सचन्ते। यत्र पूर्वे साध्याः सन्तिं देवाः॥ - छत्रचामरादिसमस्तोपचारान् समर्पयामि हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः। अनन्तपुण्यफलदम् अतः शान्तिं प्रयच्छ मे॥ धन्वन्तरिजयन्ती-पुण्यकालेऽस्मिन् मया क्रियमाण धन्वन्तरिपूजायां यद्देयमुपायनदानं तत्प्रत्यायाम्नार्थं हिरण्यं श्री धन्वन्त्रिप्रीतिम् कामयमानः मनसोद्दिष्टाय ब्राह्मणाय सम्प्रददे नमः न मम। अनया पूजया श्री धन्वन्तरिः प्रीयताम्।

## ॥ विसर्जनम्॥

यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपः पूजा क्रियादिषु।
न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतम्॥
इदं व्रतं मया देव कृतं प्रीत्यै तव प्रभो।
न्यूनं सम्पूर्णतां यातु त्वत्प्रसादाञ्जनाईन॥
अस्मात् बिम्बात् श्री धन्वन्तिरं यथास्थानं प्रतिष्ठापयामि
(अक्षतानिर्पत्वा देवमुत्सर्जयेत्।)
अनया पूजया श्री धन्वन्तिरः प्रीयताम्।

# ॥ धन्वन्तरि स्तोत्रम् (मत्स्य पुराणान्तर्गतम्) ॥

क्षीरोदमोतं दिव्य-गन्धानुलेपनम्। सुधा-कलश-हस्तं तं वन्दे धन्वन्तरिं हरिम्॥

## देव-दानवा ऊचुः

नमो लोक-त्र्याध्यक्ष तेजसा जित-भास्कर। नमो विष्णो नमो जिष्णो नमस्ते कैटभार्दन॥१॥

नमः सर्ग-क्रिया-कर्त्रे जगत् पालयते नमः। नमः स्मृतार्ति-नाशाय नमः पुष्कर मालिने॥२॥ दिव्यौषधि-स्वरूपाय सुधा-कलश-पाणये। शङ्ख-चऋ-गदा-पद्म-धारिणे वनमालिने॥३॥

देवेन्द्रादि-सुरेड्याय नमः क्षीराब्धि-जन्मने। निर्गुणाय विशेषाय हरये ब्रह्म-रूपिणे॥४॥

जगत् प्रतिष्ठितं यत्र जगतां यो न दश्यते। नमः सूक्ष्मातिसूक्ष्माय तस्मै देवाय शङ्क्षिने॥५॥

यं न पश्यन्ति पश्यन्तं जगदप्यखिलं नराः। अपश्यद्भिर्जगद् यश्च दृश्यते हृदि संस्थितः॥६॥

यस्मिन् वनानि पर्वता नद्यश्चैवाखिलं जगत्। तस्मै नमोऽस्तु जगताम् आधाराय नमो नमः॥७॥

आद्य-प्रजापतिर्यश्च यः पितृणां परः पतिः। पतिः सुराणां यस्तस्मे नमः कृष्णाय वेधसे॥८॥

यः प्रवृत्तौ निवृत्तौ च इज्यते कर्मभिः स्वकैः। स्वर्गापवर्ग-फल-दो नमस्तस्मै गदा-भृते॥९॥

यश्चिन्त्यमानो मनसा सद्यः पापं व्यपोहति। नमस्तस्मै विशुद्धाय पराय हरि-मेधसे॥१०॥

यं बुद्धा सर्वभूतानि देव-देवेशमव्ययम्। न पुनर्जन्म-मरणे प्राप्नुवन्ति नमामि तम्॥११॥

यो यज्ञे यज्ञ-परमैरिज्यते यज्ञ-संज्ञितः। तं यज्ञ-पुरुषं विष्णुं नमामि प्रभुमीश्वरम्॥१२॥

गीयते सर्व-वेदेषु वेद-विद्धिर्विदां गतिः। यस्तस्मै वेद-वेद्याय विष्णवे जिष्णवे नमः॥१३॥

यो विश्वं समुत्पन्नं यस्मिश्च लयमेष्यति। विश्वोद्भव-प्रतिष्ठाय नमस्तस्मै महात्मने॥१४॥ ब्रह्मादि-स्तम्ब-पर्यन्तं येन विश्वमिदं ततम्। माया जालं समुत्तर्तं तमुपेन्द्रं नमाम्यहम्॥१५॥

विषाद-तोष-रोषाद्यैर्योऽजस्रं सुख-दुःखजम्। नृत्यत्यखिल-भूत-स्थस्तमुपेन्द्रं नमाम्यहम्॥१६॥

यमाराध्य विशुद्धेन कर्मणा मनसा गिरा। तरन्त्यविद्याम् अखिलाम् आदि-वैद्यं नमाम्यहम्॥१७॥

यः स्थितो विश्व-रूपेण बिभर्ति ह्यखिलौषधीः। तं रत्न-कलशोद्भासि-हस्तं धन्वन्तरिं नुमः॥१८॥

विश्वं विश्व-पतिं विष्णुं तं नमामि प्रजापतिम्। मूर्त्या चासुरमय्या तु तद्विधान् विनिहन्ति यः॥१९॥

रात्रि-रूपं सूर्य-रूपं भजेत्तं सान्ध्य-रूपिणम्। हन्ति विद्या-प्रदानेन यो वा अज्ञान-जं तमः॥२०॥

यस्तु भेषज-रूपेण जगदाप्याययेत् सदा। यस्याक्षिणी चन्द्र-सूर्यौ सर्व-लोक-शुभङ्करः। पश्यतः कर्म सततं तं च धन्वन्तरि नुमः॥२१॥

यस्मिन् सर्वेश्वरे वश्यं जगत् स्थावर-जङ्गमम्। आभाति तमजं विष्णुं नमामि प्रभुमव्ययम्॥२२॥ ॥इति मत्स्य-पुराणान्तर्गतं धन्वन्तरि-स्तोत्रं सम्पूर्णम्॥ ॐ तत्सद्बह्मार्पणमस्तु॥

# ॥ श्री-लक्ष्मी-कुबेर-पूजा ॥

॥ पूर्वाङ्गविघ्नेश्वरपूजा॥

(आचम्य)

शुक्राम्बरधरं विष्णुं शशिवणं चतुर्भुजम्। प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये॥

प्राणान् आयम्य। ॐ भूः + भूर्भुवः सुव्रोम्। (अप उपस्पृश्य, पुष्पाक्षतान् गृहीत्वा) ममोपात्तसमस्त दुरितक्षयद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं करिष्यमाणस्य कर्मणः निर्विघ्नेन परिसमाप्त्यर्थम् आदौ विघ्नेश्वरपूजां करिष्ये।

ॐ गृणानां त्वा गृणपंति हवामहे कविं केवीनामुंपमश्रंवस्तमम्। ज्येष्ठराजं ब्रह्मणां ब्रह्मणस्पत् आ नः शृण्वन्नृतिभिः सीद् सादेनम्॥ अस्मिन् हरिद्राबिम्बे महागणपतिं ध्यायामि, आवाहयामि।

ॐ महागणपतये नमः आसनं समर्पयामि।
पादयोः पाद्यं समर्पयामि। हस्तयोरध्यं समर्पयामि।
आचमनीयं समर्पयामि।
ॐ भूर्भुवस्सुवः। शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।
स्नानानन्तरमाचमनीयं समर्पयामि।
वस्नार्थमक्षतान् समर्पयामि।
यज्ञोपवीताभरणार्थे अक्षतान् समर्पयामि।
दिव्यपरिमलगन्थान् धारयामि।
गन्थस्योपरि हरिद्राकुङ्कुमं समर्पयामि। अक्षतान् समर्पयामि।
पुष्पमालिकां समर्पयामि। पुष्पैः पूज्यामि।

### ॥ अर्चना ॥

१. ॐ सुमुखाय नमः

१०. ॐ गणाध्यक्षाय नमः

२. ॐ एकदन्ताय नमः

११. ॐ फालचन्द्राय नमः

३. ॐ कपिलाय नमः

१२. ॐ गजाननाय नमः

४. ॐ गजकर्णकाय नमः

१३. ॐ वऋतुण्डाय नमः

५. ॐ लम्बोदराय नमः

१४. ॐ शूर्पकर्णाय नमः

६. ॐ विकटाय नमः

१५. ॐ हेरम्बाय नमः

७. ॐ विघ्नराजाय नमः

१६. ॐ स्कन्दपूर्वजाय नमः

८. ॐ विनायकाय नमः

१७. ॐ सिद्धिविनायकाय नमः

९. ॐ धूमकेतवे नमः

१८. ॐ विघ्नेश्वराय नमः

नानाविधपरिमलपत्रपुष्पाणि समर्पयामि॥ धूपमाघ्रापयामि। अलङ्कारदीपं सन्दर्शयामि। नैवेद्यम।

ताम्बुलं समर्पयामि।

ताम्बूल समययामा कर्परनीराजनं समर्पयामि।

कर्पूरनीराजनानन्तरमाचमनीयं समर्पयामि।

वऋतुण्डमहाकाय कोटिसूर्यसमप्रभ।

अविष्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा॥

प्रार्थनाः समर्पयामि।

अनन्तकोटिप्रदक्षिणनमस्कारान् समर्पयामि। छत्रचामरादिसमस्तोपचारान् समर्पयामि।

# ॥ प्रधान-पूजा — श्रीमहालक्ष्मी-पूजा॥

शुक्राम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्। प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविद्रोपशान्तये॥

प्राणान् आयम्य। ॐ भूः + भूर्भुवः सुव्रोम्।

### ॥सङ्कल्पः॥

ममोपात्तसमस्तदुरितक्षयद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं शुभे शोभने मुहूर्ते अद्यब्रह्मणः द्वितीयपरार्द्धे श्वेतवराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे प्रथमे पादे जम्बूद्वीपे भारतवर्षे भरतखण्डे मेरोः दक्षिणेपार्श्वे शकाब्दे अस्मिन् वर्तमाने व्यावहारिके प्रभवादि षष्टिसंवत्सराणां मध्ये ( )<sup>२४</sup> नाम संवत्सरे दक्षिणायने शरद्-ऋतौ तुला-मासे कृष्णपक्षे अमावास्यायां शुभितिथौ (इन्दु / भौम / बुंध / गुरु / भृगु / स्थिर / भानु) वासरयुक्तायाम् ( )<sup>२५</sup> नक्षत्र ( )<sup>२६</sup> नाम योग (चतुष्पात्/नागव) करण युक्तायां च एवं गुण विशेषण विशिष्टायाम् अस्याम् अमावास्यायां शुभितथौ अस्माकं सहकुटुम्बानां क्षेमस्थैर्य-धैर्य-वीर्य-विजय आयुरारोग्य ऐश्वर्याभिवृद्धर्थम् धर्मार्थकाममोक्षचतुर्विधफलपुरुषार्थसिद्धर्थं पुत्रपौत्राभि-वृद्धर्थम् इष्टकाम्यार्थसिद्धर्थम् मम इहजन्मनि पूर्वजन्मनि जन्मान्तरे च सम्पादितानां ज्ञानाज्ञानकृतमहापातकचतुष्टय व्यतिरिक्तानां रहस्यकृतानां प्रकाशकृतानां सर्वेषां पापानां सद्य अपनोदनद्वारा सकल पापक्षयार्थं श्रीमहालक्ष्मी-प्रीत्यर्थं श्रीमहालक्ष्मी-पूजां करिष्ये। तदङ्गं मातृगणपूजां नवग्रहपूजां लोकपाल-पूजां च करिष्ये। तदङ्गं कलशपूजां च करिष्ये।

श्रीविघ्नेश्वराय नमः यथास्थानं प्रतिष्ठापयामि। शोभनार्थे क्षेमाय पुनरागमनाय च।

(गणपति प्रसादं शिरसा गृहीत्वा)

<sup>&</sup>lt;sup>२४</sup>पृष्टं ५७२ पश्यताम्

<sup>&</sup>lt;sup>२५</sup>पृष्टं ५७३ पश्यताम्

२६ पृष्टं ५७४ पश्यताम्

#### ॥ आसन-पूजा॥

पृथिव्या मेरुपृष्ठ ऋषिः। सुतलं छन्दः। कूर्मो देवता॥

पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता। त्वं च धारय मां देवि पवित्रं चाऽऽसनं कुरु॥

### ॥ घण्टापूजा ॥

आगमार्थं तु देवानां गमनार्थं तु रक्षसाम्। घण्टारवं करोम्यादौ देवताऽऽह्वानकारणम्॥

### ॥ कलशपूजा ॥

ॐ कलशाय नमः दिव्यगन्थान् धारयामि। ॐ गङ्गायै नमः। ॐ यमुनायै नमः। ॐ गोदावर्यै नमः। ॐ सरस्वत्यै नमः। ॐ नर्मदायै नमः। ॐ सिन्धवे नमः। ॐ कावेर्यै नमः। ॐ सप्तकोटिमहातीर्थान्यावाहयामि।

(अथ कलशं स्पृष्ट्वा जपं कुर्यात्) आपो वा इदः सर्वं विश्वां भूतान्यापः प्राणा वा आपः पृशव् आपोऽन्नमापोऽमृतमापः सम्राडापो विराडापः स्वराडापृश्छन्दाः स्यापो ज्योतीः इष्यापो यज् इष्यापः सत्यमापः सर्वा देवता आपो भूर्भुवः सुवराप ओम्॥

> कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः। मूले तत्र स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः॥

कुक्षौ तु सागराः सर्वे सप्तद्वीपा वसुन्धरा। ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदोऽप्यथर्वणः। अङ्गश्च सहिताः सर्वे कलशाम्बुसमाश्रिताः॥ गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति। नर्मदे सिन्धुकावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु॥

सर्वे समुद्राः सरितः तीर्थानि च ह्रदा नदाः। आयान्तु विष्णुपूजार्थं दुरितक्षयकारकाः॥ ॐ भूर्भुवः सुवो भूर्भुवः सुवो भूर्भुवः सुवेः।

(इति कलशजलेन सर्वोपकरणानि आत्मानं च प्रोक्ष्य।)

### ॥ आत्मपूजा॥

ॐ आत्मने नमः, दिव्यगन्धान् धारयामि।

१. ॐ आत्मने नमः ४. ॐ जीवात्मने नमः

२. ॐ अन्तरात्मने नमः ५. ॐ परमात्मने नमः

३. ॐ योगात्मने नमः ६. ॐ ज्ञानात्मने नमः

### समस्तोपचारान् समर्पयामि।

देहो देवालयः प्रोक्तो जीवो देवः सनातनः। त्यजेदज्ञाननिर्माल्यं सोऽहं भावेन पूजयेत्॥

# ॥ पीठपूजा ॥

१. ॐ आधारशक्त्ये नमः ८. ॐ रत्नवेदिकायै नमः

२. ॐ मूलप्रकृत्यै नमः ९. ॐ स्वर्णस्तम्भाय नमः

३. ॐ ओदिकूर्माय नमः १०. ॐ श्वेतच्छत्राय नमः

४. ॐ आदिवराहाय नमः ११. ॐ कल्पकवृक्षाय नमः

५. ॐ अनन्ताय नमः १२. ॐ क्षीरसमुद्राय नमः

६. ॐ पृथिव्यै नमः १३. ॐ सितचामराभ्यां नमः

७. ॐ रत्नमण्डपाय नमः १४. ॐ योगपीठासनाय नमः

### ॥गुरु ध्यानम्॥

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुर्गुरुर्देवो महेश्वरः। गुरुः साक्षात् परं ब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः॥

### ॥ मातृगणपूजा॥

१. ॐ गौर्ये नमः ९. ॐ स्वधाये नमः

२. ॐ पद्माये नमः १०. ॐ स्वाहाये नमः

३. ॐ शच्ये नमः ११. ॐ मातृभ्यो नमः

४. ॐ मेधायै नमः १२. ॐ लोकमातुभ्यो नमः

५. ॐ सावित्रयै नमः १३. ॐ धृत्यै नमः

६. ॐ विजयायै नमः १४. ॐ पुष्ट्ये नमः

७. ॐ जयायै नमः १५. ॐ तुष्ट्ये नमः

८. ॐ देवसेनायै नमः १६. ॐ आत्मनः कुलदेवतायै नमः

षोडश-मातृभ्यो नमः ध्यायामि। आवाहयामि। आसनं समर्पयामि। पाद्यं समर्पयामि। अर्घ्यं समर्पयामि। आचमनीयं समर्पयामि। ॐ भूर्भुवस्सुवः। शृद्धोदकस्नानं समर्पयामि।

रुष्कादकस्त्रान समयवाामा

स्नानानन्तरमाचमनीयं समर्पयामि।

वस्रार्थमक्ष्तान् समर्पयामि।

आभरणार्थम् अक्षतान् समर्पयामि।

दिव्यपरिमलगन्धान् धारयामि।

गन्धस्योपरि हरिद्राकुङ्कुमं समर्पयामि। अक्षतान् समर्पयामि।

पुष्पमालिकां समर्पयामि। धूपदीपार्थम् अक्षतान् समर्पयामि।

नैवेद्यम्। (कदलीफलानि) कर्पूरताम्बूलं कर्पूरनीराजनार्थं अक्षतान् समर्पयामि। प्रार्थनाः समर्पयामि। आयुरारोग्यमैश्वर्यं ददध्वं मातरो मम। निविघ्नं सर्वकार्येषु कुरुध्वं सगणाधिपाः॥

गौरी पद्मा शची मेधा सावित्री विजया जया। देवसेना स्वधा स्वाहा मातरो लोकमातरः॥

धृतिः पृष्टिस्तथा तुष्टिरात्मनः कुलदेवता। गणेशेनाधिका ह्येता वरदाभयपाणयः॥

अनन्तकोटिप्रदक्षिणनमस्कारान् समर्पयामि। छत्रचामरादिसमस्तोपचारान् समर्पयामि।

## ॥ नवग्रहपूजा॥

(चित्रे दर्शितया रीत्या मण्डलानि प्रतिष्ठाप्य आरभेत।)

| ५. बुधः        | ३. शुकः        | ४. सोमः        |  |
|----------------|----------------|----------------|--|
| हरितवस्त्रम्   | श्वेतवस्त्रम्  | श्वेतवस्त्रम्  |  |
| मुद्ग-मण्डलम्  | राजमाष-मण्डलम् | तण्डुल-मण्डलम् |  |
| ६. बृहस्पतिः   | १. आदित्यः     | २. अङ्गारकः    |  |
| पीतवस्त्रम्    | रक्तवस्त्रम्   | रक्तवस्त्रम्   |  |
| चणक-मण्डलम्    | गोधूम-मण्डलम्  | आढकी-मण्डलम्   |  |
| ९. केतुः       | ७. शनैश्चरः    | ८. राहुः       |  |
| कृष्णवस्त्रम्  | कृष्णवस्त्रम्  | कृष्णवस्त्रम्  |  |
| कुलत्थ-मण्डलम् | तिल-मण्डलम्    | माष-मण्डलम्    |  |

जपाकुसुमसङ्काशं काश्यपेयं महाद्युतिम्। तमोऽरिं सर्वपापघ्नं प्रणतोऽस्मि दिवाकरम्॥१॥ आ सत्येन रजंसा वर्तमानो निवेशयंत्रमृतं मर्त्यं च। हिर्ण्ययेन सिवता रथेनाऽदेवो यांति भुवंना विपश्यन्। अग्निं दूतं वृंणीमहे होतारं विश्ववेदसम्। अस्य यज्ञस्यं सुक्रतुम्॥ येषामीशे पशुपतिः पशूनां चतुंष्पदामुत चं द्विपदांम्। निष्क्रीतोऽयं यज्ञियं भागमेतु रायस्पोषा यजंमानस्य सन्तु॥ अधिदेवता प्रत्यिधदेवता सहिताय आदित्याय नमः॥

अस्मिन् मण्डले अधिदेवता-प्रत्यधिदेवता-सिहतं आदित्य-ग्रहं ध्यायामि। आवाहयामि।

> धरणीगर्भसम्भूतं विद्युत्कान्तिसमप्रभम्। कुमारं शक्तिहस्तं च मङ्गलं प्रणमाम्यहम्॥२॥

अग्निर्मूर्द्धा दिवः क्कुत्पतिः पृथिव्या अयम्। अपाः रेताः सि जिन्वति। स्योना पृथिवि भवाऽनृक्षरा निवेशंनी। यच्छांनः शर्म सप्रथाः। क्षेत्रंस्य पतिना वयः हिते नेव जयामिस। गामश्वं पोषियत्वा स नो मृडातीदृशे॥ अधिदेवता प्रत्यिदेवता सहिताय अङ्गारकाय नमः॥

अस्मिन् मण्डले अधिदेवता-प्रत्यधिदेवता-सहितं अङ्गारक-ग्रहं ध्यायामि। आवाहयामि।

> हिमकुन्दमृणालाभं दैत्यानां परमं गुरुम्। सर्वशास्त्रप्रवक्तारं भार्गवं प्रणमाम्यहम्॥३॥

प्रवंः शुकार्यं भानवें भरध्वः ह्व्यं मृतिं चाग्नये सुपूतम्॥ यो दैव्यांनि मानुषा जनूः ध्यन्तर्विश्वांनि विद्य ना जिगांति॥ इन्द्राणीमासु नारिषु सुपत्नीं महमंश्रवम्। न ह्यंस्या अपूरं चन जरसा मरंते पतिः॥ इन्द्रं वो विश्वतस्परि हवां महे जनें भ्यः। अस्माकं मस्तु केवं लः॥ अधिदेवता प्रत्यधिदेवता सहिताय शुकाय नमः॥ अस्मिन् मण्डले अधिदेवता-प्रत्यधिदेवता-सहितं शुऋ-ग्रहं ध्यायामि। आवाहयामि।

> दिधशङ्खतुषाराभं क्षीरोदार्णवसम्भवम्। नमामि शशिनं सोमं शम्भोर्मुकुटभूषणम्॥४॥

आप्यायस्व समेतु ते विश्वतः सोम् वृष्णियम्। भवा वार्जस्य सङ्ग्थे॥ अप्सु मे सोमो अब्रवीदन्तर्विश्वांनि भेषजा। अग्निं च विश्वशंम्भुवमापेश्च विश्वभेषजीः। गौरी मिमाय सलिलानि तक्षती। एकंपदी द्विपदी सा चतुंष्पदी। अष्टापदी नवंपदी बभूवुषी। सहस्राक्षरा पर्मे व्योमन्। अधिदेवता प्रत्यिधेदेवता सहिताय सोमाय नमः॥

अस्मिन् मण्डले अधिदेवता-प्रत्यधिदेवता-सिहतं सोम-ग्रहं ध्यायामि। आवाहयामि।

> प्रियङ्गुकलिकाश्यामं रूपेणाप्रतिमं बुधम्। सौम्यं सौम्यगुणोपेतं तं बुधं प्रणमाम्यहम्॥५॥

उद्बंध्यस्वाग्ने प्रतिजागृह्येनिमष्टापूर्ते स॰सृंजेथाम्यं चं। पुनः कृण्वः स्त्वां पितरं युवानम्न्वाता १ सीत्विय तन्तुंमेतम्॥ इदं विष्णुर्विचंक्रमे त्रेधा निदंधे पदम्। समूंढमस्यपा॰ सुरे॥ विष्णों र्राटंमिस् विष्णोः पृष्ठमंसि विष्णोः श्रेष्ठेंस्थो विष्णोः स्यूरंसि विष्णों ध्रुवमंसि वैष्ण्वमंसि विष्णोः प्रत्यिदेवता सहिताय बुधाय नमः॥

अस्मिन् मण्डले अधिदेवता-प्रत्यधिदेवता-सिहतं बुध-ग्रहं ध्यायामि। आवाहयामि।

> देवानां च ऋषीणां च गुरुं काश्चनसन्निभम्। बुद्धिभूतं त्रिलोकेशं तं नमामि बृहस्पतिम्॥६॥

बृहंस्पते अतियद्यों अहींद्विमद्विभाति ऋतुंमु अनेषु। यद्दीदयुच्छवंसर्तप्रजात तद्स्मासु द्रविणं धेहि चित्रम्॥ इन्द्रमरुत्व इह पाहि सोमं यथां शार्याते अपिंबः सुतस्यं। तव् प्रणीती तवं शूरशर्मन्नाविवासन्ति क्वयः सुयज्ञाः॥ ब्रह्मंजज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमृतः सुरुचो वेन आंवः। सबुध्नियां उपमा अंस्य विष्ठाः सृतश्च योनिमसंतश्च विवंः॥ अधिदेवता प्रत्यधिदेवता सहिताय बृहस्पतये नमः॥

अस्मिन् मण्डले अधिदेवता-प्रत्यधिदेवता-सिहतं बृहस्पति-ग्रहं ध्यायामि। आवाहयामि।

> नीलाञ्जनसमाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम्। छायामार्तण्डसम्भूतं तं नमामि शनैश्वरम्॥७॥

शं नों देवीर्भिष्टंय आपों भवन्तु पीतयें। शंयोर्भिस्नंवन्तु नः॥ प्रजांपते न त्वदेतान्यन्यो विश्वां जातानि परिता बंभूव। यत्कांमास्ते जुहुमस्तन्नों अस्तु वय स्यांम पत्रंयो रयीणाम्। इमं यंमप्रस्त्रमाहि सीदाऽङ्गिरोभिः पितृभिः संविदानः। आत्वा मन्नाः कविश्नस्ता वंहन्त्वेना रांजन् ह्विषां मादयस्व॥ अधिदेवता प्रत्यधिदेवता सहिताय शनैश्चराय नमः॥

अस्मिन् मण्डले अधिदेवता-प्रत्यधिदेवता-सिहतं शनैश्चर-ग्रहं ध्यायामि। आवाहयामि।

> अर्धकायं महावीर्यं चन्द्रादित्यविमर्दनम्। सिंहिकागर्भसम्भूतं तं राहुं प्रणमाम्यहम्॥८॥

कयां नश्चित्र आभुंवदूती स्वावृंधः सखां। कया शचिंष्ठया वृता। आऽयङ्गौः पृश्लिंरक्रमीदसंनन्मातरं पुनंः। पितरं च प्रयन्त्सुवंः। यत्ते देवी निर्ऋतिराब्बन्ध् दामं ग्रीवास्वंविचर्त्यम्। इदं ते तिद्वष्याम्यायुंषो न मध्यादथांजीवः पितुमंद्धि प्रमुंक्तः॥ अधिदेवता प्रत्यधिदेवता सिहताय राहवे नमः॥

अस्मिन् मण्डले अधिदेवता-प्रत्यधिदेवता-सहितं राहु-ग्रहं ध्यायामि। आवाहयामि। पलाशपुष्पसङ्काशं तारकाग्रहमस्तकम्। रौद्रं रौद्रात्मकं घोरं तं केतुं प्रणमाम्यहम्॥९॥

केतुं कृण्वन्नेकेतवे पेशों मर्या अपेशसें। समुषद्भिरजायथाः॥ ब्रह्मा देवानां पद्वीः कंवीनामृषिर्विप्राणां मिह्षो मृगाणांम्। श्येनो गृध्राणाः स्विधितिर्वनांनाः सोमः पवित्रमत्येति रेभन्। (ऋक्) सिचेत्र चित्रं चितयन् तमस्मे चित्रंक्षत्र चित्रतंमं वयोधाम्। चन्द्रं रियं पुरुवीरं बृहन्तं चन्द्रंचन्द्राभिर्गृणते युवस्व॥ अधिदेवता प्रत्यिधदेवता सिहताय केतवे नमः॥ अस्मिन् मण्डले अधिदेवता-प्रत्यिधदेवता-सिहतं केतु-ग्रहं ध्यायामि। आवाहयामि।

आदित्यादि नवग्रहदेवताभ्यो नमः आसनं समर्पयामि। पाद्यं समर्पयामि। अर्घ्यं समर्पयामि। आचमनीयं समर्पयामि।

शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि। स्नानानन्तरम् आचमनीयं समर्पयामि। वस्नार्थम् अक्षतान् समर्पयामि।

यज्ञोपवीताभरणार्थे अक्षतान् समर्पयामि।

दिव्यपरिमलगन्थान् धारयामि।

गन्धस्योपरि हरिद्राकुङ्कुमं समर्पयामि। अक्षतान् समर्पयामि।

पुष्पैः पूजयामि।

- १. ॐ आदित्याय नमः
- २. ॐ अङ्गारकाय नमः
- ३. ॐ शुक्राय नमः
- ४. ॐ सोमाय नमः
- ५. ॐ बुधाय नमः
- ६. ॐ बृहस्पतये नमः
- ७. ॐ शनैश्चराय नमः
- ८. ॐ राहवे नमः

९. ॐ केतवे नमः

नानाविध-परिमल-पत्र-पुष्पाणि समर्पयामि। आदित्यादि नवग्रहदेवताभ्यो नमः धूपमाघ्रापयामि। दीपं दर्शयामि।

नैवेद्यम्।

कर्पूरताम्बूलं समर्पयामि। कर्पूरनीराजनं दर्शयामि। प्रार्थनाः समर्पयामि। अनन्तकोटिप्रदक्षिणनमस्कारान् समर्पयामि।

आदित्यादि नवग्रहदेवताभ्यो नमः (अक्षतान् समर्पयित्वा) यथास्थानं प्रतिष्ठापयामि। शोभनार्थे क्षेमाय पुनरागमनाय च।

# ॥ लोकपालपूजा॥

प्राणान् आयम्य। ममोपात्तसमस्तदुरितक्षयद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थम् अद्य-पूर्वोक्त एवं गुण-विशेषेण विशिष्टायाम् अस्यां अमावास्यायां शुभितथौ श्रीमहालक्ष्मी-पूजाङ्गभूतां ब्रह्म-विष्णु-त्र्यम्बक-क्षेत्रपाल-पूजां करिष्ये।

अस्मिन् कूर्चे ब्रह्मादीन् ध्यायामि। ब्रह्मन् सरस्वत्या सह इह आगच्छ आगच्छ। सरस्वती-सहित-ब्रह्माणम् आवाहयामि। आसनं समर्पयामि।

लक्ष्मी-विष्णुभ्यां नमः।

ध्यायामि। आवाहयामि। आसनं समर्पयामि।

दुर्गा-त्र्यम्बकाभ्यां नमः।

ध्यायामि। आवाहयामि। आसनं समर्पयामि।

क्षेत्रपाल-भूमिभ्यां नमः।

ध्यायामि। आवाहयामि। आसनं समर्पयामि।

ब्रह्मादिभ्यो नमः पाद्यं समर्पयामि। अर्घ्यं समर्पयामि। आचमनीयं समर्पयामि। शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि। स्नानानन्तरम् आचमनीयं

समर्पयामि। वस्त्रार्थम् अक्षतान् समर्पयामि। यज्ञोपवीताभरणार्थे अक्षतान् समर्पयामि। दिव्यपरिमलगन्थान् धारयामि। गन्थस्योपरि हरिद्राकुङ्कुमं समर्पयामि। अक्षतान् समर्पयामि। पुष्पैः पूजयामि।

नैवेद्यम्। कर्पूरताम्बूलं समर्पयामि। कर्पूरनीराजनं दर्शयामि। प्रार्थनाः समर्पयामि। अनन्तकोटिप्रदक्षिणनमस्कारान् समर्पयामि।

ब्रह्मादिभ्यो नमः (अक्षतान् समर्पयित्वा) यथास्थानं प्रतिष्ठापयामि। शोभनार्थे क्षेमाय पुनरागमनाय च।

## ॥ प्रार्थना ॥

विघ्नराजं नमस्कृत्य नमस्कृत्य विधिं परम्। विष्णुं रुद्रं श्रियं दुर्गां वन्दे भक्त्या सरस्वतीम्॥

क्षेत्राधिपं नमस्कृत्य दिवानाथं निशाकरम्। धरणीगर्भसम्भृतं शशिपुत्रं बृहस्पतिम्॥

दैत्याचार्यं नमस्कृत्य सूर्यपुत्रं महाग्रहम्। राहकेत् नमस्कृत्य यज्ञारम्भे विशेषतः॥

शक्राद्या देवताः सर्वाः मुनींश्च प्रणमाम्यहम्। गर्गं मुनिं नमस्कृत्य नारदं मुनिसत्तमम्॥

वसिष्ठं मुनिशार्दूलं विश्वामित्रं भृगोः सुतम्। व्यासं मुनिं नमस्कृत्य आचार्याश्च तपोधनान्॥

सर्वान् तान् प्रणमाम्येवं यज्ञरक्षाकरान् सदा। शङ्खचऋगदाशाङ्ग-पद्मपाणिर्जनार्दनः॥

सर्वासु दिक्षु रक्षेन्मां यावत् पूजावसानकम्।

# ॥ षोडशोपचारपूजा॥

अरुणकमलसंस्था तद्रजःपुञ्जवर्णा करकमलधृतेष्टाऽभीतियुग्माम्बुजा च। मणिमकुटविचित्रालङ्कृता कल्पजातैः भवतु भुवनमाता सन्ततं श्रीः श्रियै नः॥

हिरंण्यवर्णां हरिंणीं सुवर्णरंजतस्रजाम्। चन्द्रां हिरण्मंयीं लृक्ष्मीं जातंवेदो म् आवंह॥१॥

अस्मिन् बिम्बे श्रीमहालक्ष्मीं ध्यायामि।

आवाहये महालक्ष्मि चैतन्यस्तन्यदायिनि। विष्णुपत्नि जगन्मातः पूजां गृह्णीष्व ते नमः॥

श्रीमहालक्ष्मीम् आवाहयामि।

तां म् आवंह् जातंवेदो लृक्ष्मीमनंपगामिनींम्। यस्यां हिरंण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुषानहम्॥२॥

तप्तकाश्चनवर्णामं मुक्तामणिविराजितम्। अमलं कमलं दिव्यम् आसनं प्रतिगृह्यताम्॥

आसनं समर्पयामि।

अश्वपूर्वां रंथम्ध्यां ह्स्तिनांदप्रबोधिंनीम्। श्रियंं देवीम्पंह्वये श्रीर्मादेवीर्जुंषताम्॥३॥

गङ्गातीर्थ-समुद्भृतं गन्ध-पुष्पादिभिर्युतम्। पाद्यं ददाम्यहं देवि गृहाणाऽऽशु नमोऽस्तु ते॥

पाद्यं समर्पयामि।

कां सोऽस्मितां हिरंण्यप्राकारामार्द्रां ज्वलंन्तीं तृप्तां तुर्पयंन्तीम्। पद्मे स्थितां पद्मवंर्णां तामिहोपंह्वये श्रियम्॥४॥ एलागन्धसमायुक्तं स्वर्णपात्रे प्रपृरितम्। अर्घ्यं गृहाण मद्दत्तं प्रसीद त्वं महेश्वरि॥ अर्घ्यं समर्पयामि।

चन्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलंन्तीं श्रियंं लोके देवजुंष्टामुदाराम्। तां पद्मिनीमीं शर्रणमहं प्रपद्येऽलक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वां वृणे॥५॥

> सर्वलोकस्य या शक्तिः ब्रह्मरुद्रादिभिः स्तुता। ददाम्याचमनं तस्यै महालक्ष्म्यै मनोहरम्॥ आचमनीयं समर्पयामि।

आदित्यवंर्णे तपसोऽधिजातो वनस्पितस्तवं वृक्षोऽथ बिल्वः। तस्य फर्लानि तपसा नुंदन्तु मायान्तंरायाश्चं बाह्या अंलक्ष्मीः॥६॥

> घृतेन स्नपयामि। पुनः शुद्धोदकं समर्पयामि। पयसा स्नपयामि। पुनः शुद्धोदकं समर्पयामि। दभ्ना स्नपयामि। पुनः शुद्धोदकं समर्पयामि। मधुना स्नपयामि। पुनः शुद्धोदकं समर्पयामि। पश्चामृतेन स्नपयामि। पुनः शुद्धोदकं समर्पयामि।

(कलशजलेन श्री-सूक्तं जप्य) शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि। स्नानानन्तरम् आचमनीयं समर्पयामि।

उपैतु मां देवस्खः कीर्तिश्च मणिना सह। प्रादुर्भूतोऽस्मि राष्ट्रेऽस्मिन् कीर्तिमृद्धिं ददातु मे॥७॥

> दिव्याम्बरयुगं सूक्ष्मं कश्चकं च मनोहरम्। महालक्ष्मि महादेवि गृहाणेदं मयाऽपितम्॥ वस्त्रं समर्पयामि।

क्षुत्पिपासामेलां ज्येष्ठामलक्ष्मीं नांशयाम्यहम्। अभूतिमसंमृद्धिं च सर्वां निर्णुद मे गृहात्॥८॥

> माङ्गल्यमणिसंयुक्तं मुक्ताविद्रुमसंयुतम्। दत्तं मङ्गलसूत्रं च गृहाण हरिवल्लभे॥ कण्ठसूत्रं समर्पयामि।

रत्नकङ्कणवैडूर्य-मुक्ताहारादिकानि च। सुप्रसन्नेन मनसा दत्तानि त्वं गृहाण मे॥ आभरणानि समर्पयामि।

गुन्धद्वारां दुंराधर्षां नित्यपुंष्टां करीषिणींम्। ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपंह्वये श्रियम्॥९॥

> सिन्दूरारुणवर्णा च सिन्दूरतिलकप्रिया। अतो दत्तं मया देवि सिन्दूरं प्रतिगृह्यताम्॥ तिलकं समर्पयामि।

मनसः काम्माकृतिं वाचः स्त्यमंशीमहि। पुशूनां रूपमन्नस्य मिय श्रीः श्रीयतां यशः॥१०॥

मन्दार-पारिजाताद्याः पाटली केतकी तथा। माकन्दं कुरवं चैव गृहाणाऽऽशु नमोऽस्तु ते॥ पुष्पमालां धारयामि।

### ॥ अङ्गपूजा ॥

- १. ॐ चपलायै नमः पादौ पूजयामि
- २. चश्रलायै नमः जानुनी पूजयामि

- ३. कमलायै नमः कटिं पूजयामि
- ४. कात्यायन्यै नमः नाभिं पूजयामि
- ५. जगन्मात्रे नमः जठरं पूजयामि
- ६. विश्ववल्लभायै नमः वक्षःस्थलं पूजयामि
- ७. कमलवासिन्यै नमः हस्तौ पूजयामि
- ८. पद्माननायै नमः मुखं पूजयामि
- ९. कमलपत्राक्ष्यै नमः नेत्रत्रयं पूजयामि
- १०. श्रियै नमः शिरः पुजयामि
- ११. महालक्ष्म्यै नमः सर्वाणि अङ्गानि पूजयामि

## ॥ अष्टलक्ष्मी-अर्चना॥

(प्राच्याम् आरभ्य अष्टदिक्षु प्रदक्षिणेन)

- १. ॐ आद्यलक्ष्म्ये नमः ५. ॐ कामलक्ष्म्ये नमः
- २. ॐ विद्यालक्ष्म्ये नमः ६. ॐ सत्यलक्ष्म्ये नमः
- ३. ॐ सौभाग्यलक्ष्म्यै नमः ७. ॐ भोगलक्ष्म्यै नमः
- ४. ॐ अमृतलक्ष्म्यै नमः ८. ॐ योगलक्ष्म्यै नमः

आद्यादिलक्ष्मीनां षोडशोपचारपूजार्थे पुष्पाणि समर्पयामि।

# ॥ लक्ष्म्यष्टोत्तरशतनामावलिः॥

प्रकृत्यै नमः विभूत्यै नमः सुरभ्यै नमः परमात्मिकायै नमः परमात्मिकायै नमः सर्वभूतिहतप्रदायै नमः पद्मालयायै नमः पद्मालयायै नमः

१०

| लक्ष्म्यष्टात्तरशतनामावालः |     |                     | 350 |
|----------------------------|-----|---------------------|-----|
| पद्मायै नमः                |     | धर्मनिलयायै नमः     |     |
| शुचये नमः                  |     | करुणायै नमः         |     |
| स्वाहायै नमः               |     | लोकमात्रे नमः       | ४०  |
| स्वधायै नमः                |     | पद्मप्रियायै नमः    |     |
| सुधायै नमः                 |     | पद्महस्तायै नमः     |     |
| धन्यायै नमः                |     | पद्माक्ष्ये नमः     |     |
| हिरण्मय्यै नमः             |     | पद्मसुन्दर्ये नमः   |     |
| लक्ष्म्यै नमः              |     | पद्मोद्भवायै नमः    |     |
| नित्यपुष्टायै नमः          |     | पद्ममुख्यै नमः      |     |
| विभावर्यै नमः              | २०  | पद्मनाभप्रियायै नमः |     |
| अदित्यै नमः                |     | रमायै नमः           |     |
| दित्यै नमः                 |     | पद्ममालाधरायै नमः   |     |
| दीप्तायै नमः               |     | देव्यै नमः          | ५०  |
| वसुधायै नमः                |     | पद्मिन्यै नमः       |     |
| वसुधारिण्यै नमः            |     | पद्मगन्धिन्यै नमः   |     |
| कमलायै नमः                 |     | पुण्यगन्धायै नमः    |     |
| कान्तायै नमः               |     | सुप्रसन्नायै नमः    |     |
| क्षमायै नमः                |     | प्रसादाभिमुख्यै नमः |     |
| क्षीरोदसम्भवायै नमः        |     | प्रभायै नमः         |     |
| अनुग्रहपदायै नमः           | 3 o | चन्द्रवदनायै नमः    |     |
| बुद्धये नमः                |     | चन्द्रायै नमः       |     |
| अनघायै नमः                 |     | चन्द्रसहोदर्ये नमः  |     |
| हरिवल्लभायै नमः            |     | चतुर्भुजायै नमः     | ६०  |
| अशोकायै नमः                |     | चन्द्ररूपायै नमः    |     |
| अमृतायै नमः                |     | इन्दिरायै नमः       |     |
| दीप्तायै नमः               |     | इन्दुशीतलायै नमः    |     |
| लोकशोकविनाशिन्यै नमः       |     | आह्रादजनन्यै नमः    |     |
|                            |     |                     |     |
|                            |     |                     |     |

|                                   |       | स्रेणसोम्याये नमः            |     |
|-----------------------------------|-------|------------------------------|-----|
| शिवायै नमः                        |       | शुभप्रदायै नमः               |     |
| शिवकर्ये नमः                      |       | नृपवेश्मगतानन्दायै नमः       |     |
| सत्ये नमः                         |       | वरलक्ष्म्यै नमः              | ९०  |
| विमलायै नमः                       |       | वसुप्रदायै नमः               |     |
| विश्वजनन्यै नमः                   | oe    | शुभाये नमः                   |     |
| तुष्ट्ये नमः                      |       | हिरण्यप्राकारायै नमः         |     |
| दारिद्यनाशिन्यै नमः               |       | समुद्रतनयायै नमः             |     |
| प्रीतिपुष्करिण्यै नमः             |       | जयायै नमः                    |     |
| शान्तायै नमः                      |       | मङ्गलायै देव्यै नमः          |     |
| शुक्रमाल्याम्बरायै नमः            |       | विष्णुवक्षःस्थलस्थितायै नमः  |     |
| श्रियै नमः                        |       | विष्णुपत्र्ये नमः            |     |
| भास्कर्यै नमः                     |       | प्रसन्नाक्ष्ये नमः           |     |
| बिल्वनिलयायै नमः                  |       | नारायणसमाश्रितायै नमः        | १०० |
| वरारोहायै नमः                     |       | दारिद्यध्वंसिन्यै नमः        |     |
| यशस्विन्यै नमः                    | ८०    | देव्यै नमः                   |     |
| वसुन्धरायै नमः                    |       | सर्वोपद्रवहारिण्यै नमः       |     |
| उदाराङ्गायै नमः                   |       | नवदुर्गायै नमः               |     |
| हरिण्यै नमः                       |       | महाकाल्यै नमः                |     |
| हेममालिन्यै नमः                   |       | ब्रह्मविष्णुशिवात्मिकायै नमः |     |
| धनधान्यकर्ये नमः                  |       | त्रिकालज्ञानसम्पन्नायै नमः   |     |
| सिद्धौ नमः                        |       | भुवनेश्वर्ये नमः             |     |
| ॥इति श्री लक्ष्म्यष्टोत्तरशतनामाव | लिः । | सम्पूर्णा॥                   |     |

## ॥ उत्तराङ्गपूजा ॥

कुर्दमेन प्रजाभूता मृथि सम्भव कुर्दम। श्रियं वासयं मे कुले मातरं पद्ममालिनीम्॥११॥

> वनस्पति-रसोत्पन्नो गन्धाढ्यो गन्ध उत्तमः। आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्॥

श्री महालक्ष्म्यै नमः धूपमाघ्रापयामि।

आपंः सृजन्तुं स्निग्धानि चिक्कीत वंस मे गृहे। नि चं देवीं मातरं श्रियं वासयं मे कुले॥१२॥

> कार्पासवर्तिसंयुक्तं घृतयुक्तं मनोहरम्। तमोनाशकरं दीपं गृहाण परमेश्वरि॥

श्री महालक्ष्म्यै नमः अलङ्कारदीपं सन्दर्शयामि। ॐ भूर्भुवः सुर्वः। + ब्रह्मणे स्वाहाँ।

आर्द्रौ पुष्करिणीं पुष्टिं सुवुर्णां हैममालिनीम्। सूर्यां हिरण्मेयीं लक्ष्मीं जातंवेदो म् आवंह॥१३॥

> नैवेद्यं गृह्यतां लक्ष्मि भक्ष्य-भोज्य-समन्वितम्। षड्रसैर्रचितं दिव्यं लक्ष्मीदेवि नमोऽस्तु ते॥

> > नैवेद्यम्

- श्री महालक्ष्म्यै नमः () निवेदयामि,
अमृतापिधानमसि। निवेदनानन्तरम् आचमनीयं समर्पयामि।
पूर्गीफलसमायुक्तं नागवल्लीदलैर्युतम्।
कर्पूरचूर्णसंयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्॥
श्री महालक्ष्म्यै नमः कर्पूरताम्बूलं समर्पयामि।
श्री महालक्ष्म्यै नमः सपस्त अपराध क्षमापनार्थं कर्पूरनीराजनं दर्शयामि।
कर्पूरनीरजनानन्तरम् आचमनीयं समर्पयामि।

योंऽपां पुष्पं वेदं। पुष्पंवान् प्रजावाँन् पशुमान् भंवति। चन्द्रमा वा अपां पुष्पम्। पुष्पंवान् प्रजावाँन् पशुमान् भंवति। य एवं वेदं। योऽपामायतंनं वेदं। आयतंनवान् भवति। ओं तद्व्रह्मा ओं तद्वायुः। ओं तदात्मा। ओं तथ्सत्यम्। ओं तथ्सर्वम्। ओं तत्पुरोर्नमः॥ अन्तश्चरतिं भूतेषु गुहायां विश्वमूर्तिषु।

त्वं यज्ञस्त्वं वषद्वारस्त्वमिन्द्रस्त्वः रुद्रस्त्वं विष्णुस्त्वं ब्रह्म त्वं प्रजापितः। त्वं तंदाप आपो ज्योती रसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भृवस्सुवरोम्॥ श्री महालक्ष्म्ये नमः वेदोक्तमन्त्रपुष्पाञ्जलिं समर्पयामि। स्वर्णपुष्पं समर्पयामि अनन्तकोटिप्रदक्षिणनमस्कारान् समर्पयामि छन्नचामरादिसमस्तोपचारान् समर्पयामि

## ॥ईशानादि पूजा॥

- ॐ ईशानाय नमः
- ॐ शचिने नमः
- ॐ मरुद्धो नमः
- ॐ प्रजापतये नमः
- ॐ विश्वेभ्यो देवेभ्यो नमः
- ॐ अमरराजाय नमः
- ॐ सूर्याय नमः
- ॐ विश्वकर्मणे नमः
- ॐ गुरवे नमः
- ॐ अथर्वाङ्गिरोभ्यां नमः
- ॐ अश्विभ्यां नमः

- ॐ मित्रावरुणाभ्यां नमः
- ॐ विष्णवे नमः
- ॐ ईशानादिभ्यो नमः

षोडशोपचार-पूजार्थे पुष्पाणि समर्पयामि।

# ॥ कुबेर पूजा॥

धनदाय नमस्तुभ्यं निधिपद्माय ते नमः। भवन्तु त्वत्प्रसादान्मे धनधान्यानि सम्पदः॥

कुबेरं पुष्पकगतं निधिभिर्नवभिर्युतम्। सुवर्णवर्णं पिङ्गाक्षं मनसा भावयाम्यहम्॥

नरवाहन यक्षेश सर्वपुण्यजनेश्वर।

कुबेराय नमः, षोडशोपचारपूजां करिष्ये। कुबेराय नमः, आवाहयामि। कुबेराय नमः, आसनं समर्पयामि। कुबेराय नमः, पाद्यं समर्पयामि। कुबेराय नमः, अर्घ्यं समर्पयामि। कुबेराय नमः, आचमनीयं समर्पयामि। कुबेराय नमः, शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि। स्नानानन्तरम् आचमनीयं समर्पयामि। कुबेराय नमः, वस्त्रं समर्पयामि। कुबेराय नमः, दिव्यपरिमलगन्धान् धारयामि। गन्धस्योपरि हरिद्राकुङ्कुमं समर्पयामि। कुबेराय नमः, अक्षतान् समर्पयामि। कुबेराय नमः, पूष्पैः पूजयामि। कुबेराय नमः, धूपमाघ्रापयामि। कुबेराय नमः, अलङ्कारदीपं सन्दर्शयामि। कुबेराय नमः, कदलीफलानि निवेदयामि,

कुबेराय नमः, अमृतापिधानमसि। निवेदनानन्तरम् आचमनीयं समर्पयामि। कुबेराय नमः, कर्पूरताम्बूलं समर्पयामि। कुबेराय नमः, कर्पूरनीराजनं दर्शयामि। कुबेराय नमः, कर्पूरनीरजनानन्तरम् आचमनीयं समर्पयामि। कुबेराय नमः, समस्तोपचारान् समर्पयामि। मनुजबाह्यविमानवरस्तुतम्
गरुडरत्निनमं निधिनायकम्।
शिवसखं मुकुटादिविभूषितम्
वररुचिं तमहमुपास्महे सदा॥

अगस्त्य देवदेवेश मर्त्यलोकहितेच्छया। पूजयामि विधानेन प्रसन्नसुमुखो भव॥

## ॥ कुबेराष्टोत्तरशतनामावलिः॥

कुबेराय नमः धनदाय नमः श्रीमते नमः यक्षेशाय नमः गुह्यकेश्वराय नमः निधीशाय नमः शङ्करसखाय नमः महालक्ष्मीनिवासभुवे नमः महापद्मनिधीशाय नमः पूर्णाय नमः 80 पद्मनिधीश्वराय नमः शङ्खाख्यनिधिनाथाय नमः मकराख्यनिधिप्रियाय नमः स्कच्छपाख्यनिधीशाय नमः म्कुन्दनिधिनायकाय नमः कुन्दाख्यनिधिनाथाय नमः नीलनित्याधिपाय नमः महते नमः

वरनिधिदीपाय नमः पूज्याय नमः २० लक्ष्मीसाम्राज्यदायकाय नमः इलपिलापत्याय नमः कोशाधीशाय नमः कुलोचिताय नमः अश्वारूढाय नमः विश्ववन्द्याय नमः विशेषज्ञाय नमः विशारदाय नमः नलकूबरनाथाय नमः मणिग्रीविपत्रे नमः 30 गृढमन्त्राय नमः वैश्रवणाय नमः चित्रलेखामनःप्रियाय नमः एकपिनाकाय नमः अलकाधीशाय नमः पौलस्त्याय नमः

| नरवाहनाय नमः            |    | खङ्गायुधाय नमः              |    |
|-------------------------|----|-----------------------------|----|
| कैलासशैलनिलयाय नमः      |    | विशेने नमः                  |    |
| राज्यदाय नमः            |    | ईशानदक्षपार्श्वस्थाय नमः    |    |
| रावणाग्रजाय नमः         | ४० | वायुवामसमाश्रयाय नमः        |    |
| चित्रचैत्ररथाय नमः      |    | धर्ममार्गनिरताय नमः         |    |
| उद्यानविहाराय नमः       |    | धर्मसम्मुखसंस्थिताय नमः     |    |
| विहारसुकुतूहलाय नमः     |    | नित्येश्वराय नमः            | 90 |
| महोत्सहाय नमः           |    | धनाध्यक्षाय नमः             |    |
| महाप्राज्ञाय नमः        |    | अष्टलक्ष्म्याश्रितालयाय नमः |    |
| सदापुष्पकवाहनाय नमः     |    | मनुष्यधर्मिणे नमः           |    |
| सार्वभौमाय नमः          |    | सुकृतिने नमः                |    |
| अङ्गनाथाय नमः           |    | कोषलक्ष्मीसमाश्रिताय नमः    |    |
| सोमाय नमः               |    | धनलक्ष्मीनित्यवासाय नमः     |    |
| सौम्यादिकेश्वराय नमः    | ५० | धान्यलक्ष्मीनिवासभुवे नमः   |    |
| पुण्यात्मने नमः         |    | अष्टलक्ष्मीसदावासाय नमः     |    |
| पुरुहुतिश्रियै नमः      |    | गजलक्ष्मीस्थिरालयाय नमः     |    |
| सर्वपुण्यजनेश्वराय नमः  |    | राज्यलक्ष्मीजन्मगेहाय नमः   | ८० |
| नित्यकीर्तये नमः        |    | धैर्यलक्ष्मीकृपाश्रयाय नमः  |    |
| निधिवेत्रे नमः          |    | अखण्डेश्वर्यसंयुक्ताय नमः   |    |
| लङ्काप्राक्तननायकाय नमः |    | नित्यानन्दाय नमः            |    |
| यक्षिणीवृताय नमः        |    | सुखाश्रयाय नमः              |    |
| यक्षाय नमः              |    | नित्यतृप्ताय नमः            |    |
| परमशान्तात्मने नमः      |    | निराशाय नमः                 |    |
| यक्षराजे नमः            | ६० | निरुपद्रवाय नमः             |    |
| यक्षिणीहृदयाय नमः       |    | नित्यकामाय नमः              |    |
| किन्नरेश्वराय नमः       |    | निराकाङ्काय नमः             |    |
| किम्पुरुषनाथाय नमः      |    | निरूपाधिकवासभुवे नमः        | ९० |
| ,                       |    | -                           |    |

शान्ताय नमः
सर्वगुणोपेताय नमः
सर्वज्ञाय नमः
सर्वसम्मताय नमः
सर्वाणिकरुणापात्राय नमः
सर्वानन्दकृपालयाय नमः
गन्धर्वकुलसंसेव्याय नमः
सौगन्धिककुसुमप्रियाय नमः
स्वर्णनगरीवासाय नमः
निधिपीठसमाश्रयाय नमः

महामेरूत्तरस्थाय नमः
महर्षिगणसंस्तुताय नमः
तुष्टाय नमः
शूर्पणखाज्येष्ठाय नमः
शिवपूजारताय नमः
अनघाय नमः
राजयोगसमायुक्ताय नमः
राजशेखरपूज्याय नमः
राजराजाय नमः

॥इति श्री-कुबेराष्टोत्तरशतनामावलिः सम्पूर्णा॥

#### ॥ नमस्कारः ॥

नमस्ते देवदेवेशि नमस्ते ईफ्सितप्रदे। नमस्तेऽस्तु जगन्मातः नमस्ते केशवप्रिये॥

महालक्ष्म्यै नमः, नमस्करोमि॥

## ॥ प्रार्थना ॥

दामोदिर नमस्तेऽस्तु नमस्रैलोक्यमातृके। नमस्तेऽस्तु महालक्ष्मि त्राहि मां परमेश्विरि॥ सर्वदा देहि मे द्रव्यं दानायापि च भुक्तये। धनधान्यं धरां हर्षं कीर्तिम् आयुश्च देहि मे॥ यन्मया वाञ्छितं देवि तत्सर्वं सफलं कुरु। न बाधन्तां कुकर्माणि सङ्कटं मे निवारय॥

### ॥ अपराध-क्षमापनम्॥

न्यूनं वाऽप्यगुणं वाऽपि यन्मया मोहितं कृतम्। सर्वं तदस्तु सम्पूर्णं त्वत्प्रसादान्महेश्वरि॥

लक्ष्मि त्वत्कृपया नित्यं कृता पूजा तवाऽऽज्ञया। स्थिरा भव गृहे ह्यस्मिन् मम सन्तानकर्मणि॥

हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः। अनन्तपुण्यफलदम् अतः शान्तिं प्रयच्छ मे॥

आश्वयुज-अमावास्या-पुण्यकालेऽस्मिन् मया क्रियमाण श्रीमहालक्ष्मी-पूजायां यद्देयमुपायनदानं तत्प्रतिनिधित्वेन हिरण्यं श्री महालक्ष्मीप्रीतिं कामयमानः मनसोद्दिष्टाय ब्राह्मणाय सम्प्रददे नमः न मम। अनया पूजया श्री महालक्ष्मीः प्रीयताम्।

> कायेन वाचा मनसेन्द्रियैर्वा बुद्ध्याऽऽत्मना वा प्रकृतेः स्वभावात्। करोमि यद्यत् सकलं परस्मे नारायणायेति समर्पयामि॥

ॐ तत्सद्बह्मार्पणमस्तु।

# ॥ श्री-स्कन्द-षष्ठी-पूजा ॥

# ॥ पूर्वाङ्गविघ्नेश्वरपूजा॥

(आचम्य)

शुक्राम्बरधरं विष्णुं शशिवणं चतुर्भुजम्। प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये॥

प्राणान् आयम्य। ॐ भूः + भूर्भुवः सुवरोम्।

(अप उपस्पृश्य, पुष्पाक्षतान् गृहीत्वा) ममोपात्तसमस्त दुरितक्षयद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं करिष्यमाणस्य कर्मणः निर्विघ्नेन परिसमाप्त्यर्थम् आदौ विघ्नेश्वरपूजां करिष्ये।

ॐ गणानां त्वा गणपंति हवामहे कविं केवीनामुंपमश्रंवस्तमम्। ज्येष्ठराजुं ब्रह्मणां ब्रह्मणस्पत् आ नः शृण्वन्नृतिभिः सीद् सादनम्॥

अस्मिन् हरिद्राबिम्बे महागणपतिं ध्यायामि, आवाहयामि।

ॐ महागणपतये नमः आसनं समर्पयामि। पादयोः पाद्यं समर्पयामि। हस्तयोरध्यं समर्पयामि। आचमनीयं समर्पयामि। ॐ भूर्भुवस्सुवः। शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि। स्नानानन्तरमाचमनीयं समर्पयामि। वस्नार्थमक्षतान् समर्पयामि। यज्ञोपवीताभरणार्थे अक्षतान् समर्पयामि। दिव्यपरिमलगन्थान् धारयामि। गन्थस्योपरि हरिद्राकुङ्कुमं समर्पयामि। अक्षतान् समर्पयामि। पुष्पमालिकां समर्पयामि। पुष्पैः पूज्यामि।

### ॥ अर्चना ॥

१. ॐ सुमुखाय नमः

१०. ॐ गणाध्यक्षाय नमः

२. ॐ एकदन्ताय नमः

११. ॐ फालचन्द्राय नमः

३. ॐ कपिलाय नमः

१२. ॐ गजाननाय नमः

४. ॐ गजकर्णकाय नमः

१३. ॐ वऋतुण्डाय नमः

५. ॐ लम्बोदराय नमः

१४. ॐ शूर्पकर्णाय नमः

६. ॐ विकटाय नमः

१५. ॐ हेरम्बाय नमः

७. ॐ विघ्नराजाय नमः

१६. ॐ स्कन्दपूर्वजाय नमः

८. ॐ विनायकाय नमः

१७. ॐ सिद्धिविनायकाय नमः

९. ॐ धूमकेतवे नमः

१८. ॐ विघ्नेश्वराय नमः

नानाविधपरिमलपत्रपुष्पाणि समर्पयामि॥ धूपमाघ्रापयामि।

अलङ्कारदीपं सन्दर्शयामि।

नैवेद्यम्।

ताम्बूलं समर्पयामि।

कर्पूरनीराजनं समर्पयामि। कर्पूरनीराजनानन्तरमाचमनीयं समर्पयामि।

वऋतुण्डमहाकाय कोटिसूर्यसमप्रभ।

अविघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा॥

प्रार्थनाः समर्पयामि।

अनन्तकोटिप्रदक्षिणनमस्कारान् समर्पयामि। छत्रचामरादिसमस्तोपचारान् समर्पयामि।

### ॥ प्रधान-पूजा — स्कन्द-पूजा॥

शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवणं चतुर्भुजम्। प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविद्योपशान्तये॥

प्राणान् आयम्य। ॐ भूः + भूर्भुवः सुव्रोम्।

### ॥ सङ्कल्पः ॥

ममोपात्तसमस्तदुरितक्षयद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं शुभे शोभने मृहूत्ते अद्यब्रह्मणः द्वितीयपरार्द्धे श्वेतवराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कितयुगे प्रथमे पादे जम्बूद्वीपे भारतवर्षे भरतखण्डे मेरोः दक्षिणेपार्श्वे शकाब्दे अस्मिन् वर्तमाने व्यावहारिके प्रभवादि षष्टिसंवत्सराणां मध्ये () भे नाम संवत्सरे दक्षिणायने शरद्-ऋतौ तुला/वृश्चिक-मासे कार्तिक-शुक्रपक्षे षष्ट्यां शुभितथौ (इन्दु / भौम / बुध / गुरु / भृगु / स्थिर / भानु) वासरयुक्तायाम् () भे नक्षत्र () भे नाम योग (कौलव/तैतिल) करण युक्तायां च एवं गुण विशेषण विशिष्टायाम् अस्यां षष्ट्यां शुभितथौ

श्री-वल्ली-देवसेना-समेत-सुब्रह्मण्य-प्रीत्यर्थं प्रसाद-सिद्धर्थम् अस्माकं सहकुटुम्बानां क्षेमस्थैर्य-धैर्य-वीर्य-विजय-आयुरारोग्य-ऐश्वर्याणाम् अभिवृद्धर्थं धर्मार्थकाममोक्षचतुर्विधफलपुरुषार्थसिद्धर्थं पुत्रपौत्राभिवृद्धर्थम् इष्ट-काम्यार्थसिद्धर्थं मम इहजन्मनि पूर्वजन्मनि जन्मान्तरे च सम्पादितानां ज्ञानाज्ञानकृतमहापातकचतुष्टय-व्यतिरिक्तानां रहस्यकृतानां प्रकाशकृतानां सर्वेषां पापानां सद्य अपनोदनद्वारा सकल-पापक्षयार्थं गो-भू-धन-धान्य-पुत्र-पौत्रादि अनविच्छिन्न-सन्तति स्थिर-लक्ष्मी-कीर्ति-लाभ शत्रु-पराजयादि सदभीष्ट-सिद्धर्थं दिव्यज्ञान-सिद्धर्थं

यावच्छक्ति-ध्यानावाहनादि षोडशोपचारैः कल्पोक्त-प्रकारेण श्री-वल्ली-देवसेना-समेत-सुब्रह्मण्य-पूजाराधनं करिष्ये। तदङ्गं कलशपूजां च करिष्ये।

<sup>&</sup>lt;sup>२७</sup>पृष्टं ५७२ पश्यताम्

२८ पृष्टं ५७३ पश्यताम्

२९पृष्टं ५७४ पश्यताम्

श्रीविघ्नेश्वराय नमः, यथास्थानं प्रतिष्ठापयामि। (गणपति प्रसादं शिरसा गृहीत्वा)

### ॥ घण्टापूजा ॥

आगमार्थं तु देवानां गमनार्थं तु रक्षसाम्। कुरु घण्टारवं तत्र देवताऽऽह्वानलाश्चनम्॥

### ॥ कलशपूजा ॥

(कलशं गन्धपुष्पाक्षतेः अभ्यर्च्य)

गङ्गायै नमः। यमुनायै नमः। गोदावर्यै नमः। सरस्वत्यै नमः। नर्मदायै नमः। सिन्धवे नमः। कावेर्यै नमः। सप्तकोटिमहातीर्थान्यावाहयामि।

(अथ कलशं स्पृष्ट्वा जपं कुर्यात्।)

कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः। मूले तत्र स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः॥

कुक्षौ तु सागराः सर्वे सप्तद्वीपा वसुन्धरा। ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदोऽप्यथर्वणः। अङ्गेश्च सहिताः सर्वे कलशाम्बुसमाश्रिताः॥

गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति। नर्मदे सिन्धुकावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु॥

सर्वे समुद्राः सरितः तीर्थानि च ह्रदा नदाः। आयान्तु विष्णुपूजार्थं दुरितक्षयकारकाः॥

(इति कलशजलेन सर्वोपकरणानि आत्मानं च प्रोक्ष्य।)

### ॥ आत्मपूजा ॥

आत्मने नमः, दिव्यगन्धान् धारयामि।

### ॥ मण्टप-पूजा॥

ॐ हीं श्रीं मण्डूकादि-परतत्त्वात्म-पर्यन्त-पीठ-शक्ति-देवताभ्यो नमः।

ॐ हीं श्रीं शं शकुन्यै नमः।

ॐ ह्रीं श्रीं रें रेवत्ये नमः।

ॐ हीं श्रीं पूं पूताय न्मः।

ॐ हीं श्रीं मं महापूतायै नमः।

ॐ हीं श्रीं निं निशीिथन्यै नमः।

ॐ ह्रीं श्रीं मां मालिन्यै नमः।

ॐ हीं श्रीं शीं शीतलायै नमः। ॐ हीं श्रीं शुं शुद्धायै नमः।

ॐ ह्रीं श्रीं विं विश्वतोमुख्यै नमः।

## षोडशोपचारपूजा

सिन्धूरारुणमिन्दुकान्तिवदनं केयूरहारादिभिः दिव्यैराभर्णैर्विभूषिततनुं स्वर्गादिसौख्यप्रदम्। अम्भोजाभयशक्तिकुक्ट्यरं रक्ताङ्गराकोञ्चलं सुब्रह्मण्यमुपारमहे प्रणमतां भीतिप्रणाशोद्यतम्॥

अस्मिन् कुम्भे सपरिवारं श्री-वल्ली-देवसेना-समेत-सुब्रह्मण्य-स्वामिनम् ध्यायामि।

षङ्घऋं शिखिवाहनं त्रिनयनं चित्राम्बरालङ्कृतम् वज्रं शक्तिमसिं त्रिशूलमभयं खेटं धनुश्चक्रकम्। पाशं कुक्कुटमङ्कशं च वरदं दोर्भिर्दधानं सदा ध्यायेदीप्सितसिद्धिदं शिवसुतं स्कन्दं सुराराधितम्॥

अस्मिन् कुम्भे सपरिवारं श्री-वल्ली-देवसेना-समेत-सुब्रह्मण्य-स्वामिनम् आवाहयामि। आवाहिता भव। संस्थापिता भव। सन्निहिता भव। सन्निरुद्धा भव। अवकुण्ठिता भव। सुप्रीता भव। सुप्रसन्ना भव। वरदा भव।

स्वामिन् सर्वजगन्नाथ यावत्पूजावसानकम्। तावत् त्वं प्रीतिभावेन दीपेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु॥

देवदेव महाराज प्रियेश्वर प्रजापते। आसनं दिव्यमीशान दास्येयं परमेश्वर॥

श्री-वल्ली-देवसेना-समेत-सुब्रह्मण्य-स्वामिने नमः आसनं समर्पयामि।

यद्भक्तिलेशसम्पर्कात् परमानन्दविग्रह। तस्मे ते शरणाङ्जाय पाद्यं शुद्धाय कल्पये॥

श्री-वल्ली-देवसेना-समेत-सुब्रह्मण्य-स्वामिने नमः पाद्यं समर्पयामि।

तापत्रयहरं दिव्यं परमानन्दलक्षणम्। तापत्रयविनिर्मुक्तं तवार्घ्यं कल्पयाम्यहम्॥

श्री-वल्ली-देवसेना-समेत-सुब्रह्मण्य-स्वामिने नमः अर्घ्यं समर्पयामि।

वेदानामपि वेद्याय देवानां देवतात्मने। आचामं कल्पयामीश शुद्धानां शुद्धिहेतवे॥

श्री-वल्ली-देवसेना-समेत-सुब्रह्मण्य-स्वामिने नमः आचमनीयं समर्पयामि।

तरुपुष्पसमुद्भृतं सुस्वादु मधुरं मधु। तेजःपुष्टिकरं दिव्यं प्रतिगृह्णीष्व देवेश॥

श्री-वल्ली-देवसेना-समेत-स्सुब्रह्मण्य-स्वामिने नमः मधुपर्कं समर्पयामि।

पयोदिधघृतं चैव मधु च शर्करायुतम्। पञ्चामृतं मयाऽऽनीतं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

श्री-वल्ली-देवसेना-समेत-सुब्रह्मण्य-स्वामिने नमः पञ्चामृत-स्नानं समर्पयामि।

कामधेनुसमुत्पन्नं सर्वेषां जीवनं परम्। पावनं यज्ञहेतुश्च पयः स्नानार्थमर्पितम्॥

श्री-वल्ली-देवसेना-समेत-सुब्रह्मण्य-स्वामिने नमः क्षीरस्नानं समर्पयामि।

भागीरथी यमुना चैव गौतमी च सरस्वती। तासां सुसलिलमादाय करोमि त्वामभिषेचनम्॥

श्री-वल्ली-देवसेना-समेत-सुब्रह्मण्य-स्वामिने नमः स्नानं समर्पयामि। स्नानान्तरमाचमनीयं समर्पयामि।

सर्वभूषाधिके सौम्ये लोकलञ्जानिवारणे। मयोपपादिते तुभ्यं वाससी प्रतिगृह्यताम्॥

श्री-वल्ली-देवसेना-समेत-सुब्रह्मण्य-स्वामिने नमः वस्रं समर्पयामि।

नवभिस्तन्तुभिर्युक्तं त्रिगुणं देवतात्मकम्। उपवीतं प्रदास्यामि गृहाण परमेश्वर॥

श्री-वल्ली-देवसेना-समेत-सुब्रह्मण्य-स्वामिने नमः यज्ञोपवीतं समर्पयामि।

मुक्ता-माणिक्य-वैडूर्य-रत्न-हेमादि-निर्मितम्। नानाभरणं दास्यामि स्वीकुरुष्व दयानिधे॥

श्री-वल्ली-देवसेना-समेत-सुब्रह्मण्य-स्वामिने नमः नवमणि-मकुटादि नानाभरणम् समर्पयामि।

> चन्दनागरुकपूरकस्तूरीकुङ्कुमान्वितम् । विलेपनं सुरश्रेष्ठ प्रीत्यर्थं प्रतिगृह्यताम्॥

श्री-वल्ली-देवसेना-समेत-सुब्रह्मण्य-स्वामिने नमः गन्धान् धारयामि। गन्धस्योपरि हरिद्रा-कुङ्कमं समर्पयामि।

> अक्षतांश्च सुरश्रेष्ठ कुङ्कुमाक्ता सुशोभिताः। मया निवेदिता भक्त्या गृह्यतां परमेश्वर॥

श्री-वल्ली-देवसेना-समेत-सुब्रह्मण्य-स्वामिने नमः अक्षतान् समर्पयामि।

मन्दार-पारिजाताज्ञ-केतक्युत्पल-पाटलैः । मिक्का-जाति-वकुलैः पुष्पेस्त्वां पूजयाम्यहम्॥

श्री-वल्ली-देवसेना-समेत-सुब्रह्मण्य-स्वामिने नमः मल्लिकादि-सर्वर्तु-पुष्पमालाः समर्पयामि।

### ॥ अङ्गपूजा ॥

| ۶.         | शरवणोद्भृताय नमः         |      | पादौ पूजयामि।      |
|------------|--------------------------|------|--------------------|
| ₹.         | रौद्रेयाय नमः            |      | जङ्घे पूजयामि।     |
| ₹.         | सहस्रपदे नमः             |      | जानुनी पूजयामि।    |
| ٧.         | भयनाशनाय नमः             | _    | ऊरू पूजयामि।       |
| <b>4</b> . | बालग्रहाच्छाटनाय नमः     |      | मेढ़ं पूजयामि      |
| €.         | भक्तपालनाय नमः           |      | गुह्यं पूजयामि।    |
| <i>७</i> . | गुणनिधये नमः             |      | कटिं पूजयामि।      |
| ۷.         | महनीयाय नमः              |      | नाभिं पूजयामि।     |
| ۶.         | सर्वाभीष्टप्रदाय नमः     |      | हृदयं पूजयामि।     |
| <b>१०.</b> | विशालवक्षसे नमः          | _    | वक्षस्थलं पूजयामि। |
| ११.        | शक्तिधराय नमः            |      | हस्तान् पूजयामि।   |
| १२.        | अभयप्रदानाय नमः          |      | बाहून् पूजयामि।    |
| १३.        | नीलकण्ठ-तनयाय नमः        |      | कण्ठान् पूजयामि।   |
| १४.        | पतित-पावनाय नमः          | _    | चुबुकानि पूजयामि।  |
| १५.        | पुरुष-श्रेष्ठाय नमः      | _    | नासिकानि पूजयामि   |
| १६.        | कमललोचनाय नमः            | _    | लोचनानि पूजयामि    |
| .७१        | पुण्यमूर्तये नमः         | _    | श्रोत्राणि पूजयामि |
| १८.        | कस्तूरी-तिलकाश्चित-फालाय | नमः— | ललाटानि पूजयामि    |
| १९.        | षडाननाय नमः              |      | मुखानि पूजयामि     |
| २०.        | त्रिलोकगुरवे नमः         |      | ओष्ठानि पूजयामि।   |

२२. सहस्रशीर्ष्णे नमः

२३. भस्मोद्धूलित-विग्रहाय नमः

— शिरांसि पूजयामि।

— सर्वाण्यङ्गानि पूजयामि।

### ॥ षोडश-नामपूजा॥

१. ॐ ज्ञानशक्त्यात्मने नमः

२. ॐ स्कन्दाय नमः

३. ॐ अग्निभुवे नमः

४. ॐ बाहुलेयाय नमः

५. ॐ गाङ्गेयाय नमः

६. ॐ शरवणोद्भवाय नमः

७. ॐ कार्त्तिकेयाय नमः

८. ॐ कुमाराय नमः

९. ॐ षण्मुखाय नमः

१०. ॐ कुक्कुटध्वजाय नमः

११. ॐ शक्तिधराय नमः

१२. ॐ गुहाय नमः

१३. ॐ ब्रह्मचारिणे नमः

१४. ॐ षण्मात्राय नमः

१५. ॐ क्रौश्वभित्रे नमः

१६. ॐ शिखिवाहनाय नमः

## ॥ सुब्रह्मण्याष्टोत्तरशतनामाविलः॥

स्कन्दाय नमः

गुहाय नमः

षण्मुखाय नमः फालनेत्रसुताय नमः

प्रभवे नमः

पिङ्गलाय नमः

कृत्तिकासूनवे नमः

शिखिवाहाय नमः

द्विषङ्गजाय नमः

द्विषण्णेत्राय नमः

शक्तिधराय नमः

पिशिताशप्रभञ्जनाय नमः

तारकासुरसंहारिणे नमः

रक्षोबलविमर्दनाय नमः

मत्ताय नमः

प्रमत्ताय नमः

उन्मत्ताय नमः

सुरसैन्यसुरक्षकाय नमः

देवसेनापतये नमः

प्राज्ञाय नमः

कृपालवे नमः

भक्तवत्सलाय नमः

| सुब्रह्मण्याष्टोत्तरशतनामावलिः |    |                 | 368 |
|--------------------------------|----|-----------------|-----|
| उमासुताय नमः                   |    | चतुर्वर्णाय नमः | ५०  |
| शक्तिधराय नमः                  |    | पञ्चवर्णाय नमः  |     |
| कुमाराय नमः                    |    | प्रजापतये नमः   |     |
| कौश्चदारणाय नमः                |    | अहस्पतये नमः    |     |
| सेनानिने नमः                   |    | अग्निगर्भाय नमः |     |
| अग्निजन्मने नमः                |    | शमीगर्भाय नमः   |     |
| विशाखाय नमः                    |    | विश्वरेतसे नमः  |     |
| शङ्करात्मजाय नमः               | ३० | स्रारिघ्ने नमः  |     |
| शिवस्वामिने नमः                |    | हरिद्वर्णीय नमः |     |
| गणस्वामिने नमः                 |    | शुभकराय नमः     |     |

४०

वटवे नमः

पृष्णे नमः

पटुवेषभृते नमः

गभस्तये नमः

गहनाय नमः चन्द्रवर्णाय नमः

कलाधराय नमः

मायाधराय नमः

महामायिने नमः

कैवल्याय नमः

विश्वयोनये नमः

अमेयात्मने नमः

तेजोयोनये नमः

अनामयाय नमः

परमेष्ठिने नमः

परब्रह्मणे नमः

शङ्करात्मजाय नमः

€0

७०

सर्वस्वामिने नमः

सनातनाय नमः

अनन्तमूर्तये नमः

पार्वतीप्रियनन्दनाय नमः

अक्षोभ्याय नमः

गङ्गासुताय नमः शरोद्भूताय नमः

आह्ताय नमः

जुम्भाय नमः

प्रजृम्भाय नमः

उञ्जम्भाय नमः

एकवर्णाय नमः

द्विवर्णाय नमः

त्रिवर्णाय नमः

सुमनोहराय नमः

पावकात्मजाय नमः

कमलासनसंस्तुताय नमः

80

वेदगर्भाय नमः विराद्भुताय नमः पुलिन्दकन्याभर्त्रे नमः महासारस्वतावृताय नमः ८० आश्रिताखिलदात्रे नमः चोरघ्वाय नमः रोगनाशनाय नमः अनन्तमूर्तये नमः आनन्दाय नमः शिखण्डिने नमः कृतकेतनाय नमः डम्भाय नमः परमडम्भाय नमः महाडम्भाय नमः वृषाकपये नमः

कारणातीत-विग्रहाय नमः अनीश्वराय नमः अमृताय नमः प्राणाय नमः प्राणायामपरायणाय नमः विरुद्धहन्त्रे नमः वीरघ्वाय नमः रक्तश्यामगलाय नमः १०० सुब्रह्मण्याय नमः गुहाय नमः प्रीताय नमः ब्रह्मण्याय नमः ब्राह्मणप्रियाय नमः वंशवृद्धिकराय नमः वेदवेद्याय नमः अक्षयफलप्रदाय नमः

॥इति श्री सुब्रह्मण्याष्टोत्तरशतनामाविलः सम्पूर्णा॥

# ॥ वल्ली अष्टोत्तरशतनामाविलः॥

महावल्लये नमः वन्द्याये नमः वनवासाये नमः वरलक्ष्म्ये नमः वरप्रदाये नमः वाणीस्तुताये नमः

कारणोत्पत्ति-देहाय नमः

वीतमोहायै नमः वामदेवसुतप्रियायै नमः वैकुण्ठतनयायै नमः वर्यायै नमः वनेचरसमाहतायै नमः

वनेचरसमाहतायै नमः दयापूर्णायै नमः

| वल्ली अष्टोत्तरशतनामावलिः |    |                             | 370 |
|---------------------------|----|-----------------------------|-----|
| दिव्यरूपायै नमः           |    | सुरसंस्तुतायै नमः           | ४०  |
| दारिद्यभयनाशिन्यै नमः     |    | सुब्रह्मण्यकुटुम्बिन्यै नमः |     |
| देवस्तुतायै नमः           |    | मान्यायै नमः                |     |
| दैत्यहन्त्र्ये नमः        |    | मनोहरायै नमः                |     |
| दोषहीनायै नमः             |    | मायायै नमः                  |     |
| दयाम्बुधये नमः            |    | महेश्वरसुतप्रियायै नमः      |     |
| दुःखहन्त्र्ये नमः         |    | कुमार्ये नमः                |     |
| दुष्टदूरायै नमः           | २० | करुणापूर्णायै नमः           |     |
| दुरितघ्रयै नमः            |    | कार्त्तिकेयमनोहरायै नमः     |     |
| दुरासदायै नमः             |    | पद्मनेत्रायै नमः            |     |
| नाशहीनायै नमः             |    | परानन्दायै नमः              | ५०  |
| नागनुतायै नमः             |    | पार्वतीसुतवल्लभायै नमः      |     |
| नारदस्तुतवैभवायै नमः      |    | महादेव्यै नमः               |     |
| लवलीकुञ्जसम्भूतायै नमः    |    | महामायायै नमः               |     |
| ललितायै नमः               |    | मल्लिकाकुसुमप्रियायै नमः    |     |
| ललनोत्तमायै नमः           |    | चन्द्रवऋाये नमः             |     |
| शान्तदोषायै नमः           |    | चारुरूपायै नमः              |     |
| शर्मदात्र्ये नमः          | ३० | चाम्पेयकुसुमप्रियायै नमः    |     |
| शर्जन्मकुटुम्बिन्यै नमः   |    | गिरिवासायै नमः              |     |
| पद्मिन्यै नमः             |    | गुणनिधये नमः                |     |
| पद्मवदनायै नमः            |    | गतावन्यायै नमः              | ६०  |
| पद्मनाभसुतायै नमः         |    | गुहप्रियायै नमः             |     |
| परायै नमः                 |    | कलिहीनायै नमः               |     |
| पूर्णरूपायै नमः           |    | कलारूपायै नमः               |     |
| पुण्यशीलायै नमः           |    | कृत्तिकासुतकामिन्यै नमः     |     |
| प्रियङ्गुवनपालिन्यै नमः   |    | गतदोषायै नमः                |     |
| सुन्दर्ये नमः             |    | गीतगुणायै नमः               |     |
| •                         |    |                             |     |

| गङ्गाधरसुतप्रियायै नमः |    | जन्महन्त्र्ये नमः      |     |
|------------------------|----|------------------------|-----|
| भद्ररूपाये नमः         |    | जनार्दनसुतायै नमः      |     |
| भगवत्यै नमः            |    | जयायै नमः              | ९०  |
| भाग्यदायै नमः          | 90 | रमायै नमः              |     |
| भवहारिण्यै नमः         |    | रामायै नमः             |     |
| भवहीनायै नमः           |    | रम्यरूपायै नमः         |     |
| भव्यदेहायै नमः         |    | राज्ञ्ये नमः           |     |
| भवात्मजमनोहरायै नमः    |    | राजवरादृतायै नमः       |     |
| सौम्यायै नमः           |    | नीतिज्ञायै नमः         |     |
| सर्वेश्वर्ये नमः       |    | निर्मलायै नमः          |     |
| सत्यायै नमः            |    | नित्यायै नमः           |     |
| साध्ये नमः             |    | नीलकण्ठसुतप्रियायै नमः |     |
| सिद्धसमर्चितायै नमः    |    | शिवरूपायै नमः          | १०० |
| हानिहीनायै नमः         | ८० | सुधाकारायै नमः         |     |
| हरिसुतायै नमः          |    | शिखिवाहनवल्लभायै नमः   |     |
| हरसूनुमनःप्रियायै नमः  |    | व्याधात्मजायै नमः      |     |
| कल्याण्ये नमः          |    | व्याधिहन्त्र्ये नमः    |     |
| कमलायै नमः             |    | विविधागमसंस्तुतायै नमः |     |
| कल्यायै नमः            |    | हर्षदात्र्ये नमः       |     |
| कुमारसुमनोहरायै नमः    |    | हरिभवायै नमः           |     |
| जन्महीनायै नमः         |    | हरसूनुप्रियङ्गनायै नमः |     |

॥इति श्री वल्ल्यष्टोत्तरशतनामावलिः सम्पूर्णा॥

# ॥ देवसेना अष्टोत्तरशतनामाविलः॥

| देवसेनायै नमः           |    | महाबलायै नमः            |     |
|-------------------------|----|-------------------------|-----|
| देवलोकजनन्यै नमः        |    | माहेन्द्रौ नमः          |     |
| दिव्यसुन्दर्ये नमः      |    | महत्यै नमः              | 3 o |
| देवपूज्यायै नमः         |    | मायायै नमः              |     |
| दयारूपायै नमः           |    | मुक्ताहारविभूषितायै नमः |     |
| दिव्याभरणभूषितायै नमः   |    | ब्रह्मानन्दाये नमः      |     |
| दारिद्यनाशिन्यै नमः     |    | ब्रह्मरूपायै नमः        |     |
| देव्यै नमः              |    | ब्रह्माण्ये नमः         |     |
| दिव्यपङ्कज्धारिण्यै नमः |    | ब्रह्मपूजितायै नमः      |     |
| दुःस्वप्ननाशिन्यै नमः   | १० | कार्त्तिकेयप्रियायै नमः |     |
| दुष्टशमन्यै नमः         |    | कान्तायै नमः            |     |
| दोषवर्जितायै नमः        |    | कामरूपायै नमः           |     |
| पीताम्बरायै नमः         |    | कलाधरायै नमः            | ४०  |
| पद्मवासायै नमः          |    | विष्णुपूज्यायै नमः      |     |
| परानन्दायै नमः          |    | विश्ववैद्यायै नमः       |     |
| परात्परायै नमः          |    | वेदवेद्यायै नमः         |     |
| पूर्णायै नमः            |    | वज्रिजातायै नमः         |     |
| परमकल्याण्ये नमः        |    | वरप्रदायै नमः           |     |
| प्रकटायै नमः            |    | विशाखकान्तायै नमः       |     |
| पापनाशिन्यै नमः         | २० | विमलायै नमः             |     |
| प्राणेश्वर्ये नमः       |    | विशालाक्ष्यै नमः        |     |
| परायै शक्त्ये नमः       |    | सत्यसन्धायै नमः         |     |
| परमायै नमः              |    | सत्प्रभावायै नमः        | ५०  |
| परमेश्वर्यै नमः         |    | सिद्धिदायै नमः          |     |
| महावीर्यायै नमः         |    | स्कन्दवल्लभायै नमः      |     |
| महाभोगायै नमः           |    | सुरेश्वर्यै नमः         |     |
| महापूज्यायै नमः         |    | सर्ववन्द्यायै नमः       |     |
|                         |    |                         |     |
|                         |    |                         |     |

| सुन्दर्ये नमः       | शर्मदायै नमः             |
|---------------------|--------------------------|
| साम्यवर्जितायै नमः  | शक्रतनयायै नमः           |
| हतदैत्यायै नमः      | शङ्करात्मजवस्रभायै नमः   |
| हानिहीनायै नमः      | श्भायै नमः               |
| हर्षदात्र्ये नमः    | शुभप्रदायै नमः           |
| हतासुरायै नमः ६०    | शुद्धायै नमः             |
| हितकर्र्ये नमः      | शरणागतवत्सलायै नमः       |
| होनदोषायै नमः       | मयूरवाहनदयितायै नमः      |
| हेमाभायै नमः        | महामहिमशालिन्यै नमः ९०   |
| हेमभूषणायै नमः      | मदहीनायै नमः             |
| लयहीनायै नमः        | मातृपूज्यायै नमः         |
| लोकवन्द्यायै नमः    | मन्मथारिस्तप्रियायै नमः  |
| ललितायै नमः         | गुणपूर्णायै नमः          |
| ललनोत्तमायै नमः     | गणाराद्धायै नमः          |
| लम्बवामकरायै नमः    | गौरीसुतमनःप्रियायै नमः   |
| लभ्यायै नमः ७०      | गतदोषायै नमः             |
| लञ्जाढ्यायै नमः     | गतावद्यायै नमः           |
| लाभदायिन्यै नमः     | गङ्गाजातकुटुम्बिन्यै नमः |
| अचिन्त्यशक्त्यै नमः | चतुरायै नमः १००          |
| अचलायै नमः          | चन्द्रवदनायै नमः         |
| अचिन्त्यरूपायै नमः  | चन्द्रचूडभवप्रियायै नमः  |
| अक्षरायै नमः        | रम्यरूपायै नमः           |
| अभयायै नमः          | रमावन्द्यायै नमः         |
| अम्बुजाक्ष्यै नमः   | रुद्रसूनुमनःप्रियायै नमः |
| अमराराध्यायै नमः    | मङ्गलायै नमः             |
| अभयदायै नमः ८०      | मधुरालापायै नमः          |
| असुरभीतिदायै नमः    | महेशतनयप्रियायै नमः      |
|                     |                          |

॥इति श्री देवसेना अष्टोत्तरशतनामावितः सम्पूर्णा॥

श्री-वही-देवसेना-समेत-सुब्रह्मण्य-स्वामिने नमः नानाविध-परिमल-पत्र-पुष्पाणि समर्पयामि।

दशाङ्गं च पटीरं च एला-कुङ्क्म-संयुतम्। धूपं गृहाण देवेश सुब्रह्मण्य नमोऽस्त् ते॥

श्री-वल्ली-देवसेना-समेत-सुब्रह्मण्य-स्वामिने नमः धूपम् आघ्रापयामि।

इन्द्वर्कवह्निनेत्राय देवसेनापतये नमः। घृतवर्तिसुसंयुक्तं दीपोऽयम् अवलोक्यताम्॥

श्री-वल्ली-देवसेना-समेत-सुब्रह्मण्य-स्वामिने नमः दीपं दर्शयामि। धूप-दीपानन्तरम् आचमनीयं समर्पयामि।

सत्पात्रसिद्धं सुहविर्विविधानेक-भक्षणम्। निवेदयामि देवेश सानुगाय गृहाण तत्॥१॥

श्री-वही-देवसेना-समेत-सुब्रह्मण्य-स्वामिने नमः () महानैवेद्यं निवेदयामि। मध्ये मध्ये अमृतपानीयं समर्पयामि। हस्त-प्रक्षालनं समर्पयामि। गण्डूषं समर्पयामि। पुनः हस्त-प्रक्षालनं समर्पयामि। पाद-प्रक्षालनं समर्पयामि। आचमनीयं समर्पयामि।

पूगीफलसमायुक्तं नागवल्लीदलैर्युतम्। कर्पूरचूर्णसंयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्॥

श्री-वल्ली-देवसेना-समेत-सुब्रह्मण्य-स्वामिने नमः ताम्बूलं समर्पयामि।

नीराजनं देवदेव सूर्यकोटि-समप्रभ। अहं भक्त्या प्रदास्यामि स्वीकुरुष्व दयानिधे॥

श्री-वही-देवसेना-समेत-सुब्रह्मण्य-स्वामिने नमः कर्पूर-नीराजनं दर्शयामि। पुष्पाञ्जलिं समर्पयामि। आचमनीयं समर्पयामि। रक्षां धारयामि।

> सर्व-पापौघ-विध्वंस साक्षाद्धर्मस्वरूपक। पुष्पाञ्जलिं प्रदास्यामि गृहाण भुवनेश्वर॥

श्री-वही-देवसेना-समेत-सुब्रह्मण्य-स्वामिने नमः मन्नपुष्पाञ्जलिं समर्पयामि।
स्वर्णपुष्पं समर्पयामि।

यानि कानि च पापानि जन्मान्तरकृतानि च। तानि तानि विनश्यन्ति प्रदक्षिण पदे पदे॥

षण्मुखं पार्वतीपुत्रं क्रौश्चशैलविमर्दनम्। देवसेनापतिं देवं स्कन्दं वन्दे शिवात्मजम्॥

तारकासुर-हन्तारं मयूरोपरि संस्थितम्। शक्तिपाणिं च देवेशं स्कन्दं वन्दे शिवात्मजम्॥

श्री-वल्ली-देवसेना-समेत-सुब्रह्मण्य-स्वामिने नमः प्रदक्षिण-नमस्कारान् समर्पयामि।

> नमः केकिने शक्तये चापि तुभ्यम् नमश्छाग तुभ्यं नमः कुक्कुटाय। नमः सिन्धवे सिन्धुदेशाय तुभ्यम् पुनः स्कन्दमूर्ते नमस्ते नमोऽस्तु॥

जयाऽऽनन्दभूमन् जयापारधामन् जयामोघकीर्ते जयाऽऽनन्दमूर्ते। जयाऽऽनन्दसिन्धो जयाशेषबन्धो जय त्वं सदा मुक्तिदानेशसूनो॥

श्री-वल्ली-देवसेना-समेत-सुब्रह्मण्य-स्वामिने नमः प्रार्थनाः समर्पयामि।
श्री-वल्ली-देवसेना-समेत-सुब्रह्मण्य-स्वामिने नमः छत्रं समर्पयामि।
चामरयुगलं वीजयामि।
दर्पणं दर्शयामि। गीतं श्रावयामि।
नृत्तं दर्शयामि। आन्दोलिकाम् आरोहयामि।
गजम् आरोहयामि। अश्वम् आरोहयामि।
रथम् आरोहयामि। समस्त-राजोपचार-देवोपचार-पूजाः समर्पयामि।

## ॥ अर्घ्यप्रदानम्॥

ममोपात्त समस्तदुरितक्षयद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थम् स्कन्दषष्ठी-पुण्यकाले श्री-सुब्रह्मण्य-पूजान्ते अर्घ्यप्रदानं करिष्ये॥

दत्त्वाऽर्घ्यं कार्तिकेयाय स्थित्वा वै दक्षिणामुखः। दभ्गा घृतोदकैः पुष्पैर्मन्नेणानेन सुव्रत॥

सप्तर्षिदारज स्कन्द स्वाहापतिसमुद्भव। रुद्रार्यमाग्निज विभो गङ्गागर्भ नमोऽस्तु ते। प्रीयतां देवसेनानीः सम्पादयतु हृद्गतम्॥

श्री-वल्ली-देवसेना-समेत-सुब्रह्मण्य-स्वामिने नमः, इदमर्घ्यमिदमर्घ्यमिदमर्घ्यम्॥

दत्त्वा विप्राय चाऽऽत्मानं यच्चान्यदिप विद्यते। पश्चाद्भङ्के त्वसौ रात्रौ भूमिं कृत्वा तु भाजनम्॥

[श्रीभविष्ये महापुराणे शतार्धसाहस्र्यां संहितायां ब्राह्मेपर्वणि पश्चमीकल्पे षष्ठीकल्पवर्णनं नाम एकोनचत्वारिंशोऽध्यायः॥]

> अनेन अर्घ्यप्रदानेन भगवान् सर्वात्मकः श्री-वल्ली-देवसेना-समेत-सुब्रह्मण्य-स्वामिनः प्रीयन्ताम्।

हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः। अनन्तपुण्यफलदम् अतः शान्तिं प्रयच्छ मे॥

स्कन्दषष्ठी-पुण्यकाले अस्मिन् मया क्रियमाण श्री-सुब्रह्मण्यपूजायां यद्देयमुपायनदानं तत्प्रत्यायाम्नार्थं हिरण्यं श्री-वल्ली-देवसेना-समेत-सुब्रह्मण्य-स्वामिनः प्रीतिं कामयमानः

मनसोद्दिष्टाय ब्राह्मणाय सम्प्रददे नमः न मम। अनया पूजया श्री-वल्ली-देवसेना-समेत-सुब्रह्मण्य-स्वामिनः प्रीयन्ताम्। कायेन वाचा मनसेन्द्रियैर्वा बुद्ध्याऽऽत्मना वा प्रकृतेः स्वभावात्। करोमि यद्यत् सकलं परस्मे नारायणायेति समर्पयामि॥ ॐ तत्सद्बह्मार्पणमस्तु।

# ॥ बृन्दावनपूजा (तुलसी-विष्णु-पूजा) ॥

# ॥ पूर्वाङ्गविघ्नेश्वरपूजा॥

(आचम्य)

शुक्राम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्। प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये॥

प्राणान् आयम्य। ॐ भूः + भूर्भुवः सुव्रोम्। (अप उपस्पृश्य, पुष्पाक्षतान् गृहीत्वा) ममोपात्तसमस्त दुरितक्षयद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं करिष्यमाणस्य कर्मणः निर्विघ्नेन परिसमाप्त्यर्थम् आदौ विघ्नेश्वरपूजां करिष्ये।

ॐ गुणानां त्वा गुणपंति हवामहे कविं केवीनामुंपमश्रंवस्तमम्। ज्येष्ठराजं ब्रह्मणां ब्रह्मणस्पत् आ नः शृण्वन्नृतिभिः सीद् सादेनम्॥ अस्मिन् हरिद्राबिम्बे महागणपतिं ध्यायामि, आवाहयामि।

ॐ महागणपतये नमः आसनं समर्पयामि। पादयोः पाद्यं समर्पयामि। हस्तयोरर्घ्यं समर्पयामि। आचमनीयं समर्पयामि। ॐ भूर्भुवस्सुवः। शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि। स्नानानन्तरमाचमनीयं समर्पयामि। वस्नार्थमक्षतान् समर्पयामि। यज्ञोपवीताभरणार्थे अक्षतान् समर्पयामि। दिव्यपरिमलगन्धान् धारयामि। गन्धस्योपरि हरिद्राकुङ्कुमं समर्पयामि। अक्षतान् समर्पयामि। पुष्पमालिकां समर्पयामि। पुष्पैः पूजयामि।

### ॥ अर्चना ॥

१. ॐ सुमुखाय नमः १०. ॐ गणाध्यक्षाय नमः

२. ॐ एकदन्ताय नमः ११. ॐ फालचन्द्राय नमः

३. ॐ कपिलाय नमः १२. ॐ गजाननाय नमः

४. ॐ गजकर्णकाय नमः १३. ॐ वऋतुण्डाय नमः

५. ॐ लम्बोदराय नमः १४. ॐ शूर्पकर्णाय नमः

६. ॐ विकटाय नमः १५. ॐ हेरम्बाय नमः

७. ॐ विघ्रराजाय नमः १६. ॐ स्कन्दपूर्वजाय नमः

८. ॐ विनायकाय नमः १७. ॐ सिद्धिविनायकाय नमः

९. ॐ धूमकेतवे नमः १८. ॐ विघ्नेश्वराय नमः

नानाविधपरिमलपत्रपुष्पाणि समर्पयामि॥ धूपमाघ्रापयामि। अलङ्कारदीपं सन्दर्शयामि। नैवेद्यम्। ताम्बूलं समर्पयामि। कर्पूरनीराजनं समर्पयामि। कर्पूरनीराजनानन्तरमाचमनीयं समर्पयामि। वऋतुण्डमहाकाय कोटिसूर्यसमप्रभ। अविघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा॥ प्रार्थनाः समर्पयामि। अनन्तकोटिप्रदक्षिणनमस्कारान् समर्पयामि। छुत्रचामरादिसमस्तोपचारान् समर्पयामि।

## ॥ प्रधान-पूजा — तुलसी-पूजा॥

शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्। प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविद्योपशान्तये॥

प्राणान् आयम्य। ॐ भूः + भूर्भुवः सुवरोम्।

शुक्लाम्बरधरं + शान्तये + श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं शुभे + तिथौ तुलसी महाविष्णु प्रसादसिद्धयर्थं तुलसी महाविष्णुपूजां करिष्ये। इति सङ्कल्प्य विघ्नेशमुद्वास्य कलशपूजां कृत्वा, तुलसीं विष्णुं च ध्यायेत्।

#### ॥सङ्कल्पः॥

ममोपात्तसमस्तदुरितक्षयद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं शुभे शोभने मुहूर्ते अद्य ब्रह्मणः द्वितीयपरार्धे श्वेतवराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे किलियुगे प्रथमे पादे जम्बूद्वीपे भारतवर्षे भरतखण्डे मेरोः दक्षिणे पार्श्वे अस्मिन् वर्तमाने व्यावहारिकाणां प्रभवादीनां षष्ट्याः संवत्सराणां मध्ये ()-नाम संवत्सरे दक्षिणायने शरद्-ऋतौ तुला/वृश्चिक-मासे कार्तिक-शुक्र-पक्षे द्वादश्यां शुभितथौ ()-वासरयुक्तायां ()-नक्षत्रयुक्तायाम् ()-योगयुक्तायां ()-करणयुक्तायाम् एवं-गुण-विशेषण-विशिष्टायाम् अस्यां द्वादश्यां शुभितिथौ अस्माकं सहकुटुम्बानां क्षेमस्थैर्य-धैर्य-वीर्य-विजय आयुरारोग्य ऐश्वर्याभिवृद्धर्थयः धर्मार्थकाममोक्षचतुर्विधफलपुरुषार्थसिद्धर्थं पुत्रपौत्राभिवृद्धर्थम् इष्टकाम्यार्थसिद्धर्मम् इहजन्मिन पूर्वजन्मिन जन्मान्तरे च सम्पादितानां ज्ञानाज्ञानकृतमहा-पातकचतुष्टय व्यतिरिक्तानां रहस्यकृतानां प्रकाशकृतानां सर्वेषां पापानां सद्ध अपनोदनद्वारा सकल-पापक्षयार्थं श्रीमहाविष्णु-तुलसी-प्रीत्यर्थं यावच्छक्ति ध्यानावाहनादि षोडशोपचार-श्रीमहाविष्णु-तुलसी-पूजां करिष्ये। तदङ्गं

कलशपूजां च करिष्ये।

श्रीविघ्नेश्वराय नमः यथास्थानं प्रतिष्ठापयामि। (गणपति प्रसादं शिरसा गृहीत्वा)

### ॥ आसन-पूजा ॥

पृथिव्या मेरुपृष्ठ ऋषिः। सुतलं छन्दः। कूर्मो देवता॥

पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता। त्वं च धारय मां देवि पवित्रं चाऽऽसनं कुरु॥

### ॥ घण्टापूजा ॥

आगमार्थं तु देवानां गमनार्थं तु रक्षसाम्। घण्टारवं करोम्यादौ देवताऽऽह्वानकारणम्॥

### ॥ कलशपूजा ॥

ॐ कलशाय नमः दिव्यगन्धान् धारयामि। ॐ गङ्गायै नमः। ॐ यमुनायै नमः। ॐ गोदावर्यै नमः। ॐ सरस्वत्यै नमः। ॐ नर्मदायै नमः। ॐ सिन्धवे नमः। ॐ कावेर्यै नमः। ॐ सप्तकोटिमहातीर्थान्यावाहयामि।

(अथ कलशं स्पृष्ट्वा जपं कुर्यात्) आपो वा इद॰ सर्वं विश्वां भूतान्यापः प्राणा वा आपः पृशव् आपोऽन्नमापोऽमृतमापः सम्राडापो विराडापः स्वराडापृश्छन्दाृङ्स्यापो ज्योतीृङ्ष्यापो यज्रूङ्ष्यापः सत्यमापः सर्वा देवता आपो भूर्भुवः सुवराप ओम्॥

> कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः। मूले तत्र स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः॥

कुक्षौ तु सागराः सर्वे सप्तद्वीपा वसुन्धरा। ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदोऽप्यथर्वणः। अङ्गेश्च सहिताः सर्वे कलशाम्बुसमाश्रिताः॥

गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति। नर्मदे सिन्धुकावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु॥

सर्वे समुद्राः सरितः तीर्थानि च ह्रदा नदाः। आयान्तु विष्णुपूजार्थं दुरितक्षयकारकाः॥ ॐ भूर्भुवः सुवो भूर्भुवः सुवो भूर्भुवः सुवेः।

(इति कलशजलेन सर्वोपकरणानि आत्मानं च प्रोक्ष्य।)

### ॥ आत्मपूजा ॥

ॐ आत्मने नमः, दिव्यगन्धान् धारयामि।

१. ॐ आत्मने नमः ४. ॐ जीवात्मने नमः

२. ॐ अन्तरात्मने नमः ५. ॐ परमात्मने नमः

३. ॐ योगात्मने नमः ६. ॐ ज्ञानात्मने नमः

### समस्तोपचारान् समर्पयामि।

देहो देवालयः प्रोक्तो जीवो देवः सनातनः। त्यजेदज्ञाननिर्माल्यं सोऽहं भावेन पूजयेत्॥

## ॥ पीठपूजा ॥

१. ॐ आधारशक्त्ये नमः ८. ॐ रत्नवेदिकाये नमः

२. ॐ मूलप्रकृत्यै नमः ९. ॐ स्वर्णस्तम्भाय नमः

३. ॐ आदिकूर्माय नमः १०. ॐ श्वेतच्छत्राय नमः

४. ॐ आदिवराहाय नमः ११. ॐ कल्पकवृक्षाय नमः

५. ॐ अनन्ताय नमः १२. ॐ क्षीरसमुद्राय नमः

६. ॐ पृथिव्यै नमः १३. ॐ सितचामराभ्यां नमः

७. ॐ रत्नमण्डपाय नमः १४. ॐ योगपीठासनाय नमः

#### ॥ गुरु ध्यानम्॥

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुर्गुरुर्देवो महेश्वरः। गुरुः साक्षात् परं ब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः॥

## ॥ षोडशोपचारपूजा॥

ध्यायामि तुलसीं देवीं श्यामां कमललोचनाम्। प्रसन्नवदनाम्भोजां वरदाम् अभयप्रदाम्॥

अस्मिन् क्षुपे तुलसीं ध्यायामि।

ध्यायामि विष्णुं वरदं तुलसीप्रियवल्लभम्। पीताम्बरं पद्मनेत्रं वासुदेवं वरप्रदम्॥

अस्मिन् आमलक-स्कन्धे महाविष्णुं ध्यायामि।

वासुदेवप्रिये देवि सर्वदेवस्वरूपिणि। आगच्छ पूजाभवने सदा सन्निहिता भव॥

आगच्छाऽऽगच्छ देवेश तेजोराशे जगत्पते। क्रियमाणां मया पूजां वासुदेव गृहाण भोः॥

तुलसीविष्णू आवाहयामि।

नानारत्नसमायुक्तं कार्तस्वरविभूषितम्। आसनं कृपया विष्णो तुलसि प्रतिगृह्यताम्॥ तुलसी-विष्णुभ्यां नमः आसनं समर्पयामि।

नानानदीसमानीत्ं सुवर्णक्लूशस्थितम्।

नानानदीसमानीत सुवर्णकलशस्थितम्। पाद्यं गृहाण तुलिस पापं मे विनिवारय॥

गङ्गादिसर्वतीर्थेभ्यो वासुदेव मयाऽऽहृतम्। तोयमेतत्सुखस्पर्शं पाद्यार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

तुलसी-विष्णुभ्यां नमः पाद्यं समर्पयामि।

अर्घ्यं गृहाण देवि त्वं अच्युतप्रियवल्लभे। अक्षतादिसमायुक्तं अक्षय्यफलदायिनि॥

नमस्ते देवदेवेश नमस्ते कमलापते। नमस्ते सर्वविनुत गृहाणार्घ्यं नमोऽस्तु ते॥

तुलसी-विष्णुभ्यां नमः अर्घ्यं समर्पयामि।

गृहाणाचमनार्थाय विष्णुवक्षः स्थलालये। स्वच्छं तोयमिदं देवि सर्वपापविनाशिनि॥

कर्पूरवासितं तोयं गङ्गादिभ्यः समाहृतम्। आचम्यतां जगन्नाथ मया दत्तं च भक्तितः॥ तुलसी-विष्णुभ्यां नमः आचमनीयं समर्पयामि।

मधुपर्कं गृहाणेमं मधुसूदनवल्लभे। मधुदध्याज्यसंयुक्तं महापापविनाशिनि॥

दध्याज्यमधुसंयुक्तं मधुपर्कं मयाऽऽहृतम्। गृहाण विष्णो वरद लक्ष्मीकान्त नमोऽस्तु ते॥

तुलसी-विष्णुभ्यां नमः मधुपर्कं समर्पयामि।

पञ्चामृतं गृहाणेदं पञ्चपातकनाशिनि। दिधक्षीरसमायुक्तं दामोदरकुटुम्बिनि॥

मध्वाज्यशर्करायुक्तं दिधक्षीरसमन्वितम्। पञ्चामृतं गृहाणेदं भक्तानामिष्टदायक॥

तुलसी-विष्णुभ्यां नमः पश्चामृतं समर्पयामि।

गङ्गागोदावरीकृष्णातुङ्गादिभ्यः समाहृतम्। सिललं देवि तुलिस स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

गङ्गा कृष्णा च यमुना नर्मदा च सरस्वती। तुङ्गा गोदावरी वेणी क्षिप्रा सिन्धुर्घटप्रभा॥

तापी पयोष्णी सरयूस्ताभ्यः स्नानार्थमाहृतम्। तोयमेतत्सुखस्पर्शं स्नानीयं गृह्यतां हरे॥

तुलसी-विष्णुभ्यां नमः स्नानं समर्पयामि।

पीताम्बरमिदं दिव्यं पातकव्रजनाशिनि। पीताम्बरप्रिये देवि परिधत्स्व परात्परे॥

सर्वभूषाधिके सौम्ये लोकलञ्जानिवारणे। वाससी प्रतिगृह्णातु लक्ष्मीजानिरधोक्षजः॥

तुलसी-विष्णुभ्यां नमः वस्त्रं समर्पयामि।

भूषणानि वरार्हाणि गृह्णीतं तुलसीश्वर। किरीटहारकेयूरकटकानि हरेऽमृते॥

तुलसी-विष्णुभ्यां नमः आभरणानि समर्पयामि।

चन्दनागरुकर्पूरकस्तूरीकुङ्कुमान्वितम्। गन्धं स्वीकुरुतं देवौ रमेशहरिवल्लभे॥

तुलसी-विष्णुभ्यां नमः गन्धान् धारयामि।

मिल्लकाकुन्दमन्दारजाजीवकुलचम्पकैः। शतपत्रेश्च कह्नारैरर्चये तुलसीहरी॥

तुलसी-विष्णुभ्यां नमः पुष्पाणि समर्पयामि।

### ॥ अङ्गपूजा ॥

बृन्दायै अच्युताय नमः - पादौ पूजयामि। तुलस्यै अनन्ताय नमः - गुल्फौ पूजयामि। जनार्दनप्रियायै तुलसीकान्ताय नमः- जङ्घे पूजयामि। जन्मनाशिन्यै गङ्गाधरपदाय नमः - जानुनी पूजयामि

उत्तमाय नमः - ऊरू पूजयामि।

कमलाक्ष्ये कमलाक्षाय नमः - कटिं पूजयामि। नारायण्ये नारायणाय नमः - नाभिं पूजयामि।

उन्नतायै उन्नताय नमः - उदरं पूजयामि।

वरदाये वरदाय नमः - वक्षः पूजयामि।

स्तव्याये स्तव्याय नमः - स्तनौ कौस्तुभं पूजयामि।

चतुर्भुजायै चतुर्भुजाय नमः - भुजान् पूजयामि।

कम्बुकण्ठ्ये वनमालिने नमः - कण्ठुं पूजयामि।

कल्मषघ्रये कल्मषघ्राय नमः - कुणौ पूजयामि।

मुनिप्रियाय नमः - नेत्रे पूजयामि

शुभप्रदाये शुभप्रदाय नमः - शिरः पूजयामि।

सर्वार्थदायिन्यै सर्वार्थदायिने नमः - सर्वाण्यङ्गानि पूजयामि।

## ॥ चतुर्विंशति नामपूजा॥

१. ॐ केशवाय नमः ३. ॐ माधवाय नमः

२. ॐ नारायणाय नमः ४. ॐ गोविन्दाय नमः

- ५. ॐ विष्णवे नमः
- ६. ॐ मधुसूदनाय नमः
- ७. ॐ त्रिविक्रमाय नमः
- ८. ॐ वामनाय नमः
- ९. ॐ श्रीधराय नमः
- १०. ॐ हृषीकेशाय नमः
- ११. ॐ पद्मनाभाय नमः
- १२. ॐ दामोदराय नमः
- १३. ॐ सङ्कर्षणाय नमः
- १४. ॐ वासुदेवाय नमः

१५. ॐ प्रद्युम्नाय नमः

१६. ॐ अनिरुद्धाय नमः

१७. ॐ पुरुषोत्तमाय नमः

१८. ॐ अधोक्षजाय नमः

१९. ॐ नृसिंहाय नमः

२०. ॐ अच्युताय नमः

२१. ॐ जनार्दनाय नमः

२२. ॐ उपेन्द्राय नमः

२३. ॐ हरये नमः

२४. ॐ श्रीकृष्णाय नमः

# ॥ तुलस्यष्टोत्तरशतनामाविलः॥

१०

तुलस्यै नमः

पावन्ये नमः

पूज्यायै नमः

वृन्दावननिवासिन्यै नमः

ज्ञानदात्र्ये नमः

ज्ञानमय्ये नमः

निर्मलायै नमः

सर्वपूजितायै नमः

सत्यै नमः

पतिव्रतायै नमः

वृन्दाये नमः

क्षीराब्धिमथनोद्भवायै नमः

कृष्णवर्णायै नमः

रोगहत्र्यै नमः

त्रिवर्णायै नमः सर्वकामदायै नमः

लक्ष्मीसख्यै नमः

नित्यशुद्धायै नमः

सुदत्ये नमः

भूमिपावन्यै नमः

हरिद्रान्नैकनिरतायै नमः

हरिपादकृतालयायै नमः

पवित्ररूपिण्ये नमः

धन्यायै नमः

स्गन्धिन्यै नमः

अमृतोद्भवायै नमः

सुरूपायै आरोग्यदायै नमः

तुष्टायै नमः

| शक्तित्रितयरूपिण्यै नमः   |    | चतुर्भुजायै नमः               |    |
|---------------------------|----|-------------------------------|----|
| देव्यै नमः                | ३० | गरुत्मद्वाहनायै नमः           |    |
| देवर्षिस्ंस्तुत्यायै नमः  |    | शान्तायै नमः                  |    |
| कान्तायै नमः              |    | दान्तायै नमः                  |    |
| विष्णुमनःप्रियायै नमः     |    | विघ्ननिवारिण्यै नमः           | ६० |
| भूतवेतालभीतिष्ट्रयै नमः   |    | श्रीविष्णुमूलिकायै नमः        |    |
| महापातकनाशिन्यै नमः       |    | पुष्ट्ये नमः                  |    |
| मनोरथप्रदायै नमः          |    | त्रिवर्गफलदायिन्यै नमः        |    |
| मेधायै नमः                |    | महाशत्त्रये नमः               |    |
| कान्त्यै नमः              |    | महामायायै नमः                 |    |
| विजयदायिन्यै नमः          |    | लक्ष्मीवाणीसुपूजितायै नमः     |    |
| शङ्खचऋगदापद्मधारिण्यै नमः | ४० | सुमङ्गल्यर्चनप्रीतायै नमः     |    |
| कामरूपिण्यै नमः           |    | सौमङ्गल्यविवर्धिन्यै नमः      |    |
| अपवर्गप्रदायै नमः         |    | चातुर्मास्योत्सवाराध्यायै नमः |    |
| श्यामाये नमः              |    | विष्णुसान्निध्यदायिन्यै नमः   | 90 |
| कृशमध्यायै नमः            |    | उत्थानद्वादशीपूज्यायै नमः     |    |
| सुकेशिन्यै नमः            |    | सर्वदेवप्रपूजितायै नमः        |    |
| वैकुण्ठवासिन्यै नमः       |    | गोपीरतिप्रदायै नमः            |    |
| नन्दायै नमः               |    | नित्यायै नमः                  |    |
| बिम्बोष्ठ्ये नमः          |    | निर्गुणायै नमः                |    |
| कोकिलस्वरायै नमः          |    | पार्वतीप्रियायै नमः           |    |
| कपिलायै नमः               | ५० | अपमृत्युह्रायै नमः            |    |
| निम्नगाजन्मभूम्यै नमः     |    | राधाप्रियायै नमः              |    |
| आयुष्यदायिन्यै नमः        |    | मृगविलोचनायै नमः              |    |
| वनरूपायै नमः              |    | अम्रानायै नमः                 | ८० |
| दुःखनाशिन्यै नमः          |    | हंसगमनायै नमः                 |    |
| अविकारायै नमः             |    | कमलासनवन्दितायै नमः           |    |
|                           |    |                               |    |
|                           |    |                               |    |

भूलोकवासिन्यै नमः

शुद्धायै नमः

रामकृष्णादिपूजितायै नमः

सीतापूज्यायै नमः

राममनःप्रियायै नमः

नन्दनसंस्थितायै नमः

सर्वतीर्थमय्यै नमः

मुक्तायै नमः लोकसृष्टिविधायिन्यै नमः

प्रातर्दश्याये नमः

ग्लानिहन्त्र्ये नमः

वैष्णव्ये नमः

सर्वसिद्धिदायै नमः

नारायण्ये नमः

सन्ततिदायै नमः

मूलमृद्धारिपावन्यै नमः

अशोकवनिकासंस्थायै नमः

सीताध्यातायै नमः 800

निराश्रयायै नमः

गोमतीसरयूतीररोपितायै नमः

कुटिलालकायै नमः

अपात्रभक्ष्यपापघ्र्ये नमः

दानतोयविशुद्धिदायै नमः

श्रुतिधारणसुप्रीतायै नमः शुभाये नमः

सर्वेष्टदायिन्यै नमः १०८

॥इति श्री तुलस्यष्टोत्तरशतनामावलिः सम्पूर्णा॥ श्री तुलसी-विष्णुभ्यां नमः नानाविध-परिमल-पत्र-पुष्पाणि समर्पयामि।

९०

धूपं गृहाण वरदे दशाङ्गेन सुवासितम्। तुलस्यमृतसम्भूते धूतपापे नमोऽस्तु ते॥

द्शाङ्गो गुग्गुलूपेतः सुगन्धः सुमनोहरः। श्रीवत्साङ्क हर्षीकेश धूपौऽयं प्रतिगृह्यताम्॥

तुलसी-विष्णुभ्यां नमः धूपम् आघ्रापयामि।

वर्तित्रययुतं दीप्तं गोघृतेन समन्वितम्। दीपं देवि गृहाणेमं दैत्यारिहृदयस्थिते॥

साज्यं त्रिवर्तिसंयुक्तं दीप्तं देव जनार्दन। गृहाण मङ्गलं दीपं त्रैलोक्यतिमिरं हर॥

तुलसी-विष्णुभ्यां नमः दीपं दर्शयामि।

नानाभक्ष्येश्च भोज्येश्च फलैः क्षीरघृतादिभिः। नैवेद्यं गृह्यतां युक्तं नारायणमनःप्रिये॥

भोज्यं चतुर्विधं चोष्यभक्ष्यसूपफलैर्युतम्। दिधमध्वाज्यसंयुक्तं गृह्यतामम्बुजेक्षण॥

तुलसी-विष्णुभ्यां नमः महानैवेद्यं निवेदयामि।

कर्पूरचूर्णताम्बूलवल्लीपूगफलैर्युतम् । जगतः पितरावेतत्ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्॥

तुलसी-विष्णुभ्यां नमः ताम्बूलं समर्पयामि।

नीराजनं गृहाणेदं कर्पूरैः कलितं मया। तुलस्यमृतसम्भूते गृहाण हरिवल्लभे॥

चन्द्रादित्यौ च नक्षत्रं विद्युदग्निस्त्वमेव च। त्वमेव सर्वज्योतींषि कुर्यां नीराजनं हरे॥

तुलसी-विष्णुभ्यां नमः कर्पूर-नीराजनं दर्शयामि।

प्रकृष्टपापनाशाय प्रकृष्टफलसिद्धये। युवां प्रदक्षिणी कुर्वे तुलसीशौ प्रसीदतम्॥

तुलसी-विष्णुभ्यां नमः प्रदक्षिणं समर्पयामि।

नमोऽस्तु पीयूषसमुद्भवायै नमोऽस्तु पद्माक्षमनः प्रियायै। नमोऽस्तु जन्माप्यय-भीतिहन्न्यै नमस्तुलस्यै जगतां जनन्यै॥

शङ्खचक्रगदापाणे द्वारकानिलयाच्युत। गोविन्द पुण्डरीकाक्ष रक्ष मां शरणागत(ता)म्॥

तुलसी-विष्णुभ्यां नमः नमस्कारान् समर्पयामि।

पुष्पाञ्जलिं गृहाणेदं पङ्कजाक्षस्य वल्लभे। नमस्ते देवि तुलसि नताभीष्टफलप्रदे॥ मन्दारनीलोत्पलकुन्दजाती पुन्नागमल्लीकरवीरपद्मैः। पुष्पाञ्जलिं ते जगदेकबन्धो हरे त्वदङ्गौ विनिवेशयामि॥ तुलसी-विष्णुभ्यां नमः मन्नपुष्पाञ्जलिं समर्पयामि।

आयुरारेग्यमतुलमैश्वर्यं पुत्रसम्पदः। देहि मे सकलान्कामान् तुलस्यमृतसम्भवे॥

नमो नमः सुखवरपूजिताङ्क्रये नमो नमो निरुपममङ्गलात्मने। नमो नमो विपुलपदैकसिद्धये नमो नमः परमदयानिधे हरे॥

तुलसी-विष्णुभ्यां नमः प्रार्थनाः समर्पयामि।

नमस्ते देवि तुलसि नमस्ते मोक्षदायिनि। इदमर्घ्यं प्रदास्यामि सुप्रीता वरदा भव॥

लक्ष्मीपते नमस्तुभ्यं तुलसीदामभूषण। इदमर्घ्यं प्रदास्यामि गृहाण गरुडध्वज॥

श्री तुलस्यै महाविष्णवे च नमः - इदमर्घ्यमिदमर्घ्यम्।

नमस्ते देवि तुलसि माधवेन समन्विता। प्रयच्छ सकलान्कामान् द्वादश्यां पूजिता मया॥ अनेन पूजनेन श्री-तुलसी-विष्णु प्रीयेताम्।

## तुलसीविवाहविधिः

(इक्षुदण्डिनर्मिते पुष्पाद्यलङ्कृते मण्टपे विवाहः। तुलसी हरिद्राचन्दनकुङ्कुमपुष्पाद्यालङ्कृता स्वीयवेद्यां प्रथमं पूज्यते। शुक्लाम्बरधरं + परमेश्वरप्रीत्यर्थं शुभे शोभने मुहूर्ते + शुभितथौ तुलस्याः विष्णुना सह विवाहोत्सवमाचरिष्ये।

(अप उपस्पृश्य)

विष्णुं विवाहार्थे वरार्ह-वस्नालङ्करण-पुष्पमालादिभिः अलङ्कृत्य वाद्यघोषगीतपुरस् विवाहमण्टपमानीय कर्ता नारिकेल-कदलीफलताम्बूलादिभिः उपसृत्य मण्टपे आसने प्रतिष्ठाप्य प्रार्थयेत्।

> आगच्छ भगवन् देव अर्हयिष्यामि केशव। तुभ्यं ददामि तुलसीं प्रतीच्छन् कामदो भव॥

आसनमिदं, अलङ्कियताम्। पाद्यं समर्पयामि।

अर्घ्यं समर्पयामि, आचमनीयं समर्पयामि। मधुपर्कं समर्पयामि। हरिद्रालेप-मङ्गलविधिं समर्पयामि। तैलाभ्यङ्गपूर्वकं मङ्गलस्नानं समर्पयामि। वस्नालङ्करणपुष्पमालाः समर्पयामि। गन्धान् धारयामि। गन्धोपरि हरिद्राकुङ्कुमं समर्पयामि। पुष्पैः पूजयामि।

तुलसी-विष्णुभ्यां नमः नानाविधपरिमलपत्रपुष्पाणि समर्पयामि। (वधूवरौ परस्परमभिमुखौ स्थापयित्वा)

... गोत्रोद्भवां ... शर्मणः प्रपौत्रीं, ... शर्मणः पौत्रीं, ... शर्मणः पुत्रीं तुलसीनाम्नीम् इमां कन्यकां अजाय परब्रह्मणे श्री विष्णवे वराय प्रतिपादयामि। (त्रिः उक्ता)

अनादिमध्यनिधन त्रैलोक्यप्रतिपालक। इमां गृहाण तुलसीं विवाहविधिनेश्वर॥

पार्वती-बीजसम्भूतां बृन्दाभस्मनि संस्थिताम्। अनादिमध्यनिधनां वल्लभां ते ददाम्यहम्॥

पयोघृतैश्च सेवाभिः कन्यावद्वर्धितां मया। त्वित्रयां तुलसीं तुभ्यं ददामि त्वं गृहाण भोः॥ वाद्यघोष-वेदस्वस्तिवाचन-मङ्गलाशीर्भिः उभौ मेलयित्वा गीतादिभिः सन्तोषयेत्।

सायमपि पुनः पूजां कृत्वा स्त्रीधनं यथाशक्तिं दद्यात्। विवाहोत्सवपूर्ती—

वैकुण्ठं गच्छ भगवन् तुलस्या सहितः प्रभो। मत्कृतं पूजनं गृह्य सन्तुष्टो भव सर्वदा॥ गच्छ गच्छ सुरश्रेष्ठ स्वस्थानं परमेश्वर। यत्र ब्रह्मादयो देवाः तत्र गच्छ जनार्दन॥

इति उभौ अभ्यनुज्ञापयेत् मङ्गलारार्तिकेन सह। तुलसीं यथापूर्वं रक्षेत्।

कायेन वाचा मनसेन्द्रियैर्वा बुद्ध्याऽऽत्मना वा प्रकृतेः स्वभावात्। करोमि यद्यत् सकलं परस्मै नारायणायेति समर्पयामि॥

ॐ तत्सद्बह्मार्पणमस्तु।



# ॥ शिवरात्रि-पूजा — याम-चतुष्टय-पूजा ॥

आचम्य।

शुक्राम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्। प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये॥

प्राणान् आयम्य। ॐ भूः + भूर्भुवः सुव्रोम्।

### ॥ व्रत-सङ्कल्पः॥

ममोपात्तसमस्तदुरितक्षयद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं शुभे शोभने मुहूर्ते अद्यब्रह्मणः द्वितीयपरार्द्धे श्वेतवराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे

कितयुगे प्रथमे पादे जम्बूद्वीपे भारतवर्षे भरतखण्डे मेरोः दक्षिणेपार्श्वे शकाब्दे अस्मिन् वर्तमाने व्यावहारिकणां प्रभवादि षष्ट्याः संवत्सराणां मध्ये () वाम संवत्सरे उत्तरायणे शिशिर-ऋतौ कुम्भ-मासे कृष्ण-पक्षे त्र्योदश्यां/चतुर्दश्यां शुभितथौ (इन्दु / भौम / बुध / गुरु / भृगु / स्थिर / भानु) वासरयुक्तायाम् () विशेषण विशिष्टायाम् अस्याम् (त्र्योदश्यां/चतुर्दश्यां) शुभितथौ अस्माकं सहकुटुम्बानां क्षेमस्थैर्य-धैर्य-वीर्य-विजय आयुरारोग्य ऐश्वर्याभिवृद्धर्थम् धर्मार्थकाममोक्षचतुर्विधफलपुरुषार्थसिद्धर्थं पुत्रपौत्राभिवृद्धर्थम् इष्टकाम्यार्थसिद्धर्थम् मम इहजन्मिन पूर्वजन्मिन जन्मान्तरे च सम्पादितानां ज्ञानाज्ञानकृतमहापातकचतुष्टय व्यतिरिक्तानां रहस्यकृतानां प्रकाशकृतानां सर्वेषां पापानां सद्य अपनोदनद्वारा सकल पापक्षयार्थं श्री-साम्ब-परमेश्वर-प्रीत्यर्थं शिवरात्रि-व्रतं करिष्ये।

शिवरात्रिव्रतं ह्येतत्करिष्येऽहं महाफलम्। निर्विघ्नमस्तु मे चात्र त्वत्प्रसादाञ्जगत्पते॥

चतुर्दश्यां निराहारो भूत्वा शम्भो परेऽहनि। भोक्ष्येऽहं भुक्तिमुक्त्यर्थं शरणं मे भवेश्वर॥

## ॥ पूर्वाङ्गविघ्नेश्वरपूजा॥

(आचम्य)

शुक्राम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्। प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये॥

प्राणान् आयम्य। ॐ भूः + भूर्भुवः सुव्रोम्। (अप उपस्पृश्य, पुष्पाक्षतान् गृहीत्वा) ममोपात्तसमस्त दुरितक्षयद्वारा

<sup>&</sup>lt;sup>३°</sup>पृष्टं ५७२ पश्यताम्

३१पृष्टं ५७३ पश्यताम्

<sup>&</sup>lt;sup>३२</sup>पृष्टं ५७४ पश्यताम्

श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं करिष्यमाणस्य कर्मणः निर्विघ्नेन परिसमास्यर्थम् आदौ विघ्नेश्वरपूजां करिष्ये।

ॐ गुणानां त्वा गुणपंति हवामहे कविं केवीनाम्प्रमश्रवस्तमम्। ज्येष्ठराजं ब्रह्मणां ब्रह्मणस्पत् आ नः शृण्वत्रूतिभिः सीद् सादनम्॥ अस्मिन् हरिद्राबिम्बे महागणपतिं ध्यायामि, आवाहयामि।

ॐ महागणपतये नमः आसनं समर्पयामि। पादयोः पाद्यं समर्पयामि। हस्तयोरर्घ्यं समर्पयामि। आचमनीयं समर्पयामि। ॐ भूर्भुवस्सुवः। शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि। स्नानानन्तरमाचमनीयं समर्पयामि। वस्रार्थमक्षतान् समर्पयामि। यज्ञोपवीताभरणार्थे अक्षतान् समर्पयामि। दिव्यपरिमलगन्धान् धारयामि। गन्धस्योपरि हरिद्राकुङ्कमं समर्पयामि। अक्षतान् समर्पयामि। पुष्पमालिकां समर्पयामि। पुष्पैः पूजयामि।

### ॥ अर्चना ॥

|    |          |                | 11 1 1 11 11  |                    |
|----|----------|----------------|---------------|--------------------|
| १. | ૐ        | सुमुखाय नमः    | १०. ॐ         | गणाध्यक्षाय नमः    |
| ₹. | ૐ        | एकदन्ताय नमः   | ११. <i>ॐ</i>  | फालचन्द्राय नमः    |
| ₹. | ૐ        | कपिलाय नमः     | <b>१</b> २. ૐ | गजाननाय नमः        |
| ४. | ૐ        | गजकर्णकाय नमः  | १३. ॐ         | वऋतुण्डाय नमः      |
| ۷. | ૐ        | लम्बोदराय नमः  | १४. ॐ         | शूर्पकर्णाय नमः    |
| €. | <i>ॐ</i> | विकटाय नमः     | १५. ॐ         | हेरम्बाय नमः       |
| છ. | <i>ॐ</i> | विघ्नराजाय नमः | १६. ॐ         | स्कन्दपूर्वजाय नमः |
| ۷. | <i>ॐ</i> | विनायकाय नमः   | १७. ॐ         | सिद्धिविनायकाय नमः |
| ۶. | <i>ॐ</i> | धूमकेतवे नमः   | १८. ॐ         | विघ्नेश्वराय नमः   |

नानाविधपरिमलपत्रपुष्पाणि समर्पयामि॥ धूपमाघ्रापयामि। अलङ्कारदीपं सन्दर्शयामि। नैवेद्यम्। ताम्बूलं समर्पयामि। कर्पूरनीराजनं समर्पयामि। कर्पूरनीराजनानन्तरमाचमनीयं समर्पयामि। वऋतुण्डमहाकाय कोटिसूर्यसमप्रभ। अविघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा॥ प्रार्थनाः समर्पयामि। अनन्तकोटिप्रदक्षिणनमस्कारान् समर्पयामि। छत्रचामरादिसमस्तोपचारान् समर्पयामि।

## ॥ प्रधान-पूजा - साम्ब-परमेश्वर-पूजा (प्रथम-यामः) ॥

शुक्राम्बरधरं विष्णुं शशिवणं चतुर्भुजम्। प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये॥

प्राणान् आयम्य। ॐ भूः + भूर्भृवः सुव्रोम्।
ममोपात्तसमस्तदुरितक्षयद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं शुभे शोभने मुहूर्ते अद्यब्रह्मणः द्वितीयपरार्द्धे श्वेतवराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे प्रथमे पादे जम्बूद्वीपे भारतवर्षे भरतखण्डे मेरोः दक्षिणेपार्श्वे शकाब्दे अस्मिन् वर्तमाने व्यावहारिकणां प्रभवादि षष्ट्याः संवत्सराणां मध्ये () ३३ नाम संवत्सरे उत्तरायणे शिशिर-ऋतौ कुम्भ-मासे कृष्ण-पक्षे त्र्योदश्यां/चतुर्दश्यां शुभितथौ (इन्दु / भौम / बुध / गुरु / भृगु / स्थिर

३३पृष्टं ५७२ पश्यताम्

/ भानु) वासरयुक्तायाम् () ३४ नक्षत्र () ३५ नाम योग () करण युक्तायां च एवं गुण विशेषण विशिष्टायाम् अस्याम् (त्र्योदश्यां/चतुर्दश्यां) शुभितथौ अस्माकं सहकुटुम्बानां क्षेमस्थैर्य-धैर्य-वीर्य-विजय आयुरारोग्य ऐश्वर्याभिवृद्धर्थम् धर्मार्थकाममोक्षचतुर्विधफलपुरुषार्थसिद्धर्थं पुत्रपौत्राभिवृद्धर्थम् इष्टकाम्यार्थसिद्धर्थम् मम इहजन्मिन पूर्वजन्मिन जन्मान्तरे च सम्पादितानां ज्ञानाज्ञानकृतमहापातकचतुष्टय व्यतिरिक्तानां रहस्यकृतानां प्रकाशकृतानां सर्वेषां पापानां सद्य अपनोदनद्वारा सकल पापक्षयार्थं शिवरात्रौ श्री-साम्ब-परमेश्वर-प्रीत्यर्थं प्रथम-यामपूजां करिष्ये। श्रीविघ्रेश्वराय नमः यथास्थानं प्रतिष्ठापयामि।

(गणपति प्रसादं शिरसा गृहीत्वा)

#### ॥ आसन-पूजा॥

पृथिव्या मेरुपृष्ठ ऋषिः। सुतलं छन्दः। कूर्मो देवता॥

पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता। त्वं च धारय मां देवि पवित्रं चाऽऽसनं कुरु॥

#### ॥ घण्टापूजा ॥

आगमार्थं तु देवानां गमनार्थं तु रक्षसाम्। घण्टारवं करोम्यादौ देवताऽऽह्वानकारणम्॥

### ॥ कलशपूजा ॥

ॐ कलशाय नमः दिव्यगन्धान् धारयामि। ॐ गङ्गायै नमः। ॐ यमुनायै नमः। ॐ गोदावर्यै नमः। ॐ सरस्वत्यै नमः। ॐ नर्मदायै नमः। ॐ सिन्धवे नमः। ॐ कावेर्यै नमः। ॐ सप्तकोटिमहातीर्थान्यावाहयामि।

३४पृष्टं ५७३ पश्यताम्

<sup>&</sup>lt;sup>३५</sup>पृष्टं ५७४ पश्यताम्

(अथ कलशं स्पृष्ट्वा जपं कुर्यात्) आपो वा इदः सर्वं विश्वां भूतान्यापः प्राणा वा आपः पृशव् आपोऽन्नमापोऽमृतमापः सम्राडापो विराडापः स्वराडापृश्छन्दाः स्यापो ज्योतीः इष्यापो यज् इष्यापः सत्यमापः सर्वा देवता आपो भूर्भुवः सुवराप ओम्॥

> कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः। मूले तत्र स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः॥

कुक्षौ तु सागराः सर्वे सप्तद्वीपा वसुन्धरा। ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदोऽप्यथर्वणः। अङ्गेश्च सहिताः सर्वे कलशाम्बुसमाश्रिताः॥

गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति। नर्मदे सिन्धुकावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु॥

सर्वे समुद्राः सरितः तीर्थानि च ह्रदा नदाः। आयान्तु विष्णुपूजार्थं दुरितक्षयकारकाः॥ ॐ भूर्भुवः सुवो भूर्भुवः सुवेः।

(इति कलशजलेन सर्वोपकरणानि आत्मानं च प्रोक्ष्य।)

#### ॥ आत्मपूजा ॥

ॐ आत्मने नमः, दिव्यगन्धान् धारयामि।

१. ॐ आत्मने नमः ४. ॐ जीवात्मने नमः

२. ॐ अन्तरात्मने नमः ५. ॐ परमात्मने नमः

३. ॐ योगात्मने नमः ६. ॐ ज्ञानात्मने नमः

समस्तोपचारान् समर्पयामि।

देहो देवालयः प्रोक्तो जीवो देवः सनातनः। त्यजेदज्ञाननिर्माल्यं सोऽहं भावेन पूजयेत्॥

### ॥ पीठपूजा ॥

८. ॐ रत्नवेदिकायै नमः १. ॐ आधारशक्त्ये नमः

२. ॐ मूलप्रकृत्यै नमः ९. ॐ स्वर्णस्तम्भाय नमः

३. ॐ आदिकूर्माय नमः १०. ॐ श्वेतच्छत्राय नमः

४. ॐ आदिवराहाय नमः ११. ॐ कल्पकवृक्षाय नमः

१२. ॐ क्षीरसमुद्राय नमः ५. ॐ अनन्ताय नमः

६. ॐ पृथिव्यै नमः १३. ॐ सितचामराभ्यां नमः

१४. ॐ योगपीठासनाय नमः ७. ॐ रत्नमण्डपाय नमः

### ॥गुरु ध्यानम्॥

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुर्गुरुर्देवो महेश्वरः। गुरुः साक्षात् परं ब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः॥

## ॥ षोडशोपचारपूजा॥

ध्यायेन्नित्यं महेशं रजतगिरिनिभं चारुचन्द्रावतंसम् रत्नाकल्पोञ्चलाङ्गं परशुमृगवराभीतिहस्तं प्रसन्नम्। पद्मासीनं समन्तात् स्तुतममरगणैर्व्याघ्रकृत्तिं वसानम् विश्वाद्यं विश्वबीजं निखिलभयहरं पञ्चवऋं त्रिनेत्रम्॥

अस्मिन् बिम्बे श्री-साम्ब-परमेश्वरं ध्यायामि।

नर्मस्ते रुद्र मुन्यवं उतो तु इषवे नर्मः। नर्मस्ते अस्तु धन्वने बाहुभ्यामुत ते नर्मः॥ ॐ ह्रीं नमः शिवायं। सद्योजातं प्रपद्यामि।

या त इषुंः शिवतंमा शिवं बभूवं ते धनुंः। शिवा शंरव्यां या तव तयां नो रुद्र मृडय॥ ॐ हीं नमः शिवायं। सद्योजाताय वै नमो नमः। आसनं समर्पयामि॥ २॥

या तें रुद्र शिवा तुनूरघोराऽपांपकाशिनी। तयां नस्तुनुवा शन्तंमया गिरिंशन्ताभिचांकशीहि॥ ॐ हीं नमः शिवायं। भवे भवे नातिं भवे भवस्व माम्। पादयोः पाद्यं समर्पयामि॥३॥

यामिषुं गिरिशन्त हस्ते बिभूष्यस्तंव। शिवां गिरित्र तां कुरु मा हि सीः पुरुषं जगंत्॥ ॐ हीं नमः शिवायं। भ्वोद्भवाय नमः॥ अर्ध्यं समर्पयामि॥४॥ शिवेन वर्चसा त्वा गिरिशाच्छांवदामिस। यथां नः सर्वमिञ्जगंदयक्ष्म स्मुमना असंत्॥ ॐ हीं नमः शिवायं। वामदेवाय नमः। आचमनीयं समर्पयामि॥५॥ अध्यंवोचदिधवृक्ता प्रथमो दैव्यों भिषक्। अही ईश्च सर्वांश्चम्भय-न्थ्सर्वांश्च यातुधान्यः॥ ॐ हीं नमः शिवायं। ज्येष्ठाय नमः। मधुपर्कं समर्पयामि॥६॥ असौ यस्ताम्रो अंरुण उत बुभुः सुंमङ्गलंः। ये चेमा रुद्रा अभितों दिक्षु श्रिताः संहस्रशोऽवैषा होर्ड ईमहे॥ ॐ हीं नमः शिवायं। श्रेष्ठाय नमंः। स्नानं

रुद्रम्। चमकम्। पुरुषसूक्तम्॥

समर्पयामि।

स्नानानन्तरम् आचमनीयं समर्पयामि॥७॥

साक्षतजलेन तर्पणं कार्यम्॥

ॐ भवं देवं तर्पयामि। ॐ शर्वं देवं तर्पयामि। ॐ ईशानं देवं तर्पयामि। ॐ पशुपतिं देवं तर्पयामि। ॐ रुद्रं देवं तर्पयामि। ॐ उग्रं देवं तर्पयामि। ॐ भीमं देवं तर्पयामि। ॐ महान्तं देवं तर्पयामि॥

ॐ भवस्य देवस्य पत्नीं तर्पयामि। ॐ शर्वस्य देवस्य पत्नीं तर्पयामि। ॐ ईशानस्य देवस्य पत्नीं तर्पयामि। ॐ पशुपतेर्देवस्य पत्नीं तर्पयामि। ॐ रुद्रस्य देवस्य पत्नीं तर्पयामि। ॐ उग्रस्य देवस्य पत्नीं तर्पयामि। ॐ भीमस्य देवस्य पत्नीं तर्पयामि। ॐ महतो देवस्य पत्नीं तर्पयामि॥

असौ योंऽवसर्पति नीलंग्रीवो विलोहितः। उतैनं गोपा अंदशृत्रदंशन्नुदहार्यः।

उतैनं विश्वां भूतानि स दृष्टो मृंडयाति नः॥ ॐ हीं नृमः शिवायं। रुद्राय नर्मः। वस्रोत्तरीयं समर्पयामि॥८॥

नमों अस्तु नीलंग्रीवाय सहस्राक्षायं मीढुषें। अथो ये अंस्य सत्वांनोऽहं तेभ्योंऽकरं नमः॥ ॐ हीं नमः शिवायं। कालाय नमः। यज्ञोपवीताभरणानि समर्पयामि॥९॥

प्र मृंश्च धन्वंनस्त्वमुभयोरार्ह्नियोज्याम्। याश्चं ते हस्त इषंवः परा ता भंगवो वप॥ ॐ हीं नमः शिवायं। कलंविकरणाय नमः। दिव्यपरिमलगन्धान् धारयामि। गन्धस्योपरि अक्षतान् समर्पयामि॥१०॥

अवतत्य धनुस्त्व सहंस्राक्ष शतंषुधे। निशीर्य श्राल्यानां मुखां शिवो नंः सुमनां भव॥ ॐ हीं नमः शिवायं। बलंविकरणाय नमंः। पुष्पैः पूजयामि॥११॥

ॐ भवाय देवाय नमः। ॐ शर्वाय देवाय नमः।
ॐ ईशानाय देवाय नमः। ॐ पशुपतये देवाय नमः।
ॐ रुद्राय देवाय नमः। ॐ उग्राय देवाय नमः।
ॐ भीमाय देवाय नमः। ॐ महते देवाय नमः॥
ॐ भवस्य देवस्य पत्यै नमः। ॐ शर्वस्य देवस्य पत्यै नमः।
ॐ ईशानस्य देवस्य पत्यै नमः। ॐ पशुपतेर्देवस्य पत्यै नमः।
ॐ रुद्रस्य देवस्य पत्यै नमः। ॐ उग्रस्य देवस्य पत्यै नमः।
ॐ भीमस्य देवस्य पत्यै नमः। ॐ महतो देवस्य पत्यै नमः॥

## ॥ शिवाष्टोत्तरशतनामावलिः॥

शिवाय नमः महेश्वराय नमः

शम्भव नमः

पिनाकिने नमः

| शशिशेखराय नमः       |     | परशुहस्ताय नमः           |    |
|---------------------|-----|--------------------------|----|
| वामदेवाय नमः        |     | मृगपाणये नमः             |    |
| विरूपाक्षाय नमः     |     | जंटाधराय नमः             |    |
| कपर्दिने नमः        |     | कैलासवासिने नमः          |    |
| नीललोहिताय नमः      |     | कवचिने नमः               |    |
| शङ्कराय नमः         | १०  | कठोराय नमः               |    |
| शूलपाणिने नमः       |     | त्रिपुरान्तकाय नमः       |    |
| खट्वाङ्गिने नमः     |     | वृषाङ्काय नमः            |    |
| विष्णुवं सभाय नमः   |     | वृषभारूढाय नमः           | ४० |
| शिपिविष्टाय नमः     |     | भस्मोद्धृलितविग्रहाय नमः |    |
| अम्बिकानाथाय नमः    |     | सामप्रियाय नमः           |    |
| श्रीकण्ठाय नमः      |     | स्वरमयाय नमः             |    |
| भक्तवत्सलाय नमः     |     | त्रयीमूर्तये नमः         |    |
| भवाय नमः            |     | अनीश्वराय नमः            |    |
| शर्वाय नमः          |     | सर्वज्ञाय नमः            |    |
| त्रिलोकेशाय नमः     | २०  | परमात्मने नमः            |    |
| शितिकण्ठाय नमः      |     | सोमसूर्याग्निलोचनाय नमः  |    |
| शिवाप्रियाय नमः     |     | हविषे नमः                |    |
| उग्राय नमः          |     | यज्ञमयाय नमः             | ५० |
| कपालिने नमः         |     | सोमाय नमः                |    |
| कामारये नमः         |     | पश्चवऋाय नमः             |    |
| अन्धकासुरसूदनाय नमः |     | सदाशिवाय नमः             |    |
| गङ्गाधराय नमः       |     | विश्वेश्वराय नमः         |    |
| ललाटाक्षाय नमः      |     | वीरभद्राय नमः            |    |
| कालकालाय नमः        |     | गणनाथाय नमः              |    |
| कृपानिधये नमः       | 3 o | प्रजापतये नमः            |    |
| भीमाय नमः           |     | हिरण्यरेतसे नमः          |    |
|                     |     |                          |    |
|                     |     |                          |    |

| दुर्धर्षाय नमः     |    | अनेकात्मने नमः    |     |
|--------------------|----|-------------------|-----|
| गिरीशाय नमः        | ६० | सात्त्विकाय नमः   |     |
| गिरिशाय नमः        |    | शुद्धविग्रहाय नमः |     |
| अनघाय नमः          |    | शाश्वताय नमः      |     |
| भुजङ्गभूषणाय नमः   |    | खण्डपरशवे नमः     |     |
| भगीय नमः           |    | अजाय नमः          |     |
| गिरिधन्वने नमः     |    | पाशविमोचकाय नमः   | ९०  |
| गिरिप्रियाय नमः    |    | मृडाय नमः         |     |
| कृत्तिवाससे नमः    |    | पशुपतये नमः       |     |
| पुरारातये नमः      |    | देवाय नमः         |     |
| भगवते नमः          |    | महादेवाय नमः      |     |
| प्रमथाधिपाय नमः    | ७० | अव्ययाय नमः       |     |
| मृत्युञ्जयाय नमः   |    | हरये नमः          |     |
| सूक्ष्मतनवे नमः    |    | पूषदन्तभिदे नमः   |     |
| जगद्यापिने नमः     |    | अव्यग्राय नमः     |     |
| जगद्गुरवे नमः      |    | दक्षाध्वरहराय नमः |     |
| व्योमकेशाय नमः     |    | हराय नमः          | १०० |
| महासेनजनकाय नमः    |    | भगनेत्रभिदे नमः   |     |
| चारुविक्रमाय नमः   |    | अव्यक्ताय नमः     |     |
| रुद्राय नमः        |    | सहस्राक्षाय नमः   |     |
| भूतपतये नमः        |    | सहस्रपदे नमः      |     |
| स्थाणवे नमः        | ८० | अपवर्गप्रदाय नमः  |     |
| अहये बुध्र्याय नमः |    | अनन्ताय नमः       |     |
| दिगम्बराय नमः      |    | तारकाय नमः        |     |
| अष्टमूर्तये नमः    |    | परमेश्वराय नमः    |     |
|                    | '  |                   |     |

॥इति शाक्तप्रमोदे श्री शिवाष्टोत्तरशतनामाविलः सम्पूर्णा॥

### ॥ उत्तराङ्ग-पूजा॥

विज्यं धर्नुः कप्रदिनो विशंल्यो बार्णवा । उत्। अनेशन्नस्येषंव आभुरंस्य निषुङ्गर्थिः॥ ॐ हीं नुमः शिवाये। बलाय नर्मः। धूपमाघ्रापयामि॥१२॥

या तें हेतिर्मीं ढुष्टम् हस्तें बुभूवं ते धर्नुः। तयाऽस्मान् विश्वतस्त्वमंयुक्ष्मया परिन्युज॥ ॐ हीं नृमः शिवायं। बलंप्रमथनाय नर्मः। अलङ्कारदीपं सन्दर्शयामि॥१३॥

ॐ भूर्भुवः सुवंः। + ब्रह्मणे स्वाहाँ। नमंस्ते अस्त्वायुंधायानांतताय धृष्णवेँ। उभाभ्यांमुत ते नमों बाहुभ्यां तव धन्वंने॥ ॐ हीं नमः शिवायं। सर्वभूतदमनाय नमंः। () निवेदयामि। मध्ये मध्ये अमृतपानीयं समर्पयामि। अमृतापिधानमसि।

हस्तप्रक्षालनं समर्पयामि। पादप्रक्षालनं समर्पयामि। निवेदनानन्तरम् आचमनीयं समर्पयामि॥१४॥

परिं ते धन्वनो हेतिरस्मान्वृंणक्त विश्वतः। अथो य इंषुधिस्तवाऽऽरे अस्मन्नि धेहि तम्॥ ॐ हीं नमः शिवायं। मनोन्मनाय नमः। कर्प्रताम्बूलं समर्पयामि॥१५॥

नर्मस्ते अस्तु भगवन् विश्वेश्वरायं महादेवायं त्र्यम्बकायं त्रिपुरान्तकायं त्रिकाग्निकालायं कालाग्निरुद्रायं नीलकुण्ठायं मृत्युञ्जयायं सर्वेश्वरायं सदाशिवायं श्रीमन्महादेवाय नर्मः॥ कर्पूरनीराजनं दर्शयामि॥१६॥

#### ॥ रक्षा ॥

बृहथ्सामं क्षत्रभृद्धृद्ध वृंष्णियं त्रिष्टुभौजंः शुभितमुग्रवीरम्। इन्द्रस्तोमेन पश्चद्रशेन मध्यंमिदं वातेन सगरेण रक्ष॥ रक्षां धारयामि॥

#### ॥ नमस्काराः ॥

ॐ भवाय देवाय नमः।

ॐ शर्वाय देवाय नमः।

ॐ ईशानाय देवाय नमः।

ॐ पशुपतये देवाय नमः।

ॐ रुद्राय देवाय नमः।

ॐ उग्राय देवाय नमः।

ॐ भीमाय देवाय नमः।

ॐ महते देवाय नमः॥

ईशानः सर्वविद्यानामिश्वरः सर्वभूतानां ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणोऽधिपतिर्ब्रह्मां शिवो में अस्तु सदिश्वोम्॥ ॐ हीं नमः शिवायं। मन्नपृष्पाञ्जलिं समर्पयामि। शिवाय नमः। रुद्राय नमः। पशुपतये नमः। नीलकण्ठाय नमः। महेश्वराय नमः। हिरकेशाय नमः। विरूपाक्षाय नमः। पिनािकने नमः। त्रिपुरान्तकाय नमः। शम्भवे नमः। शूलिने नमः। महादेवाय नमः। इति द्वादशनामिभद्वादशपृष्पाञ्जलीन् दत्त्वा॥

प्रदक्षिणनमस्कारान् कृत्वा॥

### ॥ अर्घ्यप्रदानम्॥

ममोपात्त समस्तदुरितक्षयद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थम् शिवरात्रौ प्रथम-याम-पूजान्ते क्षीरार्घ्यप्रदानं करिष्ये॥

> शिवरात्रिव्रतं देव पूजाजपपरायणः। करोमि विधिवद्दत्तं गृहाणार्घ्यं नमोऽस्तुते॥

इत्यर्घ्यं दत्त्वा।

नमः शिवाय शान्ताय सर्वपापहराय च। शिवरात्रौ मया दत्तं गृहाणार्घ्यं मम प्रभो॥१॥

### ॥ पूजानिवेदनम्॥

नमो यज्ञजगन्नाथ नमस्त्रिभुवनेश्वर। पूजां गृहाण मे दत्तां महेश प्रथमे पदे॥१॥

यत्किश्चित् कुर्महे देव सदा सुकृतदुष्कृतम्। तन्मे शिवपदस्थस्य भुङ्क्ष क्षपय शङ्कर॥

शिवो दाता शिवो भोक्ता शिवः सर्वमिदं जगत्। शिवो जयति सर्वत्र यः शिवः सोऽहमेव हि॥

इति प्रार्थ्य॥

देवहृदयस्थं पादस्थं च पुष्पमादाय प्रणम्य देवेन दत्तमिति ध्यात्वा॥

प्रपन्नं पाहि मामीश भीतमृत्युमहार्णवात्। त्वयोपभुक्त-स्रग्-गन्ध-वासो-लङ्कार-चर्चिताः। उच्छिष्टभोजिनो दासास्तव मायां जयेम हि॥

इति मूर्प्रि धृत्वा॥

मन्नहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं महेश्वर। यत्कृतं तु मया देव परिपूर्णं तदस्तु ते॥

अनेन पूजनेन साम्बसदाशिवः प्रीयताम्।

कायेन वाचा मनसेन्द्रियैर्वा बुद्ध्याऽऽत्मना वा प्रकृतेः स्वभावात्। करोमि यद्यत् सकलं परस्मै नारायणायेति समर्पयामि॥

ॐ तत्सद्ब्रह्मार्पणमस्तु।

## ॥ प्रधान-पूजा - साम्ब-परमेश्वर-पूजा (द्वितीय-यामः)॥

शुक्राम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्। प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविद्रोपशान्तये॥

प्राणान् आयम्य। ॐ भूः + भूर्भुवः सुव्रोम्।

ममोपात्तसमस्तदुरितक्षयद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं शुभे शोभने मुहूर्ते अद्यब्रह्मणः द्वितीयपरार्द्धे श्वेतवराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे किलयुगे प्रथमे पादे जम्बूद्वीपे भारतवर्षे भरतखण्डे मेरोः दक्षिणेपार्श्वे शकाब्दे अस्मिन् वर्तमाने व्यावहारिकणां प्रभवादि षष्ट्याः संवत्सराणां मध्ये () व्यावहारिकणां प्रभवादि षष्ट्याः संवत्सराणां मध्ये () व्यावह्यां/चतुर्दश्यां शुभितथौ (इन्दु / भौम / बुध / गुरु / भृगु / स्थिर / भानु) वासरयुक्तायाम् () व्यावश्याम् अस्याम् (त्र्योदश्यां/चतुर्दश्यां) शुभितथौ अस्माकं सहकुटुम्बानां क्षेमस्थैर्य-धैर्य-वीर्य-विजय आयुरारोग्य ऐश्वर्याभिवृद्धार्थम् धर्मार्थकाममोक्षचतुर्विधफलपुरुषार्थसिद्धार्थं पुत्रपौत्राभिवृद्धार्थम् धर्मार्थकाममोक्षचतुर्विधफलपुरुषार्थसिद्धार्थं पुत्रपौत्राभिवृद्धार्थम् इष्टकाम्यार्थसिद्धार्थम् मम इहजन्मनि पूर्वजन्मिन जन्मान्तरे च सम्पादितानां ज्ञानाज्ञानकृतमहापातकचतुष्टय व्यतिरिक्तानां रहस्यकृतानां प्रकाशकृतानां सर्वेषां पापानां सद्य अपनोदनद्वारा सकल पापक्षयार्थं शिवरात्रौ श्री-साम्ब-परमेश्वर-प्रीत्यर्थं द्वितीय-यामपूजां करिष्ये।

## ॥ षोडशोपचारपूजा॥

ध्यायेन्नित्यं महेशं रजतगिरिनिभं चारुचन्द्रावतंसम् रत्नाकल्पोञ्चलाङ्गं परशुमृगवराभीतिहस्तं प्रसन्नम्। पद्मासीनं समन्तात् स्तुतममरगणैर्व्याघ्रकृत्तिं वसानम् विश्वाद्यं विश्वबीजं निखिलभयहरं पञ्चवऋं त्रिनेत्रम्॥

<sup>&</sup>lt;sup>३६</sup>पृष्टं ५७२ पश्यताम्

<sup>&</sup>lt;sup>३७</sup>पृष्टं ५७३ पश्यताम्

३८ पृष्टं ५७४ पश्यताम्

अस्मिन् बिम्बे श्री-साम्ब-परमेश्वरं ध्यायामि।

नर्मस्ते रुद्र मृन्यवं उतो त् इषंवे नर्मः। नर्मस्ते अस्तु धन्वंने बाहुभ्यांमुत ते नर्मः॥ ॐ हीं नमः शिवायं। सद्योजातं प्रंपद्यामि।

या त इषुं शिवतंमा शिवं बुभूवं ते धर्नुः। शिवा शंरव्यां या तव तयां नो रुद्र मृडय॥ ॐ हीं नुमः शिवायं। सुद्योजाताय वै नमो नर्मः। आसनं समर्पयामि॥२॥

या ते रुद्र शिवा तुनूरघोराऽपांपकाशिनी। तयां नस्तुनुवा शन्तंमया गिरिंशन्ताभिचांकशीहि॥ ॐ हीं नुमः शिवायं। भवे भवे नातिं भवे भवस्व माम्। पादयोः पाद्यं समर्पयामि॥३॥

यामिषुं गिरिशन्त हस्ते बिभुष्यस्तेव। शिवां गिरित्र तां कुरु मा हि सीः पुरुषं जगत्॥ ॐ हीं नमः शिवाय। भ्वोद्भवाय नमः॥ अर्घ्यं समर्पयामि॥४॥ शिवेन वर्चसा त्वा गिरिशाच्छांवदामिस। यथां नः सर्विमिञ्जगंदयक्ष्म स् सुमना असंत्॥ ॐ हीं नमः शिवाय। वामदेवाय नमः। आचमनीयं समर्पयामि॥५॥ अध्यंवोचदिधवृक्ता प्रंथमो दैव्यों भिषक्। अही ईश्च सर्वांश्चम्भय-न्थ्सर्वाश्च यातुधान्यः॥ ॐ हीं नमः शिवाय। ज्येष्ठाय नमः। मधुपर्कं समर्पयामि॥६॥ असौ यस्ताम्रो अरुण उत बुभुः सुमङ्गलंः। ये चेमा रुद्रा अभितों दिक्षु श्रिताः सहस्रशोऽवेषा हेर्ड ईमहे॥ ॐ हीं नमः शिवाय। श्रेष्ठाय नमः। स्नानं समर्पयामि।

### ॥ महान्यासः ॥

### ॥पञ्चाङ्गरुद्रन्यासः रावणोक्ता पञ्चाङ्गप्रार्थना-सहितम्॥

ओङ्कारमन्नसंयुक्तं नित्यं ध्यायन्ति योगिनः। कामदं मोक्षदं तस्मै नकाराय नमो नमः॥१॥ नर्मस्ते रुद्र मृन्यवं उतो त् इषंवे नर्मः। नर्मस्ते अस्तु धन्वंने बाहुभ्यांमुत ते नर्मः॥ या त् इषुः शिवतंमा शिवं बभूवं ते धर्नुः। शिवा शंर्व्यां या तव तयां नो रुद्र मृडय॥

(EAST)

कं खं गं घं ङं। यरलवशषसहोम्। ॐ नमो भगवर्ते रुद्राय। पूर्वाङ्गरुद्राय नमः।

> महादेवं महात्मानं महापातकनाशनम्। महापापहरं वन्दे मकाराय नमो नमः॥२॥

अपैतु मृत्युर्मृतंं न आगंन्वैवस्वतो नो अभयं कृणोतु। पूर्णं वनस्पतेरिवाभिनः शीयता र रियः स चं तान्नः शचीपितः।

(SOUTH)

चं छं जं झं ञं। यरलवशषसहोम्। ॐ नमो भगवते रुद्राय। दक्षिणाङ्गरुद्राय नमः।

> शिवं शान्तं जगन्नाथं लोकानुग्रहकारणम्। शिवमेकं परं वन्दे शिकाराय नमो नमः॥३॥

ॐ। निधंनपतये नमः। निधंनपतान्तिकाय नमः। ऊर्ध्वाय नमः। ऊर्ध्वालङ्गाय नमः। हिरण्याय नमः। हिरण्यालङ्गाय नमः। सुवर्णाय नमः। सुवर्णालङ्गाय नमः। स्वर्णाय नमः। स्वर्णालङ्गाय नमः। विव्यातिङ्गाय नमः। भवाय नमः। भवितङ्गाय नमः। शर्वाय नमः। शर्वातिङ्गाय नमः। शिवाय नमः। शिवतिङ्गाय नमः। ज्वलाय नमः। ज्वलिङ्गाय नमः। आत्माय नमः। आत्मिलङ्गाय नमः। परमाय नमः। परमिलङ्गाय नमः। एतथ्सोमस्यं सूर्यस्य सर्विङ्गायं स्थाप्यति पाणिमन्नं पवित्रम्।

(WEST)

टं ठं डं ढं णं। यरलवशषसहोम्। ॐ नमो भगवर्ते रुद्राय। पश्चिमाङ्गरुद्राय नमः। वाहनं वृषभो यस्य वासुिकः कण्ठभूषणम्। वामे शक्तिधरं वन्दे वकाराय नमो नमः॥४॥

यो रुद्रो अग्नौ यो अपसु य ओषंधीषु यो रुद्रो विश्वा भुवंनाऽऽविवेश तस्मैं रुद्राय नमों अस्तु॥

(NORTH)

तं थं दं धं नं। यरलवशषसहोम्। ॐ नमो भगवते रुद्राय। उत्तराङ्गरुद्राय नमः।

यत्र कुत्र स्थितं देवं सर्वव्यापिनमीश्वरम्। यिलक्षः पूजयेत्रित्यं यकाराय नमो नमः॥५॥

प्राणानां ग्रन्थिरसि रुद्रो मां विशान्तकः। तेनान्नेनांप्यायुस्व॥ नमो रुद्राय विष्णवे मृत्युंर्मे पाहि।

(UPWARDS)

पं फं बं भं मं। यरलवशषसहोम्। ॐ नमो भगवते रुद्राय। ऊर्ध्वाङ्गरुद्राय नमः।



## ॥ पञ्चाङ्गमुखन्यासः रावणोक्ता पञ्चमुखप्रार्थना-सहितम्॥

तत्पुरुषाय विद्महे महादेवायं धीमहि। तन्नों रुद्रः प्रचोदयाँत्॥

संवर्ताग्नि-तटित्प्रदीप्त-कनक-प्रस्पर्धि-तेजोरुणम् गम्भीरध्वनि-सामवेदजनकं ताम्राधरं सुन्दरम्। अर्धेन्दुद्युति-लोल-पिङ्गल-जटाभार-प्रबोद्धोदकम् वन्दे सिद्धसुरासुरेन्द्रनमितं पूर्वं मुखं शूलिनः॥

ॐ नमो भगवते रुद्राय। पूर्वाङ्गमुखाय नमः। (EAST)

अघोरैभ्योऽथ् घोरैभ्यो घोरघोरंतरेभ्यः। सर्वैभ्यः सर्वशर्वेभ्यो नमस्ते अस्तु रुद्ररूपेभ्यः॥

कालाभ्रभ्रमराञ्जन-द्युतिनिभं व्यावृत्तपिङ्गेक्षणम् कर्णोद्धासित-भोगिमस्तकमणि-प्रोद्धिन्नदंष्ट्राङ्कुरम्। सर्पप्रोतकपाल-शुक्तिशकल-व्याकीर्णताशेखरम् वन्दे दक्षिणमीश्वरस्य वदनं चाथर्वनादोदयम्॥

ॐ नमो भगवते रुद्राय। दक्षिणाङ्गमुखाय नमः। (SOUTH)

सद्योजातं प्रंपद्यामि सद्योजाताय वै नमो नर्मः। भवे भवे नाति भवे भवस्व माम्। भवोद्भवाय नर्मः॥

प्रालेयाचलिमन्दुकुन्द-धवलं गोक्षीरफेनप्रभम् भस्माभ्यङ्गमनङ्गदेहदहन-ज्वालावली-लोचनम् । विष्णु-ब्रह्म-मरुद्गणाचितपदं ऋग्वेदनादोदयम् वन्देऽहं सकलं कलङ्करहितं स्थाणोर्मुखं पश्चिमम्॥

🕉 नमो भगवतें रुद्राय। पश्चिमाङ्गमुखाय नमः। (WEST)

वामदेवाय नर्मों ज्येष्ठाय नर्मः श्रेष्ठाय नर्मो रुद्राय नमः कालाय नमः कलेविकरणाय नमो बलंविकरणाय नमो बलाय नमो बलंप्रमथनाय नमः सर्वभूतदमनाय नर्मो मुनोन्मनाय नर्मः॥

गौरं कुङ्कमपङ्कितं सुतिलकं व्यापाण्डुमण्डस्थलम् भूविक्षेप-कटाक्षवीक्षण-लसत्-संसक्तकर्णोत्पलम्। स्निग्धं बिम्बफलाधरं प्रहसितं नीलालकालङ्कृतम् वन्दे याजुषवेदघोषजनकं वऋं हरस्योत्तरम्॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय। उत्तराङ्गमुखाय नमः। (NORTH)

ईशानः सर्वविद्यानामीश्वरः सर्वभूतानां ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणोऽधिपतिर्ब्रह्मां शिवो में अस्तु सदाशिवोम्॥

> व्यक्ताव्यक्तनिरूपितं च परमं षट्टिंशतत्त्वाधिकम् तस्मादुत्तर-तत्त्वमक्षरमिति ध्येयं सदा योगिभिः। ओङ्कारादि समस्तमन्नजनकं सूक्ष्मातिसूक्ष्मं परम् वन्दे पश्चममीश्वरस्य वदनं खव्यापि तेजोमयम्॥

ॐ नमो भगवते रुद्राय। ऊर्ध्वाङ्गमुखाय नमः। (UPWARDS)

## ॥ केशादिपादान्त (प्रथमो) न्यासः॥

या ते रुद्र शिवा त्नूरघोराऽपांपकाशिनी।
तयां नस्तुन्त् शन्तंमया गिरिशन्ताभिचांकशीहि॥
शिखाये नमः॥ (TUFT)
अस्मिन् मंहृत्यंण्वें उन्तरिक्षे भवा अधि।
तेषा ५ सहस्रयोजनेऽवधन्वांनि तन्मसि॥
शिरसे नमः॥ (TOP OF HEAD)
सहस्रांणि सहस्रशो ये रुद्रा अधि भूम्यांम्।
तेषा ५ सहस्रयोजनेऽवधन्वांनि तन्मसि॥
ललाटाय नमः॥ (FOREHEAD)
हु ५ सः श्रुंचिषद्वसुंरन्तरिक्षसद्धोतां वेदिषदितिंथिर्दुरोण्सत्।
नृषद्वंर्सदंत्सद्धोमसद्जा गोजा ऋत्जा अद्रिजा ऋतं बृहत्॥
भ्रवोर्मध्याय नमः॥ (MIDDLE OF EYEBROWS)
त्र्यंम्बकं यजामहे सुग्न्धं पृष्टिवर्धनम्।

उर्वारुकिमेव बन्धेनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतांत्॥

नेत्राभ्यां नमः॥ (EYES)

नमः स्रुत्याय च पथ्याय च नमः काट्याय च नीप्याय च नमः सूद्याय च सर्स्याय च नमो नाद्यायं च वैश्वन्तायं च। कर्णाभ्यां नमः॥ (EARS)

मा नंस्तोके तनेये मा न आयुंषि मा नो गोषु मा नो अश्वेष रीरिषः। वीरान्मा नो रुद्र भामितोऽवंधीर्ह्विष्मंन्तो नमंसा विधेम ते॥ नासिकायै<sup>३९</sup> नमः॥ (NOSE)

अवृतत्य धनुस्त्व सहंस्राक्ष शतेंषुधे॥

निशीर्यं श्ल्यानां मुखां शिवो नः सुमनां भव। मुखाय नमः॥ (FACE)

नीलंग्रीवाः शितिकण्ठाः शूर्वा अधः, क्षंमाचराः। तेषार् सहस्रयोजनेऽवधन्वांनि तन्मसि॥ कण्ठाय नमः॥ (NECK)

नीलंग्रीवाः शितिकण्ठा दिवर् रुद्रा उपश्रिताः। तेषार् सहस्रयोजनेऽवधन्वांनि तन्मसि॥ उपकण्ठाय नमः॥ (LOWER NECK)

नमंस्ते अस्त्वायुंधायानांतताय धृष्णवें। उभाभ्यांमुत ते नमों बाहुभ्यां तव धन्वंने॥ बाहभ्यां नमः॥ (SHOULDERS)

या ते हेतिर्मीं दुष्टम् हस्ते बुभूवं ते धर्नुः। तयाऽस्मान् विश्वतस्त्वमंयक्ष्मया परिब्भुज॥ उपबाहुभ्यां नमः॥ (ELBOW TO WRIST)

परिं णो रुद्रस्यं हेतिर्वृणक्तु परिं त्वेषस्यं दुर्मतिरंघायोः।

<sup>&</sup>lt;sup>३९</sup>नासिकाभ्यां

अवं स्थिरा मुघवंद्र्यस्तनुष्व मीढंस्तोकाय तनयाय मृडय॥ मणिबन्धाभ्यां नमः॥ (WRISTS) ये तीर्थानि प्रचरन्ति सृकावंन्तो निष्क्षिणंः।

तेषा १ सहस्रयोजने ऽव्धन्वानि तन्मसि॥ हस्ताभ्यां नमः॥ (HANDS)

सद्योजातं प्रंपद्यामि सद्योजाताय वै नमो नर्मः। भवे भवे नातिं भवे भवस्व माम्। भवोद्भवाय नर्मः॥

अङ्गष्टाभ्यां नमः॥ (ROLL RING FINGERS ON THUMBS)

वामुदेवाय नमों ज्येष्ठाय नमें श्रेष्ठाय नमों रुद्राय नमः कालाय नमः कलविकरणाय नमो बलविकरणाय नमो बलप्रमथनाय नमः

सर्वभूतदमनाय नमों मुनोन्मंनाय नमः॥

तर्जनीभ्यां नमः॥ (ROLL THUMBS ON INDEX FINGERS)

अघोरैभ्योऽथ घोरैभ्यो घोरघोरंतरेभ्यः।

सर्वेभ्यः सर्वशर्वेभ्यो नर्मस्ते अस्तु रुद्ररूपेभ्यः॥

मध्यमाभ्यां नमः॥ (ROLL THUMBS ON MIDDLE FINGERS)

तत्पुरुषाय विदाहें महादेवायं धीमहि।

तन्नों रुद्रः प्रचोदयाँत्॥

अनामिकाभ्यां नमः॥ (ROLL THUMBS ON RING FINGERS)

ईशानः सर्वविद्यानामीश्वरः सर्वभूतानां ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणोऽधिपतिर्ब्रह्मां शिवो में अस्त सदाशिवोम्॥

किनिष्ठिकाभ्यां नमः॥ (ROLL THUMBS ON LITTLE FINGERS)

नमो हिरण्यबाहवे हिरण्यवर्णाय हिरण्यरूपाय हिरण्यपतयेऽम्बिकापतय उमापतये पशुपतये नमो नमः॥

करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः॥(RUB PALMS OVER ONE ANOTHER, FRONT AND BACK)

नमों वः किरिकेभ्यों देवाना १ हृदयेभ्यः॥ हृदयाय नमः॥ (HEART)

नमों गुणेभ्यों गुणपंतिभ्यश्च वो नमः॥ पृष्ठाय नमः॥ (BACK)

नमुस्तक्षंभ्यो रथकारेभ्यंश्च वो नमंः॥

कक्षाभ्यां नमः॥ (ARMPIT TO WAIST)

नमो हिरंण्यबाहवे सेनान्यें दिशां च पतंये नर्मः॥ पार्श्वाभ्यां नमः॥ पार्वाभ्यां नमः॥ पार्व्यां नमः॥ पार्वाभ्यां नमः॥ पार्वाभयं नम

विज्यं धर्नुः कप्रदिनो विशंल्यो बार्णवा र उत। अनेशन्नस्येषंव आभुरस्य निष्क्षथिः॥ जठराय नमः॥ (STOMACH)

हिर्ण्यगर्भः समंवर्तताग्रं भूतस्यं जातः पित्रेकं आसीत्। सर्दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मैं देवायं हिवषां विधेम॥

नाभ्यै नमः॥ (NAVEL)

मीढुंष्टम् शिवंतम शिवो नंः सुमनां भव। पुरमे वृक्ष आयुंधं निधाय कृत्तिं वसान् आ चंरु पिनांकं बिभ्रदा गंहि॥ कट्यै नमः॥ (WAIST)

ये भूतानामधिपतयो विशिखासः कप्रदिनः। तेषारं सहस्रयोज्नेऽवधन्वानि तन्मसि॥ गुह्याय नमः॥ (UPPER REPRODUCTIVE ORGANS)

ये अन्नेषु विविध्यंन्ति पात्रेषु पिबंतो जनान्। तेषा १ सहस्रयोजनेऽवधन्वानि तन्मसि॥ अण्डाभ्यां नमः॥ (LOWER REPRODUCTIVE ORGANS)

स शिरा जातवेदा अक्षरं पर्मं प्दम्।

वेदांना १ शिरंसि माता आयुष्मन्तं करोतु माम्॥ अपानाय नमः॥ (ANUS)

मा नो महान्तंमुत मा नो अर्भकं मा न उक्षंन्तमुत मा ने उक्षितम्। मा नो वधीः पितर्ं मोत मातरं प्रिया मा नंस्तुन्वो रुद्र रीरिषः॥ ऊरुभ्यां नमः॥ (THIGHS)

एष ते रुद्रभागस्तं ज्ञंषस्व तेनांवसेनं पुरो मूर्जंवतोऽतीृह्यवंततधन्वा पिनांकहस्तः कृतिंवासाः॥ जानुभ्यां नमः॥ (KNEES)

स्रमृष्ट्रजिथ्सोम्पा बांहुश्ध्यूर्ध्वधंन्वा प्रतिहिताभिरस्ता। बृहंस्पते परिदीया रथेन रक्षोहाऽमित्रा अपबाधंमानः॥ जङ्गाभ्यां नमः॥ (KNEE TO ANKLES)

विश्वं भूतं भुवंनं चित्रं बंहुधा जातं जायंमानं च यत्। सर्वो ह्येष रुद्रस्तस्मै रुद्राय नमो अस्तु॥ गुल्फाभ्यां नमः॥ (ANKLES)

ये पृथां पंथिरक्षंय ऐलबृदा यृव्युधंः। तेषार्ं सहस्रयोजनेऽवधन्वांनि तन्मसि॥ पादाभ्यां नमः॥ (FEET)

अध्यंवोचदिधवृक्ता प्रंथमो दैव्यो भिषक्। अही ईश्च सर्वीञ्जम्भय-न्थ्सर्वीश्च यातुधान्यंः॥

कवचाय हुम्॥ (CROSS HANDS ACROSS CHEST WITH TIPS OF FINGERS TOUCHING SHOULDERS)

नमों बिल्मिने च कव्चिने च नमेः श्रुतायं च श्रुतस्नायं च॥ उपकवचाय हुम्॥ (REPEAT THE ABOVE AT ELBOW LEVEL)

नमों अस्तु नीलंग्रीवाय सहस्राक्षायं मीढुषें।

अथो ये अस्य सत्वानोऽहं तेभ्योऽकरं नर्मः॥ नेत्रत्रयाय वौषट्॥ (TOUCH INDEX, MIDDLE, RING FINGERS ACROSS THE THREE EYES)

प्र मुंश्च धन्वंनस्त्वमुभयोरार्हियोर्ज्याम्। याश्चं ते हस्त इषंवः परा ता भंगवो वप॥ अस्त्राय फट्॥ (SLAP INDEX AND MIDDLE FINGERS OF RIGHT HAND ON LEFT PALM) य पुतावंन्तश्च भूया ५ सश्च दिशों रुद्रा वितस्थिरे। तेषा ५ सहस्रयोजनेऽवधन्वांनि तन्मसि॥ इति दिग्बन्धः॥ (SNAP MIDDLE AND THUMB WITH CLICKING SOUNDS AROUND SELF)

## ॥ मूर्घादिपादान्त दशाक्षरी दशाङ्ग (द्वितीयो) न्यासः॥

ॐ मूर्प्ने नमः। नं नासिकाय<sup>४°</sup> नमः। मों ललाटाय नमः। भं मुखाय नमः। गं कण्ठाय नमः। वं हृदयाय नमः। तें दक्षिणहस्ताय नमः। रुं वामहस्ताय नमः। द्रां नाभ्यै नमः। यं पादाभ्यां नमः।

## ॥ पादादिमूर्घान्त पश्चाङ्ग (तृतीयो) न्यासः॥

सद्योजातं प्रंपद्यामि सद्योजाताय वै नमो नर्मः।
भवे भवे नाति भवे भवस्व माम्। भवोद्भवाय नर्मः॥
पादाभ्यां नमः॥
वाम्देवाय नर्मों ज्येष्ठाय नर्मः श्रेष्ठाय नर्मो रुद्राय नमः कालाय नमः
कलविकरणाय नमो बलविकरणाय नमो बलाय नमो बलप्रमथनाय नमः
सर्वभूतदमनाय नर्मो मनोन्मनाय नर्मः॥
ऊरुभ्यां नमः॥

<sup>&</sup>lt;sup>४°</sup>नासिकाभ्यां

अघोरैभ्योऽथ घोरैभ्यो घोरघोरंतरेभ्यः।

सर्वेभ्यः सर्वशर्वेभ्यो नर्मस्ते अस्तु रुद्ररूपेभ्यः॥

हृदयाय नमः॥

तत्पुरुषाय विद्महें महादेवायं धीमहि।

तन्नों रुद्रः प्रचोदयाँत्॥

मुखाय नमः॥

ईशानः सर्वविद्यानामीश्वरः सर्वभूतानां ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणोऽधिपतिर्ब्रह्मां शिवो में अस्तु सदाशिवोम्॥ हंस हंस मुर्फ्ने नमः॥



### ॥ हंसगायत्री ॥

अस्य श्री हंसगायत्री महामन्त्रस्य। अव्यक्त परब्रह्म ऋषिः। अव्यक्त गायत्री छन्दः। परमहंसो देवता॥ हंसां बीजम्। हंसीं शक्तिः। हंसूं कीलकम्॥ परमहंस-प्रसाद-सिद्धार्थे जपे विनियोगः॥

हंसां अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। हंसीं तर्जनीभ्यां नमः। हंसूं मध्यमाभ्यां नमः। हंसैं अनामिकाभ्यां नमः। हंसौं किनिष्ठिकाभ्यां नमः। हंसः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः। हंसां हृदयाय नमः। हंसीं शिरसे स्वाहा। हंसूं शिखाये वषट्। हंसैं कवचाय हुम्। हंसौं नेत्रत्रयाय वौषट्। हंसः अस्त्राय फट्। भूभ्वस्सुवरोम् इति दिग्बन्धः॥

#### **॥ध्यानम्॥**

गमागमस्थं गमनादिशून्यं चिद्रूपदीपं तिमिरापहारम्। पश्यामि ते सर्वजनान्तरस्थं नमामि हंसं परमात्मरूपम्॥ हंसहंसात् परमहंसः सोऽहं हंसः॥ हुंस् हुंसायं विद्महें परमहुंसायं धीमहि। तन्नों हंसः प्रचोदयाँत्॥

(एवं त्रिः)

हंस हंसेति यो ब्रूयाद्धंसो नाम सदाशिवः। एवं न्यासविधिं कृत्वा ततः सम्पुटमारभेत्॥

\*\*\*

### ॥दिक् सम्पुटन्यासः॥

ॐ भूर्भुवः सुवरोम्।

[ॐ] लं। त्रातार्मिन्द्रंमिवतार्मिन्द्र हवेहवे सुहव शूर्मिन्द्रम्।

हुवे नु शुक्रं पुंरुहूतिमन्द्रई स्वस्ति नों मुघवां धात्विन्द्रंः॥

[ॐ] लं भूर्भुवः सुर्वः। इन्द्राय वज्रहस्ताय सुराधिपतय ऐरावतवाहनाय साङ्गाय सायुधाय सशक्तिपरिवाराय सर्वालङ्कारभूषिताय उमामहेश्वरपार्षदाय नमः।

पूर्वदिग्भागे ललाटस्थाने लं इन्द्राय नमः। इन्द्रः सुप्रीतो वरदो भवतु॥ [इन्द्रः संरक्षतु॥]

ॐ भूर्भुवः सुवरोम्।

[नं] रं। त्वन्ने अग्ने वर्रणस्य विद्वान् देवस्य हेडोऽवं यासिसीष्ठाः।

यजिष्ठो वहितमः शोश्चानो विश्वा द्वेषा १सि प्रमुंमुग्ध्यस्मत्॥

[नं] रं भूर्भुवः सुर्वः। अग्नये शक्तिहस्ताय तेजोऽधिपतयेऽजवाहनाय साङ्गाय सायुधाय सशक्तिपरिवाराय सर्वालङ्कारभूषिताय उमामहेश्वरपार्षदाय नमः।

आग्नेयदिग्भागे नेत्रयोः स्थाने रं अग्नये नमः। अग्निः सुप्रीतो वरदो भवतु॥ [अग्निः संरक्षत्॥]॥२॥

ॐ भूर्भुवः सुवरोम्।

[मों] हं। सुगं नः पन्थामभयं कृणोतु। यस्मिन्नक्षेत्रे यम एति राजाँ।

यस्मिन्नेनम्भ्यिषिश्चन्त देवाः। तदंस्य चित्र र ह्विषां यजाम॥

[मों] हं भूर्भुवः सुवंः। यमाय दण्डहस्ताय धर्माधिपतये महिषवाहनाय साङ्गाय सायुधाय संशक्तिपरिवाराय सर्वालङ्कारभूषिताय उमामहेश्वरपार्षदाय नमः। दक्षिणदिग्भागे कर्णयोः स्थाने हं यमाय नमः। यमः सुप्रीतो वरदो भवतु॥ [यमः संरक्षतु॥] ॥३॥

ॐ भूर्भुवः सुव्रोम्।

[भं] षं। असुन्वन्त्मयंजमानिमच्छ स्तेनस्येत्यां तस्कंर्स्यान्वेषि। अन्यम्स्मिदिंच्छ् सा तं इत्या नमों देवि निर्ऋते तुभ्यमस्तु॥ [भं] षं भूर्भुवः सुवंः। निर्ऋतये खङ्गहस्ताय रक्षोधिपतये नरवाहनाय साङ्गाय सायुधाय संशक्तिपरिवाराय सर्वालङ्कारभूषिताय उमामहेश्वरपार्षदाय नमः। निर्ऋतिदिग्भागे मुखस्थाने षं निर्ऋतये नमः। निर्ऋतिः सुप्रीतो वरदो भवतु॥ [निर्ऋतिः संरक्षतु॥]

ॐ भूर्भुवः सुव्रोम्।

[गं] वं। तत्त्वां यामि ब्रह्मणा वन्दंमान्स्तदा शांस्ते यजंमानो ह्विर्भिः। अहंडमानो वरुणेह बोध्युरुंशरस् मा न् आयुः प्रमोषीः॥ [गं] वं भूर्भुवः सुवंः। वरुणाय पाशहस्ताय जलाधिपतये मकरवाहनाय

साङ्गाय सायुधाय सशक्तिपरिवाराय सर्वालङ्कारभूषिताय उमामहेश्वरपार्षदाय नमः।

पश्चिमदिग्भागे बाह्वोः स्थाने वं वरुणाय नमः। वरुणः सुप्रीतो वरदो भवतु॥ [वरुणः संरक्षतु॥] ॥५॥

ॐ भूर्भुवः सुवरोम्।

[वं] यं। आ नों नियुद्धिः शृतिनींभिरध्वरम्। सहस्त्रिणींभिरुपंयाहि यज्ञम्। वायों अस्मिन् ह्विषिं मादयस्व। यूयं पांत स्वस्तिभिः सदां नः॥ [वं] यं भूर्भुवः सुवंः। वायवे साङ्कुशध्वजहस्ताय प्राणाधिपतये मृगवाहनाय साङ्गाय सायुधाय सशक्तिपरिवाराय सर्वालङ्कारभूषिताय उमामहेश्वरपार्षदाय नमः।

वायव्यदिग्भागे नासिकास्थाने ४१ यं वायवे नमः। वायुः सुप्रीतो वरदो भवतु॥ [वायुः संरक्षतु॥] ॥६॥

ॐ भूर्भुवः सुव्रोम्।

[तें] सं। वय सोम व्रते तर्व। मनस्तनूषु बिभ्रंतः।

प्रजावंन्तो अशीमहि॥

[तें] सं भूर्भृवः सुवंः। सोमाय अमृतकलशहस्ताय नक्षत्राधिपतये अश्ववाहनाय साङ्गाय सायुधाय सशक्तिपरिवाराय सर्वालङ्कारभूषिताय उमामहेश्वरपार्षदाय नमः।

उत्तरिबग्भागे हृदयस्थाने सं सोमाय नमः। सोमः सुप्रीतो वरदो भवतु॥ [सोमः संरक्षतु॥]॥७॥

ॐ भूर्भुवः सुवरोम्।

[रुं] शं। (ऋक्) तमीशाँनुं जर्गतस्तस्थुषुस्पतिम्। धियुं जिन्वमवंसे हूमहे वयम्।

पूषा नो यथा वेदंसामसंद्वृधे रेक्षिता पायुरदंब्यः स्वस्तये॥

[रं] शं भूर्भुवः सुवंः। ईशानाय त्रिशूलहस्ताय भूताधिपतये वृषभवाहनाय साङ्गाय सायुधाय सशक्तिपरिवाराय सर्वालङ्कारभूषिताय उमामहेश्वरपार्षदाय नमः।

ईशानदिग्भागे नाभिस्थाने शं ईशानाय नमः। ईशानः सुप्रीतो वरदो भवतु॥ [ईशानः संरक्षत्॥] ॥८॥

ॐ भूर्भुवः सुवरोम्।

[द्रां] खं। (ऋक्) अस्मे रुद्रा मेहना पर्वतासो वृत्रहत्ये भरंहूतौ सजोषौः। यः शंसते स्तुवते धार्यि पुज्र इन्द्रंज्येष्ठा अस्माँ अवन्तु देवाः॥

[द्रां] खं भूर्भुवः सुवंः। ब्रह्मणे पद्महस्ताय विद्याधिपतये हंसवाहनाय साङ्गाय सायुधाय सशक्तिपरिवाराय सर्वालङ्कारभूषिताय उमामहेश्वरपार्षदाय नमः।

<sup>&</sup>lt;sup>४१</sup>नासिकयोः स्थाने

ऊर्ध्वदिग्भागे मूर्प्निस्थाने खं ब्रह्मणे नमः। ब्रह्मा सुप्रीतो वरदो भवतु॥ [ब्रह्मा संरक्षतु॥]

ॐ भूर्भुवः सुव्रोम्।

[यं] ह्रीं। स्योना पृथिवि भवांऽनृक्षरा निवेशनी।

यच्छोनः शर्म सप्रथाः॥

[यं] हीं भूर्भुवः सुवंः। विष्णवे चऋहस्ताय नागाधिपतये गरुडवाहनाय साङ्गाय सायुधाय संशक्तिपरिवाराय सर्वालङ्कारभूषिताय उमामहेश्वरपार्षदाय नमः। अधोदिग्भागे पादयोः स्थाने हीं विष्णवे नमः। विष्णुः सुप्रीतो वरदो भवतु॥ [विष्णुः संरक्षतु॥]

#### \*\*\*

## ॥ षोडशाङ्गरौद्रीकरणम्॥

ॐ भूर्भुवः सुवंः। नमः शम्भवं च मयोभवं च नमः शङ्करायं च मयस्क्रायं च नमः शिवायं च शिवतंराय च॥

ॐ अं। विभूरंसि प्रवाहंणो रौद्रेणानींकेन पाहि माँउग्ने पिपृहि मा मा मां हि॰सीः॥ अं [ॐ] भूर्भुवः सुवरोम्। शिखास्थाने रुद्राय नमः॥१॥

ॐ भूर्भुवः सुवंः। नर्मः शम्भवं च मयोभवं च नर्मः शङ्करायं च मयस्करायं च नर्मः शिवायं च शिवतराय च॥

ॐ आं। वहिंरिस हब्यवाहंनो रौद्रेणानीकेन पाहि माँऽग्ने पिपृहि मा मा मां हि॰सीः॥ आं [ॐ] भूर्भुवः सुवरोम्। शिरस्थाने रुद्राय नमः॥२॥

ॐ भूर्भुवः सुवंः। नमंः शम्भवे च मयोभवे च नमंः शङ्करायं च मयस्करायं च नमंः शिवायं च शिवतराय च॥

ॐ इं। श्वात्रोंऽसि प्रचेता रौद्रेणानींकेन पाहि माँउग्ने पिपृहि मा मा मां हि॰सीः॥ इं [ॐ] भूर्भुवः सुवरोम्। मूर्प्निस्थाने रुद्राय नमः॥३॥ ॐ भूर्भुवः सुवंः। नमंः शम्भवं च मयोभवं च नमंः शङ्करायं च मयस्करायं च नमंः शिवायं च शिवतंराय च॥

ॐ ईं। तुथोंऽसि विश्ववेदा रौद्रेणानींकेन पाहि माँऽग्ने पिपृहि मा मा मां हि॰सीः॥ ईं [ॐ] भूर्भुवः सुवरोम्। ललाटस्थाने रुद्राय नमः॥४॥

ॐ भूर्भुवः सुवंः। नर्मः शम्भवं च मयोभवं च नर्मः शङ्करायं च मयस्क्रायं च नर्मः शिवायं च शिवतंराय च॥

ॐ उं। उशिर्गिस कवी रौद्रेणानींकेन पाहि माँ ऽग्ने पिपृहि मा मा मां हि श्सीः॥ उं [ॐ] भूर्भुवः सुवरोम्। नेत्रयोः ४२ स्थाने रुद्राय नमः॥५॥

ॐ भूर्भुवः सुवंः। नमंः शम्भवं च मयोभवं च नमंः शङ्करायं च मयस्करायं च नमंः शिवायं च शिवतराय च॥

ॐ ऊं। अङ्घारिरसि बम्भारी रौद्रेणानींकेन पाहि माँउग्ने पिपृहि मा मा मां हि॰सीः॥ ऊं [ॐ] भूर्भुवः सुवरोम्। कर्णयोः स्थाने रुद्राय नमः॥६॥

ॐ भूर्भुवः सुवंः। नमंः शम्भवं च मयोभवं च नमंः शङ्करायं च मयस्करायं च नमंः शिवायं च शिवतंराय च॥

ॐ ऋं। अवस्युरंसि दुवंस्वान् रौद्रेणानींकेन पाहि माँऽग्ने पिपृहि मा मा मां हि॰सीः॥ ऋं [ॐ] भूर्भुवः सुवरोम्। मुखस्थाने रुद्राय नमः॥७॥

ॐ भूर्भुवः सुवंः। नमंः शम्भवं च मयोभवं च नमंः शङ्करायं च मयस्क्रायं च नमंः शिवायं च शिवतंराय च॥ ॐ ऋं। शुन्थ्यूरंसि मार्जालीयो रौद्रेणानींकेन पाहि माँऽग्ने पिपृहि मा मा

मां हिश्सीः॥ ऋं [ॐ] भूर्भुवः सुवरोम्। कण्ठस्थाने रुद्राय नमः॥८॥

ॐ भूर्भुवः सुवंः। नमंः शुम्भवें च मयोभवें च नमंः शङ्करायं च मयस्करायं

<sup>&</sup>lt;sup>४२</sup>भू

च नमः शिवायं च शिवतंराय च॥

ॐ लं। सम्राडंसि कृशानू रौद्रेणानींकेन पाहि माँऽग्ने पिपृहि मा मा मां हि॰सीः॥ लं [ॐ] भूर्भुवः सुवरोम्। बाह्वोः स्थाने रुद्राय नमः॥९॥

ॐ भूर्भुवः सुवंः। नमंः शम्भवं च मयोभवं च नमंः शङ्करायं च मयस्करायं च नमंः शिवायं च शिवतंराय च॥

ॐ ॡं। परिषद्योऽसि पर्वमानो रौद्रेणानींकेन पाहि माँऽग्ने पिपृहि मा मा हि॰सीः॥ ॡं [ॐ] भूर्भुवः सुवरोम्। हृदयस्थाने रुद्राय नमः॥१०॥

ॐ भूर्भुवः सुवंः। नमंः शम्भवं च मयोभवं च नमंः शङ्करायं च मयस्करायं च नमंः शिवायं च शिवतराय च॥

ॐ एं। प्रतक्वांऽसि नर्भस्वान् रौद्रेणानींकेन पाहि माँऽग्ने पिपृहि मा मा मां हि॰सीः॥ एं [ॐ] भूर्भुवः सुवरोम्। नाभिस्थाने रुद्राय नमः॥११॥

ॐ भूर्भुवः सुवंः। नमंः शम्भवें च मयोभवें च नमंः शङ्करायं च मयस्करायं च नमंः शिवायं च शिवतंराय च॥

ॐ ऐं। असंम्मृष्टोऽसि हव्यसूदो रौद्रेणानींकेन पाहि माँऽग्ने पिपृहि मा मा मां हि॰सीः॥ ऐं [ॐ] भूर्भुवः सुवरोम्। कटिस्थाने रुद्राय नमः॥१२॥

ॐ भूर्भुवः सुवंः। नमंः शम्भवं च मयोभवं च नमंः शङ्करायं च मयस्करायं च नमंः शिवायं च शिवतराय च॥

ॐ ॐ। ऋतधांमाऽसि सुवंज्योंती रौद्रेणानींकेन पाहि माँऽग्ने पिपृहि मा मा मां हि॰सीः॥ ॐ [ॐ] भूर्भुवः सुव्रोम्। ऊरुस्थाने रुद्राय नमः॥१३॥

ॐ भूर्भुवः सुवंः। नर्मः शम्भवं च मयोभवं च नर्मः शङ्करायं च मयस्करायं च नर्मः शिवायं च शिवतंराय च॥

ॐ औं। ब्रह्मंज्योतिरसि सुवंधामा रौद्रेणानींकेन पाहि माँ उग्ने पिपृहि मा मा

मां हि॰सीः॥ औं [ॐ] भूर्भुवः सुव्रोम्। जानुस्थाने रुद्राय नमः॥१४॥

ॐ भूर्भुवः सुवंः। नमंः शम्भवं च मयोभवं च नमंः शङ्करायं च मयस्करायं च नमंः शिवायं च शिवतंराय च॥

ॐ अं। अजोंंऽस्येर्कपाद्रौद्रेणानींकेन पाहि माँऽग्ने पिपृहि मा मा मां हि॰सीः॥ अं [ॐ] भूर्भुवः सुवरोम्। जङ्गास्थाने रुद्राय नमः॥१५॥

ॐ भूर्भुवः सुवंः। नमंः शम्भवं च मयोभवं च नमंः शङ्करायं च मयस्करायं च नमंः शिवायं च शिवतराय च॥

ॐ अः। अहिंरसि बुध्नियो रौद्रेणानींकेन पाहि माँउग्ने पिपृहि मा मा मां हि॰सीः॥ अः [ॐ] भूर्भुवः सुवरोम्। पादयोः स्थाने रुद्राय नमः॥१६॥

त्वगस्थिगतैः सर्वपापैः प्रमुच्यते। सर्वभूतेष्वपराजितो भवति। ततो भूत-प्रेत-पिशाच-ब्रह्मराक्षस-यक्ष-यमदूत-शािकनी-डािकनी-सर्प-श्वापद-वृश्चिक-तस्कराद्युपद्रवाद्युपघाताः। सर्वे ज्वलन्तं पश्यन्तु। मां रक्षन्तु। यजमानं रक्षन्तु। सर्वान् महाजनान् रक्षन्तु॥

## ॥ गुह्यादि मस्तकान्तं षडङ्ग (चतुर्थो) न्यासः॥

मनो ज्योतिर्जुषतामाज्यं विच्छिन्नं यज्ञ समिमं देधातु। या इष्टा उषसो निम्नुचंश्च ताः सन्दंधामि ह्विषां घृतेनं॥ गुह्याय नमः॥१॥ अबौध्यग्निः समिधा जनानां प्रति धेनुमिवाऽऽयतीमुषासम्। यह्वा इव प्रव्यामुज्जिहांनाः प्रभानवंः सिस्रते नाकुमच्छं॥ नाभ्ये नमः॥२॥ अग्निर्मूर्धा दिवः कुकुत्पतिः पृथिव्या अयम्। अपा रेतारंसि जिन्वति॥ हृदयाय नमः॥३॥ मूर्धानं दिवो अंर्तिं पृथिव्या वैश्वान्रमृतायं जातम्ग्निम्। कृवि॰ सम्राज्मितिथिं जनानामासन्ना पात्रं जनयन्त देवाः॥ कण्ठाय नमः॥४॥

नमः॥४॥
मर्माणि ते वर्मभिश्छादयामि सोमंस्त्वा राजाऽमृतेनाभिवंस्ताम्।
उरोर्वरीयो वरिवस्ते अस्तु जयंन्तं त्वामन् मदन्तु देवाः॥ मुखाय नमः॥५॥
जातवेदा यदि वा पावकोऽसिं। वैश्वानरो यदि वा वैद्युतोऽसिं।
शं प्रजाभ्यो यर्जमानाय लोकम्। ऊर्जं पुष्टिं ददंद्भ्यावंवृथ्स्व॥ शिरसे नमः॥६॥



#### ॥ आत्मरक्षा॥

(तैत्तिरीयब्राह्मणे अष्टकं - २/प्रश्नः - ३/अनुवाकः - ११)

ब्रह्मौत्मन्वदंसृजत। तदंकामयत। समात्मनां पद्येयेतिं। आत्मन्नात्मन्नित्यामंत्रयत। तस्मैं दश्म १ हृतः प्रत्यंश्वणोत्। स दशंहूतोऽभवत्। दशंहूतो हु वै नामैषः। तं वा एतं दशंहूत् १ सन्तम्। दशंहोतेत्याचंक्षते प्रोक्षेण। प्रोक्षंप्रिया इव हि देवाः॥

आत्मुन्नात्मुन्नित्यामंत्रयत। तस्मै सप्तम हूतः प्रत्यंश्वणोत्। स स्प्तहूंतोऽभवत्। सप्तहूंतो हु वै नामैषः। तं वा पुत स्प्तहूंतु सन्तम्। सप्तहोतेत्याचंक्षते पुरोक्षेण। पुरोक्षंप्रिया इव हि देवाः॥

आत्मन्नात्मन्नित्यामंत्रयत। तस्मै षष्ठ १ हृतः प्रत्यंश्वणोत्। स षड्ढूंतोऽभवत्। षड्ढूंतो हु वै नामैषः। तं वा एत १ षड्ढूंत १ सन्तम्। षड्ढ्योतेत्याचंक्षते प्रोक्षेण। प्रोक्षंप्रिया इव हि देवाः॥

आत्मुन्नात्मुन्नित्यामंत्रयत। तस्मै पश्चम हूतः प्रत्यंशृणोत्। स पश्चंहूतोऽभवत्। पश्चंहूतो हु वै नामेषः। तं वा एतं पश्चंहूत् सन्तम्। पश्चंहोतेत्याचंक्षते पुरोक्षेण। पुरोक्षंप्रिया इव हि देवाः॥

आत्मन्नात्मन्नित्यामंत्रयत। तस्मैं चतुर्थ १ हूतः प्रत्यंश्रणोत्। स चतुंर्हूतोऽभवत्। चतुंर्हूतो हु वै नामैषः। तं वा पृतं चतुंर्हूत् १ सन्तम्। चतुंर्ह्तित्याचंक्षते प्रोक्षेण। प्रोक्षंप्रिया इव हि देवाः॥

तमंब्रवीत्। त्वं वै में नेदिष्ठ हूतः प्रत्यंश्रौषीः। त्वयैनानाख्यातार् इति। तस्मान्तु हैना अश्वतंरहोतार् इत्याचेक्षते। तस्माच्छुश्रूषुः पुत्राणा हे हृद्यंतमः। नेदिष्ठो हृद्यंतमः। नेदिष्ठो ब्रह्मणो भवति। य एवं वेदं। आत्मने नमः॥

### ॥ शिवसङ्कल्पः॥

येनेदं भूतं भुवंनं भविष्यत् परिगृहीतम्मृतेन सर्वम्। येनं यज्ञस्त्रायते सप्तहोता तन्मे मनः शिवसंङ्कल्पमंस्तु॥१॥

येन कर्माणि प्रचरंन्ति धीरा यतो वाचा मनंसा चारु यन्ति। यथ्सम्मित्मनुंस्यन्ति प्राणिनस्तन्मे मनः शिवसंङ्कल्पमंस्तु॥२॥

येन कर्मांण्यपसो मनीषिणो यज्ञे कृण्वन्ति विदर्थेषु धीराः। यदंपूर्वं यक्षमन्तः प्रजानां तन्मे मनः शिवसंङ्कल्पमस्तु॥३॥

यत्प्रज्ञानंमुत चेतो धृतिंश्च यज्योतिंर्न्तर्मृतं प्रजासं। यस्मान्न ऋते किं च न कर्म क्रियते तन्मे मनः शिवसंङ्कल्पमंस्तु॥४॥

सुषार्थिरश्वांनिव यन्मंनुष्यांन्नेनीयतेऽभीशुंभिर्वाजिनं इव। हत्प्रतिष्ठं यदंजिरं

जविष्ठं तन्मे मनः शिवसंङ्कल्पमंस्तु॥५॥

यस्मिनृचः साम् यजू ५ षि यस्मिन् प्रतिष्ठिता रथनाभाविवाराः। यस्मि ५ श्चित्त ५ सर्वमोतं प्रजानां तन्मे मर्नः शिवसंङ्कल्पमंस्तु॥६॥

यदत्रं षष्ठं त्रिशत १ सुवीरं यज्ञस्यं गुह्यं नवनावमाय्यम्। दशं पश्च त्रि १ शतं यत्परं च तन्मे मनः शिवसंङ्कल्पमंस्तु॥७॥

यञ्जाग्रंतो दूरमुदैति दैवं तदुं सुप्तस्य तथैवैतिं। दूरङ्गमं ज्योतिषां ज्योतिरेकं तन्मे मनः शिवसंङ्कल्पमंस्तु॥८॥

येनेदं विश्वं जर्गतो बुभूव ये देवापि महुतो जातवेदाः। तदेवाग्निस्तर्मसो ज्योतिरेकं तन्मे मर्नः शिवसंङ्कल्पमंस्तु॥९॥

येन द्यौः पृथिवी चान्तरिक्षं च ये पर्वताः प्रदिशो दिशंश्च। येनेदं जग्द्याप्तं प्रजानां तन्मे मनः शिवसंङ्कल्पमस्तु॥१०॥

ये मेनो हृदेयं ये चे देवा ये दिव्या आपो ये सूर्यर्शिमः। ते श्रोत्रे चक्षुंषी स्त्रर्रन्तुं तन्मे मर्नः शिवसङ्कल्पमंस्तु॥११॥

अचिन्त्यं चाप्रमियं च व्यक्ताव्यक्तंपरं च यत्। सूक्ष्मांथ्सूक्ष्मतंरं ज्ञेयं तन्मे मर्नः शिवसंङ्कल्पमंस्तु॥१२॥

एको च दश शतं चे सहस्रं चायुतं च

नियुतंं च प्रयुतं चार्बुदं च न्यंबुदं च समुद्रश्च मध्यं चान्तंश्च परार्धश्च तन्मे मनः शिवसंङ्कल्पमस्तु॥१३॥

ये पंश्च पृश्चाद्रश शत सहस्रंम्युतं न्यंर्बुदं च। ते अग्निचित्येष्टंका्स्त श्रीरं तन्मे मर्नः शिवसंङ्कत्पमंस्तु॥१४॥

वेदाहमेतं पुरुषं महान्तमादित्यवंणुं तमसः परस्तात्। यस्य योनिं

परिपश्यंन्ति धीरास्तन्मे मर्नः शिवसंङ्कल्पमंस्तु॥१५॥ यस्येदं धीरौः पुनन्तिं क्वयौ ब्रह्माणंमेतं त्वां वृणत् इन्दुंम्। स्थावरं जङ्गंमं द्यौरांकाशं तन्मे मर्नः शिवसंङ्कल्पमंस्तु॥१६॥

> परौत्परतंरं चैव यत्पराँचैव यत्परम्। यत्परौत्परतो ज्ञेयं तन्मे मनः शिवसंङ्कल्पमंस्तु॥१७॥

> परौत्परतंरो ब्रह्मा तृत्परौत्परतो हंरिः। तृत्परोत्परतोऽधीशस्तन्मे मनः शिवसंङ्काल्पमस्तु॥१८॥

या वेदादिषुं गायत्री सर्वव्यापी महेश्वरी। ऋग्यजुंः सामाथर्वेश्च तन्मे मनः शिवसंङ्कल्पमंस्तु॥१९॥

यो वै देवं महादेवं प्रणवं पर्मेश्वरम्। यः सर्वे सर्ववेदैश्च तन्मे मनः शिवसंङ्कल्पमंस्तु॥२०॥

प्रयंतः प्रणंवोङ्कारं प्रणवं पुरुषोत्तंमम्। ओङ्कारं प्रणंवात्मानं तन्मे मनः शिवसंङ्कल्पमंस्तु॥२१॥

योऽसौ सर्वेषुं वेदेषु पठ्यते ह्यज् इश्वरः। अकायो निर्गुणो ह्यात्मा तन्मे मनः शिवसंङ्कल्पमंस्तु॥२२॥

गोभिर्जुष्टं धर्नेन् ह्यायुंषा च बलेन च। प्रजयां पृशुभिः पुष्कराक्षं तन्मे मर्नः शिवसंङ्कल्पमंस्तु॥२३॥

कैलांस्शिखंरे रम्ये शङ्करंस्य शिवालंये। देवतांस्तत्रं मोदन्ते तन्मे मनः शिवसंङ्कल्पमंस्तु॥२४॥ विश्वतंश्वक्षुरुत विश्वतोंमुखो विश्वतोंहस्त उत विश्वतंस्पात्। सं बाहुभ्यां नर्माते सम्पतंत्रैर्द्यावांपृथिवी जनयंन्देव एकस्तन्मे मनः शिवसंङ्कल्पमंस्तु॥२५॥

> त्र्यंम्बकं यजामहे सुगुन्धिं पुष्टिवर्धनम्। उर्वारुकिमेव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्तन्मे मनेः शिवसंङ्कल्पमंस्तु॥२६॥

चतुरों वेदानंधीयीत् सर्वशांस्त्रम्यं विद्ः। इतिहासपुराणानां तन्मे मनः शिवसंङ्कल्पमंस्तु॥२७॥ मा नो महान्तंमुत मा नो अर्भकं मा न उक्षंन्तमुत मा नं उित्रम् मोत मातरं प्रिया मा नंस्तन्वों रुद्र रीरिष्स्तन्मे मनः शिवसंङ्कल्पमंस्तु॥२८॥ मा नंस्तोके तनये मा न आर्युषि मा नो गोषु मा नो अश्वेष रीरिषः। वीरान्मा नो रुद्र भामितोऽवंधीर्ह्विष्मंन्तो नमंसा विधेम ते तन्मे मनः शिवसंङ्कल्पमंस्तु॥२९॥

ऋतः सत्यं परं ब्रह्म पुरुषं कृष्णपिङ्गंलम्। ऊर्ध्वरेतं विरूपाक्षं विश्वरूपाय वै नमो नम्स्तन्मे मनः शिवसंङ्कल्पमंस्तु॥३०॥ कद्रुद्राय प्रचेतसे मीदुष्टंमाय तव्यंसे।

वो चेम शन्तंम १ हृदे। सर्वो ह्यंष रुद्रस्तस्मै रुद्राय नमो अस्तु तन्मे मर्नः शिवसंङ्कल्पमंस्तु॥ ३१॥

ब्रह्मजज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमृतः सुरुचों वेन आंवः।

सबुध्नियां उपमा अस्य विष्ठाः स्तश्च योनिमसंतश्च विवस्तन्मे मनः शिवसंङ्कल्पमंस्तु॥३२॥ यः प्राणितो निमिषतो मंहित्वैक इद्राजा जगंतो बभूवं। य ईशे अस्य द्विपद्श्चतुंष्पदः कस्मै देवायं हविषां विधेम तन्मे मनः शिवसंङ्कल्पमंस्तु॥३३॥ य औत्मदा बंलदा यस्य विश्वं उपासंते प्रशिषं यस्यं देवाः। यस्यं छायाऽमृतं यस्यं मृत्युः कस्मै देवायं हविषां विधेम तन्मे मनः शिवसंङ्कल्पमंस्तु॥३४॥

यो रुद्रो अग्नौ यो अपसु य ओषंधीषु यो रुद्रो विश्वा भुवंनाऽऽविवेश तस्मैं रुद्राय नमों अस्तु तन्मे मनेः शिवसंङ्कल्पमंस्तु॥३५॥

गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपृष्टां करीषिणींम्। ईश्वरी र सर्वभूतानां तामिहोपेह्वये श्रियं तन्मे मनः शिवसंङ्कल्पमंस्तु॥३६॥ य इद शिवंसङ्कल्प र सदा ध्यायंन्ति ब्राह्मंणाः। ते परं मोक्षं गमिष्यन्ति तन्मे मनः शिवसंङ्कल्पमंस्तु॥ हृदयाय नमः॥

\*\*\*

### ॥ पुरुषसूक्तम्॥

ॐ सहस्रंशीर्षा पुरुषः। सहस्राक्षः सहस्रंपात्। स भूिमं विश्वतो वृत्वा। अत्यंतिष्ठद्दशाङ्गुलम्॥ पुरुष पुवेद सर्वम्। यद्भूतं यच् भव्यम्। उतामृतत्वस्येशानः। यदन्नेनातिरोहंति॥ पुतावानस्य महिमा। अतो ज्याया ईश्च

पूर्रुषः।

पादौंऽस्य विश्वां भूतानि। त्रिपादंस्यामृतंं दिवि॥ त्रिपादूर्ध्व उदैत्पुरुंषः। पादौंऽस्येहाऽऽभंवात्पुनंः। ततो विश्वङ्कांक्रामत्। साशानानशने अभि॥ तस्मौद्विराडंजायत। विराजो अधि पूरुंषः। स जातो अत्यंरिच्यत। पृश्राद्भूमिमथों पुरः॥

यत्पुरुषेण हिविषां। देवा यज्ञमतंन्वत। वसन्तो अस्यासीदाज्यम्। ग्रीष्म इध्मः शरद्धविः॥ सप्तास्यांऽऽसन्परिधयः। त्रिः सप्त स्पिधः कृताः। देवा यद्यज्ञं तन्वानाः। अबंध्रन्पुरुषं पृशुम्॥ तं यृज्ञं बर्हिष् प्रौक्षन्। पुरुषं जातमंग्रतः। तेनं देवा अयंजन्त। साध्या ऋषंयश्च ये॥ तस्मांद् यृज्ञाथ्संवृहृतः। सम्भृतं पृषदाज्यम्। पृशूरुस्तारश्चेके वायव्यान्। आरुण्यान्ग्राम्याश्च ये॥ तस्मांद् यृज्ञाथ्संवृहृतः। ऋचः सामांनि जिज्ञिरे। छन्दारुसि जिज्ञिरे तस्मांत्।

यजुस्तस्मादजायत॥ तस्मादश्वां अजायन्त। ये के चीभ्यादेतः। गावीं ह जिज्ञेर तस्मात्। तस्माजाता अजावयः॥ यत्पुरुषं व्यदधुः। कृतिधा व्यकल्पयन्। मुखं किमंस्य कौ बाहू। कावूरू पादांवुच्येते॥ ब्राह्मणौऽस्य मुखंमासीत्। बाहू राजन्यः कृतः।

ऊरू तदंस्य यद्वैश्यः। पुन्धाः शूद्रो अंजायतः। चन्द्रमा मनसो जातः। चक्षोः सूर्यो अजायतः। मुखादिन्द्रंश्चाग्निश्चं। प्राणाद्वायुरंजायतः। नाभ्यां आसीदन्तरिक्षम्। शीर्ष्णो द्यौः समंवर्ततः। पुन्धां भूमिर्दिशः श्रोत्रातः। तथां लोकाः अंकल्पयन्॥

वेदाहमेतं पुरुषं महान्तम्। आदित्यवंर्णं तमंसुस्तु पारे॥ सर्वाणि रूपाणिं विचित्य धीरंः। नामानि कृत्वाऽभिवदन् यदास्ते॥ धाता पुरस्ताद्यमुंदाजहारं। श्रकः प्रविद्वान्प्रदिश्रश्चतंस्रः। तमेवं विद्वानमृतं इह भंवति। नान्यः पन्था अर्यनाय विद्यते॥ युज्ञेनं युज्ञमंयजन्त देवाः। तानि धर्माणि प्रथमान्यांसन्। ते हु नाकं महिमानंः सचन्ते। यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः॥ शिरसे स्वाहा॥



#### ॥ उत्तरनारायणम्॥

अद्धः सम्भूतः पृथिव्ये रसाँच। विश्वकंर्मणः समंवर्त्ताधि। तस्य त्वष्टां विद्धंद्रूपमेति। तत्पुरुंषस्य विश्वमाजांन्मग्रे॥ वेदाहम्तं पुरुंषं महान्तम्। आदित्यवंणं तमंसः परंस्तात्। तम्वं विद्वान्मृतं इह भंवति। नान्यः पन्थां विद्यतेयंऽनाय॥ प्रजापंतिश्चरति गर्भे अन्तः। अजायंमानो बहुधा विजायते। तस्य धीराः परिजानन्ति योनिम्। मरीचीनां पदिमंच्छन्ति वेधसंः॥ यो देवेभ्य आतंपति। यो देवानां पुरोहितः। पूर्वो यो देवेभ्यो जातः। नमो रुचाय ब्राह्मये॥ रुचं ब्राह्मं जनयंन्तः। देवा अग्रे तदंब्रवन्। यस्त्वैवं ब्राह्मणो विद्यात्। तस्यं देवा अस्न वशे॥ हीश्चं ते लक्ष्मीश्च पत्यौ। अहोरात्रे पार्श्व। नक्षंत्राणि रूपम्। अश्वनौ व्यात्तम्। इष्टं मंनिषाण। अमुं मंनिषाण। सर्वं मनिषाण॥ शिखाये वषट॥



## ॥ अप्रतिरथम्॥

(तैत्तिरीयसंहितायां काण्डः - ४/प्रश्नः - ६/अनुवाकः - ४)

आशुः शिशांनो वृष्भो न युध्मो घंनाघनः क्षोभंणश्चर्षणीनाम्। सङ्कन्दंनो-ऽनिमिष एंकवीरः शतः सेनां अजयत् साकिमन्द्रः। सङ्कन्दंनेनानिमिषेणं जिष्णुनां युत्कारेणं दुश्चवनेनं धृष्णुनां। तदिन्द्रेण जयत् तथ्संहध्वं युधो नर् इषुंहस्तेन वृष्णां। स इषुंहस्तेः सनिष्ङ्गिभिर्वशी सङ्स्रष्टा स युध् इन्द्रों गुणेनं। सुरुसृष्टुजिथ्सोम्पा बांहुशुध्यूर्ध्वधंन्वा प्रतिंहिताभिरस्तां।

बृहंस्पते परिं दीया रथेन रक्षोहाऽमित्रा अपबार्धमानः। प्रभुञ्जन्थ्सेनाः प्रमृणो युधा जयंत्रस्माकंमेध्यविता रथांनाम्। गोत्रभिदं गोविदं वर्ज्ञबाहुं जयंन्तमर्ज्यं प्रमृणन्तमोर्ज्ञसा। इम संजाता अनुं वीरयध्वमिन्द्र सखायोऽनु स र्रभध्वम्। बृलविज्ञायः स्थविंदः प्रवींदः सहंस्वान् वाजी सहंमान उग्रः। अभिवींरो अभिसंत्त्वा सहोजा जैत्रंमिन्द्र रथमा तिष्ठ गोवित्। अभि गोत्राणि सहंसा गाहंमानोऽदायो वीरः श्तमंन्युरिन्द्रः।

दुश्चवनः पृतनाषाडंयुध्योंऽस्माक् सेनां अवतु प्र युथ्स्। इन्द्रं आसां नेता बृह्स्पतिर्दक्षिणा यज्ञः पुर एतु सोमः। देवसेनानांमभिभञ्जतीनां जयंन्तीनां मुरुतों यन्त्वग्रें। इन्द्रंस्य वृष्णो वरुणस्य राज्ञं आदित्यानां मुरुता शर्षं उग्रम्। महामनसां भुवनच्यवानां घोषों देवानां जयंतामुदंस्थात्। अस्माक्मिन्द्रः समृतेषु ध्वजेष्वस्माकं या इषंवस्ता जयन्तु।

अस्माकं वीरा उत्तरे भवन्त्वस्मानं देवा अवता हवेषु। उद्धेर्षय मघवन्नायुंधान्युत् सत्त्वेनां मामकानां महा हिस। उद्देत्रहन् वाजिनां वाजिनान्युद्रथानां जयंतामेतु घोषः। उप प्रेत् जयंता नरः स्थिरा वः सन्तु बाहवः। इन्द्रों वः शर्म यच्छत्त्वनाधृष्या यथाऽसंथ। अवंसृष्टा परां पत् शरंव्ये ब्रह्मंस शिता।

गच्छामित्रान् प्रविश् मैषां कं चनोच्छिषः। मर्माणि ते वर्मभिश्छादयामि सोमस्त्वा राजाऽमृतेनाभिवस्ताम्। उरोविरीयो वरिवस्ते अस्तु जयन्तं त्वामनुं मदन्तु देवाः। यत्रं बाणाः सम्पतिन्त कुमारा विशिखा इंव। इन्द्रो नस्तत्रं वृत्रहा विश्वाहा शर्म यच्छतु॥ कवचाय हुम्॥



# ॥ प्रतिपूरुषम् (सं०)॥

(तैत्तिरीयसंहितायां काण्डः - १/प्रश्नः - ८/अनुवाकः - ६)

प्रतिपूरुषमेकंकपालानिर्वप्त्येक्मितिरिक्तं यावंन्तो गृह्याः स्मस्तेभ्यः कर्मकरं पश्नाः शर्मासि शर्म यजंमानस्य शर्म मे यच्छैकं एव रुद्रो न द्वितीयांय तस्य आखुस्ते रुद्र पशुस्तं जुंषस्वैष ते रुद्र भागः सह स्वस्नाऽम्बिकया तं जुंषस्व भेषजं गवेऽश्वांय पुरुषाय भेषजमथो अस्मभ्यं भेषजः सुभेषजं यथाऽसंति। सुगं मेषायं मेष्यां अवाम्ब रुद्रमंदिमृह्यवं देवं त्र्यंम्बकम्। यथां नः श्रेयंसः कर्द्यथां नो वस्यंसः कर्द्यथां नः पशुमतः कर्द्यथां नो व्यवसाययात्। त्र्यंम्बकं यजामहे सुग्न्धिं पृष्टिवर्धनम्। उर्वारुकिमेव बन्धनान्मृत्योमुंक्षीय माऽमृतात्॥ एष ते रुद्रभागस्तं जुंषस्व तेनांवसेनं प्रो मूजंवतोऽती्ह्यवंतत्रधन्वा पिनांकहस्तः कृत्तिंवासाः॥

## ॥ प्रतिपूरुषम् (ब्रा०)॥

(तैत्तिरीयब्राह्मणे अष्टकं - १/प्रश्नः - ६/अनुवाकः - १०)

प्रतिपूरुषमेकंकपालान्निर्वपति। जाता एव प्रजा रुद्रान्निरवंदयते। एक्मिति-रिक्तम्। जिन्छ्यमाणा एव प्रजा रुद्रान्निरवंदयते। एकंकपाला भवन्ति। एक्धैव रुद्रं निरवंदयते। नाभिघारयति। यदंभिघारथैत्। अन्त्रव्चारिण र्रं रुद्रं कुंर्यात्। एकोल्मुकेनं यन्ति। तिद्धं रुद्रस्यं भाग्धेयम्। इमां दिशं यन्ति। एषा वै रुद्रस्य दिक्। स्वायांमेव दिशि रुद्रं निरवंदयते। रुद्रो वा अपशुकाया आहुंत्ये नातिष्ठत। असौ ते पृशुरिति निर्दिशेद्यं द्विष्यात्। यमेव द्वेष्टिं। तमंस्मै पृशुं निर्दिशित। यदि न द्विष्यात्। आखुस्ते पृशुरिति ब्रूयात्। न ग्राम्यान् पशून् हिनस्ति। नारण्यान्। चतुष्पथे जुंहोति। एष वा अंग्रीनां पड्ढींशो नामं। अग्निवत्येव जुहोति। मध्यमेन पर्णेन जुहोति। सुग्घ्येषा। अथो खलुं। अन्तमेनैव होतव्यम्। अन्तत एव रुद्रं निरवंदयते। एष ते रुद्र भागः सह स्वस्नाऽम्बिकयेत्याह। शरद्वा अस्याम्बिका स्वसा। तया वा एष हिनस्ति। य हिनस्ति। तयैवैन ५ सह शंमयति। भेषुजं गव इत्याह। यावन्त एव ग्राम्याः पशवः। तेभ्यों भेषजं करोति। अवाम्ब रुद्रमंदिमहीत्यांह। आशिषंमेवैतामाशास्ते। त्र्यंम्बकं यजामह इत्यांह। मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतादिति वावैतदांह। उत्किंरन्ति। भगंस्य लीफ्सन्ते। मूतें कृत्वाऽऽसंजन्ति। यथा जर्नं युतेऽवसं करोतिं। तादगेव तत्। एष ते रुद्र भाग इत्यांह निरवंत्यै। अप्रंतीक्षमायंन्ति। अपः परिषिश्चति। रुद्रस्यान्तर्हित्यै। प्र वा एतें स्माल्लोकाच्यंवन्ते। ये त्र्यंम्बकैश्चरंन्ति। आदित्यं चरुं पुनरेत्य निर्वपति। इयं वा अदितिः। अस्यामेव प्रतितिष्ठन्ति। नेत्रत्रयाय वौषट्॥



## ॥ शतरुद्रीयम् (सं०)॥

(तैत्तिरीयसंहितायां काण्डः - १/प्रश्नः - ३/अनुवाकः - १४)

त्वमंग्ने रुद्रो असुरो महो दिवस्त्व शर्धो मारुतं पृक्ष ईशिषे। त्वं वातैररुणैर्यासि शङ्ग्यस्त्वं पूषा विधतः पासि नु त्मनां। आ वो राजानमध्वरस्यं रुद्र होतार सत्ययज् रेरोदंस्योः। अग्निं पुरा तंनिय्वोर्चित्ताद्धिरंण्यरूप्मवंसे कृणुध्वम्। अग्निरहोता नि षंसादा यजीयानुपस्थं मातः सुरुभावं लोके। युवां कृविः पुरुनिष्ठ ऋतावां धर्ता कृष्टीनामुत मध्यं इद्धः।

साध्वीमंकर्देववीतिं नो अद्य यज्ञस्यं जिह्वामंविदाम् गुह्यांम्। स आयुराऽ-गाँथ्सुरभिर्वसानो भद्रामंकर्देवह्ंतिं नो अद्य। अर्ऋन्ददग्निः स्तनयंत्रिव द्यौः क्षामा रेरिंहद्वीरुधंः समुञ्जन्। सुद्यो जंज्ञानो वि हीमिद्धो अख्यदा रोदंसी भानुनां भात्यन्तः। त्वे वसूनि पुर्वणीक होतर्दोषा वस्तोरेरिरे यज्ञियांसः। क्षामेव विश्वा भुवनानि यस्मिन्थ्स सौभंगानि दिधरे पावके। तुभ्यं ता अंङ्गिरस्तम् विश्वाः सुक्षितयः पृथंक्। अग्ने कामाय येमिरे। अश्याम् तं कार्ममग्ने तवोत्यंश्यामं र्यिश् रंयिवः सुवीरम्। अश्याम् वार्जम्भि वाजयंन्तोऽश्यामं द्युम्नमंजराऽजरंन्ते। श्रेष्ठं यविष्ठ भारताऽग्नें द्युमन्तुमा भेर। वसो पुरुस्पृह रे रियम्। स श्वितानस्तंन्यतू रोचनस्था अजरेभिर्नानंदद्भिर्यविष्ठः। यः पावकः पुरुतमः पुरूणि पृथून्यग्निरंनुयाति भर्वत्रं। आयुंष्टे विश्वतो दधद्यमुग्निर्वरेण्यः। पुनस्ते प्राण आयंति परा यक्ष्मर् सुवामि ते। आयुर्दा अंग्ने हिवर्षो जुषाणो घृतप्रंतीको घृतयोनिरेधि। घृतं पी्त्वा मधु चारु गव्यं पितवं पुत्रम्भिरंक्षतादिमम्।

तस्मैं ते प्रतिहर्यते जातंवेदो विचंर्षणे। अग्ने जनांमि सुष्टुतिम्। दिवस्परिं प्रथमं जंज्ञे अग्निरस्मिद्धितीयं परिं जातवेदाः। तृतीयंमप्स नुमणा अजंस्विमन्धांन एनं जरते स्वाधीः। शुचिः पावक वन्द्योऽग्नें बृहद्विरोचसे। त्वं घृतेभिराहुंतः। दृशानो रुका उर्व्या व्यंद्यौद्दुर्मर्षमायुः श्रिये रुचानः। अग्निरमृतों अभवद्वयोभिर्यदेनं द्यौरजंनयथ्सुरेताः।

आ यदिषे नृपतिं तेज् आन्द्भुचि रेतो निषिक्तं द्यौर्भीकै। अग्निः शर्धमनवृद्यं युवानः स्वाधियं जनयथ्सूदयं सा तेजीयसा मनसा त्वोतं उत शिक्ष स्वपृत्यस्यं शिक्षोः। अग्ने रायो नृतंमस्य प्रभूतौ भूयामं ते सुष्टुतयंश्च वस्वंः। अग्ने सहंन्तमा भर द्युम्नस्यं प्रासहां रियम्।

विश्वा यश्चर्ष्णीर्भ्यांसा वाजेषु सासहंत्। तमंग्ने पृतना सह रे र्यि र संहस्व आ भेर। त्वर हि सृत्यो अद्भंतो दाता वाजंस्य गोमंतः। उक्षान्नांय वृशान्नांय सोमंपृष्ठाय वृधसें। स्तोमैंविधमाग्नयें। वृद्धा हि सूनो अस्यद्मसद्धां चृक्ते अग्निर्जुनुषाऽज्माऽन्नम्। स त्वं नं ऊर्जसन् ऊर्जं धा राजेव जेरवृके क्षेष्यन्तः। अग्न आयू रेषि पवस् आ सुवोर्जुमिषं च नः। आरे बांधस्व दुच्छुनांम्। अग्ने पवस्व स्वपां अस्मे वर्चः सुवीर्यम्। दधत्योष रे र्यिं मिये। अग्ने पावक रोचिषां मन्द्रयां देव जिह्नयां। आ देवान् विश्व यिश्वं च। स नः पावक दीदिवोऽग्ने देवार इहाऽऽवह। उपं यृज्ञर हिवश्चं नः। अग्निः श्विं व्रततमः श्विंविपः श्विः कविः। श्वीं रोचत् आहुंतः। उदंग्ने श्चयंयस्तवं श्वृक्ता भाजंन्त ईरते। तव ज्योतीः ध्र्यांयंः॥

## ॥ शतरुद्रीयम् (ब्रा०)॥

(तैत्तिरीयब्राह्मणे काठके प्रश्नः - २/अनुवाकः - २)

त्वमंग्ने रुद्रो असुरो महो दिवः। त्वः शर्धो मारुतं पृक्ष ईशिषे। त्वं वातैररुणैर्यास शङ्घ्यः। त्वं पूषा विध्तः पांसि न त्मनां। देवां देवेषुं श्रयध्वम्। प्रथमा द्वितीयेषु श्रयध्वम्। द्वितीयास्तृतीयेषु श्रयध्वम्। तृतीयाश्चतुर्थेषुं श्रयध्वम्। चृतुर्थाः पश्चमेषुं श्रयध्वम्। पृश्चमाः षृष्ठेषुं श्रयध्वम्॥ षृष्ठाः संप्तमेषुं श्रयध्वम्। सप्तमा अष्टमेषुं श्रयध्वम्। अष्टमा नंवमेषुं श्रयध्वम्। नृवमा दंशमेषुं श्रयध्वम्। दृशमा एकादशेषुं श्रयध्वम्। पृकादशा द्वांदशेषुं श्रयध्वम्। द्वादशास्त्रयोदशेषुं श्रयध्वम्। त्रयोदशाश्चंतुर्दशेषुं श्रयध्वम्। चृतुर्दशाः पश्चदशेषुं श्रयध्वम्। पृश्चदशाः षोंद्रशेषुं श्रयध्वम्। पृश्चदशाः षोंद्रशेषुं श्रयध्वम्। पृश्वदशाः पश्चदशेषुं श्रयध्वम्। पृश्वदशाः षोंद्रशेषुं श्रयध्वम्। पृकान्नविक्शाः विक्शेषुं श्रयध्वम्। पृकान्नविक्शाः विक्शेषुं श्रयध्वम्। पृक्वविक्शाः द्वांविक्शेषुं श्रयध्वम्। द्वाद्वशाः द्वादिक्शेषुं श्रयध्वम्। पृक्वविक्शाः द्वादिक्शेषुं श्रयध्वम्। पृक्वविक्शाः द्वादिक्शेषुं श्रयध्वम्। पृक्वविक्शाः द्वादिक्शेषुं

श्रयध्वम्। द्वाविर्शास्त्रंयोविर्शेषु श्रयध्वम्। त्रयोविर्शाश्चंतुर्विर्शेषुं श्रयध्वम्। चतुर्विर्शाः पंश्वविर्शेषुं श्रयध्वम्। पृश्वविर्शाः षंड्विर्शेषुं श्रयध्वम्। पृश्वविर्शाः षंड्विर्शेषुं श्रयध्वम्। पृष्ठविर्शाः संप्तविर्शेषुं श्रयध्वम्। स्प्तविर्शाः अंष्टाविर्शेषुं श्रयध्वम्। अष्टाविर्शाः एंकात्रित्र्र्शेषुं श्रयध्वम्। एकात्रतिर्शोषुं श्रयध्वम्। त्रिर्शाः एंकित्रिर्शेषुं श्रयध्वम्। एकित्रिर्शोषुं श्रयध्वम्। द्वात्रिर्शाः द्वात्रिर्शेषुं श्रयध्वम्। द्वात्रिर्शाः द्वात्रिर्शेषुं श्रयध्वम्। द्वात्रिर्शाः द्वात्रिर्शेषुं श्रयध्वम्। द्वात्रिर्शाः द्वात्रिर्शेषुं श्रयध्वम्। द्वात्रिर्शेषिः शाः। उत्तरे भवत। उत्तरवर्तान् उत्तरसत्वानः। यत्कांम इदं जुहोमिं। तन्मे समृध्यताम्। वयः स्यांम् पत्यो रयीणाम्। भूर्भुवः स्वः स्वाहां॥ ॐ भूर्भुवस्सुवरोमिति दिग्बन्धः॥ अस्नाय फट्॥

#### ॥पञ्चाङ्गम्॥

ह्र्सः शृंचिषद्वस्रंग्निरक्षसद्धोतां वेदिषदितिथिर्दुरोण्सत्।
नृषद्वंग्रसदंत्सद्धोम्सद्जा गोजा ऋत्जा अंद्रिजा ऋतं बृहत्॥
प्रतिद्वष्णुंः स्तवते वीर्याय। मृगो न भीमः कुंचरो गिरिष्ठाः।
यस्योरुषुं त्रिषु विक्रमंणेषु। अधिक्षियन्ति भुवनानि विश्वा॥
त्र्यम्बकं यजामहे सुग्न्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकिमेव बन्धनान्मृत्योम्क्षीय माऽमृतात्॥
तथ्संवितुर्वृणीमहे। व्यं देवस्य भोजनम्।
श्रेष्ठर्थं सर्वधातमम्। तुरं भगस्य धीमहि॥
विष्णुर्योनिं कल्पयतु। त्वष्टां रूपाणिं पिश्शतु।
आसिंश्चतु प्रजापंतिः। धाता गर्भं दधातु ते॥

### ॥ अष्टाङ्ग-नमस्काराः॥

हिर्ण्यगर्भः समंवर्तताग्रं भूतस्यं जातः पितरेकं आसीत्। सदांधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मैं देवायं हिवर्षां विधेम॥ [उरसा] उमामहेश्वराभ्यां नमः॥१॥

यः प्राणितो निमिषतो महित्वैक इद्राजा जगेतो बुभूवं। य ईशे अस्य द्विपद्श्वतुष्पदः कस्मै देवायं ह्विषां विधेम॥ [शिरसा] उमामहेश्वराभ्यां नमः॥२॥

ब्रह्मंजज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमृतः सुरुचो वेन आंवः। सबुध्रिया उपमा अंस्य विष्ठाः सृतश्च योनिमस्तश्च विवंः॥१॥ [दृष्ट्या] उमामहेश्वराभ्यां नमः॥३॥

मही द्यौः पृथिवी च न इमं यज्ञं मिमिक्षताम्। पिपृतान्नो भरीमिभः॥ [मनसा] उमामहेश्वराभ्यां नमः॥४॥

> उपश्वासय पृथिवीमुत द्यां पुंरुत्रा ते मनुतां विष्ठितं जगंत्। स दुन्दुभे सजूरिन्द्रेण देवैर्दूराह्वीयो अपंसेध शत्रून्॥ [वचसा] उमामहेश्वराभ्यां नमः॥५॥

अग्ने नयं सुपर्था राये अस्मान् विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्। युयोध्यंस्मज्जंहुराणमेनो भूयिष्ठां ते नमं उक्तिं विधेम॥ [पद्माम्] उमामहेश्वराभ्यां नमः॥६॥

या तें अग्ने रुद्रिया तुनूस्तयां नः पाहि तस्यांस्ते स्वाहां॥ [कराभ्याम्] उमामहेश्वराभ्यां नमः॥७॥

इमं यंमप्रस्तरमाहि सीदाऽङ्गिरोभिः पितृभिः संविदानः। आत्वा मन्नौः कविश्वस्ता वहन्त्वेना राजन् ह्विषां मादयस्व॥

[कर्णाभ्याम्] उमामहेश्वराभ्यां नमः॥८॥



# ॥ लघुन्यासे श्री रुद्रध्यानम्॥

अथाऽऽत्मानं शिवात्मानं श्री रुद्र रूपं ध्यायेत्॥
शुद्धस्फिटिकसङ्काशं त्रिनेत्रं पश्चवऋकम्।
गङ्गाधरं दशभुजं सर्वाभरणभूषितम्॥
नीलग्रीवं शशाङ्काङ्कं नागयज्ञोपवीतिनम्।
व्याघ्रचर्मोत्तरीयं च वरेण्यमभयप्रदम्॥
कमण्डल्वक्षसूत्राणां धारिणं शूलपाणिनम्।
ज्वलन्तं पिङ्गलजटाशिखामुद्योतधारिणम्॥
वृषस्कन्धसमारूढम् उमादेहार्धधारिणम्।
अमृते नाष्नुतं शान्तं दिव्यभोगसमन्वितम्॥
दिग्देवता समायुक्तं सुरासुरनमस्कृतम्।
नित्यं च शाश्वतं शुद्धं ध्रुवमक्षरमव्ययम्॥
सर्वव्यापिनमीशानं रुद्रं वै विश्वरूपिणम्।
एवं ध्यात्वा द्विजः सम्यक् ततो यजनमारभेत्॥

अथातो रुद्र स्नानार्चनाभिषेकविधिं व्याख्यास्यामः। आदित एव तीर्थे स्नात्वा उदेत्य शुचिः प्रयतो ब्रह्मचारी शुक्लवासा ईशानस्य प्रतिकृतिं कृत्वा तस्य दक्षिणप्रत्यग्देशे देवाभिमुखः स्थित्वा आत्मनि देवताः स्थापयेत्॥

# ॥ लघुन्यासे देवता-स्थापनम्॥

प्रजनने ब्रह्मा तिष्ठतु। पादयोर्विष्णुस्तिष्ठतु। हस्तयोर्हरस्तिष्ठतु। बाह्वोरिन्द्रस्-तिष्ठतु। जठरे अग्निस्तिष्ठतु। हृदये शिवस्तिष्ठतु। कण्ठे वसवस्तिष्ठन्तु। वक्रे सरस्वती तिष्ठतु। नासिकयोर्वायुस्तिष्ठतु। नयनयोश्चन्द्रादित्यौ तिष्ठेताम्। कर्णयोरिश्वनौ तिष्ठेताम्। ललाटे रुद्रास्तिष्ठन्तु। मूर्ध्यादित्यास्तिष्ठन्तु। शिरसि महादेवस्तिष्ठतु। शिखायां वामदेवस्तिष्ठतु। पृष्ठे पिनाकी तिष्ठतु। पुरतः शूली तिष्ठतु। पार्श्वयोः शिवाशङ्करौ तिष्ठेताम्। सर्वतो वायुस्तिष्ठतु। ततो बहिः सर्वतोऽग्निर्ज्वालामाला-परिवृतस्तिष्ठतु। सर्वेष्वङ्गेषु सर्वा देवता यथास्थानं तिष्ठन्तु। मां रक्षन्तु। [सर्वान् महाजनान् सकुटुम्बं रक्षन्तु॥]

अग्निर्मे वाचि श्रितः। वाग्घृदंये। हृदंयं मियं। अहम्मृतें। अमृतं ब्रह्मणि। (जिह्वा)

वायुर्मे प्राणे श्रितः। प्राणो हृदंये। हृदंयं मियं। अहम्मृतें। अमृतं ब्रह्मणि। (नासिका)

सूर्यो मे चक्षुंषि श्रितः। चक्षुर्हदंये। हदंयं मियं। अहम्मृतें। अमृतं ब्रह्मणि। (नेत्रे)

चन्द्रमां मे मनिसि श्रितः। मनो हृदये। हृदयं मिये। अहम्मृते। अमृतं ब्रह्मणि। (वक्षः)

दिशों में श्रोत्रें श्रिताः। श्रोत्र हदये। हदयं मिया अहम्मृतें। अमृतं ब्रह्मणि। (श्रोत्रे)

आपों में रेतंसि श्रिताः। रेतो हृदये। हृदयं मियं। अहम्मृतें। अमृतं ब्रह्मणि। (गुह्मम्)

पृथिवी मे शरीरे श्रिता। शरीर्ष् हदये। हदयं मिये। अहम्मृतें। अमृतं ब्रह्मणि। (शरीरम्)

ओष्धिवनस्पतयों में लोमंसु श्रिताः। लोमांनि हृदये। हृदयं मयि। अहम्मृतै। अमृतं ब्रह्मणि। (लोमानि)

इन्द्रों में बलें श्रितः। बल् रू हृदये। हृदयं मियं। अहम्मृतें। अमृतं ब्रह्मणि। (बाहू)

पुर्जन्यों मे मूर्प्नि श्रितः। मूर्धा हृदंये। हृदंयं मियं। अहम्मृतें। अमृतं ब्रह्मणि।

(शिरः)

ईशांनो मे मृन्यौ श्रितः। मृन्युर्ह्दये। हृदयं मियं। अहम्मृतें। अमृतं ब्रह्मणि। (हृदयम्)

आत्मा मं आत्मिनं श्रितः। आत्मा हृदंये। हृदंयं मियं। अहम्मृतें। अमृतं ब्रह्मणि। (हृदयम्)

पुनंर्म आत्मा पुन्रायुरागाँत्। पुनंः प्राणः पुन्राकूंत्मागाँत्। वैश्वान्रो रिष्मिभिवविधानः। अन्तस्तिष्ठत्वमृतंस्य गोपाः॥ (सर्वाण्यङ्गानि संस्पृश्य स्थापनं कृत्वा मानसैराराधयेत्॥)



### ॥ आत्मपूजा ॥

आराधितो मनुष्यैस्त्वं सिद्धैर्देवासुरादिभिः। आराधयामि भक्त्या त्वाऽनुग्रहाण महेश्वर॥

## ॥ कलशेषु साम्बपरमेश्वर ध्यानम्॥

ध्यायेन्निरामयं वस्तुं सर्गस्थितिलयादिकम्। निर्गुणं निष्कलं नित्यं मनोवाचामगोचरम्॥१॥

गङ्गाधरं शशिधरं जटामकुटशोभितम्। श्वेतभूतित्रिपुण्ड्रेण विराजितललाटकम्॥२॥

लोचनत्रयसम्पन्नं स्वर्णकुण्डलशोभितम्। स्मेराननं चतुर्बाहुं मुक्ताहारोपशोभितम्॥३॥

अक्षमालां सुधाकुम्भं चिन्मयीं मुद्रिकामपि। पुस्तकं च भुजैर्दिव्यैर्दधानं पार्वतीपतिम्॥४॥

श्वेताम्बरधरं श्वेतं रत्नसिंहासनस्थितम्। सर्वाभीष्टप्रदातारं वटमूलनिवासिनम्॥५॥ वामाङ्कसंस्थितां गौरीं बालार्कायुतसन्निभाम्। जपाकुसुमसाहस्रसमानश्रियमीश्वरीम् । सुवर्णरत्नखचितमकुटेन विराजिताम्॥६॥

ललाटपट्टसंराजत्संलग्नतिलकाश्चिताम् । राजीवायतनेत्रान्तां नीलोत्पलदलेक्षणाम्॥७॥

सन्तप्तहेमखचित-ताटङ्काभरणान्विताम्। ताम्बूलचर्वणरतरक्तजिह्वाविराजिताम् ॥८॥

पताकाभरणोपेतां मुक्ताहारोपशोभिताम्। स्वर्णकङ्कणसंयुक्तैश्चतुर्भिर्बाहुभिर्युताम् ॥९॥

सुवर्णरत्नखचित-काश्चीदामविराजिताम् । कदलीललितस्तम्भ-सन्निभोरुयुगान्विताम्॥१०॥

श्रिया विराजितपदां भक्तत्राणपरायणाम्। अन्योन्याश्लिष्टहृद्धाहू गौरीशङ्करसंज्ञकम्॥११॥

सनातनं परं ब्रह्म परमात्मानमव्ययम्। आवाहयामि जगतामीश्वरं परमेश्वरम्॥१२॥

मङ्गलायतनं देवं युवानमति सुन्दरम्। ध्यायेत्कल्पतरोर्मूले सुखासीनं सहोमया॥१३॥

आगच्छाऽऽगच्छ भगवन् देवेश परमेश्वर। सचिदानन्द भूतेश पार्वतीश नमोऽस्तु ते॥१४॥



### ॥ प्रदक्षिणम्॥

द्रापे अन्धंसस्पते दरिंद्रत्रीलंलोहित। एषां पुरुषाणामेषां पंशूनां मा भेर्माऽरो मो एषां किं चनाऽऽमंमत्॥ या तें रुद्र शिवा तृनः शिवा विश्वाहंभेषजी। शिवा रुद्रस्यं भेषजी तयां नो मृड जीवसें॥ इमा॰ रुद्रायं तृवसें कपूर्दिनें

क्षयद्वीराय प्रभेरामहे मृतिम्॥ यथां नः शमसंद्विपदे चतुंष्पदे विश्वं पुष्टं ग्रामें अस्मिन्ननांतुरम्॥ मृडा नों रुद्रोत नो मयंस्कृधि क्षयद्वींराय नर्मसा विधेम ते। यच्छं च योश्च मनुंरायजे पिता तदंश्याम तवं रुद्र प्रणीतौ॥ मा नो महान्तंमुत मा नो अर्भुकं मा न उक्षंन्तमुत मा नं उक्षितम्। मा नों वधीः पितरं मोत मातरं प्रिया मा नंस्तनुवों रुद्र रीरिषः॥ मा नंस्तोके तनंये मा न आयुंषि मा नो गोषु मा नो अश्वेषु रीरिषः। वीरान्मा नो रुद्र भामितोऽवंधीर्हिवष्मंन्तो नमंसा विधेम ते॥ आरात्तं गोघ्न उत पूरुषघ्ने क्षयद्वीराय सुम्रम्स्मे ते अस्तु। रक्षां च नो अधि च देव ब्रूह्यधां च नः शर्म यच्छ द्विबर्हों:॥ स्तुहि श्रुतं गेर्तुसदं युवानं मृगं न भीमम्पहलुमुग्रम्। मृडा जंरित्रे रुंद्र स्तवांनो अन्यन्ते अस्मन्निवंपन्तु सेनाः॥ परिणो रुद्रस्यं हेतिर्वृणक्त परि त्वेषस्यं दुर्मतिरंघायोः। अवं स्थिरा मुघवं ग्रास्तनुष्व मीह्वंस्तोकायं तनयाय मृडय॥ मीढुंष्टम शिवंतम शिवो नंः सुमनां भव। परमे वृक्ष आयुंधं निधाय कृत्तिं वसान आ चेर पिनांकं बिभ्रदा गंहि॥ विकिरिद् विलोहित् नमंस्ते अस्तु भगवः। यास्ते सहस्र १ हेतयोऽन्यम्स्मन्निवंपन्तु ताः॥ सहस्रांणि सहस्रधा बांहुवोस्तवं हेतयंः। तासामीशांनो भगवः पराचीना मुखां कृधि॥ प्रदक्षिणं कृत्वा॥

#### \*\*\*

#### ॥ नमस्काराः ॥

सहस्रांणि सहस्रशो ये रुद्रा अधि भूम्यांम्। तेषा १ सहस्रयोजनेऽवधन्वांनि तन्मसि। श्री महादेवादिभ्यो नमः॥१॥

अस्मिन् मंहृत्यंर्ण्वें ऽन्तरिक्षे भवा अधि। तेषार् सहस्रयोजनेऽवधन्वांनि तन्मसि। श्री महादेवादिभ्यो नमः॥२॥ नीलंग्रीवाः शितिकण्ठाः शुर्वा अधः, क्षंमाचराः। तेषार् सहस्रयोज्ने-ऽवुधन्वानि तन्मसि। श्री महादेवादिभ्यो नमः॥३॥

नीलंग्रीवाः शितिकण्ठा दिवर् रुद्रा उपंश्रिताः। तेषार् सहस्रयोजनेऽवधन्वांनि तन्मसि। श्री महादेवादिभ्यो नमः॥४॥

ये वृक्षेषुं सस्पिञ्जर्ं नीलंग्रीवा विलोहिताः। तेषार् सहस्रयोजनेऽवधन्वानि तन्मसि। श्री महादेवादिभ्यो नमः॥५॥

ये भूतानामधिपतयो विशिखासः कपूर्दिनः। तेषा र सहस्रयोजनेऽवधन्वानि तन्मसि। श्री महादेवादिभ्यो नमः॥६॥

ये अन्नेषु विविध्यंन्ति पात्रेषु पिबंतो जनान्। तेषा सहस्रयोजनेऽवधन्वांनि तन्मसि। श्री महादेवादिभ्यो नमः॥७॥

ये पृथां पंथिरक्षंय ऐलबृदा यृव्युर्धः। तेषा ५ सहस्रयोज्नेऽवधन्वांनि तन्मसि। श्री महादेवादिभ्यो नमः॥८॥

ये तीर्थानिं प्रचरंन्ति सृकावंन्तो निष्क्षिणंः। तेषार् सहस्रयोजनेऽवधन्वांनि तन्मसि। श्री महादेवादिभ्यो नमः॥९॥

य एतावंन्तश्च भूयार्रसश्च दिशों रुद्रा विंतस्थिरे। तेषार्र सहस्रयोज्ने-ऽवधन्वांनि तन्मसि। श्री महादेवादिभ्यो नमः॥१०॥

नमों रुद्रेभ्यो ये पृंथिव्यां येषामन्नमिषंवस्तेभ्यो दश प्राचीर्दशं दक्षिणा दशं प्रतीचीर्दशोदींचीर्दशोर्ध्वास्तेभ्यो नमस्ते नो मृडयन्तु ते यं द्विष्मो यश्चं नो द्वेष्टि तं वो जम्भे दधामि। श्री महादेवादिभ्यो नमः॥११॥

नमों रुद्रेभ्यो येंऽन्तरिक्षे येषां वात् इषंवस्तेभ्यो दश् प्राचीर्दशं दक्षिणा दशं प्रतीचीर्दशोदींचीर्दशोध्वस्तिभ्यो नमस्ते नो मृडयन्तु ते यं द्विष्मो यश्चं नो द्वेष्टि तं वो जम्भे दधामि। श्री महादेवादिभ्यो नमः॥१२॥

नमों रुद्रेभ्यो ये दिवि येषां वर्षिमषंवस्तेभ्यो दश प्राचीर्दशं दक्षिणा दशं प्रतीचीर्दशोदीचीर्दशोध्वस्तिभ्यो नम्स्ते नो मृडयन्तु ते यं द्विष्मो यश्चं नो द्वेष्टि तं वो जम्भे दधामि। श्री महादेवादिभ्यो नमः॥१३॥ नमस्कारान् कृत्वा॥



# ॥ चमकानुवाकैः प्रार्थना॥

अग्नांविष्णू स्जोषंसेमा वंधन्तु वां गिरंः। द्युम्नैर्वाजेंभिरागंतम्॥ वाजंश्च मे प्रस्वश्चं मे प्रयंतिश्च मे प्रसितिश्च मे धीतिश्चं मे ऋतुंश्च मे स्वरंश्च मे श्लोकंश्च मे श्रावश्चं मे श्रुतिश्च मे ज्योतिश्च मे सुवंश्च मे प्राणश्चं मेऽपानश्चं मे व्यानश्च मेऽसुंश्च मे चित्तं चं म आधीतं च मे वाक्चं मे मनश्च मे चक्षुंश्च मे श्लोतं च मे दक्षंश्च मे बलं च म ओजंश्च मे सहंश्च म आयुंश्च मे ज्रा चं म आत्मा चं मे त्नूश्चं मे शर्मं च मे वर्मं च मेऽङ्गांनि च मेऽस्थानिं च मे परूरंषि च मे शरीराणि च मे॥१॥

ज्यैष्ठ्यं च म् आधिपत्यं च मे मृन्युश्चं मे भामश्च मेऽमंश्च मेऽम्भंश्च मे जेमा चं मे मिहुमा चं मे विर्मा चं मे प्रिथमा चं मे वृष्मा चं मे द्राघुया चं मे वृद्धं चं मे वृद्धिंश्च मे सत्यं चं मे श्रद्धा चं मे जगंच मे धनं च मे वर्शश्च मे त्विषिश्च मे कीडा चं मे मोदंश्च मे जातं चं मे जिन्ष्यमाणं च मे सूक्तं चं मे सुकृतं चं मे वित्तं चं मे वेद्यं च मे भूतं चं मे भिवष्यचं मे सुगं चं मे सुपर्थं च म ऋद्धं चं मृ ऋद्धिंश्च मे क्रुप्तं चं मे क्रुप्तिंश्च मे मृतिश्चं मे सुमृतिश्चं मे॥२॥

शं च मे मयश्च मे प्रियं च मेऽनुकामश्च मे कामश्च मे सौमनुसर्श्च मे भुद्रं च

में श्रेयंश्च में वस्यंश्च में यशंश्च में भगंश्च में द्रविणं च में युन्ता चं में धूर्ता चं में क्षेमंश्च में धृतिश्च में विश्वं च में महंश्च में स्विचं में ज्ञात्रं च में सूर्श्च में प्रसूर्श्च में सीरं च में लयश्चं म ऋतं चं में ऽमृतं च में ऽयक्ष्मं च में ऽनामयच में जीवातुंश्च में दीर्घायुत्वं चं में ऽनिमृत्रं च में ऽभंयं च में सुगं चं में शर्यनं च में सूषा चं में सुदिनं च मे॥३॥

ऊर्क मे सूनृतां च मे पर्यक्ष मे रसंश्व मे घृतं चं मे मधुं च मे सिधिश्व मे सपीतिश्व मे कृषिश्वं मे वृष्टिश्व मे जैत्रं च म औद्भिंद्यं च मे रियश्वं मे रायश्व मे पुष्टं चं मे पुष्टिंश्व मे विभु चं मे प्रभु चं मे बहु चं मे भूयंश्व मे पूर्णं चं मे पूर्णतंरं च मेऽक्षितिश्व मे कूयंवाश्व मेऽत्रं च मेऽक्षंच मे वीहरयंश्व मे यवांश्व मे माषांश्व मे तिलांश्व मे मुद्राश्वं मे खुल्वांश्व मे गोधूमांश्व मे मुस्रांश्व मे प्रियङ्गंवश्व मेऽणंवश्व मे श्यामाकांश्व मे नीवारांश्व मे॥४॥

अश्मां च में मृत्तिका च में गिरयंश्च में पर्वताश्च में सिकंताश्च में वनस्पतियश्च में हिरंण्यं च मेऽयंश्च में सीसं च में त्रपृश्च में श्यामं च में लोहं च मेऽग्निश्चं म आपंश्च में वीरुधंश्च म ओषंधयश्च में कृष्टपच्यं च मेऽकृष्टपच्यं च में ग्राम्याश्चं में प्शव आर्ण्याश्चं युज्ञेन कल्पन्तां वित्तं च में वित्तिश्च में भूतं च में भूतिंश्च में वस्तुं च में वस्तिश्चं में कर्म च में शक्तिश्च मेऽर्थंश्च म एमंश्च म इतिंश्च में गतिश्च मे॥५॥

अग्निश्चं म् इन्द्रंश्च मे सोमंश्च म् इन्द्रंश्च मे सिवता चं म् इन्द्रंश्च मे सरंस्वती च म् इन्द्रंश्च मे पूषा चं म् इन्द्रंश्च मे बृह्स्पतिश्च म् इन्द्रंश्च मे मित्रश्चं म् इन्द्रंश्च मे वरुणश्च म् इन्द्रंश्च मे त्वष्टां च म् इन्द्रंश्च मे धाता चं म् इन्द्रंश्च मे विष्णुंश्च म् इन्द्रंश्च मेऽिश्वनौं च म् इन्द्रंश्च मे म्रुतंश्च म् इन्द्रंश्च मे विश्वें च मे देवा इन्द्रंश्च मे पृथिवी चं म् इन्द्रंश्च मेऽन्तरिक्षं च म् इन्द्रंश्च मे दौश्चं म्

इन्द्रंश्च मे दिशंश्च म् इन्द्रंश्च मे मूर्धा चं म् इन्द्रंश्च मे प्रजापंतिश्च म् इन्द्रंश्च मे॥६॥

अध्शुश्चं मे र्श्मिश्च मेऽदाँभ्यश्च मेऽधिंपतिश्च म उपा्ध्शुश्चं मेऽन्तर्यामश्चं म ऐन्द्रवायवश्चं मे मैत्रावरुणश्चं म आश्विनश्चं मे प्रतिप्रस्थानश्च मे शुक्तश्चं मे मन्थी च म आग्रयणश्चं मे वैश्वदेवश्चं मे ध्रुवश्चं मे वैश्वान्रश्चं म ऋतुग्रहाश्चं मेऽतिग्राह्यांश्च म ऐन्द्राग्नश्चं मे वैश्वदेवश्चं मे मरुत्वतीयांश्च मे माहेन्द्रश्चं म आदित्यश्चं मे सावित्रश्चं मे सारस्वतश्चं मे पौष्णश्चं मे पात्नीवतश्चं मे हारियोजनश्चं मे॥७॥

इध्मश्चं मे बहिश्चं मे वेदिश्च मे धिष्णियाश्च मे स्रुचंश्च मे चम्साश्चं मे ग्रावाणश्च मे स्वरंवश्च म उपर्वाश्चं मेऽधिषवंणे च मे द्रोणकल्शश्चं मे वाय्व्यांनि च मे पूतभृचं म आधवनीयंश्च म् आग्नींग्नं च मे हिव्धानं च मे गृहाश्चं मे सदंश्च मे पुरोडाशांश्च मे पचताश्चं मेऽवभृथश्चं मे स्वगाका्रश्चं मे॥८॥

अग्निश्चं मे घर्मश्चं मेऽर्कश्चं मे सूर्यश्च मे प्राणश्चं मेऽश्वमेधश्चं मे पृथिवी च मेऽदितिश्च मे दितिश्च मे द्यौश्चं मे शक्वरीर्ङ्गुलयो दिशश्च मे यज्ञेनं कल्पन्तामृक्चं मे सामं च मे स्तोमश्च मे यज्ञंश्च मे दीक्षा चं मे तपश्च म ऋतुश्चं मे व्रतं चं मेऽहोरात्रयौर्वृष्ट्या बृंहद्रथन्तुरे चं मे यज्ञेनं कल्पेताम्॥९॥

गर्भांश्व मे वृथ्साश्चं मे त्र्यविश्व मे त्र्यवी चं मे दित्यवाचं मे दित्यौही चं मे पश्चांविश्व मे पश्चांवी चं मे त्रिवृथ्सश्चं मे त्रिवृथ्सा चं मे तुर्यवाचं मे तुर्योही चं मे पष्टवाचं मे पष्टौही चं म उक्षा चं मे वृशा चं म ऋष्भश्चं मे वेहचं मेऽनृड्वां चं मे धेनुश्चं म् आयुंर्यज्ञेनं कल्पतां प्राणो यज्ञेनं कल्पतामपानो यज्ञेनं कल्पतां व्यानो यज्ञेनं कल्पतां चक्षुंर्यज्ञेनं कल्पतां थ्रोनं कल्पतां यज्ञेनं कल्पतां वाग्यज्ञेनं कल्पतामात्मा यज्ञेनं कल्पतां यज्ञो यज्ञेनं कल्पताम्॥१०॥

एकां च मे तिस्रश्चं में पश्चं च में सप्त चं में नवं च म एकांदश च में त्रयोंदश च में पश्चंदश च में स्प्तदंश च में नवंदश च म एकंविश्शितश्च में त्रयोंविश्शितश्च में पश्चंविश्शितश्च में स्प्तिविश्शितश्च में नवंविश्शितश्च में एकंत्रिश्शच में त्रयंस्त्रिश्च में चतंस्त्रश्च में उष्टों चं में द्वादंश च में पोर्डश च में विश्शितश्चं में चतुंविश्शितश्च में उष्टाविश्शितश्च में द्वात्रिश्च में पिट्टिश्च में चत्वारिश्शचं में चतुंश्चत्वारिश्शच में उष्टाचंत्वारिश्शच में वार्जश्च प्रस्वश्चांपिजश्च कर्तुश्च सुवंश्च मूर्धा च व्यक्षियश्चान्त्यायनश्चान्त्यंश्च भौवनश्च भुवंनश्चाधिपतिश्च॥११॥

महादेवादिभ्यो नमः॥ समस्तोपचारान् समर्पयामि॥

इडां देवहूर्मनुंर्यज्ञनीर्बृह्स्पतिंरुक्थाम्दानिं शश्सिष्द्विश्वेदेवाः सूँक्तवाचः पृथिवि मात्मां मां हिश्सीर्मधुं मनिष्ये मधुं जिनष्ये मधुं वक्ष्यामि मधुं विद्यामि मधुंमतीं देवेभ्यो वाचंमुद्यास शृश्रूषेण्यां मनुष्येभ्यस्तं मां देवा अवन्तु शोभाये पितरोऽनुंमदन्तु॥

॥ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥

\*\*\*

अघोरैभ्योऽथ घोरैभ्यो घोरघोरंतरेभ्यः। सर्वेभ्यः सर्वशर्वेभ्यो नमंस्ते अस्तु रुद्ररूपेभ्यः॥ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवायं धीमहि। तन्नो रुद्रः प्रचोदयात्॥

ईशानः सर्वविद्यानामीश्वरः सर्वभूतानां ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणोऽधिपतिर्ब्रह्मां शिवो में अस्तु सदाशिवोम्॥

तत्पुरुषाय विद्महें महादेवायं धीमहि। तन्नों रुद्रः प्रचोदयाँत्॥ (दशवारं जपेत्।)

महादेवादिभ्यो नमः॥ समस्तोपचारान् समर्पयामि॥



# ॥ प्रार्थना ॥



### ॥श्रीरुद्रजपः॥

अस्य श्री रुद्राध्याय-प्रश्न-महामन्नस्य। अघोर ऋषिः। अनुष्टुप् छन्दः। सङ्कर्षणमूर्तिस्वरूपो योऽसावादित्यः परमपुरुषः स एष रुद्रो देवता॥

नमः शिवायेति बीजम्। शिवतरायेति शक्तिः। महादेवायेति कीलकम्। श्री साम्बसदाशिवप्रसादसिद्धार्थे जपे विनियोगः॥

॥करन्यासः॥

ॐ अग्निहोत्रात्मने अङ्गृष्ठाभ्यां नमः। दर्शपूर्णमासात्मने तर्जनीभ्यां नमः। चातुर्मास्यात्मने मध्यमाभ्यां नमः। निरूढपशुबन्धात्मने अनामिकाभ्यां नमः। ज्योतिष्टोमात्मने कनिष्ठिकाभ्यां नमः। सर्वऋत्वात्मने करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

॥अङ्गन्यासः॥

अग्निहोत्रात्मने हृदयाय नमः। दर्शपूर्णमासात्मने शिरसे स्वाहा। चातुर्मास्यात्मने शिखायै वषट्। निरूढपशुबन्धात्मने कवचाय हुं। ज्योतिष्टोमात्मने नेत्रत्रयाय वौषट्। सर्वक्रत्वात्मने अस्त्राय फट्। भूर्भुवस्सुवरोमिति दिग्बन्धः।

#### ॥ध्यानम्॥

आपाताल-नभः-स्थलान्त-भुवन-ब्रह्माण्डमाविस्फुरत् ज्योतिः स्फाटिक-लिङ्ग-मौलि-विलसत्-पूर्णेन्दु-वान्तामृतैः। अस्तोकाप्नुतमेकमीशमनिशं रुद्रानुवाकान् जपन् ध्यायेदीप्सितसिद्धये ध्रुवपदं विप्रोऽभिषिश्चेच्छिवम्॥

ब्रह्माण्ड-व्याप्त-देहा भिसत-हिमरुचा भासमाना भुजङ्गेः कण्ठे कालाः कपर्दा-कलित-शशि-कलाश्चण्ड-कोदण्ड-हस्ताः। त्र्यक्षा रुद्राक्षमालाः प्रकटित-विभवाः शाम्भवा मूर्तिभेदाः रुद्राः श्रीरुद्रसूक्त-प्रकटित-विभवा नः प्रयच्छन्तु सौख्यम्॥ ॥पञ्चपूजा॥

लं पृथिव्यात्मने गन्धं समर्पयामि। हं आकाशात्मने पूष्पैः पूजयामि। यं वाय्वात्मने धूपमाघ्रापयामि। रं अग्र्यात्मने दीपं दर्शयामि। वं अमृतात्मने अमृतं महानैवेद्यं निवेदयामि। सं सर्वात्मने सर्वोपचारपूजां समर्पयामि।

ॐ गृणानां त्वा गृणपंति हवामहे कविं केवीनामुंपमश्रंवस्तमम्। ज्येष्ठराजं ब्रह्मणां ब्रह्मणस्पत् आ नंः शृण्वन्नूतिभिः सीद् सादेनम्॥ ॐ महागणपतये नर्मः॥

शं चं मे मयंश्व मे प्रियं चं मेऽनुकामश्चं मे कामंश्व मे सौमनुसर्श्व मे

भद्रं चं में श्रेयंश्च में वस्यंश्च में यशंश्च में भगंश्च में द्रविणं च में यन्ता चं में धूर्ता चं में क्षेमंश्च में धृतिंश्च में विश्वं च में महंश्च में स्विचं में ज्ञात्रं च में सूर्श्च में प्रसूर्श्च में सीरं च में ल्यश्चं म ऋतं चं मेऽमृतं च मेऽयक्ष्मं च मेऽनामयच में जीवातुंश्च में दीर्घायुत्वं च मेऽनिमृतं च में अर्थनं च में सूर्या चं में सूर्यनं च में सूर्या चं में सूर्यनं च मे॥ ॥ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥

### ॥ रुद्रप्रश्नः॥

ॐ नमो भगवते रुद्राय॥ नमस्ते रुद्र मृन्यवं उतो त इषवे नमः। ... अभिषेकः—प्रथमं गन्धतोयं च

त्र्यम्बकं यजामहे सुगृन्धिं पृष्टिवर्धनम्। उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मृक्षीय माऽमृतौत्॥

अग्नांविष्णू स्जोषंसेमा वंधन्तु वां गिरंः। द्युम्नैर्वाजेंभिरागंतम्॥ वार्जश्च मे प्रस्वश्चं मे प्रयंतिश्च मे प्रसितिश्च मे धीतिश्चं मे कतुंश्च मे स्वरंश्च मे श्लोकंश्च मे श्रावश्चं मे श्रुतिश्च मे ज्योतिश्च मे सुवंश्च मे प्राणश्चं मेऽपानश्चं मे व्यानश्च मेऽसुंश्च मे चित्तं चं म आधीतं च मे वार्क्च मे मनश्च मे चक्षुंश्च मे श्लोकं च मे दक्षंश्च मे बलं च म ओजंश्च मे सहंश्च म आयुंश्च मे ज्ञरा चं म आत्मा चं मे त्नश्चं मे शर्मं च मे वर्मं च मेऽङ्गांनि च मेऽस्थानिं च मे परूरंषि च मे शरीराणि च मे॥

धूपम्। दीपम्। नैवेद्यम्।

#### नीराजनम्—

यो देवानां प्रथमं पुरस्ताद्विश्वाधियों रुद्रो महर्षिः। हिर्ण्यगर्भं पंश्यत जायमान् स नो देवः शुभया स्मृत्याः संयुनक्तु॥ अनेन प्रथम-वार-जपेन भगवान् सर्वात्मकः महादेवः सुप्रीतः सुप्रसन्नो वरदो भवतु॥१॥

#### ॥ रुद्रप्रश्नः॥

ॐ नमो भगवते रुद्राय॥ नमस्ते रुद्र मृन्यवं उतो त इषवे नमः। ... अभिषेकः—द्वितीयं पश्चगव्यकम्।

त्र्यम्बकं यजामहे सुगृन्धिं पृष्टिवर्धनम्। उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योमृक्षीय माऽमृतात्॥

ज्यैष्ठ्यं च म आधिपत्यं च मे मृन्युश्चं मे भामश्च मेऽमंश्च मेऽम्भंश्च मे जेमा चं मे मिह्मा चं मे विर्मा चं मे प्रिथमा चं मे वृष्मा चं मे द्राघुया चं मे वृद्धं चं मे वृद्धिश्च मे सत्यं चं मे श्रद्धा चं मे जगंच मे धनं च मे वशंश्च मे त्विषिश्च मे कीडा चं मे मोदंश्च मे जातं चं मे जिन्ष्यमाणं च मे सूक्तं चं मे सुकृतं चं मे वित्तं चं मे वेद्यं च मे भूतं चं मे भिवष्यचं मे सुगं चं मे सुपर्थं च म ऋद्धं चं म ऋद्धिश्च मे कृतं चं मे कृतिंश्च मे मृतिश्चं मे सुमृतिश्चं मे॥

> धूपम्। दीपम्। नैवेद्यम्। नीराजनम्—

यस्मात्परं नापंरमस्ति किञ्चिद्यस्मान्नाणीयो न ज्यायौँऽस्ति कश्चित्। वृक्ष इंव स्तब्धो दिवि तिष्ठत्येकस्तेनेदं पूर्णं पुरुषेण सर्वम्॥ अनेन द्वितीय-वार-जपेन भगवान् सर्वात्मकः शिवः सुप्रीतः सुप्रसन्नो वरदो भवतु॥१॥

#### ॥ रुद्रप्रश्नः॥

ॐ नमो भगवते रुद्राय॥ नमंस्ते रुद्र मृन्यवं उतो त इषवे नमंः। ... अभिषेकः—पश्चामृतं तृतीयं स्यात्

त्र्यंम्बकं यजामहे सुगृन्धिं पुंष्टिवर्धनम्। उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्॥

शं चं में मयंश्व में प्रियं चं मेऽनुकामश्चं में कामंश्व में सौमन्सर्श्वं में भूद्रं चं में श्रेयंश्व में वस्यंश्व में यशंश्व में भगंश्व में द्रविणं च में यन्ता चं में धर्ता चं में क्षेमंश्व में धृतिंश्व में विश्वं च में महंश्व में स्विचं में ज्ञात्रं च में सूर्श्वं में प्रसूर्श्वं में सीरं च में लयश्चं म ऋतं चं मेऽमृतं च मेऽयक्ष्मं च मेऽनामयच में जीवातुंश्व में दीर्घायुत्वं चं मेऽनिमृत्रं च मेऽभंयं च में सुगं चं में शयंनं च में सूषा चं में सुदिनंं च मे॥

#### धूपम्। दीपम्। नैवेद्यम्। नीराजनम्—

न कर्मणा न प्रजया धर्नेन त्यागेनैके अमृत्त्वमांन्शुः। परेण नाकुं निहिंतुं गुहांयां विभाजंदेतद्यतंयो विशन्ति॥ अनेन तृतीय-वार-जपेन भगवान् सर्वात्मकः श्री रुद्रः सुप्रीतः सुप्रसन्नो वरदो भवतु॥१॥

#### ॥ रुद्रप्रश्नः॥

ॐ नमो भगवते रुद्राय॥ नमस्ते रुद्र मृन्यवं उतो त इषवे नमः। ... अभिषेकः—घृतस्नानं चतुर्थकम्॥

त्र्यम्बकं यजामहे सुगृन्धिं पृष्टिवर्धनम्। उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मृक्षीय माऽमृतात्॥

ऊर्क मे सूनृतां च मे पर्यक्ष मे रसंश्व मे घृतं चं मे मधुं च मे सिधिश्व मे सिपिश्व मे सिपिश्व मे कृषिश्वं मे वृष्टिश्व मे जैत्रं च म औद्भिंद्यं च मे रियश्वं मे रायश्व मे पुष्टं चं मे पुष्टिश्व मे विभु चं मे प्रभु चं मे बहु चं मे भूयंश्व मे पूर्णं चं मे पूर्णतंरं च मेऽक्षितिश्व मे कूयंवाश्व मेऽत्रं च मेऽक्षेच मे व्रीहर्यश्व मे यवांश्व मे माषांश्व मे तिलांश्व मे मुद्राश्वं मे खुल्वांश्व मे गोधूमांश्व मे मुस्रांश्व मे प्रियङ्गंवश्व मेऽणंवश्व मे श्यामकांश्व मे नीवारांश्व मे॥

धूपम्। दीपम्। नैवेद्यम्। नीराजनम्— वेदान्त्विज्ञानसुनिश्चितार्थाः सन्त्र्यांस योगाद्यतंयः शुद्धसत्त्वाः। ते ब्रह्मलोके तु परान्तकाले परामृतात्परिमुच्यन्ति सर्वे॥ अनेन चतुर्थ-वार-जपेन भगवान् सर्वात्मकः शङ्करः सुप्रीतः सुप्रसन्नो वरदो भवतु॥१॥

#### ॥ रुद्रप्रश्नः ॥

ॐ नमो भगवते रुद्राय॥

नमस्ते रुद्र मुन्यवं उतो तु इषवे नमः। ... अभिषेकः—पश्चमं पयसा स्नानं

्रयम्बकं यजामहे सुगुन्धिं पुंष्टिवर्धनम्।

उर्वारुकमिव बन्धेनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतांत्॥

अश्मां च में मृतिंका च में गिरयंश्च में पर्वताश्च में सिकंताश्च में वनस्पतंयश्च में हिरंण्यं च मेऽयंश्च में सीसं च में त्रपृंश्च में श्यामं चं में लोहं चं मेऽग्निश्चं म आपंश्च में वीरुधंश्च म ओषंधयश्च में कृष्टपच्यं चं मेऽकृष्टपच्यं चं में ग्राम्याश्चं में प्शवं आर्ण्याश्चं युज्ञेनं कल्पन्तां वित्तं चं में वित्तिंश्च में भूतं चं में भूतिंश्च में वस्ं च में वस्तिश्चं में कर्म च में शक्तिंश्च मेऽर्थंश्च म एमंश्च म इतिंश्च में गितिश्च मे॥

> धूपम्। दीपम्। नैवेद्यम्। नीराजनम्— दुहुं विपापं पुरमें ऽश्मभूतं यत्पुंण्डरीकं पुरमंध्यस् इस्थम्। तृत्रापि दहं गुगनं विशोकस्तस्मिन् यदन्तस्तदुपांसित्व्यम्॥ अनेन पश्चम-वार-जपेन भगवान् सर्वात्मकः नीललोहितः सुप्रीतः सुप्रसन्नो वरदो भवतु॥१॥

#### ॥ रुद्रप्रश्नः ॥

ॐ नमो भगवते रुद्राय॥ नमस्ते रुद्र मृन्यवं उतो त इषवे नमः। ... अभिषेकः—दिधस्नानं तु षष्ठकम्।

# त्र्यम्बकं यजामहे सुगृन्धिं पुष्टिवर्धनम्। उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्॥

अग्निश्चं म् इन्द्रंश्च मे सोमंश्च म् इन्द्रंश्च मे सिवता चं म् इन्द्रंश्च मे सरंस्वती च म् इन्द्रंश्च मे पूषा चं म् इन्द्रंश्च मे बृह्स्पतिंश्च म् इन्द्रंश्च मे मित्रश्चं म् इन्द्रंश्च मे वरुणश्च म् इन्द्रंश्च मे त्वष्टां च म् इन्द्रंश्च मे धाता चं म् इन्द्रंश्च मे विष्णुंश्च म् इन्द्रंश्च मेऽश्विनौं च म् इन्द्रंश्च मे म्रुतंश्च म् इन्द्रंश्च मे विश्वं च मे देवा इन्द्रंश्च मे पृथिवी चं म् इन्द्रंश्च मेऽन्तरिंश्चं च म् इन्द्रंश्च मे द्रोश्चं म् इन्द्रंश्च मे द्रवा इन्द्रंश्च मे द्रवा इन्द्रंश्च मे पूर्णा चं म् इन्द्रंश्च मे प्रजापंतिश्च म् इन्द्रंश्च मे॥

धूपम्। दीपम्। नैवेद्यम्। नीराजनम्— यो वेदादौ स्वंरः प्रोक्तो वेदान्तें च प्रतिष्ठिंतः। तस्यं प्रकृतिंलीनस्य यः परंः स मृहेश्वंरः॥ अनेन षष्ठम-वार-जपेन भगवान् सर्वात्मकः ईशानः सुप्रीतः सुप्रसन्नो वरदो भवतु॥१॥

#### ॥ रुद्रप्रश्नः॥

ॐ नमो भगवर्ते रुद्राय॥ नमस्ते रुद्र मुन्यवं उतो तु इषवे नमः। ... अभिषेकः—सप्तमं मधुना स्नानम्

त्र्यम्बकं यजामहे सुगृन्धिं पृष्टिवर्धनम्। उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योमृक्षीय माऽमृतात्॥ अन्शुश्चं मे रिश्मिश्च मेऽदाँभ्यश्च मेऽधिंपतिश्च म उपान्शुश्चं मेऽन्तर्यामश्चं म ऐन्द्रवायवश्चं मे मैत्रावरुणश्चं म आश्विनश्चं मे प्रतिप्रस्थानश्च मे शुक्तश्चं मे मन्थी च म आग्रयणश्चं मे वैश्वदेवश्चं मे ध्रुवश्चं मे वैश्वान्रश्चं म ऋतुग्रहाश्चं मेऽतिग्राह्यांश्च म ऐन्द्राग्नश्चं मे वैश्वदेवश्चं मे मरुत्वतीयांश्च मे माहेन्द्रश्चं म आदित्यश्चं मे सावित्रश्चं मे सारस्वतश्चं मे पौष्णश्चं मे पालीवतश्चं मे हारियोजनश्चं मे॥

> धूपम्। दीपम्। नैवेद्यम्। नीराजनम्— सद्योजातं प्रपद्यामि सद्योजाताय वै नमो नर्मः। भवे भवे नाति भवे भवस्व माम्। भवोद्भवाय नर्मः॥ अनेन सप्तम-वार-जपेन भगवान् सर्वात्मकः विजयः सुप्रीतः सुप्रसन्नो वरदो भवतु॥१॥

#### ॥ रुद्रप्रश्नः॥

ॐ नमो भगवर्ते रुद्राय॥ नमस्ते रुद्र मुन्यवं उतो तु इषवे नमः। ... अभिषेकः—इक्षुसारमथाष्टमम्॥

त्र्यम्बकं यजामहे सुगुन्धिं पृष्टिवर्धनम्। उर्वारुकिमेव बन्धनान्मृत्योर्मृक्षीय माऽमृतात्॥

इध्मश्चं मे बहिश्चं मे वेदिश्च मे धिष्णियाश्च मे स्रुचंश्च मे चम्साश्चं मे ग्रावांणश्च मे स्वरंवश्च म उपर्वार्श्च मेऽधिषवंणे च मे द्रोणकलुशश्चं मे वाय्व्यांनि च मे पूत्भृचं म आधवनीयंश्च म् आग्नींग्नं च मे हिव्धानं च मे गृहाश्चं मे सदेश्च मे पुरोडाशांश्च मे पचताश्चं मेऽवभृथश्चं मे स्वगाका्रश्चं मे॥

#### धूपम्। दीपम्। नैवेद्यम्। नीराजनम्—

वामदेवाय नमों ज्येष्ठाय नमेः श्रेष्ठाय नमों रुद्राय नमः कालाय नमः कर्लविकरणाय नमो बलंविकरणाय नमो बलाय नमो बलंप्रमथनाय नमः

> सर्वभूतदमनाय नमो मनोन्मनाय नमेः॥ अनेन अष्टम-वार-जपेन भगवान् सर्वात्मकः भीमः सुप्रीतः सुप्रसन्नो वरदो भवतु॥१॥

#### ॥ रुद्रप्रश्नः॥

ॐ नमो भगवर्ते रुद्राय॥ नमस्ते रुद्र मुन्यवं उतो तु इषवे नमः। ... अभिषेकः—नवमं फलसारं च

त्र्यम्बकं यजामहे सुगृन्धिं पुष्टिवर्धनम्। उर्वारुकिमीव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतांत्॥

अग्निश्चं मे घर्मश्चं मेऽर्कश्चं मे सूर्यंश्च मे प्राणश्चं मेऽश्वमेधश्चं मे पृथिवी च मेऽदितिश्च मे दितिश्च मे द्यौश्चं मे शक्तरीर्ङ्गुलयो दिशंश्च मे यज्ञेनं कल्पन्तामृक्चं मे सामं च मे स्तोमश्च मे यज्ञंश्च मे दीक्षा चं मे तपंश्च म ऋतुश्चं मे वृतं चं मेऽहोरात्रयौर्वृष्ट्या बृंहद्रथन्तुरे चं मे युज्ञेनं कल्पेताम्॥

> धूपम्। दीपम्। नैवेद्यम्। नीराजनम्— अघोरैंभ्योऽथ् घोरैंभ्यो घोरघोरंतरेभ्यः। सर्वेंभ्यः सर्वृशर्वेंभ्यो नमस्ते अस्तु रुद्ररूपेभ्यः॥

अनेन नवम-वार-जपेन भगवान् सर्वात्मकः देवदेवः सुप्रीतः सुप्रसन्नो वरदो भवतु॥१॥

#### ॥ रुद्रप्रश्नः॥

ॐ नमो भगवते रुद्राय॥ नमस्ते रुद्र मृन्यवं उतो त इषवे नमः। ... अभिषेकः—दशमं नाळिकेरकम्।

त्र्यम्बकं यजामहे सुगृन्धिं पुष्टिवर्धनम्। उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्॥

गर्भांश्व मे वृथ्साश्चं मे त्र्यविश्व मे त्र्युवी चं मे दित्युवाचं मे दित्यौही चं मे पश्चांविश्व मे पश्चावी चं मे त्रिवृथ्सश्चं मे त्रिवृथ्सा चं मे तुर्युवाचं मे तुर्यौही चं मे पष्ठवाचं मे पष्ठौही चं म उक्षा चं मे वृशा चं म ऋष्भश्चं मे वृहचं मेऽनुङ्वां चं मे धेनुश्चं म् आयुर्यज्ञेनं कल्पतां प्राणो यज्ञेनं कल्पतामपानो यज्ञेनं कल्पतां व्यानो यज्ञेनं कल्पतां चक्षुंर्यज्ञेनं कल्पतां श्रोत्रं यज्ञेनं कल्पतां मनो यज्ञेनं कल्पतां वाग्यज्ञेनं कल्पतामात्मा यज्ञेनं कल्पता यज्ञोनं कल्पतामा॥

धूपम्। दीपम्। नैवेद्यम्। नीराजनम्— तत्पुरुंषाय विद्महें महादेवायं धीमहि। तन्नों रुद्रः प्रचोदयाँत्॥ अनेन **दशम**-वार-जपेन भगवान् सर्वात्मकः भवोद्भवः सुप्रीतः सुप्रसन्नो वरदो भवतु॥१॥

#### ॥ रुद्रप्रश्नः॥

ॐ नमो भगवते रुद्राय॥ नमंस्ते रुद्र मृन्यवं उतो त इषवे नमंः। ... अभिषेकः—एकादशं गन्धतोयं द्वादशं तीर्थमुच्यते॥

त्र्यम्बकं यजामहे सुगृन्धिं पुष्टिवर्धनम्। उर्वारुकिमीव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्॥

यो रुद्रो अग्नौ यो अपसु य ओषंधीषु यो रुद्रो विश्वा भुवंनाऽऽविवेश तस्मैं रुद्राय नमों अस्तु॥ तमृंष्टुहि यः स्विषुः सुधन्वा यो विश्वंस्य क्षयंति भेषजस्यं। (ऋक्) यक्ष्वांमहे सौंमन्सायं रुद्रं नमोंभिर्देवमसुंरं दुवस्य॥ अयं मे हस्तो भगंवान्यं मे भगंवत्तरः। अयं में विश्वभेषजोऽयं शिवाभिमर्शनः॥

ये ते सहस्रंम्युतं पाशा मृत्यो मर्त्यांय हन्तेवे। तान् यज्ञस्यं मायया सर्वानवं यजामहे। मृत्यवे स्वाहां मृत्यवे स्वाहां॥ ओं नमो भगवते रुद्राय विष्णवे मृत्युंर्मे पाहि। प्राणानां ग्रन्थिरिस रुद्रो मां विशान्तकः। तेनान्नेनांप्यायस्व॥ नमो रुद्राय विष्णवे मृत्युंर्मे पाहि॥

एकां च मे तिस्रश्चं मे पश्चं च मे स्प्ता चं मे नवं च म एकांदश च मे त्रयोंदश च मे पश्चंदश च मे स्प्तादंश च मे नवंदश च म एकंवि शिक्ष मे त्रयोंवि शिक्ष मे पश्चंवि शिक्ष मे स्प्तावि शिक्ष मे नवंवि शिक्ष मे प्रयंवि शिक्ष मे प्रयंवि शिक्ष मे स्प्तावि शिक्ष मे नवंवि शिक्ष म एकंति श्रा मे त्रयंस्त्रि श्राच मे चतंस्रश्च मे उष्टावि शिक्ष मे द्वादंश च मे षो हंश च मे विश्वातिश्चं मे चतुंवि शिक्ष मे उष्टावि श्रातिश्च मे द्वाति श्रीच मे प्रयंवि श्रातिश्च मे प्रयंवि श्रातिश्च मे प्रयंवि श्रावि श्रावि श्राच मे वार्जश्च प्रस्वश्चापि जश्च कतुंश्च सुवंश्च मूर्धा च व्यक्षियश्चान्त्याय नश्चान्त्यंश्च भौवनश्च भुवंनश्चाधिंपतिश्च॥

#### धूपम्। दीपम्। नैवेद्यम्। नीराजनम्—

ईशानः सर्वविद्यानामीश्वरः सर्वभूतानां ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणोऽधिपतिर्ब्रह्मां शिवो में अस्तु सदाशिवोम्॥

अनेन एकादश-वार-जपेन भगवान् सर्वात्मकः आदित्यात्मकः श्री रुद्रः सुप्रीतः सुप्रसन्नो वरदो भवतु॥१॥

[इडां देवहूर्मनुंर्यज्ञनीर्बृह्स्पतिंरुक्थामदानिं शश्सिष्द्विश्वेदेवाः सूँक्तवाचः पृथिवि मात्मां मां हिश्सीर्मधुं मनिष्ये मधुं जनिष्ये मधुं वक्ष्यामि मधुं विषयामि मधुं विषयामि मधुंमतीं देवेभ्यो वाचंमुद्यासश् शुश्रूषेण्यां मनुष्येभ्यस्तं मां देवा अवन्तु शोभाये पितरोऽनुंमदन्तु॥]

॥ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥

#### \*\*\*

स्नानानन्तरम् आचमनीयं समर्पयामि॥७॥ साक्षतजलेन तर्पणं कार्यम्॥

ॐ भवं देवं तर्पयामि। ॐ शर्वं देवं तर्पयामि। ॐ ईशानं देवं तर्पयामि। ॐ पशुपतिं देवं तर्पयामि। ॐ रुद्रं देवं तर्पयामि। ॐ उग्रं देवं तर्पयामि। ॐ भीमं देवं तर्पयामि। ॐ महान्तं देवं तर्पयामि॥

ॐ भवस्य देवस्य पत्नीं तर्पयामि। ॐ शर्वस्य देवस्य पत्नीं तर्पयामि। ॐ ईशानस्य देवस्य पत्नीं तर्पयामि। ॐ पशुपतेर्देवस्य पत्नीं तर्पयामि। ॐ रुद्रस्य देवस्य पत्नीं तर्पयामि। ॐ उग्रस्य देवस्य पत्नीं तर्पयामि। ॐ भीमस्य देवस्य पत्नीं तर्पयामि। ॐ महतो देवस्य पत्नीं तर्पयामि॥

असौ योंऽवसर्पति नीलंग्रीवो विलोहितः। उतैनं गोपा अंदश्तृदंशन्रुदहार्यः। उतैनं विश्वां भूतानि स दृष्टो मृंडयाति नः॥ ॐ हीं नमः शिवायं। रुद्राय नमः। वस्रोत्तरीयं समर्पयामि॥८॥

नमों अस्तु नीलंग्रीवाय सहस्राक्षायं मीढुषें। अथो ये अस्य सत्वांनोऽहं तेभ्योंऽकरं नमंः॥ ॐ हीं नमः शिवायं। कालाय नमंः। यज्ञोपवीताभरणानि समर्पयामि॥९॥

प्र मृंश्च धन्वंनस्त्वमुभयोरार्ह्नियोज्याम्। याश्चं ते हस्त इषंवः परा ता भंगवो वप॥ ॐ हीं नमः शिवायं। कलंविकरणाय नमः। दिव्यपरिमलगन्धान् धारयामि। गन्धस्योपरि अक्षतान् समर्पयामि॥१०॥

अवृतत्य धनुस्त्व सहंस्राक्ष शतेषुधे। निशीर्य शृल्यानां मुखां शिवो नेः सुमनां भव॥ ॐ हीं नृमः शिवायं। बलंविकरणाय नर्मः। पुष्पेः पूजयामि॥११॥

ॐ भवाय देवाय नमः। ॐ शर्वाय देवाय नमः।
ॐ ईशानाय देवाय नमः। ॐ पशुपतये देवाय नमः।
ॐ रुद्राय देवाय नमः। ॐ उग्राय देवाय नमः।
ॐ भीमाय देवाय नमः। ॐ महते देवाय नमः॥
ॐ भवस्य देवस्य पत्यै नमः। ॐ शर्वस्य देवस्य पत्यै नमः।
ॐ ईशानस्य देवस्य पत्यै नमः। ॐ पशुपतेर्देवस्य पत्यै नमः।
ॐ रुद्रस्य देवस्य पत्यै नमः। ॐ उग्रस्य देवस्य पत्यै नमः।
ॐ भीमस्य देवस्य पत्यै नमः। ॐ महतो देवस्य पत्यै नमः॥

## ॥श्रीरुद्रनाम त्रिशती॥

नमो हिरंण्यबाहवे नर्मः। सेनान्ये नर्मः। दिशां च पत्ये नर्मः। नर्मो वृक्षेभ्यो नर्मः। हरिकेशेभ्यो नर्मः। पुशूनां पत्ये नर्मः।

नमः सस्पिञ्जराय नमः। त्विषीमते नमः। पृथीनां पत्ये नमः। नमो बभुशाय नमः। विव्याधिने नर्मः। अन्नानां पर्तये नर्मः। नमो हरिकेशाय नमंः। उपवीतिने नमंः। पुष्टानां पत्तेये नर्मः। नर्मो भवस्यं हेत्यै नर्मः। जगतां पत्रये नर्मः। नर्मो रुद्राय नर्मः। आतताविने नर्मः। क्षेत्राणां पतंये नर्मः। नमः सूताय नमः। अहंन्त्याय नमः। वर्नानां पत्ये नर्मः। नमो रोहिताय नर्मः। स्थपतंये नर्मः। वृक्षाणां पतंये नर्मः। नमों मन्त्रिणे नमः। वाणिजाय नमः। कक्षाणां पतिये नर्मः। नर्मो भुवन्तये नर्मः। वारिवस्कृताय नर्मः। ओषंधीनां पतंये नर्मः। नमं उचैर्घोषाय नमंः। आऋन्दयंते नमंः। पत्तीनां पतंये नर्मः। नर्मः कृथ्स्नवीताय नर्मः। धावंते नर्मः। सत्त्वंनां पतंये नर्मः॥ नमः सहमानाय नमः। निव्याधिने नमः। आव्याधिनीनां पत्रये नर्मः। नर्मः ककुभाय नर्मः। निषङ्गिणे नर्मः। स्तेनानां पत्ये नर्मः। नमों निषङ्गिणे नमंः। इषुधिमते नमंः। तस्कराणां पत्रये नर्मः। नमो वश्चेते नर्मः। परिवर्श्वते नर्मः। स्तायूनां पर्तये नर्मः। नमों निचेरवे नमः। परिचराय नमः। अरंण्यानां पर्तये नर्मः। नर्मः सृकाविभ्यो नर्मः।

जिघा रंसज्ञो नर्मः। मुष्णुतां पतंये नर्मः। नमोऽसिमन्द्यो नर्मः। नक्तं चरन्द्र्यो नर्मः। प्रकृन्तानां पतंये नमंः। नमं उष्णीषिने नमंः। गिरिचराय नर्मः। कुलुश्चानां पतेये नर्मः। नम् इषुंमन्ध्यो नर्मः। धन्वाविभ्यंश्च नर्मः। वो नर्मः। नमं आतन्वानेभ्यो नमंः। प्रतिदर्धानेभ्यश्च नमंः। वो नमंः। नमं आयच्छं च्यो नमंः। विसृजद्धंश्च नमंः। वो नमंः। नमोऽस्यंद्र्यो नर्मः। विर्ध्यंद्र्यश्च नर्मः। वो नर्मः। नम आसीनेभ्यो नर्मः। शयानेभ्यश्च नर्मः। वो नर्मः। नर्मः स्वपद्धो नर्मः। जाग्रद्धश्च नर्मः। वो नर्मः। नमस्तिष्ठं स्रो नर्मः। धावं स्रश्च नर्मः। वो नर्मः। नमः सभाभ्यो नमः। सभापंतिभ्यश्च नमः। वो नमः। नमो अर्थेभ्यो नर्मः। अर्थपतिभ्यश्च नर्मः। वो नर्मः॥ नमं आव्याधिनींभ्यो नमंः। विविध्यंन्तीभ्यश्च नमंः। वो नमंः। नम् उर्गणाभ्यो नर्मः। तृ ऱ्हतीभ्यश्च नर्मः। वो नर्मः। नमों गृथ्सेभ्यो नर्मः। गृथ्सपंतिभ्यश्च नर्मः। वो नर्मः। नमो व्रातेंभ्यो नमंः। व्रातंपतिभ्यश्च नमंः। वो नमंः। नमों गणेभ्यो नमंः। गणपंतिभ्यश्च नमंः। वो नमंः। नमो विरूपेभ्यो नर्मः। विश्वरूपेभ्यश्च नर्मः। वो नर्मः। नमों मृहज्ञो नमंः। क्षुष्ठकेभ्यंश्च नमंः। वो नमंः। नमों रथिभ्यो नर्मः। अरथेभ्यंश्च नर्मः। वो नर्मः। नमो रथेंभ्यो नर्मः। रथंपतिभ्यश्च नर्मः। वो नर्मः। नमः सेनाभ्यो नमः। सेनानिभ्यंश्च नमः। वो नमः। नर्मः क्षुत्तृभ्यो नर्मः। सङ्ग्रहीतृभ्यंश्च नर्मः। वो नर्मः।

नमस्तक्षंभ्यो नमंः। रथकारेभ्यंश्च नमंः। वो नमंः। नमः कुलालेभ्यो नर्मः। कमरिभ्यश्च नर्मः। वो नर्मः। नर्मः पुञ्जिष्टैभ्यो नर्मः। निषादेभ्यंश्च नर्मः। वो नर्मः। नमं इषुकृज्यो नमः। धुन्वुकृज्यश्च नमः। वो नमः। नमों मृग्युभ्यो नमंः। श्वनिभ्यंश्च नमंः। वो नमंः। नमः श्वभ्यो नर्मः। श्वपंतिभ्यश्च नर्मः। वो नर्मः॥ नमों भवायं च नमंः। रुद्रायं च नमंः। नमः शुर्वायं च नमः। पुशुपतये च नमः। नमो नीलंग्रीवाय च नमंः। शितिकण्ठांय च नमंः। नमः कपर्दिने च नमः। व्युप्तकेशाय च नमः। नमः सहस्राक्षायं च नमः। शतधंन्वने च नमः। नमों गिरिशायं च नमंः। शिपिविष्टायं च नमंः। नमों मीढुष्टंमाय च नमंः। इषुंमते च नमंः। नमौ हस्वायं च नमंः। वामनायं च नमंः। नमों बृहते च नमंः। वर्षीयसे च नमंः। नमों वृद्धायं च नमंः। संवृध्वेने च नमंः। नमो अग्नियाय च नमंः। प्रथमायं च नमंः। नमें आशवें च नमंः। अजिरायं च नमंः। नमः शीघ्रियाय च नमः। शीभ्याय च नमः। नमं ऊर्म्याय च नमंः। अवस्वन्याय च नमंः। नर्मः स्रोतस्याय च नर्मः। द्वीप्याय च नर्मः॥ नमों ज्येष्ठायं च नमंः। कनिष्ठायं च नमंः। नमः पूर्वजायं च नमः। अपरजायं च नमः।

नमों मध्यमायं च नमंः। अपगल्भायं च नमंः। नमों जघन्यांय च नमंः। बुध्नियाय च नमंः। नर्मः सोभ्याय च नर्मः। प्रतिसर्याय च नर्मः। नमो याम्याय च नमः। क्षेम्याय च नमः। नमें उर्वर्याय च नमेः। खल्याय च नमेः। नमः श्लोक्याय च नमः। अवसान्याय च नमः। नमो वन्याय च नमः। कक्ष्याय च नमः। नमः श्रवायं च नमः। प्रतिश्रवायं च नमः। नमं आशुर्षेणाय च नमंः। आशुरंथाय च नमंः। नमः शूराय च नमः। अवभिन्दते च नमः। नमों वर्मिणें च नमंः। वरूथिनें च नमंः। नमों बिल्मिने च नमंः। कवचिने च नमंः। नर्मः श्रुतायं च नर्मः। श्रुत्सेनायं च नर्मः॥ नमों दुन्दुभ्याय च नमः। आह्नुन्याय च नमः। नमों धृष्णवें च नमंः। प्रमृशायं च नमंः। नमों दूतायं च नमंः। प्रहिंताय च नमंः। नमों निष्क्रिणे च नमंः। इषुधिमते च नमंः। नमंस्तीक्ष्णेषंवे च नमंः। आयुधिनं च नमंः। नमः स्वायुधायं च नमः। सुधन्वने च नमः। नमः स्रुत्याय च नमः। पथ्याय च नमः। नमः काट्याय च नमः। नीप्याय च नमः। नमः सूद्याय च नमः। सरस्याय च नमः। नमों नाद्यायं च नमंः। वैशन्तायं च नमंः।

नमः कूप्याय च नमः। अवट्याय च नमः। नमो वर्ष्याय च नमः। अवर्ष्यायं च नमः। नमों मेध्यांय च नमंः। विद्युत्यांय च नमंः। नमं ईध्रियांय च नमंः। आतप्यांय च नमंः। नमो वात्याय च नर्मः। रेष्मियाय च नर्मः। नमो वास्तव्याय च नमः। वास्तुपायं च नमः॥ नमः सोमाय च नमः। रुद्रायं च नमः। नर्मस्ताम्रायं च नर्मः। अरुणायं च नर्मः। नमः शुङ्गायं च नमः। पुशुपतंये च नमः। नमं उग्रायं च नमंः। भीमायं च नमंः। नमों अग्रेवधायं च नमंः। दूरेवधायं च नमंः। नमों हन्ने च नमंः। हनीयसे च नमंः। नमों वृक्षेभ्यो नमंः। हरिकेशेभ्यो नमंः। नमंस्ताराय नमंः। नमंः शम्भवे च नमंः। मयोभवें च नर्मः। नर्मः शङ्करायं च नर्मः। मयस्करायं च नमंः। नमंः शिवायं च नमंः। शिवतंराय च नमंः। नमस्तीर्थ्याय च नमंः। कूल्याय च नमंः। नमंः पार्याय च नमंः। अवार्याय च नर्मः। नर्मः प्रतरेणाय च नर्मः। उत्तरंणाय च नर्मः। नर्म आतार्याय च नर्मः। -आलाद्याय च नर्मः। नमः शष्ट्याय च नर्मः। फेन्याय च नर्मः। नर्मः सिकत्याय च नर्मः। प्रवाह्यांय च नर्मः॥

नमं इरिण्यांय च नमंः। प्रपथ्यांय च नमंः। नमः कि शिलायं च नमः। क्षयंणाय च नमः। नमः कपर्दिने च नमः। पुलुस्तये च नमः। नमो गोष्ट्यांय च नमंः। गृह्यांय च नमंः। नमस्तल्प्याय च नर्मः। गेह्याय च नर्मः। नमः काट्याय च नमः। गृह्वरेष्ठायं च नमः। नमौं ह्रदय्याय च नमंः। निवेष्य्याय च नमंः। नर्मः पारस्याय च नर्मः। रजस्याय च नर्मः। नमः शुष्क्याय च नमः। हरित्याय च नमः। नमो लोप्याय च नर्मः। उलप्याय च नर्मः। नमं ऊर्व्याय च नमंः। सूर्म्याय च नमंः। नमः पर्ण्याय च नमः। पर्णशद्याय च नमः। नमोंऽपगुरमांणाय च नमंः। अभिघ्नते च नमंः। नमं आख्खिदते च नमंः। प्रख्खिदते च नमंः। नमों वो नमंः। किरिकेभ्यो नर्मः। देवाना हदंयेभ्यो नर्मः। नमों विक्षीणकेभ्यो नर्मः। नमों विचिन्वत्केभ्यो नर्मः। नमं आनिर्हतेभ्यो नमंः। नमं आमीवत्केभ्यो नमंः। ॥इति श्री श्रीरुद्रनाम त्रिशती सम्पूर्णा॥

# ॥ शिवाष्टोत्तरशतनामाविलः॥

शिवाय नमः महेश्वराय नमः शम्भवे नमः पिनाकिने नमः शशिशेखराय नमः वामदेवाय नमः

| विरूपाक्षाय नमः     |    | जटाधराय नमः               |    |
|---------------------|----|---------------------------|----|
| कपर्दिने नमः        |    | कैलासवासिने नमः           |    |
| नीललोहिताय नमः      |    | कवचिने नमः                |    |
| शङ्कराय नमः         | १० | कठोराय नमः                |    |
| शूलपाणिने नमः       |    | त्रिपुरान्तकाय नमः        |    |
| खेट्टाङ्गिने नमः    |    | वृषाङ्काय नमः             |    |
| विष्णुवं सभाय नमः   |    | वृषभारूढाय नमः            | ४० |
| शिपिविष्टाय नमः     |    | भस्मोद्ध्रलितविग्रहाय नमः |    |
| अम्बिकानाथाय नमः    |    | सामप्रियाय नमः            |    |
| श्रीकण्ठाय नमः      |    | स्वरमयाय नमः              |    |
| भक्तवत्सलाय नमः     |    | त्रयीमूर्तये नमः          |    |
| भवाय नमः            |    | अनीश्वराय नमः             |    |
| शर्वाय नमः          |    | सर्वज्ञाय नमः             |    |
| त्रिलोकेशाय नमः     | २० | परमात्मने नमः             |    |
| शितिकण्ठाय नमः      |    | सोमसूर्याग्निलोचनाय नमः   |    |
| शिवाप्रियाय नमः     |    | हविषे नमः                 |    |
| उग्राय नमः          |    | यज्ञमयाय नमः              | 40 |
| कपालिने नमः         |    | सोमाय नमः                 |    |
| कामारये नमः         |    | पञ्चवऋाय नमः              |    |
| अन्धकासुरसूदनाय नमः |    | सदाशिवाय नमः              |    |
| गङ्गाधराय नमः       |    | विश्वेश्वराय नमः          |    |
| ललाटाक्षाय नमः      |    | वीरभद्राय नमः             |    |
| कालकालाय नमः        |    | गणनाथाय नमः               |    |
| कृपानिधये नमः       | ३० | प्रजापतये नमः             |    |
| भीमाय नमः           |    | हिरण्यरेतसे नमः           |    |
| परशुहस्ताय नमः      |    | दुर्धर्षाय नमः            |    |
| मृगपाणये नमः        |    | गिरीशाय नमः               | ६० |
| -                   |    |                           |    |

| गिरिशाय नमः        |    | सात्त्विकाय नमः   |     |
|--------------------|----|-------------------|-----|
| अनघाय नमः          |    | शुद्धविग्रहाय नमः |     |
| भुजङ्गभूषणाय नमः   |    | शाश्वताय नमः      |     |
| भगीय नमः           |    | खण्डपरशवे नमः     |     |
| गिरिधन्वने नमः     |    | अजाय नमः          |     |
| गिरिप्रियाय नमः    |    | पाशविमोचकाय नमः   | ९०  |
| कृत्तिवाससे नमः    |    | मृडाय नमः         |     |
| पुरारातये नमः      |    | पशुपतये नमः       |     |
| भगवते नमः          |    | देवाय नमः         |     |
| प्रमथाधिपाय नमः    | 90 | महादेवाय नमः      |     |
| मृत्युञ्जयाय नमः   |    | अव्ययाय नमः       |     |
| सूक्ष्मतनवे नमः    |    | हरये नमः          |     |
| जगद्यापिने नमः     |    | पूषदन्तभिदे नमः   |     |
| जगद्गुरवे नमः      |    | अव्यग्राय नमः     |     |
| व्योमकेशाय नमः     |    | दक्षाध्वरहराय नमः |     |
| महासेनजनकाय नमः    |    | हराय नमः          | १०० |
| चारुविक्रमाय नमः   |    | भगनेत्रभिदे नमः   |     |
| रुद्राय नमः        |    | अव्यक्ताय नमः     |     |
| भूतपतये नमः        |    | सहस्राक्षाय नमः   |     |
| स्थाणवे नमः        | ८० | सहस्रपदे नमः      |     |
| अहये बुध्र्याय नमः |    | अपवर्गप्रदाय नमः  |     |
| दिगम्बराय नमः      |    | अनन्ताय नमः       |     |
| अष्टमूर्तये नमः    |    | तारकाय नमः        |     |
| अनेकात्मने नमः     |    | परमेश्वराय नमः    |     |
|                    |    | •                 |     |

॥इति शाक्तप्रमोदे श्री शिवाष्टोत्तरशतनामाविलः सम्पूर्णा॥

#### ॥ उत्तराङ्ग-पूजा॥

विज्यं धर्नुः कप्रदिनो विशंल्यो बार्णवा । उत्। अनेशन्नस्येषंव आभुरंस्य निषुङ्गर्थिः॥ ॐ हीं नुमः शिवाये। बलाय नर्मः। धूपमाघ्रापयामि॥१२॥

या ते हेतिर्मीढुष्टम् हस्ते बभूवं ते धर्नुः। तयाऽस्मान् विश्वतस्त्वमंयक्ष्मया परिन्युज॥ ॐ हीं नमः शिवायं। बलंप्रमथनाय नमेः। अलङ्कारदीपं सन्दर्शयामि॥१३॥

ॐ भूर्भुवः सुवंः। + ब्रह्मणे स्वाहाँ। नमंस्ते अस्त्वायुंधायानांतताय धृष्णवेँ। उभाभ्यांमुत ते नमों बाहुभ्यां तव धन्वंने॥ ॐ हीं नमः शिवायं। सर्वभूतदमनाय नमंः। () निवेदयामि। मध्ये मध्ये अमृतपानीयं समर्पयामि। अमृतापिधानमसि।

हस्तप्रक्षालनं समर्पयामि। पादप्रक्षालनं समर्पयामि। निवेदनानन्तरम् आचमनीयं समर्पयामि॥१४॥

परिं ते धन्वंनो हेतिरस्मान्वृंणक्तु विश्वतः। अथो य इंषुधिस्तवाऽऽरे अस्मन्नि धेहि तम्॥ ॐ हीं नमः शिवायं। मनोन्मंनाय नमः। कर्पूरताम्बूलं समर्पयामि॥१५॥

नर्मस्ते अस्तु भगवन् विश्वेश्वरायं महादेवायं त्र्यम्बकायं त्रिपुरान्तकायं त्रिकाग्निकालायं कालाग्निरुद्रायं नीलकुण्ठायं मृत्युञ्जयायं सर्वेश्वरायं सदाशिवायं श्रीमन्महादेवाय नर्मः॥ कर्पूरनीराजनं दर्शयामि॥१६॥

#### ॥ रक्षा ॥

बृहथ्सामं क्षत्रभृद्धृद्ध वृंष्णियं त्रिष्टुभौजंः शुभितमुग्रवीरम्। इन्द्रस्तोमेन पश्चद्रशेन मध्यंमिदं वातेन सगरेण रक्ष॥ रक्षां धारयामि॥

#### ॥ नमस्काराः ॥

ॐ भवाय देवाय नमः।

ॐ शर्वाय देवाय नमः।

🕉 ईशानाय देवाय नमः।

ॐ पशुपतये देवाय नमः।

ॐ रुद्राय देवाय नमः।

ॐ उग्राय देवाय नमः।

ॐ भीमाय देवाय नमः।

ॐ महते देवाय नमः॥

ईशानः सर्वविद्यानामिश्वरः सर्वभूतानां ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणोऽधिपतिर्ब्रह्मां शिवो में अस्तु सदिश्वोम्॥ ॐ हीं नमः शिवायं। मन्नपृष्पाञ्जलिं समर्पयामि। शिवाय नमः। रुद्राय नमः। पशुपतये नमः। नीलकण्ठाय नमः। महेश्वराय नमः। हिरकेशाय नमः। विरूपाक्षाय नमः। पिनािकने नमः। त्रिपुरान्तकाय नमः। शम्भवे नमः। शूलिने नमः। महादेवाय नमः। इति द्वादशनामिभर्द्वादशपुष्पाञ्जलीन् दत्त्वा॥

प्रदक्षिणनमस्कारान् कृत्वा॥

## ॥ अर्घ्यप्रदानम्॥

ममोपात्त समस्तदुरितक्षयद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थम् शिवरात्रौ द्वितीय-याम-पूजान्ते क्षीरार्घ्यप्रदानं करिष्ये॥

> शिवरात्रिव्रतं देव पूजाजपपरायणः। करोमि विधिवद्दत्तं गृहाणार्घ्यं नमोऽस्तुते॥

इत्यर्घ्यं दत्त्वा।

मया कृतान्यनेकानि पापानि हर शङ्कर। गृहाणार्घ्यमुमाकान्त शिवरात्रौ प्रसीद मे॥२॥

## ॥ पूजानिवेदनम्॥

पूर्वे नन्दि महाकालौ गणभृङ्गी च दक्षिणे। वृषस्कन्दौ पश्चिमे ते देशकालौ तथोत्तरे। गङ्गा च यमुना पार्श्वे पूजां गृह्ण नमोऽस्तुते॥२॥

यत्किश्चित् कुर्महे देव सदा सुकृतदुष्कृतम्। तन्मे शिवपदस्थस्य भुङ्क्ष क्षपय शङ्कर॥

शिवो दाता शिवो भोक्ता शिवः सर्वमिदं जगत्। शिवो जयति सर्वत्र यः शिवः सोऽहमेव हि॥

इति प्रार्थ्य॥

देवहृदयस्थं पादस्थं च पुष्पमादाय प्रणम्य देवेन दत्तमिति ध्यात्वा॥

प्रपन्नं पाहि मामीश भीतमृत्युमहार्णवात्। त्वयोपभुक्त-स्रग्-गन्ध-वासो-लङ्कार-चर्चिताः। उच्छिष्टभोजिनो दासास्तव मायां जयेम हि॥

इति मूर्प्नि धृत्वा॥

मन्नहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं महेश्वर। यत्कृतं तु मया देव परिपूर्णं तदस्तु ते॥

अनेन पूजनेन साम्बसदाशिवः प्रीयताम्।

कायेन वाचा मनसेन्द्रियैर्वा बुद्ध्याऽऽत्मना वा प्रकृतेः स्वभावात्। करोमि यद्यत् सकलं परस्मै नारायणायेति समर्पयामि॥

ॐ तत्सद्बह्मार्पणमस्तु।

# ॥ प्रधान-पूजा - साम्ब-परमेश्वर-पूजा (तृतीय-यामः) ॥

शुक्राम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्। प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये॥

प्राणान् आयम्य। ॐ भूः + भूर्भुवः सुव्रोम्।

ममोपात्तसमस्तदुरितक्षयद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं शुभे शोभने मुहूर्ते अद्यब्रह्मणः द्वितीयपरार्द्धे श्वेतवराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे किलयुगे प्रथमे पादे जम्बूद्वीपे भारतवर्षे भरतखण्डे मेरोः दक्षिणेपार्श्वे शकाब्दे अस्मिन् वर्तमाने व्यावहारिकणां प्रभवादि षष्ट्याः संवत्सराणां मध्ये () ३३ नाम संवत्सरे उत्तरायणे शिशिर-ऋतौ कुम्भ-मासे कृष्ण-पक्षे त्र्योदश्यां/चतुर्दश्यां शुभितथौ (इन्दु / भौम / बुध / गुरु / भृगु / स्थिर / भानु) वासरयुक्तायाम् () ४४ नक्षत्र () ४५ नाम योग () करण युक्तायां च एवं गुण विशेषण विशिष्टायाम् अस्याम् (त्र्योदश्यां/चतुर्दश्यां) शुभितथौ अस्माकं सहकुटुम्बानां क्षेमस्थैर्य-धैर्य-वीर्य-विजय आयुरारोग्य ऐश्वर्याभिवृद्धार्थम् धर्मार्थकाममोक्षचतुर्विधफलपुरुषार्थसिद्धार्थं पुत्रपौत्राभिवृद्धार्थम् धर्मार्थकाममोक्षचतुर्विधफलपुरुषार्थसिद्धार्थं पुत्रपौत्राभिवृद्धार्थम् इष्टकाम्यार्थसिद्धार्थम् मम इहजन्मिन पूर्वजन्मिन जन्मान्तरे च सम्पादितानां ज्ञानाज्ञानकृतमहापातकचतुष्टय व्यतिरिक्तानां रहस्यकृतानां प्रकाशकृतानां सर्वेषां पापानां सद्य अपनोदनद्वारा सकल पापक्षयार्थं शिवरात्रौ श्री-साम्ब-परमेश्वर-प्रीत्यर्थं तृतीय-यामपुजां करिष्ये।

## ॥ षोडशोपचारपूजा॥

ध्यायेत्रित्यं महेशं रजतिगिरिनिभं चारुचन्द्रावतंसम् रत्नाकल्पोञ्चलाङ्गं परशुमृगवराभीतिहस्तं प्रसन्नम्। पद्मासीनं समन्तात् स्तुतममरगणैर्व्याघ्रकृत्तिं वसानम् विश्वाद्यं विश्वबीजं निखिलभयहरं पश्चवक्रं त्रिनेत्रम्॥

<sup>&</sup>lt;sup>४३</sup>पृष्टं ५७२ पश्यताम्

<sup>&</sup>lt;sup>४४</sup>पृष्टं ५७३ पश्यताम्

<sup>&</sup>lt;sup>४५</sup>पृष्टं ५७४ पश्यताम्

अस्मिन् बिम्बे श्री-साम्ब-परमेश्वरं ध्यायामि।

नर्मस्ते रुद्र मृन्यवं उतो त् इषंवे नर्मः। नर्मस्ते अस्तु धन्वंने बाहुभ्यांमुत ते नर्मः॥ ॐ हीं नमः शिवायं। सद्योजातं प्रंपद्यामि।

या त इषुं शिवतंमा शिवं बुभूवं ते धर्नुः। शिवा शंरव्यां या तव तयां नो रुद्र मृडय॥ ॐ हीं नुमः शिवायं। सुद्योजाताय वै नमो नर्मः। आसनं समर्पयामि॥२॥

या ते रुद्र शिवा तुनूरघोराऽपांपकाशिनी। तयां नस्तुनुवा शन्तंमया गिरिंशन्ताभिचांकशीहि॥ ॐ हीं नुमः शिवायं। भवे भवे नातिं भवे भवस्व माम्। पादयोः पाद्यं समर्पयामि॥३॥

यामिषुं गिरिशन्त हस्ते बिभुष्यस्तेवे। शिवां गिरित्र तां कुंरु मा हिर्सीः पुरुषं जगत्॥ ॐ हीं नमः शिवायं। भ्वोद्भवाय नमः॥ अर्घ्यं समर्पयामि॥४॥ शिवेन वर्चसा त्वा गिरिशाच्छांवदामिस। यथां नः सर्विमिञ्जगंदयक्ष्म र सुमना असंत्॥ ॐ हीं नमः शिवायं। वामदेवाय नमः। आचमनीयं समर्पयामि॥५॥

अध्यंवोचदिधवृक्ता प्रंथमो दैव्यों भिषक्। अही ईश्च सर्वां अम्भय-न्थ्सर्वांश्च यातुधान्यः॥ ॐ हीं नमः शिवायं। ज्येष्ठाय नमः। मधुपर्कं समर्पयामि॥६॥

असौ यस्ताम्रो अंरुण उत बुभुः सुंमुङ्गलंः। ये चेमा र रुद्रा अभितों दिक्षु श्रिताः संहस्रशोऽवैषा र हेर्ड ईमहे॥ ॐ हीं नुमः शिवायं। श्रेष्ठाय नर्मः। स्नानं समर्पयामि।

रुद्रम्। चमकम्। पुरुषसूक्तम्॥

स्नानानन्तरम् आचमनीयं समर्पयामि॥७॥

साक्षतजलेन तर्पणं कार्यम्॥

ॐ भवं देवं तर्पयामि। ॐ शर्वं देवं तर्पयामि। ॐ ईशानं देवं तर्पयामि। ॐ पशुपतिं देवं तर्पयामि। ॐ रुद्रं देवं तर्पयामि। ॐ उग्रं देवं तर्पयामि। ॐ भीमं देवं तर्पयामि। ॐ महान्तं देवं तर्पयामि॥

ॐ भवस्य देवस्य पत्नीं तर्पयामि। ॐ शर्वस्य देवस्य पत्नीं तर्पयामि। ॐ ईशानस्य देवस्य पत्नीं तर्पयामि। ॐ पशुपतेर्देवस्य पत्नीं तर्पयामि। ॐ रुद्रस्य देवस्य पत्नीं तर्पयामि। ॐ उग्रस्य देवस्य पत्नीं तर्पयामि। ॐ महतो देवस्य पत्नीं तर्पयामि। ॐ महतो देवस्य पत्नीं तर्पयामि॥

असौ योंऽवसर्पति नीलंग्रीवो विलोहितः। उतैनं गोपा अंदश्त्रदंशन्नुदहार्यः। उतैनं विश्वा भूतानि स दृष्टो मृंडयाति नः॥ ॐ हीं नुमः शिवायं। रुद्राय नर्मः। वस्रोत्तरीयं समर्पयामि॥८॥

नमों अस्तु नीलंग्रीवाय सहस्राक्षायं मीढुषें। अथो ये अंस्य सत्वांनोऽहं तेभ्योंऽकरं नमंः॥ ॐ हीं नमः शिवायं। कालाय नमंः। यज्ञोपवीताभरणानि समर्पयामि॥९॥

प्र मृंश्च धन्वंनस्त्वमुभयोरार्ह्नियोज्याम्। याश्चं ते हस्त इषंवः परा ता भंगवो वप॥ ॐ हीं नमः शिवायं। कलंविकरणाय नमः। दिव्यपरिमलगन्धान् धारयामि। गन्धस्योपरि अक्षतान् समर्पयामि॥१०॥

अवतत्य धनुस्त्व सहंस्राक्ष शतेषुधे। निशीर्य श्राल्यानां मुखां शिवो नेः सुमनां भव॥ ॐ हीं नमः शिवायं। बलंविकरणाय नमेः। पुष्पैः पूजयामि॥११॥

ॐ भवाय देवाय नमः। ॐ शर्वाय देवाय नमः।

ॐ ईशानाय देवाय नमः। ॐ पशुपतये देवाय नमः।

ॐ रुद्राय देवाय नमः। ॐ उग्राय देवाय नमः।

ॐ भीमाय देवाय नमः। ॐ महते देवाय नमः॥

ॐ भवस्य देवस्य पत्यै नमः। ॐ शर्वस्य देवस्य पत्यै नमः।

ॐ ईशानस्य देवस्य पृत्यै नमः। ॐ पशुपतेर्देवस्य पृत्यै नमः।

ॐ रुद्रस्य देवस्य पत्यै नमः। ॐ उग्रस्य देवस्य पत्यै नमः।

ॐ भीमस्य देवस्य पत्न्ये नमः। ॐ महतो देवस्य पत्न्ये नमः॥

## ॥ शिवाष्टोत्तरशतनामाविलः॥

शिवाय नमः महेश्वराय नमः शम्भवे नमः पिनाकिने नमः शशिशेखराय नमः वामदेवाय नमः विरूपाक्षाय नमः कपर्दिने नमः नीललोहिताय नमः शङ्कराय नमः 80 श्लपाणिने नमः खट्ठाङ्गिने नमः विष्णुवल्लभाय नमः शिपिविष्टाय नमः अम्बिकानाथाय नमः श्रीकण्ठाय नमः भक्तवत्सलाय नमः भवाय नमः शर्वाय नमः त्रिलोकेशाय नमः २० शितिकण्ठाय नमः शिवाप्रियाय नमः

उग्राय नमः कपालिने नमः कामारये नमः अन्धकासुरसूदनाय नमः गङ्गाधराय नमः ललाटाक्षाय नमः कालकालाय नमः कृपानिधये नमः 30 भीमाय नमः परशृहस्ताय नमः मृगपाणये नमः जटाधराय नमः कैलासवासिने नमः कवचिने नमः कठोराय नमः त्रिपुरान्तकाय नमः वृषाङ्काय नमः वृषभारूढाय नमः 80 भस्मोद्धूलितविग्रहाय नमः सामप्रियाय नमः स्वरमयाय नमः त्रयीमूर्तये नमः

| शिवाष्टात्तरशतनामावालः  |    |                                  | 479 |
|-------------------------|----|----------------------------------|-----|
| अनीश्वराय नमः           |    | सूक्ष्मतनवे नमः                  |     |
| सर्वज्ञाय नमः           |    | जगद्यापिने नमः                   |     |
| परमात्मने नमः           |    | जगद्गुरवे नमः                    |     |
| सोमसूर्याग्निलोचनाय नमः |    | व्योमकेशाय नमः                   |     |
| हविषे नमः               |    | महासेनजनकाय नमः                  |     |
| यज्ञमयाय नमः            | ५० | चारुविक्रमाय नमः                 |     |
| सोमाय नमः               |    | रुद्राय नमः                      |     |
| पञ्चव्रजाय नमः          |    | भूतपतये नमः                      |     |
| सदाशिवाय नमः            |    | स्थाणवे नमः                      | ८०  |
| विश्वेश्वराय नमः        |    | अहये बुध्र्याय नमः               |     |
| वीरभद्राय नमः           |    | दिगम्बराय नमः                    |     |
| गणनाथाय नमः             |    | अष्टमूर्तये नमः                  |     |
| प्रजापतये नमः           |    | अनेकात्मने नमः                   |     |
| हिरण्यरेतसे नमः         |    | सात्त्विकाय नमः                  |     |
| दुर्धर्षाय नमः          |    | शुद्धविग्रहाय नमः                |     |
| गिरीशाय नमः             | ६० | शाश्वताय नमः                     |     |
| गिरिशाय नमः             |    | खण्डपरशवे नमः                    |     |
| अनघाय नमः               |    | अजाय नमः                         |     |
| भुजङ्गभूषणाय नमः        |    | पाशविमोचकाय नमः                  | ९०  |
| भगीय नमः                |    | मृडाय नमः                        |     |
| गिरिधन्वने नमः          |    | पशुपतये नमः                      |     |
| गिरिप्रियाय नमः         |    | देवाय नमः                        |     |
| कृत्तिवाससे नमः         |    | महादेवाय नमः                     |     |
| पुरारातये नमः           |    | अव्ययाय नमः                      |     |
| भगवते नमः               |    | हरये नमः                         |     |
| प्रमथाधिपाय नमः         | 90 | पूषदन्तभिदे नमः                  |     |
| मृत्युञ्जयाय नमः        |    | पूषदन्तभिदे नमः<br>अव्यग्राय नमः |     |
|                         |    | I                                |     |
|                         |    |                                  |     |

दक्षाध्वरहराय नमः

हराय नमः

भगनेत्रभिदे नमः

अव्यक्ताय नमः

सहस्राक्षाय नमः

सहस्रपदे नमः १०० अपवर्गप्रदाय नमः अनन्ताय नमः तार्काय नमः

परमेश्वराय नमः

॥इति शाक्तप्रमोदे श्री शिवाष्टोत्तरशतनामाविलः सम्पूर्णा॥

## ॥ उत्तराङ्ग-पूजा॥

विज्यं धर्नुः कपूर्दिनो विशंल्यो बाणवा उत। अनेशन्नस्येषव आभुरंस्य निषङ्गर्थिः॥ ॐ हीं नमः शिवाये। बलांय नमेः। धूपमाघ्रापयामि॥१२॥

या ते हेतिमीं दुष्टम् हस्ते बभूवं ते धनुः। तयाऽस्मान् विश्वतस्त्वमयुक्ष्मया परिन्युज॥ ॐ हीं नमः शिवायं। बलंप्रमथनाय नर्मः। अलङ्कारदीपं सन्दर्शयामि॥१३॥

ॐ भूर्भुवः सुवंः। + ब्रह्मणे स्वाहाँ। नर्मस्ते अस्त्वायुंधायानांतताय धृष्णवें। उभाभ्यामुत ते नमों बाहुभ्यां तव धन्वंने॥ ॐ हीं नमः शिवायं।

सर्वभूतदमनाय नर्मः। () निवेदयामि। मध्ये मध्ये अमृतपानीयं समर्पयामि। अमृतापिधानमसि।

हस्तप्रक्षालनं समर्पयामि। पादप्रक्षालनं समर्पयामि। निवेदनानन्तरम् आचमनीयं समर्पयामि॥१४॥

परिं ते धन्वनो हेतिरस्मान्वृंणक्त विश्वतः। अथो य इंषुधिस्तवाऽऽरे अस्मन्नि धेहि तम्॥ ॐ हीं नुमः शिवायं। मुनोन्मनाय नर्मः। कर्पूरताम्बूलं समर्पयामि॥१५॥

नमंस्ते अस्तु भगवन् विश्वेश्वरायं महादेवायं त्र्यम्बकायं त्रिपुरान्तकायं

त्रिकाग्निकालायं कालाग्निरुद्रायं नीलकुण्ठायं मृत्युञ्जयायं सर्वेश्वरायं सदाशिवायं श्रीमन्महादेवाय नमंः॥ कर्पूरनीराजनं दर्शयामि॥१६॥

#### ॥ रक्षा ॥

बृहथ्सामं क्षत्रभृद्वृद्ध वृंष्णियं त्रिष्टुभौजंः शुभितम्युर्वीरम्। इन्द्रस्तोमेन पश्चद्रशेन मध्यमिदं वातेन सगरेण रक्ष॥ रक्षां धारयामि॥

#### ॥ नमस्काराः ॥

- ॐ भवाय देवाय नमः।
- ॐ शर्वाय देवाय नमः।
- ॐ ईशानाय देवाय नमः।
- ॐ पश्पतये देवाय नमः।
- ॐ रुद्राय देवाय नमः।
- ॐ उग्राय देवाय नमः।
- ॐ भीमाय देवाय नमः।
- ॐ महते देवाय नमः॥

प्रदक्षिणनमस्कारान् कृत्वा॥

ईशानः सर्वविद्यानामिश्वरः सर्वभूतानां ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणोऽधिपतिर्ब्रह्मां शिवो में अस्तु सदाशिवोम्॥ ॐ हीं नमः शिवायं। मन्नपुष्पाञ्जलिं समर्पयामि। शिवाय नमः। रुद्राय नमः। पशुपतये नमः। नीलकण्ठाय नमः। महेश्वराय नमः। हिरकेशाय नमः। विरूपाक्षाय नमः। पिनािकने नमः। त्रिपुरान्तकाय नमः। शम्भवे नमः। शूलिने नमः। महादेवाय नमः। इति द्वादशनामभिर्द्वादशपुष्पाञ्जलीन् दत्त्वा॥

## ॥ अर्घ्यप्रदानम्॥

ममोपात्त समस्तदुरितक्षयद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थम् शिवरात्रौ तृतीय-याम-पूजान्ते क्षीरार्घ्यप्रदानं करिष्ये॥

> शिवरात्रिव्रतं देव पूजाजपपरायणः। करोमि विधिवद्दत्तं गृहाणार्घ्यं नमोऽस्तुते॥

इत्यर्घ्यं दत्त्वा।

शिवरात्रिव्रतं देव पूजाजपपरायणः। करोमि विधिवद्दत्तं गृहाणार्घ्यं नमोऽस्तु ते॥निशीथे॥

दुःखदारिद्यभारैश्च दग्धोऽहं पार्वतीपते। त्रायस्व मां महादेव गृहाणार्घ्यं नमोऽस्तु ते॥३॥

## ॥ पूजानिवेदनम्॥

नमोऽव्यक्ताय सूक्ष्माय नमस्ते त्रिपुरान्तक। पूजां गृहाण देवेश यथाशक्त्युपपादिताम्॥३॥

यत्किश्चित् कुर्महे देव सदा सुकृतदुष्कृतम्। तन्मे शिवपदस्थस्य भुङ्क क्षपय शङ्कर॥

शिवो दाता शिवो भोक्ता शिवः सर्वमिदं जगत्। शिवो जयति सर्वत्र यः शिवः सोऽहमेव हि॥

इति प्रार्थ्य॥

देवहृदयस्थं पादस्थं च पुष्पमादाय प्रणम्य देवेन दत्तमिति ध्यात्वा॥

प्रपन्नं पाहि मामीश भीतमृत्युमहार्णवात्। त्वयोपभुक्त-स्रग्-गन्ध-वासो-लङ्कार-चर्चिताः। उच्छिष्टभोजिनो दासास्तव मायां जयेम हि॥

इति मूर्प्नि धृत्वा॥

मन्नहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं महेश्वर। यत्कृतं तु मया देव परिपूर्णं तदस्तु ते॥

अनेन पूजनेन साम्बसदाशिवः प्रीयताम्।

कायेन वाचा मनसेन्द्रियैर्वा बुद्ध्याऽऽत्मना वा प्रकृतेः स्वभावात्। करोमि यद्यत् सकलं परस्मै नारायणायेति समर्पयामि॥

ॐ तत्सद्बह्मार्पणमस्तु।

# ॥ प्रधान-पूजा - साम्ब-परमेश्वर-पूजा (चतुर्थ-यामः) ॥

शुक्राम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्। प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये॥

प्राणान् आयम्य। ॐ भूः + भूर्भुवः सुव्रोम्।

ममोपात्तसमस्तदुरितक्षयद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं शुभे शोभने मुहूर्ते अद्यब्रह्मणः द्वितीयपरार्द्धे श्वेतवराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे किलयुगे प्रथमे पादे जम्बूद्वीपे भारतवर्षे भरतखण्डे मेरोः दक्षिणेपार्श्वे शकाब्दे अस्मिन् वर्तमाने व्यावहारिकणां प्रभवादि षष्ट्याः संवत्सराणां मध्ये () विं नाम संवत्सरे उत्तरायणे शिशिर-ऋतौ कुम्भ-मासे कृष्ण-पक्षे त्र्योदश्यां/चतुर्दश्यां शुभितथौ (इन्दु / भौम / बुध / गुरु / भृगु / स्थिर / भानु) वासरयुक्तायाम् () विशेषण विशिष्टायाम् अस्याम् (त्र्योदश्यां/चतुर्दश्यां) शुभितथौ अस्माकं सहकुटुम्बानां क्षेमस्थैर्य-धैर्य-वीर्य-विजय आयुरारोग्य

<sup>&</sup>lt;sup>४६</sup>पृष्टं ५७२ पश्यताम्

<sup>&</sup>lt;sup>४७</sup>पृष्टं ५७३ पश्यताम्

<sup>&</sup>lt;sup>४८</sup>पृष्टं ५७४ पश्यताम्

ऐश्वर्याभिवृद्धर्थम् धर्मार्थकाममोक्षचतुर्विधफलपुरुषार्थसिद्धर्थं पुत्रपौत्राभि-वृद्धर्थम् इष्टकाम्यार्थसिद्धर्थम् मम इहजन्मनि पूर्वजन्मनि जन्मान्तरे च सम्पादितानां ज्ञानाज्ञानकृतमहापातकचतुष्टय व्यतिरिक्तानां रहस्यकृतानां प्रकाशकृतानां सर्वेषां पापानां सद्य अपनोदनद्वारा सकल पापक्षयार्थं शिवरात्रौ श्री-साम्ब-परमेश्वर-प्रीत्यर्थं चतुर्थ-यामपूजां करिष्ये।

# ॥ षोडशोपचारपूजा॥

ध्यायेन्नित्यं महेशं रजतगिरिनिभं चारुचन्द्रावतंसम् रत्नाकल्पोञ्चलाङ्गं परशुमृगवराभीतिहस्तं प्रसन्नम्। पद्मासीनं समन्तात् स्तुतममरगणैर्व्याघ्रकृत्तिं वसानम् विश्वाद्यं विश्वबीजं निखिलभयहरं पश्चवऋं त्रिनेत्रम्॥

अस्मिन् बिम्बे श्री-साम्ब-परमेश्वरं ध्यायामि।

नर्मस्ते रुद्र मृन्यवं उतो त् इषंवे नर्मः। नर्मस्ते अस्तु धन्वंने बाहुभ्यांमुत ते नर्मः॥ ॐ हीं नमः शिवायं। सद्योजातं प्रंपद्यामि।

या त इषुं शिवतंमा शिवं बुभूवं ते धनुंः। शिवा शंरव्यां या तव तयां नो रुद्र मृडय॥ ॐ हीं नुमः शिवायं। सद्योजाताय वै नमो नमंः। आसनं समर्पयामि॥२॥

या ते रुद्र शिवा तुनूरघोराऽपांपकाशिनी। तयां नस्तुनुवा शन्तंमया गिरिशन्ताभिचांकशीहि॥ ॐ हीं नुमः शिवायं। भवे भवे नाति भवे भवस्व माम्। पादयोः पाद्यं समर्पयामि॥३॥

यामिषुं गिरिशन्त हस्ते बिभूष्यस्तंवे। शिवां गिरित्र तां कुरु मा हि सीः पुरुषं जगत्॥ ॐ हीं नमः शिवाये। भवोद्भवाय नमः॥ अर्घ्यं समर्पयामि॥४॥ शिवेन वर्चसा त्वा गिरिशाच्छांवदामिस। यथां नः सर्विमिञ्जगंदयक्ष्म स् सुमना असंत्॥ ॐ हीं नमः शिवाये। वामदेवाय नमः। आचमनीयं समर्पयामि॥५॥

अध्यंवोचदिधवृक्ता प्रंथमो दैव्यों भिषक्। अही ईश्च सर्वां अम्भय-स्थर्नांश्च यातुधान्यंः॥ ॐ हीं नमः शिवायं। ज्येष्ठाय नमः। मधुपर्कं समर्पयामि॥६॥ असौ यस्ताम्रो अंरुण उत बुभुः सुंमुङ्गलंः। ये चेमा र रुद्रा अभितों दिक्षु श्रिताः संहस्रशोऽवैषा हेर्ड ईमहे॥ ॐ हीं नमः शिवायं। श्रेष्ठाय नमः। स्नानं समर्पयामि।

रुद्रम्। चमकम्। पुरुषसूक्तम्॥ स्नानानन्तरम् आचमनीयं समर्पयामि॥७॥ साक्षतजलेन तर्पणं कार्यम्॥

ॐ भवं देवं तर्पयामि। ॐ शर्वं देवं तर्पयामि। ॐ ईशानं देवं तर्पयामि। ॐ पशुपतिं देवं तर्पयामि। ॐ रुद्रं देवं तर्पयामि। ॐ उग्रं देवं तर्पयामि। ॐ भीमं देवं तर्पयामि। ॐ महान्तं देवं तर्पयामि॥

ॐ भवस्य देवस्य पत्नीं तर्पयामि। ॐ शर्वस्य देवस्य पत्नीं तर्पयामि। ॐ ईशानस्य देवस्य पत्नीं तर्पयामि। ॐ पशुपतेर्देवस्य पत्नीं तर्पयामि। ॐ रुद्रस्य देवस्य पत्नीं तर्पयामि। ॐ उग्रस्य देवस्य पत्नीं तर्पयामि। ॐ भीमस्य देवस्य पत्नीं तर्पयामि। ॐ महतो देवस्य पत्नीं तर्पयामि॥

असौ योंऽवसपंति नीलंग्रीवो विलोहितः। उतैनं गोपा अंदश्त्रदंशन्नुदहार्यः। उतैनं विश्वा भूतानि स दृष्टो मृंडयाति नः॥ ॐ हीं नुमः शिवाये। रुद्राय नर्मः। वस्रोत्तरीयं समर्पयामि॥८॥

नमों अस्तु नीलंग्रीवाय सहस्राक्षायं मीढुषें। अथो ये अंस्य सत्वांनोऽहं तेभ्योंऽकरं नमंः॥ ॐ हीं नमः शिवायं। कालाय नमंः। यज्ञोपवीताभरणानि समर्पयामि॥९॥

प्र मुंश्च धन्वंनस्त्वमुभयोरार्ह्नियोर्ज्याम्। याश्चं ते हस्त इषंवः परा ता भंगवो वप॥ ॐ हीं नुमः शिवायं। कलंविकरणाय नर्मः। दिव्यपरिमलगन्धान्

२०

धारयामि। गन्धस्योपरि अक्षतान् समर्पयामि॥१०॥

अवृतत्य धनुस्त्व सहंस्राक्ष शतेषुधे। निशीर्य शृल्यानां मुखां शिवो नः सुमनां भव॥ ॐ हीं नृमः शिवायं। बलंविकरणाय नर्मः। पुष्पैः पूजयामि॥११॥

ॐ भवाय देवाय नमः। ॐ शर्वाय देवाय नमः।
ॐ ईशानाय देवाय नमः। ॐ पशुपतये देवाय नमः।
ॐ रुद्राय देवाय नमः। ॐ उग्राय देवाय नमः।
ॐ भीमाय देवाय नमः। ॐ महते देवाय नमः॥
ॐ भवस्य देवस्य पत्यै नमः। ॐ शर्वस्य देवस्य पत्यै नमः।
ॐ ईशानस्य देवस्य पत्यै नमः। ॐ पशुपतेर्देवस्य पत्यै नमः।
ॐ रुद्रस्य देवस्य पत्यै नमः। ॐ उग्रस्य देवस्य पत्यै नमः।
ॐ भीमस्य देवस्य पत्यै नमः। ॐ महतो देवस्य पत्यै नमः॥

## ॥ शिवाष्टोत्तरशतनामावलिः॥

शिवाय नमः
महेश्वराय नमः
शम्भवे नमः
पिनाकिने नमः
शिशेखराय नमः
वामदेवाय नमः
विरूपाक्षाय नमः
कपर्दिने नमः
नीललोहिताय नमः
शङ्कराय नमः

शूलपाणिने नमः खट्वाङ्गिने नमः विष्णुवल्लभाय नमः शिपिविष्टाय नमः अम्बिकानाथाय नमः श्रीकण्ठाय नमः भक्तवत्सलाय नमः भवाय नमः शर्वाय नमः श्रिलोकेशाय नमः

| शिवाष्टोत्तरशतनामावलिः   |    |                         | 487 |
|--------------------------|----|-------------------------|-----|
| शितिकण्ठाय नमः           |    | सोमसूर्याग्निलोचनाय नमः |     |
| शिवाप्रियाय नमः          |    | हविषे नमः               |     |
| उग्राय नमः               |    | यज्ञमयाय नमः            | ५०  |
| कपालिने नमः              |    | सोमाय नमः               |     |
| कामारये नमः              |    | पञ्चवऋाय नमः            |     |
| अन्थकासुरसूदनाय नमः      |    | सदाशिवाय नमः            |     |
| गङ्गाधरायं नमः           |    | विश्वेश्वराय नमः        |     |
| ललाटाक्षाय नमः           |    | वीरभद्राय नमः           |     |
| कालकालाय नमः             |    | गणनाथाय नमः             |     |
| कृपानिधये नमः            | ३० | प्रजापतये नमः           |     |
| भीमाय नमः                |    | हिरण्यरेतसे नमः         |     |
| परशुहस्ताय नमः           |    | दुर्धर्षाय नमः          |     |
| मृगपाणये नमः             |    | गिरीशाय नमः             | ६०  |
| जटाधराय नमः              |    | गिरिशाय नमः             |     |
| कैलासवासिने नमः          |    | अनघाय नमः               |     |
| कवचिने नमः               |    | भुजङ्गभूषणाय नमः        |     |
| कठोराय नमः               |    | भर्गाय नमः              |     |
| त्रिपुरान्तकाय नमः       |    | गिरिधन्वने नमः          |     |
| वृषाङ्काय नमः            |    | गिरिप्रियाय नमः         |     |
| वृषभारूढाय नमः           | ४० | कृत्तिवाससे नमः         |     |
| भस्मोद्धूलितविग्रहाय नमः |    | पुरारातये नमः           |     |
| सामप्रियाय नमः           |    | भगवते नमः               |     |
| स्वरमयाय नमः             |    | प्रमथाधिपाय नमः         | 00  |
| त्रयीमूर्तये नमः         |    | मृत्युञ्जयाय नमः        |     |
| अनीश्वराय नमः            |    | सूक्ष्मतनवे नमः         |     |
| सर्वज्ञाय नमः            |    | जगद्यापिने नमः          |     |
| परमात्मने नमः            |    | जगद्गुरवे नमः           |     |
|                          |    |                         |     |

मुडाय नमः

व्योमकेशाय नमः पशुपतये नमः महासेनजनकाय नमः देवाय नमः चारुविक्रमाय नमः महादेवाय नमः अव्ययाय नमः रुद्राय नमः भूतपतये नमः हरये नमः स्थाणवे नमः पूषदन्तभिदे नमः ८० अहये बुध्र्याय नमः अव्यग्राय नमः दिगम्बराय नमः दक्षाध्वरहराय नमः अष्टमूर्तये नमः हराय नमः १०० भगनेत्रभिदे नमः अनेकात्मने नमः सात्त्विकाय नमः अव्यक्ताय नमः श्द्धविग्रहाय नमः सहस्राक्षाय नमः शाश्वताय नमः सहस्रपदे नमः अपवर्गप्रदाय नमः खण्डपरशवे नमः अजाय नमः अनन्ताय नमः पाशविमोचकाय नमः तारकाय नमः

॥इति शाक्तप्रमोदे श्री शिवाष्टोत्तरशतनामाविलः सम्पूर्णा॥

परमेश्वराय नमः

## ॥ उत्तराङ्ग-पूजा॥

विज्यं धर्नुः कप्र्दिनो विशंल्यो बार्णवा उत्। अनेशत्रुस्येषंव आभुरंस्य निष्क्षिथिः॥ ॐ हीं नमः शिवाये। बलाय नमः। धूपमाघ्रापयामि॥१२॥ या ते हेतिर्मीढुष्टम् हस्ते बुभूवं ते धर्नुः। तयाऽस्मान् विश्वतस्त्वमयक्ष्मया परिब्युज॥ ॐ हीं नमः शिवाये। बलप्रमथनाय नमः। अलङ्कारदीपं सन्दर्शयामि॥१३॥

ॐ भूर्भुवः सुवंः। + ब्रह्मणे स्वाहाँ। नमंस्ते अस्त्वायुंधायानांतताय धृष्णवेँ। उभाभ्यांमुत ते नमों बाहुभ्यां तव धन्वंने॥ ॐ हीं नमः शिवायं। सर्वभूतदमनाय नमः। () निवेदयामि। मध्ये मध्ये अमृतपानीयं समर्पयामि। अमृतापिधानमसि। हस्तप्रक्षालनं समर्पयामि। पादप्रक्षालनं समर्पयामि। निवेदनानन्तरम्

हस्तप्रक्षालन समपयामि। पादप्रक्षालन समपयामि। निवदनानन्तरम् आचमनीयं समर्पयामि॥१४॥

परिं ते धन्वंनो हेतिरस्मान्वृंणक्तु विश्वतः। अथो य इंषुधिस्तवाऽऽरे अस्मन्नि धेहि तम्॥ ॐ हीं नमः शिवायं। मनोन्मंनाय नमः। कर्पूरताम्बूलं समर्पयामि॥१५॥

नमंस्ते अस्तु भगवन् विश्वेश्वरायं महादेवायं त्र्यम्बकायं त्रिपुरान्तकायं त्रिकाग्निकालायं कालाग्निरुद्रायं नीलकण्ठायं मृत्युञ्जयायं सर्वेश्वरायं सदाशिवायं श्रीमन्महादेवायं नमंः॥ कर्पूरनीराजनं दर्शयामि॥१६॥

#### ॥ रक्षा ॥

बृहथ्सामं क्षत्रभृद्वृद्ध वृंष्णियं त्रिष्टुभौजंः शुभितमुग्रवीरम्। इन्द्रस्तोमेन पश्चद्रशेन् मध्यंमिदं वातेन् सगरेण रक्ष॥ रक्षां धारयामि॥

#### ॥ नमस्काराः॥

- ॐ भवाय देवाय नमः।
- ॐ शर्वाय देवाय नमः।
- ॐ ईशानाय देवाय नमः।
- ॐ पशुपतये देवाय नमः।
- ॐ रुद्राय देवाय नमः।
- ॐ उग्राय देवाय नमः।

ॐ भीमाय देवाय नमः।

ॐ महते देवाय नमः॥

ईशानः सर्वविद्यानामिश्वरः सर्वभूतानां ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणोऽधिपतिर्ब्रह्मां शिवो में अस्तु सदिश्वोम्॥ ॐ हीं नमः शिवायं। मन्नपृष्पाञ्जलिं समर्पयामि। शिवाय नमः। रुद्राय नमः। पशुपतये नमः। नीलकण्ठाय नमः। महेश्वराय नमः। हिरकेशाय नमः। विरूपाक्षाय नमः। पिनािकने नमः। त्रिपुरान्तकाय नमः। शम्भवे नमः। शूलिने नमः। महादेवाय नमः। इति द्वादशनामिभर्द्वादशपुष्पाञ्जलीन् दत्त्वा॥

प्रदक्षिणनमस्कारान् कृत्वा॥

## ॥ अर्घ्यप्रदानम्॥

ममोपात्त समस्तदुरितक्षयद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थम् शिवरात्रौ चतुर्थ-याम-पूजान्ते क्षीरार्घ्यप्रदानं करिष्ये॥

> शिवरात्रिव्रतं देव पूजाजपपरायणः। करोमि विधिवद्दत्तं गृहाणार्घ्यं नमोऽस्तुते॥

इत्यर्घ्यं दत्त्वा।

किं न जानासि देवेश त्विय भक्तिं प्रयच्छ मे। स्वपादाग्रतले देव दास्यं देहि जगत्पते॥४॥

## ॥ पूजानिवेदनम्॥

बद्धोऽहं विविधेः पाशैः संसारभयबन्धनैः। पतितं मोहजाले मां त्वं समुद्धर शङ्कर॥४॥

यत्किश्चित् कुर्महे देव सदा सुकृतदुष्कृतम्। तन्मे शिवपदस्थस्य भुङ्क्ष क्षपय शङ्कर॥ शिवो दाता शिवो भोक्ता शिवः सर्वमिदं जगत्। शिवो जयति सर्वत्र यः शिवः सोऽहमेव हि॥

इति प्रार्थ्य॥

देवहृदयस्थं पादस्थं च पुष्पमादाय प्रणम्य देवेन दत्तमिति ध्यात्वा॥

प्रपन्नं पाहि मामीश भीतमृत्युमहार्णवात्। त्वयोपभुक्त-स्नग्-गन्ध-वासो-लङ्कार-चर्चिताः। उच्छिष्टभोजिनो दासास्तव मायां जयेम हि॥

इति मूर्प्नि धृत्वा॥

मन्नहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं महेश्वर। यत्कृतं तु मया देव परिपूर्णं तदस्तु ते॥

अनेन पूजनेन साम्बसदाशिवः प्रीयताम्।

कायेन वाचा मनसेन्द्रियैर्वा बुद्ध्याऽऽत्मना वा प्रकृतेः स्वभावात्। करोमि यद्यत् सकलं परस्मै नारायणायेति समर्पयामि॥

ॐ तत्सद्बह्मार्पणमस्तु।

#### ॥ उत्तरस्मिन् दिने पारणम्॥

संसारक्लेशदग्धस्य व्रतेनानेन शङ्कर। प्रसीद सुमुखो नाथ ज्ञानदृष्टिप्रदो भव॥



# ॥ श्रीसूर्य-नमस्कारः ॥

# ॥ पूर्वाङ्गविघ्नेश्वरपूजा॥

(आचम्य)

शुक्राम्बरधरं विष्णुं शशिवणं चतुर्भुजम्। प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्रोपशान्तये॥

प्राणान् आयम्य। ॐ भूः + भूर्भुवः सुव्रोम्। (अप उपस्पृश्य, पुष्पाक्षतान् गृहीत्वा) ममोपात्तसमस्त दुरितक्षयद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं करिष्यमाणस्य कर्मणः निर्विघ्नेन परिसमाप्त्यर्थम् आदौ विघ्नेश्वरपूजां करिष्ये।

ॐ गुणानां त्वा गुणपंति हवामहे कविं केवीनाम्पुपमश्रंवस्तमम्। ज्येष्ट्रराजं ब्रह्मणां ब्रह्मणस्पत् आ नः शृण्वन्नूतिभिः सीद् सादेनम्॥ अस्मिन् हरिद्राबिम्बे महागणपतिं ध्यायामि, आवाहयामि।

ॐ महागणपतये नमः आसनं समर्पयामि। पादयोः पाद्यं समर्पयामि। हस्तयोरध्यं समर्पयामि। आचमनीयं समर्पयामि। ॐ भूर्भुवस्सुवः। शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि। स्नानानन्तरमाचमनीयं समर्पयामि। वस्नार्थमक्षतान् समर्पयामि। यज्ञोपवीताभरणार्थे अक्षतान् समर्पयामि। दिव्यपरिमलगन्थान् धारयामि। गन्थस्योपरि हरिद्राकुङ्कुमं समर्पयामि। अक्षतान् समर्पयामि।

#### पुष्पमालिकां समर्पयामि। पुष्पैः पूजयामि।

#### ॥ अर्चना ॥

१. ॐ सुमुखाय नमः १०. ॐ गणाध्यक्षाय नमः

२. ॐ एकदन्ताय नमः ११. ॐ फालचन्द्राय नमः

३. ॐ कपिलाय नमः १२. ॐ गजाननाय नमः

४. ॐ गजकर्णकाय नमः १३. ॐ वऋतुण्डाय नमः

५. ॐ लम्बोदराय नमः १४. ॐ शूर्पकर्णाय नमः

६. ॐ विकटाय नमः १५. ॐ हेरम्बाय नमः

७. ॐ विघ्नराजाय नमः १६. ॐ स्कन्दपूर्वजाय नमः

८. ॐ विनायकाय नमः १७. ॐ सिद्धिविनायकाय नमः

९. ॐ धूमकेतवे नमः १८. ॐ विघ्नेश्वराय नमः

नानाविधपरिमलपत्रपुष्पाणि समर्पयामि॥ धूपमाघ्रापयामि। अलङ्कारदीपं सन्दर्शयामि।

नेवेद्यम्।

ताम्बूलं समर्पयामि।

कर्पूरनीराजनं समर्पयामि।

कर्पूरनीराजनानन्तरमाचमनीयं समर्पयामि। वऋतुण्डमहाकाय कोटिसूर्यसमप्रभ।

अविघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा॥

प्रार्थनाः समर्पयामि।

अनन्तकोटिप्रदक्षिणनमस्कारान् समर्पयामि।

छत्रचामरादिसमस्तोपचारान् समर्पयामि।

# ॥ प्रधान-पूजा - श्री-सूर्यनारायण-पूजा॥

शुक्राम्बरधरं विष्णुं शशिवणं चतुर्भुजम्। प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये॥

प्राणान् आयम्य। ॐ भूः + भूर्भुवः सुवरोम्।

#### ॥सङ्कल्पः॥

ममोपात्तसमस्तदुरितक्षयद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं शुभे शोभने मुहूर्ते अद्यब्रह्मणः द्वितीयपरार्द्धे श्वेतवराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे प्रथमे पादे जम्बूद्वीपे भारतवर्षे भरतखण्डे मेरोः दक्षिणेपार्श्वे शकाब्दे अस्मिन् वर्तमाने व्यावहारिके प्रभवादि षष्टिसंवत्सराणां मध्ये ( ) नाम संवत्सरे उत्तरायणे / दक्षिणायने ( )-ऋतौ ( ) मासे शुक्लपक्षे ( ) शुभतिथौ (इन्दु/भौम/बुध/गुरु/भृगु/स्थिर/भानु) वासरयुक्तायाम् ( ) नक्षत्रयुक्तायां ()-योग ()-करण-युक्तायां च एवं गुण-विशेषण-विशिष्टायाम् अस्याम् ( ) शुभितथौ अस्माकं सहकुटुम्बानां क्षेमस्थैर्य-धैर्य-वीर्य-विजय आयुरारोग्य ऐश्वर्याभिवृद्धर्थम् धर्मार्थकाममोक्षचतुर्विधफलपुरुषार्थसिद्धर्थं पुत्रपौत्राभिवृद्धर्थम् इष्टकाम्यार्थसिद्धर्थम् मम इहजन्मनि पूर्वजन्मनि जन्मान्तरे च सम्पादितानां ज्ञानाज्ञानकृतमहापातकचतुष्टय व्यतिरिक्तानां रहस्यकृतानां प्रकाशकृतानां सर्वेषां पापानां सद्य अपनोदनद्वारा सकल पापक्षयार्थं श्री-छाया-सुवर्चलाम्बा-समेत-श्री-सूर्यनारायणप्रीत्यर्थं श्री-सूर्यनारायण-प्रसाद-सिद्धार्थं श्री-सूर्यनारायण-पूज-पुरस्सरं तृचकल्पेन अरुणप्रश्नेन च श्री-सूर्यनमस्कारान् करिष्ये। तदङ्गं कलशपूजां च करिष्ये। श्रीविघ्नेश्वराय नमः यथास्थानं प्रतिष्ठापयामि। (गणपति प्रसादं शिरसा गृहीत्वा)

#### ॥ आसन-पूजा॥

पृथिव्या मेरुपृष्ठ ऋषिः। सुतलं छन्दः। कूर्मो देवता॥

पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता। त्वं च धारय मां देवि पवित्रं चाऽऽसनं कुरु॥

#### ॥ घण्टापूजा ॥

आगमार्थं तु देवानां गमनार्थं तु रक्षसाम्। घण्टारवं करोम्यादौ देवताऽऽह्वानकारणम्॥

### ॥ कलशपूजा॥

ॐ कलशाय नमः दिव्यगन्थान् धारयामि। ॐ गङ्गायै नमः। ॐ यमुनायै नमः। ॐ गोदावर्यै नमः। ॐ सरस्वत्यै नमः। ॐ नर्मदायै नमः। ॐ सिन्धवे नमः। ॐ कावेर्यै नमः। ॐ सप्तकोटिमहातीर्थान्यावाहयामि।

(अथ कलशं स्पृष्ट्वा जपं कुर्यात्) आपो वा इद सर्वं विश्वां भूतान्यापः प्राणा वा आपः पृशव् आपोऽन्नमापोऽमृतमापः सम्राडापो विराडापः स्वराडापृश्छन्दा्र्रस्यापो ज्योती्र्रष्यापो यज्र्र्ष्यापः सत्यमापः सर्वा देवता आपो भूर्भुवः सुवराप ओम्॥

> कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः। मूले तत्र स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः॥

कुक्षौ तु सागराः सर्वे सप्तद्वीपा वसुन्धरा। ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदोऽप्यथर्वणः। अङ्गेश्च सहिताः सर्वे कलशाम्बुसमाश्रिताः॥

गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति। नर्मदे सिन्धुकावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु॥ सर्वे समुद्राः सरितः तीर्थानि च ह्रदा नदाः। आयान्तु विष्णुपूजार्थं दुरितक्षयकारकाः॥ ॐ भूर्भुवः सुवो भूर्भुवः सुवो भूर्भुवः सुवेः।

(इति कलशजलेन सर्वोपकरणानि आत्मानं च प्रोक्ष्य।)

### ॥ आत्मपूजा॥

ॐ आत्मने नमः, दिव्यगन्धान् धारयामि।

१. ॐ आत्मने नमः ४. ॐ जीवात्मने नमः

२. ॐ अन्तरात्मने नमः ५. ॐ परमात्मने नमः

३. ॐ योगात्मने नमः ६. ॐ ज्ञानात्मने नमः

#### समस्तोपचारान् समर्पयामि।

देहो देवालयः प्रोक्तो जीवो देवः सनातनः। त्यजेदज्ञाननिर्माल्यं सोऽहं भावेन पूजयेत्॥

## ॥ पीठपूजा ॥

१. ॐ आधारशक्त्ये नमः ८. ॐ रत्नवेदिकायै नमः

२. ॐ मूलप्रकृत्यै नमः ९. ॐ स्वर्णस्तम्भाय नमः

३. ॐ ओदिकूर्माय नमः १०. ॐ श्वेतच्छत्राय नमः

४. ॐ आदिवराहाय नमः ११. ॐ कल्पकवृक्षाय नमः

५. ॐ अनन्ताय नमः १२. ॐ क्षीरसमुद्राय नमः

६. ॐ पृथिव्ये नमः १३. ॐ सितचामराभ्यां नमः

७. ॐ रत्नमण्डपाय नमः १४. ॐ योगपीठासनाय नमः

#### ॥गुरु ध्यानम्॥

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुर्गुरुर्देवो महेश्वरः। गुरुः साक्षात् परं ब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः॥

# ॥ कुम्भे वरुण-सूर्य-नारायण-पूजा॥

ॐ। इमं में वरुण श्रुधी हर्वमुद्या चं मृडय। त्वामंवस्युराचंके॥ तत्त्वां यामि ब्रह्मणा वन्दंमान्स्तदाशांस्ते यजंमानो ह्विर्भिः। अहेंडमानो वरुणेह बोध्युरुंश रस् मा न आयुः प्रमोषीः॥

अस्मिन् कुम्भे सकल-तीर्थाधिपतिं वरुणं ध्यायामि। वरुणमावाहयामि। वरुणाय नमः। आसनं समर्पयामि।

पाद्यं, अर्घ्यं, आचमनीयं, स्नानं, स्नानानन्तरमाचमनीयं, वस्नं, उपवीतं, गन्धं, गन्धोपरि अक्षतान्, पुष्पाणि समर्पयामि।

वरुणाय नमः। प्रचेतसे नमः। सुरूपिणे नमः। अपां पतये नमः। मकरवाहनाय नमः। जलाधिपतये नमः। पाशहस्ताय नमः। वरुणाय नमः। नानाविधपत्रपुष्पाणि समर्पयामि॥

वरुणाय नमः समस्तोपचारान् समर्पयामि।

ॐ। आ सृत्येन रर्जसा वर्तमानो निवेशयंत्रमृतं मर्त्यं च। हिर्ण्ययेन सिवता रथेनाऽदेवो यांति भुवना विपश्यन्।

सूर्यं सुन्दरलोकनाथममृतं वेदान्तसारं शिवम् ज्ञानं ब्रह्ममयं सुरेशममलं लोकैकचित्तं प्रभुम्। इन्द्रादित्यनराधिपं सुरगुरुं त्रैलोक्यचूडामणिं विष्णुब्रह्मशिवस्वरूपहृदयं वन्दे सदा भास्करम्॥

अस्मिन् कुम्भे श्री-छाया-सुवर्चलाम्बा-समेत-श्री-सूर्यनारायणं ध्यायामि। श्री-छाया-सुवर्चलाम्बा-समेत-श्री-सूर्यनारायणम् आवाहयामि।

आसनं समर्पयामि। पाद्यं समर्पयामि। अर्घ्यं समर्पयामि। आचमनीयं समर्पयामि। मधुपर्कं समर्पयामि। शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि। स्नानानन्तरं आचमनीयं समर्पयामि। वस्नं समर्पयामि। उपवीतं समर्पयामि। आभरणम् समर्पयामि। गन्धान् धारयामि। गन्धस्योपरि हरिद्राकुङ्कुमं समर्पयमि। अक्षतान् समर्पयामि। पुष्पाणि समर्पयामि।

## ॥ अर्चना ॥

१. ॐ मित्राय नमः

२. ॐ रवये नमः

३. ॐ सूर्याय नमः

४. ॐ भानवे नमः

५. ॐ खगाय नमः

६. ॐ पूष्णे नमः

७. ॐ हिरण्यगर्भाय नमः

८. ॐ मरीचये नमः

९. ॐ आदित्याय नमः

१०. ॐ सवित्रे नमः

११. ॐ अर्काय नमः

१२. ॐ भास्कराय नमः

# ॥ सूर्याष्टोत्तरशतनामाविलः॥

अरुणाय नमः

शरण्याय नमः

करुणारससिन्धवे नमः

असमानबलाय नमः

आर्तरक्षकाय नमः

आदित्याय नमः

आदिभूताय नमः

अखिलागमवेदिने नमः

अच्युताय नमः

अखिलज्ञाय नमः

अनन्ताय नमः

इनाय नमः

विश्वरूपाय नमः

इज्याय नमः

इन्द्राय नमः

भानवे नमः

इन्दिरामन्दिराप्ताय नमः

वन्दनीयाय नमः

ईशाय नमः

सुप्रसन्नाय नमः

सुशीलाय नमः

सुवर्चसे नमः

वसुप्रदाय नमः

वसवे नमः

१०

वासुदेवाय नमः

उज्ज्वल नमः

उग्ररूपाय नमः

ऊर्ध्वगाय नमः

विवस्वते नमः उद्यत्किरणजालाय नमः 30 हृषीकेशाय नमः ऊर्जस्वलाय नमः वीराय नमः निर्जराय नमः जयाय नमः ऊरुद्वयाभावरूपयुक्तसारथये नमः ऋषिवन्द्याय नमः रुग्धन्ने नमः ऋक्षचऋचराय नमः ऋज्स्वभावचित्ताय नमः ४० नित्यस्तुत्याय नमः ऋकारमातृकावर्णरूपाय नमः उञ्चलतेजसे नमः ऋक्षाधिनाथमित्राय नमः पुष्कराक्षाय नमः लुप्तदन्ताय नमः शान्ताय नमः कान्तिदाय नमः घनाय नमः कनत्कनकभूषाय नमः 40 खद्योताय नमः लूनिताखिलदैत्याय नमः सत्यानन्दस्वरूपिणे नमः अपवर्गप्रदाय नमः आर्तशरण्याय नमः

एकाकिने नमः भगवते नमः सृष्टिस्थित्यन्तकारिणे नमः गुणात्मने नमः घृणिभृते नमः ξo बृहते नमः ब्रह्मणे नमः ऐश्वर्यदाय नमः शर्वाय नमः हरिदश्वाय नमः शौरये नमः दशदिक्सम्प्रकाशाय नमः भक्तवश्याय नमः ओजस्कराय नमः जयिने नमः 00 जगदानन्दहेतवे नमः जन्ममृत्युजराव्याधिवर्जिताय नमः उचस्थान समारूढरथस्थाय नमः असुरारये नमः कमनीयकराय नमः अज्जवल्लभाय नमः अन्तर्बहिः प्रकाशाय नमः अचिन्त्याय नमः आत्मरूपिणे नमः अच्युताय नमः 60 अमरेशाय नमः परस्मै ज्योतिषे नमः

800

१०८

अहस्कराय नमः नारायणाय नमः

रवये नमः परेशाय नमः

तेजोरूपाय नमः रवये नमः हिरण्यगर्भाय नमः परमात्मने नमः

सम्पत्कराय नमः तरुणाय नमः

वरेण्याय नमः ऐं इष्टार्थदाय नमः

ग्रहाणां पतये नमः अं सुप्रसन्नाय नमः

श्रीमते नमः भास्कराय नमः ९०

आदिमध्यान्तरहिताय नमः श्रेयसे नमः

सौख्यदायिने नमः सौख्यप्रदाय नमः

सकलजगतां पतये नमः

दीप्तमूर्तये नमः

निखिलागमवेद्याय नमः सूर्याय नमः

कवये नमः नित्यानन्दाय नमः

॥इति श्री सूर्याष्टोत्तरशतनामाविलः सम्पूर्णा॥

श्री-छाया-स्वर्चलाम्बा-समेत-श्री-सूर्यनारायण-स्वामिने नमः नानाविध-परिमलपत्रपुष्पाणि समर्पयामि।

#### ॥ उत्तराङ्गपूजा ॥

धूपमाघ्रापयामि। अलङ्कारदीपं सन्दर्शयामि। श्री-छाया-सुवर्चलाम्बा-समेत-श्री-सूर्यनारायण-स्वामिने नमः नैवेद्यं निवेदयामि। निवेदनान्तरम् आचमनीयं समर्पयामि। श्री-छाया-सुवर्चलाम्बा-समेत-श्री-सूर्यनारायण-स्वामिने नमः कर्पूरताम्बूलं समर्पयामि।

भास्करायं विद्महें महद्युतिकरायं धीमहि। तन्नों आदित्यः प्रचोदयाँत्।

श्री-छाया-सुवर्चलाम्बा-समेत-श्री-सूर्यनारायण-स्वामिने नमः समस्त अपराध क्षमापनार्थं कर्पूरनीराजनं दर्शयामि। कर्पूरनीरजनानन्तरम् आचमनीयं समर्पयामि। रक्षां धारयामि। श्री-छाया-सुवर्चेलाम्बा-समेत-श्री-सूर्यनारायण-

स्वामिने नमः वेदोक्तमन्त्रपुष्पाञ्जलिं समर्पयामि। स्वर्णपुष्पं समर्पयामि। श्री-छाया-सुवर्चलाम्बा-समेत-श्री-सूर्यनारायण-स्वामिने नमः प्रदक्षिणनमस्काराः समर्पयामि।

#### ॥ न्यासः ॥

ओं अस्य श्रीसूर्यनमस्कार-महामन्नस्य, कण्वपुत्रः प्रस्कन्न ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्रीसूर्यनारायणो देवता।

हां बीजम्, हीं शक्तिः, हुं कीलकम्। श्रीसूर्यनारायण-प्रसाद-सिद्धर्थे नमस्कारे विनियोगः।

ह्रां अङ्गुष्ठाभ्यां नमः।

हीं तर्जनीभ्यां नमः। हूं मध्यमाभ्यां नमः। हैं अनामिकाभ्यां नमः। हौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः।

ह्रः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

हां हृदयाय नमः। हीं शिरसे स्वाहा। हूं शिखायै वषट्। हैं कवचाय हुम्। हौं नेत्रत्रयाय वौषट्।

ह्रः अस्त्राय फट्।

भूर्भुवस्स्वरोमिति दिग्बन्धः॥

#### ॥ ध्यानम्॥

उदयगिरिमुपेतं भास्करं पद्महस्तं सकलभुवननेत्रं नूतनरत्नोपधेयम्। तिमिरकरिमृगेन्द्रं बोधकं पद्मिनीनां सुरगुरुमभिवन्दे सुन्दरं विश्वरूपम्॥

लं-पृथिव्यात्मने गन्धं समर्पयामि। हं- आकाशात्मने पुष्पाणि समर्पयामि। यं-वाय्वात्मने धूपमाघ्रापयामि। रं-वह्न्यात्मने दीपं दर्शयामि। वं-अमृतात्मने अमृतोपहारं निवेदयामि। सं-सर्वात्मने सर्वोपचारान् समर्पयामि॥

#### ॥ नमस्कारा:॥

ॐ गृणानां त्वा गृणपंति १ हवामहे कविं कवीनामुंपमश्रंवस्तमम्। ज्येष्ठराजं ब्रह्मणां ब्रह्मणस्पत् आ नेः शृण्वन्नृतिभिः सीद् सादेनम्॥ ॐ महागणपतये नमः॥

> उमाकोमल-हस्ताज्ञ-सम्भावित-ललाटकम्। हिरण्यकुण्डलं वन्दे कुमारं पुष्करस्रजम्॥

ॐ श्री-वल्ली-देवसेना-समेत-सुब्रह्मण्यस्वामिने नमः॥

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुर्गुरुर्देवो महेश्वरः। गुरुः साक्षात्परं ब्रह्म तस्मै श्री-गुरवे नमः॥

गुरवे सर्वलोकानां भिषजे भवरोगिणाम्। निधये सर्वविद्यानां दक्षिणामूर्तये नमः॥

विनतातनयो देवः कर्मसाक्षी सुरेश्वरः। सप्ताश्वः सप्तरज्जुश्च अरुणो मे प्रसीदत्॥ रज्जुवेत्रकशापाणिं प्रसन्नं कश्यपात्मजम्। सर्वाभरणदीप्ताङ्गमरुणं प्रणमाम्यहम्॥

ॐ कर्मसाक्षिणे अरुणाय नमः॥

अग्निमींळे पुरोहितं यज्ञस्यं देवमृत्विजम्। होतांरं रत्न-धातंमम्॥ ऋग्वेदात्मने सूर्यनारायण-स्वामिने नमः॥

इषेत्वोर्जे त्वां वायवंः स्थो पायवंः स्थ देवो वंः सिवता प्रापंयतु श्रेष्ठंतमाय कर्मणे॥ यजुर्वेदात्मने सूर्यनारायण-स्वामिने नमः॥

अग्र आयांहि वीतयें गृणानो ह्व्यदांतये। नि होतां सध्सि बहिषिं॥ सामवेदात्मने सूर्यनारायण-स्वामिने नमः॥

शत्रों देवीर्भिष्टंय आपों भवन्तु पीतयें। शं योर्भिस्नंवन्तु नः॥ अथर्ववेदात्मने सूर्यनारायण-स्वामिने नमः॥

(तैत्तिरीयारण्यके प्रश्नः - १० (महानारयणोपनिषत्))

घृणिः सूर्यं आदित्यो न प्रभां वात्यक्षंरम्। मधुं क्षरन्ति तद्रंसम्। सृत्यं वै तद्रस्मापो ज्योतीरसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः सुवरोम्॥ श्री-छाया-सुवर्चलाम्बा-समेत-श्री-सूर्यनारायण-स्वामिने नमः॥

(तैत्तिरीयसंहितायां काण्डः १/प्रश्नः - ४)

त्रणिर्विश्वदंर्शतो ज्योतिष्कृदंसि सूर्य। विश्वमा भांसि रोचनम्॥ उपयामगृहीतोऽसि सूर्याय त्वा भ्राजंस्वत एष ते योनिः सूर्याय त्वा भ्राजंस्वते॥३२॥ श्री-छाया-सुवर्चलाम्बा-समेत-श्री-सूर्यनारायण-स्वामिने नमः॥

- 🕉 ह्राम्। उद्यन्नद्य मित्रमहः। मित्राय नमः॥
- ॐ ह्रीम्। आरोहुन्नुत्तंरां दिवम्ं। रवये नमः॥
- ॐ ह्रम्। हृद्रोगं ममं सूर्य। सूर्याय नमः॥

- ॐ ह्रैम्। हरिमाणंं च नाशय। भानवे नमः॥
- ॐ ह्रौम्। शुकेषु मे हरिमाणम्। खगाय नमः॥
- ॐ हः। रोपणाकांसु दध्मसि॥ पूष्णे नमः॥
- ॐ ह्राम्। अथों हारिद्रवेषुं मे। हिरण्यगर्भाय नमः॥
- ॐ ह्रीम्। हरिमाणुं नि दंध्मसि। मरीचये नमः॥
- ॐ ह्रम्। उदंगादयमांदित्यः। आदित्याय नमः॥
- ॐ ह्रैम्। विश्वेन सहंसा सुह। सवित्रे नमः॥
- ॐ ह्रौम्। द्विषन्तुं ममं रुन्धयन्। अर्काय नमः॥
- ॐ हः। मो अहं द्विंषतो रंधम्। भास्कराय नमः॥
- ॐ ह्रां ह्रीम्। उद्यन्नद्य मित्रमहः। आरोहन्नुत्तरां दिवम्। मित्र-रविभ्यां नमः॥
- ॐ हूं हैम्। हृद्रोगं ममं सूर्य। हृरिमाणं च नाशय। सूर्य-भानुभ्यां नमः॥
- ॐ हों हः। शुकेषु मे हरिमाणम्ं। रोपणाकांसु दध्मसि॥ खग-पूषभ्यां नमः॥
- ॐ ह्रां ह्रीम्। अथों हारिद्रवेषुं मे। हृरिमाणुं नि दंध्मसि। हिरण्यगर्भ-मरीचिभ्यां नमः॥
- ॐ हूं हैम्। उदंगाद्यमांदित्यः। विश्वंन सहंसा सह। आदित्य-सवितृभ्यां नमः॥
- ॐ ह्रौं हः। द्विषन्तुं मर्म रुन्धयन्। मो अहं द्विष्तो रिधम्। अर्क-भास्कराभ्यां नमः॥
- ॐ हां हीं हूं हैम्। उद्यन्नद्य मित्रमहः। आरोह्नुत्तर्गं दिवम्। हृद्रोगं ममें सूर्य। हिरमाणं च नाशय। मित्र-रवि-सूर्य-भानुभ्यो नमः॥
- ॐ हौं हः हां हीम्। शुकेषु मे हिर्माणम्ं। रोप्णाकांसु दध्मसि॥ अथों

हारिद्रवेषुं मे। हृरिमाणं नि दंध्मिस। खग-पूष-हिरण्यगर्भ-मरीचिभ्यो नमः॥ ॐ हूं हैं हौं हः। उदंगाद्यमांदित्यः। विश्वेन सहंसा सह। द्विषन्तं ममं रन्धयन्। मो अहं द्विषतो रंधम्। आदित्य-सवित्रर्क-भास्करेभ्यो नमः॥ ॐ हां हीं हूं हैं हौं हः। उद्यन्नद्य मित्रमहः। आरोह्नुत्तंरां दिवम्। हृद्रोगं ममं सूर्य। हृरिमाणं च नाशय। शुकेषु मे हिर्माणम्। रोप्णाकांसु दध्मिस॥ मित्र-रवि-सूर्य-भानु-खग-पूषभ्यो नमः॥

ॐ हां हीं हूं हैं हौं हः। अथों हारिद्रवेषुं मे। हृरिमाणुं नि देध्मसि। उदंगाद्यमादित्यः। विश्वेन सहंसा सह। द्विषन्तं ममं रन्धयन्ं। मो अहं द्विषतो रेधम्। हिरण्यगर्भ-मरीच्यादित्य-सवित्रर्क-भास्करेभ्यो नमः॥

(तैत्तिरीयब्राह्मणे अष्टकं - ३/प्रश्नः - ७/अनुवाकः - ६/ पश्चादयः ७६-७७)

ॐ हां हीं हूं हैं हौं हः। ॐ हां हीं हूं हैं हौं हः। उद्यन्नद्य मित्रमहः। आरोह्नन्नुत्तंरां दिवम्ं। हृद्रोगं ममं सूर्य। हृरिमाणं च नाशय। शुकेषु मे हिरिमाणम्ं। रोपणाकांसु दध्मसि॥ अथों हारिद्रवेषुं मे। हृरिमाणं नि दंध्मसि। उदंगाद्यमादित्यः। विश्वेन सहंसा सह। द्विषन्तं ममं रन्धयन्। मो अहं द्विषतो रंधम्। मित्र-रवि-सूर्य-भानु-खग-पूष-हिरण्यगर्भ-मरीच्यादित्य-सवित्रर्क-भास्करेभ्यो नमः॥

# ॥ आदित्यमण्डले परब्रह्मोपासनम्॥

(तैत्तिरीयारण्यके प्रश्नः - १० (महानारयणोपनिषत्))

आदित्यो वा एष एतन्मण्डलं तपंति तत्र ता ऋचस्तद्दचा मंण्डल् स ऋचां लोकोऽथ् य एष एतस्मिन्मण्डलेऽचिदींप्यते तानि सामानि स साम्नां मण्डल् स साम्नां लोकोऽथ् य एष एतस्मिन्मण्डलेऽचिषि पुरुषस्तानि यजूर्षेष स यज्ञेषा मण्डल् स यज्ञेषां लोकः सेषा त्र्य्येवं विद्या तपिति य एषो ऽन्तर्रादित्ये हिर्णमयः पुरुषः॥३१॥ श्री-छाया-सुवर्चलाम्बा-समेत-श्री- सूर्यनारायण-स्वामिने नमः॥

# ॥ आदित्यपुरुषस्य सर्वात्मकत्वप्रदर्शनम्॥

(तैत्तिरीयारण्यके प्रश्नः - १० (महानारयणोपनिषत्))

आदित्यो वै तेज् ओजो बलं यश्श्रक्षः श्रोत्रंमात्मा मनों मृन्युर्मनुंर्मृत्युः सत्यो मित्रो वायुरांकाशः प्राणो लोंकपालः कः किं कं तथ्सत्यमन्नंमृतों जीवो विश्वः कत्मः स्वंयम्भु ब्रह्मैतदमृत एष पुरुष एष भूतानामधिपतिर्ब्रह्मणः सायुंज्य सलोकतांमाप्रोत्येतासांमेव देवतांना सायुंज्य सायुंज्य सार्थिता समानलोकतांमाप्रोति य एवं वेदैत्युपनिषत्॥३२॥ श्री-छाया-सुवर्चलाम्बा-समेत-श्री-सूर्यनारायण-स्वामिने नमः॥

#### ॥ अरुणप्रश्नः॥

ॐ भद्रं कर्णेभिः शृणुयामं देवाः। भद्रं पंश्येमाक्षिभिर्यजंत्राः। स्थिरैरङ्गैंस्तुष्टु-वाश्संस्तुनूभिः। व्यशेम देवहितं यदायुः। स्वस्ति न इन्द्रों वृद्धश्रंवाः। स्वस्ति नंः पूषा विश्ववेदाः। स्वस्ति नस्ताक्ष्यों अरिष्टनेमिः। स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु॥ ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥

भद्रं कर्णिभिः शृणुयामं देवाः। भद्रं पंश्येमाक्षभिर्यजंत्राः। स्थिरैरङ्गैंस्तुष्टु-वार्श्सस्त्नूभिः। व्यशेम देवहितं यदायुः। स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रंवाः। स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः। स्वस्ति नस्ताक्ष्यो अरिष्टनेमिः। स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु। आपमापामुपः सर्वाः। अस्माद्स्मादितोऽमुतः॥१॥

अग्निर्वायुश्च सूर्यश्च। सह संश्रस्करिद्धया। वाय्वश्वां रिम्पितयः। मरींच्यात्मानो अद्रुंहः। देवीर्भुवनसूर्वरीः। पुत्रवत्वायं मे सुत। महानाम्नीर्महा-मानाः। महसो महसः स्वंः। देवीः पंजन्यसूर्वरीः। पुत्रवत्वायं मे सुत॥२॥

अपाश्चंिष्णम्पा रक्षः। अपाश्चंिष्णम्पा रघम्। अपाँघामपं चावर्तिम्। अपंदेवीरितो हिंत। वर्ज्नं देवीरजींता ॥ भवंनं देवसूवंरीः। आदित्यानदितिं देवीम्। योनिनोर्ध्वमुदीषंत। शिवा नः शन्तंमा भवन्तु। दिव्या आप ओषंधयः। सुमुडीका सरंस्वति। मा ते व्योम सन्दर्शि॥ ॥ श्री-छाया-सुवर्चलाम्बा-समेत-श्री-सूर्यनारायण-स्वामिने नमः।

ॐ नमो नारायणाय॥

[१]

स्मृतिः प्रत्यक्षंमैतिह्यम्। अनुंमानश्चतुष्टयम्। एतैरादिंत्यमण्डलम्। सर्वेरेव विधांस्यते। सूर्यो मरीचिमादंत्ते। सर्वस्माद्भवंनाद्धि। तस्याः पाकविंशेषेण। स्मृतं कालविशेषणम्। नदीव प्रभवात्काचित्। अक्षय्यांथ्स्यन्दते यंथा॥४॥

तां नद्योऽभि संमायन्ति। सो्रुः सतीं न निवंति। एवं नानासंमुत्थानाः। काृ्लाः संवथ्सर् श्रिताः। अणुशश्च महश्चश्च। सर्वे समव्यत्रितम्। सतैः सर्वेः समाविष्टः। ऊरुः संत्र निवर्तते। अधिसंवथ्सरं विद्यात्। तदेवं लक्षणे॥५॥

अणुभिश्च महिद्धिश्च। समार्रूढः प्रदृश्यते। संवथ्सरः प्रत्यक्षेण। नाधिसंत्वः प्रदृश्यते। पटरो विक्लिधः पिङ्गः। एतद्वेरुणलक्ष्णम्। यत्रैतंदुपृदृश्यते। सहस्रं तत्र नीयते। एक १ हि शिरो नाना मुखे। कृथ्स्रं तंदतुलक्षणम्॥६॥

उभयतः सप्तैन्द्रियाणि। जिल्पतं त्वेव दिह्यंते। शुक्रकृष्णे संवंध्सर्स्य। दक्षिणवामयोः पार्श्वयोः। तस्यैषा भवंति। शुक्रं ते अन्यद्यंज्ञतं ते अन्यत्। विषुंरूपे अहंनी द्यौरिवासि। विश्वा हि माया अवंसि स्वधावः। भुद्रा ते पूषित्रह रातिरस्त्विति। नात्र भुवंनम्। न पूषा। न पृशवंः। नाऽऽदित्यः संवध्सर एव प्रत्यक्षेण प्रियतमं विद्यात्। एतद्वे संवध्सरस्य प्रियतमः रूपम्। योऽस्य महानर्थ उत्पथ्स्यमानो भ्वति। इदं पुण्यं कुरुष्वेति। तमाहर्रणं दद्यात्॥७॥ श्री-छाया-सुवर्चलाम्बा-समेत-श्री-सूर्यनारायण-स्वामिने नमः।

#### ॐ नमो नारायणाय॥

साकुआना र्स्ट्रियमाहुरेक्जम्। षडुंद्यमा ऋषंयो देवजा इति। तेषांमिष्टानि विहितानि धामुशः। स्थात्रे रेजन्ते विकृतानि रूपशः। को नुं मर्या अमिथितः। सखा सखांयमब्रवीत्। जहांको अस्मदीषते। यस्तित्याजं सिखुविद्र सखांयम्। न तस्यं वाच्यपि भागो अस्ति। यदी र्श्रणोत्यलकर्श्रणोति॥८॥

न हि प्रवेदं सुकृतस्य पन्थामितिं। ऋतुर्ऋतुना नुद्यमानः। विनेनादा-भिधावः। षष्टिश्च त्रि॰शंका वृल्गाः। शुक्लकृष्णौ च षाष्टिंकौ। साराग्वस्त्रेर्जर-दंक्षः। वसन्तो वसुंभिः सह। संवथ्सरस्यं सिवतुः। प्रैषकृत्प्रथमः स्मृतः। अमूनादयंतेत्यन्यान्॥९॥

अमू इश्चं परि्रक्षंतः। एता वाचः प्रयुज्यन्ते। यत्रैतंदुपृदृश्यंते। एतदेव विजानीयात्। प्रमाणं कालपर्यये। विशेषणं तुं वक्ष्यामः। ऋतूनां तिन्नेबोधंत। शुक्रवासां रुद्रगणः। ग्रीष्मेणांऽऽवर्तते सह। निजहंन पृथिवी स्वाम्॥१०॥

ज्योतिषाँ ऽप्रतिख्येनं सः। विश्वरूपाणि वासा १ सि। आदित्यानां निबोधंत। संवथ्सरीणं कर्मफलम्। वर्षाभिर्ददता १ सह। अदुःखो दुःखचं क्षुरिव। तद्मां ऽऽपीत इव दृश्यंते। शीतेनां व्यथंयित्रव। रुरुदंक्ष इव दृश्यंते। ह्लादयतें ज्वलंतश्चेव। शाम्यतंश्चास्य चक्षुंषी। या व प्रजा भं १ श्यन्ते। संवथ्सरात्ता भं १ श्यन्ते। याः प्रतितिष्ठन्ति। संवथ्सरे ताः प्रतितिष्ठन्ति। वर्षाभ्यं इत्यर्थः॥११॥

श्री-छाया-सुवर्चलाम्बा-समेत-श्री-सूर्यनारायण-स्वामिने नमः।

### ॐ नमो नारायणाय॥

[३]

अक्षिंदुः खोत्थितस्यैव। विप्रसन्ने कुनीनिके। आङ्के चार्द्रणं नास्ति। ऋभूणां

तन्निबोधंत। कुनुकाभानिं वासार्सि। अहतांनि निबोधंत। अन्नमश्रीतं मृज्मीत। अहं वो जीवनप्रदः। एता वाचः प्रयुज्यन्ते। श्ररद्यंत्रोपदृश्यंते॥१२॥

अभिधून्वन्तोऽभिघ्नंन्त इव। वातवंन्तो मुरुद्गंणाः। अमृतो जेतुमिषुमुंखिम्व। सन्नद्धाः सह दंदश्चे ह। अपध्वस्तैवंस्तिवंणैरिव। विशिखासंः कपर्दिनः। अन्नद्धस्य योथ्स्यंमान्स्य। ऋद्धस्यंव लोहिनी। हेमतश्चक्षंषी विद्यात्। अक्ष्णयोः क्षिपुणोरिव॥१३॥

दुर्भिक्षं देवंलोकेषु। मनूनांमुद्कं गृंहे। एता वाचः प्रंवद्न्तीः। वैद्युतों यान्ति शैशिंरीः। ता अग्निः पवंमना अन्वैक्षत। इह जींविकामपंरिपश्यन्। तस्यैषा भवंति। इहेहंवः स्वतपसः। मर्रुतः सूर्यत्वचः। शर्म सप्रथा आवृंणे॥१४॥ श्री-छाया-सुवर्चलाम्बा-समेत-श्री-सूर्यनारायण-स्वामिने नमः।

## ॐ नमो नारायणाय॥

[૪]

अतिताम्राणि वासार्सा। अष्टिवंजिशतिष्ठं च। विश्वे देवा विप्रंहर्न्त। अष्टिवंजिशतिष्ठं च। विश्वे देवा विप्रंहर्न्त। अष्टिजंह्वा असश्चंत। नैव देवों न मृत्यः। न राजा वंरुणो विभुः। नाग्निर्नेन्द्रो न पंवमानः। मातृकंचन् विद्यंते। दिव्यस्यैका धनुंरार्बिः। पृथिव्यामपंरा श्रिता॥१५॥

तस्येन्द्रो विम्निरूपेण। धनुर्ज्यामिछिनथ्स्वयम्। तिदेन्द्रधनुंरित्युज्यम्। अभवंर्णेषु चक्षते। एतदेव शंयोर्बार्ह्स्पत्यस्य। एतद्रुंद्रस्य धनुः। रुद्रस्यं त्वेव धनुंरार्त्तिः। शिर् उत्पिपेष। स प्रवार्योऽभवत्। तस्माद्यः सप्रवार्येणं यज्ञेन यज्ञते। रुद्रस्य स शिरः प्रतिद्धाति। नैन रूद्र आरुको भवति। य एवं वेदं॥१६॥

श्री-छाया-सुवर्चलाम्बा-समेत-श्री-सूर्यनारायण-स्वामिने नमः।

## ॐ नमो नारायणाय॥

अत्यूर्ध्वाक्षोऽतिरश्चात्। शिशिरः प्रदृश्यते। नैव रूपं नं वासार्सि। न चक्षुः प्रतिदृश्यते। अन्योन्यं तु नं हिङ्स्रातः। सृतस्तद्देवलक्षणम्। लोहितोऽक्ष्णि शारशीर्ष्णिः। सूर्यस्योदयनं प्रति। त्वं करोषि न्यञ्जलिकाम्। त्वं करोषि निजानुंकाम्॥१७॥

निजानुका में न्यञ्चलिका। अमी वाचमुपासंतामिति। तस्मै सर्व ऋतवों नम्न्ते। मर्यादाकरत्वात्प्रंपुरोधाम्। ब्राह्मणं आप्नोति। य एवं वेद। स खलु संवथ्सर एतैः सेनानींभिः सह। इन्द्राय सर्वान्कामानिभिवहति। स द्रफ्सः। तस्यैषा भवंति॥१८॥

अवंद्रफ्सो अर्श्रुमतीमितष्ठत्। इयानः कृष्णो दशिमः सहस्रैः। आवृतीमिन्द्रः शच्या धर्मन्तम्। उपस्रुहि तं नृमणामथंद्रामिति। एतयैवेन्द्रः सलावृंक्या सह। असुरान् पंरिवृश्चति। पृथिंव्युर्शुमंती। तामृन्ववंस्थितः संवथ्सरो दिवं चं। नैवं विदुषाऽऽचार्यांन्तेवासिनौ। अन्योन्यस्मैं द्रुह्याताम्। यो द्रुह्यति। भ्रश्यते स्वंर्गाल्लोकात्। इत्यृतुमंण्डलानि। सूर्यमण्डलांन्याख्यायिकाः। अत ऊर्ध्वर संनिवंचनाः॥१९॥

श्री-छाया-सुवर्चलाम्बा-समेत-श्री-सूर्यनारायण-स्वामिने नमः।

# ॐ नमो नारायणाय॥

**[ξ**]

आरोगो भ्राजः पटरंः पत्ङ्गः। स्वर्णरो ज्योतिषीमान् विभासः। ते अस्मै सर्वे दिवमांतपन्ति। ऊर्जं दुहाना अनपस्फुरंन्त इति। कश्यंपोऽष्ट्रमः। स महामेरुं नं जहाति। तस्यैषा भवंति। यत्ते शिल्पं कश्यप रोचनावंत्। इन्द्रियावंत्पुष्कुलं चित्रभांनु। यस्मिन्थ्सूर्या अर्पिताः सप्त साकम्॥२०॥

तस्मिन् राजानमधिविश्रयेमिमृति। ते अस्मै सर्वे कश्यपाज्यो-तिर्लभुन्ते। तान्थ्सोमः कश्यपादधिनिर्धमित। भ्रस्ताकर्मकृदिवैवम्। प्राणो जीवानीन्द्रियंजीवानि। सप्त शीर्षंण्याः प्राणाः। सूर्या इंत्याचार्याः। अपश्यमहमेतान्थ्सप्त सूर्यानिति। पञ्चकर्णो वाथ्स्यायनः। सप्तकर्णेश्च प्राक्षिः॥२१॥

आनुश्रविक एव नौ कश्यंप इति। उभौ वेद्यिते। न हि शेकुमिव महामेंरुं गुन्तुम्। अपश्यमहमेथ्सूर्यमण्डलं परिवर्तमानम्। गार्ग्यः प्राणत्रातः। गच्छन्त महामे्रम्। एकं चाज्रहतम्। भ्राजपटरपतंङ्गा निहने। तिष्ठन्नांतपन्ति। तस्मांदिह तिष्ठीतपाः॥२२॥

अमुत्रेतरे। तस्मादिहातिष्ठितपाः। तेषांमेषा भवंति। सप्त सूर्या दिवमनुप्रविष्टाः तान्-वेति पृथिभिदिक्षिणावान्। ते अस्मै सर्वे घृतमातपुन्ति। ऊर्जं दुहाना अनपस्फुरंन्त इति। सप्तर्त्विजः सूर्या इंत्याचार्याः। तेषांमेषा भवंति। सप्त दिशो नानांसूर्याः॥२३॥

स्प्त होतांर ऋत्विजंः। देवा आदित्यां ये स्प्ता तेभिः सोमाभी रक्षंण इति। तदंप्याम्रायः। दिग्भाज ऋतूंन् करोति। एतंयैवावृता सहस्रसूर्यताया इति वैशम्पायनः। तस्यैषा भवंति। यद्यावं इन्द्र ते श्तर शृतं भूमीः। उतस्युः। नत्वां विज्ञन्थसहस्र सूर्याः॥२४॥

अनु न जातमष्ट रोदंसी इति। नानालिङ्गत्वादतूनां नानांसूर्यृत्वम्। अष्टौ तु व्यवसिता इति। सूर्यमण्डलान्यष्टांत ऊर्ध्वम्। तेषांमेषा भवंति। चित्रं देवानामुदंगादनीकम्। चक्षुंर्मित्रस्य वर्रुणस्याग्नेः। आऽप्रा द्यावांपृथिवी अन्तरिक्षम्। सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुंषश्चेति॥२५॥

श्री-छाया-सुवर्चलाम्बा-समेत-श्री-सूर्यनारायण-स्वामिने नमः।

### ॐ नमो नारायणाय॥

केदमभं निविशते। क्वाय र संवथ्सरो मिथः। क्वाहः क्वेयं देव रात्री। क्व

मासा ऋतवः श्रिताः। अर्धमासां मुहूर्ताः। निमेषास्त्रंटिभिः सह। क्वेमा आपो निविश्वन्ते। यदीतों यान्ति सम्प्रंति। काला अफ्सु निविश्वन्ते। आपः सूर्ये समाहिताः॥२६॥

अभ्राण्यपः प्रंपद्यन्ते। विद्युष्सूर्ये समाहिता। अनवर्णे इंमे भूमी। इयं चांऽसौ च रोदंसी। किङ्स्विदत्रान्तंरा भूतम्। येनेमे विधृते उभे। विष्णुनां विधृते भूमी। इति वंध्सस्य वेदंना। इरांवती धेनुमती हि भूतम्। सूयवसिनी मनुषे दशस्ये॥२७॥

व्यष्टभ्राद्रोदंसी विष्णंवेते। दाधर्थं पृथिवीम्भितों मयूखैंः। किं तिहष्णोर्बल-माहुः। का दीप्तिः किं प्रायंणम्। एको युद्धारंयद्देवः। रेजतीं रोद्सी उंभे। वाताद्विष्णोर्बलमाहुः। अक्षराँदीप्तिरुच्यंते। त्रिपदाद्धारंयद्देवः। यद्विष्णोरेक-मृत्तंमम्॥२८॥

अग्नयो वायंवश्चैव। एतदंस्य प्रायंणम्। एच्छामि त्वा पंरं मृत्युम्। अवमं मध्यमश्चंतुम्। लोकं च पुण्यंपापानाम्। एतत्पृच्छामि सम्प्रंति। अमुमाहुः पंरं मृत्युम्। प्वमानं तु मध्यंमम्। अग्निरेवावंमो मृत्युः। चन्द्रमाश्चतुरुच्यंते॥२९॥

अनाभोगाः पेरं मृत्युम्। पापाः संयन्ति सर्वदा। आभोगास्त्वेवं संयन्ति। यत्र पुण्यकृतो जनाः। ततो मध्यममायन्ति। चृतुमंग्निं च सम्प्रंति। पृच्छामि त्वां पापकृतः। यत्र यातयते यमः। त्वं नस्तद्वह्मन् प्रब्रूहि। यदि वैत्थाऽसतो गृहान्॥३०॥

कृश्यपांदुिदेताः सूर्याः। पापान्निर्प्नान्ति सर्वदा। रोदस्योन्तिर्देशेषु। तत्र न्यस्यन्ते वास्वैः। तेऽशरीराः प्रपद्यन्ते। यथाऽपुण्यस्य कर्मणः। अपाण्यपादंकेशासः। तुत्र तेऽयोनिजा जनाः। मृत्वा पुनर्मृत्युमापद्यन्ते। अद्यमानाः स्वकर्मभिः॥३१॥

आशातिकाः क्रिमंय इव। ततः पूयन्ते वास्रवैः। अपैतं मृत्युं ज्यित। य एवं वेदं। स खल्वैवं विद्वाह्मणः। दीर्घश्रुंत्तमो भवंति। कश्यंपस्यातिथिः सिद्धगंमनः सिद्धागंमनः। तस्येषा भवंति। आयस्मिन्थ्सप्त वास्रवाः। रोहंन्ति पूर्व्या रुहंः॥३२॥

ऋषिंर्ह दीर्घश्रुत्तंमः। इन्द्रस्य घर्मो अतिथिरिति। कश्यपः पश्यंको भवति। यथ्सर्वं परिपश्यतीति सौक्ष्म्यात्। अथाग्नेरष्टपुंरुषस्य। तस्यैषा भवंति। अग्ने नयं सुपथां राये अस्मान्। विश्वांनि देव व्युनांनि विद्वान्। युयोध्यंस्मञ्जंहराणमेनः। भूयिष्ठां ते नम् उक्तिं विधेमेति॥३३॥

श्री-छाया-सुवर्चलाम्बा-सम्त-श्री-सूर्यनारायण-स्वामिने नमः।

## ॐ नमो नारायणाय॥

[2]

अग्निश्च जातंवेदाश्च। सहोजा अंजिराप्रभुः। वैश्वानरो नंर्यापाश्च। पुङ्किरांधाश्च सप्तंमः। विसर्पेवाऽष्टंमोऽग्रीनाम्। एतेऽष्टौ वसवः, क्षिंता इति। यथर्त्वेवाग्नेरर्चिर्वर्णंविशेषाः। नीलार्चिश्च पीतकांविश्चेति। अथ वायोरेकादशपुरुषस्यैकादशंस्रीकस्य। प्रभ्राजमाना व्यंवदाताः॥३४॥

याश्च वासुंकिवैद्युताः। रजताः पर्रुषाः श्यामाः। कपिला अंतिलोहिताः। ऊर्ध्वा अवपंतन्ताश्च। वैद्युत इंत्येकादश। नैनं वैद्युतों हिन्स्ति। य एवं वेद। स होवाच व्यासः पाराश्यरः। विद्युद्वधमेवाहं मृत्युमैंच्छमिृति। न त्वकांम शहन्ति॥३५॥

य एवं वेद। अथ गन्धर्वगणाः। स्वानुभ्राट्। अङ्घारिर्बम्भारिः। हस्तः सुहंस्तः। कृशानुर्विश्वावंसुः। मूर्धन्वान्थ्सूर्यवृर्चाः। कृतिरित्येकादश गन्धर्व-गणाः। देवाश्च महादेवाः। रश्मयश्च देवां गरिगरः॥३६॥

नैनं गरों हिन्स्ति। य एवं वेद। गौरी मिमाय सिल्लानि तक्षंती। एकंपदी द्विपदी सा चतुंष्पदी। अष्टापंदी नवंपदी बभूवुषीं। सहस्राक्षरा परमे व्योमन्निति। वाचों विशेषणम्। अथ निगदंव्याख्याताः। ताननुर्क्रमिष्यामः। व्राहवंः स्वतुपसः॥३७॥

विद्युन्महसो धूपंयः। श्वापयो गृहमेधाँश्चेत्येते। ये चेमेऽशिंमिविद्विषः। पर्जन्याः सप्त पृथिवीमभिवंर्षन्ति। वृष्टिंभिरिति। एतयैव विभक्तिविंपरीताः। सप्तभिर्वा तैंरुदीरिताः। अमूँ लोकानभिवंर्षन्ति। तेषांमेषा भवंति। स्मानमेत-दुदंकम्॥३८॥

उचैत्यंवचाहंभिः। भूमिं पूर्जन्या जिन्वन्ति। दिवं जिन्वन्त्यग्नंय इति। यदक्षरं भूतकृतम्। विश्वं देवा उपासंते। महर्षिमस्य गोप्तारम्। जमदंग्निमकुर्वत। जमदंग्निराप्यांयते। छन्दोभिश्चतुरुत्तरैः। राज्ञः सोमंस्य तृप्तासंः॥३९॥

ब्रह्मणा वीर्यावता। शिवा नंः प्रदिशो दिशंः। तच्छं योरावृंणीमहे। गातुं यज्ञायं। गातुं यज्ञपंतये। दैवींः स्वस्तिरंस्तु नः। स्वस्तिर्मानुंषेभ्यः। ऊर्धं जिंगातु भेषजम्। शं नो अस्तु द्विपदें। शं चतुंष्पदे। सोमपा (३) असोमपा (३) इति निगदंव्याख्याताः॥४०॥

श्री-छाया-सुवर्चलाम्बा-समेत-श्री-सूर्यनारायण-स्वामिने नमः। ॐ नमो नारायणाय॥

[8]

सहस्रवृदियं भूमिः। प्रं व्योम सहस्रवृत्। अश्विनां भुज्यूंनास्त्या। विश्वस्यं जगतस्पंती। जाया भूमिः पंतिर्व्योम। मिथुनंन्ता अतुर्यंथुः। पुत्रो बृहस्पंती रुद्रः। स्रमां इतिं स्रीपुमम्। शुक्रं वांम्न्यद्यज्तं वांम्न्यत्। विषुंरूपे अहंनी द्यौरिव स्थः॥४१॥ विश्वा हि माया अवंथः स्वधावन्तौ। भुद्रा वां पूषणाविह रातिरंस्तु। वासाँत्यौ चित्रौ जगंतो निधानौँ। द्यावांभूमी चरथः स् स् सखांयौ। ताविश्वनां रासभाश्वा हवंं मे। शुभस्पृती आगत स् सूर्ययां सह। त्युग्रोंह भुज्युमंश्विनोदमेघे। र्यिं न कश्चिन्ममृवां (२) अवांहाः। तमूंहथुर्नीभिरात्मन्वतींभिः। अन्तरिक्षप्रिङ्गिरपोंदकाभिः॥४२॥

तिस्रः, क्षप्स्तिरहांतिव्रजिद्धिः। नासंत्या भुज्युमूंहथुः पत्ङ्गैः। समुद्रस्य धन्वंन्नार्द्रस्यं पारे। त्रिभीरथैंः शृतपिद्धिः षडिश्वैः। सवितारं वितन्वन्तम्। अनुंबध्नाति शाम्बरः। आपपूर्षम्बरश्चेव। सवितारेप्सोऽभवत्। त्य सतृप्तं विदित्वैव। बहुसोम गिरं विशी॥४३॥

अन्वेति तुग्रो वंक्रियान्तम्। आयसूयान्थ्सोमंतृपस्षुषु। स सङ्ग्राम-स्तमौद्योऽत्योतः। वाचो गाः पिपाति तत्। स तद्गोभिः स्तवाऽत्येत्यन्ये। रक्षसानिवृताश्चं ये। अन्वेति परिवृत्याऽस्तः। एवमेतौ स्थों अश्विना। ते एते द्युंः पृथिव्योः। अहंरहर्गर्भं दधाथे॥४४॥

तयोर्तौ वृथ्सावंहोरात्रे। पृथिव्या अहंः। दिवो रात्रिः। ता अविसृष्टौ। दम्पंती एव भवतः। तयोर्तौ वृथ्सौ। अग्निश्चांऽऽदित्यश्चं। रात्रेर्व्थ्सः। श्वेत आंदित्यः। अह्योऽग्निः॥४५॥

ताम्रो अंरुणः। ता अविंसृष्टौ। दम्पंती एव भंवतः। तयोर्तौ वृथ्सौ। वृत्रश्चं वैद्युतश्चं। अग्नेर्वृत्रः। वैद्युतं आदित्यस्यं। ता अविंसृष्टौ। दम्पंती एव भंवतः। तयोरेतौ वथ्सौ॥४६॥

उष्मा चं नीहारश्चं। वृत्रस्योष्मा। वैद्युतस्यं नीहारः। तौ तावेव प्रतिंपद्येते। सेय॰ रात्रीं गुर्भिणीं पुत्रेण संवंसित। तस्या वा एतदुल्बणम्ं। यद्रात्रौं रृष्मयः। यथा गोर्गुर्भिण्यां उल्बणम्ं। एवमेतस्यां उल्बणम्ं। प्रजयिष्णुः प्रजया च पशुभिश्च भ्वति। य एवं वेद। एतमुद्यन्तमिपयन्तं चेति। आदित्यः पुण्यंस्य वथ्सः। अथ पवित्राङ्गिरसः॥४७॥

श्री-छाया-सुवर्चलाम्बा-समेत-श्री-सूर्यनारायण-स्वामिने नमः। ॐ नमो नारायणाय॥

[08]

प्वित्रंवन्तः परिवाज्ञमासंते। पितैषां प्रत्नो अभिरंक्षति व्रतम्। महः संमुद्रं वर्रणस्तिरोदंधे। धीरां इच्छेकुर्धरुणेष्वारभम्। प्वित्रं ते वितंतं ब्रह्मणस्पते। प्रभुगात्राणि पर्येषिविश्वतः। अतंप्ततनूर्न तदामो अश्रुते। शृतास् इद्वहंन्तुस्तथ्समांशत। ब्रह्मा देवानाम। असंतः सद्ये ततंक्षुः॥४८॥

ऋषंयः स्प्तात्रिश्च यत्। सर्वेऽत्रयो अंगस्त्यश्च। नक्षेत्रैः शङ्कृतोऽवसन्। अर्थ सिवतुः श्यावाश्वस्याऽवर्तिकामस्य। अमी य ऋक्षा निहितास उचा। नक्तं दहंश्चे कुहंचिद्दिवेयुः। अदंब्यानि वर्रुणस्य व्रतानि। विचाकशंचन्द्रमा नक्षेत्रमेति। तथ्संवितुर्वरेण्यम्। भर्गो देवस्यं धीमहि॥४९॥

धियो यो नंः प्रचोदयाँत्। तथ्संवितुर्वृणीमहे। वयं देवस्य भोजंनम्। श्रेष्ठ सर्वधातंमम्। तुरं भगंस्य धीमहि। अपांगूहत सविता तृभीन्। सर्वांन्दिवो अन्धंसः। नक्तं तान्यंभवन्द्दशे। अस्थ्यस्थ्रा सम्भंविष्यामः। नाम् नामैव नाम मे॥५०॥

नपुरसंकं पुमा्र्स्स्र्यंस्मि। स्थावंरोऽस्म्यथ् जङ्गंमः। युजेऽयिक्ष् यष्टाहे चं। मयां भूतान्यंयक्षत। पृशवों ममं भूतानि। अनूबन्ध्योऽस्म्यंहं विभुः। स्नियंः स्तीः। ता उंमे पुर्स आंहुः। पश्यंदक्षण्वान्नविचेतद्न्धः। कृविर्यः पुत्रः स इमा चिंकेत॥५१॥

यस्ता विजानाथ्संवितुः पितासंत्। अन्धो मणिमंविन्दत्। तमनङ्गुलिरावंयत्।

अग्रीवः प्रत्यंमुश्चत्। तमजिंह्वा असश्चंत। ऊर्ध्वमूलमंवाक्छाखम्। वृक्षं यो वेद सम्प्रंति। न स जातु जनः श्रद्धध्यात्। मृत्युर्मा मार्यादितिः। हसित १ रुदितं गीतम्॥५२॥

वीर्णापणवलासितम्। मृतं जीवं चं यत्किश्चित्। अङ्गानिं स्नेव विद्धिं तत्। अतृष्युः स्तृष्यंध्यायत्। अस्माञ्जाता में मिथू चरत्रं। पुत्रो निर्ऋत्यां वैदेहः। अचेतां यश्च चेतंनः। स तं मणिमंविन्दत्। सोऽनङ्गुलिरावंयत्। सोऽग्रीवः प्रत्यंमुश्चत्॥५३॥

सोऽजिंह्वो असश्चंत। नैतमृषिं विदित्वा नगरं प्रविशेत्। यंदि प्रविशेत्। मिथौ चरित्वा प्रविशेत्। तथ्सम्भवंस्य व्रतम्। आतमंग्ने रथं तिष्ठ। एकांश्वमेक्योजंनम्। एकचर्क्रमेक्धुरम्। वात्रप्रांजिगृतिं विभो। न रिष्यतिं न व्यथते॥५४॥

नास्याक्षों यातु सर्ज्ञति। यच्छ्वेतांन् रोहिताङ्श्चाग्नेः। रथे युंक्काऽधितिष्ठंति। एकया च दशभिश्चं स्वभूते। द्वाभ्यामिष्टये विर्श्वात्या च। तिसृभिश्च वहसे त्रिर्श्वता च। नियुद्धिर्वायविह तां विमुञ्ज॥५५॥

> श्री-छाया-सुवर्चलाम्बा-समेत-श्री-सूर्यनारायण-स्वामिने नमः। ॐ नमो नारायणाय॥

**-[११]** 

आतंनुष्व प्रतंनुष्व। उद्धमाऽऽधंम् सन्धंम। आदित्ये चन्द्रंवर्णानाम्। गर्भमाधेहि यः पुमान्। इतः सिक्तः सूर्यगतम्। चन्द्रमंसे रसं कृधि। वारादं जनयाग्रेऽग्निम्। य एको रुद्र उच्यंते। असङ्ख्याताः संहस्राणि। स्मर्यते न च दृश्यंते॥५६॥

पुवमेतं निंबोधत। आ मुन्द्रैरिंन्द्र हरिंभिः। याहि मयूरंरोमभिः। मा त्वा केचिन्नियेमुरिंन्न पाशिनः। दुधन्वेव ता इंहि। मा मुन्द्रैरिंन्द्र हरिंभिः। यामि

म्यूरंरोमभिः। मा मा केचिन्नियेमुरिंन्न पाशिनः। नि्धन्वेव तां (२) इंमि। अणुभिश्च महिद्धिश्च॥५७॥

निघृष्वैरस्मायुंतैः। कालैर्हरित्वंमापृत्तैः। इन्द्राऽऽयांहि स्हस्रंयुक्। अग्निर्विभ्राष्टिंवसनः। वायुः श्वेतंसिकद्रुकः। संव्थ्यरो विषूवर्णैः। नित्यास्तेऽ-नुचंरास्त्व। सुब्रह्मण्यो सुब्रह्मण्यो सुब्रह्मण्यो सुब्रह्मण्यो इन्द्राऽऽगच्छ हरिव आगच्छ मेधातिथेः। मेष वृषणश्वंस्य मेने॥५८॥

गौरावस्कन्दिन्नहल्यांये जार। कौशिकब्राह्मण गौतमंब्रुवाण। अरुणाश्वां इहागंताः। वसंवः पृथिविक्षितंः। अष्टौदिग्वासंसोऽग्नयंः। अग्निश्च जात-वेदांश्चेत्येते। ताम्राश्वांस्ताम्रूरथाः। ताम्रवर्णांस्तथाऽसिताः। दण्डहस्ताः खादग्दतः। इतो रुद्राः पराङ्गताः॥५९॥

उक्त स्थानं प्रमाणं चं पुर् इत। बृह्स्पतिश्च सिवता चं। विश्वरूंपैरिहा-ऽऽगंताम्। रथेनोदक्वर्त्मना। अपसुषां इति तद्वंयोः। उक्तो वेषों वासार्धि च। कालावयवानामितः प्रतीच्या। वासात्यां इत्यश्विनोः। कोऽन्तिरक्षे शब्दं कंरोतीति। वासिष्टो रौहिणो मीमार्स्सां चुक्रे। तस्यैषा भवंति। वाश्रेवं विद्युदितिं। ब्रह्मण उदर्रणमिस। ब्रह्मण उदीरणंमिस। ब्रह्मण आस्तरंणमिस। ब्रह्मण उपस्तरंणमिस॥६०॥

> श्री-छाया-सुवर्चलाम्बा-समेत-श्री-सूर्यनारायण-स्वामिने नमः। ॐ नमो नारायणाय॥

> > -[१२]

# [अपंक्रामत गर्भिण्यंः]

अष्टयोनीम्ष्टपुंत्राम्। अष्टपंत्रीम्मां महींम्। अहं वेद् न में मृत्युः। न चामृत्युर्घाऽऽहंरत्। अष्टयोन्युष्टपुंत्रम्। अष्टपंदिदम्न्तरिक्षम्। अहं वेद् न में मृत्युः। न चामृत्युर्घाऽऽहंरत्। अष्टयोनीम्ष्टपुंत्राम्। अष्टपंत्रीम्मूं दिवम्॥६१॥ अहं वेद् न में मृत्युः। न चामृत्युर्घाऽऽहंरत्। सुत्रामाणं महीमू षु। अदितिर्द्यौरदितिर्न्तिरेक्षम्। अदितिर्माता स पिता स पुत्रः। विश्वे देवा अदितिः पश्चजनाः। अदितिर्जातमदितिर्जनित्वम्। अष्टौ पुत्रासो अदितेः। ये जातास्तुन्वः परि। देवां (२) उपप्रैथ्सप्तिभेः॥६२॥

प्रा मार्ताण्डमास्यंत्। सप्तिभिः पुत्रेरिदितिः। उपप्रैत्पूर्व्यं युगम्। प्रजाये मृत्यवे तंत्। प्रा मार्ताण्डमाभरिदिति। ताननुक्रीमध्यामः। मित्रश्च वर्रणश्च। धाता चाँर्यमा च। अश्रशंश्च भगंश्च। इन्द्रश्च विवस्वार्श्वेत्येते। हिर्ण्यगर्भो ह्रसः शुंचिषत्। ब्रह्मंजज्ञानं तिदत्पदिमितिं। गर्भः प्रांजापत्यः। अथ पुरुषः सप्त पुरुषः॥६३॥

[यथास्थानं गीर्भेण्यः]

श्री-छाया-सुवर्चलाम्बा-समेत-श्री-सूर्यनारायण-स्वामिने नमः। ॐ नमो नारायणाय॥

[83]

योऽसौं तपत्रुदेति। स सर्वेषां भूतानां प्राणानादायोदेति। मा में प्रजाया मा पंशूनाम्। मा ममं प्राणानादायोदंगाः। असौ योंऽस्तमेति। स सर्वेषां भूतानां प्राणानादायास्तमेति। मा में प्रजाया मा पंशूनाम्। मा ममं प्राणानादायास्तमेति। मा में प्रजाया मा पंशूनाम्। मा ममं प्राणानादायास्तंङ्गाः। असौ य आपूर्यति। स सर्वेषां भूतानां प्राणेरापूर्यति॥६४॥

मा में प्रजाया मा पंशूनाम्। मा ममं प्राणेरापूरिष्ठाः। असौ योऽपृक्षीयंति। स सर्वेषां भूतानां प्राणेरपंक्षीयति। मा में प्रजाया मा पंशूनाम्। मा ममं प्राणेरपंक्षेष्ठाः। अमूनि नक्षंत्राणि। सर्वेषां भूतानां प्राणेरपंप्रसर्पन्ति चोथ्संपन्ति च। मा में प्रजाया मा पंशूनाम्। मा ममं प्राणेरपंप्रसृपत् मोथ्सृंपत॥६५॥ ड्मे मासाँश्चार्थमासाश्चं। सर्वेषां भूतानां प्राणैरपंप्रसर्पन्ति चाथ्संपन्ति च। मा में प्रजाया मा पंशूनाम्। मा ममं प्राणैरपंप्रसृपत् मोथ्सृंपत। इम ऋतवंः। सर्वेषां भूतानां प्राणैरपंप्रसर्पन्ति चोथ्संपन्ति च। मा में प्रजाया मा पंशूनाम्। मा ममं प्राणैरपंप्रसृपत् मोथ्सृंपत। अय॰ संवथ्सरः। सर्वेषां भूतानां प्राणैरपंप्रसर्पति चोथ्संपति च॥६६॥

मा में प्रजाया मा पंशूनाम्। मा ममं प्राणैरपंप्रसृप् मोथ्सृंप। इदमहंः। सर्वेषां भूतानां प्राणैरपंप्रसर्पति चोथ्संपति च। मा में प्रजाया मा पंशूनाम्। मा ममं प्राणैरपंप्रसृप् मोथ्सृंप। इय॰ रात्रिः। सर्वेषां भूतानां प्राणैरपंप्रसर्पति चोथ्संपति च। मा में प्रजाया मा पंशूनाम्। मा ममं प्राणैरपंप्रसृप् मोथ्सृंप। ॐ भूर्भुवः स्वंः। एतद्वो मिथुनं मा नो मिथुंन॰ रीद्वम्॥६७॥ श्री-छाया-स्वर्चलाम्बा-समेत-श्री-सूर्यनारायण-स्वामिने नमः।

ॐ नमो नारायणाय॥

\_[88]

अथाऽऽदित्यस्याष्टपुंरुष्स्य। वसूनामादित्यानाः स्थाने स्वतेजंसा भानि। रुद्राणामादित्यानाः स्थाने स्वतेजंसा भानि। आदित्यानामादित्यानाः स्थाने स्वतेजंसा भानि। सताः सत्यानाम्। आदित्यानाः स्थाने स्वतेजंसा भानि। अभिधून्वतांमभिष्नताम्। वातवंतां म्रुताम्। आदित्यानाः स्थाने स्वतेजंसा भानि। ऋभूणामादित्यानाः स्थाने स्वतेजंसा भानि। विश्वेषां देवानाम्। आदित्यानाः स्थाने स्वतेजंसा भानि। संवथ्सरंस्य स्वितः। आदित्यस्य स्थाने स्वतेजंसा भानि। ॐ भूर्भुवः स्वंः। रश्मयो वो मिथुनं मा नो मिथुनः रिद्वम्॥६८॥

श्री-छाया-सुवर्चलाम्बा-समेत-श्री-सूर्यनारायण-स्वामिने नमः। ॐ नमो नारायणाय॥

-[१५]

आरोगस्य स्थाने स्वतेर्जंसा भानि। भ्राजस्य स्थाने स्वतेर्जंसा भानि। पटरस्य स्थाने स्वतेर्जंसा भानि। पतङ्गस्य स्थाने स्वतेर्जंसा भानि। स्वर्णरस्य स्थाने स्वतेर्जंसा भानि। ज्योतिषीमतस्य स्थाने स्वतेर्जंसा भानि। विभासस्य स्थाने स्वतेर्जंसा भानि। कश्यपस्य स्थाने स्वतेर्जंसा भानि। ॐ भूर्भुवः स्वंः। आपो वो मिथुनं मा नो मिथुंन रिद्वम्॥६९॥

श्री-छाया-सुवर्चलाम्बा-समेत-श्री-सूर्यनारायण-स्वामिने नमः।

## ॐ नमो नारायणाय॥

-[१६]

अथ वायोरेकादशपुरुषस्यैकादशंस्रीक्स्य। प्रभ्राजमानानाः रुद्राणाः स्थानं स्वतेजंसा भानि। व्यवदातानाः रुद्राणाः स्थानं स्वतेजंसा भानि। वासुिकवैद्युतानाः रुद्राणाः स्थानं स्वतेजंसा भानि। रजतानाः रुद्राणाः स्थानं स्वतेजंसा भानि। परुषाणाः रुद्राणाः स्थानं स्वतेजंसा भानि। घर्षाणाः रुद्राणाः स्थानं स्वतेजंसा भानि। श्यामानाः रुद्राणाः स्थानं स्वतेजंसा भानि। अतिलोहितानाः रुद्राणाः स्थानं स्वतेजंसा भानि। अतिलोहितानाः रुद्राणाः स्थानं स्वतेजंसा भानि। उर्ध्वानाः रुद्राणाः स्थानं स्वतेजंसा भानि।

अवपतन्ताना १ रुद्राणा १ स्थाने स्वते जंसा भानि। वैद्युताना १ रुद्राणा १ स्थाने स्वते जंसा भानि। प्रभ्राजमानीना १ रुद्राणीना १ स्थाने स्वते जंसा भानि। व्यवदातीना १ रुद्राणीना १ स्थाने स्वते जंसा भानि। वासुिक वैद्युतीना १ रुद्राणीना १ स्थाने स्वते जंसा भानि। परुषाणा १ रुद्राणीना १ स्थाने स्वते जंसा भानि। परुषाणा १ रुद्राणीना १ स्थाने स्वते जंसा भानि। श्रामाना १ रुद्राणीना १ स्थाने स्वते जंसा भानि। अतिलोहितीना १ रुद्राणीना १ स्थाने स्वते जंसा भानि। अध्याना १ रुद्राणीना १

ॐ भूर्भुवः स्वंः। रूपाणि वो मिथुनं मा नो मिथुनं रीृद्वम्॥७१॥ श्री-छाया-सुवर्चलाम्बा-समेत-श्री-सूर्यनारायण-स्वामिने नमः। **ॐ नमो नारायणाय॥** 

[१७]

अथाग्नेरष्टपुंरुष्स्य। अग्नेः पूर्विदिश्यस्य स्थाने स्वतेजंसा भानि। जातवेदस उपदिश्यस्य स्थाने स्वतेजंसा भानि। सहोजसो दक्षिणदिश्यस्य स्थाने स्वतेजंसा भानि। अजिराप्रभव उपदिश्यस्य स्थाने स्वतेजंसा भानि। वैश्वानरस्यापरदिश्यस्य स्थाने स्वतेजंसा भानि। नर्यापस उपदिश्यस्य स्थाने स्वतेजंसा भानि। पङ्किराधस उदिश्यस्य स्थाने स्वतेजंसा भानि। विसर्पिण उपदिश्यस्य स्थाने स्वतेजंसा भानि। ॐ भूर्भुवः स्वंः। दिशो वो मिथुनं मा नो मिथुन रिद्वम्॥७२॥

श्री-छाया-सुवर्चलाम्बा-समेत-श्री-सूर्यनारायण-स्वामिने नमः।

## ॐ नमो नारायणाय॥

-[86]

दक्षिणपूर्वस्यां दिशि विसंपीं न्रकः। तस्मान्नः पेरिपाहि। दक्षिणापरस्यां दिश्यविसंपीं न्रकः। तस्मान्नः पेरिपाहि। उत्तरपूर्वस्यां दिशि विषादी न्रकः। तस्मान्नः पेरिपाहि। उत्तरापरस्यां दिश्यविषादी न्रकः। तस्मान्नः पेरिपाहि। अत्तरापरस्यां दिश्यविषादी न्रकः। तस्मान्नः पेरिपाहि। आ यस्मिन्थ्सप्त वासवा इन्द्रियाणि शतक्रतंवित्येते॥७३॥

श्री-छाया-सुवर्चलाम्बा-समेत-श्री-सूर्यनारायण-स्वामिने नमः।

#### ॐ नमो नारायणाय॥

-[86<u>]</u>

इन्द्रघोषा वो वसुंभिः पुरस्तादुपंदधताम्। मनोजवसो वः पितृभिंदिक्षिणत उपंदधताम्। प्रचेता वो रुद्रैः पृश्चादुपंदधताम्। विश्वकर्मा व आदित्यैरुत्तरत उपंदधताम्। त्वष्टां वो रूपेरुपरिष्टादुपंदधताम्। संज्ञानं वः पश्चादिति। आदित्यः सर्वोऽग्निः पृथिव्याम्। वायुर्न्तिरक्षे। सूर्यो दिवि। चन्द्रमां दिक्षु। नक्षंत्राणि स्वलोके। एवा ह्यंव। एवा ह्यंग्ने। एवा हि वांयो। एवा हींन्द्र। एवा हि पूंषन्। एवा हि देवाः॥७४॥

श्री-छाया-सुवर्चलाम्बा-समेत-श्री-सूर्यनारायण-स्वामिने नमः।

#### ॐ नमो नारायणाय॥

[२०]

आपंमापाम्पः सर्वाः। अस्माद्स्माद्ति अपृतंः। अग्निर्वायुश्च सूर्यश्च। सह संश्चस्करर्ष्ट्रिया। वाय्वश्वां रिष्म्पतंयः। मरींच्यात्मानो अद्गुहः। देवीर्भुवन्सूवरीः। पुत्रवत्वायं मे सुत। महानाम्नीर्महामानाः। महुसो महसः स्वः॥७५॥

देवीः पंर्जन्यसूवंरीः। पुत्रवृत्वायं मे सुत। अपाश्चंणाम्पा रक्षः। अपाश्चंणाम्पा रघम्। अपाष्ठामपंचावर्तिम्। अपंदेवीरितो हित। वर्ज्नं देवी-रजीता ॥ भुवंनं देवसूवंरीः। आदित्यानदितिं देवीम्। योनिनोर्ध्वमुदीषंत॥ ७६।

भद्रं कर्णभिः शृणुयामं देवाः। भद्रं पंश्येमाक्षभिर्यजंत्राः। स्थिरैरङ्गैंस्तुष्टु-वाश्संस्तुनूभिः। व्यशेम देवित्तं यदायुः। स्वस्ति न इन्द्रों वृद्धश्रंवाः। स्वस्ति नः पूषा विश्ववंदाः। स्वस्ति नस्ताक्ष्यों अरिष्टनेमिः। स्वस्ति नो बृह्स्पतिर्दधातु। केतवो अर्रणासश्च। ऋष्यो वातंरश्नाः। प्रतिष्ठाश शृतधा हि। समाहितासो सहस्रधायंसम्। शिवा नः शन्तंमा भवन्तु। दिव्या आप ओषंधयः। सुमृडीका सरस्वित। मा ते व्योम सन्दिशी॥७७॥

श्री-छाया-सुवर्चलाम्बा-समेत-श्री-सूर्यनारायण-स्वामिने नमः।

## ॐ नमो नारायणाय॥

-[२१]

योऽपां पुष्पं वेदं। पुष्पंवान् प्रजावाँन् पशुमान् भविति। चन्द्रमा वा अपां पुष्पम्। पुष्पंवान् प्रजावाँन् पशुमान् भविति। य पृवं वेदं। योऽपामायतेनं वेदं। आयतंनवान् भवति। अग्निर्वा अपामायतंनम्। आयतंनवान् भवति। यौंऽग्नेरायतंनं वेदं॥७८॥

आयतंनवान् भवति। आपो वा अग्नेरायतंनम्। आयतंनवान् भवति। य एवं वेदे। योऽपामायतंनं वेदे। आयतंनवान् भवति। वायुर्वा अपामायतंनम्। आयतंनवान् भवति। यो वायोरायतंनं वेदे। आयतंनवान् भवति॥७९॥

आपो वै वायोरायतंनम्। आयतंनवान् भवति। य एवं वेदं। योऽपामायतंनं वेदं। आयतंनवान् भवति। असौ वै तपंत्रपामायतंनम्। आयतंनवान् भवति। योऽमुष्य तपंत आयतंनं वेदं। आयतंनवान् भवति। आपो वा अमुष्य तपंत आयतंनम्॥८०॥

आयतंनवान् भवति। य एवं वेदं। योऽपामायतंनं वेदं। आयतंनवान् भवति। चन्द्रमा वा अपामायतंनम्। आयतंनवान् भवति। यश्चन्द्रमंस आयतंनं वेदं। आयतंनवान् भवति। आपो वे चन्द्रमंस आयतंनम्। आयतंनवान् भवति॥८१॥

य एवं वेदे। योऽपामायतेनं वेदे। आयतेनवान् भवति। नक्षेत्राणि वा अपामायतेनम्। आयतेनवान् भवति। यो नक्षेत्राणामायतेनं वेदे। आयतेनवान् भवति। आपो वै नक्षेत्राणामायतेनम्। आयतेनवान् भवति। य एवं वेदे॥८२॥

योऽपामायतंनं वेदं। आयतंनवान् भवति। पूर्जन्यो वा अपामायतंनम्। आयतंनवान् भवति। यः पूर्जन्यंस्याऽऽयतंनं वेदं। आयतंनवान् भवति। आपो वै पूर्जन्यंस्याऽऽयतंनं भवति। य एवं वेदं। योऽपामायतंनं वेदं॥८३॥

आयतंनवान् भवति। संवृथ्सरो वा अपामायतंनम्। आयतंनवान् भवति। यः संवथ्सरस्याऽऽयतंनं वेदं। आयतंनवान् भवति। आपो वै संवथ्सरस्याऽऽयतंनम्। आयतंनवान् भवति। य पृवं वेदं। योंऽपसु नावं प्रतिष्ठितां वेदं। प्रत्येव तिष्ठति॥८४॥

इमे वै लोका अपसु प्रतिष्ठिताः। तदेषाऽभ्यनूँक्ता। अपार रस्मुदंयरसन्। सूर्ये शुक्रर स्माभृतम्। अपार रसंस्य यो रसंः। तं वो गृह्णाम्युत्तमिति। इमे वै लोका अपार रसंः। तेंऽमुष्मिन्नादित्ये स्माभृताः। जानुद्वीमुंत्तरवेदीं खात्वा। अपां पूरियत्वा गुल्फद्व्रम्॥८५॥

पुष्करपर्णैः पुष्करदण्डैः पुष्करैश्चं सङ्स्तीर्य। तस्मिन्विह्यसे। अग्निं प्रणीयोपसमाधायं। ब्रह्मवादिनों वदन्ति। कस्मौत्प्रणीतेऽयम्ग्निश्चीयतें। साप्रणीतेऽयम्पस् ह्ययंं चीयतें। असौ भुवंनेऽप्यनांहिताग्निरेताः। तम्भितं पृता अबीष्टंका उपद्याति। अग्निहोत्रे दर्शपूर्णमासयौः। पृशुबन्धे चांतुर्मास्येषुं॥८६॥

अथो आहुः। सर्वेषु यज्ञकृतुष्विति। एतद्धे स्मृ वा आहुः शण्डिलाः। कमृग्निं चिनुते। सृत्रियमृग्निं चिन्वानः। सृव्थ्यूरं प्रत्यक्षेण। कमृग्निं चिनुते। सावित्रमृग्निं चिन्वानः। अमुमादित्यं प्रत्यक्षेण। कमृग्निं चिनुते॥८७॥

नाचिकेतम् ग्निं चिंन्वानः। प्राणान्प्रत्यक्षेण। कम् ग्निं चिंनुते। चातुर्होत्रिय-मृग्निं चिन्वानः। ब्रह्मं प्रत्यक्षेण। कमृग्निं चिनुते। वैश्वसृजमृग्निं चिन्वानः। शरीरं प्रत्यक्षेण। कमृग्निं चिनुते। उपानुवाक्यमाशुमृग्निं चिन्वानः॥८८॥

ड्माँ ह्यो कान्य्रत्यक्षेण। कम् ग्निं चिनुते। ड्ममां रुणकेतुकम् ग्निं चिन्वान इति। य एवासौ। ड्तश्चा ऽमृतश्चा ऽव्यतीपाती। तमिति। यौ ऽग्नेर्मिथूया वेदे। मिथुन्वान्भेवति। आपो वा अग्नेर्मिथूयाः। मिथुन्वान्भेवति। य एवं वेदे॥८९॥ श्री-छाया-सुवर्चलाम्बा-समेत-श्री-सूर्यनारायण-स्वामिने नमः।

ॐ नमो नारायणाय॥

[२२]

आपो वा इदमांसन्थ्सिललमेव। स प्रजापंतिरेकः पुष्करपूर्णे समंभवत्।

तस्यान्तर्मनंसि कामः समंवर्तत। इदः सृजेयमिति। तस्माद्यत्पुरुषो मनसाऽभिगच्छंति। तद्वाचा वंदति। तत्कर्मणा करोति। तदेषाऽभ्यनूँक्ता। कामुस्तदग्रे समंवर्तताधि। मनसो रेतः प्रथमं यदासीत्॥९०॥

स्तो बन्धुमसंति निरंविन्दन्। हृदि प्रतीष्यां क्वयों मनी्षेतिं। उपैन्न्तदुपंनमित। यत्कांमो भवंति। य एवं वेदं। स तपोऽतप्यत। स तपंस्तुष्ता। शरीरमधूनुत। तस्य यन्मा १ समासीत्। ततोऽरुणाः कृतवो वातंरश्ना ऋषंय उदंतिष्ठन्॥९१॥

ये नर्खाः। ते वैखानुसाः। ये वालाः। ते वालखिल्याः। यो रसः। सोऽपाम्। अन्तुरुतः कूर्मं भूतः सर्पन्तम्। तमेब्रवीत्। मम् वैत्वङ्गारुसा। समेभूत्॥९२॥

नेत्यंब्रवीत्। पूर्वमेवाहिमहासिनिति। तत्पुरुंषस्य पुरुष्त्वम्। स सहस्रंशीर्षा पुरुंषः। सहस्राक्षः सहस्रंपात्। भूत्वोदंतिष्ठत्। तमंब्रवीत्। त्वं वै पूर्वर्षं समंभूः। त्विमदं पूर्वः कुरुष्वेति। स इत आदायाऽऽपः॥९३॥

अञ्चलिनां पुरस्तांदुपादंधात्। एवा ह्येवेतिं। ततं आदित्य उदंतिष्ठत्। सा प्राची दिक्। अथांरुणः केतुर्दक्षिणत उपादंधात्। एवा ह्यग्न इतिं। ततो वा अग्निरुदंतिष्ठत्। सा दंक्षिणा दिक्। अथांरुणः केतुः पृश्चादुपादंधात्। एवा हि वायो इतिं॥९४॥

ततों वायुरुदंतिष्ठत्। सा प्रतीची दिक्। अथांरुणः केतुरुंत्तर्त उपादंधात्। एवा हीन्द्रेतिं। ततो वा इन्द्र उदंतिष्ठत्। सोदींची दिक्। अथांरुणः केतुर्मध्यं उपादंधात्। एवा हि पूषन्नितिं। ततो वै पूषोदंतिष्ठत्। सेयं दिक्॥९५॥

अर्थारुणः केतुरुपरिष्टादुपादंधात्। एवा हि देवा इतिं। ततों देवमनुष्याः पितरंः। गुन्धुर्वापसुरसुश्चोदंतिष्ठन्। सोध्वा दिक्। या विप्रुषों विपरापतन्। ताभ्योऽसुरा रक्षारंसि पिशाचाश्चोदंतिष्ठन्। तस्मात्ते पराभवन्। विप्रुङ्ग्रो हि ते समंभवन्। तदेषाऽभ्यनूँक्ता॥९६॥

आपो ह् यह्नंहृतीर्गर्भमायन्नं। दक्षं दर्धाना जनयंन्तीः स्वयम्भुम्। ततं इमेध्यसृंज्यन्त सर्गाः। अद्भो वा इद समंभूत्। तस्माद्दिद सर्वं ब्रह्मं स्वयम्भिवतिं। तस्माद्दिद सर्वे शिथिलम्वाऽध्रुवंमिवाभवत्। प्रजापतिर्वाव तत्। आत्मनाऽऽत्मानं विधायं। तदेवानुप्राविशत्। तदेवाऽभ्यनूक्ता॥९७॥

विधायं लोकान् विधायं भूतानिं। विधाय सर्वाः प्रदिशो दिशंश्च। प्रजापंतिः प्रथम्जा ऋतस्यं। आत्मनाऽऽत्मानंम्भि संविवेशेतिं। सर्वमेवेदमास्वा। सर्वमवरुद्धां। तदेवानुप्रविंशति। य एवं वेदं॥९८॥

श्री-छाया-सुवर्चलाम्बा-समेत-श्री-सूर्यनारायण-स्वामिने नमः।

# ॐ नमो नारायणाय॥

**–**[२३]

चतुंष्टय्य आपों गृह्णाति। चृत्वारि वा अपाः रूपाणि। मेघों विद्युत्। स्तुन्यिबुर्वृष्टिः। तान्येवावंरुन्थे। आतपंति वर्ष्यां गृह्णाति। ताः पुरस्तादुपंदधाति। एता वै ब्रंह्मवर्चस्या आपः। मुख्त एव ब्रंह्मवर्चसमवंरुन्थे। तस्मान्मुखतो ब्रंह्मवर्चसितंरः॥९९॥

कूप्यां गृह्णाति। ता दक्षिणत उपंदधाति। पृता वै तेंज्स्विनीरापंः। तेजं पृवास्यं दक्षिणतो दंधाति। तस्माद्दक्षिणोऽर्धस्तेज्स्वितंरः। स्थावरा गृंह्णाति। ताः पृश्चादुपंदधाति। प्रतिष्ठिता वै स्थांवराः। पृश्चादेव प्रतितिष्ठति। वहंन्तीर्गृह्णाति॥१००॥

ता उत्तर्त उपंदधाति। ओजंसा वा एता वहंन्तीरिवोद्गंतीरिव आकूजंतीरिव धावंन्तीः। ओजं एवास्योंत्तर्तो दंधाति। तस्मादुत्तरोऽर्धं ओजस्वितंरः। सम्भार्या गृह्णाति। ता मध्य उपंदधाति। इयं वै संम्भार्याः। अस्यामेव प्रतितिष्ठति। पुल्वल्या गृह्णाति। ता उपरिष्ठादुपादंधाति॥१०१॥

असौ वै पंल्वयाः। अमुष्यांमेव प्रतितिष्ठति। दिक्षूपंदधाति। दिक्षु वा आपंः। अत्रुं वा आपंः। अन्ध्रो वा अत्रं जायते। यदेवान्ध्रोऽत्रृं जायते। तदवंरुन्थे। तं वा पुतमंरुणाः केतवो वातंरश्ना ऋषंयोऽचिन्वन्। तस्मांदारुणकेतुकंः॥१०२॥

तदेषाऽभ्यनूँक्ता। केतवो अर्रुणासश्च। ऋषयो वातंरश्चाः। प्रतिष्ठाः श्वतथां हि। सुमाहितासो सहस्रुधायंसुमिति। श्वतशंश्चेव सहस्रंशश्च प्रतितिष्ठति। य पुतमृग्निं चिनुते। य उचैनमेवं वेदं॥१०३॥

श्री-छाया-सुवर्चलाम्बा-समेत-श्री-सूर्यनारायण-स्वामिने नमः।

## ॐ नमो नारायणाय॥

[२४]

जानुद्व्रीमृत्तरवेदीं खात्वा। अपां पूरयति। अपार संवृत्वायं। पुष्करपूर्णर रुकां पुरुषमित्युपंदधाति। तपो वै पुष्करपूर्णम्। सत्यर रुकाः। अमृतं पुरुषः। एतावद्वा वाँऽस्ति। यावंदेतत्। यावंदेवास्ति॥१०४॥

तदवंरुन्थे। कूर्ममुपंदधाति। अपामेव मेध्मवंरुन्थे। अथौं स्वर्गस्यं लोकस्य समेध्ये। आपंमापामपः सर्वाः। अस्माद्स्मादितोऽमुतः। अग्निर्वायुश्च सूर्यश्च। सह संश्चस्क्ररिद्धंया इतिं। वाय्वश्वां रिष्म्पितयः। लोकं पृणिच्छिद्रं पृण॥१०५॥

यास्तिस्रः पंरम्जाः। इन्द्रघोषा वो वसुंभिरेवाह्येवेतिं। पश्चितिय उपंदधाति। पाङ्कोऽग्निः। यावानेवाग्निः। तं चिनुते। लोकं पृणया द्वितीयामुपं-दधाति। पश्चं पदा वै विराट्। तस्या वा इयं पादः। अन्तरिक्षुं पादः। द्यौः पादः। दिशः पादः। प्रोरंजाः पादः। विराज्येव प्रतितिष्ठति। य एतमृग्निं चिनुते। य उंचैनमेवं वेदं॥१०६॥

## श्री-छाया-सुवर्चलाम्बा-समेत-श्री-सूर्यनारायण-स्वामिने नमः। ॐ नमो नारायणाय॥

[૨५]

अग्निं प्रणीयोपसमाधायं। तम्भित एता अबीष्टका उपंदधाति। अग्निहोत्रे दंर्शपूर्णमासयोः। पृशुबन्धे चांतुर्मास्येषुं। अथो आहुः। सर्वेषु यज्ञकृतुष्वितिं। अथं ह स्माहारुणः स्वांयम्भुवंः। सावित्रः सर्वोऽग्निरित्यनंनुषङ्गं मन्यामहे। नाना वा एतेषां वीर्याणि। कमग्निं चिंनुते॥१०७॥

स्त्रियम्भिं चिन्वानः। कम्भिं चिनुते। सावित्रम्भिं चिन्वानः। कम्भिं चिनुते। नाचिकेतम्भिं चिन्वानः। कम्भिं चिनुते। चातुर्होत्रियम्भिं चिन्वानः। कम्भिं चिनुते। चेनुते। वैश्वसृजम्भिं चिन्वानः। कम्भिं चिनुते॥१०८॥

उपानुवाक्यंमाशुम्गि चिन्वानः। कम्गि चिनुते। इममांरुणकेतुकम्गि चिन्वान इतिं। वृषा वा अग्निः। वृषांणौ सङ्स्फांलयेत्। हुन्येतांस्य यज्ञः। तस्मान्नानुषज्यः। सोत्तंरवेदिषुं ऋतुषुं चिन्वीत। उत्तर्वेद्याङ् ह्यंग्निश्चीयतें। प्रजाकांमश्चिन्वीत॥१०९॥

प्राजापत्यो वा एषौँऽग्निः। प्राजापत्याः प्रजाः। प्रजावाँन् भवति। य एवं वेदं। पृशुकामश्चिन्वीत। सुंज्ञानुं वा एतत् पंशूनाम्। यदापंः। पृशूनामेव सुंज्ञानेऽग्निं चिनुते। पृशुमान् भवति। य एवं वेदं॥११०॥

वृष्टिंकामश्चिन्वीत। आपो वै वृष्टिंः। पूर्जन्यो वर्षुंको भवति। य एवं वेदे। आम्यावी चिन्वीत। आपो वै भेषुजम्। भेषुजम्वासमैं करोति। सर्वमायुरित। अभिचर १श्चिन्वीत। वज्रो वा आपः॥१११॥

वर्ज्रमेव भ्रातृं व्येभ्यः प्रहंरति। स्तृणुत एनम्। तेर्ज्ञस्कामो यशंस्कामः। ब्रह्मवर्च्सकामः स्वर्गकामिश्चिन्वीत। एतावृद्वा वाँऽस्ति। यावंदेतत्। यावंदेवास्ति। तदवंरुन्थे। तस्यैतद्वतम्। वर्षंति न धांवेत्॥११२॥

अमृतं वा आपंः। अमृत्स्यानंन्तिरत्यै। नाफ्सु मूत्रंपुरीषं कुंर्यात्। न निष्ठींवेत्। न विवसंनः स्नायात्। गुह्यो वा एषौंऽग्निः। एतस्याग्नेरनंतिदाहाय। न पुष्करपूर्णानि हिरंण्यं वाऽधितिष्ठेत्। एतस्याग्नेरनंभ्यारोहाय। न कूर्मस्याश्रीयात्। नोद्कस्याघातुंकान्येनंमोद्कानि भवन्ति। अघातुंका आपंः। य एतमृग्निं चिनुते। य उंचैनमेवं वेदं॥११३॥

> श्री-छाया-सुवर्चलाम्बा-समेत-श्री-सूर्यनारायण-स्वामिने नमः। ॐ नमो नारायणाय॥

> > [२६]

ड्मानुंकं भुंवना सीषधेम। इन्द्रेश्च विश्वें च देवाः। यज्ञं चं नस्त्न्वं चं प्रजां चं। आदित्यैरिन्द्रंः सह सीषधातु। आदित्यैरिन्द्रः सगंणो मुरुद्भिः। अस्माकं भूत्वविता तुनूनाम्। आप्नेवस्व प्रप्नेवस्व। आण्डीभेवज् मा मुहुः। सुखादीन्दुंःखनिधनाम्। प्रतिमुश्चस्व स्वां पुरम्॥११४॥

मरींचयः स्वायम्भुवाः। ये शरी्राण्यंकल्पयन्। ते ते देहं केल्पयन्तु। मा चं ते ख्यास्मं तीरिषत्। उत्तिष्ठत् मा स्वंप्त। अग्निमिच्छध्वं भारताः। राज्ञः सोमस्य तृप्तासः। सूर्येण स्युजोषसः। युवां सुवासाः। अष्टाचंक्रा नवंद्वारा॥११५॥

देवानां पूर्रयोध्या। तस्यार् हिरण्मयः कोशः। स्वर्गो लोको ज्योतिषा-ऽऽवृंतः। यो वै तां ब्रह्मणो वेद। अमृतेनाऽऽवृतां पुरीम्। तस्मे ब्रह्म चे ब्रह्मा च। आयुः कीर्तिं प्रजां दंदुः। विभ्राजमानार् हरिणीम्। यशसां सम्प्रीवृंताम्। पुर्र हिरण्मयीं ब्रह्मा॥११६॥

विवेशांऽप्राजिता। पराङेत्यंज्याम्यी। पराङेत्यंनाश्वकी। इह चांमुत्रं चान्वेति। विद्वान्देवासुरानुंभ्यान्। यत्कुंमारी मृन्द्रयंते। यद्योषिद्यत्पंतिव्रतां। अरिष्टं यत्किं चं क्रियतें। अग्निस्तदनुंवेधति। अश्वतांसः श्वेतास्श्र॥११७॥

युज्वानो येऽप्यंयुज्वनंः। स्वंर्यन्तो नापैक्षन्ते। इन्द्रंमुग्निं चं ये विदुः।

सिकंता इव संयन्तिं। रृश्मिभिः समुदीरिताः। अस्माल्लोकादंमुष्माच। ऋषिभिरदातपृश्निभिः। अपेत् वीत् वि चं सर्पतातः। येऽत्र स्थ पुराणा ये च् नूतंनाः। अहोभिरुद्भिरुक्तभिर्व्यंक्तम्॥११८॥

यमो दंदात्ववसानंमस्मै। नृ मुंणन्तु नृपात्वर्यः। अकृष्टा ये च कृष्टंजाः। कुमारीषु क्नीनीषु। जारिणीषु च ये हिताः। रेतः पीता आण्डंपीताः। अङ्गारेषु च ये हुताः। उभयान् पुत्रंपौत्रकान्। युवेऽहं यमराजंगान्। शतिमन्नु श्रदः॥११९॥

अदो यद्वह्मं विल्बम्। पितृणां चं यमस्यं च। वर्रुणस्याश्विनोरुग्नेः। मुरुतां च विहायंसाम्। कामुप्रयवंणं मे अस्तु। स ह्यंवास्मि सुनातंनः। इति नाको ब्रह्मिश्रवो रायो धनम्। पुत्रानापो देवीरिहाऽऽहित॥१२०॥

श्री-छाया-सुवर्चलाम्बा-समेत-श्री-सूर्यनारायण-स्वामिने नमः।

#### ॐ नमो नारायणाय॥

-[२७]

विशींर्ष्णीं गृध्रंशीर्ष्णीं च। अपेतों निर्ऋति र हंथः। परिबाध र श्वंतकुक्षम्। निजङ्क र्रं शब्लोदंरम्। स् तान् वाच्यायंया सह। अग्ने नाशंय सन्दर्शः। ईर्ष्यासूये बुंभुक्षाम्। मृन्युं कृत्यां चं दीधिरे। रथेन कि रशुकावंता। अग्ने नाशंय सन्दर्शः॥१२१॥

श्री-छाया-सुवर्चलाम्बा-समेत-श्री-सूर्यनारायण-स्वामिने नमः।

## ॐ नमो नारायणाय॥

**-[**२८

पुर्जन्यांय प्रगांयत। दिवस्पुत्रायं मीुढुषं। स नों यवसंमिच्छतु। इदं वर्चः पुर्जन्यांय स्वराजें। हृदो अस्त्वन्तंरुन्तद्युंयोत। मयोुभूर्वातो विश्वकृष्टयः सन्त्वस्मे। सुपिप्पुला ओषंधीर्देवगोपाः। यो गर्भमोषंधीनाम्। गवां कृणोत्यर्वताम्। पूर्जन्यः पुरुषीणांम्॥१२२॥ श्री-छाया-सुवर्चलाम्बा-समेत-श्री-सूर्यनारायण-स्वामिने नमः। ॐ नमो नारायणाय॥

[२९]

पुनंमामैत्विन्द्रियम्। पुन्रायुः पुन्भगः। पुन्क्रीह्मणमैतु मा। पुन्द्रिविणमैतु मा। यन्मेऽद्य रेतः पृथिवीमस्कान्। यदोषंधीर्प्यसंर्द्यदापः। इदं तत्पुन्रादंदे। दीर्घायुत्वाय वर्चसे। यन्मे रेतः प्रसिंच्यते। यन्म आजांयते पुनः। तेनं माम्मृतं कुरु। तेनं सुप्रुज्ञसं कुरु॥१२३॥

श्री-छाया-सुवर्चलाम्बा-समेत-श्री-सूर्यनारायण-स्वामिने नमः। ॐ नमो नारायणाय॥

[30]

अद्मस्तिरोऽधाऽजांयत। तवं वैश्रवणः संदा। तिरोऽधेहि सप्लान्नः। ये अपोऽश्रन्तिं केचन। त्वाष्ट्रीं मायां वैश्रवणः। रथर्ं सहस्रवन्धुंरम्। पुरुश्चक्ररं सहस्राश्वम्। आस्थायायांहि नो बिलिम्। यस्मै भूतानिं बिलिमावंहन्ति। धनं गावो हस्ति हिरंण्यमश्वान्॥१२४॥

असाम सुमृतौ युज्ञियंस्य। श्रियं बिश्रुतोऽन्नंमुखीं विराजम्। सुद्र्शने चं क्रौश्चे चं। मैनागे चं महागिरी। शृतद्वाट्टारंगमुन्ता। स्र्हार्यं नगरं तवं। इति मन्नाः। कल्पोऽत ऊर्ध्वम्। यदि बलि्र हरेत्। हिर्ण्यनाभये वितुदयें कौबेरायायं बंलिः॥१२५॥

सर्वभूताधिपतये नंम इति। अथ बिल १ हत्वोपितिष्ठेत। क्षुत्रं क्षुत्रं वैश्विवणः। ब्राह्मणां वयु १ स्मः। नर्मस्ते अस्तु मा मां हि १ सीः। अस्मात्प्रविषयान्नंमद्धीति। अथ तमग्निमांदधीत। यस्मिन्नेतत्कर्म प्रयुश्चीत। तिरोऽधा भूः। तिरोऽधा भुवंः॥१२६॥

तिरोऽधाः स्वंः। तिरोऽधा भूर्भुवः स्वंः। सर्वेषां लोकानामाधिपत्यें सीदेति।

अथ तमग्निमिन्धीत। यस्मिन्नेतत्कर्म प्रयुश्चीत। तिरोऽधा भूः स्वाहाँ। तिरोऽधा भुवः स्वाहाँ। तिरोऽधाः स्वंः स्वाहाँ। तिरोऽधा भूर्भुवः स्वंः स्वाहाँ। यस्मिन्नस्य काले सर्वा आहुतीर्हुतां भवेयुः॥१२७॥

अपि ब्राह्मणंमुखीनाः। तस्मिन्नहः काले प्रंयुञ्जीतः। परंः सुप्तजंनाद्वेपि। मास्म प्रमाद्यन्तंमाध्यापयेत्। सर्वार्थाः सिद्धान्ते। य एवं वेदः। क्षुध्यन्निदंम-जानताम्। सर्वार्था नं सिद्धान्ते। यस्ते विघातुंको भ्राता। ममान्तर्ह्हंदये श्रितः॥१२८॥

तस्मां इममग्रपिण्डं जुहोमि। स में ऽर्थान्मा विवंधीत्। मिय स्वाहाँ। राजाधिराजायं प्रसह्यसाहिनें। नमों वयं वैंश्रवणायं कुर्महे। स में कामान्कामकामाय मह्यम्। कामेश्वरो वैंश्रवणो दंदात्। कुबेरायं वेश्रवणायं। महाराजाय नमंः। केतवो अरुणासश्च। ऋषयो वातंरशनाः। प्रतिष्ठा श्रवर्धा हि। समाहितासो सहस्रधायंसम्। शिवा नः शन्तंमा भवन्तु। दिव्या आप ओषंधयः। सुमृडीका सरंस्वति। मा ते व्योम सन्दिशं॥१२९॥

श्री-छाया-सुवर्चलाम्बा-समेत-श्री-सूर्यनारायण-स्वामिने नमः।

#### ॐ नमो नारायणाय॥

.[38]

संवथ्सरमेतंद्वतं चरेत्। द्वौ वा मासौ। नियमः संमासेन। तस्मिन्नियमं-विशेषाः। त्रिषवणमुदकोपस्पूर्शी। चतुर्थकालपानंभक्तः स्यात्। अहरहर्वा भैक्षंमश्रीयात्। औदुम्बरीभिः समिद्धिरिग्नं परिचरेत्। पुनर्मामैत्विन्द्रियमि-त्येतेनानुंवाकेन। उद्धतपरिपूताभिरद्भिः कार्यं कुर्वीत॥१३०॥

अंसश्चयवान्। अग्नये वायवे सूर्याय। ब्रह्मणे प्रंजापृतये। चन्द्रमसे नेक्षत्रेभ्यः। ऋतुभ्यः संवंध्सराय। वरुणायारुणायेति व्रंतहोमाः। प्रवृग्यवंदादेशः। अरुणाः काण्डऋषयः। अरण्येऽधीयीरन्। भद्रं कर्णेभिरिति द्वे जिपत्वा॥१३१॥ महानाम्नीभिरुदकः संइस्पृश्यं। तमाचौर्यो दृद्यात्। शिवा नः शन्तमेत्योषधीरालुभते। सुमृडीकेति भूमिम्। एवमपवृर्गे। धेनुर्दक्षिणा। कः सं वासंश्च क्षौमम्। अन्यंद्वा शुक्कम्। यथाशक्ति वा। एवः स्वाध्यायंधर्मेण। अरण्येऽधीयीत। तपस्वी पुण्यो भवति तपस्वी पुण्यो भवति॥१३२॥ श्री-छाया-सुवर्चलाम्बा-समेत-श्री-सूर्यनारायण-स्वामिने नमः। ॐ नमो नारायणाय॥

[३२]

भद्रं कर्णिभिः शृणुयामं देवाः। भद्रं पंश्येमाक्षभिर्यजंत्राः। स्थिरैरङ्गैंस्तुष्टु-वार्श्सस्त्नूभिः। व्यशेम देविहेतं यदायुः। स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रंवाः। स्वस्ति नः पूषा विश्ववंदाः। स्वस्ति नस्ताक्ष्यों अरिष्टनेमिः। स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु॥

॥ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥



## ॥ नवग्रहसूक्तम्॥

आ सत्येन रजंसा वर्तमानो निवेशयंत्रमृतं मर्त्यं च। हिर्ण्ययेन सिवता रथेनाऽदेवो यांति भुवंना विपश्यन्। अग्निं दूतं वृंणीमहे होतारं विश्ववेदसम्। अस्य यज्ञस्यं सुक्रतुम्॥ येषामीशे पशुपितः पशूनां चतुंष्पदामुत चं द्विपदाम्। निष्क्रीतोऽयं यज्ञियं भागमेतु रायस्पोषा यजंमानस्य सन्तु॥ अधिदेवता प्रत्यिधदेवता सिहताय आदित्याय नमः॥१॥ अग्निर्मूर्धा दिवः कुकुत्पितः पृथिव्या अयम्। अपार रेतारंसि जिन्वित। स्योना पृंथिवि भवांऽनृक्षुरा निवेशंनी। यच्छांनः शर्मं सुप्रथाः। क्षेत्रंस्य पितंना

व्य हित नेव जयामिस। गामश्वं पोषियत्वा स नो मृडाती् हशे॥ अधिदेवता प्रत्यिधदेवता सिहताय अङ्गारकाय नमः॥२॥

प्र वेः शुक्रायं भानवे भरध्वः हृव्यं मृतिं चाग्नये सुपूतम्॥ यो दैव्यांनि मानुंषा जनूः ध्यन्तर्विश्वांनि विद्यना जिगांति॥ इन्द्राणीमासु नारिषु सुपत्नीमहमंश्रवम्। न ह्यंस्या अप्रं चन जरसा मरंते पर्तिः॥ इन्द्रंं वो विश्वतस्परि हवांमहे जनेंभ्यः। अस्माकंमस्तु केवंलः॥ अधिदेवता प्रत्यिधदेवता सहिताय शुक्राय नमः॥३॥

आप्यायस्व समेतु ते विश्वतः सोम् वृष्णियम्। भवा वार्जस्य सङ्ग्थे॥ अपसु मे सोमो अब्रवीदन्तर्विश्वांनि भेषजा। अग्निं चं विश्वशंम्भुवमापंश्च विश्वभेषजीः। गौरी मिंमाय सिल्लानि तक्षंती। एकंपदी द्विपदी सा चतुंष्पदी। अष्टापंदी नवंपदी बभूवुषीं। सहस्राक्षरा पर्मे व्योमन्। अधिदेवता प्रत्यिधेदेवता सहिताय सोमाय नमः॥४॥

उद्बंध्यस्वाग्ने प्रतिजागृह्येनिमष्टापूर्ते स॰ सृंजेथाम्यं चं। पुनः कृण्व इस्त्वां पितरं युवानम्न्वाता ईसीत्विय तन्तुंमेतम्॥ इदं विष्णुर्विचंक्रमे त्रेधा निदंधे पदम्। समूंढमस्यपा॰ सुरे॥ विष्णों र्राटंमिस् विष्णोः पृष्ठमंसि विष्णोः श्रप्नेंस्थो विष्णोः स्यूरंसि विष्णोंध्रुंवमंसि वैष्ण्वमंसि विष्णांव त्वा। अधिदेवता प्रत्यिधदेवता सहिताय बुधाय नमः॥५॥

बृहंस्पते अतियद्यों अहींद्विमद्विभाति ऋतुंमुझनेषु। यद्दीदयुच्छवंसर्तप्रजात् तद्स्मासु द्रविणं धेहि चित्रम्॥ इन्द्रंमरुत्व इह पाहि सोमं यथां शार्याते अपिंबः सुतस्यं। तव प्रणीती तवं शूरशर्मन्नाविवासन्ति क्वयः सुयज्ञाः॥ ब्रह्मंजज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमृतः सुरुचो वेन आंवः। सबुध्नियां उपमा अंस्य विष्ठाः सृतश्च योनिमसंतश्च विवः॥ अधिदेवता प्रत्यधिदेवता सहिताय बृहस्पतये नमः॥६॥

शं नों देवीरिभष्टंय आपों भवन्तु पीतयें। शंयोरिभस्रंवन्तु नः॥ प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वां जातानि परिता बंभूव। यत्कांमास्ते जुहुमस्तन्नों अस्तु वयङ् स्यांम पतंयो रयीणाम्। इमं यंमप्रस्तरमाहि सीदाऽङ्गिरोभिः पितृभिः संविदानः। आत्वा मन्नाः कविशस्ता वंहन्त्वेना राजन् ह्विषां मादयस्व॥ अधिदेवता प्रत्यिधेदेवता सहिताय शनैश्चराय नमः॥७॥

कर्या नश्चित्र आभुंबदूती स्वावृंधः सखाँ। कया शचिंष्ठया वृता। आऽयङ्गौः पृश्लिंरक्रमीदसंनन्मातर् पुनः। पितरं च प्रयन्थ्सुवंः। यत्ते देवी निर्ऋतिराब्बन्ध् दामं ग्रीवास्वंविचर्त्यम्। इदं ते तिद्वष्याम्यायुंषो न मध्यादथांजीवः पितुमंद्धि प्रमुंक्तः॥

अधिदेवता प्रत्यधिदेवता सहिताय राहवे नमः॥८॥

केतुं कृण्वन्नेकेतवे पेशों मर्या अपेशसें। समुषद्भिरजायथाः॥ ब्रह्मा देवानां पद्वीः कंवीनामृषिर्विप्राणां मिह्षो मृगाणांम्। श्येनो गृध्राणाः स्विधितिर्वनानाः सोमः पवित्रमत्येति रेभन्। (ऋक्) सचित्र चित्रं चितयन् तमस्मे चित्रंक्षत्र चित्रतंमं वयोधाम्। चन्द्रं र्यिं पुरुवीरं बृहन्तं चन्द्रंचन्द्राभिर्गृणते युवस्व॥ अधिदेवता प्रत्यिधेदेवता सहिताय केतवे नमः॥९॥

॥ॐ आदित्यादि नवग्रहदेवंताभ्यो नमो नर्मः॥ ॥ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥

## ॥ प्रार्थना ॥

भानो भास्कर मार्तण्ड चण्डरश्मे दिवाकर। आयुरारोग्यमैश्वर्यं श्रियं पुत्रांश्च देहि मे॥

धृतपद्मद्वयं भानुं तेजोमण्डलमध्यगम्। सर्वाधिव्याधिशमनं छायाश्लिष्टतनुं भजे॥ सौरमण्डलमध्यस्थं साम्बं संसारभेषजम्। नीलग्रीवं विरूपाक्षं नमामि शिवमव्ययम्॥

ध्येयः सदा सवितृमण्डल-मध्यवर्ती नारायणः सरसि-जासन-सन्निविष्टः। केयूरवान् मकरकुण्डलवान् किरीटी हारी हिरण्मयवपुर्धृतशङ्खचकः॥

शङ्ख-चक्र-गदापाणे द्वारकानिलयाच्युत। गोविन्द पुण्डरीकाक्ष रक्ष मां शरणागतम्॥

आकाशात् पतितं तोयं यथा गच्छति सागरम्। सर्वदेवनमस्कारः केशवं प्रतिगच्छति॥

श्री केशवं प्रतिगच्छत्यों नम इति॥

कायेन वाचा मनसेन्द्रियैर्वा बुद्ध्याऽऽत्मना वा प्रकृतेः स्वभावात्। करोमि यद्यत् सकलं परस्मे नारायणायेति समर्पयामि॥

अनेन पूजनेन सपरिवार-भगवान्-सूर्यः प्रीयताम्।

ॐ तत्सद्बह्मार्पणमस्तु।

## ॥ आदित्यहृदयम्॥

ततो युद्धपरिश्रान्तं समरे चिन्तया स्थितम्। रावणं चाग्रतो दृष्ट्वा युद्धाय समुपस्थितम्॥१॥

दैवतैश्च समागम्य द्रष्टुमभ्यागतो रणम्। उपागम्याब्रवीद्रामम् अगस्त्यो भगवान् ऋषिः॥२॥

राम राम महाबाहो शृणु गुह्यं सनातनम्। येन सर्वानरीन् वत्स समरे विजयिष्यसि॥३॥

आदित्यहृदयं पुण्यं सर्वशत्रुविनाशनम्। जयावहं जपेन्नित्यम् अक्षय्यं परमं शिवम्॥४॥

सर्वमङ्गलमाङ्गल्यं सर्वपापप्रणाशनम्। चिन्ताशोकप्रशमनम् आयुर्वर्धनमुत्तमम्॥५॥

रश्मिमन्तं समुद्यन्तं देवासुरनमस्कृतम्। पूजयस्व विवस्वन्तं भास्करं भुवनेश्वरम्॥६॥

सर्वदेवात्मको ह्येष तेजस्वी रश्मिभावनः। एष देवासुरगणान् लोकान् पाति गभस्तिभिः॥७॥

एष ब्रह्मा च विष्णुश्च शिवः स्कन्दः प्रजापतिः। महेन्द्रो धनदः कालो यमः सोमो ह्यपां पतिः॥८॥

पितरो वसवः साध्या ह्यश्विनौ मरुतो मनुः। वायुर्वह्निः प्रजाप्राण ऋतुकर्ता प्रभाकरः॥९॥

आदित्यः सविता सूर्यः खगः पूषा गभस्तिमान्। सुवर्णसदृशो भानुर्विश्वरेता दिवाकरः॥१०॥

हरिदश्वः सहस्रार्चिः सप्तसप्तिर्मरीचिमान्। तिमिरोन्मथनः शम्भुस्त्वष्टा मार्तण्ड अंशुमान्॥११॥

हिरण्यगर्भः शिशिरस्तपनो भास्करो रविः। अग्निगर्भोऽदितेः पुत्रः शङ्खः शिशिरनाशनः॥१२॥

व्योमनाथस्तमोभेदी ऋग्यजुस्सामपारगः। घनवृष्टिरपां मित्रो विन्ध्यवीथीप्लवङ्गमः॥१३॥

आतपी मण्डली मृत्युः पिङ्गलः सर्वतापनः। कविर्विश्वो महातेजा रक्तः सर्वभवोद्भवः॥१४॥

नक्षत्रग्रहताराणाम् अधिपो विश्वभावनः। तेजसामपि तेजस्वी द्वादशात्मन् नमोऽस्तु ते॥१५॥ नमः पूर्वाय गिरये पश्चिमायाद्रये नमः। ज्योतिर्गणानां पतये दिनाधिपतये नमः॥१६॥

जयाय जयभद्राय हर्यश्वाय नमो नमः। नमो नमः सहस्रांशो आदित्याय नमो नमः॥१७॥

नम उग्राय वीराय सारङ्गाय नमो नमः। नमः पद्मप्रबोधाय मार्तण्डाय नमो नमः॥१८॥

ब्रह्मेशानाच्युतेशाय सूर्यायादित्यवर्चसे। भास्वते सर्वभक्षाय रौद्राय वपुषे नमः॥१९॥

तमोघ्राय हिमघ्राय शत्रुघ्रायामितात्मने। कृतघ्रघ्राय देवाय ज्योतिषां पतये नमः॥२०॥

तप्तचामीकराभाय वह्नये विश्वकर्मणे। नमस्तमोऽभिनिघ्नाय रुचये लोकसाक्षिणे॥२१॥

नाशयत्येष वै भूतं तदेव सृजति प्रभुः। पायत्येष तपत्येष वर्षत्येष गभस्तिभिः॥२२॥

एष सुप्तेषु जागर्ति भूतेषु परिनिष्ठितः। एष एवाग्निहोत्रं च फलं चैवाग्निहोत्रिणाम्॥२३॥

वेदाश्च ऋतवश्चैव ऋतूनां फलमेव च। यानि कृत्यानि लोकेषु सर्व एष रविः प्रभुः॥२४॥

एनमापत्सु कृच्छ्रेषु कान्तारेषु भयेषु च। कीर्तयन् पुरुषः कश्चिन्नावसीदति राघव॥२५॥

पूजयस्वैनमेकाग्रो देवदेवं जगत्पतिम्। एतत् त्रिगुणितं जास्वा युद्धेषु विजयिष्यसि॥२६॥

अस्मिन् क्षणे महाबाहो रावणं त्वं वधिष्यसि। एवमुक्का तदाऽगस्त्यो जगाम च यथाऽऽगतम्॥२७॥ एतच्छुत्वा महातेजा नष्टशोकोऽभवत्तदा। धारयामास सुप्रीतो राघवः प्रयतात्मवान्॥२८॥

आदित्यं प्रेक्ष्य जम्वा तु परं हर्षमवाप्तवान्। त्रिराचम्य शुचिर्भूत्वा धनुरादाय वीर्यवान्॥२९॥

रावणं प्रेक्ष्य हृष्टात्मा युद्धाय समुपागमत्। सर्वयत्नेन महता वधे तस्य धृतोऽभवत्॥३०॥

अथ रविरवदन्निरीक्ष्य रामं मुदितमनाः परमं प्रहृष्यमाणः। निशिचरपतिसङ्क्षयं विदित्वा सुरगणमध्यगतो वचस्त्वरेति॥३१॥ ॥इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये युद्धकाण्डे आदित्यहृदयं नाम सप्तोत्तरशततमः सर्गः॥

## ॥ द्वादशार्यासूर्यस्तुतिः॥

उद्यन्नद्य विवस्वानारोहन्नुत्तरां दिवं देवः। हृद्रोगं मम सूर्यो हरिमाणं चाऽऽशु नाशयतु॥१॥

निमिषार्धेनैकेन द्वे च शते द्वे सहस्रे द्वे। ऋममाण योजनानां नमोऽस्तु ते निलननाथाय॥२॥

कर्म-ज्ञान-ख-दशकं मनश्च जीव इति विश्व-सर्गाय। द्वादशधा यो विचरति स द्वादश-मूर्तिरस्तु मोदाय॥३॥

त्वं हि यजुर्ऋक् साम त्वमागमस्त्वं वषद्कारः। त्वं विश्वं त्वं हंसस्त्वं भानो परमहंसश्च॥४॥

शिवरूपाज्ज्ञानमहं त्वत्तो मुक्तिं जनार्दनाकारात्। शिखिरूपादेश्वर्यं त्वत्तश्चारोग्यमिच्छामि॥५॥

त्विच दोषा दृशि दोषा हृदि दोषा येऽखिलेन्द्रियज-दोषाः। तान् पूषा हतदोषः किश्चिद्रोषाग्निना दहतु॥६॥ धर्मार्थ-काम-मोक्ष-प्रतिरोधानुग्र-ताप-वेग-करान् । बन्दी-कृतेन्द्रिय-गणान् गदान् विखण्डयतु चण्डांशुः॥७॥

येन विनेदं तिमिरं जगदेत्य ग्रसति चरमचरमखिलम्। धृतबोधं तं निलनीभर्तारं हर्तारमापदामीडे॥८॥

यस्य सहस्राभीशोरभीशु-लेशो हिमांशु-बिम्बगतः। भासयति नक्तमखिलं भेदयतु विपद्-गणानरुणः॥९॥

तिमिरमिव नेत्र-तिमिरं पटलिमवाशेष-रोग-पटलं नः। काशमिवाधि-निकायं कालिपता रोगयुक्ततां हरतात्॥१०॥

वाताश्मरी-गदार्शस्त्वग्-दोष-महोदर-प्रमेहांश्च । ग्रहणी-भगन्दराख्या महतीस्त्वं मे रुजो हंसि॥११॥

त्वं माता त्वं शरणं त्वं धाता त्वं धनं त्वमाचार्यः। त्वं त्राता त्वं हर्ता विपदामर्क प्रसीद मम भानो॥१२॥

इत्यार्या-द्वादशकं साम्बस्य पुरो नभःस्थलात् पतितम्। पठतां भाग्य-समृद्धिः समस्त-रोग-क्षयश्च स्यात्॥१३॥ ॥इति श्री-द्वादशार्यासूर्यस्तुतिः सम्पूर्णा॥



# ॥ सङ्कमण-पुण्यकाल-स्नान-सङ्कल्पः॥

(आचम्य)

शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्। प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये॥ प्राणान् आयम्य। ॐ भूः + भूर्भुवः सुवरोम्। आचमनम्। शुक्लाम्बरधरं + शान्तये। प्राणायामः। तदेव लग्नं सुदिनं तदेव ताराबलं चन्द्रबलं तदेव। विद्याबलं दैवबलं तदेव लक्ष्मीपतेरङ्क्षियुगं स्मरामि॥

अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थागतोऽपि वा। यः स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः श्चिः॥

मानसं वाचिकं पापं कर्मणा समुपार्जितम्। श्रीरामः स्मरणेनैव व्यपोहति न संशयः॥

श्रीराम राम राम।

तिथिर्विष्णुस्तथा वारो नक्षत्रं विष्णुरेव च। योगश्च करणं चैव सर्वं विष्णुमयं जगत्॥ श्रीहरे गोविन्द गोविन्द गोविन्द।

ममोपात्तसमस्तदुरितक्षयद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थम्, अद्य -श्रीभगवतः विष्णोः नारायणस्य अचिन्त्यया अपरिमितया शक्त्या भ्रियमाणस्य महाजलौघस्य मध्ये परिभ्रमताम् अनेककोटिब्रह्माण्डा-नाम् एकतमे पृथिवी-अप्-तेजो-वायु-आकाश-अहङ्कार-महद्-अव्यक्तैः आवरणैः आवृते अस्मिन् महति ब्रह्माण्डकरण्डमध्ये चतुर्दशभुवनान्तर्गते भूमण्डले जम्बू-प्रक्ष-शाक-शाल्मलि-कुश-ऋौश्च-पुष्कराख्य-सप्तद्वीपमध्ये जम्बूद्वीपे भारत-किम्पुरुष-हरि-इलावृत-रम्यक-हिरण्मय-कुरु-भद्राश्व-केतुमाल-नववर्षमध्ये भारतवर्षे इन्द्र-चेरु-ताम्र-गभस्ति-नाग-सौम्य-गन्धर्व-चारण-भरत-नवखण्डमध्ये भरतखण्डे सुमेरु-निषद-हेमकूट-हिमाचल-माल्यवत्-पारियात्रक-गन्धमादन-कैलास-विन्ध्याचलादि-अनेकपुण्यशैलानां मध्ये दण्डकारण्य-चम्पकारण्य-विन्ध्यारण्य-वीक्षारण्य-श्वेतारण्य-वेदारण्यादि-अनेकपुण्यारण्यानां मध्ये कर्मभूमौ रामसेतुकेदारयोः मध्ये भागीरथी-यमुना-नर्मदा-त्रिवेणी-मलापहारिणी-गौतमी-कृष्णवेणी-तुङ्गभद्रा-कावेर्यादि-अनेकपुण्यनदी-विराजिते इन्द्रप्रस्थ-यमप्रस्थ-अवन्तिकापुरी-हस्तिनापुरी-अयोध्यापुरी-द्वारका-मथुरापुरी-मायापुरी-काशीपुरी-काश्चीपुर्यादि-अनेकपुण्य-पुरी-विराजिते -

सकलजगत्स्रष्टुः परार्धद्वयजीविनः **ब्रह्मणः द्वितीयपरार्धे** पश्चाशद्-अब्दादौ प्रथमे वर्षे प्रथमे मासे प्रथमे पक्षे प्रथमे दिवसे अहि द्वितीये यामे तृतीये मुहूर्ते स्वायम्भुव-स्वारोचिष-उत्तम-तामस-रैवत-चाक्षुषाख्येषु षद्घु मनुषु अतीतेषु सप्तमे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे प्रथमे पादे अस्मिन् वर्तमाने व्यावहारिकाणां प्रभवादीनां षष्ट्याः संवत्सराणां मध्ये

() ४९ नाम संवत्सरे उत्तरायणे / दक्षिणायने (ग्रीष्म / वर्ष / शरद् / हेमन्त / शिशिर / वसन्त) ऋतौ (मेष / वृषभ / मिथुन / कर्कटक / सिंह / कन्या / तुला / वृश्चिक / धनुर् / मकर / कुम्भ / मीन) मासे (शुक्र / कृष्ण) पक्षे () शुभितथौ (इन्दु / भौम / बुध / गुरु / भृगु / स्थिर / भानु) वासरयुक्तायाम् () ५० नक्षत्र () ५१ नाम योग () करण युक्तायां च एवंगुणविशेषणविशिष्टायाम् अस्याम् () शुभितिथौ–

अनादि-अविद्या-वासनया प्रवर्तमाने अस्मिन् महित संसारचके विचित्राभिः कर्मगितिभिः विचित्रासु योनिषु पुनःपुनः अनेकधा जिनत्वा केनापि पुण्यकर्मविशेषेण इदानीन्तन-मानुष-द्विजजन्म-विशेषं प्राप्तवतः मम – जन्माभ्यासात् जन्मप्रभृति एतत्क्षणपर्यन्तं बात्ये कौमारे यौवने मध्यमे वयसि वार्धके च जागृत्-स्वप्र-सुषुप्ति-अवस्थासु मनो-वाक्-कायाख्य-त्रिकरणचेष्टया कर्मेन्द्रिय-ज्ञानेन्द्रिय-व्यापारैः सम्भावितानाम् इह जन्मिन जन्मान्तरे च ज्ञानाज्ञानकृतानां महापातकानां महापातक-अनुमन्तृत्वादी-नां समपातकानाम् उपपातकानां मिलनीकरणानां गर्ह्यधन-आदान-उपजीवनादीनाम् अपात्रीकरणानां जातिभ्रंशकराणां विहितकर्मत्याग-निन्दितसमाचरणादीनां ज्ञानतः सकृत् कृतानाम् अज्ञानतः असकृत् कृतानां सर्वेषां पापानां सद्यः अपनोदनार्थं – महागणपत्यादिसमस्तवैदिकदेवतासन्निधौ

()-पुण्यकाल-स्नानमहं करिष्ये। अप उपस्पृश्य।

<sup>&</sup>lt;sup>४९</sup>पृष्टं ५७२ पश्यताम्

<sup>&</sup>lt;sup>५°</sup>पृष्टं ५७३ पश्यताम्

५१पृष्टं ५७४ पश्यताम्

गङ्गा गङ्गेति यो ब्र्याद्योजनानां शतैरपि। मुच्यते सर्वपापेभ्यो विष्णुलोकं स गच्छति॥

गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति। नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु॥

अतिकूर महाकाय कल्पान्तदहनोपम। भैरवाय नमस्तुभ्यम् अनुज्ञां दातुम् अर्हसि॥ (प्रोक्षण-मन्नाः/स्नान-मन्नाः)

स्रात्वा वस्रं धृत्वा कुलाचारवत् पुण्ड्रधारणं च कृत्वा आचम्य।



# ॥ कार्त्तिकसोमवारार्घ्यम् ॥

## ॥अर्घ्यम्॥

सोमवारे दिवा स्थित्वा निराहारो महेश्वर। नक्तं भोक्ष्यामि देवेश अर्पयामि सदाशिव॥१॥

—साम्बशिवाय नमः इदमर्घ्यम्। (त्रिः)

नक्तं च सोमवारे च सोमनाथ जगत्पते। अनन्तकोटिसौभाग्यं अक्षय्यं कुरु शङ्कर ॥२॥

—साम्बशिवाय नमः इदमर्घ्यम्। (त्रिः)

नमः सोमविभूषाय सोमायामिततेजसे। इदमर्घ्यं प्रदास्यामि सोमो यच्छतु मे शिवम्॥३॥

—साम्बशिवाय नमः इदमर्घ्यम्। (त्रिः)

आकाशदिग्शरीराय ग्रहनक्षत्रमालिने। इदमर्घ्यं प्रदास्यामि सुप्रीतो वरदो भव॥४॥

—साम्बशिवाय नमः इदमर्घ्यम्। (त्रिः)

अम्बिकायै नमस्तुभ्यं नमस्ते देवि पार्वति। अनघे वरदे देवि गृहाणार्घ्यं प्रसीद मे॥५॥

—पार्वत्यै नमः इदमर्घ्यम्। (त्रिः)

सुब्रह्मण्य महाभाग कार्त्तिकेय सुरेश्वर। इदमर्घ्यं प्रदास्यामि सुप्रीतो वरदो भव॥६॥

-- सुब्रह्मण्याय नमः इदमर्घ्यम्। (त्रिः)

नन्दिकेश महाभाग शिवध्यानपरायण। शैलादये नमस्तुभ्यं गृहाणार्घ्यमिदं प्रभो॥७॥

—नन्दिकेश्वराय नमः इदमर्घ्यम्। (त्रिः)

[नीलकण्ठ-पदाम्भोज-परिस्फुरित-मानस । शम्भोः सेवाफलं देहि चण्डेश्वर नमोऽस्तु ते॥८॥

—चण्डिकेश्वराय नमः इदमर्घ्यम्। (त्रिः)]

#### ॥ कथा ॥

#### सूत उवाच

नित्यानन्दमयं शान्तं निर्विकल्पं निरामयम्। शिवतत्त्वमनाद्यन्तं ये विदुस्ते परं गताः॥१॥

विरक्ताः कामभोगेभ्यो ये प्रकुर्वन्त्यहैतुकीम्। भक्तिं परां शिवे धीरास्तेषां मुक्तिर्न संसृतिः॥२॥

विषयानभिसन्धाय ये कुर्वन्ति शिवे रतिम्। विषयेर्नाभिभूयन्ते भुआनास्तत्फलान्यपि॥३॥

येन केनापि भावेन शिवभक्तियुतो नरः। न विनश्यति कालेन स याति परमां गतिम्॥४॥ आरुरुक्षुः परं स्थानं विषयासक्तमानसः। पूजयेत्कर्मणा शम्भुं भोगान्ते शिवमाप्रुयात्॥५॥

अशक्तः कश्चिदुत्स्रष्टुं प्रायो विषयवासनाम्। अतः कर्ममयी पूजा कामधेनुः शरीरिणाम्॥६॥

मायामयेऽपि संसारे ये विहृत्य चिरं सुखम्। मुक्तिमिच्छन्ति देहान्ते तेषां धर्मोऽयमीरितः॥७॥

शिवपूजा सदा लोके हेतुः स्वर्गापवर्गयोः। सोमवारे विशेषेण प्रदोषादिगुणान्विते॥८॥

केवलेनापि ये कुर्युः सोमवारे शिवार्चनम्। न तेषां विद्यते किञ्चिदिहामुत्र च दुर्लभम्॥९॥

उपोषितः शुचिर्भूत्वा सोमवारे जितेन्द्रियः। वैदिकैर्लोकिकैर्वाऽपि विधिवत्पूजयेच्छिवम्॥१०॥

ब्रह्मचारी गृहस्थो वा कन्या वाऽपि सभर्तृका। विभर्तृका वा सम्पूज्य लभते वरमीप्सितम्॥११॥

अत्राहं कथयिष्यामि कथां श्रोतृमनोहराम्। श्रुत्वा मुक्तिं प्रयान्त्येव भक्तिर्भवति शाम्भवी॥१२॥

आर्यावर्ते नृपः कश्चिदासीद्धर्मभृतां वरः। चित्रवर्मेति विख्यातो धर्मराजो दुरात्मनाम्॥॥१३॥

स गोप्ता धर्मसेतूनां शास्ता दुष्पथगामिनाम्। यष्टा समस्तयज्ञानां त्राता शरणमिच्छताम्॥१४॥

कर्ता सकलपुण्यानां दाता सकलसम्पदाम्। जेता सपत्रवृन्दानां भक्तः शिवमुकुन्दयोः॥१५॥

सोनुकूलासु पत्नीषु लब्बा पुत्रान्महौजसः। चिरेण प्रार्थितां लेभे कन्यामेकां वराननाम्॥१६॥ स लब्ध्वा तनयां दिष्ट्या हिमवानिव पार्वतीम्। आत्मानं देवसदृशं मेने पूर्णमनोरथम्॥१७॥

> स एकदा जातकलक्षणज्ञान् आहूय साधून्द्विजमुख्यवृन्दान्। कुतूहलेनाभिनिविष्टचेताः पप्रच्छ कन्याजनने फलानि॥१८॥

अथ तत्राब्रवीदेको बहुज्ञो द्विजसत्तमः। एषा सीमन्तिनी नाम्ना कन्या तव महीपते॥१९॥

उमेव माङ्गल्यवती दमयन्तीव रूपिणी। भारतीव कलाभिज्ञा लक्ष्मीरिव महागुणा॥॥२०॥

सुप्रजा देवमातेव जानकीव धृतव्रता। रविप्रभेव सत्कान्तिश्चन्द्रिकेव मनोरमा॥२१॥

दशवर्षसहस्राणि सह भर्त्रा प्रमोदते। प्रसूय तनयानष्टौ परं सुखमवाप्स्यति॥२२॥

इत्युक्तवन्तं नृपतिर्धनैः सम्पूज्य तं द्विजम्। अवाप परमां प्रीतिं तद्वागमृतसेवया॥२३॥

अथान्योऽपि द्विजः प्राह धैर्यवानमितद्युतिः। एषा चतुर्दशे वर्षे वैधव्यं प्रतिपत्स्यति॥२४॥

इत्याकर्ण्य वचस्तस्य वज्रनिर्घातनिष्ठुरम्। मुहूर्तमभवद्राजा चिन्ताव्याकुलमानसः॥२५॥

अथ सर्वान्समुत्सृज्य ब्राह्मणान्ब्रह्मवत्सलः। सर्वं दैवकृतं मत्वा निश्चिन्तः पार्थिवोऽभवत्॥२६॥

सापि सीमन्तिनी बाला ऋमेण गतशैशवा। वैधव्यमात्मनो भावि शुश्रावाऽऽत्मसखीमुखात्॥२७॥ परं निर्वेदमापन्ना चिन्तयामास बालिका। याज्ञवल्क्यमुनेः पत्नीं मैत्रेयीं पर्यपृच्छत॥२८॥

मातस्त्वचरणाम्भोजं प्रपन्नाऽस्मि भयाकुला। सौभाग्यवर्धनं कर्म मम शंसितुमहेसि॥२९॥

इति प्रपन्नां नृपतेः कन्यां प्राह मुनेः सती। शरणं व्रज तन्विङ्ग पार्वतीं शिवसंयुताम्॥३०॥

सोमवारे शिवं गौरीं पूजयस्व समाहिता। उपोषिता वा सुस्नाता विरजाम्बरधारिणी॥३१॥

यतवाङ्गिश्चलमनाः पूजां कृत्वा यथोचिताम्। ब्राह्मणान्भोजयित्वाऽथं शिवं सम्यक्प्रसादयत्॥३२॥

पापक्षयोऽभिषेकेण साम्राज्यं पीठपूजनात्। सौभाग्यमखिलं सौख्यं गन्धमाल्याक्षतार्पणात्॥३३॥

धूपदानेन सौगन्ध्यं कान्तिर्दीपप्रदानतः। नैवेद्येश्च महाभोगो लक्ष्मीस्ताम्बृलदानतः॥३४॥

धर्मार्थकाममोक्षाश्च नमस्कारप्रदानतः। अष्टेश्वर्यादिसिद्धीनां जप एव हि कारणम्॥३५॥

होमेन सर्वकामानां समृद्धिरुपजायते। सर्वेषामेव देवानां तुष्टिर्ब्राह्मणभोजनात्॥३६॥

इत्थमाराधय शिवं सोमवारे शिवामपि। अत्यापदमपि प्राप्ता निस्तीर्णाभिभवा भवेः॥३७॥

घोराद् घोरं प्रपन्नापि महाक्लेशं भयानकम्। शिवपूजाप्रभावेण तरिष्यसि महद्भयम्॥३८॥

इत्थं सीमन्तिनीं सम्यगनुशास्य पुनः सती। ययौ साऽपि वरारोहा राजपुत्री तथाऽकरोत्॥३९॥ दमयन्त्यां नलस्यासीदिन्द्रसेनाभिधः सुतः। तस्य चन्द्राङ्गदो नाम पुत्रोऽभूचन्द्रसन्निभः॥४०॥

चित्रवर्मा नृपश्रेष्ठस्तमाहूय नृपात्मजम्। कन्यां सीमन्तिनीं तस्मै प्रायच्छद्गर्वनुज्ञया॥४१॥

सोऽभून्महोत्सवस्तत्र तस्या उद्घाहकर्मणि। यत्र सर्वमहीपानां समवायो महानभूत्॥४२॥

तस्याः पाणिग्रहं काले कृत्वा चन्द्राङ्गदः कृती। उवास कतिचिन्मासांस्तत्रैव श्वशुरालये॥४३॥

एकदा यमुनां तर्तुं स राजतनयो बली। आरुरोह तरीं कैश्चिद्वयस्यैः सह लीलया॥४४॥

तस्मिंस्तरित कालिन्दीं राजपुत्रे विधेर्वशात्। ममञ्ज सह कैवर्तरावर्ताभिहता तरी॥४५॥

हा हेति शब्दः सुमहानासीत्तस्यास्तटद्वये। पश्यतां सर्वसैन्यानां प्रलापो दिवमस्पृशत्॥४६॥

मञ्जन्तो मम्रिरे केचित्केचिद्गाहोदरं गताः। राजपुत्रादयः केचिन्नादृश्यन्त महाजले॥४७॥

तदुपश्रुत्य राजाऽपि चित्रवर्माऽतिविह्नलः। यमुनायास्तटं प्राप्य विचेष्टः समजायत॥४८॥

श्रुत्वाऽथ राजपत्यश्च बभूवुर्गतचेतनाः। सा च सीमन्तिनी श्रुत्वा पपाप भुवि मूर्च्छिता॥४९॥

तथाऽन्ये मन्त्रिमुख्याश्च नायकाः सपुरोहिताः। विह्वलाः शोकसन्तप्ता विलेपुर्मुक्तमूर्धजाः॥५०॥

इन्द्रसेनोऽपि राजेन्द्रः पुत्रवार्त्तां सुदुःखितः। आकर्ण्य सह पत्नीभिनेष्टसंज्ञः पपात ह॥५१॥ तन्मन्निणश्च तत्पौरास्तथा तद्देशवासिनः। आबालवृद्धवनिताश्चुऋशुः शोकविह्वलाः॥५२॥

शोकात्केचिदुरो जघ्नुः शिरो जघ्नुश्च केचन। हा राजपुत्र हा तात क्वासि क्वासीति बभ्रमुः॥५३॥

एवं शोकाकुलं दीनमिन्द्रसेनमहीपतेः। नगरं सहसा क्षुब्धं चित्रवर्मपुरं तथा॥५४॥

अथ वृद्धेः समाश्वस्तश्चित्रवर्मा महीपतिः। शनैर्नगरमागत्य सान्त्वयामास चाऽऽत्मजाम्॥५५॥

स राजाऽम्भसिमग्नस्य जामातुस्तस्य बान्धवैः। आगतैः कारयामास साकल्यादौर्ध्वदैहिकम्॥५६॥

सा च सीमन्तिनी साध्वी भर्तृलोकमितः सती। पित्रा निषिद्धा स्नेहेन वैधव्यं प्रत्यपद्यत॥५७॥

मुनेः पत्योऽपदिष्टं यत्सोमवारव्रतं शुभम्। न तत्याज शुभाचारा वैधव्यं प्राप्तवत्यपि॥५८॥

एवं चतुर्दशे वर्षे दुःखं प्राप्य सुदारुणम्। ध्यायन्ती शिवपादाङ्गं वत्सरत्रयमत्यगात्॥५९॥

पुत्रशोकादिवोन्मत्तमिन्द्रसेनं महीपतिम्। प्रसह्य तस्य दायादाः सप्ताङ्गं जहरोजसा॥६०॥

हृतसिंहासनः शूरैर्दायादैः सोऽप्रजो नृपः। निगृह्य काराभवने सपत्नीको निवेशितः॥॥६१॥

चन्द्रागदोऽपि तत्पुत्रो निमग्नो यमुनाजले। अधोधोमञ्जमानोऽसौ ददर्शोरगकामिनीः॥६२॥

जलक्रीडासु सक्तास्ता दृष्ट्वा राजकुमार कम्। विस्मितास्तमथो निन्युः पातालं पन्नगालयम्॥६३॥ स नीयमानस्तरसा पन्नगीभिर्नृपात्मजः। तक्षकस्य पुरं रम्यं विवेश परमाद्भुतम्॥॥६४॥

सोऽपश्यद्राजतनयो महेन्द्रभवनोपमम्। महारत्नपरिभ्राजन्मयूखपरिदीपितम् ॥६५॥

वज्रवैडूर्यपाचादिप्रासादशतसङ्कुलम् । माणिक्यगोपुरद्वारं मुक्तादामभिरुञ्चलम्॥६६॥

चन्द्रकान्तस्थलं रम्यं हेमद्वारकपाटकम्। अनेकशतसाहस्रमणिदीपविराजितम् ॥६७॥

तत्रापश्यत्सभामध्ये निषण्णं रत्नविष्टरे। तक्षकं पन्नगाधीशं फणानेकशतोञ्चलम्॥६८॥

दिव्याम्बरधरं दीप्तं रत्नकुण्डलराजितम्। नानारत्नपरिक्षिप्तमुकुटद्युतिरञ्जितम् ॥६९॥

फणामणिमयूखाढ्येरसङ्ख्यैः पन्नगोत्तमैः। उपासितं प्राञ्जलिभिश्चित्ररत्नविभूषितैः॥७०॥

रूपयौवनमाधुर्यविलासगति शोभिना। नागकन्यासहस्रेण समन्तात्परिवारितम्॥७१॥

दिव्याभरणदीप्ताङ्गं दिव्यचन्दनचर्चितम्। कालाग्निमिव दुर्धर्षं तेजसाऽऽदित्यसन्निभम्॥॥७२॥

दृष्ट्वा राजसुतो धीरः प्रणिपत्य सभास्थले। उत्थितः प्राञ्जलिस्तस्य तेजसाऽऽक्षिप्तलोचनः॥७३॥

नागराजोऽपि तं दृष्ट्वा राजपुत्रं मनोरमम्। कोऽयं कस्मादिहायात इति पप्रच्छ पन्नगीः॥७४॥

ता ऊचुर्यमुनातोये दष्टोऽस्माभिर्यदच्छया। अज्ञातकुलनामायमानीतस्तव सन्निधिम्॥७५॥ अथ पृष्टो राजपुत्रस्तक्षकेण महात्मना। कस्यासि तनयः कस्त्वं को देशः कथमागतः॥७६॥

राजपुत्रो वचः श्रुत्वा तक्षकं वाक्यमब्रवीत्॥७७॥

## राजपुत्र उवाच

अस्ति भूमण्डले कश्चिद्देशो निषधसंज्ञकः। तस्याधिपोऽभवद्राजा नलो नाम महायशाः। स पुण्यकीर्तिः क्षितिपो दमयन्तीपतिः शुभः॥७८॥

तस्मादपीन्द्रसेनाख्यस्तस्य पुत्रो महाबलः। चन्द्राङ्गदोऽस्मि नाम्नाऽहं नवोढः श्वशुरालये। विहरन्यमुनातोये निमग्नो देवचोदितः॥७९॥

एताभिः पन्नगस्त्रीभिरानीतोऽस्मि तवान्तिकम्। दृष्ट्वाऽहं तव पादाङां पुण्यैर्जन्मान्तरार्जितैः॥८०॥

अद्य धन्योऽस्मि धन्योऽस्मि कृतार्थो पितरौ मम। यत्प्रेक्षितोऽहं कारुण्यात्त्वया सम्भाषितोऽपि च॥८१॥

#### सूत उवाच

इत्युदारमसम्भ्रान्तं वचः श्रुत्वाऽतिपेशलम्। तक्षकः पुनरौत्सुक्याद्वभाषे राजनन्दनम्॥८२॥

#### तक्षक उवाच

भो भो नरेन्द्रदायाद मा भैषीधीरतां व्रज। सर्वदेवेषु को देवो युष्माभिः पूज्यते सदा॥८३॥

#### राजपुत्र उवाच

यो देवः सर्वेदेवेषु महादेव इति स्मृतः। पूज्यते स हि विश्वात्मा शिवोऽस्माभिरुमापतिः॥८४॥ यस्य तेजोंशलेशेन रजसा च प्रजापतिः। कृतरूपोऽसृजद्विश्वं स नः पूज्यो महेश्वरः॥८५॥

यस्यांशात्सात्त्विकं दिव्यं बिभ्रद्विष्णुः सनातनः। विश्वं बिभर्ति भूतात्मा शिवोऽस्माभिः स पूज्यते॥॥८६॥

यस्यांशात्तामसाञ्जातो रुद्रः कालाग्निसन्निभः। विश्वमेतद्धरत्यन्ते स पूज्योऽस्माभिरीश्वरः॥८७॥

यो विधाता विधातुश्च कारणस्यापि कारणम्। तेजसां परमं तेजः स शिवो नः परा गतिः॥८८॥

योऽन्तिकस्थोऽपि दूरस्थः पापोपहृतचेतसाम्। अपरिच्छेद्य धामासौ शिवो नः परमा गतिः॥८९॥

योऽग्रौ तिष्ठति यो भूमौ यो वायौ सिलले च यः। य आकाशे च विश्वात्मा स पूज्यो नः सदाशिवः॥९०॥

यः साक्षी सर्वभूतानां य आत्मस्थो निरञ्जनः। यस्येच्छावशगो लोकः सोऽस्माभिः पूज्यते शिवः॥९१॥

> यमेकमाद्यं पुरुषं पुराणं वदन्ति भिन्नं गुणवैकृतेन। क्षेत्रज्ञमेकेऽथ तुरीयमन्ये कूटस्थमन्ये स शिवो गतिर्नः॥९२॥

यं नास्पृशंश्चैत्यमचिन्त्यतत्त्वं दुरन्तधामानमतत्स्वरूपम् । मनोवचोवृत्तय आत्मभाजां स एष पूज्यः परमः शिवो नः॥९३॥

यस्य प्रसादं प्रतिलभ्य सन्तो वाञ्छन्ति नैन्द्रं पदमुख्वलं वा। निस्तीर्णकर्मार्गलकालचकाः चरन्त्यभीताः स शिवो गतिर्नः॥९४॥ यस्य स्मृतिः सकलपापरुजां विघातं सद्यः करोत्यपि चु पुल्कसजन्मभाजाम्। यस्य स्वरूपमखिलं श्रुतिभिर्विमृग्यं तस्मै शिवाय सततं करवाम पूजाम्॥९५॥

यन्मूर्प्रि लब्धनिलया सुरलोकसिन्धुः यस्यांङ्गगा भगवती जगदम्बिका च। यत्कुण्डले त्वहह तक्षकवासुकी द्वौ सोऽस्माकमेव गतिरर्धशशाङ्कमौलिः॥९६॥

जयित निगमचूडाग्रेषु यस्याङ्गिपद्मं जयित च हृदि नित्यं योगिनां यस्य मूर्तिः। जयित सकलतत्त्वोद्भासनं यस्य मूर्तिः स विजितगुणसर्गः पूज्यतेऽस्माभिरीशः॥९७॥

#### सूत उवाच

इत्याकर्ण्य वचस्तस्य तक्षकः प्रीतमानसः। जातभक्तिर्महादेवे राजपुत्रमभाषत॥९८॥

#### तक्षक उवाच

परितुष्टोऽस्मि भद्रं स्तात् तव राजेन्द्रनन्दन। बालोऽपि यत्परं तत्त्वं वेत्सि शैवं परात्परम्॥९९॥

एष रत्नमयो लोक एताश्चारुदृशोऽबलाः। एते कल्पद्भमाः सर्वे वाऽप्योमृतरसाम्भसः॥१००॥

नात्र मृत्युभयं घोरं न जरारोगपीडनम्। यथेष्टं विहरात्रेव भुङ्क्ष भोगान्यथोचितान्॥१०१॥

इत्युक्तो नागराजेन स राजेन्द्रकुमारकः। प्रत्युवाच परं प्रीत्या कृताञ्जलिरुदारधीः॥१०२॥

कृतदारोऽस्म्यहं काले सुव्रता गृहिणी मम। शिव पूजापरा नित्यं पितरावेकपुत्रकौ॥१०३॥ ते त्वद्य मां मृतं मत्वा शोकेन महताऽऽवृताः। प्रायः प्राणैर्वियुज्यन्ते दैवात्प्राणान्वहन्ति वा॥१०४॥

अतो मया बहुतिथं नात्र स्थेयं कथश्चन। तमेव लोकं कृपया मां प्रापयितुमर्हसि॥१०५॥

> इत्युक्तवन्तं नरदेवपुत्रं दिव्येर्वरात्रेः सुरपादपोत्थेः। आप्याययित्वा वरगन्धवासः स्रग्नबदिव्याभरणैर्विचित्रेः ॥१०६॥

सन्तोषयित्वा विविधेश्च भोगैः पुनर्बभाषे भुजगाधिराजः। यदा यदा त्वं स्मरिस त्वदग्रे तदा तदाऽऽविष्क्रियते मयेति॥१०७॥

पुनश्च राजपुत्राय तक्षकोऽश्वं च कामगम्। नानाद्वीपसमुद्रेषु लोकेषु च निरर्गलम्॥१०८॥

दत्तवात्रलाभरणदिव्याभरणवाससाम्। वाहनाय ददावेकं राक्षसं पन्नगेश्वरः॥१०९॥

तत्सहायार्थमेकं च पन्नगेन्द्रकुमारकम्। नियुज्य तक्षकः प्रीत्या गच्छेति विससर्ज तम्॥११०॥

इति चन्द्राङ्गदः सोऽथ सङ्गृह्य विविधं धनम्। अश्वं कामगमारुह्य ताभ्यां सह विनिर्ययौ॥१११॥

स मूहूर्तादिवोन्मञ्च तस्मा देव सरिञ्जलात्। विजहार तटे रम्ये दिव्यमारुह्य वाजिनम्॥११२॥

अथास्मिन्समये तन्वी सा च सीमन्तिनी सती। स्नातुं समाययौ तत्र सखीभिः परिवारिता॥११३॥ सा ददर्श नदीतीरे विहरन्तं नृपात्मजम्। रक्षसा नररूपेण नागपुत्रेण चान्वितम्॥११४॥

दिव्यरत्नसमाकीणं दिव्य माल्यावतंसकम्। देहेन दिव्यगन्धेन व्याक्षिप्तदशयोजनम्॥११५॥

तमपूर्वाकृतिं वीक्ष्य दिव्याश्वमधिसंस्थितम्। जडोन्मत्तेव भीतेव तस्थौ तत्र्यस्तलोचना॥११६॥

तां च राजेन्द्रपुत्रोऽसौ दष्टपूर्वामिति स्मरन्। निर्मुक्तकण्ठाभरणां कण्ठसूत्रविवर्जिताम्॥११७॥

असंयोजितधम्मिल्लामङ्गरागविवर्जिताम् । त्यक्तनीलाञ्जनापाङ्गीं कृशाङ्गीं शोकदूषिताम्॥११८॥

दङ्घाऽवतीर्य तुरगादुपविष्टः सरित्तटे। तामाहूय वरारोहामुपवेश्येदमब्रवीत्॥११९॥

का त्वं कस्य कलत्रं वा कस्यासि तनया सती। किमिदं तेऽङ्गने बाल्ये दुःसहं शोकलक्षणम्॥१२०॥

इति स्नेहेन सम्पृष्टा सा वधूरश्रुलोचना। लज्जिता स्वयमाख्यातुं तत्सखी सर्वमब्रवीत्॥१२१॥

इयं सीमन्तिनी नाम्ना स्नुषा निषधभूपतेः। चन्द्राङ्गदस्य महिषी तनया चित्रवर्मणः॥१२२॥

अस्याः पतिर्दैवयोगान्निमग्नोऽस्मिन्महाजले। तेनेयं प्राप्तवैधव्या बाला दुःखेन शोषिता॥१२३॥

एवं वर्षत्रयं नीतं शोकेनातिबलीयसा। अद्येन्दुवारे सम्प्राप्ते स्नातुमत्र समागता॥१२४॥

श्वशुरोऽस्याश्च राजेन्द्रो हृतराज्यश्च शत्रुभिः। बलाद्गृहीतो बद्धश्च सभार्यस्तद्वशे स्थितः॥१२५॥ तथाऽप्येषा शुभाचारा सोमवारे महेश्वरम्। साम्बिकं परया भक्त्या पूजयत्यमलाशया॥१२६॥

#### सूत उवाच

इत्थं सखीमुखेनैव सर्वमावेद्य सुव्रता। ततः सीमन्तिनी प्राह स्वयमेव नृपात्मजम्॥१२७॥

कस्त्वं कन्दर्पसङ्काशः काविमौ तव पार्श्वगौ। देवो नरेन्द्रः सिद्धो वा गन्धर्वो वाऽथ किन्नरः॥१२८॥

किमर्थं मम वृत्तान्तं स्नेहवानिव पृच्छसि। किं मां वेत्सि महाबाहो दृष्टवान्किम् कुत्रचित्॥१२९॥

दृष्टपूर्व इवाऽऽभासि मया च स्वजनो यथा। सर्वं कथय तत्त्वेन सत्यसारा हि साधवः॥१३०॥

#### सूत उवाच

एतावदुक्का नरदेवपुत्री सबाष्पकण्ठं सुचिरं रुरोद। मुमोह भूमौ पतिता सखीभिः वृता न किश्चित्कथितुं शशाक॥१३१॥

श्रुत्वा चन्द्राङ्गदः सर्वं प्रियायाः शोककारणम्। मुहूर्तमभवत्तूष्णीं स्वयं शोकसमाकुलः॥१३२॥

अथाश्वास्य प्रियां तन्वीं विविधैर्वाक्यनैपुणैः। सिद्धा नाम वयं देवाः कामगा इति सोऽब्रवीत्॥१३३॥

ततो बलादिवाकृष्य पाणिग्रहणशङ्किताम्। पुलकाश्चितसर्वाङ्गीं तां कर्णे त्विदमब्रवीत्॥१३४॥

क्वापि लोके मया दष्टस्तव भर्ता वरानने। त्वद्वताचरणात्प्रीतः सद्य एवागमिष्यति॥॥१३५॥ अपनेष्यति ते शोकं द्वित्रैरेव दिनैर्धुवम्। एतच्छंसितुमायातस्तव भर्तुः सखाऽस्म्यहम्॥१३६॥

अत्र कार्यो न सन्देहः शपामि शिवपादयोः। तावत्त्वद्धृदये स्थेयं न प्रकाश्यं च कुत्रचित्॥१३७॥

सा तु तद्वचनं श्रुत्वा सुधाधाराशताधिकम्। सम्भ्रमोद्भान्तनयना तमेव मुहुरैक्षत॥॥१३८॥

प्रेमबन्धानुगुणितं वाक्यं चाह रसायनम्। विभ्रमोदारसहितं मधुरापाङ्गवीक्षणम्॥१३९॥

स्वपाणिस्पर्शनोद्भिन्नपुलकाश्चितविग्रहम्। पूर्वदृष्टानि चाङ्गेषु लक्षणानि स्वरादिषु। वयःप्रमाणं वर्णं च परीक्ष्यैनमतर्कयत्॥१४०॥

एष एव पतिर्मे स्याद्भुवं नान्यो भविष्यति। अस्मिन्नेव प्रसक्तं मे हृदयं प्रेमकातरम्॥१४१॥

परलोकादिहायातः कथमेवं स्वरूपधृक्। दुर्भाग्यायाः कथं मे स्याद्भर्तुर्नष्टस्य दर्शनम्॥१४२॥

स्वप्नोऽयं किमु न स्वप्नो भ्रमोऽयं किं तु न भ्रमः। एष धूर्तोऽथवा कश्चिद् यक्षो गन्धर्व एव वा॥१४३॥

मुनिपल्या यदुक्तं मे परमापद्गताऽपि च। व्रतमेतत्कुरुष्वेति तस्य वा फलमेव वा॥१४४॥

यो वर्षायुतसौभाग्यं ममेत्याह द्विजोत्तमः। नूनं तस्य वचः सत्यं को विद्यादीश्वरं विना॥१४५॥

निमित्तानि च दृश्यन्ते मङ्गलानि दिनेदिने। प्रसन्ने पार्वतीनाथे किमसाध्यं शरीरिणाम्॥१४६॥ इत्थं विमृश्य बहुधा तां पुनर्मुक्तसंशयाम्। लज्जानम्रमुखीं कर्णे शशंसात्मप्रयोजनम्॥१४७॥

इमं वृत्तान्तमाख्यातुं तित्पत्रोः शोकतप्तयोः। गच्छामः स्वस्ति ते भद्रे सद्यः पतिमवाप्स्यसि॥१४८॥

इत्युक्ताऽश्वं समारुद्य जगाम नृपनन्दनः। ताभ्यां सह निजं राष्ट्रं प्रत्यपद्यत तत्क्षणात्॥१४९॥

स पुरोपवनाभ्याशे स्थित्वा तं फणिपुत्रकम्। विससर्जाऽऽत्मदायादान्नृपासनगतान्प्रति ॥१५०॥

स गत्वोवाच ताञ्छीघ्रमिन्द्रसेनो विमुच्यताम्। चन्द्राङ्गदस्तस्य सुतः प्राप्तोऽयं पन्नगालयात्॥१५१॥

नृपासनं विमुश्चन्तु भवन्तो न विचार्यताम्। नो चेचन्द्रागदस्याशु बाणाः प्राणान्हरन्ति वः॥१५२॥

स मग्नो यमुनातोये गत्वा तक्षकमन्दिरम्। लब्बा च तस्य साहाय्यं पुनर्लोकादिहागतः॥१५३॥

इत्याख्यातमशेषेण तद्वृत्तान्तं निशम्य ते। साधुसाध्विति सम्भ्रान्ताः शशंसुः परिपन्थिनः॥१५४॥

> अथेन्द्रसेनाय निवेद्य सत्वरं नष्टस्य पुत्रस्य पुनः समागमम्। प्रसाद्य तं प्राप्तनरेश्वरासनं दायादमुख्यास्तु भयं प्रपेदिरे॥१५५॥

अथ पौरजनाः सर्वे पुरोद्याने नृपात्मजम्। दृष्ट्वा राज्ञे द्रुतं प्रोचुलेभिरे च महाधनम्॥१५६॥

आकर्ण्य पुत्रमायान्तं राजाऽऽनन्दजलाप्नुतः। न व्यजानादिमं लोकं राज्ञी च परया मुदा॥१५७॥ अथ नागरिकाः सर्वे मन्निवृद्धाः पुरोधसः। प्रत्युद्गम्य परिष्वज्य तमानिन्युर्नृपान्तिकम्॥१५८॥

अथोत्सवेन महता प्रविश्य निजमन्दिरम्। राजपुत्रः स्वपितरौ ववन्दे बाष्पमुत्सृजन्॥१५९॥

तं पादमूले पतितं स्वपुत्रं विवेद नासौ पृथिवीपतिः क्षणम्। प्रबोधितोऽमात्यजनैः कथश्चिद् उत्थाय क्लिन्नेन हृदाऽऽलिलिङ्ग॥१६०॥

ऋमेण मातृरभिवन्द्य ताभिः प्रवर्धिताशीः प्रणयाकुलाभिः। आलिङ्गितः पौरजनानशेषान् सम्भावयामास स राजसूनुः॥१६१॥

तेषां मध्ये समासीनः स्ववृत्तान्तमशेषतः। पित्रे निवेदयामास तक्षकस्य च मित्रताम्॥१६२॥

दत्तं भुजङ्गराजेन रत्नादिधनसश्चयम्। दिव्यं तद्राक्षसानीतं पित्रे सर्वं न्यवेदयत्॥१६३॥

राजपुत्रस्य चरितं दृष्ट्वा श्रुत्वा च विह्वलः। मेने स्रुषायाः सौभाग्यं महेशाराधनार्जितम्॥१६४॥

सौमाङ्गल्यमयीं वार्तामिमां निषधभूपतिः। चारैर्निवदयामास चित्रवर्ममहीपतेः॥१६५॥

श्रुत्वाऽमृतमयीं वार्त्तां स समुत्थाय सम्भ्रमात्। तेभ्यो दत्त्वा धनं भूरि ननर्ताऽऽनन्दविह्वलः॥१६६॥

अथाहूय स्वतनयां परिष्वज्याश्रुलोचनः। भूषणैर्भूषयामास त्यक्तवैधव्यलक्षणाम्॥१६७॥ अथोत्सवो महानासीद्राष्ट्रग्रामपुरादिषु। सीमन्तिन्याः शुभाचारं शशंसुः सर्वतो जनाः॥१६८॥

चित्रवर्माऽथ नृपतिः समाह्येन्द्रसेनजम्। पुनर्विवाहविधिना सुतां तस्मै न्यवेदयत्॥१६९॥

चन्द्राङ्गदोऽपि रत्नाद्यैरानीतैस्तक्षकालयात्। स्वां पत्नीं भूषयां चक्रे मर्त्यानामतिदुर्लभैः॥१७०॥

अङ्गरागेण दिव्येन तप्तकाश्चनशोभिना। शुशुभे सा सुगन्धेन दशयोजनगामिना॥१७१॥

अम्रानमालया शश्वत्पद्मिकञ्जल्कवर्णया। कल्पद्रमोत्थया बाला भूषिता शुशुभे सती॥१७२॥

एवं चन्द्राङ्गदः पत्नीमवाप्य समये शुभे। ययौ स्वनगरीं भूयः श्वशुरेणानुमोदितः॥१७३॥

इन्द्रसेनोऽपि राजेन्द्रो राज्ये स्थाप्य निजात्मजम्। तपसा शिवमाराध्य लेभे संयमिनां गतिम्॥१७४॥

दशवर्षसहस्राणि सीमन्तिन्या स्वभार्यया। सार्धं चन्द्राङ्गदो राजा बुभुजे विषयान्बह्न्॥१७५॥

प्रासूत तनयानष्टो कन्यामेकां वराननाम्। रेमे सीमन्तिनी भर्त्रा पूजयन्ती महेश्वरम्। दिनेदिने च सौभाग्यं प्राप्तं चैवेन्दुवासरात्॥१७६॥

#### सूत उवाच

विचित्रमिदमाख्यानं मया समनुवर्णितम्। भूयोऽपि वक्ष्ये माहात्म्यं सोमवारव्रतोदितम्॥१७७॥

॥इति श्रीस्कान्दे महापुराणे एकाशीतिसाहस्र्यां संहितायां ब्रह्मोत्तरखण्डे सोमवारव्रतवर्णनं नामाष्टमोऽध्यायः॥

#### ऋषय ऊचुः

साधु साधु महाभाग त्वया कथितमुत्तमम्। आख्यानं पुनरन्यत्र विचित्रं वक्तुमर्हसि॥१॥

#### सूत उवाच

विदर्भविषये पूर्वमासीदेको द्विजोत्तमः। वेदमित्र इति ख्यातो वेदशास्त्रार्थवित्सुधीः॥२॥

तस्यासीदपरो विप्रः सखा सारस्वताह्वयः। तावुभौ परमस्त्रिग्धावेकदेशनिवासिनौ॥३॥

वेदमित्रस्य पुत्रोऽभूत्सुमेधा नाम सुव्रतः। सारस्वतस्य तनयः सोमवानिति विश्रुतः॥४॥

उभौ सवयसौ बालौ समवेषौ समस्थिती। समं च कृतसंस्कारौ समविद्यौ बभूवतुः॥५॥

साङ्गानधीत्य तौ वेदांस्तर्कव्याकरणानि च। इतिहासपुराणानि धर्मशास्त्राणि कृत्स्रशः॥६॥

सर्वविद्याकुशिलनौ बाल्य एव मनीषिणौ। प्रहर्षमतुलं पित्रोर्ददतुः सकलैर्गुणैः॥७॥

तावेकदा स्वतनयौ तावुभौ ब्राह्मणोत्तमौ। आह्यावोचतां प्रीत्या षोडशाब्दौ शुभाकृती॥८॥

हे पुत्रको युवां बाल्ये कृतविद्यौ सुवर्चसौ। वैवाहिकोऽयं समयो वर्तते युवयोः समम्॥९॥

इमं प्रसाद्य राजानं विदर्भेशं स्वविद्यया। ततः प्राप्य धनं भूरि कृतोद्वाहौ भविष्यथः॥१०॥

एवमुक्तो सुतौ ताभ्यां तावुभौ द्विजनन्दनौ। विदर्भराजमासाद्य समतोषयतां गुणैः॥११॥ विद्यया परितुष्टाय तस्मै द्विजकुमारकौ। विवाहार्थं कृतोद्योगौ धनहीनावशंसताम्॥१२॥

तयोरिप मतं ज्ञात्वा स विदर्भमहीपतिः। प्रहस्य किञ्चित्प्रोवाच लोकतत्त्वविवित्सया॥१३॥

आस्ते निषधराजस्य राज्ञी सीमन्तिनी सती। सोमवारे महादेवं पूजयत्यम्बिकायुतम्॥१४॥

तस्मिन्दिने सपत्नीकान्द्विजाग्र्यान्वेदवित्तमान्। सम्पूज्य परया भक्त्या धनं भूरि ददाति च॥१५॥

अतोऽत्र युवयोरैको नारीविभ्रमवेषधृक्। एकस्तस्या पतिर्भूत्वा जायेतां विप्रदम्पती॥१६॥

युवां वधूवरौ भूत्वा प्राप्य सीमन्तिनीगृहम्। भुक्का भूरि धनं लब्ध्वा पुनर्यातं ममान्तिकम्॥१७॥

इति राज्ञा समादिष्टौ भीतौ द्विजकुमारकौ। प्रत्यूचतुरिदं कर्म कर्तुं नौ जायते भयम्॥१८॥

देवतासु गुरौ पित्रोस्तथा राजकुलेषु च। कौटिल्यमाचरन्मोहात्सद्यो नश्यति सान्वयः॥१९॥

कथमन्तर्गृहं राज्ञां छद्मना प्रविशेत्पुमान्। गोप्यमानमपिच्छदम कदाचित्ख्यातिमेष्यति॥२०॥

ये गुणाः साधिताः पूर्वं शीलाचारश्रुतादिभिः। सद्यस्ते नाशमायान्ति कौटिल्य पथगामिनः॥२१॥

पापं निन्दा भयं वैरं चत्वार्येतानि देहिनाम्। छुद्ममार्गप्रपन्नानां तिष्ठन्त्येव हि सर्वदा॥२२॥

अत आवां शुभाचारौ जातौ च शुचिनां कुले। वृत्तं धूर्तजनश्लाघ्यं नाश्रयावः कदाचन॥२३॥

#### राजोवाच

दैवतानां गुरूणां च पित्रोश्च पृथिवीपतेः। शासनस्याप्यलङ्खात्वात्प्रत्यादेशो न कर्हिचित्॥२४॥

एतैर्यद्यत्समादिष्टं शुभं वा यदि वाऽशुभम्। कर्तव्यं नियतं भीतैरप्रमत्तैर्बुभूषुभिः॥॥२५॥

अहो वयं हि राजानः प्रजा यूयं हि सम्मताः। राजाज्ञया प्रवृत्तानां श्रेयः स्यादन्यथा भयम्॥२६॥

अतो मच्छासनं कार्यं भवद्र्यामविलम्बितम्। इत्युक्तौ नरदेवेन तौ तथेत्यूचतुर्भयात्॥२७॥

सारस्वतस्य तनयं सामवन्तं नराधिपः। स्त्रीरूपधारिणं चक्रे वस्त्राकल्पां जनादिभिः॥२८॥

स कृत्रिमोद्भूतकलत्रभावः प्रयुक्तकर्णाभरणाङ्गरागः । स्निग्धाञ्जनाक्षः स्पृहणीयरूपो बभूव सद्यः प्रमदोत्तमाभः॥२९॥

तावुमौ दम्पती भूत्वा द्विजपुत्रौ नृपाज्ञया। जग्मतुर्नेषधं देशं यद्वा तद्वा भवत्विति॥३०॥

उपेत्य राजसदनं सोमवारे द्विजोत्तमैः। सपत्नीकैः कृतातिथ्यो धौतपादौ बभूवतुः॥३१॥

सा राज्ञी ब्राह्मणान्सर्वानुपविष्टान्वरासने। प्रत्येकमर्चयाश्चके सपत्नीकान्द्विजोत्तमान्॥३२॥

तौ च विप्रसुतौ दृष्ट्वा प्राप्तौ कृतकदम्पती। ज्ञात्वा किश्चिद्विहस्याथ मेने गौरीमहेश्वरौ॥३३॥

आवाह्य द्विजमुख्येषु देवदेवं सदाशिवम्। पत्नीष्वावाहयामास सा देवीं जगदम्बिकाम्॥३४॥ गन्धैर्माल्यैः सुरभिभिधूंपैर्नीराजनैरपि। अर्चयित्वा द्विजश्रेष्ठान्नमश्चके समाहिता॥३५॥

हिरण्मयेषु पात्रेषु पायसं घृतसंयुतम्। शर्करामधुसंयुक्तं शाकैर्जुष्टं मनोरमैः॥३६॥

गन्धशाल्योदनैर्ह्हंद्यैर्मोदकापूपराशिभिः । शष्कुलीभिश्च संयावेः कृसरैर्माषपक्वकैः॥३७॥

तथान्यैरप्यसङ्ख्यातैर्भक्ष्यैर्भोज्यैर्मनोरमैः । सुगन्धैः स्वादुभिः सूपैः पानीयैरपि शीतलैः॥३८॥

क्रुप्तमन्नं द्विजाग्र्येभ्यः सा भक्त्या पर्यवेषयत्। दध्योदनं निरुपमं निवेद्य समतोषयत्॥३९॥

भुक्तवत्सु द्विजाग्येषु स्वाचान्तेषु नृपाङ्गना। प्रणम्य दत्त्वा ताम्बूलं दक्षिणां च यथार्हतः॥४०॥

धेनूर्हिरण्यवासांसि रत्नस्रग्भूषणानि च। दत्त्वा भूयो नमस्कृत्य विससर्ज द्विजोत्तमान्॥४१॥

> तयोर्द्वयोर्भूसुरवर्यपुत्रयोः एकस्तया हैमवतीधियार्चितः। एको महादेवधियाभिपूजितः कृतप्रणामौ ययतुस्तदाज्ञया॥४२॥

सा तु विस्मृतपुम्भावा तस्मिन्नेव द्विजोत्तमे। जातस्पृहा मदोत्सिक्ता कन्दर्पविवशाऽब्रवीत्॥४३॥

अंयि नाथ विशालाक्ष सर्वावयवसुन्दर। तिष्ठ तिष्ठ क्व वा यासि मां न पश्यिस ते प्रियाम्॥४४॥

इदमग्रे वनं रम्यं सुपुष्पितमहाद्रुमम्। अस्मिन्विहर्तुमिच्छामि त्वया सह यथासुखम्॥४५॥ इत्थं तयोक्तमाकर्ण्य पुरोऽगच्छद्विजात्मजः। विचिन्त्य परिहासोक्तिं गच्छति स्म यथा पुरा॥४६॥

पुनरप्याह सा बाला तिष्ठतिष्ठ क्व यास्यसि। दुरुत्सहस्मरावेशां परिभोक्तुमुपेत्य माम्॥४७॥

परिष्वजस्व मां कान्तां पाययस्व तवाधरम्। नाहं गन्तुं समर्थाऽस्मि स्मरबाणप्रपीडिता॥॥४८॥

इत्थमश्रुतपूर्वां तां निशम्य परिशङ्कितः। आयान्तीं पृष्ठतो वीक्ष्य सहसा विस्मयं गतः॥४९॥

कैषा पद्मपलाशाक्षी पीनोन्नतपयोधरा। कृशोदरी बृहच्छ्रोणी नवपल्लवकोमला॥५०॥

स एव मे सखा किं नु जात एव वराङ्गना। पृच्छाम्येनमतः सर्वमिति सिश्चन्त्य सोऽब्रवीत्॥५१॥

किमपूर्व इवाऽऽभाषि सखे रूपगुणादिभिः। अपूर्वं भाषसे वाक्यं कामिनीव समाकुला॥५२॥

यस्त्वं वेदपुराणज्ञो ब्रह्मचारी जितेन्द्रियः। सारस्वतात्मजः शान्तः कथमेवं प्रभाषसे॥५३॥

इत्युक्ता सा पुनः प्राह नाहमस्मि पुमान्प्रभो। नाम्ना सामवती बाला तवास्मि रतिदायिनी॥५४॥

यदि ते संशयः कान्त ममाङ्गानि विलोकय। इत्युक्तः सहसा मार्गे रहस्येनां व्यलोकयत्॥५५॥

तामकृत्रिमधम्मिल्लां जवनस्तनशोभिनीम्। सुरूपां वीक्ष्य कामेन किश्चिद्याकुलतामगात्॥५६॥

पुनः संस्तभ्य यत्नेन चेतसो विकृतिं बुधः। मुहूर्तं विस्मयाविष्टो न किश्चित्प्रत्यभाषत॥५७॥

#### सामवत्युवाच

गतस्ते संशयः कश्चित्तर्ह्यागच्छ भजस्व माम्। पश्येदं विपिनं कान्त परस्रीसुरतोचितम्॥५८॥

## सुमेधा उवाच

मैवं कथय मर्यादां मा हिंसीर्मदमत्तवत्। आवां विज्ञातशास्त्रार्थी त्वमेवं भाषसे कथम्॥५९॥

अधीतस्य च शास्त्रस्य विवेकस्य कुलस्य च। किमेष सदृशो धर्मी जारधर्मनिषेवणम्॥६०॥

न त्वं स्त्री पुरुषो विद्वाञ्जानीह्यात्मानमात्मना। अयं स्वयङ्कृतोऽनर्थ आवाभ्यां यद्विचेष्टितम्॥६१॥

वश्रयित्वाऽऽत्मपितरौ धूर्त्तराजानुशासनात्। कृत्वा चानुचितं कर्म तस्यैतद् भुज्यते फलम्॥६२॥

सर्वं त्वनुचितं कर्म नृणां श्रेयोविनाशनम्। यस्त्वं विप्रात्मजो विद्वान्गतः स्त्रीत्वं विगर्हितम्॥६३॥

मार्गं त्यक्ता गतोऽरण्यं नरो विध्येत कण्टकैः। बलाद्धिंस्येत वा हिंस्नैर्यदा त्यक्तसमागमः॥६४॥

एवं विवेकमाश्रित्य तूष्णीमेहि स्वयं गृहम्। देवद्विजप्रसादेन स्त्रीत्वं तव विलीयते॥६५॥

अथवा दैवयोगेन स्नीत्वमेव भवेत्तव। पित्रा दत्ता मया साकं रंस्यसे वरवर्णिनि॥६६॥

अहो चित्रमहो दुःखमहो पापबलं महत्। अहो राज्ञः प्रभावोऽयं शिवाराधनसम्भृतः॥६७॥

इत्युक्ताऽप्यसकृत् तेन सा वधूरतिविह्वला। बलेन तं समालिङ्गा चुचुम्बाधरपश्लवम्॥६८॥ धर्षितोऽपि तया धीरः सुमेधा नूतनस्त्रियम्। यत्नादानीय सदनं कृत्स्नं तत्र न्यवेदयत्॥६९॥

तदाकर्ण्याथ तौ विप्रौ कुपितौ शोकविह्वलौ। ताभ्यां सह कुमाराभ्यां वैदर्भान्तिकमीयतुः॥७०॥

ततः सारस्वतः प्राह राजानं धूर्तचेष्टितम्। राजन्ममात्मजं पश्य तव शासनयत्रितम्॥७१॥

एतो तवाज्ञावशगो चऋतुः कर्म गर्हितम्। मत्पुत्रस्तत्फलं भुङ्के स्त्रीत्वं प्राप्य जुग्प्सितम्॥७२॥

अद्य मे सन्ततिर्नष्टा निराशाः पितरो मम। नापुत्रस्य हि लोकोऽस्ति लुप्तपिण्डादिसंस्कृतेः॥७३॥

शिखोपवीतमजिनं मौओं दण्डं कमण्डलुम्। ब्रह्मचर्योचितं चिह्नं विहायेमां दशां गतः॥७४॥

ब्रह्मसूत्रं च सावित्रीं स्नानं सन्ध्यां जपार्चनम्। विसृज्य स्नीत्वमाप्तोऽस्य का गतिर्वद पार्थिव॥७५॥

त्वया मे सन्ततिर्नष्टा नष्टो वेदपथश्च मे। एकात्मजस्य मे राजन्का गतिर्वद शाश्वती॥७६॥

इति सारस्वतेनोक्तं वाक्यमाकर्ण्यं भूपतिः। सीमन्तिन्याः प्रभावेण विस्मयं परमं गतः॥७७॥

अथ सर्वान्समाहूय महर्षीनमितद्युतीन्। प्रसाद्य प्रार्थयामास तस्य पुंस्त्वं महीपतिः॥७८॥

तेऽब्रुवन्नथ पार्वत्याः शिवस्य च समीहितम्। तद्भक्तानां च माहात्म्यं कोऽन्यथा कर्तुमीश्वरः॥७९॥

अथ राजा भरद्वाजमादाय मुनिपुङ्गवम्। ताभ्यां सह द्विजाग्र्याभ्यां तत्सुताभ्यां समन्वितः॥८०॥ अम्बिकाभवनं प्राप्य भरद्वाजोपदेशतः। तां देवीं नियमैस्तीव्रैरुपास्ते स्म महानिशि॥८१॥

> एवं त्रिरात्रं सुविसृष्टभोजनः स पार्वतीध्यानरतो महीपतिः। सम्यक्प्रणामैर्विविधेश्च संस्तवैः गौरीं प्रपन्नार्तिहरामतोषयत्॥८२॥

ततः प्रसन्ना सा देवी भक्तस्य पृथिवीपतेः। स्वरूपं दर्शयामास चन्द्रकोटिसमप्रभम्॥८३॥

अथाऽऽह गौरी राजानं किं ते ब्रूहि समीहितम्। सोऽप्याह पुंस्त्वमेतस्य कृपया दीयतामिति॥८४॥

भूयोऽप्याह महादेवी मद्भक्तेः कर्म यत्कृतम्। शक्यते नान्यथा कर्तुं वर्षायुतशतैरपि॥८५॥

#### राजोवाच

एकात्मजो हि विप्रोयं कर्मणा नष्टसन्तिः। कथं सुखं प्रपद्येत विना पुत्रेण तादृशः॥८६॥

## देव्युवाच

तस्यान्यो मत्प्रसादेन भविष्यति सुतोत्तमः। विद्या विनयसम्पन्नो दीर्घायुरमलाशयः॥८७॥

एषा सामवती नाम सुता तस्य द्विजन्मनः। भूत्वा सुमेधसः पत्नी कामभोगेन युज्यताम्॥८८॥

इत्युक्ताऽन्तर्हिता देवी ते च राजपुरोगमाः। गताः स्वं स्वं गृहं सर्वे चकुस्तच्छासने स्थितिम्॥८९॥

सोऽपि सारस्वतो विप्रः पुत्रं पूर्वसुतोत्तमम्। लेभे देव्याः प्रसादेन ह्यचिरादेव कालतः॥९०॥ तां च सामवतीं कन्यां ददौ तस्मै सुमेधसे। तौ दम्पती चिरं कालं बुभुजाते परं सुखम्॥९१॥

#### सूत उवाच

इत्येष शिवभक्तायाः सीमन्तिन्या नृपस्त्रियाः। प्रभावः कथितः शम्भोर्माहात्म्यमपि वर्णितम्॥९२॥

भूयोऽपि शिवभक्तानां प्रभावं विस्मयावहम्। समासाद्वर्णयिष्यामि श्रोतृणां मङ्गलायनम्॥९३॥

॥इति श्रीस्कान्दे महापुराणे एकाशीतिसाहस्र्यां संहितायां तृतीये ब्रह्मोत्तरखण्डे सीमन्तिन्याः प्रभाववर्णनं नाम नवमोऽध्यायः॥ विभागः २

उपाङ्गाः

## संवत्सर-नामानि

प्रभवो विभवः शुक्तः प्रमोदोऽथ प्रजापतिः। अङ्गिराः श्रीमुखो भावो युवा धाता तथैव च॥१॥

ईश्वरो बहुधान्यश्च प्रमाथी विक्रमो वृषः। चित्रभानुः सुभानुश्च तारणः पार्थिवो व्ययः॥२॥

सर्वजित्सर्वधारी च विरोधी विकृतिः खरः। नन्दनो विजयश्चैव जयो मन्मथदुर्मुखौ॥३॥

हेमलम्बो विलम्बोऽथ विकारी शार्वरी प्रवः। शुभकृच्छोभनः क्रोधी विश्वावसुपराभवौ॥४॥

प्रवङ्गः कीलकः सौम्यः साधारणविरोधिकृत्। परिधावी प्रमादी च आनन्दो राक्षसो नलः॥५॥

पिङ्गलः कालयुक्तश्च सिद्धार्थी रौद्रदुर्मती। दुन्दुभी रुधिरोद्गारी रक्ताक्षी क्रोधनः क्षयः॥६॥

१. प्रभवः

२. विभवः

३. शुक्रः

४. प्रमोदः

५. प्रजापतिः

६. अङ्गिराः

७. श्रीमुखः

८. भावः

९. युवा

१०. धाता

११. ईश्वरः

१२. बहुधान्यः

१३. प्रमाथी

१४. विक्रमः

१५. वृषः

१६. चित्रभानुः

१७. सुभानुः

१८. तारणः

१९. पार्थिवः

२०. व्ययः

२१. सर्वजित्

२२. सर्वधारी

३९. विश्वावस्ः

४०. पराभवः ४१. प्रवङ्गः

| २३. विरोधी   | ४२. कीलकः        |
|--------------|------------------|
| २४. विकृतिः  | ४३. सौम्यः       |
| २५. खरः      | ४४. साधारणः      |
| २६. नन्दनः   | ४५. विरोधिकृत्   |
| २७. विजयः    | ४६. परितापी      |
| २८. जयः      | ४७. प्रमादी      |
| २९. मन्मथः   | ४८. आनन्दः       |
| ३०. दुर्मुखः | ४९. राक्षसः      |
| ३१. हेमलम्बः | ५०. नलः          |
| ३२. विलम्बः  | ५१. पिङ्गलः      |
| ३३. विकारी   | ५२. कालयुक्तिः   |
| ३४. शार्वरी  | ५३. सिद्धार्थी   |
| ३५. प्रवः    | ५४. रौद्रः       |
| ३६. शुभकृत्  | ५५. दुर्मतिः     |
| ३७. शोभनः    | ५६. दुन्दुभिः    |
| ३८. ऋोधी     | ५७. रुधिरोद्गारी |
|              |                  |

## नक्षत्र-नामानि

५८. रक्ताक्षः ५९. क्रोधनः

६०. क्षयः

अश्विनी भरणी चैव कृत्तिका रोहिणी मृगः। आर्द्रा पुनर्वसुः पुष्यस्ततोऽश्रेषा मघास्तथा॥१॥

पूर्वफाल्गुनिका तस्मादुत्तराफल्गुनी ततः। हस्तश्चित्रा ततः स्वाती विशाखा तदननतरम्॥२॥

अनूराधा ततो जयेष्ठा ततो मूलं निगद्यते। पूर्वाषाढोतराषाढा त्वभिजिछ्नवणस्ततः॥३॥

## धनिष्ठा शतताराख्य पूर्वा भाद्रपदा ततः। उत्तरा भाद्रपदा चैव रेवत्येतानि भानि च॥४॥

- १. अश्विनी
- २. अपभरणी
- ३. कृत्तिका
- ४. रोहिणी
- ५. मृगशीर्षम्
- ६. आर्द्रा
- ७. पुनर्वसुः
- ८. पुष्यः
- ९. आश्रेषा
- १०. मघा
- ११. पूर्वफल्गुनी
- १२. उत्तरफल्गुनी
- १३. हस्तः
- १४. चित्रा

- १५. स्वाती
- १६. विशाखा
- १७. अनूराधा
- १८. ज्येष्ठा
- १९. मूला
- २०. पूर्वाषाढा
- २१. उत्तराषाढा
- २२. श्रवणम्
- २३. श्रविष्ठा
- २४. शतभिषक्
- २५. पूर्वप्रोष्ठपदा
- २६. उत्तरप्रोष्ठपदा
- २७. रेवती

## योग-नामानि

विष्कम्भः प्रीतिरायुष्मान् सौभाग्यं शोभनस्तथा। अतिगण्डः सुकर्मा च धृतिः शूलस्तथैव च॥

गण्डो वृद्धिर्धुवश्चैव व्याघातो हर्षणस्तथा। वज्रः सिद्धिर्व्यतीपातो वरीयान् परिघः शिवः। सिद्धः साध्यः शुभः शुभ्रो ब्राह्मो माहेन्द्र-वैधृती॥

- १. विष्कम्भः
- २. प्रीतिः

- ३. आयुष्मान्
- ४. सौभाग्यम्

५. शोभनः

६. अतिगण्डः

७. सुकर्म

८. धृतिः ९. शूलः

१०, गण्डः

११. वृद्धिः

१२. ध्रुवः

१३. व्याघातः

१४. हर्षणः

१५. वज्रः

१६. सिद्धिः

१७. व्यतीपातः

१८. वरीयान्

१९. परिघः

२०. शिवः

२१. सिद्धः

२२. साध्यः

२३. शुभः

२४. शुभ्रः

२५. ब्राह्मः

२६. माहेन्द्रः

२७. वैधृतिः

## करण-नामानि

बवश्च बालवश्चेव कौलवस्तैतिलस्तथा। गरश्च वणिजश्चापि विष्टिश्च शकुनिस्तथा। चतुष्पाचापि नागश्च किंस्तुघ्न इति कीर्तितम्॥८२॥

—श्रीब्रह्मवैवर्त-महापुराणे श्रीकृष्णजन्मखण्डे उत्तरार्धे नारदनारायणसंवादे राधोद्धवसंवादे कालनिरूपणं नाम षण्ण्वतितमेऽध्याये

#### चराणि सप्त

१. बवम् २. बालवम् ३. कौलवम् ४. तैतिलम्

५. गरजा ६. वणिजा ७. भद्रा

#### स्थिराणि चत्वारि

१. शकुनिः २. चतुष्पात् ३. नागवान् ४. किंस्तुघ्नम्

## ॥ तिथीनां पूर्वोत्तरार्ध-करणानि॥

|            | तिथिः          | पूर्वार्ध-करणम् | उत्तरार्ध-करणम् |
|------------|----------------|-----------------|-----------------|
| የ.         | शुक्र-प्रथमा   | किंस्तुघ्नम्    | बवम्            |
| ٦.         | शुक्र-द्वितीया | बालवम्          | कौलवम्          |
| ₹.         | शुक्क-तृतीया   | तैतिलम्         | गरजा            |
| ٧.         | शुक्र-चतुर्थी  | वणिजा           | भद्रा           |
| ۷.         | शुक्र-पश्चमी   | बवम्            | बालवम्          |
| ξ.         | शुक्र-षष्ठी    | कौलवम्          | तैतिलम्         |
| <b>9</b> . | शुक्क-सप्तमी   | गरजा            | वणिजा           |
| ۷.         | शुक्र-अष्टमी   | भद्रा           | बवम्            |
| ۶.         | शुक्र-नवमी     | बालवम्          | कौलवम्          |
| १०.        | शुक्र-दशमी     | तैतिलम्         | गरजा            |
| ११.        | शुक्र-एकादशी   | वणिजा           | भद्रा           |
| १२.        | शुक्र-द्वादशी  | बवम्            | बालवम्          |
| १३.        | शुक्र-त्रयोदशी | कौलवम्          | तैतिलम्         |
| १४.        | शुक्र-चतुर्दशी | गरजा            | वणिजा           |
| १५.        | पौर्णमासी      | भद्रा           | बवम्            |
| १६.        | कृष्ण-प्रथमा   | बालवम्          | कौलवम्          |
| .७१        | कृष्ण-द्वितीया | तैतिलम्         | गरजा            |
| १८.        | कृष्ण-तृतीया   | वणिजा           | भद्रा           |
| १९.        | कृष्ण-चतुर्थी  | बवम्            | बालवम्          |
| २०.        | कृष्ण-पश्चमी   | कौलवम्          | तैतिलम्         |
| २१.        | कृष्ण-षष्ठी    | गरजा            | वणिजा           |
| २२.        | कृष्ण-सप्तमी   | भद्रा           | बवम्            |
| २३.        | कृष्ण-अष्टमी   | बालवम्          | कौलवम्          |
| २४.        | कृष्ण-नवमी     | तैतिलम्         | गरजा            |
| २५.        | कृष्ण-दशमी     | वणिजा           | भद्रा           |
| २६.        | कृष्ण-एकादशी   | बवम्            | बालवम्          |
| २७.        | कृष्ण-द्वादशी  | कौलवम्          | तैतिलम्         |
| २८.        | कृष्ण-त्रयोदशी | गरजा            | वणिजा           |
| २९.        | कृष्ण-चतुर्दशी | भद्रा           | शकुनिः          |
| ₹°.        | अमावास्या      | चतुष्पात्       | नागवान्         |